एक अदना मल्लाह की पुकार

("टू ईयर्स बिफोर द मास्ट" का हिन्दी रूपान्तर)

लेखक--रिचार्ड हेनरी डाना

रूपातरकार-कांतिमोहन

प्रकाशक
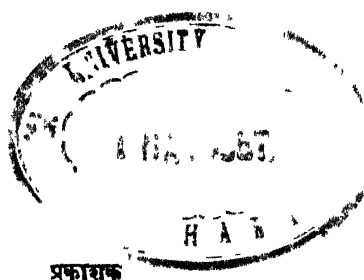
प्रेमी जासूस कार्यालय

१२४, चक, इलाहाबाद-३

Published by
Dina Nath Bhargava,
Premi Jasoos Karyalaya,
124 Chak, Allahabad—3

एक प्रति : सात रु० पचास पैसा

Printed at
TIRTHRAJ PRESS,
124, Chak, Allahabad—3

प्राक्कथन

इस कथा को प्रकाशित कराने के औचित्य के बारे में दो शब्द कहे बिना पाठकों के समक्ष इसे प्रस्तुत करने में मुझे उलझन हो रही है। मिस्टर कूपर की "पाइ-लट" और "रेड रोवर" नामक पुस्तकों के बाद समुद्री जीवन पर लिखी कहानियों की कुछ ऐसी बाढ़-सी आ गयी है कि बिना पर्याप्त कारणों के उनकी संख्या में एक और वृद्धि कर देना मेरी नजर में अनुचित है।

मुझे पक्का पता है कि मिस्टर एम्स की मनोरंजक, किन्तु जल्दबाजी में लिखी गयी किताब "मैरिनर्स स्केचेज" को छोड़कर अन्य ऐसी सभी पुस्तकों के लेखक या तो नौसैनिक अधिकारी रहे हैं या यात्री, और उनके प्रकथन को तथ्यपरक नहीं माना जा सकता।

इस सिलसिले में पहली बात तो यह है कि युद्धपोत का जीवनक्रम, दैनिक कर्त्तव्य-कर्म, आदतें और रीति-रिवाज—यह सभी कुछ व्यापारी पोत से बहुत भिन्न होता है। दूसरी बात यह है कि, ये किताबें चाहे कितनी ही मनोरंजक और कलात्मक क्यों न हों, और उनके लेखक समुद्री जीवन का यथातथ्य चित्रण करने में कितने ही सफल क्यों न हुए हों, फिर भी यह बात सर्वथा स्पष्ट है कि कोई नौसैनिक अधिकारी, जो अफसरों के अलावा किसी से संपर्क नहीं रखता और साधारण नाविकों को मुंह नहीं लगाता, समुद्री जीवन की सारी बातों को उस नजर से देख ही नहीं सकता जिस नजर से कोई सामान्य मल्लाह देखता है।

पाठक के मन में जीवन के उन रूपों के बारे में जानने की तीव्र इच्छा तो रहती ही है जिनमें वह खुद कभी नहीं जी सकता, इसके साथ ही पिछले कुछ वर्षों में लोगों का ध्यान साधारण नाविकों की दशा पर विशेष रूप से गया है, और लोगों के मन में उनके प्रति सहानुभूति पैदा की गयी है। फिर भी, मुझे यकीन है, कि जिस पुस्तक का जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ उसके अलावा, शायद एक भी किताब ऐसी नहीं है जिसमें साधारण नाविकों के जीवन और अनुभवों का चित्रण किसी ऐसे लेखक ने किया हो जो खुद एक साधारण नाविक रहा हो, और जिसे उनकी

जिन्दगी की असलियत का पता हो। अभी जनता ने "अगवाड़ की आवाज" नही सुनी है।

इस पुस्तक के पृष्ठों में मैंने एक अमरीकी व्यापारी पोत में दो वर्षों से अधिक समय तक एक अदना मल्लाह के रूप में हुए अपने अनुभवों का यथातथ्य और प्रामाणिक चित्रण करने का प्रयत्न किया है। मैंने इस पुस्तक को उन दिनों लिखी गयी अपनी डायरी, और अधिकांश घटनाओं के बारे में तभी लिखे गये अपने नोट्स की सहायता से, लिखा है। इस पुस्तक में मैंने हर बात को यथातथ्य चित्रित करने और हर चीज को उसके असली रंग-रूप में वर्णित करने का प्रयत्न किया है। अपने इस प्रयत्न में कही-कही मुझे सख्त और अनगढ भाव-व्यजनाओ का आश्रय लेना पडा है, और एकाध ऐसे दृश्य-खन्ड का चित्रण भी करना पडा है जिससे शायद पाठक की उदात्त भावनाओं को आघात लगे। लेकिन जहाँ भी मैंने महसूस किया है कि इस तरह के दृश्य-खन्डो के बिना भी किसी दृश्य-विशेष को उसके सच्चे रूप--रंग में चित्रित किया जा सकता है वहा मैंने उनके बिना ही काम चलाया है। मेरा उद्देश्य समुद्र पर रहने वाले नाविकों के जीवन का वास्तविक चित्र—जिसमें शुक्ल और कृष्ण दोनो पक्ष शामिल हैं—प्रस्तुत करना रहा है, और इसी उद्देश्य ने मुझे इस पुस्तक को प्रकाशित कराने के लिए प्रेरित किया हैं। हो सकता है पुस्तक के कुछ अन्श सामान्य पाठक को समझ में न आयें, लेकिन मैंने अपने और दूसरो के अनुभवों से यह सीखा है कि अपरिचित जीवन के रिवाजों और आदतों के यथातथ्य चित्रण और जीवन के नये पहलुओं के विवरण का रसास्वाद हम अपनी कल्पना से कर लेते हैं, और अक्सर हमें अपने तकनीकी ज्ञान के अभाव और अनुभवहीनता का अहसास तक नहीं होता। हजारों लोग "रेड रोवर" नामक पुस्तक में ब्रिटिश चैनल से अमरीकी युद्धपोत के बच निकलने और ब्रिस्टल व्यापार पोत के पीछा करने और नष्ट होने की बाबत पढ़ते हैं, और स्वयं जहाज की किसी रस्सी का नाम तक न जानने वाला पाठक व्यावसायिक बारीकियों को न समझते हुए भी नौसैनिक दाँव-पेंचों को रुचि लेकर पढता और सराहता है।

इस पुस्तक को लिखते समय मैंने केवल घटनाओं और स्वयं पर पड़े उनके प्रभाव का ही चित्रण करने का प्रयत्न किया है। समय-समय पर मैंने जो चितन किया है और उनसे मैं जिन निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ, उन्हें मैंने अंतिम अध्याय "उप-

सहारा'' में प्रस्तुत किया है, और मैं पाठक से उस पर ध्यान देने की प्रार्थना करूंगा।

इन कारणों से, और अपने कुछ मित्रो की सम्मति से, मैं इस कहानी को छपवाने के निश्चय पर पहुँचा हूँ। अगर इससे सामान्य पाठक का मनोरंजन होगा, नाविको के कल्याण पर लोगों का ध्यान कुछ अधिक जायगा, या लोगों को नाविकों की सही स्थिति के बारे में कुछ ऐसी सूचनाएं प्राप्त होंगी जिनसे प्राणि-जगत में उनका दरजा कुछ ऊचा उठ सके, और उनका धार्मिक और नैतिक उत्थान हो सके तथा उनके दैनिक जीवन का दुख-दर्द कम हो सके तो मैं समझूंगा कि मैं अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हुआ हूँ।

बोस्टन, जुलाई, १८४० —रिचार्ड हेनरी डाना, जूनियर

अनुवादक की ओर से

रिचार्ड हेनरी डाना की विख्यात कृति "टू ईयर्स बिफोर द मास्ट" अमरीकी साहित्य का प्रतिष्ठित गौरव-ग्रंथ है। इस ग्रंथ की विशेषताए इतनी स्पष्ट और मुखर हैं कि उनके बारे में यहां कुछ कहना अनावश्यक-सा है। यहाँ मैं इसके अनुवाद के बारे मे दो शब्द कहना चाहूँगा।

डाना की यह कृति उसके प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है। वह खुद जहाज पर दो वर्षों से अधिक समय के लिए एक अदना मल्लाह रहा था, और उसकी मशीनरी के छोटे से छोटे पुरजे से परिचित था। उसका प्रकथन इतना यथातथ्य और दृष्टिकोण इतना वैज्ञानिक है कि यह कृति उपन्यास की तरह कथात्मक होते हुए भी किसी तकनीकी ग्रथ की भाति ज्ञान प्रदान करने वाली है। नौविज्ञान की शब्दावली में उपन्यास का प्रवाह और रोचकता भर देना डाना की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं विरल उपलब्धि थी, लेकिन अनुवादक के मार्ग मे यही सब से बड़ी बाधा भी थी।

जैसा कि इस हिन्दी रूपातर के पाठक देखेंगे, पुस्तक मे तकनीकी शब्दों का प्रयोग प्राय सर्वत्र किया गया है। दुर्भाग्य से हिन्दी में नौविज्ञान-विषयक शब्दावली का प्राय. अभाव ही है। इसलिए, जब मैंने इसके अनुवाद में हाथ लगाया, और यह समस्या सामने आयी तो एक बार तो मेरा साहस जवाब दे गया। लगा कि इस किताब का अनुवाद सम्भव ही नही है। लेकिन, फिर हिम्मत बाध कर मैं काम पर जुट गया, और आज इसे समाप्त हुआ देखकर मुझे जैसी प्रसन्नता हो रही है, वैसी आज के पहले कभी नही हुई थी।

जहा तक तकनीकी शब्दावली का सम्बन्ध है, मैंने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित "पारिभाषिक शब्द-संग्रह" से का[illegible] सहायता ली है। कुछ शब्दों के हिन्दी समानार्थक गढ़े भी हैं, और कुछ को ज्यों का त्यो रहने दिया है। अनुवादक का प्रयत्न यह रहा है कि डाना के प्रत्येक शब्द का अनुवाद प्रस्तुत किया जाय, लेकिन हुआ यह है कि डाना के हर उस शब्द का अनुवाद किया जा सका है, जिसका अनुवाद सम्भव था। असम्भव मेरे लिए भी "असम्भव" ही रहा है,

लेकिन सम्भव को असम्भव नहीं बनने दिया गया है, इसका मुझे पूर्ण संतोष है। दो-चार स्थलों पर अत्यधिक तकनीकी बारीकियों वाले विवरणों को थोड़ा-बहुत छांट दिया गया है। लेकिन ऐसा करते वक्त अनुवादक ने अपनी सुविधा का ध्यान न रख कर, पाठक की सुविधा, रुचि और सोमाओ को ही अपने ध्यान में रखा है। लेकिन ऐसे स्थल अत्यन्त विरल हैं, और इस रूपांतर को उस कृति का "सम्पूर्ण अनुवाद" बेखटके कहा जा सकता है।

अनुवाद कैसा बन पड़ा है, यह बताना सुधी पाठकों का काम है। यह सम्भव हुआ है, मैं इसी की प्रसन्नता से तुष्ट हूँ।

.. ..कांतिमोहन

एक अदना मल्लाह की पुकार

अध्याय—१

उस दिन अगस्त की चौदह तारीख थी। "पिलग्रिम" अपनी यात्रा दोपहर के बाद शुरू करने वाला था। दो मस्तूलों वाले इस जहाज को बोस्टन से केप हार्न होते हुए उत्तरी अमरीका के पच्छिमी तट तक जाना था। चूंकि उसे तीसरा पहर होते ह चल देना था इसलिए मैं सिर से पैर तक मल्लाह की पोशाक पहने लगभग बारह बजे जहाज पर पहुँच गया। मेरे पास एक सन्दूक था जिसमें दो-तीन वर्षों की समुद्री यात्रा के लिए जरूरी सामान था। इस यात्रा पर मैं एक विशेष प्रयोजन से जा रहा था। आँखों की खराबी के कारण मुझे पढाई छोडने पर मजबूर होना पडा था। दवाओ से कोई फायदा न होते देख मैंने सोचा कि शायद काफी दिनों तक पढाई-लिखाई से दूर रहने और जिन्दगी के ढर्रे को एकदम वदल देने से मेरी आँखें अच्छी हो जायें।

मल्लाह की पोशाक ने मेरा तो काया पलट ही कर दिया था। कहाँ कैम्ब्रिज अंडरग्रेजुएट का तग ड्रेस कोट, सिल्की टोपी और मेमने की खाल के दस्ताने और कहा मल्लाह की मोटी सूती पतलून, चैक की कमीज और तिरपाल का टोप—फिर भी मुझे गुमान था कि मैं एक कुशल मल्लाह जंच रहा हूँ। लेकिन, इन मामलों में अनुभवी आँख को धोखा नही दिया जा सकता और यद्यपि मैं स्वयं को वरुण से कम नही समझ रहा था लेकिन जहाज के अनुभवी मल्लाह मुझे देखते ही समझ गये कि यह जमीन का जीव पानी मे आ फसा है।

मल्लाह के कपडो की काट और कपड़े पहनने का उसका ढंग कुछ अजीब हीं होता है। नौसिखुए मे वह बात आ ही नही सकती। जाँघों पर तग ढीली मोहरियो वाली लम्बी पतलून, चेक की निहायत ढीली-ढाली कमीज, सिर के पिछले हिस्से पर पहना वार्निश से चमचम नीचा टोप, बांई आंख के पास लटका तीन फुट लम्बा काला रिबन, सिल्क के काले रुमाल की बन्धी हुई एक खास किस्म की टाई और इसी तरह की कई और छोटी-मोटी बातें—ये कुछ ऐसे लक्षण हैं जिनके बिना नया आदमी फौरन पहचाना जाता है। पोशाक की इन कमियों के अलावा मेरा

रंग और मेरे हाथ देख कर भी सोचा जा सकता था कि यह पक्का मल्लाह नही है। पक्के मल्लाह के गाल धूप से काले हो जाते हैं। लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ वह जहाज के एक बाजू से दूसरे बाजू तक झूमता हुआ-सा चलता है। चलते समय उसके कासे के रंग वाले अधनंगे हाथ झूलते हुए चलते हैं मानो वे रस्से को थामने के लिए मचल रहे हो। मुझमे ये बातें नही थी।

"अपनी इन सब कमियो के साथ" मैं मल्लाहो की टोली मे शामिल हो गया। हम लोग जहाज को धारा मे ले गये और रात भर के लिए वही लंगर डाल दिया गया। अगले दिन हम सब यात्रा की तैयारियो मे लगे रहे। हमने दुपेंचा पाल टाके, रायल यार्ड ठीक किये, चैफिंग गियर लगाया और बारूद जहाज मे रखा। उस रात जिन्दगी मे पहली बार मैंने पहरा दिया। कही ऐसा न हो कि मुझे पुकारा जाय और मैं सुन न पाऊँ.. इस डर से मैं आधी रात तक जागता ही रहा। जब मैं पहरा देने डेक पर पहुँचा तो अपनी जिम्मेदारी को इतनी भारी समझ रहा था कि मैं जहाज के एक से दूसरे सिरे तक...यानी मोरो से तफरैल तक...बाकायदा पहरा देता रहा। अपनी जगह लेने के लिए मैंने जिस बूढ़े मल्लाह को बुलाया था वह वहा से खिसक गया था और दीर्घ नौका मे जाकर झपकी ले रहा था। उसकी इस बेरुखी पर मुझे अचरज नही हुआ। मैंने सोचा, उसने इस मेघहीन रात में, बन्दरगाह में लगर डाले जहाज के लिए, इतनी देख भाल ही काफी समझी होगी।

अगले दिन शनिवार था। दक्षिण की ओर से समीर बह निकला था। हमने कनहार (पाइलट) को जहाज पर चढा कर लंगर उठा दिया। जहाज खाड़ी की ओर बढा। मैंने अपने उन दोस्तो से विदा ली जो मुझे पहुँचाने आये थे। अपने नगर को और चिरपरिचित चीजों को आखिरी बार आख भर कर देखना भी मुझे नसीब न हो सका क्योकि जहाज पर भावनाओ में बहने का मौका नही दिया जाता।

जब हम बन्दरगाह के निचले भाग में पहुचे तो पता चला कि खाड़ी में सामने से तेज हवा चल रही है। मजबूरन हमें लगरगाह में शरण लेनी पडी। दिन भर हम वही रहे। रात के ग्यारह बजे मेरी ड्यूटी शुरू हुई। मुझे पच्छिमी पवन के चलते ही कप्तान को बुला लेने का हुक्म दिया गया था। आधी रात के करीब पवन पच्छिम से बहने लगा। जब मैंने यह सूचना कप्तान को दी तो उसने मुझे सब मल्लाहों को बुलाने का हुक्म दिया। मुझे यह तो याद नही कि मैंने उसका यह हुक्म कैसे बजाया लेकिन इतना तय है कि मेरी आवाज़ एक कुशल अनुभवी मल्लाह

की तीखी आवाज, "आओ रे ! लंगर उठाना है !" जैसी नही थी। बात की बात में सब लोग काम पर जुट गये। पाल तान दिये गये, यार्ड बाँध दिये गये और हमने अपना लंगर उठाना शुरू किया।

इन सारी तयारियों मे मै कोई खास हिस्सा न ले पाया। जहाज के बारे में मेरी जो थोड़ी–बहुत जानकारी थी उसकी बिनाह पर मैं कुछ समझ ही न सका। अजीब-अजीब आदेश इतनी तेजी से दिये जा रहे थे और उनका पालन इतनी तत्परता से हो रहा था, ऐसी अजीब हडबड़ी मची हुई थी और चिल्लपो व हलचल का कुछ ऐसा समा बंधा था कि मैं तो देखता-सा रह गया। दुनिया मे खुश्की पर रहने वाले उस जीव से अधिक असहाय और दयनीय जीव नही मिल सकता जिसने मल्लाह का जीवन शुरू ही किया हो।

आखिरकार वे खास तरह की, देर तक चलने वाली, आवाजें आनी शुरू हुईं जिनसे पता चलता था कि मल्लाहो ने लगर उठाने वाली चरखी घुमानी शुरू कर दी है। कुछ ही क्षणों में जहाज चल पड़ा। मोरो से टकरा कर गिरते हुए पानी की पछाड़ें सुनायी पडने लगी। रात की नम समीर से झुकता-सा जहाज समुद्र के थपेड़े खा कर झूमता हुआ सा चला जा रहा था। हम वास्तव मे अपनी लम्बी यात्रा पर निकल पडे। मैं सचमुच ही अपनी मातृ भूमि से "गुड नाइट" कह रहा था।

* * *

अध्याय २

उस दिन रविवार था। समुद्र पर हमारा वह पहला दिन था। यूं तो उस दिन सैबाथ की छुट्टी थी लेकिन चूंकि हम अभी बन्दरगाह से चले ही थे और जहाज पर बहुत-सा काम बाकी था इसलिए हमे दिन भर काम मे जुटे रहना पडा। रात के वक्त पहरे बिठा दिये गये और हर चीज को सफर की जरूरतो के मुताबिक तैयार कर लिया गया। जब पहरों की सूचना देने के लिए सब लोगो को जहाज के पिछले भाग में बुलाया गया तब पहली बार मुझे पता चला कि जहाजो के कप्तान कैसे होते हैं। हर आदमी को उसके पहरे का समय और स्थान बताने के बाद कप्तान ने छतरी में चहल-कदमी करते हुए और मुंह में लगे सिगार से धुंआ उडाते हुए कप्तानों के खास लहजे में एक छोटा-सा भाषण दिया :

"तो, नाविकों ! हमारा लम्बा सफर शुरू हो गया है। मेल-जोल से रहने पर

हमारा वक्त मजे में बीत सकता है, वर्ना समझ लो नरक का मुंह हमारे सामने खुला हुआ है। तुम लोगों को सिर्फ इतना करना है कि तुम्हे जो हुक्म दिये जायें उन्हे बजा लाओ, और अपना फर्ज अदा करने में पीछे न हटो। तभी तुम लोग मजे मे रहोगे, वर्ना तकलीफ उठाओगे—मैं जताये देता हूँ। अगर हम मेल से रहे तो तुम्हें पता चलेगा कि मैं कितना चतुर हूँ, अगर मेल से न रहे तो समझ लो कि मै अव्वल दर्जे का खूख्वार और बदमाश आदमी हूँ। बस मुझे इतना ही कहना है। अब डाबा (बाए) बाजू पर पहरा देने वाले नीचे जायें।"

मैं दूसरे मालिम की टुकडी में था जमना (दाए) बाजू पर पहरा देने वालों में था, इसलिए पहले हमारा पहरा ही शुरू हुआ। एस—नामक एक नौजवान भी मेरी ही टोली में था और मेरी ही तरह पहली बार समुद्री यात्रा पर जा रहा था। वह एक व्यापारी का बेटा था और बोस्टन की एक फर्म के दफ्तर में काम कर चुका था। बात-चीत होने पर पता चला कि हम एक-दूसरे के कई मित्रों से परिचित हैं। कई विषय ऐसे निकल आये जिन पर हम लोग बातचीत कर सकते थे। कुछ देर तक हम बोस्टन, अपने मित्रो और अपनी समुद्री यात्रा के बारे में बातें करते रहे। अंत में वह पहरा देने के लिए चला गया और मैं अकेला रह गया।

अब मुझे चिंतन के लिए सुन्दर अवसर मिला। जीवन में पहली बार मैंने समुद्र की पूर्ण निस्तब्धता का अनुभव किया। अफसर छतरी में टहल रहा था जहा जाना मेरे लिए मना था, अगवाड में एकाध मल्लाह बातचीत कर रहे थे लेकिन उसमें शामिल होने की मेरी कोई इच्छा न थी, इसलिए मैंने अपने आप को ढीला छोड दिया और चारों ओर की चीजो की पूरी-पूरी छाप मेरे मन पर अंकित होती रही। यद्यपि सागर, चमकीले तारो और उन पर तेजी से तैरती हुई बदलियों के सौन्दर्य में मैं डूब-सा गया था किन्तु जीवन सामाजिक और बौद्धिक आनन्द को मैं पीछे छोड़ आया था उसकी चेतना मेरे मन में बराबर बनी हुई थी। फिर भी, यद्यपि यह बात शायद कुछ अजीब–सी लगे, उस अवसर पर; और बाद में भी, मुझे इस प्रकार के चिन्तन मे बडा आनन्द आया; क्योंकि यही एक ऐसा उपाय था जिससे मैं उस विगत आनन्द के महत्व के प्रति सजग रह सकता था।

लेकिन, अब हवा सामने को हो गयी थी। अफसर से यार्डों को झुकाने का आदेश सुनते ही मेरे स्वप्न-विहग फुर्र से उड गये। मल्लाह प्रतिवात दिशा में एक

खाज अन्दाज से ताक रहे थे और काले बादल बडी तेजी से उमड़ रहे थे। इस सब से मैं जल्दी ही समझ गया कि हम लोगो को खराब मौसम का सामना करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मैंने सुना, कप्तान कह रहा था कि जहाज बारह बजे तक गल्फस्ट्रीम मे पहुच जायेगा। कुछ क्षणो बाद आठ घन्टियां बजी, दूसरी पहरा-टुकडी को ऊपर बुलाया गया और हम नीचे चले आये।

अब पहली बार मुझे मल्लाह की जिन्दगी की तकलीफों का पता चला। मुझे रहने के लिए स्टीअरेज में जगह मिली थी। वहाँ रस्सियो के गट्ठे, फालतू पाल, पुराना काठ कबाड और भन्डार की रसद आदि दूसरी चीजें भी थी। इसके अलावा, हमारे सोने के लिए वहा बेंचें वगैरह नही बनवायी गयी थी, और न हमें अपने कपडे टांगने के लिए खूटिया गाड़ने की इजाजत थी। समुद्र अब उद्वेलित हो चला था और जहाज झटके खाता हुआ आगे बढ रहा था। सारी चीजें बेतरतीबी से बिखर गयी थी। मल्लाहो की भाषा में स्टीअरेज ऐसा "गड्डमड्ड भन्डार" हो गया था "जिसकी हर चीज बिखरी पडी हो और जरूरत पडने पर हाथ न आये", एक मोटा पाल-रस्सा मेरे सन्दूक पर कुन्डली मार कर बैठ गया था। मेरे टोप, बूट, गद्दा और कबल आदि खिसकते-खिसकते अनुवात पार्श्व में जा पहुचे थे और वहां संदूको व रस्सो के भारी गठ्ठों के नीचे फस जाने के कारण उनमें से कुछ चीजें टूट-टूट भी गयी थी। सब से बडी कठिनाई तो यह थी कि अपनी चीजें ढूंढने के लिए हम लोग रोशनी भी नही कर सकते थे। मुझे समुद्री मतली के आसार नजर आने लगे थे और मैं शिथिलता व निष्क्रियता का अनुभव कर रहा था।

अन्त मे हार कर मैंने अपनी चीजें बटोरने का इरादा ही छोड दिया। अब मैं पालों पर पडा हुआ "आओ रे ! सब पाल सभालो !" की पुकार का इन्तजार करने लगा जो कि आने वाले तूफान के कारण अवश्यभावी ही थी। कुछ ही देर में मुझे डेक पर गिरती बूंदो की आवाज सुनायी दी। बारिश तेज होती गयी और स्पष्ट था कि ऊपर की पहरा–टुकडी का काम बहुत अधिक बढ गया है क्योंकि मैं वहीं पडा-पडा मालिम के ऊचे स्वर मे दिये गये आदेश, दौडते हुए पैरों के धमाके, ब्लाकों की चरमराहट और आसन्न तूफान से बचाव की तैयारी की दूसरी आवाजें सुन रहा था। कुछ ही देर बाद डेक का फलका खुला और डेक का शोर-गुल नीचे भर गया। "आओ रे ! ऊपर आकर पाल संभालो !" की आवाज ने हमारे कानों का स्वागत किया और फलका फौरन बन्द हो गया।

डेक पर पहुँच कर मैंने एक नया ही दृश्य देखा। वह अनुभव मेरे लिए सर्वथा नवीन था। वह छोटा-सा तने पालों वाला जहाज प्रतिवात दिशा में बढ रहा था। और "अब डूबा, तब डूबा" की स्थिति में था। विक्षुब्ध सागर भीमकाय हथौड़े की भांति जहाज के मोरों पर भीषण हुकारो के साथ सवेग प्रहार कर रहा था। उसकी उत्ताल तरगें डेक पार करके हमे पूरी तरह भिगोये दे रही थी। तेज पवन रस्सियो के झुरमुटो मे सीटिया बजा रहा था। जोर-जोर से आदेश दिये जा रहे थे जो मेरे लिए अगम्य थे लेकिन जिनका पालन बिजली की तेजी से किया जा रहा था। रस्सिया थामे मल्लाह अपनी तीखी आवाज और खास लहजे मे गा रहे थे। अभी मुझे चलते जहाज में डेक पर काम करने का अभ्यास नही हुआ था। मैं बहुत बीमार था और मुझ में कुछ भी कर सकने की ताकत नही रह गयी थी। चारों ओर सूचीभेद्य अधकार छाया था। इसी समय मुझे शिखरपाल को छोटा करने का आदेश दिया गया।

मुझे याद नही कि मैंने यह काम कैसे पूरा किया। शिखरपाल को छोटा करने के इरादे से मैं यार्डों पर चढ गया और पाल की रस्सी को पूरी ताकत से अपनी तरफ खीचने लगा। इससे ज्यादा कर पाने की स्थिति मे मैं था भी नही क्योकि मुझे याद पडता है कि शिखरपाल के यार्ड से हटने के पहले मेरी तबीयत कई बार खराब हुई। कुछ ही देर बाद डेक पर शाति छा गयी और हमे नीचे आने का आदेश मिल गया। लेकिन मैं इससे खुश हुआ होऊं—ऐसी बात न थी। नीचे की हालत और भी बदतर थी। सारी चीजें उलट-पलट हो गयी थी और पेंदी के सडे पानी की दुर्गंध से मेरा सिर फटा जा रहा था। मैंने सोचा ऐसे स्टीअरेज से सर्द और गीला डेक ही क्या बुरा था ?

मैंने अक्सर दूसरों की समुद्र-यात्रा के अनुभव सुने थे, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मेरा अनुभव उन सब से अधिक कटु है। सबमे दुखद बात तो यह थी कि दो साल तक चलने वाली यात्रा की यह पहली ही रात थी। जब हम डेक पर थे तब भी हमारी हालत अच्छी नहीं थी। हमें कुछ न कुछ करने के आदेश बराबर मिल रहे थे। अफसर का कहना था कि बराबर कुछ न कुछ करते रहना हमारे ही हित में है। लेकिन, नीचे की नारकीय स्थिति से तो हम ऊपर फिर भी अच्छे थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि डेक पर काम करते समय मुझे जब कभी मतली आती थी

तब मैं फलका उठा कर नीचे झांकता था और मुझे कै हो जाती थी। नीचे की दुर्गंध उलटी कराने की दवा-जैसा काम कर रही थी ।

दो दिनो तक यही हालत रही ।

बुधवार, बीस अगस्त । आज सुबह चार से आठ तक हमने पहरा दिया । जब चार बजे हम डेक पर पहुँचे तो हालात काफी सुधर चले थे । समुद्र शान्त हो चला था और हवा मद्धम पड गयी थी । तारे जगमग कर रहे थे । वातावरण के साथ ही मेरी भावनाओं मे भी तदनुकूल परिवर्तन आया लेकिन बीमारी की वजह से मैं बडी कमजोरी महसूस कर रहा था । मैं जहाज की कटि में खडा था । धीरे-धीरे पौ फट रही थी और सुबह की रोशनी की पहली किरणें फूट चली थी । समुद्र पर होने वाले सूर्योदय की प्रशसा मे बहुत--कुछ कहा गया है लेकिन मेरे विचार से किनारे पर होने वाले सूर्योदय की तुलना में यह कुछ नही है। सूर्योदय को जीवत और सप्राण बनाने के लिए चिडियो का कलरव, जागते मनुष्यो की चहल-पहल, पेडो, पहाडियो, शिखरो और छतो पर चमचमाती प्रकाश की पहली किरणें आवश्यक हैं। लेकिन यद्यपि समुद्र पर "वास्तविक सूर्योदय" इतना सुन्दर नही होता फिर भी विस्तीर्ण समुद्र पर "भोर के फूटने" के दृश्य की सुषमा अतुलनीय होती है ।

पूर्वी क्षितिज से फूट कर गहन समुद्र के तल पर धुंधला-सा प्रकाश फैलाने वाली पहली धूसर किरणो मे कुछ ऐसा है जो आपके चारों ओर फैले समुद्र की नि सीमता और अज्ञात गहराइयों से मिल कर मनुष्य में एकाकीपन व त्रास की भावना जगाता है । उसे अपना भविष्य विषादपूर्ण दिखायी देता है । प्रकृति का दूसरा कोई भी दृश्य मनुष्य पर यह प्रभाव नही डाल सकता । धीरे-धीरे यह दृश्य विलीन हो जाता है, प्रकाश तेज होता जाता है सूरज ऊचा उठता जाता है और समुद्र के सामान्य व एकरस दिवस का प्रारभ होता है ।

मैं इस प्रकार के विचारो मे खोया हुआ था कि "जाओ ! जाकर हैंड पंप लगाओ।"—अफसर का यह आदेश सुनायी पडा और मैं चौंक उठा । मुझे याद आया जहाज पर दिवास्वप्नों में खोने का समय नही दिया जाता, बल्कि भोर की पहली किरण के साथ मल्लाहों को काम मे जोत दिया जाता है । "आलसियो" यानी बढई, रसोइए, स्टीवार्ड आदि को बुलवा कर पंप लगाया गया और तब हमने डेक धोने शुरू किये । जिन दिनो जहाज समुद्र में रहता है उन दिनो डेकों की

धुलाई रोज की जाती हैं और इसमे लगभग दो घन्टे लगते हैं। आज मुझमें इतनी ताकत भी न रह गयी थी कि मैं इसमें भाग ले सकूं।

जब धुलाई का काम खत्म हो गया, सफाई हो गयी और डोरिथा आदि समेट ली गयी तो मैं डंडो पर बैठ गया और नाश्ते के समय बजने वाली सात घन्टियो का इन्तजार करने लगा। मुझे इस तरह निकम्मे बैठे देख अफसर ने प्रमुख मस्तूल पर रायल शिखर से लेकर नीचे तक ग्रीज लगाने का हुक्म दे दिया। उस समय जहाज काफी हिल-डुल रहा था और मैंने तीन दिन से कुछ नही खाया था, इसलिए एक बार तो मेरे मन में आया कि उससे कहूँ कि नाश्ते के पहले मैं कुछ कर सकने की स्थिति में नही हूँ, लेकिन मुझे मालूम था कि "मुसीबत का सामना कर के ही उसे जीता जा सकता है", और अगर मैंने जरा भी ढिलाई या सुस्ती दिखायी तो मैं पानी नही मागूंगा। इसलिए मैंने चुपचाप ग्रीज का डब्बा उठाया और रायल मस्तूल शिखर पर चढ़ गया। जब आप डेक से मस्तूल पर ऊपर की ओर चढ़ते हैं तो, लीवर का आलम्ब होने के कारण, ऊचाई के अनुपात में जहाज का हिलना भी अधिक होता जाता है। इन जोरदार झटकों और मेरी बदमिजाजी को शह देती हुई ग्रीज़ की बदबू ने मेरा पेट फिर से खराब कर दिया, और जब मैं डेक के अपेक्षाकृत समतल भाग पर आ गया तब मेरी जान में जान आयी। कुछ ही देर बाद सात घन्टियाँ बजी, लाग लगा दिया गया, पहरा नियुक्त कर दिया गया और हम नाश्ता करने गये।

यहा मुझे अपने सीधे-सादे अफ्रीकी रसोइए की सलाह याद आती है।

"अब", उसने कहा, "छोकरे तुम्हारे पेट की अच्छी तरह सफाई हो गयी है, किनारे की गन्दगी का एक कण भी तुम्हारे अन्दर नही रह गया है। अब तुम्हे नया रास्ता पकडना चाहिए—अपनी सारी मिठाई समुद्र में फेंक दो और समुद्री रोटी व उम्दा नमकीन बीफ के अलावा कोई चीज मत खाओ, और मैं कसम से कहता हूँ हार्न पहुँचने के पहले ही तुम्हारी ये पसलियाँ दीखनी बन्द हो जायेंगी और तुम भी दूसरे मल्लाहों की तरह हट्टे-कट्टे हो जाओगे। जब यात्रियो को समुद्री बीमारी हो जाय और वे बढ़िया-बढिया पकवानों आदि की बात करें तो उन्हे भी यही राय देनी चाहिए।"

आधा पाउन्ड नमकीन बीफ और एकाध बिस्कुट पर निर्भर रहने से मेरे अन्दर जो परिवर्तन आया उसका वर्णन करना मेरे लिए कठिन है। मेरी तो काया

ही पलट गयी। दोपहर से पहले हमें नीचे पहरा देना पड़ता था इसलिए मेरे पास कुछ समय था। लिहाजा मैंने रसोइए से मजबूत, ठन्डे, नमकीन बीफ का एक टुकडा लिया और बारह बजे तक उसे चबाता रहा। जब हम डेक पर पहुँचे तो मुझे अपने अन्दर कुछ जान महसूस हुई और मैं अपना काम जोश के साथ सीखने लगा।

दो बजे के लगभग हमने ऊपर से "जहाज हो!" की जोरदार आवाज सुनी। शीघ्र ही हमने दो जहाजो को प्रतिवात दिशा में जाते देखा। मैंने पहली बार समुद्र मे चलता जहाज देखा था। उस समय, और बाद में भी, मैंने सोचा कि इसकी गणना दुनिया के सबसे मनोरजक और सुन्दर दृश्यो में होनी चाहिए। वे दोनों हमारे जहाज की अनुवात दिशा से होते हुए जल्दी ही आवाज की पहुँच के परे चले गये लेकिन कप्तान ने दूरबीन की मदद से उनके नाम पढ लिये थे। उनमें से एक न्यूयार्क का जहाज "हैलेन मार" था और दूसरा बोस्टन का दो मस्तूलों वाला जहाज "मरमैड" था। वे दोनो पच्छिम की दिशा में जा रहे थे और उनकी मजिल थी—"हमारी प्यारी मातृभूमि"।

बृहस्पतिवार, इक्कीस अगस्त। आज आकाश स्वच्छ था। सूर्य निकल आया था। चारो ओर रोशनी और ताजगी का आलम था। अब मैं समुद्री जीवन का अभ्यस्त हो चला था और मैंने अपना नियमित काम शुरू कर दिया था। छः घन्टियाँ बजने पर, यानी दोपहर के लगभग तीन बजे, हमने अपने डाबा बाजू पर एक जहाज देखा। हर नये नाविक की तरह मैं भी उससे बोलने के लिए बेहद उतावला हो रहा था। वह हमारे पास चला आया। उसने अपना प्रमुख शिखर-पाल बाध दिया और दोनो जहाज "आमने-सामने" ठहर गये। वे इस तरह हिल डुल रहे थे मानों दो लडाकू घोडे आमने-सामने खडे हों और दोनों की लगामें उनके सवारों के हाथो में हों। इसमे पहले मैंने किसी जहाज को इतने नजदीक से नहीं देखा था, और मुझे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि इतने शात समुद्र में भी वह जहाज इतना अधिक हिल-डोल रहा था। पहले वह अपना सिर पानी में डुबोता तब धीरे-धीरे उसका पिच्छल सिरा पानी मे डूबता जाता था और विशाल मोरे ऊपर उठते आते थे जिन पर लगा ताबा चमचमाता था। अन्त में उसका पिच्छल सिरा पानी मे डूब जाता था और समुद्र के खारे पानी में डूबते हुए उसके कुरवे वृद्ध वरुण के केशगुच्छ सरीखे लगते थे। उसके डेक यात्रियों से भरे थे जो "जहाज

हो ।" को पुकार सुन कर ऊपर आ गये थे और अपनी पोशाको व मुखाकृतियो से स्विस और फ्रासीसी उत्प्रवासी लगते थे । उन्होने पहले फ्रेंच भाषा मे हमारा अभिवादन किया लेकिन उत्तर न पाकर उन्होने हमारा अभिवादन अंग्रेजी में किया । उस जहाज का नाम "ला कैरोलिना" था । वह हेवर से आया था और न्यूयार्क जा रहा था । हमने उससे यह सूचित कर देने के लिए कहा कि बोस्टन से अमरीका के उत्तरी-पच्छिमी तट के लिए निकले "पिलग्रिम" जहाज को समुद्र में चलते हुए पांच दिन हो गये हैं । इसके बाद उसने पाल तान लिये और हवा भर कर चल दिया । हम भी उथल-पुथल हो गये पानी मे से आगे बढे । आज का दिन मजे में बीता, अब आगे मौसम एक-सा और आरामदेह रहने की आशा थी । हम समुद्री जीवन के उस एकरस दैनिक क्रम के अभ्यस्त हो चले थे जो किसी तूफान के आने या किसी जहाज अथवा भूखंड के दर्शन से ही टूटता है ।

* * *

अध्याय—३

बहुत दिनो तक मौसम बड़ा सुन्दर रहा । हमारे जीवन की एकरसता को तोडने वाली कोई घटना नहीं घटी । मैं समझता हूँ कि एक व्यापारी पोत, जिसका सुन्दर उदाहरण हमारा जहाज था, के कामों, नियमों, और रिवाजों के बारे में बताने का इससे अच्छा मौका नही मिल सकता ।

सब से पहले कप्तान की बात करें । वह सर्वशक्तिमान प्रभु है । वह पहरा नही देता, कही आना-जाना उसकी अपनी मर्जी पर निर्भर है, वह किसी के प्रति उत्तरदायी नही हैं, हर आदमी के लिए—चाहे वह उसका प्रमुख अधिकारी ही क्यों न हो—यह जरूरी है कि बिना किसी हील-हुज्जत के कप्तान का हुक्म बजाये । वह चाहे तो अफसरों को नौकरी से निकाल सकता है या उन्हें साधारण नाविक की भाँति अगवाड में काम करने पर मजबूर कर सकता है । हमारे जहाज की तरह जिस जहाज मे यात्री या नौभार-विक्रय-अधिकारी नही होते उसके कप्तान को अपने ही गौरव के अलावा कोई संगी-साथी नही मिलता । सर्वोच्च शक्ति संपन्न होने की चेतना, और कभी-कभी उस शक्ति के प्रयोग, के अलावा उसे कोई सुख भी उपलब्ध नही होता । हाँ, अगर वह अधिकांश कप्तानों से भिन्न स्वभाव का आदमी हो तब तो बात ही और है ।

बडा या मुख्य मालिम जहाज का प्रधानमन्त्री और कार्याधिकारी है। वास्तव में पूरे जहाज की देख-भाल की जिम्मेदारी उसी पर रहती है। वह कप्तान का प्रमुख सहायक, बोसुन, पाल कप्तान और कर्णपाल होता है। कप्तान जो-कुछ करना चाहता है वह बडे मालिम को बता देता है। उस काम का पर्यवेक्षण करने, अलग अलग लोगों को उनके काम सौंपने और काम को सफलतापूर्वक संपन्न कराने की जिम्मेदारी बडे मालिम की ही होती है। लाग बुक भी बडे मालिम के पास ही रहती है जिसके लिए वह जहाज के मालिकों और बीमा कराने वालों के प्रति उत्तरदायी होता है। इसके अलावा नौभरण और नौभार की देख-भाल और सुपुर्दगी की जिम्मेदारी भी उसी पर होती हैं। एक तरह से मल्लाहों आदि से हंसी-मजाक करने की जिम्मेदारी भी उसी पर है क्योकि कप्तान अपने अधीन काम करने वालो से मजाक करने की उदारता नही दिखाता और दूसरे मालिम की कोई परवाह नही करता। इसीलिए जब कभी बडा मालिम मल्लाहो के मनोरंजन के लिए एकाध भौडा मजाक या हसी-ठिठोली करता है तो सभी मल्लाहो को हसना पडता है।

दूसरा मालिम अक्सर साधारण मल्लाह से अफसर बनाया जाता है। वह न अफसर है न मल्लाह। नाविक अफसरों की तरह उसका लिहाज नही करते और उसे अन्य मल्लाहो की भाति ही ऊपर जाकर शिखरपालो को छोटा करने या लपेटने का काम करना पडता है और कोलतार व ग्रीज में हाथ देना पड़ता है। नाविक उसे "नाविकों का खानसामा" कहते हैं क्योंकि उन्हे बटा सन, मार्लिन तथा जरूरत की अन्य वस्तुएं दूसरा मालिम ही देता है। इसके अलावा बोसुन का लाकर भी उसी के पास रहता है, यानी उसमें से नाविको को डोरी आदि भी वही देता है। उससे आशा की जाती है कि वह अपनी शान के खिलाफ कोई काम न करे और मल्लाहो से अपने आदेशों का पालन कराये फिर भी उसे मालिम जैसे अधिकार नही दिये जाते और उसे अन्य नाविको के साथ काम करना पडता है। दूसरा मालिम एक ऐसा जीव है जिसे दिया तो बहुत-कम जाता है लेकन उससे उम्मीद बहुत कुछ की जाती है। प्रायः उसका वेतन आम मल्लाह से दुगुना होता है और वह केबिन में खाता और सोता है; लेकिन उसे लगभग सारे समय डेक पर रहना पडता है और वह दूसरी पगत में खाता है, यानी कप्तान और बडा मालिम जो चीजें छोड देते हैं वे उसके हिस्से में आती हैं।

स्टीवार्ड कप्तान का नौकर और पैंट्री का स्वामी है जिससे और किसी को—यहाँ तक कि बडे मालिम को भी—कोई मतलब नही रहता । इन विशेषताओ के कारण स्टीवार्ड अक्सर बड़े मालिम की आँख का कांटा बन जाता है क्योंकि बडा मालिम अक्सर जहाज पर किसी ऐसे आदमी का होना पसन्द नही करता जो सीधे उसके अधीन न हो । मल्लाह लोग भी उसे अपने वर्ग का नही समझते और स्टीवार्ड कप्तान की महरबानी पर ही जीता है ।

रसोइया नाविको का सरक्षक है । जो लोग उसे खुश रखते हैं उन्हें उसकी कृपा से अपने दस्ताने और मोजे सूखे मिल सकते हैं, तथा वे रात के पहरे के समय रसोई से अपना पाइप भी जला सकते हैं । स्टीवार्ड, रसोइया, बढई और, अगर हो तो, सिलमाकुर (पाल निर्माता)—ये चारों लोग पहरा नही देते, बल्कि दिन भर काम मे लगे रहने के कारण इन्हे रात मे सोने की इजाजत होती है । जब कभी जहाज के सभी मल्लाहो को काम पर बुलाया जाता है तो इन्हें रात के समय भी काम करना पडता है ।

नाविको को यथा सम्भव दो बराबर भागों मे बाँटा जाता है, जिन्हें पहरा या पहरा-टोली कहा जाता है । बडा मालिम डाबा (बाँई) टोली का पहरा सम्भालता है और दूसरा मालिम जमना (दाँई) टोली का । ये दोनों पहरे का समय आपस में बाँट लेते हैं । हर चार घन्टे बाद डेक पर पहरा देते हुए नाविक आराम के लिए नीचे चले जाते हैं और नीचे आराम करते हुए नाविक डेक पर आ कर पहरे पर तैनात हो जाते हैं । मिसाल के तौर पर अगर आठ से बारह बजे तक पहला पहरा बड़े मालिम और उसकी डाबा टोली को देना है तो चार घन्टे बीतने पर वह दूसरे मालिम और उसकी जमना टोली को पुकार लेगा । जब दूसरा मालिम अपनी टोली के साथ डेक पर पहरा सम्भाल लेगा तो बडा मालिम अपनी टोली के साथ सुबह के चार बजे तक के लिए नीचे चला जायेगा । चार बजे बडे मालिम के साथ यह टोली फिर डेक पर आ जायेगी और सुबह आठ बजे तक पहरा देगी । चूंकि इस टोली को बारह में से आठ घन्टे पहरा देना पडा जब कि दूसरे मालिम की टोली को केवल चार घन्टे ही पहरे पर रहना पडा, इसलिए उस टोली को सुबह आठ से दोपहर बारह बजे तक नीचे पहरा देना पडेगा । युद्धपोत में, और कुछ व्यापारी जहाजों में भी, पहरों की यह अदला-बदली चौबीसों घन्टों चलती रहती है लेकिन अधिकांश व्यापारी जहाजों की भाँति हमारे जहाज में भी सब लोगों को

बारह बजे से सूर्यास्त तक ही काम करना पडता था। हाँ खराब मौसम की बात और है, उसमें तो हर समय पहरा देने के अलावा काम ही क्या था ?

जो लोग कभी समुद्र-यात्रा पर नही गये हैं, उनके लिए "अधपहरों" के बारे में जान लेना शायद उपयोगी हो। अधपहरो का काम पहरो का वक्त इस तरह बाँटना है कि एक टुकडी को रोज एक ही समय पर पहरा न देना पडे। ऐसा करने के लिए सुबह चार से आठ तक पहरा देने वाली टोली को दो भागो या अध पहरों में बाँट दिया जाता है । इनमें से एक टोली चार से छ: तक पहरा देती है और दूसरी छ. से आठ तक। दूसरे शब्दों में चौबीस घन्टों को छ: पहरों मे न बांट कर सात पहरो में बाँटा जाता है और इस प्रकार हर रात टोलियों का पहरा देने का समय बदलता रहता है। चूंकि अधपहरे वाली टोली गौधूलि के समय आती है जब कि दिन का काम खत्म हो चुका होता है और रात के काम का बंटवारा होना बाकी रहता है इसलिए यह वक्त ऐसा होता है जब जहाज का हर आदमी डेक पर मौजूद होता है। कप्तान छतरी के बाजू पर टहलता रहता है, बडा मालिम अनुवात दिशा में रहता है और दूसरा मालिम खुले गलियारे के आस-पास रहता है। स्टीवार्ड केबिन में अपना काम खत्म कर चुकता है और रसोइए के साथ पाइप पीने रसोई में चला आता है। नाविक बेलन चर्खी पर बैठे रहते हैं या अगवाड में लेटे धुंआ उडाते, गाते या गप्पें लडाते हैं। आठ बजे आठ घन्टियां बजती हैं, लाग लगा दिया जाता है, पहरा बिठा दिया जाता है, पहिए पर से पटा उतार दिया जाता है, रसोई बन्द कर दी जाती है और दूसरी टोली नीचे चली जाती है।

सुबह होते ही डेक वाली पहरा-टोली डेको की धुलाई-सफाई कर देती है। सफाई, मोरवे की टंकी में ताजा पानी भरने में और डोरियाँ आदि लपेटने में सात घन्टिया (साढ़े सात बजे) बज जाती हैं और सब लोगो को नाश्ता दिया जाता है। आठ बजे दिन का काम शुरू हो जाता है और एक घन्टे के भोजन-काल को छोड़ कर दिन भर सब लोग काम मे लगे रहते हैं।

इस ब्योरे को खत्म करने से पहले एक दिन के काम के बारे में बता देना अच्छा होगा। इससे जमीन पर रहने वाले लोगों में नाविक के जीवन के बारे में आम तौर पर फैली गलतफहमी दूर हो सकेगी। आम तौर पर लोगो को यह कहते सुना जाता है—"क्या समुद्र पर नाविक लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे नही रहते ?

आखिर उन्हें काम ही क्या हो सकता है ?" यह गलती स्वाभाविक है और इतनी अधिक बार की जाती है कि हर नाविक इसे दूर करना चाहता है। पहली बात तो यह है कि जहाज का अनुशासन ही कुछ ऐसा है कि रात और रविवार के अलावा जब भी कोई मल्लाह डेक पर होता है तो उसे बराबर कुछ न कुछ करते रहना पडता है। रात या रविवार के अलावा आप किसी अनुशासित जहाज में किसी भी नाविक को डेक पर खाली खडा, बैठा या डेक के किसी पहलू पर झुका हुआ नही देख सकते। अफसर का फर्ज है कि वह हर आदमी को बराबर काम में लगाये रखे, अगर और कोई काम न हो तो वह उससे तारो मे लगी जग छुडाने का काम ही ले। किसी सरकारी जेल मे भी कैदियो से इतने नियमित रूप से काम नही लिया जाता, और न उन पर इतनी कडी निगरानी ही रखी जाती है। जब नाविक अपनी ड्यूटी पर होते हैं तो उन्हे बातचीत की मनाही होती है, और यद्यपि जब वे ऊपर होते हैं या एक-दूसरे के पास ही होते हैं तो खूब बातें करते हैं, लेकिन अफसर की खुशबू पाते ही वे भीगी बिल्ली बन जाते हैं।

नाविको से क्या-क्या काम लिया जाता है—जहा तक इस सवाल का संबन्ध है, यह एक ऐसी बात है जिसे वही आदमी समझ सकता है जो जहाज पर नौकरी कर चुका हो। जब हमारा जहाज बन्दरगाह से चला ही था तो पहले एकाध सप्ताह हमें प्रायः हर समय काम में लगे रहना पडा। तब मैंने सोचा था कि चूं कि अभी यात्रा शुरू ही हुई है इसलिए हमे कुछ अधिक काम करना पड़ रहा है। जल्दी ही हमारा जहाज यात्रा का अभ्यस्त हो जायेगा और तब हमें जहाज चलाने के अलावा कोई काम ही न रह जायगा। लेकिन, मैंने देखा कि दो साल तक लगातार यही सिलसिला चलता रहा और दो सालों के बाद भी उतना ही काम बाकी था जितना शुरू में था। जैसा कि अक्सर कहा जाता है, जहाज औरत की घड़ी की तरह है जिसे हर वक्त मरम्मत की जरूरत रहती है। बन्दरगाह छोडते समय दुपेंचा पालों को पिरोना पड़ता है, सभी सचल रस्सियों की जाच करनी पडती है, जो बेकार होती हैं उन्हे उतार कर उनकी जगह नयी रस्सियो को पिरोना पड़ता है, तब अचल रस्सियो को खींच कर देखा जाता है कि उनमें से कोई कमजोर तो नही है, कमजोर की जगह मजबूत रस्सियाँ लगायी जाती हैं, हजारों तरीकों से जरूरी मरम्मत करनी पडती है, और जहाँ उन असंख्य रस्सियों या यार्डों में घर्षण की संभावना होती है वहां रगड़पट्टी या चैफिंग गियर का

प्रयोग किया जाता है। जहाज पर चैफिंग गियर लगाने, उतारने और उसकी मरम्मत करने का काम ही इतना ज्यादा होता है कि किसी यात्रा पर दो-तीन आदमी अपनी ड्यूटी के घन्टों में लगातार इसी काम में लगे रह सकते हैं।

इस बारे मे दूसरी विचारणीय बात यह है कि जहाज के लिए जरूरी बटा सन, मारलीन, बाधने-जूटने का सामान वगैरह छोटी-मोटी चीजें जहाज पर ही तैयार की जाती हैं। जहाज के मालिकान बडी तायदाद में "पुराना कबाड" खरीद लेते हैं। नाविक लोग उसे सुलझा कर उसमें से सूत निकालते हैं, और सूत मे गाठ बाध-बाध कर उसकी पिंडियाँ बना लेते हैं। इन सुतलियों का प्रयोग अनेक कामो में होता है, लेकिन इनका बडा हिस्सा बटा सन तैयार करने में काम आता है। इस काम के लिए हर जहाज मे एक चरखा रहता है। यह बहुत सादा होता है। इसमे एक पहिया होता है और एक तकुआ। अच्छे मौसम में डेक पर इसकी आवाज हर समय सुनी जा सकती है, और बहुत दिनों तक हममें से तीन आदमी सूत निकालने, गाठे बाधने और बटा सन तैयार करने में ही लगे रहे।

नाविकों से काम लेने का एक और ढग यह है कि उन्हें रस्सियाँ ठीक करने के काम में लगा दिया जाये। जो रस्सियाँ ढीली होती हैं (और रस्सियां अक्सर ढीली होती ही रहती हैं) उन्हे नये सिरे से कसना होता है, और यह एक खासा लम्बा और मुश्किल काम है।

जहाज के विभिन्न हिस्सो में कुछ ऐसा सम्बन्ध होता है कि अगर एक रस्सी को ठीक करना हो तो कई रस्सियों को खुद-ब-खुद ठीक करना ही होगा। अगर आप पिछले मस्तूल में तान-रस्सी बाधना चाहते हैं तो आपको शीर्ष तानें ढीली करनी ही होंगी। अगर हम इसमें कोलतार करना, ग्रीज लगाना, तेल देना, वार्निश और रोगन करना, खुरचना और सफाई करना भी शामिल कर लें जो कि एक लम्बी यात्रा के दौरान बहुत जरूरी है, और यह भी ध्यान रखें कि इस काम के अलावा नाविको को रात में पहरा देना, कर्ण संभालना, पाल छोटे करना और लपेटना, कमानी लगाना, पालों की मरम्मत करना और लगाना, सभी दिशाओं में नाव खेना और चढना-उतरना आदि काम तो करना ही पडता है तो किसी के मुह से यह सवाल नही निकलेगा कि "आखिर समुद्र पर नाविक को काम ही क्या हो सकता है?"

अगर इस कठिन परिश्रम के बाद भी—तूफान, पानी और सर्दी मे अपनी

जान हथेली पर लेकर चलने के बाद भी—अगर व्यापारी और कप्तान समझते हैं कि नाविकों ने उनके बारह डालर प्रति मास (जिसमें से उन्हे अपने लिए कपडे भी बनवाने पडते हैं), नमकीन बीफ और कडी रोटी हलाल नही किये तो वे उनसे अनिश्चित काल तक ओकम तैयार कराते रहते हैं।

अक्सर इस उपाय का सहारा बरसात में लिया जाता है। बरसात में रस्सियों वगैरह को ठीक करने का काम नही रहता और जब भयानक बारिश होती है तो बजाय इसके कि नाविकों को किसी सुरक्षित स्थान में खड़े होकर बातचीत करने और आराम से रहने की इजाजत दी जाये, उन्हे जहाज के विभिन्न भागों में भेज दिया जाता है जहां उन्हे ओकम तैयार करना पडता है। मैंने देखा है कि ओकम का सामान अक्सर जहाज के विभिन्न भागो में रखा जाता है ताकि विषुवत रेखा पर आने वाले तूफानों में भी नाविक भाग-दौड करते रहें और आलसी न बनें।

कुछ अफसर तो नाविकों के लिए काम निकालने में इतने चतुर होते हैं कि जब जहाज का लगर उठा दिया जाता हैं तो वे नाविकों को उसकी जजीर की जंग वगैरह छुडाने के काम पर बैठा देते हैं।

केपहार्न से गुजरते समय, केप आफ गुडहोप और एकदम उत्तरी व दक्षिणी अक्षाशो में इस तरह का काम नहीं लिया जाता; लेकिन मैंने ऐसी स्थिति में डेकों की धुलाई होते देखी है जिसमे ताजा पानी जम जाये। पी जाकेट पहने सब मल्लाहों को मैंने ऐसे मौसम में रस्सिया ठीक करते देखा है जिसमें हमारे हाथ इतने जम जाते थे कि उनसे सूआ भी न पकडा जाता था।

मैं अपनी कहानी से इसलिए कुछ दूर निकल आया हूँ ताकि पाठक नाविक के जीवन और काम के बारे में यथासंभव सही अनुमान लगा सके। मैंने यह सारा विवरण यहां इसलिए दे दिया है क्योकि कुछ दिनों तक हमारा जीवन इन कामों को यथावत दुहराने तक ही सीमित रहा जिनके बारे में एक साथ ज्यादा अच्छी तरह बताया जा सकता था।

इस प्रसंग को समाप्त करने से पहले मैं यह जरूर बताना चाहूँगा कि जहाज का बढई उन जहाजों में भी बारहों महीने काम में लगा रहता है जो यात्रा के लिए सर्वथा उपयुक्त समझे जाते हैं। इस एक बात से स्थल पर रहने वाले लोग अनुमान लगा सकते हैं कि जहाज के बारे में उनकी जानकारी कितनी कम है।

* * *

अध्याय ४

"कैरोलिना" से हमारी मुलाकात इक्कीस अगस्त को हुई थी। इसके बाद कई दिन तक कोई ऐसी बात नही हुई जो हमारे जीवन की एकरसता को भग, करे कि—

शुक्रवार, पाँच सितम्बर, हमने अपने जहाज के जमना बाजू पर एक जहाज देखा। पता चला कि वह दो मस्तूलों वाला एक अंग्रेजी जहाज है। उसे व्यूनोस आयर्स से चले ४९ दिन हो चुके थे और वह लिवरपूल जा रहा था। वह अभी गया भी न था कि "जहाज हो!" की पुकार फिर से हमारे कानों में पडी और हमारी नजर अपने से दूर जाते हुए एक जहाज पर गयी। जल्दी ही वह 'हमारी आवाज की पहुंच से बाहर हो गया लेकिन हम इतना समझ गये कि वह हरमाफ्रो-डाइट किस्म का दो मस्तूतों वाला ब्राजीली जहाज था। वह जिस रास्ते पर जा रहा था उसे देख कर ऐसा लगता था कि वह ब्राजील से चला था और यूरोप के दक्षिण में, सभवत· पुर्तगाल, जा रहा था।

रविवार, सात सितम्बर, उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाओ का प्रदेश शुरू हो गया। आज सुबह हमने पहली बार डालफिन मछली का शिकार किया। मैं इस मछली को देखने को बहुत उत्सुक था। मरती हुई मछली के रंगों को देख कर मुझे निराशा ही हुई। ऐसी बात नही कि वे रंग सुन्दर नही थे, लेकिन इतने सुन्दर नही थे जितने सुन्दर बताये जाते हैं। वे बडे अस्पष्ट थे। फिर भी यह मानना पडेगा कि दिन के साफ मौसम में पानी की सतह के कुछ फुट नीचे तैरती हुई डालफिन की सुन्दरता की बराबरी और कोई चीज नही कर सकती। इसके शरीर की बनावट बडी शानदार होती है, साथ ही खारे पानी में रहने वाली मछलियो में यह सब से तेज तैरती है; और इसकी प्रतिपल परिवर्तित भगिमाओं पर पडने वाली और पानी से टकरा कर लौटने वाली सूरज की चमकीली किरणें इसे ऐसा सौंदर्य प्रदान कर देती हैं मानों यह मछली न होकर इन्द्रधनुष की सात कलाओं में से अलग छिटकी हुई कोई एक कला हो।

यह रविवार भी समुद्र पर हसी-खुशी बीतने वाले सैबाथ की तरह गुजरा। सैबाथ के दिन डेक धोये जाते हे, डोरियो वगैरह की तह की जाती है और हर चीज ठीक-ठाक कर दी जाती है, फिर सारे दिन एक बार मे एक ही पहरा रखा जाता है। मल्लाह लोग अपनी सब मे बढिया सफेद पतलून और लाल या चैंक की कमीज

पहनते हैं, और उन्हें पालो मे जरूरी परिवर्तन करने के अलावा और कोई काम नही रहता। वे पढ़ने, गप्प लडाने, तम्बाकू पीने और कपडों की मरम्मत वगैरह मे मशगूल रहते हैं। अगर मौसम अच्छा हो तो वे अपना काम या किताबें लेकर डेक पर आते हैं और अगवाड या बेलन चरखी पर बैठे रहते हैं। उन्हे यह आजादी सिर्फ सैबाथ के दिन ही मिलती है। जब सोमवार आता है तब वे फिर अपने काम के कपड़े पहन कर छ: दिन तक काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

सैबाथ का महत्व बढाने के लिये उस दिन मल्लाहो को एक तरह का हलुआ खिलाया जाता है, जिसे 'डफ' कहते हैं। इसमें कोई खास बात नही होती। यह आटे को पानी मे उबाल कर तैयार किया जाता है और शीरे के साथ खाया जाता है। यह बहुत गाढ़ा, काला-सा और लसदार होता है, लेकिन जहाज पर इसे भी पक्वान्न समझा जाता है और नमकीन बीफ और सूअर के गोश्त के मुकाबले ऐसा मानना कही तक ठीक भी है। कुछ शैतान कप्तान घर लौटते समय मल्लाहो को सप्ताह में दो बार डफ देकर उनका दिल जीत लेते हैं।

कुछ जहाजो पर सैबाथ के दिन धार्मिक उपदेशो आदि का प्रबन्ध होता है; लेकिन चू कि हमारे जहाज पर कप्तान से लेकर छोकरों तक—सभी लोग स्वेअरर्स थे इसलिए हमारे लिए एक दिन का आराम और शात सामाजिक आनन्द ही एक बड़ी गनीमत था।

कई दिन तक हमारा जहाज उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाओं में तेजी से आगे बढ़ता रहा, कि—बाईस सितम्बर की सुबह को सात घटिया सुनने पर जब हम डेक पर पहुचे तो देखा कि दूसरे पहरे के लोग पालो पर पानी फेंक कर उन्हें भिगो रहे हैं और पीछे की तरफ देख रहे हैं। हमने उस दिशा मे अपना पीछा करता हुआ एक छोटा, दो मस्तूलो वाला, क्लिपर जैसी बनावट वाला जहाज देखा जिसका ढाँचा काला था। हमने तेजी से काम शुरू कर दिया और जहाज पर अधिक से अधिक पाल तान दिये। पालो पर बाल्टियों से पानी फेंक-फेंक कर हम उन्हे बराबर गीला करते रहे। अत में नौ बजे के लगभग हल्की बारिश आ गयी और हमने हाथ रोक दिया।

उस जहाज ने हमारा पीछा करना जारी रखा। जिधर हम मुड़ते उधर ही वह भी मुड़ जाता था ताकि वह हवा के रूख में आगे बढ़ सके। कप्तान ने अपनी दूरबीन से देख कर बताया कि वह जहाज हथियारों से लैस है; उस पर काफी

आदमी हैं और किसी देश का झन्डा नही है। हमने जहाज को हवा के ऊपर छोड दिया। हमें मालूम था इसी में हमारी भलाई है, क्योकि तेज हवा में हमारा जहाज क्लिपर का मुकाबला नही कर सकता था। इसके अलावा एक और बात हमारे पक्ष में थी। हवा हलकी चल रही थी और उस जहाज के मुकाबले हमारे पास पाल कही ज्यादा थे। सुबह के समय वह हमसे तेज चल रहा था और दोनों जहाजों के बीच का फासला घटता जा रहा था लेकिन बारिश आने पर और हवा के कुछ और धीमे हो जाने के बाद हम उसे पीछे छोडने लगे।

सारे दिन जहाज का हर आदमी काम पर लगा रहा। हमने अपने हथियारों को तैयार कर लिया था लेकिन अगर वह जहाज वही चीज साबित होता जिसका हमें डर था तो हम थोड़े से लोग उसका कुछ भी न बिगाड पाते। सौभाग्य से आकाश में चन्द्रमा नही था और रात एकदम काली थी। हमने जहाज की रोशनी पूरी तरह बुझा दी थी और रास्ता कुछ बदल दिया था। इन सब बातो को देखते हुए हमे आशा थी कि हम उसकी पकड़ से निकल जायेंगे, बिनैकल में रोशनी नही थी और तारे ही हमारे मार्ग दर्शक थे। सारी रात जहाज पर खामोशी छायी रही। भोर होने पर उस जहाज का कही नाम-निशान भी न था, और हमने अपना जहाज फिर सही रास्ते पर डाल दिया।

बुधवार, एक अक्टूबर। आज देशातर २४° २४' प० में विषुवत रेखा पार कर ली। पुराने रिवाज के अनुसार आज मैं पहली बार वरुण का बेटा कहलाने का अधिकारी बना। इस पदवी को पाकर मैं बहुत खुश था। इसे प्राप्त करने के लिए शुरू में अधिकतर नये लोगो की जो मिट्टी पलीद की जाती है, मैं उससे बच गया था। एक बार इस रेखा को पार कर लेने के बाद मल्लाह को वरुण का बेटा समझा जाता है और उसे कोई तग नही कर सकता, बल्कि वह खुद दूसरो का मजा लेने का हकदार हो जाता है। यह रिवाज पुराना है और अब इसका प्रचलन बहुत कम हो गया है। हा, अगर जहाज मे मुसाफिर हो तो मल्लाह इसका फायदा उठाते हैं और तब खासी दिल्लगी रहती है।

पिछले कुछ दिनो से सब मल्लाह समझ गये थे कि दूसरा मालिम, जिसका नाम फास्टर था, सुस्त और लापरवाह किस्म का आदमी है और नौविद्या मे अनाडी है। वे यह भी समझते थे कि कप्तान उससे सख्त नाखुश है। इस मामले में कप्तान की

शक्तिमत्ता सर्वविदित थी और हम सब को लगता था कि किसी दिन फास्टर की शामत जरूर जायगी।

फास्टर (जिसके पद के कारण उसके नाम के आगे मिस्टर लगाना जरूरी था) आधा नाविक था। उसने छोटी-मोटी यात्राएं ही की थी और उनके बीच बहुत दिनो तक वह अपने घर पर रहता था। उसका बाप अमीर था और उसे खूब पढाना चाहता था लेकिन सुस्त और निकम्मा होने के कारण उसे जहाज पर काम करने के लिये भेज दिया गया। यहाँ भी उसे कामयाबी न मिल सकी। बहुत से बदमाश लडको में मल्लाह के गुण होते हैं लेकिन उसमें यह प्रतिभा भी नही थी—उसमें वह बात ही नही थी जो असली मल्लाहो में होती है। वह उन अफसरों के वर्ग में से था जिन्हे उनका कप्तान नापसन्द करता है और मल्लाह नफरत की नजर से देखते हैं। वह मल्लाहों से बडी दूनगी हाकता, कप्तान के बारे में अनापशनाप बकता और छोकरों के साथ खेलता था। फलस्वरूप अनुशासन में ढील आ गयी थी।

इस तरह के व्यवहार से कप्तान शक्की हो उठता है और मल्लाह नाखुश। वे ऐसा अफसर चाहते हैं जो सक्रिय और सजग हो, उनमें कम घुलेमिले लेकिन उनसे उदारता का बरताव करे। उसमें एक बुराई यह भी थी कि पहरा देते समय वह अक्सर सो जाया करता था। एक बार कप्तान ने उसे सोता हुआ पकड लिया था और उसे चेतावनी दे दी गयी थी कि अगर आइन्दा ऐसा हुआ तो उसे अपदस्थ कर दिया जायगा। इस सोने को रोकने के लिए डेक पर से मुर्गियों के दरबे हटा दिये गये क्योंकि कप्तान न तो डेक पर खुद बैठता था और न किसी अफसर को ही बैठने देता था।

विषुवत रेखा को पार करने के अगले दिन की बात है। रात को आठ से बारह बजे वाले पहरे में मैं भी था। अंतिम दो घन्टों में सुकान चलाने का काम मुझे करना था। रात-भर छोटे-मोटे अंधड़ आते रहे थे और कप्तान ने हमारे पहरे के मुखिया मि० फास्टर को पहरे पर बहुत सावधान रहने का आदेश दे दिया था। जब सुकान मेरे हाथो में आया तो कुछ ही देर बाद मैंने देखा कि वह बहुत उनींदा हो चला है। अन्त में वह कम्पेनियन पर पाव फैला कर लेट गया और गहरी नींद सो गया।

कुछ ही देर बाद कप्तान दबे पाँव डेक पर आया और कुछ देर कुतुबनुमा को देखता हुआ मेरे पास खडा रहा। आखिरकार अफसर को कप्तान की मौजूदगी का

पता लग गया, लेकिन उसने इसका अहसास न होने दिया, बल्कि यह जनाने के लिए कि वह सो नही रहा है खुद-ब-खुद गुनगुनाने और सीटी बजाने लगा। इसके बाद पीछे की ओर देखे बिना वह आगे गया और प्रमुख रायल पाल को ढीला कर देने का हुक्म दिया। जब वह पलट कर पीछे आने लगा तो उसने ऐसा अभिनय किया मानो डेक पर कप्तान को देख कर उसे आश्चर्य हुआ हो।

लेकिन उसकी यह चाल बेकार गयी। कप्तान की आंखें बहुत तेज थी। ठेठ मल्लाहाना लहजे में वह दूसरे मालिस पर बरस पडा..."बदमाश! तुम बिल्ली के गू हो...लीपने के मतलब के हो न पोतने के; तुम न आदमी हो, न लडके, न मल्लाह! तुम तो जहाज पर दूसरी चीजों की तरह एक बेजान चीज हो! नमक हराम हो। तुम एकदम गये–बीते हो!" उसने मल्लाह के शब्द कोश में पाये जाने वाले इससे भी कही खूबसूरत शब्दों का प्रयोग किया। इस लताड के बाद दूसरे मालिम को उसके कमरे मे भेज दिया गया और बाकी पहरा खुद कप्तान ने पूरा किया।

सुबह सात बजे सब लोगो को जहाज के पिछले भाग में बुलाकर यह सूचना दी गयी कि फास्टर को अपदस्थ कर दिया गया है। हमसे अपने में से किसी एक मल्लाह को दूसरा मालिम चुन लेने को कहा गया। अक्सर कप्तान इस तरह का प्रस्ताव रखते ही हैं। यह एक अच्छी नीति है क्योकि मल्लाह यह सोच कर खुश होते हैं कि उन्हें अफसर को चुनने की शक्ति प्राप्त है और उस चुने गये अफसर का भी आदेश तो उन्हें मानना ही पडता है।

जैसा कि अक्सर होता है, हमारे मल्लाहो ने एक ऐसे आदमी को चुनने की जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया जिसकी वे शिकायत भी न कर सकें। उन्होंने यह काम कप्तान को ही सौंप दिया। कप्तान ने एक चुस्त और होशियार नौजवान मल्लाह को चुना जिसका जन्म केनेबेक के पास हुआ था और जो कई लम्बी यात्राएं कर चुका था। कप्तान ने यह घोषणा की :

"मैं जिम हाल को चुनता हूँ—वह तुम्हारा दूसरा मालिम है। तुम लोगों को मेरी ही तरह उसके आदेशों का भी पालन करना होगा और उसे मिस्टर हाल कह कर पुकारना होगा।" फास्टर को अगवाड में एक साधारण मल्लाह बना दिया गया और उसके नाम के साथ लगा हुआ मिस्टर उड गया, जबकि एक साधारण नौज-

वान मल्लाह जिम अब मिस्टर हाल बन गया और छुरी-काटों और चाय की प्यालियो के प्रदेश मे निवास करने लगा।

रविवार, पाँच अक्टूबर। मैं सुबह वाले पहरे में था। पौ फटनी शुरू ही हुई थी कि अगवाड में से एक मल्लाह चीख उठा, "जमीन हो!" मैंने पहले कभी यह आवाज नही सुनी थी इसलिए मेरी समझ मे इसका मतलब नही आया। लेकिन जब मैंने उस दिशा मे देखा जिसमे और सब लोग देख रहे थे तो पाया कि जमीन दिखायी दे रही है। हमने जल्दी से अपना जहाज जमीन की ओर बढाया। जमीन से हम अपने देशातर का निश्चय कर लेना चाहते थे, क्योकि कप्तान के क्रोनोमीटर के हिसाब से हम २५° पश्चिम मे थे जबकि उसका खयाल था कि हम पश्चिम की दिशा मे काफी दूर चले आये हैं। वह काफी समय से इस चक्कर में पडा था कि उसका क्रोनोमीटर खराब हो गया है या सेक्सटैंट। इसका फैसला जमीन ने किया और यह साबित हुआ कि खराबी कप्तान के क्रोनोमीटर में थी। उसका प्रयोग करना बन्द कर दिया गया, और बाद को और ज्यादा खराब हो जाने के कारण उसका प्रयोग कभी किया ही नही गया।

किनारे की ओर जाने पर हमे ज्ञात हुआ कि हम पर्नेम्ब्यूको बन्दरगाह के सामने आ पहुँचे हैं। दूरबीन से ओलिंडा कस्बा, घरों की छतें और विशाल गिरजा घर दिखायी पड रहे थे। हम बन्दरगाह के मुहाने से होते हुए आगे बढ़े तो हमें सम्पूर्ण पालों का दो मस्तूलों वाला एक जहाज बन्दरगाह में जाता मिला। दोपहर के दो बजे हम फिर हवा के रुख में अपने मार्ग पर चल पड़े। अब जमीन पीछे छूट चली थी और दिन छिपते-छिपते वह ओझल हो गयी।

यहाँ पहली बार मैंने कट्टमारन नौकाएं देखीं। इनका निर्माण लट्ठों को बांध कर किया जाता है, इनमें एक विशाल पाल होता है और, यद्यपि यह बात अजीब-सी लगती है, इन्हे समुद्र में चलने वाली नावों की दृष्टि से श्रेष्ठ और विश्वसनीय माना जाता है। हमने देखा कि हर नाव में एक से लेकर तीन तक आदमी बैठे थे और, यद्यपि तब तक काफी अंधेरा हो चला था, वे समुद्र की ओर जा रहे थे। इन नावों में इन्डियन आदिवासी मछलियां पकडने जाते हैं और चूंकि कुछ ऋतुओं में मौसम स्थिर रहता है इसलिए उन्हें कोई भय नही लगता। ओलिंडा से विदा लेकर हम केप हार्न की ओर चल दिये।

हमारे लाप्लाटा नदी के अक्षांश में पहुँचने से पहले कोई खास घटना नहीं

हुई। इस प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम दिशा से भयानक झंझाएं उठती हैं जिन्हे पैम्परो कहते हैं। इस नदी में चलने वाले जहाजो के लिए ये झझाए बहुत ही विनाशक होती हैं। समुद्र में मीलो तक इनका डर रहता है। अक्सर झझा आने के पहले बिजली चमकती है। कप्तान ने मालिम अफसरों को समझा दिया था कि बहुत चौकस रहना और अगर दक्षिण-पश्चिम मे बिजली चमकती दिखायी दे तो फौरन पाल गिरा लेना। इसकी पहली झलक तब दिखायी पडी जब मैं डेक पर था। मैं अनुवात गली में पहरा दे रहा था कि मुझे मोरों पर बिजली चमकती दिखायी दी। मैंने इसकी सूचना मालिम को दी। वह वहाँ आया और उस दिशा में कुछ देर देखता रहा। दक्षिण-पश्चिम की ओर घोर अधकार छाया हुआ था और कोई दस मिनट बाद हमें बिजली साफ दिखायी पडी। जो दक्षिण-पूर्वी हवा पहले चल रही थी वह अब थम गयी थी और चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता छायी हुई थी। हम तुरन्त ऊपर चढ गये और हमने रायल व टापगॅलेंट पालो को लपेट दिया। इसके बाद हमने फ्लानजीब उतार ली और यार्डों को पवनानुकूल कर के हम झंझा के आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगे। एक विराट कुहेलिका, जिसके ऊपर एक काला बादल था, हमारी ओर बढी आ रही थी और उसने क्षितिज के उस भाग को ढक लिया। यद्यपि सारे आसमान में तारे चमक रहे थे लेकिन उस कोने के तारे उस विराट कुहेलिका में छिप गये थे। आँधी के एक जोरदार झोंके के साथ यह कुहेलिका हम पर टूट पड़ी। ओलो और वर्षा की झड़ी लग गयी और हम देखते रह गये। अच्छे-अच्छे सूरमाओ को पीठ दिखानी पडी। सौभाग्य से हम इस आक्रमण के लिए पहले से तैयार थे। जहाज के पालों की अधिकांश रस्सिया खोल दी गयी थी। वह आधी के रुख मे दौड रहा था और उसकी रस्सियां उड़ रही थी। कप्तान ने सब लोगो को ऊपर काम पर बुला लिया था। बडी तरकीबो से और बडी मुश्किल से हम जहाज को उसके रास्ते पर डाल सके।

जिसे वाकई झझा कहते हैं उसका यह पहला ही झटका था जो मेरे देखने मे आया। गल्फस्ट्रीम में हमने अपने शिखर पाल छोटे कर दिये थे। मैं इसे बहुत महत्वपूर्ण बात समझता था लेकिन एक अनुभवी मल्लाह के लिए यह बडी ही मामूली बात है। अब मैं जहाज की बातो और अपनी जिम्मेदारी को समझने लगा था इसलिए मैं पालों की रस्सी छोटी-बडी करने का काम बखूबी करने लगा था। आदेश मिलते ही मैं डेक पर पहुँच गया और इस काम मे मुझे बेहद

मजा आया। इसकी वजह यह है कि एक पहरे के लोग तो जहाज के अग्र भाग के शिखर पाल को छोटा करते हैं और दूसरे पहरे के लोग प्रमुख भाग के शिखर पाल को, और हर एक की कोशिश यह रहती है कि पहले उसका पाल छोटा हो। दूसरे पहरे के मुकाबले हमें एक फायदा था। उनका मुखिया मुख्य मालिम कभी ऊपर नही जाता जबकि हमारा नया मुखिया बडा ही फुर्तीला था और हमारे काम में हाथ लगाते ही वह पालो को छोटा करने मे जुट जाता था। इस तरह हम हमेशा आगे रहते थे और चटपट अपना काम खत्म करने के बाद गाने लगते थे ताकि दूसरे पहरे वालो को पता चल जाय कि हमने उनसे पहले अपना काम पूरा कर लिया है।

मल्लाह के जितने काम हैं उनमें पालों की रस्सिया छोटा करना सबसे मजेदार है। सब मल्लाह यह काम करते हैं और पाल-रस्सियों को खोलने के बाद वे समय नही गवाते। अगर कोई आदमी फुर्तीला नही होता तो दूसरा उससे बाजी मार ले जाता है। एक आदमी खुले बाजू पर पतवार डोरी ठीक करने जाता है, दूसरा आदमी अनुवात में जाता है। तीसरा और चौथा मल्लाह पाल-कोनों पर काम करने जाते हैं। बाकी लोग बट में काम करते है। वहाँ काम करते समय उनकी कुहनी से कुहनी भिडी रहती हैं। रस्सियाँ छोटा करने मे यार्डों के किनारो का महत्व सबमे अधिक है लेकिन पाल लपेटते समय सबसे शक्तिशाली और अनुभवी मल्लाह यार्ड के बिचले हिस्से में बट बनाता है। अगर दूसरा मालिम फुर्तीला हो तो ये दोनों काम वह खुद ही करता है। अगर उसमें अनुभव, शक्ति या फुर्ती की कमी है तो कोई दूसरा आदमी यह गौरव प्राप्त कर लेता है, जिससे दूसरे मालिम की बदनामी होती है।

बाकी रात और अगले दिन भर हमने अपने जहाज के पाल बहुत छोटे रखे क्योंकि हवा तेज चल रही थी। इसके बाद ओले तो नही पड़े लेकिन बारिश खासी हुई और मौसम बड़ा ठन्डा और तकलीफदेह रहा। हमें इसलिए तकलीफ और अधिक उठानी पडी क्योंकि हम ठन्डे मौसम का सामना करने के लिए तैयार नही थे और हमारे शरीरो पर महीन कपड़े थे। जब हमें नीचे पहरा देने का हुक्म मिला तो हम खुश हुए। हमने मोटे कपडे, बूट और साउथ वेस्टर टोप पहन लिए। सूरज ढलने के समय झंझा कुछ कम हुई और दक्षिण पश्चिम में अंधेरा छंटना

शुरू हुआ। धीरे-धीरे हम अपने पाल बढाने लगे और मध्य रात्रि से पहले ही जहाज पर टापगैलेंट पाल तान दिये गये।

अब हम केप हार्न पहुचने की सोच रहे थे। आगे हमें सर्दी के मौसम की आशका थी और हम जरूरी तैयारी करने मे लगे थे।

मगलवार, चार नवम्बर। भोर मे बाई और जमीन दिखायी दी। वे दो द्वीप थे जिनकी शक्ल एक सी थी आकार अलग-अलग। वे द्वीप पानी के तल से ही उठने शुरू हो गये थे और काफी दूर तक उनकी ऊँचाई आडी थी। बहुत दूर होने के कारण वे गहरे नीले रङ्ग के लग रहे थे और कुछ ही घन्टों मे हम उन्हे उत्तर-पूर्व की दिशा मे छोड आये। ये फाकलैंड द्वीप थे। हम उनके और पैटैगोनिया प्रदेश के बीच से गुजरे थे। सध्या के समय दूसरे मालिम ने, जो कि मस्तूल के सिरे पर था, बताया कि उसने दायी और जमीन देखी है। वह जरूर स्टेटनलैंड द्वीप रहा होगा और अब हम केप हार्न प्रदेश में प्रवेश कर चुके थे। उत्तर की ओर सुहावनी हवा चल रही थी। हमने शिखर मस्तूल और टापगैलेंट पाल तान लिये थे और इस बात की पूरी आशा थी कि आगे की यात्रा सुन्दर होगी और उसकी गति तेज होगी।

* * *

अध्याय—६

बुधवार पाच नवबर। पिछली रात मौसम साफ था और हमने साफ तौर पर मैगेलन बादलो और साउदर्न क्रास के दर्शन किये। मैगेलन बादलो मे तीन छोटी नीहारिकाए हैं—दो आकाशगगा की तरह चमकीली हैं और एक अधेरी। दक्षिणी उष्णकटिबध को पार करने के तुरन्त बाद पहली बार इनके दर्शन होते हैं। जब केप हार्न से चलते हैं तब ये सीधे सिर के ऊपर होते हैं। क्रास मे सलीब की शक्ल मे स्थित चार तारे होते हैं और इसे आकाश का सबसे चमकीला तारा-मडल माना जाता है।

आज (यानी बुधवार) दिन के पूर्वार्द्ध में हवा मन्द थी लेकिन अपराह्न में तेज चलने लगी और हमने रायल पाल लपेट दिये। हमने दुर्पेचा पाल तने रहने दिये। कप्तान का कहना था कि जहा तक हो सका वह उन्हे लपेटे बिना ही काम चलायेगा। ठीक आठ बजे के पहले (उस अक्षाश में उस समय सूरज छिपा

ही था) "सब लोग ऊपर आयें" की पुकार आयी। जब हम तेजी से डेक पर पहुँचे तो देखा कि दक्षिण-पश्चिम से एक बड़ा काला बादल सारे आसमान को काला करता हुआ हमारी ओर लुढकता चला आ रहा है। "यह आया केप हार्न" मुख्य मालिम ने कहा और हम पाल छोटे भी न कर पाये थे कि उसने हमें घर लिया।

कुछ ही क्षणो में सागर इतना अधिक उमड आया जितना मैंने पहले कभी नही देखा था। सामने समुद्र उफन रहा था और हमारा नन्हा-सा जहाज उसमें ऊब-डूब रहा था। उसका अगला हिस्सा पानी में था। पानी उसके अन्दर घुसा आ रहा था और जहाज की हर चीज को धो डालने की धमकी दे रहा था। कुछ हिस्सों मे कमर-कमर पानी भर गया था। हम ऊपर पहुँचे, शिखरपालों को और छोटा कर दिया और दूसरे सब पालों को लपेट दिया।

लेकिन इससे भी कुछ न हुआ, जहाज उफनते हुए सागर में ऊब-डूब कर रहा था और झंझा प्रतिक्षण तेज हुई जा रही थी। सहिम वृष्टि और ओले हम पर कयामत बरपा कर रहे थे। हमने फिर-फिर इससे बचने की अनेक तरकीबें कीं लेकिन यह तय हो गया कि आगामी यात्रा सुखमय नही होगी। मन ही मन हम भीषण आंधियों और ठन्डे मौसम के लिए तैयार हो गये।

रात भर वह भयानक तूफान छाया रहा—वर्षा, ओले, बर्फ और हिमयुक्त वृष्टि जहाज पर आघात करते रहे—आँधिया चलती रही और सागर उफनता रहा। भोर के समय (सुबह के ३ बजे के करीब) डेक बर्फ से भर गया था। कप्तान ने स्टीवार्ड के हाथ पहरा देने वाले हर मल्लाह के लिए एक-एक गिलास ग्राग शराब भिजवायी, और जब तक हम केप प्रांत से निकल नही आये तब तक सुबह के पहरा देने वाले और शिखरपाल छोटा करने वाले मल्लाहों को रोज यह शराब मिलती रही। सूर्योदय के समय बादल छंट गये और हवा अनुकूल होने पर हम फिर अपने रास्ते पर चल पडे।

बृहस्पतिवार छः नवंबर। दिन के पूर्वार्द्ध में तो मौसम पहले से अच्छा रहा, लेकिन रात को हमें फिर वही दृश्य देखना पडा। इस बार हमें पिछली रात की तरह जहाज का रुख नही बदलना पडा बल्कि शिखरपाल को छोटा करके हम जहाज को प्रतिवात दिशा मे ही चलाते रहे।

आज रात दो घन्टे जहाज का सुकान मुझे चलाना था। मैं अनुभवहीन था लेकिन मेरे काम से अफसर सतुष्ट हुआ, और जितने दिन हमारा जहाज केप हार्न

प्रदेश में रहा उतने दिन मैंने और एस——ने सुकान चलाने का मौका नही छोडा। यह बात गर्व करने योग्य थी क्योकि झंझा में और उफनते हुए समुद्र में ऐसे जहाज को चलाना जिसके पाल बिल्कुल छोटे कर दिये गये हों भारी निपुणता और सतर्कता का काम है। इसका मंत्र है "जब धक्का लगे तो ढीला छोड दो"; इस दशा में जरा सी लापरवाही से उफनते हुए समुद्र की कोई उत्ताल तरंग जहाज में घुसकर डेको पर की हर चीज को बहा ले जा सकती है या जहाज के मस्तूलों को उखाड़ सकती है।

शुक्रवार, सात नवंबर। सुबह के समय हवा कुछ मन्द पड़ी और दोपहर से पहले हवा रुकी रही और लगातार एक गहरा सन्नाटा छाया रहा। हमारे चारों ओर घना कुहरा फैला था। सागर के सन्नाटे दुनिया के अन्य सब भागों के सन्नाटे से निराले होते हैं, क्योकि यहा हर समय समुद्र उफनता रहता है और सन्नाटे का आलम कुछ देर ही रह पाता है, और चूकि जहाज पर न पालों का नियंत्रण होता है न रडर का इसलिए वह पानी पर लट्ठो की तरह असहाय भाव से तिरता रहता है।

सुबह के सन्नाटे से मुझे एक दृश्य याद आ गया जिसका वर्णन करना मैं उस समय भूल गया था, लेकिन जो मुझे इसलिए याद रहा चूंकि वह पहला मौका था जब मैंने ह्वेल मछलियों को सांस लेते सुना था। यह उस रात की बात है जब हम फाकलैंड द्वीपसमूह और स्टेटनलैंड के बीच से होकर गुजरे थे।

हमें बारह से चार तक पहरा देना था। डेक पर आने पर पता चला कि हमारा जहाज शान्त पडा है। उसके चारों ओर घना कुहरा था और समुद्र इतना चिकना था मानों उस पर तेल डाल दिया हो। थोडी-थोड़ी देर बाद समुद्र-तल से एक नीची लहर सी उठती थी जो जहाज को थोडा सा उकसा देती थी लेकिन उससे पानी की शीशे जैसी चिकनाहट नही टूटने पाती थी।

हमारे आस-पास श्लथ ह्वेलों और दूसरी बडी मछलियों के झुन्ड थे जो हमें कुहरे के कारण दीख नही रहे थे। वे या तो धीरे-धीरे तल की ओर आ रही थीं या अपने लम्बे शरीर को पसार रही थीं और इस क्रम में उनके उन खास तरह के गहरे लम्बे साँस लेने की आवाज आ रही थी जिनसे उनके आलस्य और शक्ति का परिचय मिलता है।

पहरे के कुछ मल्लाह सो रहे थे और बाकी एकदम चुप थे; इसलिए मेरा

व्यामोह तोडने वाली कोई चीज नही थी, और मैं समुद्र की ओर झुका हुआ उन शक्तिशाली जीवों का धीरे-धीरे सास लेना सुन रहा था। एक मछली उछली और मुझे ऐसा लगा मानो मैं कुहरे मे भी उसके काले शरीर को देख सकता हूँ; फिर एक दूसरी, जिसकी आवाज मैं दूर से सुन सकता था—अन्त में मुझे ऐसा लगा जैसे वह नीचा और स्थायी उभार सागर की उस चौडी छाती का उभार हो जो सांस लेने में उठ-गिर रही है।

आज शाम के समय (अर्थात् शुक्रवार सात नवबर को) कुहरा साफ हो गया और हम समझ गये कि अब फिर वही मुसीबत आयेगी। सूरज छिपते ही फिर वही सिलसिला शुरू हो गया। फिर से हमने वे ही तरकीबें कीं। जहाज के कुछ पाल बहुत छोटे कर दिये गये और कुछ लपेट दिये गये। लगभग सारी रात बर्फ, ओने और हिमयुक्त वृष्टि जहाज पर प्रहार करते रहे और समुद्र उसके मोरो से टकराता रहा। उसने उसका अगला हिस्सा घेर रखा था लेकिन, चूंकि वह अपने रास्ते पर बढ़ रहा था इसलिए कप्तान ने उसका रुख बदलने से इनकार कर दिया।

शनिवार, आठ नवंबर। आज का दिन सन्नाटे और घने कुहरे से शुरू हुआ और ओलों, बर्फ, तूफानी हवा और छोटे किये गये शिखरपालों के साथ खतम हुआ।

रविवार, नौ नवंबर। आज सूरज साफ उगा और बारह बजे तक यही आलम रहा। इस समय कप्तान ने चारों ओर निरीक्षण किया। केप हार्न को देखते हुए आज का मौसम अच्छा था और हम यह सोचकर खुश हुए कि चूंकि सारी यात्रा में सभी रविवार सुख से बीते हैं इसलिए आज रविवार के दिन मौसम अच्छा रहे—यह ठीक ही है। हमे जो समय मिला उसे हमने स्टीअरेज और अग-वाड को साफ करने, दूसरी सब चीजो को ठीक-ठाक करने और अपने गीले कपड़ों को सुखाने मे लगाया।

लेकिन यह सिलसिला ज्यादा देर तक नही चला। पाँच और छः बजे के दर-म्यान्—तब सूरज को निकले लगभग तीन घन्टे बीत चुके थे—हमें डेक पर पहुँचने की हाँक सुनायी पडी। सभी लोगों को काम करने डेक पर बुलाया गया था। एक असली केप हार्न हमारी तरफ बढा आ रहा था। दक्षिण-पश्चिम की ओर से स्लेटी काले रंग का एक विराट बादल हमारी ओर आ रहा था : हमने उसके

आने से पहले ही पाल उतार लेने की पूरी कोशिश की (क्योंकि दिन के पूर्वार्द्ध में हमने जहाज पर हल्के पाल तान दिये थे)। हमने पाल लपेट दिये थे और आगे के हिस्से की डोरियों को ठीक-ठाक कर रहे थे कि तूफान ने हमे आ दबोचा। पलक मारते समुद्र, जो तूफान से पहले अपेक्षाकृत शान्त था, उफन-उफन कर ऊंचा उठने लगा, और अधेरा इतना बढ गया मानो रात हो गयी हो।

ऐसे ओले और हिमयुक्त वृष्टि मैंने पहली बार देखे थे। इनकी तेजी के कारण हम जहाज के ऊपरी हिस्से की रस्सियो से चिपके से रह गये। पाल उतारने में हमे और दिनों के मुकाबले अधिक समय लग रहा था क्योकि पाल कडे और गीले हो गये थे और रस्सियां, जंजीरें आदि बर्फ व हिमयुक्त वृष्टि से ढक गयी थीं। हमारे शरीर सर्द पडे जा रहे थे और तूफान की प्रचडता ने हमे अंधा-सा कर दिया था। जब हम रस्सियों पर उतर कर डेक पर पहुँचे तो हमने देखा कि नन्हा जहाज क्षुब्ध सागर में गोते खा रहा है और हर बार पानी उसके मोरो पर से होता हुआ जहाज के अगले हिस्से को डुबो देता है।

ऐसे मे मुख्य मालिम ने आदेश दिया . "कोई जाकर जिब को लपेट दो।"

यह काम बडा खतरे का था, फिर भी इसे करना तो था ही। अगवाड में काम करने वाला स्वीडन का एक अनुभवी नाविक (जो उस समय मौजूद नाविकों मे सबसे कुशल था) यह काम करने के लिए आगे बढा। उसका साथ देने के लिए एक और आदमी का जाना जरूरी था। मैं मालिम अफसर के पास खडा था इसलिए मुझे ही आगे बढना पडा। बाकी नाविकों ने बेलनचरखी के पास खड़े होकर रस्सी की मदद से जिब को नीचे झुका लिया और हम दोनो डन्डों और रस्सियों का सहारा लेते हुए जिब को लपेटने के लिए उसकी बल्ली की ओर बढे। विशाल जिब अनुवात दिशा में उड रहा था और ऐसा लगता था जैसे हमें बल्ली से छुडा कर फेंक देगा।

कुछ देर तक हम कुछ न कर सके, केवल बल्ली पकडे खड़े रहे। उफनते हुए समुद्र की दो उत्ताल तरंगों ने हमें दो बार ठौढी-भर पानी में धकेल दिया।

जान (उस स्वीडिश मल्लाह का यही नाम था) डर रहा था कि बल्ली धोखा जायगी इसलिए वह वही से चीख-चीख कर मालिम अफसर से सावधानी बरतनें को कह रहा था लेकिन हवा का वेग इतना प्रचंड था और समुद्र के जहाज के मोरों पर टकराने की आवाज इतने जोर की थी कि हमारी आवाज उन लोगों तक

पहुँच ही नहीं पा रही थी, और मजबूरन हमें अपनी बल-बुद्धि पर ही निर्भर रहना पडा।

सौभाग्य से फिर इतनी उत्ताल तरंगें नही आयी और हम जिब लपेटने में सफल हो गये। रस्सियों के जाल पर से होते हुए जब हम नीचे आये तो यह देख-कर हमे बडी खुशी हुई कि डेक पर पूर्ण शान्ति थी और पहरा देने वाले नीचे जा चुके थे। हम पूरी तरह भीग चुके थे और हमे सर्दी लग रही थी। रात को भी मौसम लगभग ऐसा ही रहा।

सोमवार, दस नवम्बर। आज कुछ देर तो हमारा जहाज थमा रहा लेकिन बाकी समय उसने आगे बढना जारी रखा। अब हमने पाल छोटे कर दिये थे। दिन भर समुद्र उफनता रहा, प्रचंड वायु चलती रही और ओले तथा हिम के प्रचंड झोंके बराबर आते रहे।

मंगलवार, ग्यारह नवम्बर। वही हाल रहा।

बुधवार। वही हाल रहा।

बृहस्पतिवार। वही हाल रहा।

अब हम केप के मौसम के अभ्यस्त हो चुके थे। जहाज के पाल छोटे कर दिये गये थे और डेक की तथा नीचे की हर चीज की सुरक्षा की व्यवस्था कर दी गयी थी, इसलिए जहाज चलाने और पहरा देने के अलावा हमें और कुछ काम ही न रह गया था। हमारे सब कपडे गीले हो चुके थे और थोडी-थोडी देर बाद और गीले हो जाते थे।

नीचे पढने या काम करने की बात सोचना ही बेकार था, क्योंकि हम थकान से चूर थे, फलकों के मुख बन्द कर दिये गये थे और हर चीज गीली, तकलीफदेह, काली, गन्दी और अस्तव्यस्त हो रही थी। हम नीचे तभी आते थे जब पहरा खत्म हो जाता था। आते ही अपने गीले कपड़े निचोड कर टांग देते थे और गहरी नीद सो जाते थे। इसके बाद हम दूसरा पहरा शुरू होने के समय ही जागते थे।

एक मल्लाह कही भी सो सकता है। कैसी भी आवाज—वह आंधी की हो या पानी की, लकडी की हो या लोहे की...उसकी नीद में बाधा नही डाल सकती... और जब सुबह को हमें सर्द गीले डेक पर पहरा देने के लिए हाँक लगायी जाती थी तो हम गहरी नीद में सोये होते थे।

सुबह और शाम के समय हमें अपने-अपने टीन के डब्बे में शीरा पड़ी हुई गर्म

चाय दी जाती थी। इस समय को हम ग्रानन्द का समय कह सकते हैं। यह चाय उम्दा होती हो—ऐसी बात न थी, लेकिन गर्म और थकान मिटाने वाली होती थी और इसके साथ बिस्कुट और नमकीन बीफ खा कर हम मजे से पेट पर हाथ फेरते थे। लेकिन, हमारे इस भोजन की प्राप्ति के साथ भी एक तरह का अनिश्चय जुडा था। हमे ऊपर रसोई मे जाकर खुद अपने डब्बो में चाय और बीफ का टुकडा लेना होता था और इस बात का पूरा खतरा रहता था कि नीचे आने से पहले ही हम भोजन से वंचित न हो जाएं।

मैंने बीसो बार बीफ को जहाज के पतनाले में लौटते और लाने वाले को डेक पर चारों खाने चित्त पडे देखा है। मुझे एक अंग्रेज नाविक की याद आती है। वह मल्लाहो की टोली की जान था लेकिन कुछ ही दिन बाद हम उसे हमेशा के लिए खो बैठे। एक बार वह चाय से भरा डिब्बा हाथ में लिये दस मिनट तक रसोई मे खडा इस बात का इन्तजार करता रहा कि जहाज का हिलना कम हो तो नीचे आय। दस मिनट बाद जब उसने सोचा कि जहाज कम हिल रहा है तो वह नीचे अगवाड में पहुँचने के लिए रवाना हुआ। अभी वह बेलन चरखी के सिरे तक ही पहुंचा था कि समुद्र की एक भीषण तरंग जहाज के मोरीं से टकरायी और एक क्षण के लि मुझे उसके कन्धों और सिर के अलावा कुछ दिखायी नही दिया; अगले ही क्षण वह गिर पडा और मोरो से होकर जहाज में घुसती तरग ने उसे जहाज के पिछले भाग में पहुँचा दिया। तब दूसरे तरंगघात से जहाज का पिछला सिरा ऊंचा उठ गया और पानी जहाज के अगले हिस्से की ओर बह आया। अब वह नाविक दीर्घ नौका के ऊँचे उठे पार्श्व में सूखा पडा था। उसने अपने हाथ का चाय का डब्बा अभी पकड ही रखा था जिसमें चाय की जगह समुद्र का खारा पानी भर गया था। लेकिन वह पस्त होने वाला जीव नही था। मुसीबत की घडी में भी उसकी विनोदी प्रकृति हारना नही जानती थी। अगले ही क्षण वह उठ खड़ा हुआ और पहिए पर काम करते हुए लोगों की तरफ घूंसा तानते हुए वह नीचे की ओर चल दिया। जाते-जाते वह कह गया, "वह आदमी नाविक नही हो सकता जो मजाक को मजाक की तरह न ले।"

ऐसे मामलो में गिर पडने के अलावा एक और नुकसान भी होता था। रसोई से चाय एक बार ही मिल सकती थी। अगर वह गिर जाती थी तो दुबारा नही मिलती थी। यद्यपि मल्लाह लोग किसी मल्लाह को चाय से वंचित नही रहने देते

थे बल्कि सब थोडी-थोडी चाय उसके डब्बे मे डाल देते थे, फिर भी इसे ज्यादा से ज्यादा, किसी नुकसान को मिल कर बाट लेने का नाम ही दिया जा सकता है।

कुछ दिनो बाद मेरे ऊपर भी कुछ इसी तरह की बीती। रसोइए ने एक तरह का गरम मलीदा बनाया था। इसमे महीन पिसे हुए बिस्कुट और काली मिर्च आदि चीजें डाली गयी थी।

यह एक दिव्य पदार्थ था और अन्तिम वारी होने के कारण मुझे इस दिव्य पदार्थ को रसोई से मल्लाहो के लिए नीचे ले जाने का भार सौपा गया। फलका मुख तक तो मैं सही-सलामत आ गया लेकिन जब मैं सीढी से नीचे उतर रहा था तो समुद्र की एक तरग ने पहले तो जहाज के पिछले भाग को ऊपर उठा दिया और फिर उसे नीचे गिराती हुई आगे निकल गयी। इस झटके से सीढी अपनी जगह से हट गयी और मैं अपना सतुलन खो बैठा। नतीजा यह हुआ कि सारा दिव्य पदार्थ फर्श पर नजर आया।

आप चाहे कुछ भी महसूस करें—जहाज पर हर चीज को मजाक समझ कर उडा देना जरूरी है। अगर आप ऊपर से गिरें और पाल की पेंदी में अटक जाएं तो इसका मतलब तो यही हुआ कि आप मौत के मुंह में से बाल-बाल बच गये, लेकिन जहाज पर इस बात से आपका परेशान या गम्भीर हो उठना एकदम बेकार है।

शुक्रवार, चौदह नवम्बर। अब हम केप से पश्चिम की दिशा में चल रहे थे और अपना रास्ता अधिक से अधिक उत्तर की ओर बदल रहे थे क्योंकि उस समय प्रचड दक्षिण-पश्चिमी आंधियां चल रही थी और हमें पैटेगोनिया की ओर धकेल रही थी।

दो बजे हमने अपनी अनुवात दिशा में एक जहाज देखा। चार बजे पता चला कि वह एक विशाल जहाज था और हमारे ही रास्ते पर जा रहा था। उस समय हवा हल्की थी और हमने अपने प्रमुख टापगैलेंट पाल तान लिए थे।

इस बात का निश्चय होते ही कि उस पर कौन-कौन से पाल तने हैं हमारे कप्तान ने अपने और पाल भी तान लिये और जहाज को तेजी से आगे बढ़ाया। उस जहाज ने आगे निकलने की कोशिश की लेकिन बेकार, कुछ ही देर में हमने उसे जा पकडा। हमारी हाक के उत्तर में उसके कप्तान ने बताया कि उसका जहाज पफकीसाई का "न्यू इंग्लैंड" है। वह ह्वेल मछली का शिकार करने वाला

जहाज था और उसे न्यूयार्क से चले १२० दिन हो चुके थे। हमारे कप्तान ने उसे अपने जहाज का नाम बताया और यह भी बताया कि हमें बोस्टन से चले ६२ दिन हो चुके थे। इसके बाद दोनो कप्तानो मे देशाँतर के बारे में कुछ बातचीत हुई जिस में वे दोनों एकमत नही हो सके। फिर वह जहाज पिछड गया लेकिन रात भर वह हमें अपने पीछे आता हुआ दीखता रहा।

भोर मे हवा हल्की थी इसलिए हमने पाल तान लिये। सूर्योदय के समय हमे एक और बडा जहाज मिला जिसके अगले पिछले—दोनो भागो मे पाल तने हुए थे। यह भी ह्वेल का शिकारी जहाज था। उसने हमें रुकने का इशारा किया। करीब साढे सात बजे उनकी एक नाव हमारे जहाज के किनारे आ गयी और कप्तान जाब टेरी उससे उतर कर हमारे जहाज में चढ आया। जाब टेरी का नाम प्रशाँत महासागर के बदरगाहो और उनमें चलने वाले जहाजो के प्रायः सभी लोग जानते थे।

"क्या तुम जाब टेरी को नही जानते ? मेरा ख्याल था जाब टेरी को सभी जानते हैं," उस नाव पर आये एक नौसिखुए मल्लाह ने मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा। मैंने उससे उसके कप्तान के बारे में पूछा था।

वाकई वह आदमी यकता था। वह छ फुट लबा था और मोटे कपड़े के जूते व भूरे रंग का कोट-पतलून पहने था। धूप की वजह से उसका रंग जरूर काला पड गया था—लेकिन इसके अलावा उसमे ऐसी कोई बात नही थी जिससे उसके मल्लाह होने का अनुमान किया जा सके; फिर भी वह चालीस वर्षो से ह्वेल का व्यापार कर रहा था, और जैसा कि खुद उसने बताया कि कई जहाजो का मालिक, निर्माता और कप्तान रह चुका था। उसकी नाव के मल्लाह काफी कच्चे और नौसिखुए थे।

कप्तान टेरी ने हमारे कप्तान को समझा दिया कि उसके देशातर के हिसाब में कुछ गलती है। दिन हमारे जहाज पर बिता कर सूर्यास्त के समय वह नाव में बैठ कर अपने जहाज की ओर चला गया जो अब छः-आठ मील पीछे छूट गया था।

जहाज पर आते ही उसने एक गप्प-कथा शुरू कर दी थी जो चार घन्टे तक प्राय: अविराम चलती रही। यह गप्प स्वयं जान टेरी, पेरू की सरकार, डब्लिन फ्रिजेट और लार्ड जेम्स टाउंसलैंड, राष्ट्रपति जेक्सन और बाल्टीमोर के जहाज

"एन एम किम" के बारे में थी। यह गप्प-कथा शायद कभी खत्म न होती लेकिन संध्या के समय तेज़ हवा चल निकली और जाब टेरी ने अपने जहाज पर लौट जाने का फैसला किया।

उसकी नाव पर जो लोग आये थे उनमे से एक लडका ठेट देहाती लग रहा था। उसने जहाज या उसमें लगे पालो या रस्सियों आदि में कोई दिलचस्पी नही दिखायी बल्कि पशुओं मे घूमता रहा। जहाज के सुअरो के बाड़े के ऊपर झुक कर वह बोला—काश मैं अपने पिता के पास लौट कर उसके सुअरों को चरा सकता।

आठ बजे हमने अपने जहाज का रुख उत्तर की ओर कर दिया। अब हमारा लक्ष्य जुआन फर्नांडीज पहुचना था।

आज हमने अन्तिम बार अल्बाट्रास चिडियो के दर्शन किये। केप से चलने के बाद बहुत समय तक इन चिडियों ने हमारा साथ दिया था। इन चिडियों के बारे में मैंने जो कुछ पढा था उसके कारण इन में मेरी दिलचस्पी हो गयी थी और इन्हें देख कर मैं निराश नही हुआ। हमने लकडी की एक पटिया पर कांटा व हुक लगा कर उसे डोरी से बाँध कर जहाज के पीछे की ओर बहा दिया। इस पटिया की मदद से हमने दो-एक चिडियें पकड ली। उनके लम्बे फडफडाते पंख, लम्बे पांव और बडी घूरती-सी आँखें...ये सब चीजें उन्हे एक विशेष प्रकार का रूप प्रदान कर देती हैं। वे उडती हुई सुन्दर लगती हैं· लेकिन जीवन में मैंने जो सुन्दरतम दृश्य देखे हैं उनमे से एक इस प्रकार है: केप हार्न से चलने के बाद एक दिन समुद्र बहुत विक्षुब्ध था। बीच-बीच में गहरी निस्तब्धता छा जाती थी। ऐसी ही निस्तब्धता के समय एक अल्बाट्रास समुद्र पर सोई हुई थी।

उस समय हवा बिल्कुल बन्द थी और पानी का तल छितरा नही रहा था, लेकिन एक विराट लहर रह-रहकर उभर आती थी। हमारे ठीक सामने ही एक सर्वांगश्वेत अल्बाट्रास लहरों पर सोई हुई थी। उसने अपना सर पंखों में छिपा रखा था। एक क्षण में वह किसी विराट लहर के सिरे पर उठती दिखायी देती और फिर ऐसा लगता जैसे लहर-कोटर में समा गयी है। कुछ देर तो वह अपनी मस्ती में पडी रही लेकिन हमारा जहाज उसी की दिशा में बढ़ रहा था और छोरों से पानी के टकराने की आवाज तेज होती जा रही थी। इस आवाज को सुन कर वह जाग उठी। सिर उठा कर एक क्षण उसने हमारी ओर घूरा और फिर अपने विशाल डैनों को फैला कर उड गयी।

अध्याय—६

सोमवार, उन्नीस नवम्बर। आज का दिन बडा मनहूस था। सुबह के सात बजे थे। डेक पर दूसरी टोली पहरा दे रही थी और हमारी टोली नीचे सो रही थी। हम गहरी नीद सोये थे कि "सब लोग ऊपर आओ। एक आदमी डूब गया" की आवाज सुन कर जाग उठे।

इस मनहूस पुकार को सुन कर सभी लोगों के दिल लरज उठे। जब हम दौड कर डेक पर पहुँचे तो देखा कि जहाज को पीछे लौटाया जा रहा है। जो लडका कर्ण चला रहा था वह उसे छोड कर कुछ फेंकने चला गया था, और बढई ने, जो कि एक अनुभवी व कुशल मल्लाह था, यह देख कर कि हवा हल्की है कर्ण नीचे रख दिया था और अब वह जहाज को पीछे की ओर ले जा रहा था।

डेक पर पहरा देने वाले मल्लाह एक नाव उतार रहे थे और अगर मैंने डेक पर पहुँचने मे जरा भी देर की होती तो मै उसमे बैठने से रह ही जाता। जब हमारी नन्ही नाव विशाल प्रशात महासागर मे पहुँची तब कही मुझे पता चल सका कि हमने किसे खो दिया है। हमें छोड जाने वाले का नाम ज्यार्ज बाल्मर था। वह एक जवान अग्रेज मल्लाह था जो अपनी फुर्ती और आगे बढ कर काम करने की आदत के कारण अफसरो को प्रिय था और जिसकी मस्ती और हसी-मजाक के कारण सभी मल्लाह उसे बहुत पसन्द करते थे। वह प्रमुख शिखर-मस्तूल के सिरे में एक फीता बाधने जा रहा था। उसकी गरदन में एक फीता, ब्लाक, पाल-रस्सी और सूआ आदि चीजें लटकी थी। कुछ दूर जाने पर अचानक वह गिर पडा और शायद गिरते ही डूब गया होगा क्योकि एक तो उसे तैरना नही आता था, दूसरे उसने भारी कपडे पहन रखे थे और फिर उसकी गरदन मे वे सारी चीजें लटकी हुई थीं।

हम पीछे की ओर उस दिशा मे चले जिसमे वह गिरा था, और यद्यपि हम जानते थे कि उसके बच पाने की कोई आशा नही है फिर भी वापस लौट चलने की बात कहना कोई नही चाहता था। लगभग एक घन्टे तक हम नाव खेते रहे और यद्यपि हम सब जानते थे कि हमारी इस कोशिश से कुछ होना-जाना नही है फिर भी दिल नही मान रहा था कि उसे छोड कर वापस लौट चलें। अंत मे हमने नाव का मुंह मोडा और जहाज की ओर वापस चल पड़े।

मृत्यु सदैव हमें एक रहस्यमय रूप से प्रभावित करती है, लेकिन समुद्र पर

उसका प्रभाव सब से अधिक होता है। स्थल पर आदमी मरता है, उसके मित्रों को उसका शरीर मिल जाता है, लोग गलियों मे उसका शोक मनाते फिरते हैं, लेकिन जब आदमी जहाज मे समुद्र मे गिरता है और खो जाता है तब इस मृत्यु-घटना मे एक आकस्मिकता होती है, उस पर विश्वास कर लेना कठिन होता है, इससे सब पर एक आतन्कपूर्ण रहस्यमयता छा जाती है।

स्थल स्थल पर आदमी मरता है—आप उसके शरीर के साथ कब्र तक जाते हैं और उसकी याद मे एक पत्थर लगा देते हैं। अक्सर आप इस घटना का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। इसमे हर बार कुछ ऐसी चीज होती है कि जब यह मौत होती है तो आप उसे महसूस कर सकते हैं और जब यह घटना बीत जाती है तो उसे याद कर सकते हैं।

युद्ध में आपकी बगल में लडते हुए आदमी को गोली लगती है, उसका गोलियों से छलनी हुआ शरीर एक ठोस चीज़ के रूप में रह जाता है और यह मौत का एक ठोस सबूत है। लेकिन समुद्र में आदमी आपके पास है—बिल्कुल बगल में—आप उसकी आवाज सुन रहे हैं, और दूसरे ही क्षण वह चल देता है, और उनका स्थान एक शून्य ले लेता है।

इसके अलावा समुद्र पर आपको अपने साथी की याद बेहद सताती है।

विराट समुद्र पर एक नन्हे से जहाज मे एक दर्जन आदमियों को एक साथ कैद कर दिया जाता है—और फिर महीनों तक अपने अलावा न उन्हें कोई शक्ल दीखती है और न कोई आवाज ही सुनाई देती है, और फिर अचानक उनका एक साथी उनसे छीन लिया जाता हैं, और हर बारी पर उन्हे उसकी याद आती है। ऐसा लगता है जैसे उनका कोई अंग ही कट गया हो।

समुद्र पर इस रिक्ति को भरने वाले नये चेहरे या नये दृश्य नही होते। अगवाड़ मे एक बेंच हमेशा खाली पडी रहती है और जब रात को पहरा देने के लिए पहरा टोली बुलायी जाती है तो उसमें एक आदमी हमेशा कम रहता है। पहिया चलाते समय एक आदमी अपनी पारी लेने के लिए नही रहता और यार्ड पर काम करते समय एक आदमी की कमी हमेशा महसूस होती है। आप उसकी सूरत देखने और आवाज सुनने के लिए तरस जाते हैं क्योंकि आप उस सूरत और उस आवाज के आदी हो चले हैं, और ये चीजें आपके लिए जरूरी हो गयी हैं। आपकी हर इन्द्रिय इस क्षति का अनुभव करती है।

ये सब चीजें इस तरह की मृत्यु के प्रभाव को कई गुना बढा देती हैं और कुछ दिनो तक मल्लाहो के दिल-दिमाग पर यह असर छाया रहता है। अफसर नाविकों के प्रति पहले के मुकाबले कुछ दयालु हो जाते हैं और नाविक एक दूसरे के प्रति उदार हो जाते हैं। चुप्पी और गम्भीरता बढ जाती है। बात बात पर कसम खाना और जोर-जोर से हंसना बद हो जाता है। अफसर कुछ अधिक सजग हो जाते हैं और नाविक ऊपर जाते समय विशेष सावधान रहते हैं। मृत नाविक का जिक्र कम होता है या यह कह कर खत्म कर दिया जाता है—"गरीब ज्यार्ज चल बसा! उसकी यात्रा खत्म हो गयी! वह अपने काम में कुशल था और कर्तव्य निभाना जानता था, और हमारा प्रिय साथी था।"

तब प्राय दूसरी दुनिया की चर्चा शुरू हो जाती है क्योंकि प्रायः सभी नाविक उसमे विश्वास करते हैं, लेकिन उनके विश्वास स्थिर और बद्धमूल नही होते। वे कहते हैं—"ईश्वर उस गरीब आदमी के प्रति कठोर नही होगा", और अक्सर इस आमफहम वाक्य को दुहराते हैं जिसका अर्थ है कि इस जन्म में उन्हें जो कष्टमय और यातनापूर्ण जीवन भोगना पडा है वह इसी जन्म में समाप्त हो जायगा—"कठिन परिश्रम करने, अभाव-ग्रस्त जीवन जीने और निर्दय मृत्यु पाने के बाद नरक में जाना असंभव है।"

हमारा रसोइया एक सीधा-सादा बूढा अफ्रीकी था। वह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था और जब जमीन पर होता था तो दो बार गिरजा जाता था। रविवार के दिन वह रसोई में बाइबिल पढता रहता था। यह रसोइया अक्सर नाविकों को इस बात के लिए ऊच-नीच समझाता रहता था कि सैबाथ का दिन बुरे कामों में नही बिताना चाहिए। वह उन्हे जताता रहता था कि वरना तुम भी ज्यार्ज की तरह किसी दिन अचानक और असावधानी मे ही चल दोगे।

फिर भी, नाविक का जीवन एक ऐसा मिश्रण है जिसमे अच्छाई कम है बुराई ज्यादा, खुशी कम है गम ज्यादा। सुन्दर के साथ वीभत्स का, उदात्त के साथ सामान्य और महत्वपूर्ण के साथ तुच्छ का, नाविक के जीवन में अटूट सम्बन्ध है।

हम ज्यार्ज के न मिलने की दुखद सूचना लेकर पूरी तरह लौटे भी न थे कि उस अभागे आदमी के कपडो की नीलामी की तैयारी होने लगी। पहले कप्तान ने सब लोगों को जहाज के पिछले हिस्से में बुलाया और पूछा कि क्या सब लोग इस बात से संतुष्ट हैं कि ज्यार्ज को बचाने के लिए जितने प्रयत्न किये जा सकते थे वे

सब किये जा चुके हैं, और अब अब यहां और रुकने से कोई लाभ नहीं है ? सब नाविकों ने कहा कि अब और रुकना बेकार है क्योंकि ज्यार्ज तैरना नहीं जानता था और उसने भारी कपड़े पहन रखे थे। इसलिए हमने पालो में हवा भर ली और अपने रास्ते पर चल पड़े।

नौचालन के नियमो के अनुसार यात्रा मे मरे नाविक की संपत्ति का उत्तर-दायित्व कप्तान पर होता है; और या तो यह कोई नियम है अथवा सुविधा के लिए प्रचलित किया गया सार्वभौमिक रिवाज कि किसी नाविक के मरते ही कप्तान को फौरन उसकी चीजें नीलाम कर देनी चाहिये। इस नीलाम में नाविक बोली लगाते हैं और जिस रकम पर बोली छूटती है वह रकम यात्रा की समाप्ति पर उन्हे दिये जाने वाले वेतन मे से काट ली जाती है। इस प्रकार मृत व्यक्ति की चीजों की हिफाजत का सर दर्द व खतरा भी दूर हो जाता है और कपडे वगैरह आम तौर पर बाजार से महंगे भाव पर बिक जाते हैं।

अतः जहाज के रवाना होने से पहले ही ज्यार्ज का सन्दूक अगवाड में लाया गया और नीलाम शुरू हो गया। उसकी यह जैकेट और पतलून जिनमे हमने उसे कुछ ही दिन पहले देखा था, संदूक से निकाली गयी और उनका नीलाम कर दिया गया, जबकि शायद अभी उसका प्राण शरीर से निकला भी न हो। उसका सन्दूक जहाज के पिछले हिस्से में गोदाम के सन्दूकों के साथ रखवा दिया गया। इस तरह, ऐसी कोई चीज नही रह गई जिसे उसकी कहा जा सके। नाविक उसी यात्रा में मृत व्यक्ति के कपडे पहनने में झिझकते हैं, और जब तक बहुत ही जरूरी न हो वे प्रायः ऐसा नही करते।

जैसा कि मृत्यु के बाद प्रायः होता है; ज्यार्ज के बारे में अनेक कहानिया गढ़ ली गयी। एक ने कहा ज्यार्ज को तैरना न सीखने के लिए पछतावा था, और उसे मालूम था कि उसकी मृत्यु डूबने से होगी। दूसरे ने कहा जिस यात्रा के लिए आदमी का मन गवाही न दे उसका अंत शुभ नही होता; मृत ज्यार्ज ने जहाज पर नौकरी कर ली थी और कुछ एडवांस ले लिया था और उसे खर्च भी कर दिया था। बाद में उसका मन इस यात्रा पर आने को नही था लेकिन रुपया चुका पाने की स्थिति में न होने के कारण उसे हमारे साथ आना पडा था। एक छोकरा, जिससे ज्यार्ज की अच्छी पटती थी, बोला कि मरने से एक रात पहले पहरे के समय ज्यार्ज उससे अधिकतर अपनी मा और परिवार की बातें करता रहा था, जबकि यात्रा में इससे

पहले उसने इस विषय पर किसी से एक बार भी बात नही की थी।

इस घटना से अगली रात को मैं सिगार जलाने रसोई में पहुँचा तो मुझे लगा कि रसोइया कुछ बात करना चाहता है। इसलिए मैं डडे पर बैठ गया और उसे गप्प मारने का मौका दिया। मैंने ऐसा इसलिए भी किया क्योंकि मैं समझता था कि नाविको में आमतौर पर प्रचलित अंधविश्वास उसमें भी है और हाल ही में हुई मृत्यु ने उन्हें जगा दिया है।

उसने बताया कि ज्याजं ने अपनी मौत के बारे में अपने मित्रो को पहले ही बता दिया था। रसोइए का विश्वास था कि ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो मौत की चेतावनी पाये बिना ही मर जायें। अपने इस विश्वास को उसने अनेक सपनों और मृत्यु के पूर्व व्यक्तियों के विलक्षण व्यवहार की कहानिया सुनाकर पुष्ट किया। इसके बाद वह फ्लाइग डचमैन आदि अन्धविश्वासों की बातें करने लगा। वह बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से बात कर रहा था, जिससे साफ विदित होता था कि उसके मन मे कोई बात है। अन्त में उसने रसोई में से अपना सर निकाला और सावधानी से देखा कि कोई हमारी बातें सुन तो नही रहा है और विश्वास हो जाने पर मुझसे नीची आवाज में पूछा—

"सुनो! तुम्हे पता है यह बढ़ई किस देश का है?"

"हा", मैंने कहा, "वह जर्मन है।"

"किस तरह का जर्मन?" रसोइए ने पूछा।

"ब्रेमेन का रहने वाला है", मैंने कहा।

"क्या तुम्हे पक्का पता है?" उसने पूछा।

मैंने उसे यह दलील देकर आश्वस्त किया कि वह जर्मन और अंग्रेजी के अलावा और कोई भाषा नही बोल सकता।

"मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई", रसोइए ने कहा। "मैं डरता था कहीं वह फिनलैंड का न हो। मैं तुम्हे बताता हूँ, इसी डर के कारण मैं यात्रा में हमेशा उससे नम्रता से बात करता रहा हूँ।"

मैंने उससे डर का कारण पूछा। तब मुझे पता चला कि उसकी दृढ धारणा है कि फिनलैंड के लोग जादूगर होते हैं, खास तौर पर आंधी और तूफान तो उनके इशारे पर चलते हैं। मैंने तर्क द्वारा उसकी इस धारणा का खंडन करना चाहा लेकिन वह अनुभव की दुहाई देता रहा और अपनी बात पर अडा रहा। एक बार

वह एक जहाज में सैंडविच द्वीप समूह की ओर जा रहा था। इस जहाज का सिल-माकुर फिनलैंड का रहने वाला था, और उसमें कुछ भी कर सकने की ताकत थी, इस आदमी के पास एक बोतल थी जो हमेशा रम से आधी भरी रहती थी, यद्यपि वह इसमें से रोज खूब रम पीता था। उसने देखा था कि यह आदमी उसको मेज पर रख लेता था और घंटो उससे बातें करता रहता था। एक दिन इस आदमी ने अपना गला काट लिया। हर किसी का कहना था कि उसमे प्रेतात्मा का निवास था।

उसने यह भी सुना था कि फिनलैंड की खाडी मे जाते हुए जहाजो के साथ अक्सर ऐसा होता है कि फिनलैंड के जहाज उनके पीछे होते हैं, और दूसरे ही क्षण उनसे आगे निकल जाते हैं।

"ओह हो !" उसने कहा; "मै इन लोगों को बहुत देख चुका हूँ। अगर कोई उनकी बात न माने तो ये उसके पीछे भूत प्रेत लगा देते हैं।"

मैं अब भी संदेह प्रकट कर रहा था। अत में रसोइए ने कहा कि इसका फैसला जहाज के सबसे पुराने और अनुभवी मल्लाह जान पर छोड दिया जाय। जान जहाज का सबसे पुराना, साथ ही सबसे मूर्ख, मल्लाह था, लेकिन मैंने उसे बुलाने की सहमति दे दी। रसोइए ने सारी बात उसके सामने रखी और जैसी कि मुझे आशा थी, जान ने उसी का पक्ष लिया। उसने बताया कि एक बार वह जिस जहाज में था उसे पंद्रह दिन तक बराबर प्रचंड आंधियों का सामना करना पडा। अत मे कप्तान का ध्यान इस बात पर गया कि कुछ देर पहले उसने जिस मल्लाह को सख्त-सुस्त कहा था वह फिनलैंड का रहने वाला था। कप्तान ने फौरन उसे पकडा और कहा कि अगर वह प्रचंड आंधी को रोकेगा नही तो उसे अनीभाग मे बद कर दिया जायगा। वह मल्लाह नही माना और कप्तान ने उसे जहाज के अनी-भाग में बन्द कर दिया। उसका खाना भी बन्द कर दिया गया। डेढ़ दिन तक तो मल्लाह भूखा रहा लेकिन अत में जब उससे भूख बर्दाश्त नही हुई तो पता नहीं उसने क्या तरकीब की कि हवा ठीक बहने लगी। तब उसे छोड दिया गया।

"देखा", रसोइए ने कहा, "अब तुम इसके बारे में क्या कहते हो ?"

मैंने उसे बताया कि मैं इस घटना के सच होने से इन्कार नही करता। लेकिन वह मल्लाह फिनलैंड का होता या न होता पंद्रह दिन के बाद आंधी को आखिर रुकना तो था ही।"

"ओह", वह बोला, "जाओ अपना रास्ता नापो ! तुम समझते हो तुमने कालिज में चार जमातें क्या पढ लीं, तुम सबसे ज्यादा जानते हो, तुम उनसे ज्यादा जानते हो जिन्होंने अपनी आखो से यह सब कुछ होता देखा है। अभी कुछ दिन ठहरो, जब तुम मेरे बराबर मल्लाही कर चुकोगे तब तुम्हें पता चलेगा।"

* * *

अध्याय ७

मंगलवार, पच्चीस नवंबर, तक हम अनुकूल पवन और सुन्दर मौसम मे आगे बढते रहे। मंगलवार को सुबह के समय हमारी नजर जुआन फर्नांडीज द्वीप पर पडी। वह हमारी दृष्टि की सीध मे था और इस तरह उठा हुआ था जैसे समुद्र से कोई गहरा नीला बादल उठ रहा हो। उस समय हम द्वीप से कोई सत्तर मील दूर थे; और वह हमें इतना ऊचा और इतना नीला लग रहा था कि मैंने उसे द्वीप के ऊपर झुका हुआ बादल समझ लेने की गलती की और मैं उस बादल के नीचे द्वीप की तलाश करने लगा। धीरे-धीरे उसका रंग धूमिल और हरा पडता गया और मैंने देखा कि उसका धरातल ऊचा-नीचा है। अंततः हमे द्वीप के पेड और चट्टानें दीखने लगी और तीसरे पहर तक हम उस सुन्दर द्वीप के काफी करीब पहुच गये, और जहाज का रुख उसके एकमात्र बन्दरगाह की ओर कर दिया।

दिन छिपे जब हम बन्दरगाह के मुहाने पर पहुचे तो हमें चिली का एक लडाकू जहाज बाहर आता हुआ मिला। उसने हमें हाक लगायी। उसके अफसर ने, जो हमारे विचार से अमरीकी था, हमे रात से पहले ही बन्दरगाह मे पहुँच जाने की सलाह दी और बताया कि उनका जहाज वैल्परेजो जा रहा है।

हम तुरन्त लंगरगाह पहुँचे लेकिन चूंकि पहाडो के पास चलने वाली हवाएं हमारे जहाज के चारों ओर तूफानी झोको के रूप में आ रही थी इसलिए मध्य रात्रि के पहले हम लगर डालने में सफल नही हो पाये। लगभग बारह बजे हम चालीस फैदम गहरे पानी में आये और बोस्टन से चलने के १०३ दिन बाद हमारे जहाज ने पहली बार लगर डाला। इसके बाद पहरे की तीन टोलिया बना दी गयी और इस तरह हमने बाकी रात काट दी।

मुझे पहरा देने के लिए सुबह के तीन बजे के लगभग बुलाया गया और एक बार फिर से जमीन से घिरे होने पर, तट की ओर से आने वाले मृदुल समीर का

स्पर्श पाकर और दादुरों व झींगुरों का स्वर सुनकर मुझे जो अनुभूति हुई उसे मैं कभी नही भुला पाऊंगा। पर्वत ऐसे लगे जैसे ऊपर लटके हुए हों और कुछ देर ठहर-ठहर कर उनके बीच से एक ऊची अनुगूंज आ रही थी जो मुझे मानवेतर लगी। हमें उस ओर रोशनी नही दिखायी दे रही थी और उस आवाज का हम कोई अर्थ नहीं समझ पाये। लेकिन मालिम अफसर ने, जो यहा पहले भी आ चुका था, बताया कि यह उन स्पेनी सिपाहियों की चौकसी की आवाज है जो पर्वत की काफी ऊंचाई पर स्थित गुफाओं में कैद अपराधियों की निगरानी पर तैनात हैं। अपने पहरे का समय खत्म होने पर मैं नीचे चला गया। मैं इस बात के लिए व्यग्र था कि कब दिन निकले और मुझे इस रोमांटिक, बल्कि कहना चाहिए क्लासिक, द्वीप को निकट से देखने-परखने का अवसर मिले।

जब सब लोगो को काम पर बुलाया गया तो सूरज निकल आया था, और यद्यपि तब से ले कर नाश्ते के समय तक मैं पानी के पीपे वगैरह पहुँचाने में काफी व्यस्त रहा, फिर भी अपने चारो ओर की चीजो को मैंने अच्छी तरह देख लिया। बन्दरगाह जमीन से घिरा हुआ था। एक सिरे पर नावो के किनारे लगने की जगह थी जिसकी सुरक्षा के लिए पत्थरों का एक छोटा बांध बना हुआ था। बन्दरगाह के इस सिरे पर दो बडी नौकाएं खडी थी जिन पर एक संतरी पहरा दे रहा था। इसके पास कई तरह की झोपडिए और कुटिएं थीं जिनकी संख्या सौ के लगभग थीं। इसमें से जो अच्छी थी वे गारे की बनी थीं और उन पर कलई हो रही थी, लेकिन अधिकांश राबिन्सन क्रूसो की कुटिया की तरह खंभों और पेडों की शाखाओं से बनी हुई थीं।

गवर्नर का भवन अपनी जालीदार खिडकियों, प्लास्टर की हुई दीवारों और लाल टायलों की छत के कारण अलग ही चमक रहा था; फिर भी वह अन्य कुटियों की तरह इकमंजिला ही था। इसके पास ही एक छोटा सा पूजाघर था जो अपनी सलीब की वजह से दूर से दिखायी दे रहा था। पास ही एक लंबी, नीची, भूरी-सी इमारत थी जो एक तरह के जंगले से घिरी हुई थी जिसपर चिली का एक पुराना मैला-सा झंडा फहरा रहा था। लेकिन असल में इस इमारत को दुर्ग (स्पेनी भाषा में प्रेसिडियो) के गौरवपूर्ण नाम से पुकारा जाता था।

एक संतरी पूजाघर पर तैनात था, दूसरा गवर्नर भवन पर। कुछ संगीनधारी सैनिक या तो मकानों के इर्द-गिर्द घूम रहे थे या नावों के किनारे लगने वाले स्थान पर

खड़े हमारी नाव के आने का इतजार कर रहे थे। वे कुछ फटेहाल-से थे और उनके जूतों में से उनकी एडिया झांक रही थी।

पर्वत ऊंचे थे लेकिन इतने ऊंचे नहीं जितने उस तारों-भरी रात में लग रहे थे। वे द्वीप के मध्य भाग की ओर झुके हुए लगते थे। उन पर हरियाली थी और पेड घने थे। उन पर्वतों पर कुछ विशाल—और मेरी सूचना के अनुसार अत्यंत उपजाऊ—घाटिया थी। पर्वतो में द्वीप के विभिन्न भागो को खच्चरों के रास्ते चले गये थे।

मुझे याद आता है कि किनारे पहुँचने की उतावली में मैं और मेरा दोस्त एस–किस प्रकार मल्लाहों की हंसी का निशाना बने थे। कप्तान ने जैसे ही जहाज से नाव उतारने का आदेश दिया हम दोनो तेजी से नीचे अगवाड में गये और हमने द्वीप के लोगो से अदला-बदला करने के लिए अपनी जाकेटों की जेबों में तम्बाकू भर लिया। फिर जब कप्तान ने चार आदमियों को नाव में बैठने का आदेश दिया तब सबसे पहले नाव पर पहुँचने की जल्दबाजी में हम शायद अपनी गरदन ही तोड बैठते। इसके बाद आध घन्टे तक नाव खेने के बाद जब हम किनारे पर पहुँचे तो मल्लाह हम पर हंसे क्योंकि वे हमारी चालाकी समझ चुके थे।

नाश्ते के बाद दूसरे मालिम को हुक्म दिया गया कि वह पांच आदमियों के साथ जा कर पानी के पीपे भर कर लाये। उन पांचो मे अपना नाम भी पाकर मैं बडा खुश हुआ। हम खाली पीपे लेकर द्वीप पर आये और यहा किस्मत ने फिर मेरा साथ दिया। पानी बहुत गाढ़ा व गदला था और पीपो में भरने काबिल नही था। गवर्नर ने हमारा खयाल करके कुछ आदमियो को सोते पर ऊपर जाकर सफाई करने के लिए भेजा था। इस प्रकार हमें दो घन्टे का अवकाश मिल गया। यह समय हमने मकानों के आस-पास घूम कर और भेंट किये गये फल खाकर बिताया। द्वीप पर ग्राउड एपिल, खरबूजे, अंगूर और बहुत बडे आकार की स्ट्राबरी आदि फल बहुतायत से होते हैं। कहते हैं कि अंतिम फल पहली बार लार्ड एंसन ने लगवाया था।

सिपाहियों की वर्दी वगैरह की हालत खस्ता थी। उन्होंने बड़ी उत्सुकता से पूछा कि क्या हमारे पास जहाज पर कुछ ऐसे जूते हैं जिन्हे हम बेचना पसद करें? मुझे इस बात में पूरा शक है कि उनके पास खरीदने के साधन रहे होंगे। उन्होंने शंख और फलों के बदले तम्बाकू बड़े शौक से लिया। वहां के लोग चाकू भी खरी-

दना चाहते थे लेकिन गवर्नर ने हमे आज्ञा दी थी कि उनके हाथ चाकू न बेचें। इसका कारण यह बताया गया कि सिपाहियो और कुछ अफसरो को छोडकर वहा जितने लोग हैं वे सब दडप्राप्त अपराधी हैं जो वैलेपेरेजो से यहा भेजे गये हैं, इसलिए उन्हे किसी भी तरह के हथियार देना अनुचित है।

ऐसा लगता है कि इस द्वीप पर चिली का अधिकार था और लगभग दो साल से सरकार इसका उपयोग काले पानी के रूप मे कर रही थी। लोगो मे व्यवस्था बनाये रखने के लिए वहा एक गवर्नर की नियुक्ति की गयी थी जो मूलत: अंग्रेज था लेकिन जो चिली की नौसेना में भरती हो गया था। गवर्नर की मदद के लिए एक पादरी, आधा दर्जन कार्याध्यक्षो और सिपाहियो के एक दस्ते को भी नियुक्त कर दिया गया।

यहां व्यवस्था बनाये रखना आसान नही था। हमारे वहां पहुँचने से कुछ ही महीने पहले कुछ अपराधियों ने रात मे एक नाव चुरा ली। फिर वे बन्दरगाह मे खडे हुए दो मस्तूलो वाले एक जहाज पर पहुँचे, अपनी नाव में कप्तान और मल्लाहों को उन्होने द्वीप पर भेज दिया और जहाज लेकर चम्पत हो गये। हमें इसकी सूचना दे दी गयी थी। हमने अपने हथियार तैयार कर लिये, रात के समय जहाज पर कडी निगरानी रखी और जब द्वीप पर पहुँचे तो अपराधियो के हाथ अपने चाकू नही बेचे।

मुझे पता चला कि सबसे खतरनाक कैदी पहाडो में बनी गुफाओ में रखे गये थे और उन पर निगरानी रखने के लिए संतरी तैनात किये गये थे। दिन में उन्हे गुफाओ से निकाल कर काम पर ले जाया जाता था जहा वे कार्याध्यक्षो की देख-रेख में पानी की नहर, घाट या सार्वजनिक महत्व की किसी और चीज के निर्माण में काम करते थे। बाकी लोग अपने हाथ से बनाये घरों में सपरिवार रहते थे। और मुझे वे दुनिया के सबसे निकम्मे आदमी लगे।

उन्हे कुछ काम न था। कभी वे जगल में चहलकदमी कर आते, कभी घरो के आस-पास। कभी वे घाट पर मटरगश्ती कर लेते। कभी हमारी और हमारे जहाज की तरफ देख लेते। उनसे तेजी से बोलते नही बनता था। दूसरे लोगो के साथ बिल्कुल दूसरी तरह का सुलूक किया जाता था। उन्हे एक कतार में तेजी से हाका जाता था। उनके कंधों पर बोझा लदा होता था और उनके पीछे कार्याध्यक्ष चलते थे जिनके हाथ में लंबी छडी रहती थी और सिर पर चौडे किनारों वाला

तिनकों का बना टोप होता था। इतना अधिक फर्क किस विशेष आधार पर किया जाता था इसके बारे मे मुझे कुछ मालूम नही क्योंकि पूरे द्वीप पर केवल गवर्नर ही ऐसा आदमी था जो अंग्रेजी बोलता था और वह उस समय वहां नही था।

अपने पीपे भर कर हम जहाज पर लौट आये। कुछ ही देर बाद गवर्नर, पादरी और कप्तान हमारे जहाज पर डिनर के लिए आये। गवर्नर ने अमरीकी सैनिक अधिकारी जैसी पोशाक पहन रखी थी और पादरी अपने हुड वगैरह से लैस था जब कि कैपिटेन के बड़े-बडे गलमुच्छे थे और वह मैली सैनिक पोशाक पहने हुए था।

डिनर च न ही रहा था कि हमें कुछ दूर पर एक बड़े जहाज का आभास हुआ। जल्दी ही हमें एक ह्वेल पोत बदरगाह की ओर आता दिखायी दिया। वह जहाज कुछ दूर पर रुक गया और एक नाव हमारे पास आ लगी और उसका कप्तान हमारे जहाज पर चढ आया। वह एक सादा नौजवान क्वेकर था और उसने भूरे कपडे पहन रखे थे। उस जहाज का नाम "कोट्स" था और वह न्यू बेडफोर्ड का था। कप्तान यह देखने के लिए इधर चला आया था कि केप हार्न होकर आया कोई जहाज बदर मे है या नही। साथ ही वह अमरीका के ताजे समाचारों से भी परिचित हो लेना चाहता था। वे कुछ देर हमारे जहाज पर रहे, मल्लाहों से कुछ बातचीत की और फिर अपनी नाव पर चढकर जहाज पर लौट गये। कुछ ही देर बाद उन्होने पालो में हवा भरी और हमारी आखो से ओझल हो गये।

गवर्नर और उनके साथियो को वापस ले जाने के लिए जो छोटी-सी नाव आई उसमें मल्लाहो के लिए उपहार-स्वरूप दूध का एक बडा कढ़ाव, कुछ शख और चदन का एक लट्ठा था। दूध को बटते और खत्म होते देर न लगी। वोस्टन से चलने के बाद हमने पहली बार दूध चक्खा। मुझे चंदन का एक टुकडा भी मिला। पता चला कि चदन के पेड द्वीप के बीच मे स्थित पहाडियो पर हैं।

मुझे इस बात का हमेशा पछतावा रहा है कि मैं द्वीप पर पैदा होने वाली दूसरी चीजों के नमूने अपने साथ नहो ला सका। आगे चलकर तो मेरे पास जो कुछ था—चन्दन का वह टुकडा और एक नन्हा फूल जो मैं अपने टोप मे लगा कर जहाज पर ले आया था और जिसे मैंने किताब के पन्नो में दबा कर सुरक्षित रखा था—वह भी खो गया।

सूर्यास्त के लगभग एक घन्टा पहले पानी के पीपों को यथास्थान रखने के बाद हमने चलने की तैयारी शुरू की। इसमे हमें काफी समय लगा। एक तो हम तीस फैदम पानी मे थे दूसरे तीर की ओर से आये एक झोके की वजह से हमने मोरे वाला लंगर भी डाल दिया था, तीसरे दक्षिणी पवन के झोके हमारे जहाज को रह-रह कर हिलाते रहे थे—इसलिए हमारा लंगर खराब हो गया था। जंजीर और पालों की सहायता से बडी मुश्किल से हम लंगर उठा सके और तब समुद्र की ओर चल पड़े।

जब हम खाडी से बाहर आये तो तारो का उजला प्रकाश चारो ओर फैला था। पीछे यह उत्तुंग द्वीप अपने निस्तब्ध सौंदर्य में परिवेष्टित खड़ा था। मैंने अपने जीवन के उस सर्वाधिक रूमानी स्थल पर आखिरी नजर डाली और अलविदा ली। तब भी, और उस दिन के बाद भी हमेशा; मुझे उस द्वीप के प्रति एक अद्भुत मोह की अनुभूति हुई है। इसमें कोई शक नही कि इस मोह का एक कारण यह भी है कि घर छोडने के बाद मैने पहली बार इसी द्वीप को देखा था, लेकिन इसका इससे भी बडा कारण यह था कि बचपन में मैंने 'राबिसन क्रूसो' पढा था और इस उपन्यास के किसी भी बाल पाठक के मन में उपन्यास मे वर्णित इस टापू के प्रति एक लगाव हो जाना स्वाभाविक है। इसके अलावा इस द्वीप के विशिष्ट आकर्षण के कुछ और भी कारण हैं—इसके पर्वतों की ऊंची-रूमानी सीमा, इसकी वनस्पति की सुन्दरता और हरियाली, मिट्टी की अतिशय उर्वरता और दक्षिणी प्रशात के सर्वजयी व्यापक विस्तार के बीच इसकी एकाकी सत्ता।

समय-समय पर जब-कभी इस जगह की यादों ने मुझे घेरा है मैंने इसके बारे में कुछ और बातें पता लगाने की कोशिश की है। यह लगभग ३०° ३०' दक्षिण में स्थित है और उसी अक्षांश में चिली के तट पर स्थित वैलपरेज़ो से ३०० मील से कुछ अधिक दूर है। इसकी लम्बाई लगभग पन्द्रह मील और चौडाई पाँच मील है।

पूरे द्वीप में एक ही बन्दरगाह था जिसमें हमने लंगर डाला था (लार्ड एन्सन के नाम पर उसका नाम कबरलैंड खाड़ी पड़ गया था)। मुख्य खाड़ी के दोनों ओर दो छोटे खात थे जिन पर नावें लग सकती थीं। लंगर डालने की सब से अच्छी जगह खाड़ी के पश्चिमी किनारे पर है जहाँ हमने समुद्र-तट से करीब तीन केबिल दूर और ३० फैदम से कुछ अधिक पानी में लंगर डाला था। यह बन्दर-

गाह उत्तर-पूर्व की ओर, और असल में उत्तर से पूर्व तक, खुला हुआ है, लेकिन चूंकि सबसे ऊची पर्वत बन्दरगाह के दक्षिण पूर्व की ओर हैं और सिर्फ उसी ओर से चलने वाली हवाए खतरनाक होती हैं इसलिए उत्तर-पश्चिम की दिशा सर्वथा सुरक्षित मानी जाती है।

मछलियो की अधिकता बन्दरगाह की सब से उल्लेखनीय विशेषता है। जब हम नाव पर चढ कर तीर पर चले गये थे तो कुछ मल्लाहो को जहाज पर ही छोड़ गये थे। उसमे से दो ने कुछ ही देर में इतनी मछलियाँ पकड ली जो हम लोगो के लिए कई दिन तक काफी थी। उनमें से मारबिलहेड के मल्लाह ने बताया कि उसने मछलियो की ऐसी बहुतायत न कभी देखी न सुनी। उस समुद्र में काड, ब्रीम, सिलवरफिश और अनेक दूसरी किस्मों की मछलियाँ थी जिनके नाम या तो मल्लाह जानते नही थे या मैं भूल गया हूँ।

द्वीप पर उत्तम पानी की भी बहुतायत है। हर घाटी में छोटे-छोटे झरने बहते हैं और पहाडियो की बगल से सोते फुदक पडते हैं। एक काफी बडा झरना मध्यवर्ती मैदान में बहता हुआ मकानों के पास से निकल गया है और उनमें रहने वालों को बढिया पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो गया है। एक छोटी काठ की नाली के सहारे इस झरने का पानी हमारी नावों के पास तक लाया गया था। कैदियो ने वहा एक तरह का घाट-सा बना दिया था और उन दिनों वे नावो और सामान को उतारने के लिए एक जगह बना रहे थे। इन चीजों के निर्माण के बाद चिली की सरकार का इरादा बन्दरगाह का कर वसूल करना शुरू करने का था।

जहा तक जगल का सवाल है मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे वहाँ पेडों की बहुतायत दिखायी दी। नवम्बर के महीने में, जबकि हम वहा थे, बसन्त की हरियाली और रमणीयता के कारण ऐसा लगता था मानो द्वीप को पेडों ने चारो ओर से ढक लिया हो। अधिकाश पेड़ सुगधयुक्त थे और उनमें सब से लम्बे पेड मिर्टल के थे।

मिट्टी भुरभुरी और उपजाऊ है और जहा भी उसे खोदा जाय वही से मूली, शलजम, ग्राउड एपल और दूसरी सब्जियां निकल आती थी। हमें बताया गया कि वहां बकरियों की बहुतायत नही है, और हमें एक भी बकरी नही दिखाई दी, यद्यपि लोगों का कहना था कि अन्दर के इलाकों में जाने पर बकरिया दिखायी पड़

सकती हैं। पहाडो की बगल के तग रास्ते पर हमें कोल्हू में जूते हुए कुछ बैल मिले और द्वीप पर हमें हर राष्ट्र के, हर नस्ल और डिग्री के कुत्ते मिले। मुर्गियो और चूजो की भी बहुतायत थी और ऐसा लगा कि औरतें उनकी अच्छी देखभाल करती थी।

आदमियों को देखकर ऐसा लगा जैसे दुनिया के परदे पर उनसे अधिक आलसी आदमी हो ही नही सकते; और दर हकीकत मै समझता हूँ कि अमरीकी शब्द 'लोफर' इन स्पेनी अमरिकियो से ज्यादा मोजू दुनिया के दूसरे किसी प्रदेश के लोगों के लिए नही हो सकता। ये लोग अपने लबादे पहने निकम्मे खडे रहते थे। बुनाई के लिहाज से ये लबादे इन्डियन आदि-वासियो के कम्बलो जैसे ही थे, लेकिन थे रगीन। इन लबादो को ये इस अदा से अ ने कधो पर डाले रहते हैं कि उनके बारे मे कहावत ही चल निकली है कि स्पेनी भिखारी अपने चिथडों को भी रौनक बख्श सकता है। उनके बोलने में बडी नम्रता और सहानुभूति थी, भले ही उनके जूतो के तल्लों मे छेद थे और जेब में फूटी कौडी न थी।

उनके दैनिक जीवन की एकरसता केवल तभी भग होती थी जब पहाडो में मचलती हुई हवा का कोई झोका उन शाखाओ को उडा ले जाता जिनसे उन्होने अपने मकानो की छतें बना रखी थी, वे उन शाखाओ को पकडने के लिए उनके पीछे भागते, और इस प्रकार उन्हे कुछ मिनट काम करना पडता था। जब हम किनारे पर थे, तब ऐसा एक झोका आया था। इन लोगो ने चारो ओर देखा, और जिन लोगो की छतें नही उडी वे तो फिर वैसे ही खडे हो गये, जबकि वे लोग जिनकी छतें उड गयी थी स्पेनी भाषा में गालियाँ देते और अपने लबादो को कन्धों पर लपेटते हुए उनके पीछे दौडे। हमें यह देख कर बडा मजा आया। शाखाए ज्यादा दूर नही गयी और जल्दी ही वे उन्हे लेकर लौट आये और पहले की तरह निठल्ले खड़े हो गये।

शायद यह कहने की जरूरत नही कि हम द्वीप में ज्यादा अंदर नहीं जा सके लेकिन जो लोग वहाँ गये हैं उन्होने वहां का वडे सुन्दर शब्दों में बखान किया है, हमारा कप्तान गवर्नर और कुछ सेवको के साथ खच्चरो पर चढ़ कर पर्वतों पर गया था और जब वे लोग लौटे तो मैंने गवर्नर को कप्तान से इधर से होते हुए लौटने का अनुरोध करते सुना। उसने कप्तान को कैलिफोर्निया से कुछ हिरन खरीद लाने के लिए एक बडी रकम दी। उसने कहा कि द्वीप पर हिरन एकदम नही हैं और मैं उन्हे यहां पालना चाहता हूँ।

दक्षिणी-पश्चिमी हवा हल्की थी लेकिन लगातार बह रही थी और उसमें हमारा जहाज द्वीप से काफी दूर निकल आया था। जब मैं बीच का पहरा देने डेक पर आया तो मैं द्वीप को सिर्फ इस वजह से पहचान सका क्योंकि उसने दक्षिणी क्षितिज के कुछ निचले तारों को ढक लिया था, यद्यपि मेरी आँखें इतनी अनुभवहीन थी कि मैं द्वीप के उस उभार को जमीन नहीं समझ सकता था। पहरा खत्म होने के समय व्यापारी हवाओं के बादलों ने, जो उनके अक्षाश में जहाज के पहुचने से पहले ही उमड आये थे, उसे हमारी आँखों से ओझल कर दिया।

वृहस्पतिवार, सत्ताईस नवम्बर। सुबह डेक पर आने पर पता चला कि हमारा जहाज फिर से विराट प्रशात महासागर में आ गया है। इसके बाद विशाल महाद्वीप अमरीका के पश्चिमी किनारे पर पहुँचने से पहले हमें जमीन के दर्शन नहीं हुए।

अध्याय-6

जुआन फर्नांडीज से चलकर कैलिफोर्निया पहुँचने तक मार्ग में हमें न तो जमीन ही दिखाई दी और न कोई जहाज ही मिला, इसलिए इस बीच जहाज पर हमारी अपनी गतिविधियों के अलावा कोई मनोरजक बात नहीं हुई। हमारा जहाज दक्षिणी-पूर्वी व्यापारी हवाओं में पड गया था और लगभग तीन हफ्तों तक हम अनायास ही अपने लक्ष्य की ओर बढते रहे।

कप्तान ने इस बढ़िया मौसम का फायदा उठाते हुए जहाज को ठीक-ठाक करने का फैसला किया, क्योंकि अब किनारा बहुत दूर नहीं था। बढई से कहा गया कि वह स्टीअरेज के एक हिस्से को दूकान की शक्ल दे दे क्योंकि हमने सुना था कि जहाज का सामान उतारा नहीं जायगा बल्कि उसकी फुटकर बिक्री जहाज में ही की जायगी, और यह दूकान भारी चीजों के नमूने और हल्का-फुलका सामान रखने और दूकानदारी की दूसरी जरूरतों को पूरा करने के लिए बनवायी जा रही थी।

इस बीच हम लोगों को जहाज की रस्सियों वगैरह को ठीक करने के काम में लगाया गया। हर चीज को कस दिया गया और नीचे की सभी रस्सियों-डोरियों की पूरी जांच पडताल कर ली गयी। ढेर सारा बटा सन और दराज भरने का मसाला तैयार किया गया और अन्त में सभी रस्सियों पर कोलतार कर दिया गया।

कोलतार करने का मेरा यह पहला मौका था, और मुझे इस बार बहुत काम करना पड़ा, क्योंकि लगभग यह सारा काम मेरे मित्र एस— और खुद मेरे कन्धो पर ही आ पडा। बाकी लोग और दूसरे कामों पर लगाये गये थे और हमारे साथ काम करने वाले तीसरे आदमी एम— के पैरों में गठिया हो गया था और वह वैसे भी इतना कम उम्र और छोटा था कि कोलतार करने का काम उसके बस का था भी नही। हवा हल्की और नियमित थी इसलिए दिन में उसे अधिकतर सुकान सौंप दिया जाता था। इस प्रकार कोलतार करने का प्रायः सारा काम हम दोनों को ही करना पडा। हमने सन के बने ऊंचे फ्राक पहने, कोलतार की एक-एक नन्ही बाल्टी सभाली, ओकम का एक गुच्छा लिया और धुर ऊपर पहुँच गये। वहा से हमने नीचे की ओर कोलतार करना शुरू किया।

यह काम बडा महत्वपूर्ण है और लम्बी यात्रा पर निकले जहाजों में आमतौर पर छः महीने में एक बार किया जाता है। इस मौके के बाद हमारे जहाज पर यह कई बार किया गया। एक बार तो सब मल्लाह इसी पर जुटे और उन्होंने एक ही दिन में काम खत्म कर डाला, लेकिन इस बार चूंकि एक तो यह काम हम दो ही लोगों ने किया, दूसरे हम नये थे इसलिए हमें कई दिन लग गये। यह काम हमेशा शुरू ऊपर से होता है और तब ऊपर से कोलतार करते हुए मल्लाह नीचे की ओर आते हैं।

तान-रस्सियों पर कोलतार करना मुश्किल काम है। इसका एक खास तरीका है। मस्तूल से एक लम्बी रस्सी नीचे लटकायी जाती है जिसमें लकडी की एक पटिया बाध कर तान रस्सी के चारों ओर एक झूला-सा बनाया जाता है जिसमें कोलतार करने वाला आदमी कोलतार की बाल्टी और ओकम का गुच्छा लेकर बैठ जाता है। इस रस्सी का दूसरा सिरा डेक पर बांध दिया जाता है। धीरे धीरे डेक से यह झूला नीचा किया जाता है और वह आदमी नीचे की ओर आता हुआ सावधानी से तान-रस्सियों पर कोलतार करता चलता है। इस तरह वह आदमी "आकाश और पाताल के झूले में झूलता है" और अगर रस्सी फिसल जाय या टूट जाय या छोड दी जाय, या तख्ते की नीचे लगी गाँठ खुल जाय तो या तो वह समुद्र में गिर सकता है अथवा जहाज पर गिर कर अपनी गर्दन तुडवा सकता है।

लेकिन मल्लाह कभी इन बातों की परवाह नही करता। उसे इसी बात की

चिन्ता रहती है कि रस्सी का कोई हिस्सा बिना कोलतार के न रह जाय, क्योंकि ऐसा होने पर उसे दुबारा से कोलतार करना पडता है। इसके अलावा उसे इस बात का भी ध्यान रखना पडता है कि डेक पर कोलतार के छींटे न पडें, वर्ना मालिम अफसर कुछ सुना बैठता है। इस तरह मैंने सभी शीर्ष-तानों पर कोलतार किया लेकिन मुझे जिब बूम, मार्टिगेल और स्प्रिटपाल के यार्ड पर कोलतार करना सबसे कठिन लगा, क्योंकि यहा आँखें ऊपर रखनी पडती हैं और हाथ से कोलतार करना पडता है।

यह गन्दा काम भी आखिर कब तक चलता। शनिवार की रात को हमने इसे खत्म कर दिया, डेक तथा दूसरी चीजों पर से कोलतार के धब्बे छुडा दिये, अपने आप को पूरी तरह साफ किया, कोलतार में सने फ्राकों और पतलूनो को आइन्दा इसी काम के लिए रख दिया, साफ कपडे पहन लिए और शनिवार की रात बडे आराम से बितायी।

अगला दिन बडा सुहावना था। वास्तव में केपहार्न से लौटते हुए जो इतवार पडा था उसके अलावा पूरी यात्रा में हमारा हर इतवार बडा सुन्दर बीता और केपहार्न के आस-पास तो अच्छे मौसम की बात सोचना ही फिजूल था। सोमवार से हमने जहाज पर रोगन करने का काम शुरू किया ताकि जहाज बन्दरगाह में जाने योग्य हो सके। यह काम भी मल्लाहो द्वारा ही किया जाता है और लम्बी यात्राओं पर जाने वाला हर मल्लाह, अन्य उपलब्धियो के अलावा, थोडा-बहुत रोगनसाज अवश्य हो जाता है। हमने पूरे जहाज को अन्दर बाहर—दोनों ओर से रंगा। बाहर की ओर रगने के लिए रस्सियो के सहारे तख्ते लटका दिये गये और हम उन पर ब्रश व रोगन के डब्बे लेकर बैठ गये। रोगन करने में आधे समय हमारे पाँव पानी में लटके रहे। रोगन उसी दिन किया जा सकता है जब समुद्र शान्त हो और जहाज ज्यादा हिचकोले न खा रहा हो।

मुझे अच्छी तरह याद है, एक बार मैं बाहर की तरफ रोगन कर रहा था; तीसरा पहर था और मौसम बडा सुन्दर था। जहाज चार या पांच नाट की गति से चल रहा था। जहाज के साथ-साथ शार्क मछली के आगे चलने वाली एक पाइलट मछली तैरती चल रही थी। कप्तान रेलिंग पर झुक कर उसे देख रहा था और हम चुपचाप अपना काम कर रहे थे। अभी रोगन का काम चल ही रहा था कि शुक्रवार, उन्नीस दिसम्बर को हमने भूमध्यरेखा को दुबारा पार किया।

ऐसा करते समय मुझमें भी वही भावना जगी जो पहली बार भूमध्यरेखा को पार करने वाले के मन मे तब जगती है जब वह अपने को सर्वथा परिवर्तित मौसम में पाता है। दिसम्बर के महीने में वहाँ सूरज आग उगल रहा था और चार जुलाई को जब मैंने इस रेखा को दुबारा पार किया तो वहाँ बर्फ पड रहा था।

बृहस्पतिवार, पच्चीस दिसम्बर। आज बडा दिन था, लेकिन हमें छुट्टी नही मिली। आज सिर्फ एक परिवर्तन हुआ और वह यह कि हमे डिनर में किशमिश पडा हुआ हलुआ दिया गया। आज मल्लाहो का स्टीवार्ड से झगडा हो गया क्योकि उसने हमें हलुए के साथ मिलने वाला शीरा नही दिया। उसने सोचा था कि शीरे की जगह किशमिश देने से काम चल जायगा लेकिन हम इस तरह से अपने अधिकारो से वंचित होने वाले जीव न थे।

ऐसी ही छोटी-मोटी बाते जहाज पर झगडे का रूप धारण कर लेती हैं। सच्ची बात तो यह है कि हमे बन्दरगाह से दूर हुए बहुत अरसा हो चुका था। हम एक-दूसरे से ऊब चले थे और जरा-जरा सी बात पर हममें झडप हो जाती थी। हमारी रसद खत्म हो चली थी और कप्तान ने हमारा चावल बन्द कर दिया था। नतीजा यह हुआ कि हमे खाने के लिए नमकीन बीफ और नमकीन पोर्क के अलावा कुछ नही मिलता था। हाँ इतवार को हमें थोडा सा हलुआ जरूर मिलता था।

इससे असन्तोष और बढ़ गया, इसके अलावा हर रोज, बल्कि हर घन्टे, होने वाली हजारो चीजे—छोटी-मोठी झडपें और उनकी अफवाहे—केबिन मे कही गयी बातों के समाचार—शब्दो और मुख-मुद्राओ से पैदा हुई गलत-फहमी—गालिया—हमें ऐसी स्थिति मे ले आयी थी कि हर चीज हमें गलत दिखायी देती थी। जो आदमी ऐसी लम्बी और थका देने वाली यात्रा पर नही गया वह हमारी स्थिति को पूरी तरह नही समझ सकता। अगर आराम के लिए निर्धारित समय में हमसे जरा भी काम करने के लिए कहा जाता तो हमें वह अनावश्यक प्रतीत होता था। जब हमसे दुपेचा पालो को बदलने को कहा जाता था तो ऐसा लगता था जैसे मल्लाहो को तग करने के लिए ही ऐसा किया जा रहा हो।

इन हालात मे मै और मेरा साथी एस— कप्तान के पास गये और उससे इस बात की आज्ञा मागी कि हम लोगो को स्टीअरेज छोडकर अगवाड़ में जाने की इजाजत दी जाय। जब हमे यह इजाजत मिल गयी तो हमारी खुशी का ठिकाना न रहा, और हम अगवाड मे आ गये।

अब हमने अपने आपको असली मल्लाह समझा। स्टीअरेज मे रहते हुए हमें ऐसा महसूस नही होता था। वहाँ रहते हुए आप कितने ही काम के और फुर्तीले आदमी क्यो न हो आपकी औकात एक कुत्ते से अधिक नही होती। अफसरो की आँख हमेशा आप पर रहती है। आप न नाच सकते हैं न गा सकते हैं, न खेल सकते हैं और न धूम्रपान ही कर सकते हैं, न गुल-गपाडा कर सकते हैं और न दुहाई दे सकते हैं...यानी आप मल्लाह की जिन्दगी की कोई तफरी नही ले सकते। आपको स्टीवार्ड के साथ रहना पडता है जो एक तरह का बिचौदिया होता है, और मल्लाह लोग आपको अपने दर्जे का नही समझते।

लेकिन अगवाड में रहने पर आप पूरी तरह आजाद और पक्के मल्लाह माने जाते हैं। आप उनकी बातचीत सुनते हैं, उनके तौर-तरीके, उनके महसूस करने, कहने और करने के खास अन्दाज सीखते हैं। इसके अलावा उनकी गप्पो और आपसी झगडों से आपको मल्लाही के अजीबो-गरीब और उपयोगी गुरो, जहाज के रीति-रिवाजों और विदेशो के बारे में बहुत कुछ जानकारी हासिल होती है।

जब तक कोई आदमी मल्लाहो के साथ अगवाड में न रह ले, उनके साथ उठ-बैठ न ले, उनके साथ हमप्याला और हमनिवाला न हो जाये, तब तक न तो वह मल्लाह हो सकता है और न यही समझ सकता है कि मल्लाह लोग कैसे होते हैं। एक हफ्ता अगवाड में रह लेने के बाद मेरे मन में यह बात कभी नही आयी कि इसमे तो मैं स्टीअरे मे ही अच्छा था। यहाँ तक कि आगे चल कर केप हार्न से गुजरते समय जब मौसम बहुत खराब था और अगवाड मे पानी भरने लगा था तब भी एक क्षण के लिए भी मेरे मन मे यह ख्याल नही आया कि मैं स्टीअरेज में होता तो अच्छा रहता।

अगवाड मे एक फायदा यह भी है कि और जगहो के मुकाबले यहाँ आप कपडो की मरम्मत करना ज्यादा अच्छी तरह सीख सकते हैं और मल्लाहों के लिए यह बहुत जरूरी है। जब वे नीचे होते हैं तब अपना अधिकाश समय इसी में बिताते हैं, और मैंने भी यह कला यही सीखी जो आगे चल कर मेरे बडे काम आयी।

लेकिन हम मल्लाहों की बात पर लौट आयें। जब हम अगवाड में आये तो हमें पता चला कि रोटी के भत्ते को लेकर कुछ गडबडी है जिसकी वजह से हमें कुछ पांउड का नुकसान उठाना पडेगा। इससे हम लोगो मे खलबली मच गयी।

कप्तान इतना उदार नही था कि हमें समझाता इसलिए हम एक प्रतिनिधिमन्डल बना कर उससे मिलने गये। हमने एक स्वीडन-निवासी मल्लाह को अपना नेता चुना जो सब से अनुभवी और कुशल मल्लाह था।

आगे जो दृश्य देखने को मिला उसकी, और खास तौर पर कप्तान की शान-शौकत की, याद करके आज भी हसी आ जाती है। वह छतरी पर टहल रहा था। हमें आते देख कर वह रुक गया और अपनी आवाज और दृष्टि से हमें चीरता हुआ सा बोला...

"हूँ! तो फरमाइए! आप चाहते क्या हैं?"

इस पर हमने अत्यन्त आदर पूर्वक उसके सामने अपनी शिकायतें रखी लेकिन वह हम पर बिफर पडा...तुम लोग मोटे और काहिल होते जा रहे हो, तुम्हें कोई काम-धाम नही है इसलिए तुम हर बात में मीनमेख निकालते हो। इस पर हम भडक उठे और हमने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। लेकिन इसका कुछ असर नही हुआ।

कप्तान ने अपनी मुट्ठी तान कर अपनी हथेली पर जोर से मारी और बात-बात पर कसम खाते हुए हमें अगवाड मे जाने का आदेश दिया...

"दफा हो जाओ यहाँ से! तुम सब अगवाड में जाओ! मैं तुम्हे नचा दूँगा। मैं तुम्हें थका मारूंगा! तुम्हारे पास काम-धाम नही है! अगर तुम संभल कर नही रहोगे तो मैं इस जहाज को नरक बना दूँगा! तुमने मुझे समझा क्या है? मेरा नाम एफ...टी...है, मैं पूरब का रहने वाला हूँ। मैं चक्की में पिस कर रोटी बन गया हूँ जो गरम तो अच्छी लगती है मगर ठण्डी होने पर खट्टी और गरिष्ठ हो जाती है; अब तुम देखते रहो! मैं तुम्हें ठण्डा और गरिष्ठ बनकर दिखाऊँगा।"

इस फटकार का अन्तिम हिस्सा मुझे अच्छी तरह याद है, क्योंकि इसका हम पर बहुत प्रभाव पडा था, और यह रोटी वाली बात तो यात्रा के बाकी दिनों में बात-बात पर दुहरायी जाती रही। अपनी शिकायतें पेश करने का यह नतीजा हुआ। बाद में चलकर हमारी शिकायत दूर कर दी गयी क्योंकि जब मालिम अफसर ने यह समझा कि कप्तान का पारा उतर गया है तो उसने उसे सारी बात समझा दी और हमें एक और फटकार सुनने के लिए जहाज के पिछले हिस्से में बुलाया गया। इस बार गलतफहमी पैदा करने की पूरी जिम्मेदारी हमारे ऊपर

डाल दी गयी। हमने यह कहने की कोशिश की कि हमें अपनी बात कहने का मौका ही कहां दिया गया था, लेकिन हमारी कोशिश बेकार रही। हमें परास्त करके खदेड़ दिया गया।

इस तरह मामला खत्म हुआ लेकिन इससे उत्पन्न कडवाहट रह ही गयी और कप्तान तथा मल्लाहो के बीच शांति या सद्‌भावना फिर कभी संभव नही हुई।

हम प्रशांत महासागर की सुन्दर व समशीतोष्ण जलवायु में आगे बढते रहे। इस महासागर का 'प्रशात' नाम उचित ही है क्योकि केपहार्न के दक्षिणी भाग और चीन व हिंदमहासागर के निकटवर्ती कुछ पश्चिमी हिस्सो को छोडकर इसमे तूफान बहुत कम आते हैं और जलवायु न तो अत्यधिक उष्ण है और न शीत। उष्ण-कटिबन्धो के बीच एक हल्का-सा कुहरा छाया रहता है जो सूरज के चारों ओर छाये कुहरे की पतली पर्त जैसा लगता है। यह कुहरा दृष्टि-पथ में कोई बाधा नही डालता बल्कि अटलाटिक और हिंदमहासागर के उष्ण कटिबन्धो पर पड़ने वाली भीषण गर्मी को कम कर देता है।

उत्तरी-पश्चिमी व्यापारी हवाओ का पूरा लाभ उठाने के लिए हम अपने जहाज को पश्चिम की ओर ही चलाते रहे। हमें पाइंट कस्पेंप्शन पर किनारे लगना था, लेकिम जब हम उसके अक्षाश में पहुँचे तो विदित हुआ कि हम उसके कई सौ मील पश्चिम में निकल आये हैं। हमने तुरन्त अपने जहाज का रुख पूरब की ओर कर दिया और कई दिनो तक उसी दिशा में बढते रहे। अन्त में, इस डर से कि कही रात के समय हमारा जहाज किसी ऐसे किनारे पर न जा लगे जहां न प्रकाशस्तंभ हो और न अच्छे चार्ट, हमने सूर्यास्त के बाद जहाज की प्रगति रोक दी।

वृहस्पतिवार, १३ जनवरी १८३५, को भोर में हमारा जहाज पाइंट कस्पेप्शन (अक्षाश ३४° ३२' उ०, देशातर १२०° ०६' प०) पर किनारे लगा। हमें सैंटा बारबरा बन्दरगाह पहुँचना था जो वहा से दक्षिण की ओर लगभग साठ मील था। हमने अपनी यात्रा जारी रखी तथा दिन और रात भर चल कर अगले दिन १४ जनवरी १८३५ की सुबह को हमने सैंटा बारबरा की विशाल खाडी में लंगर डाला। तब तक हम बोस्टन से चलने के बाद १३० दिन की समुद्री यात्रा कर चुके थे।

*　　　*　　　*

अध्याय—९

केलिफोर्निया मेक्सिको के लगभग सपूर्ण पश्चिमी तट पर फैला है। इसके दक्षिण में कैलिफोर्निया खाडी और उत्तर में सर फ्रैंसिस ड्रेक की खाडी है। दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि यह २२ और ३८ डिग्री उत्तरी अक्षाश के बीच स्थित है।

यह दो प्रदेशों में उपविभक्त है—लोअर या ओल्ड कैलिफोर्निया जो कैलिफोर्निया खाडी और ३२वी डिग्री अक्षांश और उसके निकटवर्ती क्षेत्र के बीच स्थित है (मेरा ख्याल है कि विभाजन-रेखा टोडोज सैंटोज खाडी और सेन डियागो बन्दरगाह के बीच से गुजरती है), और न्यू या अपर कैलिफोर्निया, जिसका सबसे अधिक दक्षिणवर्ती बन्दरगाह ३२° ३९' अक्षांश में स्थित सैन डियागो है और सबसे उत्तर की ओर ३७° ५८' अक्षाश में स्थित बन्दरगाह सैन फ्रैंसिस्को, जो सर फ्रैंसिस ड्रेक की विशाल खाडी में स्थित है। अग्रेजों ने इस खाडी को यह नाम सर फ्रैंसिस ड्रेक के कारण दिया था क्योंकि उसने ही इसकी खोज की थी। मेक्सिको के लोग इसे यर्बा व्यूना कहते हैं। अपर कैलिफोर्निया की सीट मोटेरी है। कस्टम हाउस भी इसी नगर में है। यह पूरे तट का एकमात्र कस्टम हाउस है और तट पर व्यापार करने वाले हर जहाज को अपना व्यापार शुरू करने के पहले अपना नौभार यहाँ दर्ज कराना पडता है।

हमें इस तट पर ही व्यापार करना था और इसलिए पहले हमें मोंटेरी ही जाना चाहिए था लेकिन कप्तान को आदेश दिया गया था कि जहाज को तट के केंद्रीय बन्दरगाह सेंटा बारबरा पर रोक कर एजेन्ट का इन्तजार करे जो वही रहता था और जहाज की मालिक फर्म का सारा लेन-देन करता था।

सैंटा बारबरा की खाडी (जो सैंटा बारबरा कैनाल के नाम से अधिक प्रसिद्ध है) बहुत विशाल है। इसके एक ओर (उत्तर में पाइन्ट कन्सेप्शन और दक्षिण में पाइन्ट सैंट व्यूनावेंचरा के बीच) मुख्य भूमि है जो कि यहाँ एक अर्धचन्द्र की भाति झुक गयी है और इसके सामने बीस मील की दूरी पर तीन बडे द्वीप हैं।

इसे खाडी का नाम देना एक हद तक ही ठीक है। कारण, यह इतनी विशाल है और दक्षिणी पूर्वी तथा उत्तरी-पश्चिमी हवाओ के लिये इतनी खुली है कि इसे एक खुले लँगरगाह से कुछ ही अच्छा कहा जा सकता है। इसके अलावा दक्षिणी-पूर्वी हवाओ के चलने से प्रशात महासागर का समूचा उभार इस खाडी में इतने

वेग से बढता है और इसके छिछले पानी में गिर कर इतनी महाकाय तरंगें उठाता है कि दक्षिणी-पूर्वी हवाओ के मौसम, यानी नवम्बर से लेकर अप्रैल तक, तट के पास लंगर डालना निहायत खतरनाक समझा जाता है।

ये (दक्षिणी-पूर्वी) हवाए कैलिफोर्निया के तट पर होने वाले विनाश की जड हैं। नवम्बर और अप्रैल के बीच (बल्कि इन दोनो महीनों के भी कुछ हिस्सों मे) इस अक्षाश में बरसात का मौसम रहता है, और इन दिनो में आप पर कब मुसीबत आ टूटे—यह नही कहा जा सकता। इसी कारण इन दिनो जिन बन्दरगाहो में ये हवाएं पहुँचती हैं उनमें जहाज किनारे से तीन मील की दूरी पर लगर डालने हैं और इस बात के लिए पूरी तरह तैयार रहते हैं कि एक मिनट की चेतावनी मिलने पर ही समुद्र के लिए रवाना हो सकें। उत्तर में सैन फ्रैंसिस्को और मोटेरी तथा दक्षिण मे सैन डियागो ही ऐसे बन्दरगाह हैं जो इन हवाओं से सुरक्षित हैं।

हम यहा जनवरी के महीने में पहुँचे, जबकि दक्षिणी-पूर्वी हवाओं का मौसम आधा ही बीता था, इसलिए हमने किनारे से तीन मील दूर ग्यारह फैदम पानी में लङ्गर डाला और एक मिनट की चेतावनी पर समुद्र में चल पडने की पूरी तैयारी कर ली। इसके बाद एक नाव कप्तान को लेकर किनारे पर गयी और मालिम अफ्सर के लिए उसका यह आदेश लकर लौटी कि दिन ढले कप्तान को लेने के लिए नाव किनारे पर भेज दी जाय।

मैं पहली नाव मे नही गया, और जब मुझे पता चला कि रात के पहले एक और नाव किनारे पर जायगी तो मै बडा खुश हुआ: क्योंकि हमारी जसी लम्बी यात्रा के बाद जमीन के पास होते हुए भी उससे दूर रहकर कुछ घन्टे गुजारना भी दुश्वार हो जाता है। दिन भर हम जहाज पर ही रहे और रोजमर्रा के कामधन्धे मे लगे रहे। चू कि कप्तान की अनुपस्थिति में जहाज पर रहने का हमारा यह पहला मौका था इसलिए हम कुछ ज्यादा आजादी महसूस कर रहे थे और यह देखने-समझने की कोशिश कर रहे थे कि जिस देश में हम आ गये हैं, और जिसमें हमें एकाध वर्ष बिताना है, वह है कैसा ?

सब से पहली बात तो यह कि वह दिन बडा सुन्दर था। गरमी इतनी थी कि हमने तिनकों के टोप, मोटे कपडे की पतलूनें और गरमियो के कपडे पहन रखे थे जब कि उन दिनों जाडों का मौसम अपनी जवानी पर था...इससे आप जलवायु का अन्दाज लगा सकते हैं, और आगे चल कर हमने अनुभव किया कि पूरी सर्दियों

में थर्मामीटर का पारा हिमांक से नीचे कभी नही गिरा और ऋतुओ में का फर्क बहुत कम था, हा इतना जरूर था कि बरसात और दक्षिणी-पूर्वी हवाओ के लम्बे मौसम में मोटे कपड़े नागवार नही होते थे।

हमारे चारो ओर विशाल खाडी थी। वह एकदम शांत थी क्योकि हवा दम साधे हुए थी, यद्यपि सुबह जो नाव किनारे पर गयी थी उसके मल्लाहों ने हमें बताया था कि महासागर का बडा भारी उभार तट से टकराकर उत्ताल तरंगें उत्पन्न करता है। बन्दरगाह में सिर्फ एक जहाज था। यह एक लम्बा नुकीला लगभग ३०० टन का दो मस्तूलों वाला जहाज था जिसकी चोटी पर इंग्लैंड का झन्डा फहरा रहा था।

हमें बाद में पता चला कि उसका निर्माण गायाक्विल में हुआ था और उसका नाम था "आयाकुचो"। यह नाम उस स्थान पर रखा गया था जहाँ पेरू ने स्वतन्त्रता-सग्राम किया था और विजय प्राप्त की थी। उन दिनो जहाज का कप्तान विल्सन नामक एक स्काटलैंडवासी था जो कैलाओ, सैंडविच द्वीपसमूह और कैलिफोर्निया के बीच तिजारत करता था। जैसा कि हमने बाद में अक्सर गौर किया वह जहाज बहुत तेज चलता था और उसके मल्लाह सैंडविच द्वीपसमूह के निवासी थे। इस जहाज के अलावा खाडी के पानी की चिकनी तह को तोडने के लिए वहा कोई चीज मौजूद न थी। मुख्य भूमि के अर्द्धचन्द्र के दो सिरे थे। उनमें से पश्चिमी सिरा नीचा और रेतीला था और दक्षिणी-पूर्वी हवाओं के मौसम में जब जहाज बचाव के लिए भागते थे तो उससे काफी दूर रहने का खास ख्याल रखते थे; दूसरा सिरा ऊंचा, मजबूत और हरियाली वाला है। हमें पता चला कि इस सिरे पर एक मिशन है जिसका नाम सेंट ब्यून वेंचुरा है और इस सिरे का नाम इसी मिशन पर रखा गया है।

इस अर्द्धचद्र के बीच में, लंगरगाह के ठीक सामने सैंटा बारबरा कस्बा और मिशन है। यह एक निचले और समतल मैदान पर बसा है लेकिन समुद्र की तह मे कुछ ऊचा हैं। चारो ओर घास उगी हुई है लेकिन पेडो का नाम-निशान तक नही हैं। इसके तीनो ओर पहाडों की ढलवां शृखलाएं हैं जो पन्द्रह-बीस मील तक नीची होती चली गयी हैं।

मिशन कस्बे के किसी कदर पिछले भाग में हैं। यह एक विशाल इमारत, बल्कि कई इमारतों का समूह, है जिसके बीचो-बीच एक ऊंचा पाँच घडियों का

मीनारनुमा घंटा घर है । मिशन की पूरी इमारत प्लास्टर की बनी हुई हैं और दूर से देखने में बडी शानदार लगती हैं । यह एक ऐसी निशानी है जिसे देख कर जहाज अपने लगर डालते हैं ।

मिशन की अपेक्षा कस्बा समुद्र तट के अधिक निकट—लगभग आधा मील दूर—है । कस्बे के अधिकाश इकमजिले मकान भूरी मिट्टी के बने हैं, कुछ पर प्लास्टर भी किया गया है और उनकी छतें लाल टायलो से बनायी गयी हैं । मेरा ख्याल है मकानो की संख्या एक सौ के लगभग होगी और उनके बीच में दुर्ग है जो वैसे ही मसाले से बना है और लगभग उतना ही मजबूत है । कस्बे की पृष्ठ-भूमि वाकई बडी सुन्दर है—सामने विशाल खाडी और पीछे ढलवाँ पर्वत-शृंखलाए ।

इसकी सुन्दरता को कम करने वाली केवल एक चीज थी । वह यह कि पहाडियो की चोटियो पर बडे-बडे पेड नही थे । लगभग बारह वर्ष पहले एक भयानक आग लगी थी जिसने पहाडियो के सभी पेडो को फूक दिया था और वे अभी तक उगे नही थे । मुझे कस्बे के एक निवासी ने बताया कि आग बहुत ही भीषण और दर्शनीय थी । समूची घाटी की वायु इतनी गरम हो उठी थी कि लोगो को अपने घर छोडने पडे और कई दिनों तक समुद्र-तट पर पडे रहना पडा ।

सूर्यास्त के तुरन्त बाद मालिम अफसर ने आदेश दिया कि किनारे जाने वाली नाव के मल्लाह तैयार हो जायें । जाने वालो में मैं भी शामिल था । हम ब्रिटिश जहाज के पीछे से हो कर गुजरे और किनारे तक पहुंचने के लिए हमे अपनी नाव काफी खेनी पडी ।

जब कैलिफोर्निया के तट पर पहली बार हमारी नाव लगी तब जो छाप मेरे मन पर पडी उसे मै कभी नही भूलू गा । सूरज छिपा ही था; अधकार बढता जा रहा था; रात की भारी हवा चलनी शुरू ही हुई थी और प्रशात महासागर का विशाल उभार आ-आकर किनारों से टकरा कर मुखर और उत्ताल तरंगो में बिखर रहा था । हमारी नाव तरंगो से कुछ ही दूर पर उस उभार मे चल रही थी और हम केवल चप्पुओं से काम ले रहे थे । हम आगे जाने के लिए किसी अच्छे मौके का इंतजार ही कर रहे थे कि "आयाकुचो" से चली एक नाव हमारे पास ही आ गयी । उसके सांवले मल्लाह सैंडविच द्वीपसमूह के थे और अपनी गँवारू भाषा में बात-चीत और हल्लाहू कर रहे थे ।

वे समझ गये कि हम इस तरह के नौचालन में नौसिखुए थे, इसलिए वे रुक कर इस बात का इंतजार करने लगे कि पहले हम किनारे पर पहुँचे। उधर हमारी नाव दूसरा मालिम खे रहा था। उसने इन लोगो के अनुभव का फायदा उठाने का फैसला कर लिया था, इसलिए वह पहल नही करना चाहता था। अंत में वे लोग हमारा मशा समझ गये और उन्होंने एक किलकारी भरी। इतने में एक विराट तरंग आयी जिसने हमारी नाव के पिछले भाग को बहुत ऊचा उठा कर नीचे गिरा दिया। इस तरग का फायदा उठाते हुए उन्होने अपनी नाव में तीन-चार चप्पू जोर से मारे और तरग के सिरे पर पहुँच गये। अब उन्होने अपने चप्पू समुद्र में, और नाव से ज्यादा से ज्यादा दूर, फेंक दिये। जब नाव किनारे पर पहुँची तो वे उससे कूद पडे और उसे पकड कर रेत पर चढा दिया।

हम फौरन समझ गये कि हमें क्या-कुछ करना है। हम यह भी समझ गये कि नाव का पिछला हिस्सा किनारे की ओर नही समुद्र की ओर ही रहना चाहिये क्योंकि ऐसा न होने पर समुद्र उसकी चौडी दीवार या क्वार्टर पर आघात करता है जिससे नाव उलट कर डूब जाती है। हमने कुछ चप्पू जोर से मारे और जब हमें लगा कि तरग ने हमे पकड लिया है और हमें घुडदौड के घोडे की रफ्तार से लिए भागी जा रही है तब हमने अपने चप्पू नाव से ज्यादा से ज्यादा दूर फेंक दिये और नाव की ऊपरी पट्टी को पकड लिया। हम इस बात के लिए तैयार हो गये कि तट पर पहुँचते ही नाव से कूद कर उसे पकड लें। दूसरा मालिम जी-जान से कोशिश कर रहा था कि नाव का पिछला भाग ही समुद्र की ओर रहे। हम धनुष से छूटे हुए तीर की गति से किनारे पर पहुचे और नाव को पकड कर उसे रेत पर घसीट लाये। इसके बाद हमने अपने अपने चप्पू उठा लिये और कप्तान का इंतजार करते हुए नाव के पास खड़े हो गये।

जब हमने यह देखा कि कप्तान के आने मे देर है तो अपने चप्पू नाव में रख कर, और एक आदमी को उसकी देख-रेख के लिए छोड़ कर, उस प्रदेश को देख लेने के इरादे से हम समुद्र-तट पर टहलने लगे। यह समुद्र-तट लगभग एक मील लम्बा है और यहा की बालू चिकनी है। हमने सबसे अच्छी जगह लंगर डाला था। यह जगह बीच मे थी। दोनों किनारों पर समुद्र-तट कुछ पथरीला हो चला था। उच्चजलचिह्न और मिट्टी वाले किनारे के बीच के समुद्र तट की चौडाई लगभग बीस गज है। यह हिस्सा इतना बडा है कि इसे घुडदौड का प्रिय स्थल समझा जाता है।

अंधेरा बढता जा रहा था और हम कुछ दूर पर खडे जहाजों के खाकों में मुश्किल से भेद कर पा रहे थे। समुद्र में रह-रह कर विराट तरगें उठ रही थीं। किनारे पर पहुंचने पर उनका आकार विराटतर हो जाता था। फिर वे समुद्र-तट पर टूट कर बिछ जाती थी, उनके सिरे मुड जाते थे और वे सफेद झागों से भर उठती थी। एक दूसरे पर गिरती-पडती तरगें इस तरह बिखर जाती थी जैसे बच्चे ताश के पत्तो के बड़े घर को एक किनारे से हिलाते हैं तो ताश के पत्ते भरभरा कर गिर पडते हैं।

इस बीच सैंडविच द्वीपसमूह के मल्लाहों ने अपनी नाव का मुंह समुद्र की ओर फेर लिया था और उसे पानी मे उतार लिया था। वे नाव पर खालें और चर्बी के थैले लाद रहे थे। चूंकि जल्दी ही हमें भी यही काम करना था इसलिए हम इसे दिलचस्पी से देखने लगे। वे नाव को पानी में इतनी दूर ले गये थे कि समुद्र की हर बडी तरंग उसे हिला देती थी इसलिए दो आदमी अपनी पतलूनें ऊपर चढा कर उसके मोरो को पकडे खड़े थे ताकि नाव तरगों से विचलित न हो सके।

यह कसाले का काम था, क्योकि नाव को ठीक स्थिति में रखने के लिए उन्हें बडा जोर लगाना पड रहा था। इसके अलावा वृहद तरंगें उनके पैर उखाडे दे रही थी। कुछ मल्लाह नाव से किनारे की ओर दौड रहे थे जहां, पानी की पहुंच के परे, बैल की सूखी खालों का एक ढेर लगा था जो लम्बाई में दुहरी मुडी हुई थी और तख्ते की तरह कडी थी। वे इन्हें एक-एक, दो-दो करके सिर पर ले जा रहे थे जहां उनमें से एक उन्हे करीने से रख रहा था। खालो को सिर पर रख कर इसलिए ढोया जा रहा था ताकि वे पानी में भीगे नही, और हमने गौर किया कि उन लोगों ने सिर पर मोटी ऊनी टोपियाँ पहन रखी हैं।

"देखा बिल, तुम्हे भी यही-कुछ करना है।" हमारे एक मल्लाह ने नाव के पास खड़े दूसरे मल्लाह से कहा।

"सुनो डाना!" दूसरा मालिम मुझसे बोला, "क्या कैंब्रिज कालिज से इस काम का कोई मेल है? मैं इसी को "कपाल का काम" कहता हूँ।"

सच बात तो यह है कि यह सब देख कर सब लोगों को निराशा ही हुई।

खालें लाद चुकने के बाद उन्होंने चरबी के थैले (ये थैले खाल के बने थे और आकार में अनाज की बोरी के बराबर थे) लादने शुरू किए। दो-दो आदमी एक

एक बोरे को उठाते थे और लाकर नाव पर लाद लेते थे। इसके बाद वे जहाज पर जाने के लिए तैयार हो गये।

इस बार फिर कुछ बातें हमारे सीखने के काबिल थी। नाव खेने वाले आदमी ने अपना चप्पू संभाल लिया और वह पिछले हिस्से मे खडा हो गया, और जो दूसरे मल्लाह पीछे चप्पू चलाने के लिए तैनात थे वे भी अपने चप्पू संभाल कर तैयार हो गये ताकि नाव के तैरते ही चप्पू चला सकें। मोरों के दोनों मल्लाह उसे पकडे वैसे ही खडे रहे। अन्त में एक जोरदार तरंग आयी जिससे नाव तैरने लगी। नीचे खडे दोनों मल्लाहो ने नाव को पकड कर समुद्र की ओर दौड़ लगायी और जब पानी उनकी बगल तक आ गया तब वे कूद कर नाव में चढ़ गये। उनके शरीर से पानी चू रहा था।

मल्लाहो ने चप्पू चलाने शुरू किये लेकिन इससे काम चला नही। समुद्र ने उन्हें पीछे खदेड दिया और वे फिर वही आ गये जहां से चले थे। मोरो के दोनों मल्लाह फिर नीचे कूद पडे। अगली बार लहर आने पर उन्होंने फिर वैसा ही किया और इस बार उन्हे सफलता मिली और वे गंवारू बोली में हल्ला हू और गुल-गपाडा करते हुए नाव सही तरीके से खेते हुए चल दिये। हमने उन्हे तरगो के परे अपने जहाज की ओर जाते हुए देखा जो कि अब अंधेरे के कारण हमारी नजर से ओझल हो चुका था।

सागर-तट की बालू हमारे नंगे पाँवो को ठन्डी लगने लगी। दलदलों में मेंढकों की टर्र-टर्र शुरू हो गयी थी। कही दूर से किसी अकेले उल्लू की उदास आवाज आ रही थी जो बहुत दूर से आने के कारण तीखी नही लग रही थी। अब हमने सोचना शुरू किया कि कप्तान, जिसे आम तौर "बड़े बूढे" कहा जाता है, के आने का समय हो गया है।

कुछ मिनट बाद हमे ऐसा लगा जैसे कोई हमारी ओर आ रहा हो। यह एक घुड़सवार था। वह घोड़े को तेजी से भगाता हुआ आया, हमारे पास रुका, हमसे कुछ बोला, और कोई उत्तर न पाकर उसने घोड़े का रुख मोडा और तेजी से उसे भगाता हुआ चला गया। वह इन्डियन आदिवासी की तरह काला था, उसके सर पर एक बडा स्पेनी टोप था, बदन पर कबल का लबादा और पैरों पर चमड़े का खोल जिसमे उसने एक बडा चाकू खोंस रखा था।

"मैंने यह सातवा नगर देखा है और यहां भी कोई सभ्य मनुष्य दिखायी नही दिया", बिल ब्राउन ने कहा।

"देखते रहो!" टाम बोला, "अभी तुमने देखा ही क्या है?"

ये बातें हो ही रही थी कि कप्तान आ गया और हमने नाव का मुह समुद्र की ओर घुमा लिया, उसे नीचे पानी मे उतार लिया और चलने को तैयार हो गये। कप्तान यहाँ पहले भी आ चुका था और सब बातें समझता था, इसलिए उसने स्टीअर-चप्पू सभाला और जिस प्रकार पहले वाली नाव गयी थी, उसी प्रकार हमारी नाव भी आगे बढी। उम्र मे सबसे छोटा होने के कारण नाव के मोरे को पकड कर पानी में धकेलने का काम मुझे करना पडा, और मैं पूरी तरह भीग गया। यद्यपि ऊची तरगें उठ रही थी फिर भी हम सकुशल आगे बढे। कुछ तरगो ने हमे ऊचा उठा दिया और नाव के नीचे से फिसलते हुए उसे इतनी जोर से नीचे गिराया जैसे किसी ने लकडी के सपाट तख्ते को पानी पर पटका हो। कुछ मिनट बाद हम समुद्र के नीचे, नियमित उभार में पहुच गये।

जहाज पर पहुच कर हमने नावो को यथावत रखा, अगवाड मे जाकर अपने गीले कपडे बदले और खाने पर जुट गये। खाने के बाद मल्लाहों ने अपने पाइप (जिनके पास सिगार थे उन्होने सिगार) जलाये और हमें दूसरे लोगो को किनारे की सारी बातें बतानी पडी। तब किनारे के लोगो के बारे मे अनेक अनुमान लगाये गये, यात्रा की दूरी और खालें ढोने आदि के बारे मे बातें होती रही और अन्त में आठ घन्टियाँ बजी, सब लोगों को पिछले भाग मे बुला लिया गया और लगर पर पहरा बिठा दिया गया।

पहरा दो-दो आदमियों की टोली को देना था और चू कि रातें काफी लम्बी होती थी इसलिए हर टोली को दो घन्टे पहरा देना पडता था। दूसरे मालिम को आठ बजे तक डेक पर पहरा देना था, और भोर में सब लोगो को काम पर बुलाना था। पहरा देने वालो को विशेष सतर्क रहने का आदेश दे दिया गया था और उन्हे बताया गया था कि अगर दक्षिण-पूर्व दिशा से आँधी चले तो मालिम अफसर को इसकी खबर फौरन दी जाय। हमे समुद्र के नियम के अनुसार रात भर हर आध घन्टे बाद घन्टे बजाने के भी आदेश दिये गये।

मेरी टोली मे स्वीडन का मल्लाह जान था और हम दोनों को बारह से दो तक पहरा देना था। वह डाबा बाजू पर पहरा दे रहा था और मैं जमना बाजू

पर। पौ फटने पर सब लोगों को काम पर बुलाया गया। हमने सफाई-धुलाई आदि रोजमर्रा के काम निबटाये। आठ बजे हमने नाश्ता किया। तीसरे पहर के समय एक नाव "आयाकुचो" जहाज पर गयी और वहा से बीफ का एक चौथाई टुकडा ले आयी, जिससे हमे डिनर में ताजा बीफ मिल सका। इसमे हमें बडा मजा आया और मालिम अफसर ने बताया कि किनारे पर हमें ताजा बीफ सस्ता पडता है।

हम खाना खा ही रहे थे कि रसोइए ने "जहाज हो" की पुकार लगायी और डेक पर पहुँचने पर हमें दो जहाज आते दिखायी दिये। उनमें से एक विशाल जहाज था और दूसरा दो मस्तूलों वाला हर्माफ्रोडाइट जहाज। दोनो ही जहाजों ने अपने शिखरपाल छोटे कर के अपनी गति कम की और अपनी नौकाएं हमारे जहाज की ओर भेजीं। बडे जहाज के झन्डे ने हमें चक्कर में डाल दिया था। लेकिन अन्ततः हमें पता चला कि वह जिनेवा का है। उसके पास मिला-जुला नौभार था और वह तट पर व्यापार कर रहा था। कुछ देर बाद उसने फिर पाल ताने और सैन फ्रैंसिस्को के लिए चल पडा।

दो मस्तूलों वाले जहाज से आयी हुई नाव के मल्लाह सैंडविच द्वीप समूह के थे। उनमें से एक कुछ टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेता था। उसने हमें बताया कि उस जहाज का नाम "लोरियट" था, कप्तान का नाम नाये था और वह ओआहू का रहने वाला था। जहाज का काम इस तट पर व्यापार करना था। वह जहाज हमे किसी चीज का एक ऊँचा ढेर सा लग रहा था जिसे मल्लाह अपनी भाषा में "मक्खन का डब्बा" कहते हैं। इस जहाज पर "आया कुचो" पर तथा बाद में मिलने वाले इस तरह के अन्य व्यापारी जहाजों पर हमने एक बात खास तौर पर देखी—इनके अफसर अंग्रेज या अमरीकी होते थे, रस्सियों आदि को ठीक करने और मल्लाही के भारी काम करने के लिए दो एक अंग्रेज या अमरीकी साधारण मल्लाह अगवाड में होते थे और बाकी आदमी सैंडविच द्वीपसमूह के रहने वाले होते थे जो फुर्तीले और नाव खेने मे विशेष कुशल होते हैं।

तीनो जहाजो के कप्तान डिनर के बाद किनारे पर चले गये और रात को लौट आये। जब जहाज बन्दरगाह में होता है तब सारा काम मालिम अफसर ही करता है और कप्तान कुछ नही करता बल्कि अपना ज्यादातर समय किनारे पर बिताता है। हां, अगर वह नौभार-विक्रय-अधिकारी भी हो तो बात दूसरी है।

अगले क्षण हम डेक पर थे।

"ऊपर जाओ और शिखर पालों को ढीला कर दो!" पहले आदमी को देखते ही कप्तान ने आदेश दिया।

जब मैं रस्सियों को ठीक-ठाक करने मे जुटा था तब मैंने देखा कि "आया-कुचो" के शिखर पाल ढीले कर दिये गये हैं और उसके मल्लाह पालों की निचली रस्सियाँ पकडे गा रहे हैं और जहाज का रुख पलट रहे हैं। शायद यही सब देख कर हमारे कप्तान को भी तैयारी करने की सूझी थी क्योकि "बुजुर्ग विल्सन" (आयाकुचो का कप्तान) इस तट पर बरसो रह चुका था और उसे मौसम की पहचान थी।

हमने जल्दी ही शिखरपाल खोल दिये। इसके बाद एक-एक आदमी तो रस्सियाँ वगैरह को ठीक करने के लिए शिखर पालों पर रह गया और बाकी के लोग पाल की निचली रस्सियो पर जुट गये। हम अभी इन रस्सियो की मदद से पालो को ठीक ही कर रहे थे कि हमनें देखा हवा के रुख पर तेजी से दौडता हुआ "आया-कुचो" उमडे हुए समुद्र को चाकू की तरह चीरता हुआ हमारे पास से होकर गुजर गया। उसके झुके हुए मस्तूल और नुकीले मोरे दौडते हुए काले शिकारी कुत्ते के सर की तरह लग रहे थे। यह एक सुन्दर दृश्य था। "आयाकुचो" उस चिडिया की तरह लगा जिसने डर कर डैने फैला दिये हो।

इसके बाद अपनी तैयारियां पूरी कर चुकने के बाद हम भी समुद्र की ओर चल पड़े।

"नाये भी चल दिया है," कप्तान ने मालिम अफसर से कहा। पीछे की ओर देखने पर हमें वह छोटा दो मस्तूलो वाला हर्माफ्रोडाइट जहाज "लोरियट" अपने पीछे आता दिखायी दिया।

अब हवा तेजी पकडने लगी; बारिश तेज होने लगी और घना अंधेरा छा गया; लेकिन पाइंट से सकुशल निकल चलने से पहले कप्तान का इरादा पालों को लपेटने का नही था। जब हम पाइंट को पीछे छोड आये और समुद्र में आ गये तब हमें पाल बाध देने के आदेश दिये गये। हम उछल कर ऊपर चढ गये और शिखर पालों को दुहरा बाँध दिया और जल्दी ही हमारा जहाज बड़े मजे में आगे जाने लगा।

दक्षिणी-पूर्वी हवाओ से बचने के लिए समुद्र की ओर भागते हुए जब आप किनारे से दूर निकल आते हैं तब आपके लिए कोई काम नही रह जाता। जहाज अपनी

रफ्तार से आगे बढ़ता रहता है और आप तूफान के रुकने का इन्तजार करते रहते हैं। कभी-कभी यह तूफान दो दिनों तक बना रहता है लेकिन आम तौर पर बारह घन्टों मे शात हो जाता है; लेकिन यदि वर्षा अधिक परिमाण मे नही हुई है तो तूफान के शात हो जाने के बाद भी हवा दक्षिण के रुख मे नही बहती।

"पहरे के लोग नीचे जायें" मालिम अफसर ने आदेश दिया, लेकिन इस बात पर झगडा हो गया कि कौन से पहरे के लोग नीचे जायें। इसका फैसला मालिम अफसर ने अपनी टोली के लोगो को नीचे भेज कर किया। हमे बताया गया कि यदि फिर ऐसी जरूरत पडी तो पहले हम लोगो को नीचे भेजा जायेगा।

पहरे का समय खत्म होने तक हम डेक पर रहे। हवा बहुत तेज थी और मूसलाधार वर्षा हो रही थी। जब सुबह चार बजे हम दुबारा ऊपर आये तब घना अंधेरा छाया हुआ था, हवा तो इतनी तेज नही थी लेकिन वर्षा इतने जोर की थी कि मैंने पहले इतने जोर की वर्षा कभी नही देखी थी। हमने मोमजामे के सूट पहन रखे थे और साउथवेस्टर टोप लगा रखे थे, और हमारे पास उस जोरदार बारिश में चुपचाप भीगते रहने के अलावा कोई काम न था। समुद्र पर न छाते होते हैं और न छतें।

जब हम डेक पर खड़े थे तब हमने देखा कि मस्तूलों वाला छोटा-सा जहाज (लोरियट) हमारे पास से भूत की तरह तैरता हुआ निकल गया। उन लोगों से हमारी कोई बात नही हुई। जहाज के अग्र शिखरपाल दुहरे बधे हुए थे और हमें उसके डेक पर कोई आदमी नही दीखा, हा पहिए पर एक आदमी जरूर बैठा था। सुबह के समय कप्तान ने डेक सीढ़ी में से अपना सर निकाला और दूसरे मालिम को, जो कि हमारी टोली का मुखिया था, हवा का रुख बदलने पर विशेष ध्यान रखने का आदेश दिया। अक्सर शाँत और भारी वर्षा के बाद हवा का रुख बदल जाता है। उसकी यह चेतावनी बहुत अच्छी रही क्योकि कुछ ही क्षणों के बाद चारो ओर सन्नाटा छा गया, जहाज ने अपनी कर्णं चाल खो दी और वर्षा रुक गयी।। हमने जरूरी तैयारी कर ली और हवा के रुख बदलने का इन्तजार करने लगे। कुछ ही मिनट बाद वपरीत दिशा यानी उत्तर-पश्चिम से तेज हवा वह निकली।

अपनी पहली तैयारियों के कारण हमें इस परिवर्तन के कारण कोई परेशानी नही उठानी पडी बल्कि हम हवा के रुख में आगे बढ़े। हवा के साथ-साथ मौसम

भी बदल गया और दो घन्टो में तेज हवा उस मन्द समीर में बदल गयी जो साल के अधिकाँश दिनों मे तट पर बहता है और अपनी नियमितता के कारण व्यापारिक हवा के नाम से पुकारा जा सकता है। सूरत निकल आया और हमने जहाज के सब पाल तान लिये व आराम से सैंटा बारबरा की ओर चल दिये ।

नन्हा "लोरियट" पीछे छूट गया था और ओझल हो गया था लेकिन "आयाकुचो" के बारे में हमें कुछ नही मालूम था, कुछ ही देर बाद वह सैंटा रोजा द्वीप की बगल से बाहर निकला। वही एक सुरक्षित स्थान में उसने रात गुजारी थी। हमारा कप्तान उससे पहले किनारे पर पहुचना चाहता था, क्योंकि 'आयाकुचो' छः वर्षों से भी अधिक समय से इस तट पर व्यापार कर रहा था और उसे उत्तरी प्रशात महासागर का सर्वश्रेष्ठ जहाज माना जाता था, इसलिए उसे दौड़ में पीछे छोड़ देना एक बहुत बडी बात थी। हल्की हवाओ में हमारी स्थिति उससे अच्छी थी क्योकि हमारे पास उसके मुकाबले कही अधिक पाल थे।

चूंकि हवा हल्की थी इसलिए कुछ देर तो हम आगे रहे, लेकिन पाइन्ट के पास उसने हमे पकड लिया और हमसे आगे निकल गया।

"आयाकुचो" हमसे लगभग आधा घन्टा पहले लंगरगाह पर पहुँच गया और जब हम वहाँ पहुँचे तो उसके मल्लाह जहाज के पाल लपेट रहे थे। यह भाग-दौड हंसी-खेल नही है। एक जगह से हटना और फिर दूसरे जहाजो से पहले ही फिर वहां आकर लगर डाल देना कुशल मल्लाहों के ही बूते का रोग है।

इस विद्या में कप्तान विल्सन तट के मल्लाहों मे सब से अधिक प्रसिद्ध था। दूसरा नम्बर हमारे कप्तान का था क्योंकि जितने दिन में उसके साथ रहा उसने किसी और जहाज को अपने से पहले लंगर नही डालने दिया।

जब हमने जहाज को सुरक्षित रूप से लंगरगाह में खडा कर दिया तो मालिम अफसर ने हमें बताया कि यह कैलिफोर्निया का बडा मामूली-सा झटका था और जाडो में इस तरह की बातो की आशंका करना नितात स्वाभाविक है।

जब हम पाल लपेट चुके और डिनर ले चुके तब हमें "लोरियट" आता दिखायी दिया और रात से पहले ही उसने भी लङ्गर डाल लिया, सूर्यास्त के समय हम फिर किनारे पर गये तो देखा कि वहां "लोरियट" की नाव खडी थी। सैंडविच द्वीप के उस अंग्रेजी-भाषी मल्लाह ने हमें बताया कि हमारे एजेंट मिस्टर आर— और कुछ दूसरे यात्री हमारे साथ मोंटेरी जायेंगे, और हमें उसी रात चल देना है।

कुछ ही देर में कप्तान टी—आया । उसके साथ दो पुरुष और एक महिला थी । उनके आने पर हम चलने के लिए तैयार हो गये ।

उनके पास काफी सामान था जो हमने नाव के मोरों में रख दिया । इसके बाद हममे से दो मल्लाहो ने उस भद्र महिला को उठाया, खुद पानी में चलते हुए नाव तक गये, और उसे सम्भाल कर नाव के पिछले भाग में बैठा दिया । इस सवारी से वह बहुत खुश हुई और उसका पति भी यह सोच कर सतुष्ट हुआ कि उसे अपने पांव नही भिगोने पड़े । मैं पीछे वाला चप्पू चला रहा था और उनकी बातचीत की भनक मेरे कान में पड रही थी । उनमें से एक आदमी यूरोपियन पोशाक में था और उसने अपना शरीर एक बडे लबादे से ढक रखा था । वह एक जवान आदमी था और अंधेरे में भी मैं उसके सुन्दर होने का अनुमान कर सकता था । वह हमारे जहाज की मालिक फर्म का एजेंट था दूसरा आदमी हमारे कप्तान का भाई था । उसने देहाती स्पेनी पोशाक पहन रखी थी। वह कई वर्षो से तट पर व्यापार कर रहा था और नाव मे बैठी भद्र महिला उसकी पत्नी थी । वह नाजुक सावली नवयुवती कैलिफोर्निया के चोटी के घराने की लडकी थी । मुझे यह भी पता चला कि हमें उसी रात चल देना है ।

हमारे जहाज पर पहुँचते ही नौकाओ को चढा लिया गया, पाल तान दिये गये, बेलन-चरखी पर काम शुरू कर दिया गया और लगभग बीस मिनट मे यह सब तैयारिया करके हम मजेदार हवा में मोटेरी के लिए रवाना हो गये । "लोरियट" भी हमारे साथ हो साथ रवाना हुआ लेकिन चू कि उसने किनारे-किनारे जाना पसन्द किया जबकि हम समुद्र के बीच से होकर जा रहे थे, इसलिए जल्दी ही वह हमारी आँखो से ओझल हो गया ।

* * *

अध्याय—११

अगले दिन सूर्योदय के पहले ही हम द्वीपो को पीछे छोड चुके थे । बारह बजे तक हम नहर से बाहर निकल आये और पाइंट कंस्पेप्शन, जहा बोस्टन से चलने के बाद हमने पहली बार जमीन के दर्शन किये थे, से चल दिये । कैलिफोर्निया के तट पर यह सबसे विशाल पाइंट है । इसकी मुख्यभूमि प्रशात महासागर में दूर तक चली गयी है और निर्जन है । आधियो के लिए यह पाइंट प्रसिद्ध है ।

अगर कोई जहाज यहा से गुजर जाये और उसे झझा का सामना न करना पड़े तो यह एक बडी बात मानी जाती है, खास तौर पर जाडों में तो ऐसा होना असंभवप्राय माना जाता है। हमारे जहाज के दोनों ओर दुपेंचा पाल तने हुए थे। पाइट के मोड पर पहुँच कर जहाज का रुख बदल गया और हमने अनुवात दिशा के दुपेंचा पाल उतार दिये। अब हवा सामने की थी और जहाज की हरकतों से ऐसा लग रहा था कि इतने पाल इससे चल नही रहे हैं, और हमने आकाशपालों को नीचा कर दिया लेकिन खुले बाजू वाले दुपेंचा पालों को पहले की ही तरह तना रहने दिया। अब जहाज रुक-सा गया था। हवा तेज होती जा रही थी और कप्तान पाल न खोल कर जहाज के साथ ज्यादती कर रहा था।

मि० आर—व उसका भाई ये दोनो तूफान की आशका से अधिक ग्रस्त थे और उन्होने कप्तान से कुछ कहा भी, लेकिन उत्तर मे उसने यही कहा—मुझे मालूम हैं जहाज पर कितने पाल ताने जा सकते हैं। जाहिर था कि वह अपने जहाज की शान बघार रहा था और यह दिखाना चाहता था कि पाल तने रहने पर भी वह अपने रास्ते पर आगे बढ सकता है। वह खुले हिस्से पर खडा था और उसकी नजर डडो पर गडी थी कि वे पालों का कितना बोझ सभाल सकते हैं। इतने में हवा का एक तेज झोका आया और उसने सारा फैसला ही कर दिया। तब उसने एक साथ ही रायल पालों, फ्लान जीब और दुपेंचा पालों को खोल देने का हुक्म दे दिया। अब जहाज की अजीब हालत थी। कोई भी पाल संभाल कर लपेटा नही गया था और पाल व रस्सियां तेज हवा में उड रहे थे।

वह गरीब स्पेनी औरत डेक-सीढी तक आयी। उसका रग पीला पड गया था और वह डर के मारे मरी जा रही थी। मालिम और कुछ दूसरे मल्लाह अगवाड में निचले दुपेंचा पाल को लपेटने की कोशिश मे लगे थे जो उड कर दूसरी रस्सियां और डंडों मे उलझ गया था। मैं प्रमुख टापगैलेट दुपेंचा पाल को लपेटने के लिए ऊपर चढ़ा, लेकिन इसके पहले कि मैं वहा तक पहुँचू उस पाल की रस्सी खुल गयी और वह उड कर टापगैलेंट पाल से आगे पहुँच गया और हवा के जोर से उसकी धज्जिया उड गयी। तब तक पाल-रस्सियाँ भी अपनी जगह से खुल गयी, और इससे पहले किसी पाल को लपेटने में मुझे कभी इतनी कठिनाई नहीं हुई थी।

बडी मेहनत के बाद मैं उस तक, या उसके बचे-खुचे हिस्से तक, पहुँचा और उसे बांध ही रहा था कि कप्तान ने ऊपर मेरी तरफ देखते हुए हुक्म दिया, "डाना,

वहा उस रायल को लपेट देना।" दुपेंचा पाल को छोडकर मैं क्रास ट्रीज पर पहुँचा। यहाँ हवा का जोर बहुत ज्यादा था। टापगैलेंट मस्तूल बुरी तरह हिल रहा था और रायल मस्तूल तक पहुँचना खतरे से खाली नही था क्योकि हर चीज बुरी तरह हिल रही थी और टूट-फूट रही थी।

लेकिन एक ग्रदना मल्लाह हुक्म बजा लाने के अलावा और कर ही क्या सकता है ? इसलिए मैं यार्ड पर चढ गया और तब मुझे पता चला, यहां की हालत नीचे से भी बुरी थी। कमानियां खोल दी गयी थीं और यार्ड चारो ओर तैरते से जान पडते थे। पूरा पाल उडकर अनुवात दिशा में चला गया था। सभी आकाश पाल खुल चले थे और मेरे सिर पर उड रहे थे। मैंने नीचे देखा लेकिन नीचे मेरी आवाज नही पहुँच पाती क्योकि एक तो सब लोग अपने-अपने काम में लगे थे, दूसरे झझा की गरजन और पालो की फट-फट आवाज मे मेरी आवाज दब कर रह जाती।

सौभाग्य से समय दोपहर का था और चारो ओर दिन का प्रकाश था। पहिए पर तैनात मल्लाह की आँख ऊपर उठी तो उसने मेरी परेशानी समझ ली और अनेक इशारों की मदद से मैं उसे समझा सका कि अमुक-अमुक रस्सियो को खोलने-बांधने के लिए किसी को बुलाओ। इस बीच मैंने एक नजर नीचे डाली। डेक पर ऐसा घपला मचा हुआ था कि कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था और जहाज पागल की तरह पानी को चीरता हुआ आगे बढ रहा था। तरंगें उसके ऊपर लहरा रही थी और सीधे खडे रहने वाले मस्तूल पैंतालीस डिग्री के कोण पर झुक गये थे।

दूसरे रायल मस्तूल पर एस—था। वह उडते हुए पाल को जितना पकडना चाहता था उतना ही वह उससे उडा जा रहा था। कुछ ही देर में मेरे नीचे वाला टापगैलेंट पाल नीचा करके बाध दिया गया। अब मस्तूल का हिलना कुछ कम हुआ और कुछ ही देर में उसे लपेट कर मैं नीचे उतरा। लेकिन इस सिलसिले में तिरपाल का बना मेरा नया टोप उड कर समुद्र मे जा गिरा जिससे मुझे तकलीफ हुई। लगभग आध घंटे तक हम पूरी ताकत मे काम करते रहे और जिस समय झंझा ने हमारे पालो को पतगों की तरह उडा दिया था उसके लगभग एक घंटे बाद हम अपने शिखर-पालो और तूफानी पालो को दुहरा बाध चुके थे।

झझा के दौरान हमारा जहाज हवा के रुख में बह रहा था और हम सीधे पाइंट की ओर जा रहे थे। इसलिए जैसे ही हमने अपने पाल ठीक किये वैसे ही

हमने सुकान को घुमा कर अपने जहाज का रुख बदला और तब नये सिरे से आगे बढ़ना शुरू किया। अब हमारे सामने यह सुखद संभावना थी कि लगभग सौ मील दूर स्थित मोटेरी तक पहुँचने में हमें गोसाती (प्रचड पवन की प्रतिकूल दिशा) में यात्रा करनी पडेगी। रात होने से पहले ही बारिश शुरू हो गयी और पांच दिन तक हमें बरसाती और तूफानी मौसम का सामना करना पडा। नतीजा यह हुआ कि हमारा जहाज तट से कई सौ मील दूर जा पडा। इसी बीच हमें पता चला कि तूफान मे हमारा अगला शिखर मस्तूल उखड गया है और इस वजह से हमें अगले टापगैलेंट मतूस्ल को नीचा करना पड़ा और कम से कम पालो से काम चलाना पडा।

हमारे चारों यात्री बेहद बीमार थे, इसलिए इन पाच दिनों में हमें उनके दर्शन ही नही हुए। छठे दिन मौसम साफ हो गया और सूरज निकल आया लेकिन अभी हवा जोर की थी और समुद्र में उत्ताल तरगें उठ रही थी। हम एक बार फिर समुद्र मे निकल आये थे क्योकि सैकडो मीलो तक जमीन दिखायी नही देती थी। कप्तान रोज दोपहर को यत्रो की सहायता से सूरज के बारे में जानकारी हासिल करता था। अब हमारे यात्रियो ने दर्शन देने शुरू किये, और मुझ पहली-बार यह देखने का मौका मिला कि समुद्री यात्रा से तग आया यात्री कितना दयनीय प्राणी होता है।

बोस्टन से रवाना होने के बाद दो दिनो तक मैं बीमार रहा था। लेकिन अपने ठीक होने के बाद आज तक मैंने स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट मल्लाह ही देखे थे, जो चलते जहाज में बडे आराम के साथ एक भाग से दूसरे भाग में आ जा सकते थे (इसका कारण शायद यह रहा हो कि हमारे जहाज में यात्री थे ही नही) : और मैं स्वीकार करता हूँ कि डेक पर चलते समय, खाते समय और इच्छानुसार चलते-फिरते समय जब मैं अपनी तुलना उन दो दुर्बल, दुखी और पीले पड़े यात्रियों से करता था, जो डेकों पर चलते लडखडाते थे या अपने चक्कर खाते सिरों को थाम कर हमें मस्तूलो पर चढ़ते या ऊचे-ऊचे याडों पर बैठ कर चुपचाप काम करते देखते थे, तब मुझे अपनी श्रेष्ठता की सुखद अनुभूति होती थी।

कुछ दिनो बाद हम पाइन्ट पाइनोज पर उतरे। यह पाइन्ट मोटेरी की खाडी के मुहाने के सिरे की छूट (भूमि) है। जब हम किनारे के निकट पहुँचे तो पता चला कि पाइन्ट कंस्पेप्शन के दक्षिणी भाग के मुकाबले यहाँ के जंगल घने हैं।

दरअसल, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, पाइन्ट कंसेप्शन इस पूरे प्रदेश के दो पार्श्वों को अलग करने वाली विभाजन रेखा है। यदि आप इस पाइन्ट से उत्तर की ओर चलेंगे तो आपको जङ्गल घने मिलेंगे, प्रदेश की समृद्धता का आभास होगा और पानी की बहुतायत मिलेगी।

मोटेरी, और उसमे भी ज्यादा सैन फ्रैंसिस्को, के साथ यही बात हैं, जबकि पाइन्ट के दक्षिण की ओर चलने पर सैंट बारबरा, सैन पेड्रो, और सब से अधिक सैन डियागो, में जमीन नगी और सपाट है, यद्यपि उर्वरता की दृष्टि से यह जमीन भी कम नही है।

मोटेरी की खाडी मुहाने पर बहुत चौडी है। दोनो पाइटों के बीच इसकी चौडाई लगभग चौबीस मील है। इसके उत्तर में पाइन्ट एनो न्यूवो और दक्षिण में पाइन्ट पाइनोज़ है। लेकिन जब आप शहर की तरफ चलते हैं तो यह खाडी तग होती जाती है। मोटेरी नगर पाइन्टो से लगभग अट्ठारह मील दक्षिण में धनुषाकार बसा है। दोनो तटो पर घनी हरियाली है (दोनो तटो पर चीड के पेडो की बहु-तायत है) और चू कि इन दिनो बरसात का मौसम था इसलिए चारो तरफ हरियाली ही हरियाली दिखायी देती थी—घास, पत्तिया और सब कुछ। जगलों में चिडिए चहचहा रही थी और बहुत बडी सख्या में जङ्गली पक्षी हमारे सिरो के ऊपर उड रहे थे। यहाँ हमें दक्षिणी-पूर्वी झझाओं से कोई खतरा नही था।

किनारे से दो केबिन की दूरी पर हमने लंगर डाला। अब कस्बा हमारे ठीक सामने था और बडा सुन्दर लग रहा था। कस्बे के मकानो पर प्लास्टर किया गया था इसलिए वे सैंटा बारबरा के मटमैले मकानों से कही अच्छे लग रहे थे। छत पर लाल टायलें बिछी हुई थीं जो सफेद प्लास्टर की दीवारों की शोभा बढा रही थी। चारों तरफ हरे-हरे लान थे और ऐसा लगता था जैसे एक विशाल लान पर कोई सौ मकानों को यहाँ वहाँ बेतरतीब छिटका दिया गया हो। इस कस्बे में, और कैलिफोर्निया में मैंने जितने भी कस्बे देखे उनमें, गलियाँ या बाडें नही हैं (यह-वहाँ छोटी सी बाड लगा कर छोटा-सा बगीचा जरूर बना लिया गया है) इसलिए ऐसा लगता है जैसे हरियाली के बीच इन मकानो को बिना किसी तरतीब के रख दिया गया है और चू कि सब मकान इकमंजिले और कुटियों के नमूने पर बने हुए हैं, इसलिए कुछ फासले से देखने पर बडे सुन्दर लगते है।

हमने शनिवार को तीसरे पहर सुहावने मौसम में लंगर डाला था। रोशनी

काफी थी और हर चीज बडी खुशगवार लग रही थी। छोटे से दुर्ग पर मैक्सिकन झन्डा फहरा रहा था और परेड करते हुए सैनिकों के ढोल और बिगुल की आवाजें पानी पर तैर रही थी और उस दृश्य मे एक नयी जान डाल रही थी। सब लोगों के मन मे इस दृश्य से खुशी हुई। हमें ऐसा प्रतीत हुआ मानो हम किसी सभ्य देश में आ गये हों।

कैलिफोर्निया का हम पर पहला प्रभाव अच्छा नही पडा था—सैंटा बारबरा का खुला चिखिल बन्दर, किनारे से तीन मील दूर लंगर डालना, हर दक्षिणी-पूर्वी झझा से बचने के लिए समुद्र की शरण लेना, ऊची भग्नोर्मियो को पार करके नाव से तीर पर पहुँचना और वहां से एक मील दूर अधियारे कस्बे मे जाना, न सुनने के लिए कोई आवाज और न देखने के लिए कोई चीज—ले-दे कर फिर वही सैंडविच द्वीपो के मल्लाह, फिर वही खालें और चरबी के बोरे। इसमें पाइन्ट कंस्पेप्शन के पास आयी झझा को और शामिल कर लीजिए और अब आप आसानी से समझ गये होगे कि मोटेरी पहुंचने तक हम कैलिफोर्निया से किस कदर निराश हो चुके होगे। लेकिन यहा पहुच कर हमें सुकून मिला। यह सुन कर हम और खुश हुए कि यहाँ भग्नोर्मिया बहुत कम, नही के बराबर, हैं और आज तीसरे पहर सागर-तट किसी तलैया की तरह शाँत था।

हमने एजेन्ट और यात्रियो को किनारे पर उतारा और देखा वहां कई लोग उनकी प्रतीक्षा में खडे थे। उनमें कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होने कपडे तो उस प्रदेश के पहन रखे थे लेकिन जो अंग्रेजी बोल रहे थे, बाद में हमें पता चला कि ये लोग मूलतः अग्रेज और अमरीकी थे जिन्होने स्थानीय परिवारो में विवाह किये थे और अब यही बस गये थे।

मोंटेरी पहुँचने के साथ एक और बात भी जुडी हुई है, जिसका सम्बन्ध खास तौर पर मुझसे है। यहा पहुँच कर मैंने पहली बार रायल यार्ड को नीचा किया। यह काम कुशल मल्लाह ही कर सकते हैं। समुद्र पर मैंने इसे नीचे किये जाते समय ध्यान से देखा था और एक अनुभवी मल्लाह ने, जिसे मैंने बड़े यत्न से खुश कर लिया था, मुझे इससे सम्बद्ध सारी बातें समझा दी थी। उसने मुझे सलाह दी थी—मौका मिलते ही इस काम को खुद कर के देखना। दूसरे मालिम से मेरी खासी घनिष्ठता थी क्योकि पहले वह मेरी ही तरह अगवाड़ में साधारण मल्लाह था। मैंने उसे बताया कि यह काम मैं करना चाहता हूँ। मैंने उससे कहा कि जब

भी मौका मिले तो वह मालिम से कह कर मुझे ऊपर जाने का हुक्म दिला दे। अत. ज्योही जरूरत पडी, मालिम ने मुझे रायल यार्ड नीचा करने का हुक्म दिया। मैं ऊपर चढा और मन ही मन सारी प्रक्रिया को दुहराता रहा क्योंकि जरा सी चूक मेरी सारी कोशिशो पर पानी फेर सकती थी। सौभाग्य से मैंने काम पूरा कर लिया और अफसर को मुझे कोई आदेश नही देना पडा। जब रायल यार्ड डेक पर पहुचा तो मैंने अफसर के मुह से "बहुत अच्छे" सुना और मुझे इन शब्दो से इतना ही संतोष हुआ जितना कैंब्रिज मे लैटिन पढते समय अपनी अभ्यास-पुस्तिका पर अध्यापक द्वारा दी गयी शाबाशी के शब्दों को पढ कर होता था।

* * *

अध्याय—१२

अगले दिन इतवार, यानी छुट्टी का दिन था। अक्सर इतवार के दिन कुछ मल्लाहों को तीर पर जाने की इजाजत मिल जाती है, और हम लोग इस बात को लेकर झगड रहे थे कि तीर पर कौन जायगा कौन नही। जब सुबह को हमें काम पर बुलाया गया और हमने रस्सियों वगैरह की सज्जा ठीक की तो देखा कि पिछले तूफान में जो शिखर मस्तूल चटख गया था उसे उतार कर उसकी जगह नया मस्तूल लगाना पडेगा। इसके साथ ही दूसरे मस्तूलों की साज-सज्जा भी ठीक करनी होगी। यह बात हमें बहुत नागवार हुई। अगर मल्लाहों से उनका सैबाथ छीन लिया जाय तो वे भन्ना उठते हैं, और ऐसा महसूस करते हैं जैसे उन्हे काम में पीसा जा रहा हो। इसकी वजह यह नही है कि वे हमेशा, या अक्सर, सैबाथ का दिन धर्म-कर्म के कामो में बिताते हैं, बल्कि उनकी नाराजगी की वजह यह है कि उन्हें हफ्ते में सिर्फ यही दिन आराम के लिए मिलता है। इसके अलावा तूफानों के और अत्यत आवश्यक काम के कारण उन्हे वैसे भी कई बार छुट्टी से वंचित रह जाना पडता है, इसलिए जब ऐसी कोई बात न हो और जहाज बन्दरगाह में आराम से सुरक्षित रूप में खडा हो, तब यदि बिना किसी अत्यावश्यक कारण के उनसे उनका सैबाथ छीन लिया जाय तो उन्हे और भी बुरा लगता है। इस बार हमारा सैबाथ छिनने का केवल यह कारण था कि कप्तान ने कस्टमहाउस के अधिकारियो को सोमवार को जहाज पर बुलाने का फैसला कर लिया था और उनके आने से पहले वह जहाज की टीम टाम ठीक कर लेना चाहता था।

जहाज पर मल्लाह की स्थिति गुलाम जैसी होती है, लेकिन ऐसे मौको की

कमी नहीं जब वह अपने कप्तान की कोशिशों पर पानी फेर सकता है। जब खतरे या जरूरत का वक्त हो, या उससे कायदे से काम लिया जाय तब वह बिजली की तेजी से काम करता है, लेकिन जिस क्षण वह यह महसूस करता है कि उसे मुफ्त में, बेगार में, जोता जा रहा है तब अजगर भी उसकी सुस्ती का मुकाबला नहीं कर सकता। वह अपने काम को मना नहीं कर सकता और न अधिकारियों की अवज्ञा ही कर सकता है, लेकिन फिर भी अफसर को चाहिए कि जितना काम मल्लाह कर दे उसी को गनीमत समझे। समुद्र पर जो आदमी तीन महीने मल्लाह रह चुका हो वह "करो कम दिखाओ ज्यादा" के मूल मंत्र को भली भाति हृदयंगम कर लेता है।

उस दिन सुबह के समय यही समा रहा। हर आदमी ऊंघते हुए काम कर रहा था। किसी आदमी को नीचे से एक ब्लाक लाने के लिए भेजा जाता था तो वह उसे ढूंढने के पहले सब चीजें तितर-बितर कर देता था, जब अफसर दो बार चीख चुकता तब कही वह ब्लाक को ऊपर लाता और फिर चीजों को करीने से लगाने में काफी वक्त जाया कर देता। सूए खो गये। चाकू इतने भौंथरे पाये गये कि उन पर धार रखाना जरूरी हो गया। सान के पास हर दम तीन-चार मल्लाह अपने भौथरे चाकुओं पर धार चढाने के लिए खडे रहते थे। जब एक आदमी को मस्तूल की चोटी पर भेजा जाता था तब वह वहा पहुँचने के कुछ ही देर बाद यह बहाना लेकर नीचे उतर आता था कि वह कोई जरूरी चीज नीचे ही भूल गया था; और जब रस्से-कप्पियां लगाये गये तो छः आदमी मिल कर भी उतना काम नही कर रहे थे जितना अपनी मर्जी से एक मल्लाह कर लेता है। जब मालिम अफसर वहां से चला जाता था तो रत्ती भर काम नही होता था। सारा काम बडा मुश्किल था, और आठ बजे जब हम नाश्ते के लिए लौटे तो काम उसी हालत में था जिसमें हमने शुरू किया था।

नाश्ते के समय इस बात पर विचार-विमर्श हुआ। एक ने सुझाव दिया कि काम करने से साफ इनकार कर दिया जाय; लेकिन इस बात से विद्रोह की बू आती थी और हमने इस सुझाव को फौरन रद्द कर दिया। मुझे यह भी याद है कि एक मल्लाह ने कहा था कि फादर टेलर (वे बोस्टन के समुद्र तट के उपदेशक को इसी नाम से पुकारते थे) का उपदेश था कि अगर मालिम लोग तुमसे रविवार

को भी काम करने को कहें तो उनका कहना मानना तुम्हारा फर्ज है, और इसका पाप तुम्हें नही लगेगा ।

नाश्ते के बाद इस बात का पता चला कि अगर हम अपना काम जल्दी खत्म कर लें तो दोपहर के बाद हमें नाव में बैठ कर मछलियों का शिकार करने की इजाजत मिल जायगी । यह चारा रग लाया क्योकि कई लोग मछलियों के शिकार के बडे शौकीन थे; सब लोगो ने सोचा, चूंकि सारे दिन काम में नही लगे रहना है बल्कि एक ही काम करना है इसलिए इसे जितनी जल्दी कर डालें उतना ही अच्छा रहेगा । इसके बाद तो नक्शा ही बदल गया । जिस काम को देखकर ऐसा लगता था कि दो दिन मे खत्म होगा वह दो बजे के पहले ही पूरा हो गया, और हम पांच मल्लाह एक नाव में बैठकर पाइंट पाइनोज की ओर मछलियों का शिकार करने निकल पडे; लेकिन हमें तीर पर जाने की मनाही कर दी गयी थी ।

पाइन्ट पाइनोज पर हमने "लोरियट" को आते देखा जो सैंटा बारबरा से हमारे साथ ही चला था । पाइन्ट के आगे दोपहर से पहले तो सन्नाटा छाया रहा था लेकिन दोपहर को हल्का समुद्री समीर चल पडा था और उसमें चलता हुआ "लोरि-यट" धीरे-धीरे आ रहा था । हमने कई तरह की अनेक मछलिया पकडी जिनमें बहुतायत काड और पर्च की थी और फास्टर (अपदस्थ किये गये दूसरे मालिम) के कांटे में एक बडी और सुन्दर मोती वाली सीप फंस गयी । हमें बाद में पता चला कि यह जगह सीपियों के लिए प्रसिद्ध थी और एक छोटा-सा स्कूनर जहाज यहाँ से सीपियां भर कर संयुक्त राज्य अमरीका ले गया था, और उसकी यह यात्रा बडी लाभदायक रही थी ।

सूर्यास्त होते-होते हम लौट आये । तब तक "लोरियट"हमारे "पिलग्रिम" से लगभग एक केबिल की दूरी पर लंगर डाल चुका था । अगले दिन हमने जल्दी काम शुरू कर दिया और फलके उतारने, नौ-भार को ठीक-ठाक करने और मुआ-इने के लिए तैयारी करने में जुट गये । आठ बजे पांच कस्टमअधिकारी जहाज पर आये और उन्होंने सामान और सामान की सूची का मुआयना शुरू कर दिया ।

मैक्सिको के राजस्व-विषयक नियम बड़े कठोर हैं । उनके अनुसार यह जरूरी है कि पहले सारा नौभार किनारे पर उतारा जाय, वहाँ उसकी जाँच हो और तब दुबारा उसे जहाज पर चढ़ाया जाय, लेकिन हमारे एजेन्ट मि० आर—पिछले दो जहाजों से उन्हे जहाज पर ही ले आते थे और इस प्रकार नौभार को किनारे पर

ले जाने की तबालत बच गयी। अफसरो की वर्दी वही थी जो देश-भर मे हमें दिखाई दी थी। उनके सिर पर काले या गहरे-भूरे रंग का चौड़े किनारे वाला टोप था जिसके अगले हिस्से पर गिलट की या कढी हुई पट्टी लगी हुई थी और उनके अन्दर सिल्क का अस्तर लगा हुआ था; सिल्क या कढे हुए सूती कपडे की छोटी जाकेट (यूरोपियन स्कर्ट वाला वाडी कोट यहा नही पहना जाता); कमीज गरदन के पास खुली होती है; वास्कट, अगर होती है तो, उम्दा होती हैं; पतलून चौडी सीधी और लम्बी होती है और अक्सर मखमल, वेलवेटीन या ब्राड क्लाथ की बनी होती है, या उसकी जगह छोटी ब्रीचिस और सफेद जुर्राबें रहती हैं। वे हिरन की खाल का जूता पहनते हैं जो कि गहरे भूरे रंग का होता है और (चूंकि उसे इन्डियन आदिवासी बनाते है) प्राय: उस पर काफी काम वगैरह किया रहता है। उनकी पतलूनो में गेटिस नही होते बल्कि वे कमर में एक पेटी बांधते हैं, जिसका रंग आम तौर पर लाल होता है और जिसका बढिया या घटिया होना पहनने वाले की हैसियत पर निर्भर करता है। इसमें आप लबादे को और शामिल कर लीजिए, जोकि एकदम जरूरी है, और अब आपके पास कैलिफोर्निया के निवासी की पूरी पोशाक हो गयी है। लबादे से पहनने वाले आदमी के पद और वैभव का पता लगाया जा सकता है।

अमीरजादे काले या गहरे नीले रग के ब्राडक्लाश के बने लबादे पहनते हैं और उन पर मखमल व जरी का काम खूब हुआ रहता है; घटिया लबादे इन्डियन आदिवासियो के कबलो जैसे होते हैं; मध्यम वर्ग के लोगों का लबादा एक बड़े मेजपोश की तरह होता है जिसके बीच मे सर निकालने के लिए एक छेद बना होता है। यह प्राय: कंबल की तरह खरखरा होता है, लेकिन बनावट सुन्दर और रंग बिरंगी होने के कारण यह दूर से देखने में अच्छा लगता है।

स्पेनियों में कोई आदमी मेहनत—मजदूरी नही करता (मेहनत—मशक्कत का सारा काम दास इन्डियन आदिवासियों को करना पड़ता है); और हर अमीर स्पेनी मनसबदार दिखायी पडता है, तो हर गरीब और बदमाश स्पेनी किसी बदकिस्मत शरीफजादे से कम नही लगता। मैंने अक्सर देखा है कि सुन्दर आकृति वाले, विनम्र व्यवहार वाले, ब्राड क्लाथ और मखमल के कपडे पहने, सजे-सजाये घोडे के मालिक की जेब मे एक सिक्का तक नही रहता था और वह भूख के मारे तडप रहा होता था।

अध्याय - १३

अगले दिन जब नौ-भार करीने से लगा दिया गया तब हमने तिजारत शुरू कर दी। व्यापार-कक्ष स्टीअरेज में बनाया गया था और उसमें हल्की-फुल्की चीजें और बाकी सामान के नमूने रख दिये गये थे। हमारे साथ एम—नाम का जो मल्लाह बोस्टन से आया था उसे अगवाड से हटा कर प्रति नौभार का क्लर्क बना दिया गया। वह इस काम के लिए उपयुक्त था क्योंकि वह बोस्टन में एक कार्उटिंग हाउस में क्लर्क रह चुका था। पिछले कुछ समय से वह गठिया से पीडित था जिसके कारण वह तीर पर नाविक का काम नही कर सकता था, क्योंकि इस काम में उसे पानी और हवा में काम करना पडता।

आठ-दस दिन जहाज पर बडी चहल-पहल रही। सभी तरह के लोग—मर्द, औरतें और बच्चे—सामान देखने और खरीदने आये और हम लोग सवारियों और सामान को नावो में लाने-ले जाने में लगे रहे, क्योंकि उनके पास अपनी नावें नही थी। यदि किसी को पिनों का पलीता भी खरीदना होता था तो उसके लिए बन-सवर कर नये जहाज को देखने आना जरूरी था। एजेंट और उसके क्लर्क ने बिक्री का काम संभाला और हम जहाज के फलके पर या नावों पर काम करने में लगे रहे।

हमारा नौभार मिला-जुला था; यानी हमारे जहाज में दुनिया की हर चीज थी। हमारे पास सब तरह की शराब, (जो हम पीपे की नाप से बेचते थे), चाय, काफी, चीनी, मसाले, मुनक्का, शीरा, पीतल-तांबे आदि का सामान, चीनी-मिट्टी के बर्तन, टिन के बर्तन, छुरी-काटे आदि, सब तरह के कपड़े, लिन के जूते, लावेल के सूती कपडे, क्रेप, सिल्क; औरतों के लिए शाल, स्कार्फ, नेकलिस, हीरे जवाहिरात और कघे, फर्नीचर आदि सभी सामान था; और असल बात तो यह है कि हमारे जहाज पर ऐसी हर चीज मौजूद थी जिसकी कल्पना की जा सके—हमारे पास चीनी आतिशबाजी भी थी और इग्लैंड की गाडी के बारह जोडी पहिए भी जिन पर लोहे की हाल चढी हुई थी।

कैलिफोर्निया के लोग आलसी और फिजूल खर्च होते हैं, और अपनी जरूरत की चीजें खुद नहीं बना सकते। देश मे अंगूरों की बहुतायत है लेकिन फिर भी वे हम से बोस्टन की सडी शराब ऊंचे दाम देकर खरीदते हैं और आपस में उसकी फुटकर बिक्री एक रीयल (१२½ सेंट) फी वाइन गिलास करते हैं। वे एक खाल

के लिए नकद दो-डालर मांगते हैं, लेकिन वे उसी खाल को किसी ऐसी चीज के बदले दे देते हैं जिसकी कीमत बोस्टन में ७५ सेंट से अधिक नही होती। और वे (अपनी उन खालो से तैयार किये गये जो केप हार्न के दो चक्कर लगा आयी हैं) जूते तीन और चार डालर मे खरीद लेते है और चिकेनस्किन बूटो के लिए पन्द्रह डालर तक देते हैं।

आम तौर पर चीजें बोस्टन से तिगुनी कीमत पर बिक रही थी। इसका एक कारण तो यह था कि सरकार ने, अपनी ओर से होशियारी बरती थी और, आयात की जाने वाली चीजो पर भारी कर लगा दिये थे। ऐसा करने में उनका उद्देश्य देश का धन देश मे ही रखना था। इन करो और इतनी लम्बी यात्रा पर होने वाले भारी व्यय के कारण इस व्यापार में बहुत बडी पूंजी वाले व्यापारी ही कदम रख सकते थे। पिछले छः वर्षों में यहा जितना माल केप हार्न होते हुए आया था उसका लगभग दो–तिहाई भाग अकेली ब्रायट स्टर्गिस एन्ड कम्पनी से आया था जो हमारे जहाज की मालिक फर्म थी और जिसने इस तट पर एक स्थायी एजेन्ट को नियुक्त कर रखा था।

इस तरह का व्यापार हमारे लिए नया था और कुछ दिनों तक हमें यह बडा मजेदार लगा यद्यपि हमें पौ फटने से सूरज ढलने तक, और कभी-कभी उसके बाद भी, बराबर कठोर परिश्रम करना पडता था।

इस तरह सवारियों और सामान को बराबर इधर से उधर लाने और ले जाने में व्यस्त रहने के कारण इन लोगो के चरित्र, वेश-भूषा और भाषा के बारे में हमें काफी जानकारी हो गयी। मर्दों की पोशाक के बारे में मैं पहले ही बता चुका हूँ। औरतें सिल्क, क्रेप या सूती कपडे की बनी यूरोपियन काट की सिली गाउनें पहनती थी। उनकी गाउनों की विशेषता यह थी कि उनकी आस्तीनें छोटी होती थी जिनसे बाहें उघडी रहती थी, कमर के पास वे कुछ खुली होती थी और उनमें चोली नही होती थी। वे मेमने की खाल या साटिन के जूते पहनती थी; शोख रंगों की पेटियाँ बाधती थी; और प्रायः नेकलिस और कुन्डल अवश्य पहनती थीं। वे बोनेट एकदम नही पहनती थी। मैंने केवल एक औरत को बोनेट पहने देखा। वह एक अमरीकी जहाजी कप्तान की बीबी थी जो सैन डियागो में बस गया था। उसने अपनी बीबी के लिए बडी तायदाद में तिनकों और रिबन का यह शानदार तोहफा मंगवाया था। यहाँ की स्त्रियाँ अपने (काले या बहुत गहरे भूरे) बालों

को गले में डाले रहती थीं जो कभी तो खुले रहते थे और कभी ये उनकी लम्बी चोटिया गू थ लेती थी, यद्यपि विवाहित स्त्रियाँ अक्सर ऊंचे कंघे पर बालों का एक जूडा बना लेती थी।

धूप और मौसम से बचने का एक मात्र साधन उनका बडा मेंटल है जिसे वे अपने सर पर पहनती हैं और जब बाहर जाती हैं तो उसे खीच कर अपने मुंह के चारो ओर लपेट लेती हैं। अक्सर घर से वें अच्छे मौसम में ही निकल पाती हैं। जब वें घर में होती हैं या घर के बाहर खुले में बैंठी होती हैं, जो कि वे अच्छे मौसम में अवसर करती हैं, तो वे अपनी गरदन में एक बढिया डिजाइनदार रुमाल डाले रहती हैं। औरतो में सर के ऊपर एक पट्टी पहनने का रिवाज भी काफी प्रचलित है जिसके ऊपर सलीब, सितारा या कोई और सज्जा-चिन्ह रहता है। औरतें कई रंगों की हैं। उनका रग—उनकी वेश-भूषा और व्यवहार के अलावा—उनके पद पर निर्भर करता है। दूसरे शव्दों में कहा जा सकता है कि उनका रंग इस बात पर निर्भर करता है कि उनके अन्दर स्पेनी रक्त कितनी मात्रा में है।

जिन स्त्रियों में विशुद्ध स्पेनी रुधिर है, और जिनके परिवारों में आदिवासियों से विवाह नही हुए, उनका रंग पक्का है, और उनमें से कुछ तो अंग्रेज औरतों की तरह गोरी है। कैलिफोर्निया में इस तरह के परिवारों की संख्या बहुत कम है, जो हैं उनमें से अधिकांश लोग सरकारी अधिकारी हैं या वें अवकाश प्राप्त अधिकारी हैं जो अपनी अर्जित संपत्ति का भोग करने के लिए यही रुक गये हैं; कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपराध करने के कारण इधर भेज दिये गये हैं। ये लोग यहाँ के अभिजात वर्ग के हैं। ये आपस में ही शादी-ब्याह करते हैं, और हर तरह से अपने को दूसरे वर्गों से अलग रखने की कोशिश करते हैं। ये लोग अपने रंग, वेश भूषा, व्यवहार और बोली से अलग ही पहचाने जाते हैं, ये अपने को कैंसिलियंस कहते हैं और शुद्ध कैसिलियन भाषा बोलने की महत्वाकाँक्षा रखते हैं। नीचे तबकों में इसी भाषा का बोलचाल का भ्रष्ट रूप प्रचलित है।

इस उच्च वर्ग से जैसे-जैसे आप नीचे के वर्गों मे उतरते जायेंगे वैसे-वैसे आप देखेंगे कि उनका रङ्ग काला और धूसर पडता जायेगा। अत में आप शुद्ध इन्डियन आदिवासी पर जा पहुचेंगे जो अपने शरीर पर कपडे की एक छोटी पट्टी मात्र धारण करता है, जिसे वह कमर की चमडे की पेटी से कोपीन की तरह बाधे रहता है। आम तौर पर हर व्यक्ति की जाति का पता उसके रुधिर से चलता है और

पहली ही मुलाकात से यह पता चल जाता है कि उसका रुधिर किस कोटि का है। फिर भी, जिसके बदन मे स्पेनी रुधिर की एक बूंद भी होती है, यानी चाहे वह एक चौथाई या एक बटा आठ स्पेनी भी क्यो न हो, उसे दास नही माना जाता और उसे कपड़े, बूट, टोप, लबादा, रकाब, लम्बा चाकू आदि चीजें—चाहे वे कितनी ही रद्दी और गन्दी क्यो न हो—रखने का अधिकार मिल जाता है। वह स्वयं को एस्पानोलो कह सकता है और अगर संभव हो तो, सपत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त कर सकता है।

औरतो में कपडों-लत्तों का मोह अत्यधिक है और अक्सर उनमें से अनेक के विनाश का कारण बनता है। एक सुन्दर मेंटिल, नेकलिस या कुंडलों की एक जोडी दे कर उनमें से अधिकाश का कृपा-कटाक्ष प्राप्त किया जा सकता है। यह बडी आम बान हैं कि केवल दो कमरो के कच्चे फर्श वाले मकान में रहने वाली औरत साटिन के सलमे-सितारे वाले जूते; सिल्की गाउन, ऊचा कन्घा; सोने के नही तो गिलट के कुंडल और नेकलिस धारण करे। अगर उनके पति उनकी पोशाक पर काफी रुपया खर्च नही कर पाते तो जल्दी ही वे दूसरो के तोहफे स्वीकार करने लगती हैं। वे दिन-दिन भर हमारे जहाज पर महंगे कपडों और गहनो की खरीदारी करती रहती थी और इतना सामान खरीदती थी कि बोस्टन की दरजिनो और वेटिंग मेडों की भी आंखें खुल जांय।

पोशाक के मोह के बाद जिस चीज ने मुझे सब से अधिक आकर्षित किया वह था यहां के स्त्री-पुरुषो की आवाज का सुरीलापन और स्वर-विन्यास का सौंदर्य। यहा टोप का किनारा झुकाये, कंबल का लबादा पहने, अन्दर गन्दे कपड़े पहने और चमड़े की धूलभरी लेंगिग पहने घूमता-फिरता अदना शोहदा-सा लगने वाला हर आदमी शानदार स्पेनिश बोलता था।

उनकी भाषा का अर्थ समझे बिना भाषा की ध्वनि सुनने में ही आनन्द आ जाता था। वे प्राय नीग्रो लोगो की तरह रूक-रूक कर बोलते हैं, लेकिन फर्क यह है कि कभी-कभी बीच मे वे बहुत तेजी से बोलते हैं, तब ऐसा लगता है जैसे वे एक व्यंजन से कूद कर दूसरे व्यजन पर पहुँच रहे हों; अंत में वे जैसे संयोगवश एक दीर्घ स्वर पर आ जाते हैं और उस पर कुछ रूक कर ध्वनि में संतुलन स्थापित कर लेते हैं।

बोलने की यह विशेषता पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में कहीं अधिक है। पुरुषों में

उच्चारण की स्निग्धता और गरिमा विशेष रूप से पायी जाती है। जब एक अदना सा गाडीवान घोड़े की पीठ पर बैठ कर कोई संदेश देता था तो ऐसा लगता था जैसे कोई राजदूत श्रोताओ से कुछ कह रहा हो। सच तो यह है कि कभी-कभी ये लोग ऐसे अभिशप्त मानव लगते थे जिनका सब—कुछ नष्ट हो गया हो और केवल अभिमान, व्यवहार व स्वर ही बचा हो।

मुझे यह देख कर भी आश्चर्य हुआ कि यहाँ कितने बडे परिमाण में चांदी परिचलन में थी। निश्चित रूप से मैंने अपने जीवन में कभी एक बार में इतनी चांदी नहीं देखी जितनी मोंटेरी में गुजरने वाले इस सप्ताह में देखने को मिली। असली बात यह है कि यहां के लोगो में न तो कोई उधार प्रथा है, न बैंक और न वे पशुओं के अलावा किसी दूसरी चीज में अपना धन ही लगा सकते हैं। उनके पास चाँदी और खालों (जिन्हें मल्लाह "कैलिफोर्निया के बैंक नोट" कहते हैं) के अलावा परिचलन का कोई माध्यम नहीं है। वे जो भी चीज खरीदते हैं उसकी कीमत के बदले या तो चाँदी देते हैं अथवा खाल। वे सुखायी गयी और दुहरी तह की हुई खालें भौडी बैलगाडियों या खच्चरों की पीठों पर लाद कर लाते हैं और धन-पचास, अस्सी या सौ डालर और अर्द्ध डालर—रूमाल में बांध कर।

जब मैं कालिज में पढता था तो मैंने स्पेनिश नही पढी थी और जब जुआन फर्नांडीज में पहुँचा था तब मैं स्पेनिश का एक शब्द भी नही बोल सकता था, लेकिन वहाँ से रवाना होने के कुछ दिनो बाद मैंने केबिन से स्पेनिश का एक व्याकरण और शब्द कोश प्राप्त कर लिया था और इनके निरन्तर प्रयोग से तथा दूसरों द्वारा बोली गयी भाषा को विशेष ध्यान से सुन कर मैंने अपने लिए एक छोटा सा शब्द-संग्रह तैयार कर लिया था और इसकी मदद से मैं काम चलाऊ स्पेनिश बोलने लगा था। चूंकि मैं मल्लाहों के बीच सबसे ज्यादा स्पेनिश जानता था (सच तो यह है कि उनमे से कोई भी यह भाषा जानता ही न था), कालिज में पढ़ चुका था और लैटिन जानता था इसलिये मैं महान भाषाविद के नाम से विख्यात हो गया और जब कप्तान व अफसरों को कस्बे के विभिन्न भागों से सामान लाने या पत्र अथवा सवाद आदि भेजने की जरूरत पडती तो अक्सर यह काम मुझी को सौपा जाता था। कई बार मुझे ऐसी चीज लेने के लिए भेजा जाता था जिसका नाम भी मैंने नहीं सुना होता था लेकिन यह सिलसिला मुझे पसन्द था और इसीलिए मैंने कभी अपनी अज्ञता प्रकट नही होने दी। कभी-कभी मैं चुप-

चाप नीचे खिसक जाता था और तीर पर जाने से पहले शब्दकोश देख लेता था; अथवा रास्ते में किसी अंग्रजी-भाषी को पकडता और उससे अपने मतलब का शब्द मालूम कर लेता था, और तब इशारों व लैटिन और फ्रेंच के ज्ञान की सहायता से अपना काम निकाल लेता था।

यह अभ्यास मेरे लिए बडा उपयोगी सिद्ध हुआ। इससे मैंने जितना सीखा उतना महीनों के अध्ययन से भी नहीं सीखा जा सकता था। इससे मुझे लोगों के रीति-रिवाजो, चरित्रों और गृह—व्यवस्था को देखने-समझने का भी सुयोग मिला, इसके अलावा यह बन्दरगाह में खड़े जहाज के जीवन की एक रसता से छुटकारा देने वाला सुयोग तो था ही।

जहाँ तक मैं समझता हूँ, मोटेरी कैलिफोर्निया का सब से रमणीय और सभ्य दिखायी देने वाला स्थान है। इसके बीच में एक खुला चौक है जिसके चारों ओर इकमंजिली प्लास्टर की हुई इमारतें हैं, बीचोबीच आधा दर्जन तोपें हैं, जिनमें कुछ आकाश की तरफ उठी हुई हैं, कुछ नहीं। यह स्थान दुर्ग कहलाता है। हर कस्बे का दुर्ग उसके बीचोबीच स्थित है बल्कि यह कहना चाहिए कि हर किले के चारों ओर एक कस्बा बस गया है क्योंकि मेक्सिको की सरकार ने पहले दुर्ग बनवाये थे, और तब अपने बचाव के लिए लोग उनके आस-पास बसने लगे। इस कस्बे का दुर्ग एकदम खुला था और उसमें शहरपनाह नहीं थी।

कस्बे में लम्बी उपाधि वाले कई अफसर थे और लगभग अस्सी सैनिक थे जो वेतन, भोजन, वस्त्र और अनुशासन सभी दृष्टियों से दरिद्र थे। गवर्नर जनरल या जनरल (वह इसी नाम से अधिक लोकप्रिय है) मोंटेरी में रहता है इसलिए सरकारी सीट भी यही कस्बा है। उसकी नियुक्ति मेक्सिको की केंद्रीय सरकार करती है और वह प्रधान सैनिक तथा असैनिक अधिकारी होता है। उसके अलावा हर कस्बे में एक कमाडर होता है जो प्रमुख सैनिक अधिकारी है और दुर्ग की देख-रेख वही करता है तथा सभी विदेशियों व विदेशी जहाजों से सभी तरह की बातें उसी को तय करनी होती हैं। इसके अलावा दो या तीन "अल्काल्दी" और "कोरेजिडोर" भी होते हैं जिन्हे कस्बे के निवासी चुनते हैं और जो असैनिक अधिकारी होते हैं।

यहां के निवासियों को अदालतों और विधिशास्त्र के बारे में कुछ पता नही। मामूली म्युनिसिपल मामलो की सार-संभाल अलकाल्दी और कोरेजिडोर कर लेते है। गवर्नर जनरल के नीचे काम करते हुए कमाँडर सरकार, सेना और विदेशियों

से सम्बद्ध मामलो की सुनवाई करते हैं। गम्भीर मामलों का निर्णय गवर्नर जन-रल खुद करता है। अगर वह पास ही होता है तो खुद पड़ताल करता है, लेकिन दूर होने पर सम्बद्ध अफसर जो रिपोर्ट भेज देते हैं उन्ही के आधार पर वह फ़ैसला करता है।

प्रोटेस्टेंट मतावलम्बी व्यक्ति को कोई नागरिक अधिकार प्राप्त नही हैं, न वह कोई संपत्ति ही खरीद सकता है। सच तो यह है कि अगर वह बाहर से आये किसी जहाज पर नौकर न हो तो उसे वहा कुछ ही दिनो के लिये रहने दिया जाता है। परिणामतः वे अमरीकी और अंग्रेज जो यहाँ बसने का इरादा करते हैं वे कैथोलिक हो जाते हैं, उनके बीच यह कहावत विशेष प्रचलित है—"आदमी को चाहिए कि वह अपनी अंतरात्मा केपहार्न पर ही छोड दे।"

लेकिन अभी मोंटेरी की ही बात करें। कैलिफोर्निया के अन्य स्थानों की भांति ही यहाँ भी मकान इकमंजिले हैं। वे लगभग डेढ वर्ग फुट के तीन या चार इंच मोटे चौको से बने हैं। ये चौके गारे से चिने गये हैं, सारे मकान घूसर रंग के हैं। फर्श ज्यादातर कच्चे हैं, खिडकिया जालीदार और बिना शीशों वाली हैं। दरवाजे बहुत कम बन्द होते हैं और सीधे कामन रूम में खुलते हैं क्योंकि उनमें दूसरे दर-वाजे नही होने।

कुछ अमीर लोगों ने अपनी खिडकियों में कांच लगवा रखे हैं और उनके मकानो मे फर्श लकडी का है, और मोटेरी मे लगभग सभी मकानों में बाहर की तरफ प्लास्टर किया गया है। जो मकान अच्छे हैं उनकी छतें लाल टायलो से बनी हैं।

साधारण मकानो में दो या तीन कमरे होते हैं जो एक-दूसरे में खुलते हैं और जिनमें फर्नीचर के नाम पर दो-एक खाटें, कुछ कुर्सिया और मेजें; दर्पण, किसी न किसी तरह की सलीब, किसी चमत्कार या शहादत से संबद्ध शीशे से मढ़े हुए चित्र आदि चीजें रहती हैं। घरो में धुनाले या चूल्हे नही होते, क्योकि यहा की जलवायु ऐसी है कि हर समय आग की आवश्यकता नही पडती, और उनका खाना वगैरह घर से कुछ अलग हटकर बनी रसोई में पकाया जाता है।

जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, मेहनत का सारा काम इंडियन आदिवासी करते हैं। हर घर में दो या तीन आदिवासी रहते हैं। गरीब से गरीब लोग भी एकाध आदिवासी को तो रख ही सकते हैं, क्योंकि मजदूरी के रूप में खाने के

अलावा उन्हें पुरुष आदिवासी को महज मोटे कपड़े का एक छोटा टुकडा और पेटी देनी पडती है और स्त्री आदिवासी को जूते या मोजे के बिना एक मोटे-झोटे कपड़े की गाउन भर देनी पडती है।

मोटेरी में ऐसे अनेक अंग्रेज (अंग्रेजी भाषा बोलने वाले सभी लोगों को यहा अंग्रेज या "इंगलिस" कहा जाता है) और अमरीकी हैं जिन्होने कैलिफोर्निया की लडकियों से विवाह कर लिये हैं, कैथलिक चर्च को स्वीकार कर लिया है और बडी-बडी जमीन-जायदाद वगैरह के मालिक बन बैठे हैं। कैलिफोर्निया के लोगों के मुका-बले इनमें परिश्रम, मितव्ययिता और उद्यम की अधिकता होने के कारण जल्दी ही इन लोगों ने सारे व्यापार पर अधिकार जमा लिया है। इनमें से अधिकाश लोग दूकान-दार हैं और हमारे जहाज से थोक माल खरीद कर उसकी फुटकर बिक्री करते हैं। इसके अलावा वे देश के अदर वाले इलाकों से नकद पैसे देकर खालें भी खरीदवाते हैं और फिर उनका विनिमय हमारे जहाज से कर लेते हैं।

समुद्र तट पर स्थित प्रत्येक कस्बे मे इस तरह का व्यापार विदेशियो के हाथ में है। मुझे याद पडता है कि मैंने केवल दो दूकानें ऐसी देखी थी जिनके मालिक कैलिफोर्निया के ही निवासी थे। कुदरती तौर पर यहा के लोग विदेशियों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं और अगर वे अच्छे कैथोलिक नही बन जाते, उनकी लडकियो से शादी करके अपने बच्चों का पालन-पोषण कैथोलिक और स्पेनी बच्चो की तरह नही करते, और उन्हें अंग्रेजी पढ़ाते हैं तो उन्हे इन कस्बो में टिकने नही दिया जाता। हां अगर विदेशी ये सब काम करते हैं तो वे शक करना बद कर देते है और उस दशा मे ये विदेशी लोकप्रिय और अग्रणी नागरिक भी हो जाते हैं। मोटेरी और सैंटा बारबरा—दोनो कस्बों के प्रमुख अल्काल्दी जन्मतः अमरीकी थे।

मुझे ऐसा लगा जैसे मोटेरी के आदमी हर दम घोड़े के पीठ पर सवार रहते हों। यहाँ घोडों की इतनी ही बहुतायत थी जितनी जुआन फर्नांडीज में कुत्तो और चूजो की थी। घोडों को बाधने के लिए अस्तबल नही हैं बल्कि उन्हें जहाँ चाहे वहा चरने के लिए आजाद छोड दिया जाता है। घोडो को दागी कर दिया जाता है और उनकी गरदनों में चमडे की लबी पट्टिया बाध दी जाती हैं जिन्हें "लसो" कहा जाता है और जो जमीन पर घिसटती चलती हैं। इन पट्टियों की मदद से घोडो को बडी आसानी से पकडा जा सकता है। पुरुष अक्सर सुबह के समय किसी घोड़े को पकड़ लेते हैं और उस पर जीन और लगाम कस देते हैं। दिन भर वे उसको

सवारी करते हैं और रात को छोड देते हैं और फिर अगले दिन कोई और घोडा पकड लेते हैं। जब वे लबे सफर पर निकलते हैं तो पहले एक घोडा लेते हैं, कुछ दूर चलने के बाद वे किसी दूसरे घोड़े को पकड कर उस पर जीन और लगाम कस कर उसकी सवारी करते हैं, और फिर आगे चलकर उसे भी छोड़ देते हैं और तीसरा घोडा पकड लेते हैं। इस तरह पूरे सफर में वे अनेक बार अपना घोडा बदलते हैं।

इतने अच्छे घुडसवार दुनिया में शायद ही कहीं हो। यहा के लोग चार-पाच वर्ष की उम्र मे ही घुडसवारी करने लगते हैं जबकि उनके नन्हे पांव घोडे के पुट्ठे तक भी मुश्किल से पहुँच पाते हैं, और ऐसा लगता है जैसे उसके बराबर ऊचा कद होने तक ये उससे उतरते ही नहीं। रकाब का अगला हिस्सा बंद होता है ताकि जंगल में सवारी करते समय उलझे नही; जीनें बडी और भारी होती हैं जिन्हे घोड़े पर पूरी तरह कस दिया जाता है, उनके अगले हिस्से मे बडी-बडी घुन्डियाँ होती हैं जिनमे (प्रयोग न होने की अवस्था में) लासो को बाँध दिया जाता है। बिना घोड़े के वे एक-दूसरे के घर तक नही आ-जा सकते क्योकि आम तौर पर उनकी छोटी झोपडियो के बाहर वाले खंभे से कई घोडे बंधे रहते हैं। जब उन्हें अपनी फुर्ती दिखानी होती है तो वे उस पर चढने में रकाब पर पाव नही रखते बल्कि घोडे को चाबुक लगाते हैं और जब वह चल पडता है तो उछल कर सीधे जीन पर जम जाते हैं और एड लगाते हुए उसे हवा की रफ्तार से भगा ले जाते हैं। उनकी ऐडे बडी जालिम होती हैं। हर एड मे एक इच लम्बी चार-पाच जंग लगी काँटेदार फिरकी लगी रहती हैं। घोडो की कोखें इनके कारण अक्सर घायल रहती हैं। मैंने एकाध बार देखा कि लोग साडो के पीछे अपने घोड़े दौडाते हुए आते थे और घोडो के पिछले पैर खून से लथपथ हो जाते थे।

वे अक्सर अपनी घुडसवारी, घुडदौड में और घोडो पर चढकर साड पकडने आदि करतबो में प्रदर्शित करते रहते थे, लेकिन चूंकि हमने कोई छुट्टी तौर पर नही बितायी इसलिए हमे यह कुछ देखने को नही मिल सका। मोटेरी मुर्गों की लडाई, सब तरह के जुए के खेलो, नाच-गानो और हर तरह के खेल-तमाशो और बदमाशी का एक बडा अड्डा है। जानवर पकडने वाले और शिकारी लोग राकी पर्वतो से उतर कर कभी कभी यहा आ जाते हैं। इन लोगो के पास कीमती खालें और फर होते हैं, और इन्हें मनोरंजन और खुल कर खेलने का हर मौका दिया

जाता है, और अंत मे ये अपना समय तथा धन गँवा कर कँगाल बन कर लौट जाते हैं।

मोटेरी के बडा कस्बा बनने में सबसे बडी बाधा यहाँ के लगों का चरित्र ही है। यहाँ की मिट्टी निहायत जरखेज हैं; जलवायु श्रेष्ठतम हैं, पानी की बहुतायत है और कस्बे की स्थिति बेहद सुन्दर है। बन्दरगाह भी बहुत अच्छा है क्योंकि इसमें केवल उत्तर की ओर से चलने वाली हवाए ही खतरा पैदा कर सकती है; और यद्यपि तल-पकड सर्वश्रेष्ठ कोटि की नही है फिर भी मुझे पता चला कि यहा केवल एक ही जहाज डूबा है। यह जहाज मेक्सिको का दो मस्तूतो वाला जहाज था, और हमारे आने से कुछ महीनो पहले तूफान उसे किनारे की ओर खींच ले गया था। तूफान ने इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। एक को छोड कर उसमें सवार सभी मल्लाह और अफसर डूब गये। फिर भी, यह दुर्घटना कप्तान की लापरवाही या मूर्खता के कारण हुई। उस समय बोस्टन का जहाज "लँगोडा" भी वहीं था और बुद्धिमानी से काम लेने के कारण वह झंझा उसका कुछ भी न बिगाड सकी थी।

हमारे जहाज के अलावा बन्दरगाह मे केवल नन्हा "लोरियट" था। मैं अक्सर उस पर जाया करता था और उसके सैंडविच द्वीप के मल्लाहों से मेरा खासा परिचय हो गया था। उनमें से एक मल्लाह थोडी-बहुत अंग्रेजी बोल लेता था और उससे मुझे उनके बारे में काफी जानकारी मिली। वे सब सुगठित शरीर वाले फुर्तीले लोग थे; उनकी आँखें काली थी, चेहरे से बुद्धिमत्ता प्रकट होत थी, रंग कुछ काला-पन लिये हुए भूरा था, बल्कि मैं तो उन्हें ताम्रवर्णी कहना ज्यादा पसन्द करूंगा, बाल काले और मोटे थे, लेकिन नीग्रो लोगो की तरह ऊन जैसे नहीं थे। वे प्राय: हमेशा बोलते ही रहते थे, और जहाज के अगवाड में हमेशा कच-कच मची रहती थी।

उनकी भाषा में गले का प्रयोग वहुत अधिक होता है और पहली बार सुनने में अच्छी नही लगती, लेकिन धीरे-धीरे वह इतनी बुरी नहीं लगती, और कहा जाता है कि उसमें भाव-प्रकाशन को काफी क्षमता है। वे सकेतो की काफी सहायता लेते हैं और बडे जोश खरोश से दुनिया-भर की बातें करने लगते हैं। पानी के तो उन्हें कछुए ही समझो, इसलिए वे नाव खेने में बडे कुशल माने जाते हैं। यही वजह है कि कैलिफ़ोनिया के तट पर ये लोग इतनी बड़ी संख्या में पाये जाते

हैं। भग्नोर्मि में नौचालन करने मे वे विशेष सिद्धहस्त होते हैं। वे रस्से-रस्सियों को ठीक-ठाक करने में भी तेज और फुर्तीले माने जाते हैं और गर्मियो में काम अच्छी तरह करते हैं, लेकिन जो लोग उनके साथ केप हार्न के प्रदेशों में और ऊँचे अक्षाँशों मे गये हैं उनका कहना है कि जाडो के मौसम के लिए वे बेकार हैं। उनकी पोशाक लगभग हमारे मल्लाहो जैसी ही होती है। इन द्वीपवासियों के अलावा इस जहाज में दो अग्रेज मल्लाह भी थे जो द्वीपवासी मल्लाहो के ऊपर बोसुन का काम करते थे और रस्सियो की सज्जा आदि का निरीक्षण करते थे।

उनमें से एक को मैं पक्के अंग्रेज नाविक के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में हमेशा याद रखू गा। वह लडकपन से ही जहाज पर काम करने लगा था। अन्य सभी अंग्रेज नाविकों की तरह सात साल तक वह सीखतर रहा। उस समय उसकी उम्र चौबीस-पच्चीस के आस-पास रही होगी। वह लम्बा था लेकिन इस बात का पता तभी चलता था जब वह दूसरों के पास खडा होता था क्योकि उसके कधे और सीना इतना चौडा था कि वह मझोले मे कुछ ही ऊचे कद का दिखायी पडता था। उसकी छाती जितनी चौडी थी उतनी ही गहरी, भुजाए हैराक्लीज की तरह थी; और उसके हाथ "मल्लाह की मुट्ठी—उसका हर बाल रस्सी का सून होना है," इसके अलावा उस जैसी प्यारी मुस्कान मैंने कभी नही देखी। उसके गाल सुन्दर भूरे रग के थे; दाँत बेहद सफेद थे, और बाल काले स्याह और घुन्घराले थे और पूरे सिर पर फैले हुए थे। उसका माथा चौडा और सुन्दर था; उसकी आखों में इतनी चमक थी कि वह उन्हे हीरो के भाव किसी डचेज़ (ड्यूक की पत्नी) को बेच सकता था। उसकी आखो का रग आयरलैंड के उस बहुरगी सुअर की तरह था जिसके रंग गिनने से पहले ही बदल जाते हैं, स्थिति और प्रकाश में लेशमात्र परिवर्तन होने पर उसकी आखो में एक नयी रगत आ जाती थी, लेकिन प्रायः उनका रंग काला या काला-सा रहता था।

सिर के पिछले हिस्से पर वह तिरपाल का बना वार्निश किया हुआ टोप पहनता था, उसके बालो के बडे गुच्छे आखो तक लटके रहते थे; वह 'मोटे कपडे की सफेद पतलून और कमीज पहनता था, उसकी जाकेट का रग अक्सर नीला रहता था और काला रुमाल गरदन मे लिपटा रहता था; वह पुरुष के सौंदर्य का एक उत्तम उदाहरण था। अपनी चौडी छाती पर उसने "विदाई के क्षण" गुदवा रखा था; एक जहाज विदा होने वाला था; तट पर एक बेंच पड़ी थी, और एक युवती

व उसका नाविक प्रेमी एक दूसरे से जुदा हो रहे थे। नीचे उसके नाम के छोटे दस्तखत थे और दो और अक्षर थे जिनका अर्थ मेरे मुकाबले वह ज्यादा अच्छी तरह समझता था। गुदाई बडी सुन्दर थी और हावर में एक आदमी ने यह गुदाई की थी जिसका पेशा ही मल्लाहों के शरीर पर गोदना था। अपनी एक स्वस्थ भुजा पर उसने सलीब पर ईसा का चित्र गुदवाया था और दूसरी पर "फंसा हुआ लंगर" का।

उसे पढ़ने का बडा शौक था, और हमारे पास अगवाड में जितनी किताबें थी वे हमने उसे दे दी, जिन्हे पढने के बाद उसने हमें वापस कर दिया। उसे काफी जानकारी थी और उसके कप्तान का कहना था कि वह एक निपुण मल्लाह है और मौसम अच्छा हो या खराब—किसी भी जहाज के लिए अपने वजन के बराबर सोने में भी सस्ता है। उसकी शक्ति अपरिमित रही होगी और उसके पास गिद्ध की दृष्टि थी।

यह शायद कुछ अजीब-सा लगे कि कोई आदमी उस अजनबी और गैर मल्लाह के बारे में इतनी बारीकी से बताये जिससे दुबारा मिलने की भी उम्मीद न हो, और जिसके बारे में जानने की किसी को परवाह न हो, लेकिन यह बात ही कुछ ऐसी है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अविस्मरणीय परिस्थिति में न मिलने पर भी, किसी ज्ञात या अज्ञात कारण से, हमसे भुलाये नही जाते। उसका नाम बिल जेक्सन था; और मैं समझता हूँ कि जो लोग संयोगवश मेरे परिचित हो गये हैं उनमें शायद ही कोई ऐसा हो जिससे मिलने में मुझे इतनी अधिक खुशी हो जितनी जेक्सन से मिलने पर होगी। अपने सपर्क में आने वाले हर आदमी के लिए वह एक सुन्दर और मस्त आदमी तथा जहाज पर एक अच्छा साथी साबित होगा।

मोंटेरी में इतवार फिर से आया लेकिन पहले की तरह ही हमें छुट्टी इस बार भी नही मिली। उस दिन किनारे के लोग पहले के मुकाबले कही बडी मात्रा में सज-धज कर जहाज पर आ गये और हम सारे दिन नाव खेने और नया सामान खोलने में इस कदर व्यस्त रहे कि हमें खाने का समय भी मुश्किल से मिल सका। हमारा भूतपूर्व दूसरा मालिम छुट्टी पाने के लिए कृतसंकल्प था। उसने लाँग कोट और काला टोप पहना, जूतों पर पालिश किया और जहाज के पिछले भाग में कप्तान से तीर पर जाने की आज्ञा मांगने गया।

इससे ज्यादा अविवेकपूर्ण काम और क्या हो सकता था; क्योंकि उसे मालूम

था कि छुट्टी मिलनी असम्भव है; और इसके अलावा मल्लाह को छुट्टी मिलने की चाहे सोलहो आने उम्मीद क्यो न हो, फिर भी उसे पिछले भाग में हमेशा काम के कपड़ो मे ही जाना चाहिए ताकि उससे यह प्रकट हो कि छुट्टी मिलने या न मिलने का उन्हे कोई निश्चय नही है । छुट्टी मिलने के बाद उसे नहाना-धोना, कपड़े पहनना और दाढी बनानी चाहिए । लेकिन यह गरीब आदमी बडी जल्दी गरम हो उठता था और गलत काम का विरोध करने को तैयार रहता था । हमने उसे पिछले हिस्से में जाता देखा, और हमें पूरी तरह मालूम था कि उसका स्वागत किस प्रकार होगा ।

कप्तान सुबह का सिगार पीता हुआ छतरी में टहल रहा था और फास्टर कुछ दूर जाकर इस इन्तजार मे खडा हो गया कि कप्तान की नजर उस पर पड़े । कप्तान ने दो-एक चक्कर लगाये और तब सीधा चलकर उसके पास आया और उसे सर से पैर तक घूर कर देखा, और तब अपनी तर्जनी उठा कर नीची आवाज में एकाध शब्द कहा जो हम नही सुन सके लेकिन उन शब्दों का फोस्टर पर जादू की तरह असर हुआ । वह आगे बढ कर अगवाड में पहुँचा और एक मिनट बाद अपने सादा कपडों में दिखायी दिया और चुपचाप अपने काम पर फिर से जुट गया । कप्तान ने उससे क्या कहा यह हम उससे कभी नहीं पूछ पाये, लेकिन निश्चय ही उसने कुछ ऐसा कहा था जिससे हमारे भूतपूर्व दूसरे मालिम का बहिरंग और अन्तरंग इतना बदल गया था कि हमें आश्चर्य हुआ ।

* * *

अध्याय—१४

कुछ दिन बाद, जब हमने देखा कि व्यापार कुछ मन्दा हो गया है, तो हमने लंगर उठा दिया । हमने अपने जहाज पर शिखरपाल तान लिये और चलने के पहले एक तोप दागी जिसके जवाब में दुर्ग से एक तोप दागी गयी । अब हम किनारे-किनारे चल रहे थे और वह छोटा-सा कस्बा मोंटेरी पीछे छूट चला था । हमारा इरादा सैंटा बारबरा पहुँचने का था और चूंकि हम अनुवात दिशा में चल रहे थे इसलिए हवा खूब चल रही थो । पाइंट पाइनोज पार करने के बाद हमने नीचे और ऊपर के दुपेंचा पाल तान लिये और हम आठ-नौ नौट की गति से आगे बढ़े । हमें आशा थी कि आते समय जिस फासले को तय करने में हमें तीन सप्ताह

लग गये थे उसे इस बार हम चौबीस घंटों में ही पार कर लेंगे। हमने हवाई रफ्तार से पाइंट कस्पेप्शन को पार किया। हवा इतनी तेज चल रही थी कि अगर हम दूसरे रास्ते से जा रहे होते तो हमें ऐसा लगता जैसे झंझा चल रही हो। जब हम सैंटा बारबरा के समीपवर्ती द्वीपों पर पहुचे तो हवा कुछ मन्द पड गयी लेकिन फिर भी मौटेरी से चलने के बाद ३० घंटो के अंदर ही हमने फिर अपनी पुरानी जगह पर ही लगर डाल लिया।

यहां हर चीज पहले-जैसी ही सुन्दर थी—विशाल पोतहीन खाडी, गरजती और सागर-तट से टकराती भग्नोर्मि, सफेद मिशन; अधेरा कस्बा और ऊचे वृक्षहीन पर्वत। यहा पहुँचते ही हमने जहाज पर दक्षिणी-पूर्वी झंझा के समय समुद्र की ओर भाग खड़े होने की पूरी तैयारी कर ली।

हम यहां लगभग पद्रह दिन रहे। जब भग्नोर्मि खास ऊंची नही होती थी तब हम सामान किनारे पर पहुचा आते थे और किनारे से खालें जहाज पर ले आते थे, लेकिन मोटेरी के मुकाबले यहा आधा व्यापार भी नही था। सच तो यह है कि जहा तक हमारा ताल्लुक है हम तो यही समझते थे कि वह कस्बा पहाडो के बीच मे कही होगा। हमारे जहाज ने जहा लगर डाला था वह जगह समुद्र-तट से तीन मील थी और कस्बा समुद्र-तट से भी एक मील परे था इसलिए हम उसे बहुत कम, या नही के बराबर, ही देख पाये।

कभी-कभी हम कुछ सामान किनारे पर उतारते थे। वहां से उस सामान को इंडियन लोग अपनी भोडी, बडी बैलगाडिया मे लाद कर ले जाते थे। इन गाडियों में जुआ बैल की गरदन के ऊपर रहता था और पहिए छोटे और भारी-भरकम होते थे। कुछ खालें कस्बे से किनारे पर लायी गयी थी और हम उन्हे कैलिफोर्निया स्टाइल में जहाज पर ले आये। अब हमें खालें ढोने का अभ्यास हो गया था और हम थोड़े से पुख्ता भी हो चले थे, क्योकि कोई आदमी कितना ही कसीला क्यों न हो इस काम के लिए उसे थोडा और पुख्ता होना पडता था।

खालें सुखा कर ही लायी जाती हैं, वर्ना उन्हें खरीदा नहीं जाता। जब जानवरों की खालें उतारी जाती हैं तब उनके सिरों पर छेद होते हैं जिनमें खूंटियां ठोक कर उन्हे सुखाया जाता है ताकि वे खुली धूप में सूख भी जायें और सिकुडें भी नही। सूखने के बाद उन्हे लबाई से मोड कर दुहरा किया जाता है, जिसमें आम तौर पर बालों वाला हिस्सा अदर की तरफ रहता है। और फिर उन्हे खच्चरों

- था गाडियों में लाद कर पूर्ण ज्वार सीमा के बाहर उनका ढेर लगा दिया जाता था, और तब हम उन्हें एक-एक, या छोटी हों तो दो-दो, करके सिर पर लादते थे और उन्हे नाव में फेंक देते थे जो आम तौर पर भग्नोर्मि के बाहर किसी छोटी बाड या नाव-लगर के सहारे खडी कर दी जाती थी।

हम सब अपने सिरों पर मोटी स्काटिश टोपियां पहने रहते थे जो मुलायम भी रहती थी और सर का बचाव भी करती थी; क्योंकि हम जल्दी ही समझ गये थे कि पहली बार देखने मे यह कैसा ही लगे या ढोने वाला आदमी कैसा ही महसूस करे, लेकिन कैलिफोर्निया में इस "कपाल कर्म" के बिना गुजारा नही हो सकता। इसका कारण यह है कि एक तो खालों को सिर पर ही रखना इसलिए जरूरी है कि ऊची लहरे उन्हे भिगो न दें, दूसरे खालें इतनी बडी और भारी होती थीं, और इतनी सख्त होती थी जैसे तख्ता, कि उन्हें सिर पर ढोने में ही सबसे अधिक सहूलियत रहती थी। कुछ मल्लाहो ने, यह कहकर कि सर पर ढुलाई तो वेस्ट इडीज के नीग्रो लोगो की तरह लगती है, कुछ और तरीके आजमाये लेकिन अन्त में हार कर उन्हे यही तरीका अपनाना पडा। उन्हे उठा कर सिर पर रखना एक बडी कला है। हमें खालों को जमीन पर से उठाना पडता था और चू कि उनमें से अधिकाश बहुत भारी होती थी और इतनी चौड़ी होती थीं कि दोनों हाथों में मुश्किल से समा पाती थी और इसके अलावा हवा उन्हें आसानी से उड़ा ले जाती थी, इसलिए उन्हे ढोने में कठिनाई का सामना करना पडता था।

इस धरा-उठाई के सिलसिले में कई बार मेरी हंसी उडी है और कई बार मैंने दूसरों की हसी उडाई है। कई बार रेत पर से किसी बडी खाल को उठा कर सिर पर रखते समय लोग खुद रेत मे गिर पडते थे और कई बार हवा के झोंके में उडती हुई खाल को रोकने के प्रयत्न मे वे खुद कुछ दूर घिसटे चले जाते थे। कप्तान ने यह कहकर हमारा काम और मुश्किल कर दिया कि "कैलिफोर्निया फैशन" यह है कि एक बार में दो खालें सिर पर उठायी जायें; और चूंकि एक तो उसने इस बात पर जोर दिया, दूसरे हम दूसरे जहाजो से पिछडना नही चाहते थे, इसलिए पहले कुछ महीनो तक हमने एक बार में दो खालें ही ढोयी; लेकिन बाद में हमारा साबका कुछ और खालें ढोने वालों से पडा तो हमने देखा कि वे एक बार में एक ही खाल ढोते हैं, लिहाजा हमने भी एक ही खाल ढोना शुरू किया और अपने काम को किसी कदर हल्का किया।

जब हमें सिर पर बोझ उठाने की आदत हो गयी और हमने "खाल को उछा-लते चलने" का कैलिफोर्निया स्टाइल सीख लिया तो थोडी ही देर में दो-तीन सौ खालें ढो सकना हमारे लिए आसान हो गया, लेकिन यह पानी में पैर देने का काम था और अगर सागर-तट पथरीला होता था तो हमारे पांवों के लिए और नुकसान-देह रहता था, क्योंकि हम यह काम हमेशा नगे पाँव इसलिए करते थे कि खारे पानी में मुतवातर भीगने से अच्छे से अच्छे जूतो का नष्ट हो जाना निश्चित है। इसके अलावा हमें तीन मील तक भरी हुई नाव को भी खेना पडता था जिसमें अक्सर दो घन्टे लग जाते थे।

अब हम बन्दरगाह के कामो के अभ्यस्त हो चले थे और चूंकि यह ड्यूटी समुद्र की ड्यूटी से बहुत कुछ अलग तरह की थी इसलिए इसके बारे में कुछ जान लेना अच्छा रहेगा। सबमे पहले, सुबह होते ही सब लोगों को काम पर जुट जाने का आदेश दिया जाता है, खास तौर पर अगर दिन छोटे होते हैं तब तो पौ फटने से पहले ही काम शुरू हो जाता है। रसोइया रसोई में आग तैयार कर लेता है; स्टीवार्ट केबिन मे अपना काम शुरू कर देते हैं। मालिम अफसर बराबर डेक पर मौजूद रहता है लेकिन वह काम में कोई हिस्सा नही बँटाता और काम का सारा भार दूसरे मालिम पर आ पड़ता है जो दूसरे मल्लाहों की तरह अपनी पतलून ऊपर चढ़ाए डेक पर दौड-धूप करता रहता है।

धुलाई, सफाई और पुंछाई के काम में आठ बज जाते हैं, तब सब लोगों को नाश्ता दिया जाता है। नाश्ते के लिए आधे घन्टे का समय नियत रहता है, इसके बाद नावें नीचे उतारी जाती हैं और जहाज के पिछले भाग से बांध दी जाती हैं, और मल्लाह लोग अपने-अपने काम पर जुट जाते हैं। यह काम अनेक प्रकार का होता है और उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करता है।

छोटी नावों में किनारे पर जाने का सिलसिला तो चलता ही रहता है; और अगर भारी सामान किनारे पर पहुँचाना होता हैं, या खालें किनारे तक लानी होती हैं तो सब मल्लाह एक अफसर के साथ दीर्घ नौका मे बैठ कर किनारे पर जाते हैं। इसके अलावा फलके मे काफी काम रहता है : कभी सामान खोलना होता है तो कभी सामान इधर-उधर रखना पडता है, कभी खालों के लिए जगह बनानी होती है तो कभी जहाज की टीम-टाम में लगे रहना पडता है। इसके अलावा रस्सियों वगैरह को ठीक करने का रोज का काम तो होता ही है। इस काम

का कुछ हिस्सा ऐसा होता है जो तभी किया जा सकता है जब जहाज बन्दरगाह में खडा हो; इसके अलावा हर चीज चुस्त-दुरुस्त रखी जाती है, बटा सन तैयार किया जाता है और दूसरे कई काम किये जाते हैं।

समुद्र और बन्दरगाह की ड्यूटी में सबसे बडा भेद समय के विभाजन का है। समुद्र में एक पहरा डेक पर रहता है और एक नीचे, लेकिन बन्दरगाह में सुबह से शाम तक, खाने का समय निकाल कर, सभी लोगो को काम पर लगे रहना पडता है, और रात को लंगर पहरा लगाया जाता है जिसमे सिर्फ दो आदमी रहते हैं, और इसमे सभी मल्लाह अपनी-अपनी बारी से पहरा देते हैं। डिनर के लिए एक घन्टे का समय नियत रहता है और शाम को डेक साफ किये जाते हैं, नावें जहाज पर चढा ली जाती हैं, सपर का आर्डर दे दिया जाता है, और आठ बजे बिनैकल के अलावा, सब जगह रोशनी बुझा दी जाती है, और लगर पहरा बिठा दिया जाता है। इस तरह जब जहाज लगर पर खडा होता है तो मल्लाहो के पास रात के समय ज्यादा अवकाश होता है (उन्हे सिर्फ २ घन्टे के लगभग पहरा देना होता है) लेकिन दिन के समय उन्हे बिल्कुल फुर्सत नही मिलती; इसका नतीजा यह होता है कि पढने-लिखने या कपडो की मरम्मत वगैरह का काम इतवार तक मुल्तवी रखना पडता है। इतवार को अक्सर उन्हे छुट्टी दी जाती है। कुछ धार्मिक प्रवृत्ति के कप्तान अपने मल्लाहो को शनिवार को तीसरे पहर के बाद छुट्टी देते हैं ताकि वे उसी दिन अपने कपडे धोने और मरम्मत करने के काम से निबट जायें और पूरा इतवार अपनी मर्जी के मुताबिक बिता सकें। यह बात बडी अच्छी है और अक्सर इसी वजह से मल्लाह लोग धार्मिक प्रवृत्ति वाले जहाजो पर काम करना ज्यादा पसन्द करते हैं।

जब हमे इतवार को अपनी मर्जी से बिताने का मौका मिल जाता था तब तो हम बड़े प्रसन्न रहते थे, लेकिन कई बार ऐसा नही होता था क्योकि अगर इतवार के दिन खालें आती थी (जब खालें दूर से लायी जाती थीं तो अक्सर ऐसा होता था) तो हमें उसी दिन उन्हे जहाज पर लाना पडता था और इसमें आम तौर पर आधा दिन लग जाता था। इसके अलावा अब हम ताजे बीफ पर गुजारा कर रहे थे और हफ्ते में एक बैल खा जाते थे, इसलिए हर इतवार को हमें एक बैल खरीद कर किनारे पर लाना पडता था, उसे वही काट कर उसका गोश्त साफ करके जहाज पर लाना पड़ता था। यह भी एक व्यवधान ही था। इसके अलावा

जब तीसरे पहर की समाप्ति पर खालें आ जाती थीं, तब हमारा आम दिन का काम बहुत अधिक और थकाने वाला हो जाता था क्योंकि इस हालत में हमें तारे निकलने तक भग्नोर्मि में काम करना पडता था, फिर हम नाव खे कर जहाज पर आते थे और सपर मिलने से पहले ही हमें खालो को यथास्थान रख देना पडता था।

इस खीझ और मशक्कत को हम समुद्री जीवन की आम खराबी समझ कर बर्दाश्त कर सकते थे—क्योकि कोई भी मल्लाह, जो जवामर्द हो, इस सबको बिना शिकायत किये झेल लेता है—लेकिन हमारी यात्रा की प्रकृति और अवधि पर अनिश्चय का जो पर्दा पडा था वह हमसे बर्दाश्त नही हो पा रहा था। हम एक छोटे से जहाज में, मुट्ठी भर मल्लाहों के बीच, दुनिया के दूसरे छोर पर एक अर्द्ध सभ्य समुद्र-तट पर पड़े थे और हमें यहाँ अनिश्चित अवधि तक, कम से कम दो तीन वर्ष की अवधि तक, रहना था।

जब हम बोस्टन से चले थे तो हमारा ख्याल था कि यह यात्रा अट्ठारह महीने तक, या अधिक से अधिक दो साल तक, चलेगी; लेकिन समुद्र तट पर पहुँचने के बाद हमें व्यापार के बारे में कुछ और सुनने को मिला, तब हमें पता चला कि खालों की हर साल बढती हुई कमी के कारण हमें कम से कम एक साल तो अपना नौभार इकट्ठा करने में लग जायगा (इसमें घर से यहाँ तक पहुँचने और फिर वापस घर पहुँचने का समय शामिल नही है), और हमें अपने जहाज को मालिक फर्म के एक और बडे जहाज के लिए भी नौभार इकट्ठा करना है जोकि कुछ ही दिन बाद समुद्र-तट पर पहुँचने वाला है। हमने इस तरह की अफवाहें सुनी थी कि हमारे पीछे एक इस तरह का जहाज रवाना होगा। ये अफवाहे कप्तान और मालिम अफसर से शुरू हुई थीं और शुरू में हमने इन्हें कोरी "गप्पें" समझा था। लेकिन एजेन्ट के लिए मालिकों की तरफ से हम जो पत्र लाये थे उनसे इन बातों की पुष्टि हो गयी।

हमारी फर्म का एक और जहाज "कैलिफोर्निया" लगभग दो साल से समुद्र तट पर घूम रहा था। इन दिनों वह पूरा नौभार इकट्ठा कर चुका था और सैन डियागो बन्दरगाह में था, जहा से कुछ ही सप्ताह में उसे बोस्टन के लिए रवाना होना था। हमें आदेश था कि हम अधिक से अधिक खालें इकठ्ठा करके उन्हे सैन डियागो पर जमा करा दें जहां से फर्म का एक नया जहाज चालीस हजार खालें

भर कर घर के लिए रवाना हो जायगा। इसके बाद हमें नये सिरे से काम करना था और अपना नौभार इकट्ठा करना था।

वाकई हमें अपना भविष्य अंधकारमय लगता था। "कैलिफोर्निया" बीस महीनो से समुद्र तट पर घूम रहा था और उससे छोटा जहाज "लैगोडा", जिसे सिर्फ ३१–३२ हजार खालें ले जानी थी, अपना नौभार भरने के लिए दो साल से घूम रहा था, और हमे अपने बारह पन्द्रह हजार खालों के नौभार के अलावा चालीस हजार खालें और भी इकट्ठी करनी थीं, और खालो की दिन-ब-दिन कमी हुई जा रही थी। सबसे बडी बात तो यह थी कि यह नया जहाज जो अब तक हमारे लिए किसी भुतहे जहाज से छोटा हौआ नही था, अब भूत या हौआ नहीं रह गया था बल्कि वास्तविकता में बदल चुका था, यहां तक कि उसका नाम भी रख दिया गया था। कहा जाता था कि इस जहाज का नाम "एलर्ट" है। यह एक विख्यात जहाज था और हमारे बोस्टन से चलने के कुछ महीनों बाद वहां पहुँचने वाला था।

अब सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं रह गयी थी और हम सब लोग हताश हो गये। कुछ लोगो ने कहा यह यात्रा तीन-चार साल तक चलेगी, कुछ वयोवृद्ध मल्लाहो ने कहा कि अब उन्हे बोस्टन देखना नसीब नही होगा और उनकी हड्डियाँ कैलिफोर्निया मे ही दफन की जायेंगी; और ऐसा लगा जैसे पूरी यात्रा पर एक बादल मंडरा रहा हो। इसके अलावा हम इतनी लम्बी यात्रा के लिए तैयार नही थे और मल्लाहो के कपडे व दूसरा जरूरी सामान वहाँ बेहद—बोस्टन से तीन या चार गुना—मंहगा था।

यह सब-कुछ सभी मल्लाहों के लिए अहितकर था लेकिन मेरे लिए तो यह खास तौर पर अशुभ था क्योकि मैंने मल्लाही का पेशा सारी जिन्दगी के लिए नही चुना था, मेरा इरादा सिर्फ अठारह महीने या दो वर्ष के लिए ही मल्लाह बनने का था। तीन-चार सालों में तो मैं हर मानी में—दिमागी तौर पर और आदतो में—पक्का मल्लाह हो जाऊंगा, और मेरे साथी मुझसे इतने आगे निकल जायेंगे कि कालिज में पढने और कोई अच्छा पेशा चुनने की बात सोचना ही मूर्खता होगा, और मैंने संकल्प किया कि मन को भला लगे या बुरा मुझे एक नाविक अवश्य बनना चाहिए और मेरी चरम महत्वाकांक्षा एक जहाज का कप्तान बनना ही होनी चाहिए।

यात्रा की लम्बी अवधि और तकलीफो व खतरों से भरी जिन्दगी के अलावा हम धरती के बिल्कुल दूसरे छोर पर थे, प्राय: निर्जन तट पर एक ऐसे देश में थे जहा न कोई कानून था न सिद्धात, जहां मल्लाहो का एकमात्र निर्णायक उनका कप्तान था क्योंकि वहाँ न अमरीकी कौंसल था और न कोई अन्य व्यक्ति जिससे दाद-फरियाद की जा सके। यात्रा मे हमारी रुचि समाप्त हो गयी; हमें उस नौभार की कोई चिन्ता न रही जो हम सिर्फ दूसरो के लिए इकट्ठा कर रहे थे; हम अपने कपडो में थेगडी लगाने लगे और हम ऐसा महसूस करने लगे जैसे हम ऐसी मंजिल पर पहुच गये हैं जहाँ किसी प्रकार के परिवर्तन की आशा नही है।

इस सब के अलावा, शायद, बहुत-कुछ इस प्रकार की परिस्थिति के परिणामस्वरूप ही, जहाज पर मुसीबत मँडराती सी दिखाई दे रही थी। हमारा मालिम अफसर बड़ा सुयोग्य था; उससे अधिक ईमानदार, कायदे का पाबन्द और दयालु आदमी मैंने जीवन मे कभी नही देखा था लेकिन वह इतना सज्जन था कि एक व्यापारी जहाज के मालिम अफसर के पद के उपयुक्त नही था। वह न तो मल्लाहों को बात-बात पर गाली ही दे सकता था और न उन्हे भव्वल से पीट ही सकता था। हमारी जैसी लम्बी यात्रा और हमारे जैसे कप्तान के साथ निभाव करने के लिए जिस दम-खम और जोश-खरोश की जरूरत है वह उसमे न था।

कप्तान टी—एक जाबाज और दमदार आदमी था। मल्लाहो की भाषा में कहें तो "उसके शरीर की एक भी हड्डी मरियल नही थी।" वह फौलाद और ह्वेल के हाड से बना था। वह ऐसा आदमी था जो काम खत्म होने से पहले न खुद सुस्ताता था और न किसी और को सुस्ताने देता था। मैं जितने दिन उसके साथ रहा उन दिनों मैंने उसे कभी डेक पर बैठे नही देखा। वह बडा फुर्तीला और आगे बढ कर काम करने वाला था, अनुशासन के मामले में वह बेहद कड़ा था। अपने अफसरो से भी वह इसी प्रकार की सख्ती की उम्मीद करता था।

मालिम अफसर को आगे बढ कर काम करने की इतनी आदत नही थी और वह मल्लाहों को खास तौर पर डाट-डपट कर नही रखता था इसलिए कप्तान उससे असन्तुष्ट था। उसे शक हो गया कि अनुशासन में ढिलाई आ रही है और वह हर बात में हस्तक्षेप करने लगा। उसने लगाम कस दी; और चूंकि अफसरों के बीच होने वाले झगडों में मल्लाह अक्सर उसी का साथ देते हैं जो उनसे अच्छा व्यवहार करे, इसलिए कप्तान मल्लाहो पर भी शक करने लगा। उसे लगा

जैसे हर बात में कोई न कोई गलती है, जैसे सब लोग बेगार सी टालते हैं; और इस बीमारी का इलाज सख्ती से करने की कोशिश में उसने हालात और भी बिगाड़ दिये।

हम हर तरह से दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में पड गये थे। कप्तान, अफसर और मल्लाह एक-दूसरे के सवथा अननुकूल थे, और हर स्थिति एक दुधारी तलवार की तरह थी जो दोनो ओर काट करती थी। यात्रा की जिस बढती अवधि से हम असंतुष्ट हो उठे थे उसी ने कप्तान को व्यवस्था और कठोर अनुशासन बनाये रखने में प्रवृत्त किया, और इस प्रदेश की जिस परिस्थिति के कारण हम यह महसूस करने को बाध्य हुए कि यहा ऐसी कोई जगह नहा हैं जहा हमारी दीद-शुनीद हो सके बल्कि हम एक कठोर कप्तान की दया पर निर्भर हैं उसी ने कप्तान को यह फैसला करने पर मजबूर किया कि जो कुछ करना है वह खुद करेगा।

कठोरता से असन्तोष बढा और असन्तोष ने कठोरता को और अधिक उकसाया। और फिर दुर्व्यवहार और असन्तोप से कोई समस्या सुलझती नही है। मैंने अनेक बार मल्लाहो को यह कहते सुना है कि अगर उनसे उदारतापूर्ण व्यवहार किया जाय और उन्हे यह महसूस हो कि हालात को बेहतर बनाने की कोशिश को जा रही है तो वे यात्रा की अवधि और कष्टों को नजर अन्दाज कर सकते हैं।

हम महसूस करते थे कि हमारे हालात की माँग है कि हमारे अधिकारी लोग हमें समय-समय पर कुछ छूटें देते रहे और हमारे जुए को कुछ हल्का करें। लेकिन उधर से जो नीति अपनायी गयी वह इसके ठीक विपरीत थी। जिन दिनों हम बन्दरगाह मे थे उन दिनों हमें दिन भर काम पर लगाये रखा जाता था, रात को एक बार पहरा भी देना पडता था, इसलिए नीचे आते ही हम सो जाते थे। इस प्रकार पढने—या पढने से भी जरूरी कपडो की धुलाई या मरम्मत आदि कामों—के लिए हमे जरा भी समय नही मिलता था।

और जब हम समुद्र में होकर एक बन्दरगाह से दूसरे को जाते थे तब प्रचलित प्रथा के अनुसार "देखते रहो" की सुविधा न देकर हमसे डेक पर काम लिया जाता था, चाहे वर्षा हो या धूप, और जब इतनी बारिश होती थी कि और कुछ काम नही हो सकता था तो हमें ओकम तैयार करना पडता था। सब लोगों को "ऊपर आकर बारिश देखो" का आदेश देकर बुलाया जाता था और डेक

पर चुपचाप घन्टों भीगते रहने के लिए इतनी दूरी पर खड़ा कर दिया जाता था कि एक-दूसरे से बात न कर सकें। हम तिरपाल और मोमजामे की जाकेट पहने रहते थे और पुरानी रस्सी के टुकड़े करके ओकम तैयार करते रहते थे।

जब जहाज दुहरा लंगर डाले बन्दरगाह में खड़ा रहता था और डेक पर देख भाल के लिए एक आदमी से ज्यादा की जरूरत नहीं होती थी, तब भी हम सब को अक्सर दिन भर काम करना पडता था। नाविकों की भाषा में इसे "कचूमर निकालना" या "उनके पुराने लोहे की जग छुड़ाना" कहते हैं।

जब हमारा जहाज सैंटा बारबरा में था तब हमें एक और दक्षिणी पूर्वी झंझा का सामना करना पडा था, और पहली झंझा की तरह ही यह भी रात में आयी: दक्षिण की ओर से एक विशाल काला बादल उमडता हुआ आया, उसने पर्वत को ढक लिया और कस्बे पर मंडराने लगा और ऐसा लगा, जैसे वह घरों की छतों पर बैठ गया हो।

हमने लगर उठा दिया, पाइन्ट से आगे निकल गये और निरन्तर वर्षा, उत्तुंग लहरों और हवाओ के बीच चार दिन तक समुद्र पर भटकते रहे। हमने सोचा कि यदि इस प्रदेश में दूसरी ऋतुओं मे वर्षा नही होती तो इसमें अचरज की कोई बात नही है, क्योकि इन चार ही दिनों में वहा इतनी बारिश हो गयी थी जितनी आम तौर पर पूरी ग्रीष्म ऋतु मे होती है।

पांचवें दिन स्नान घर में लगे फुहारे की चार घन्टों तक होने वाली रिम-झिम की तरह कुछ घन्टों तक तो बारिश हुई, उसके बाद, जैसा कि आम तौर पर होता हैं, मौसम साफ हो गया। तब हमें पता चला कि हम लंगरगाह से लग-भग दस लीग दूर निकल आये हैं। हल्की सम्मुख हवाएं चल रही थी इसलिए हम छठे दिन अपनी जगह वापस आ सके। फिर से लगर डालने के बाद हम अनुवात दिशा में फिर से चलने की तैयारी में लग गये। हम सीधे सैन डियागो पहुँचना चाहते थे ताकि "कैलिफोर्निया" के बोस्टन पहुँचने के पूर्व ही हम उससे मिल सकें, लेकिन हमे बिचले बन्दरगाह सैन पेड्रो पर रुकने का आदेश था, और चूंकि हमें वहा एकाध हफ्ते रुकना था जब कि "कैलिफोर्निया" कुछ ही दिन में रवाना होने वाला था, इसलिए हम इस अवसर से वंचित रह गये।

रवाना होने से कुछ ही पहले कप्तान एक छोटे, लाल बालों और गोल कंधो वाले बेहुदा से लगने वाले एक आदमी को अपने साथ लाया, वह एक आंख से

काना था और दूसरी से भेंगा; कप्तान ने हमें बताया कि उसका नाम मि० रसेल हैं और वह हमारा अफसर है। यह हमे बडा नागवार खातिर हुआ। आते समय हम अपना एक श्रेष्ठ नाविक खो चुके थे और दूसरे को हमारे बीच से हटा कर क्लर्क बना दिया गया था, और इस प्रकार हम दुर्बल और न्यून हो गये थे लेकिन हमारे काम को आसान बनाने के लिए कुछ मल्लाहो को रखने के बजाय कप्तान ने जासूसी करने और हुक्म चलाने के लिए हमारे ऊपर एक और अफसर ला बिठाया था। अब जहाज पर चार अफसर थे जब कि अगवाड में मल्लाहो की संख्या कुल छः रह गयी थी। हमें आराम पहुँचाने का कप्तान ने यह अनोखा तरीका निकाला था।

सैंटा बारबरा छोडने के बाद हम किनारे-किनारे चले। वह प्रात समतल या कम ऊचा नीचा था और उसका अधिकाश रेतीला और वृक्षहीन था, अन्त में एक ऊँचे रेतीले स्थान का चक्कर लगाते हुए हम एक स्थान पर पहुँचे जो समुद्र-तट से लगभग साढ़े तीन मील था, हमने यही लगर डाल दिया। हमे यह ऐसा लगा जैसे किसी जहाज को जाना हो हैलिफाक्स और वह लगर डाले ग्रैंड बैंक्स पर; क्योकि किनारा निचला होने के कारण उससे कही दूर लग रहा था जितना वह वास्तव में था, और हमने सोचा कि अगर हम जहाज को सैंटा बारबरा में ही रहने देते और खाले लेने के लिए अपनी नाव भेज देते तब भी कुछ बुरा न रहता।

जमीन दूर तक मटियाली थी और जहा तक नजर जाती थी उस पर कहीं पेड क्या झाडिया तक नही दिखायी पडती थी, और कस्बे का तो कोई नामो-निशान तक नही था—एक घर तक दिखायी नही दे रहा था। लगर डालने के लिए यह जगह क्यों चुनी गयी—इसके बारे में हम कुछ नही समझ पाये। लगर डालने के तुरन्त बाद ही हमने दक्षिणी-पूर्वी झझाओ से बचाव की सारी जरूरी तैयारी कर ली और यह उचित ही था, क्योकि उत्तरी पश्चिमी हवाओ के अलावा सभी ओर से चलने वाली वे सब हवाएँ हम तक पहुँच सकती थी जो उस समतल और एक लीग पानी की रेज वाले प्रदेश में चल सकती थी। जैसे ही जहाज पर सब ठीक-ठाक हो गया वैसे ही नाव उतारी गयी और हम उसमें अपने नये अफसर को बिठा कर तीर पर गये। वह इस बन्दरगाह पर पहले भी आ चुका था और नाव का स्टीअर उसी ने सभाला।

जब हम किनारे पर पहुँचे तो हमने देखा कि ज्वार नीचा था और लगभग एक

फर्लांग तक चट्टानें और पत्थर केल्प और दूसरी समुद्री घासों को लपेटे पड़े थे। इन पर होकर नंगे पाँव चलते हुए हम उच्च जलचिह्न के पास घाट पर पहुँचे। जैसा कि दूर से लगा था मिट्टी ढीली और चीडल थी और सरसों के पौधों के तनों के अलावा वनस्पति एकदम नही थी।

घाट के ठीक सामने ऊपर की ओर एक छोटी पहाडी थी जिसे हम अपनी लँगरगाह से नही देख सके थे क्योंकि उसकी ऊंचाई तीस-चालीस फुट से अधिक नही थी। इस पहाडी पर से हमें तीन आदमी उतरते दिखायी पडे जो वेश भूषा से आधे मल्लाह लगते थे और आधे कैलिफोर्नियाई। उनमें से एक ने बिना कमाये चमड़े की पतलून और लाल ऊनी कमीज पहन रखी थी।

जब वे नीचे उतर कर हमारे पास आये तो पता चला कि वे अंग्रेज हैं। उन्होंने हमें बताया कि वे एक छ टे मैक्सिकन ब्रिग में थे जिसे एक दक्षिणी-पूर्वी झंझा न किनारे पर समीट कर नष्ट कर दिया था और अब वे उस पहाडी पर बने छोटे घर में रह रहे हैं।

उनके साथ पहाडी के ऊपर जाकर हमने देखा कि पहाडी के ठीक पीछे एक छोटी सी निचली बनी इमारत है जिसमें सिर्फ एक कमरा है और उस कमरे में एक चूल्हा है और खाना पकाने का साज-सामान है, इमारत का बाकी हिस्सा ठीक से नही बना था और खालें व दूसरी चीजें रखने के लिए गोदाम का काम देता था। उन्होंने हमें बताया कि यह इमारत प्यूब्लो (लगभग ३० मील दूर अन्दर की ओर स्थित कस्बा जिसका व्यापार इस बन्दरगाह से होता था) के कुछ व्यापारियों ने बनवायी है। वे लोग इसे अपने गोदान के रूप में इस्तेमाल करते हैं और जब वे जहाजों से सौदापत्ता करने बन्दरगाह में आते हैं तो ठहरते भी यही हैं।

ये तीनों लोग उन व्यापारियों के नौकर थे और इनका काम था मकान को ठीक-ठाक रखना और गोदाम की चीजों की देखभाल करना। उन्होंने बताया कि यहां रहते हुए उन्हें लगभग एक साल हो गया है और अधिकांश समय उनके पास कोई काम नही होता। वे बीफ, कडी रोटी और फ्रिजोल (एक खास तरह की फली जो कैलिफोर्निया में बहुतायत से होती है) पर गुजारा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वहा से निकटतम घर एक पशु-फार्म है जो लगभग तीन मील दूर है। हमारे अफसर की प्रार्थना पर उनमें से एक आदमी वहां गया और पशु फार्म के

हम फिर काई-लगी फिसलनी चट्टानो पर होते हुए नाव में आये और वहां से जहाज के लिए चल पड़े। जहाज इतनी दूर था कि बढते हुए अन्धकार में हम उसे देख नही पा रहे थे। जब हम वहा पहुँचे तो देखा नावें ऊपर चढ़ा ली गयी थी और मल्लाह सपर खा रहे थे।

नीचे अगवाड में जाकर हमने अपना सपर लिया और अपने सिगार व पाइप जला कर हमेशा की तरह किनारे पर जो कुछ हमने देखा, या सुना, था उसके बारे में दूसरे मल्लाहों को बताने लगे। हम सब इस बात पर एकमत थे कि खालों की दृष्टि से यह स्थान सबसे बुरा है और समुद्र-तट से इतनी दूर लगर डालने से जाहिर होता है कि दक्षिणी पूर्वी झझाओ की दृष्टि से भी यह बुरा है। इस बात पर कुछ विवाद हुआ कि हमारे लिए अपना माल पहाडी पर ले जाना उचित है या अनुचित और इसके बाद हम सैन डियोगो के बारे में बातें करने लगे और इस बारे में भी चर्चा हुई कि शायद "लैगोडा" के जाने से पहले उससे हमारी मुलाकात हो जाय।

अगले दिन हम एजेंट को किनारे पर ले गये और वह प्यूब्लो व पडोस के मिशनों में गया; उसके परिश्रम के फलस्वरूप कुछ ही दिनो में उस समतल प्रदेश से बड़ी-बडी बैलगाडियों और झुन्ड के झुन्ड खच्चरो पर खालें आने लगी। हमने सब तरह के...हल्के और भारी...माल को दीर्घ नौका में लादा और उसे तीर पर ले गये।

माल को उतारने और तट के पत्थरों पर लपेट कर पुलदे बनाने के बाद हम गाडियो का इन्तजार करने लगे कि वे पहाडी पर ले आयें और इन्हें ले जायें; लेकिन कप्तान ने हमें सब चीजो को पहाडी पर पहुंचाने का आदेश देकर सारा बखेडा ही तय कर दिया। उसने कहा "कैलिफोर्निया फैशन" यही है। इस प्रकार जो काम बैल भी नही कर सकते थे वह मजबूर होकर हमें करना पडा।

पहाडी नीची थी लेकिन उसकी चढाई खडी थी और पिछले दिनों की बारिश के कारण जमीन चिपकनी और गीली हो गयी थी, और हमारे पावों को पकड रही थी। भारी ड्राम और पीपो को लुढका कर और पीछे से कन्धे से धकेल कर, ऊपर ले जाने में हमें काफी कठिनाई हुई और रह-रह कर हमारे पाव फिसल रहे थे जिससे यह डर लग रहा था कि कही भारी ड्राम पीछे लुढ़क कर हमारे ऊपर न गिर पड़ें। लेकिन, चीनी के बड़े बक्सो ने हमें सबसे अधिक परेशान किया। इनका

इलाज हमें दूसरी तरह से करना पडा। हमने इन बक्सों को चप्पुओं में लटका लिया और दो दो लोग उन चप्पुओ को अपने कन्धो पर रख कर शव यात्रा के जुलूस की चाल से रेंगते हुए ऊपर की ओर बढे।

एकाध घन्टे के कठोर परिश्रम के बाद हमने मारा सामान ऊपर पहुँचा दिया, तब हमने देखा कि खालो से भरी गाडिया खडी हैं। हमें गाड़ियों मे खालें उतारनी पडी और फिर उनमें अपना माल भरना पडा। गाडियो के साथ जो सुस्त इडियन आये थे वे हाथ पर हाथ धर कर बैठ गये और इधर-उधर देखने लगे, और जब हमने उनसे अपनी मदद करने को कहा तो उन्होंने अपने सिर हिला दिये या "नौ क्वायरो" कह दिया।

गाडियो को भरने के बाद हमने इंडियनों को हाक दिया जो बैलों को चुभाने के लिए हाथ मे पैनो लेकर बैलो की बगल में पहुँच गये थे। कैलिफोर्निया में मेहनत बचाने का यही तरीका है...दो बैल और दो इडियन।

अब खलों को नाव में रखना था; इसके लिए हम नाव को एक ऐसी जगह पर ले आये जहां पहाडी की चढाई एक दम सीधी थी और तब उन्हे ढाल पर से लुढका दिया। उनमें से बहुत सी खालें ढाल पर ही अटक गयी और हमे खुद नीचे जाकर उन्हें फिर से लुढकाना पडा और इस प्रयत्न में हम धूल से भर गये और हमारे कपडे फट गये।

जब हमने उन सबको उतार लिया तब उन्हें सिर पर रखकर पत्थरों पर पानी में चलते हुए नाव तक पहुँचे। पानी और पत्थर मिलकर जूतो की एक जोडी को एक दिन में नष्ट कर सकते थे और चूंकि जूते बहुत मंहगे थे इसलिए हमें नगे पांवों ही चलना पडता था।

रात को हम जहाज पर पहुँचे। आज से पहले किसी एक दिन में हमने इतना कठिन और नापसंद काम नही किया था। कई दिन तक हम इसी प्रकार काम में जुटे रहे। जब हम चालीस-पचास टन माल पहुँचा चुके और लगभग दो हजार खालें जहाज पर लाद चुके और व्यापार कुछ मन्दा हो चला तो सप्ताह के अन्तिम दिनों में हमे जहाज पर ही फलके में या रस्सियो को ठीक-ठीक करने में लगे रहना पडा।

बृहस्पति की रात को उत्तर की ओर से एक प्रचण्ड झोंका आया लेकिन चूंकि वह किनारे से दूर था इसलिए हमने दूसरा लगर डाल दिया और वही डटे रहे।

रात को हमें रायल यार्डों को नीचे करने के लिए पुकारा गया। घना अंधकार छाया हुआ था और जहाज अपने लंगरों पर डोल रहा था। मैं अगले हिस्से में गया और मेरा मित्र एस...मुख्य भाग में और जल्दी ही हमने उन्हें नीचा कर दिया जिससे जहाज "शिपशेप एंड ब्रिस्टल फैशन" में आ गया। अब हम अपनी ऊपर की ड्यूटी को अच्छी तरह पूरी करना सीख गये थे और यद्यपि एक लड़के के अलावा हम सभी मल्लाहों से कम उम्र के थे फिर भी क्रास ट्रीज के ऊपर का हर काम हमें सौंप दिया जाता था।

* * *

अध्याय—१२

कई दिनों तक कप्तान का मिजाज बिगडा रहा। उसे ऐसा लगता था जैसे हर काम या तो गलत हो रहा है या बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। एक दिन वह रसोइए पर बिगड़ गया और डेक पर लकडी फेंकने पर उसे कोडो से खबर लेने की धमकी दी। इसी तरह एक बार वह एक रस्सी को छोटा करने के तरीके को लेकर मालिम अफसर से उलझ गया, मालिम का कहना था कि उसका तरीका सही है और उसने वह तरीका एक निपुण मल्लाह से सीखा है, इस पर कप्तान को गुस्सा आ गया और तब से वे दोनो एक दूसरे की काट करने लगे।

लेकिन कप्तान का गुस्सा मिडिल स्टेट्स के निवासी साम पर उतरा जोकि एक लंबा-चौडा और भारी-भरकम आदमी था। इस आदमी को बोलने में कुछ परेशानी होती थी और काम करने में वह किसी कदर ढीला भी था; लेकिन वैसे वह अच्छा मल्लाह था और हमेशा मन लगा कर काम करता था, लेकिन कप्तान को वह नापसंद था और वह उसे उजड्ड और आलसी समझता था, और जैसी कि मल्लाहों की कहावत है, "अगर एक बार आपने मल्लाह को बदनाम कर दिया तो वह समुद्र में कूद भी सकता है।" कप्तान इस आदमी के हर काम में मीन-मेख निकालने लगा और एक बार जब वह प्रमुख यार्ड को ठीक कर रहा था तब उससे सूआ गिर पडा और इस बात पर कप्तान ने उससे डट कर बेगार करायी। यह एक संयोग ही था; लेकिन इससे कप्तान उससे और नाखुश हो गया।

शुक्रवार को कप्तान सारे दिन जहाज पर ही रहा और सब मल्लाहों का उस दिन हुलिया तंग रहा। "चलते बैल के आर लगाने से वह धीमा पड जाता है"

यह कहावत हमारे ऊपर भी चरितार्थ हुई। शुक्रवार की रात को हम देर तक काम में लगे रहे और शनिवार की सुबह को जल्दी ही फिर काम पर जुट गये। करीब दस बजे कप्तान ने हमारे नये अफसर रसेल, जिसे अब सभी मल्लाह नफरत की नजर से देखने लगे थे, को आदेश दिया कि वह उसे तीर पर ले जाने के लिए नाव तैयार करे।

स्वीडन का मल्लाह जान पास वाली नाव में बैठा था और रसेल और मैं मुख्य फलका मुख मे खडे कप्तान की राह देख रहे थे जो फलके में गया था जहां मल्लाह काम कर रहे थे। अचानक हमने सुना कप्तान किसी से झगड रहा है। मेरी समझ मे यह नही आया कि वह मालिम से झगड रहा है या किसी मल्लाह से। तभी घूँसो और हाथापायी की आवाजें आने लगी। मैं दौड कर जान के पास गया जो मेरे साथ ऊपर आया और हमने फलका मुख में झुक कर नीचे देखा। हम यह तो नही समझ सके कि झगडा किससे हो रहा है लेकिन कप्तान की आवाज ऊँची और साफ थी जिससे जाहिर था कि वह दूसरे से इक्कीस पड रहा है—

"देखी तुमने अपनी हालत! तुमने अपनी हालत देख ली न? अब कभी मुझसे जबानदराजी करोगे?" कोई जवाब नही आया, बल्कि गुत्थम-गुत्था होने और घसीटने जैसी आवाजें आयी। ऐसा लगा जैसे आदमी उसे ढकेलने की कोशिश कर रहा हो।

"खैर चाहो तो चुपचाप पडे रहो क्योंकि मैंने तुम्हे धर लिया है", कप्तान ने कहा। इसके बाद फिर वही सवाल, "अब कभी मुझसे जबानदराजी करोगे?"

"मैने आपसे जबानदराजी कहा की, सर!" यद्यपि बोलने वाले की आवाज नीची और रुंधी हुई थी, लेकिन हम सुनते ही समझ गये कि यह आवाज सैम की है।

"मैंने यह नही पूछा। मैं पूछता हूँ क्या तुम कभी हुकुम-उदूली करोगे?"

"मैंने तो कभी नही की", सैम ने कहा।

"मेरे सवाल का जवाब दो वर्ना मैं तुम्हे बाध कर लटका दूँगा! ईश्वर की कसम मैं कोडों से तुम्हारी खाल उधेड दूँगा।"

"मैं कोई नीग्रो गुलाम नही हूँ", सैम ने कहा।

"नही हो तो मैं तुम्हे बनाता हूँ", कप्तान ने कहा। वह फलकामुख में आया और उछल कर डेक पर चढ़ गया। अपना कोट उसने एक ओर फेंका और कमीज

की आस्तीनें चढ़ाने लगा। उसने मालिम को बुला कर कहा—"उस आदमी को पकड़ कर ऊपर लाओ मि० ए—! ऊपर ला कर उसे बाँध दो! मैं तुम्हें बताता हूँ कि जहाज पर किसका हुक्म चलेगा!"

कप्तान के साथ अफसर मल्लाह भी फलकामुख में आ गये थे, और बार-बार कहने पर मालिम ने सैम को पकड़ लिया और उसे गलियारे में ले आया। सैम ने जरा भी प्रतिरोध नहीं किया।

"आप किस कसूर पर उसे कोड़ों से पीट रहे हैं, सर?" जान ने कप्तान से पूछा।

यह सुनते ही कप्तान उसकी तरफ मुडा लेकिन उसकी फुरती और दृढता का ध्यान आते ही वह रुक गया। उसने स्टीवार्ड से हथकडी लाने को कहा और रसेल से अपने साथ आने को कहकर कप्तान जान की तरफ बढा।

"मुझे छोड दो" जान ने कहा। "मैं खुद हथकडी पहन लूंगा, तुम्हे ताकत का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं। उसने अपने हाथ आगे कर दिये और कप्तान ने उसे हथकडी पहना दी और उसे पीछे छतरी में भेज दिया। तब तक सैम को बाँध दिया गया था। उसकी दोनों कलाइयाँ बराँडलों से बांध दी गयी थी और जैकेट उतार कर उसकी पीठ नगी कर ली गयी थी। कप्तान डेक पर उसके पीछे और कुछ ऊचाई पर खडा था ताकि पूरी ताकत के साथ उस पर कोडे से प्रहार कर सके। उसके हाथ में एक मोटी और मजबूत रस्सी का टुकडा था। अफसर उसके चारो ओर खडे थे और सभी मल्लाह कटि में जमा हो गये थे।

इन सब तैयारियों से मेरा जी खराब हो गया। मैं इतना क्रुद्ध और उत्तेजित था कि मुझे मूर्छा सी आने लगी। एक मनुष्य को—एक नर को जो नारायण का ही स्वरूप है—पशु की तरह बाध कर पीटा जा रहा था! एक ऐसे आदमी को पीटा जा रहा था जिसके साथ मैं महीनों से खा-पी और सो रहा था और जिसे मैं अपने भाई की तरह समझता था।

मेरे मन में जो भावना सबसे पहले जनमी, और जिसे नियंत्रण में रखना मेरे लिए असंभवप्राय हो उठा, वह प्रतिरोध की थी। लेकिन किया क्या जा सकता था? इसका वक्त निकल चुका था। दो श्रेष्ठ मल्लाह बांधे जा चुके थे और मेरे अलावा केवल दो मल्लाह और बचे थे। उनके अलावा दस-बारह साल का एक छोकरा और था। उस तरफ (कप्तान के अलावा) तीन

अफसर, स्टीवार्ड, एजेंट और क्लर्क—इतने लोग थे। लेकिन अगर संख्या की बात छोड भी दें तो भी मल्लाह् बेचारे कर क्या सकते हैं? अगर वे प्रतिरोध करें तो उसे विद्रोह् कह कर पुकारा जाता है, और अगर वे सफल हो जायें और जहाज पर अधिकार कर लें तो इसे जलदस्युता का नाम दिया जाता है। अगर भविष्य में कभी भी वे अपने को कानून के हवाले कर दें तो उन्हें दन्ड जरूर मिलेगा, अगर ऐसा न करें तो उन्हे अपना सारा जीवन जलदस्यु बन कर काटना होगा। अगर कोई नाविक अपने कमाडर की अवज्ञा करता है तो वह कानून की अवज्ञा करता है और उसके लिए दो ही रास्ते हैं—या तो जलदस्यु बन जाये अथवा अवज्ञा का दन्ड भुगते। यह था तो बहुत बुरा लेकिन हमें इसी को सिर-माथे रखना था। आखिर यही दिन देखने के लिए तो आदमी जहाज में मल्लाह् बनता है।

रस्सी को अपने सिर पर घुमाते हुए और अपने शरीर को लचकाते हुए, ताकि रस्सी पूरे जोर से पड़े, कप्तान ने सैम की नगी पीठ पर प्रहार किया। एक, दो—छः बार। "अब करोगे मुझसे जबानदराजी ?" सैम दर्द से कराहता रहा लेकिन बोला एक शब्द भी नही। तीन कोड़े और। यह इन्सान की बरदाश्त के बाहर था और अभागे सैम ने धीरे से कुछ कहा जिसे मैं सुन नही पाया, फलस्वरूप उस पर इतने कोडे बरसाये गये जितने वह सह सकता था। अत में कप्तान ने उसके हाथ खोल दिये और उससे अगवाड मे जाने को कह दिया।

"अब आपकी बारी है", कप्तान ने जान की हथकडियां खोलते हुए कहा। हाथ खुलते ही जान अगले हिस्से की तरफ भाग कर अगवाड में पहुच गया। "उस आदमी को पीछे लाओ", कप्तान ने चीख कर कहा। दूसरा मालिम, जो जान के साथ साधारण मल्लाह् रह चुका था, स्तब्ध-सा कटि में खडा था, और मालिम धीरे-धीरे आगे की तरफ चल दिया था लेकिन तीसरे मालिम ने सोचा जोश दिखाने का यह अच्छा मौका है इसलिए वह कूद कर बेलनचरखी पर चढ़ गया और जान को पकड लिया लेकिन जान ने एक ही झटके में उसे दूर पटक दिया।

इस समय अगर कोई ताकत अभागे जान को बचा पाती तो मैं उसे न जाने क्या बख्श देता, लेकिन मेरा ऐसा सोचना बेकार था। कप्तान छतरी पर खडा था, उसका सिर नंगा था, आंखें क्रोध से चमक रही थीं, चेहरे से खून-सा टपक रहा था। वह बार-बार रस्सी को घुमा रहा था और अपने

अफसरों से कह रहा था, "उसे घसीट कर यहाँ लाओ—पकड़ लाओ! मैं उसे मजा चखा दूँगा!"

अब मालिम आगे गया और शांति पूर्वक जान से पीछे चलने के लिए कहा। जब जान ने देखा कि प्रतिरोध का कोई लाभ नही है तो उसने तीसरे मालिम को झटक कर दूर कर दिया और कहा कि वह अपने आप चलेगा, उसे घसीटने की कोशिश न की जाय। वह गलियारे में गया और अपने हाथ आगे बढ़ा दिये। लेकिन जब कप्तान उसे बाँधने लगा तो यह अपमान उससे सहन न हुआ और वह प्रतिरोध करने लगा लेकिन चूंकि मालिम ने और रसेल ने उसे पकड रखा था इसलिये जल्दी ही उसे बाँध दिया गया।

जब वह बंध गया और कप्तान कोडे लगाने के लिए अपनी आस्तीनें चढाने लगा तब जान ने कप्तान से पूछा कि उसे यह सजा किस कसूर पर मिल रही है। "सर! क्या मैंने कभी अपने काम से इनकार किया है? क्या आपको कभी मुझसे कामचोरी की, ढीलेपन की या ढग से काम न करने की शिकायत हुई है?"

"नही", कप्तान ने कहा, "मैं इसलिए तुम्हारे कोड़े नही लगा रहा हूँ, तुम्हारा कसूर है दस्तंदाजी, सवाल पूछना।"

"क्या आपके जहाज मे बिना कोड़े खाये कोई सवाल नही पूछ सकता?"

"नही", कप्तान चीखा, "इस जहाज में मेरे अलावा कोई भी मुंह नहीं खोल सकता", और उसने जान पर कोड़े बरसाने शुरू कर दिये। बीच-बीच में वह अपने शरीर को लचकाता जाता था ताकि कोडा पूरे जोर से पड़े। कोड़े लगाते-लगाते वह और भी आवेश में आ गया और रस्सी को झुलाते हुए वह डेक पर नाच-नाच कर कहने लगा—"अगर तुम जानना चाहते हो कि मैं तुम्हारे कोड़े क्यों लगा रहा हूँ तो सुनो! मैं तुम्हें बताता हूँ। कोड़े लगाने में मुझे मजा आता है, समझे! यह मेरा मन पसन्द काम है! समझे मैं तुम्हारे कोड़े क्यों लगाता हूँ!"

जान दर्द से कराह रहा था। अंत में उससे बरदाश्त न हुआ और वह ईसा की दुहाई देने लगा जो कि हमारी अपेक्षा विदेशी नाविक अधिक करते है—"ओह, ईसा मसीह, ओह, ईसामसीह!"

"ईसामसीह की दुहाई मत दो", कप्तान गरजा, "उसके किये तुम्हारा कुछ

न होगा । कप्तान टी—की दुहाई दो । वह तुम्हारी मदद कर सकता है ! ईसामसीह अब तुम्हारी मदद नही कर सकता !"

इन शब्दो को सुन कर, जिन्हे मैं कभी नही भुला पाऊंगा, मेरा खून सर्द हो गया । मुझसे और अधिक देखा नही गया । जुगुप्सा, वेदना और आतक से मेरा मन भर उठा । मैंने मु ह मोड लिया और पटरी पर झुककर नीचे पानी में देखने लगा । अपनी स्थिति और भावी प्रतिशोध के कुछ विचार मेरे मस्तिष्क में तेजी से कौंध गये लेकिन कोडो की आवाज और जान की चीखो के कारण मुझे उसी समय वापस आना पडा ।

अन्त में वे आवाजें बन्द हुई । मैंने मुड कर देखा तो कप्तान के इशारे पर मालिम ने जान के बंधन काट दिये थे । दर्द से दुहरा होता हुआ अभागा जान अगले हिस्से मे गया और वहाँ से उतर कर अगवाड में चला गया । सब लोग अपनी-अपनी जगह स्तब्ध खड़े थे । कप्तान आवेश और मिली हुई सफलता के अहकार से भर कर छतरी पर चहलकदमी कर रहा था और जब वह आगे की तरफ आता था तो हमें सुना कर कहता था—

"तुमने अपनी औकात देखी ! तुमने देखा मैं तुम्हारा क्या हुलिया बनाता हूँ । अब तुम समझे, तुम सब की भी यही हालत हो सकती है । तुमने मुझे गलत समझा था—तुम्हे मालूम नही था मैं क्या हूँ ! अब तुम समझे मैं क्या चीज हूँ ! अगर तुम मेरी आख के इशारे पर काम नही करोगे तो मैं तुम सबकी खाल उधेड लूँगा ! छोकरे से लेकर बड़ो तक—एक सिरे से दूसरे सिरे तक—मैं सबके कोड़े लगाऊंगा । तुम्हारे हन्टर लगाने वाला तुम्हारे ऊपर मौजूद है ! हा, वह गुलामो और नीग्रो लोगो की तरह तुम्हारे हन्टर लगा कर तुमसे काम लेगा ! अब मैं देखू गा कौन कहता है कि वह नीग्रो गुलाम नही है ।"

इस लताड और इसी तरह की नपी-तुली डाट-फटकार से वह दस मिनट तक हमारा सत्कार करता रहा, ताकि भविष्य मे हम उसके लिए कोई झझट खडा न करें । तब वह नीचे चला गया । कुछ ही देर बाद जान पिछले भाग में आया । उसकी नंगी पीठ पर हर जगह कोडों के निशान उभर आये थे और वह बेहद सूज गयी थी । उसने स्टीवार्ड से कहा कि कप्तान से कह कर उसे पीठ पर लगाने के लिए मरहम या बालसम दिलवा दे ।

"नहीं", कप्तान चीखा । उसने नीचे से जान की बात सुन ली थी । "उससे

कह दो अपनी कमीज पहन लेगा, इसी में उसकी भलाई है, और मुझे नाव में बैठा कर तीर पर छोड आयेगा। इस जहाज में कोई आलसी की तरह पड़ा नही रह सकता।"

इसके बाद उसने मि० रसेल को बुलाया और आज्ञा दी—सैम व जान के अलावा दो और मल्लाहो को लेकर मुझे नाव से तीर पर पहुँचा आओ। मैं भी उस नाव के खेने वालो में से एक था। दर्द के मारे दोनो मल्लाहो से अपनी कमर नहीं झुकायी जा रही थी और कप्तान "तेज" "और तेज!" की आवाज लगाये जा रहा था। लेकिन जब उसने देखा कि दोनों अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं तो उसने उनसे कुछ नही कहा। एजेन्ट पीछे उसके पास ही बैठा था लेकिन एक लीग या उससे भी अधिक की उस यात्रा में कोई एक शब्द भी नही बोला।

हम तीर पर पहुँचे। कप्तान, एजेन्ट और अफसर को लेकर पहाडी पर बने घर की तरफ चला गया, और हमे नाव के पास छोड गया! मैं और मेरे साथ आया दूसरा मल्लाह नाव के पास ही रहे, जबकि जान और सैम टहलते हुए कुछ दूर निकल गये, और चट्टानो पर जाकर बैठ गये। कुछ देर वे बातें करते रहे, लेकिन फिर अलग हो गये, और अकेले-अकेले बैठ गये।

जान की तरफ से मुझे खटका था। वह विदेशी था, गुस्सेबाज था और उत्पीडित था। उसका चाकू उसके पास था और कप्तान को उधर से नाव तक अकेले आना था। शायद कप्तान भी सशस्त्र था और इतना तय था कि अगर इन दोनों में से किसी ने उस पर हाथ उठाया तो उसे भाग कर कैलिफोर्निया के जगलों में शरण लेनी पडेगी और भटकन व भूख का सामना करना होगा, या उसे सिपाही अथवा इन्डियन शिकारी कुत्ते पकड लेंगे जो बीस डालर देने पर उसकी तलाश में दौडाये जा सकते हैं।

दिन का काम खत्म होने पर हम नीचे अगवाड में गये और अपना सादा सपर लिया, लेकिन किसी ने किसी से एक शब्द तक नही कहा। आज शनिवार की रात थी लेकिन गीत नही गाये गये। हर चीज पर उदासी का परदा पडा था।

दोनों मल्लाह अपनी-अपनी बेंचों पर पडे दर्द से कराह रहे थे। सब लोग सो गये लेकिन मुझे नींद नही आयी। रह-रह कर उन दोनों की बेंचों से कराहने की आवाज आ रही थी जिससे स्पष्ट था कि वे जाग रहे हैं, और वे सो भी कैसे सकते थे क्योंकि वे एक मिनट के लिए भी एक करवट पर तो लेट ही नही सकते थे।

अगवाड का धुंधला, झूलता हुआ लैंप हमारे रहने की अंधेरी मांद में रोशनी फैला रहा था। और मेरे मन में तरह-तरह के अनेक विचार और तर्क आ रहे थे।

मैंने अपनी और उन नाविकों की स्थिति पर सोचा जो नृशंसतापूर्ण अनुशासन में रह रहे थे। मैंने अपनी यात्रा की अवधि और उस पर पड़े अनिश्चय के परदे पर सोचा और यह भी सोचा कि अगर मैं अमरीका लौटने में सफल होऊंगा तो इन अभागे लोगो के जीवन को न्यायाश्रित और सतोषप्रद बनाने के लिए क्या कुछ करूंगा। मैंने प्रतिज्ञा की कि यदि किसी दिन ईश्वर ने मुझे साधन संपन्न बनाया तो मैं अभागे लोगों के इस वर्ग की शिकायतों को दूर करने और उत्पीडन को कम करने के लिए अवश्य प्रयत्न करूंगा जिसका सदस्य फिलहाल मैं भी हूँ।

अगले दिन रविवार था। नाश्ते के समय से पहले हम रोजमर्रा की तरह डेकों की धुलाई वगैरह में लगे रहे। नाश्ते के बाद हम कप्तान को तीर पर ले गये। जब उसने वहा पिछली रात को लायी गयी कुछ खालें देखी तो मुझे तीर पर रह कर उनकी देख-भाल करने की आज्ञा दी और कहा कि नाव एक बार और आयेगी, अब मैं अकेला रह गया और मैंने वह दिन पहाडी पर बडी शांति से गुजारा। अपना डिनर मैंने उस छोटे घर में रहने वाले तीनों लोगो के साथ लिया।

दुर्भाग्य से उनके पास किताबें नही थी, और मैं कुछ देर उनसे बातें करने और कुछ चहल कदमी करने के बाद कुछ भी काम न होने के कारण ऊबने लगा। छोटा-सा जहाज "पिलग्रिम", जो कठिनाई और यातना का भन्डार रहा था, दूर पर दिखायी दे रहा था और उसके अलावा उस विशाल खाडी के तल को तोडने वाली एक ही चीज थी। यह चीज एक छोटा और वीरान सा टापू था जो खडा और नोकीला था व चीडल मिट्टी से बना था। वनस्पति के नाम पर इस पर एक पत्ती तक नही थी, लेकिन इसे देख कर मेरे मन में एक खास तरह का अवसाद का भाव जागता था क्योकि मुझे ज्ञात था कि इस टापू की चोटी पर एक अंग्रेज की हड्डियाँ दफनायी गयी हैं जो कि एक छोटे दो मस्तूलों वाले व्यापारी जहाज का कमाडर था और जब उसका जहाज बन्दरगाह में खडा था उस समय मर गया था।

इसे देख कर मैं हमेशा गम्भीर हो जाता था। सामने वह टापू था, वीरान और वीराने में आबाद, और उसके ऊपर एक ऐसे आदमी की हड्डियां थी जो एकाकी था और बन्धुहीन था। अगर यह सामान्य कब्रिस्तान होता तो मुझ पर इसका इतना प्रभाव न पड़ता। वह अकेला शव चारों ओर की हर चीज की

एकांत प्रकृति के अनुरूप ही था। कैलिफोर्निया में यही एक ऐसी चीज थी जिसे देख कर मुझ में कविता कभी नही फूटी। और फिर वह आदमी घर से कितनी दूर मरा था और अन्तिम समय उसका कोई भी मित्र उसके पास नही था। लोगों को संदेह था कि उसे जहर देकर मारा गया है लेकिन इसकी जाँच करने वाला कोई नही था। उसका अन्तिम सस्कार भी विधिवत नही हो सका था, और (जैसा कि मैंने सुना था) अपने रास्ते से उसे हटा कर मालिम उसके शव को जल्दी से उस पहाड़ी पर ले गया और जमीन में दफन कर दिया। उसकी आत्मा की शाँति के लिए एक शब्द या प्रार्थना भी उच्चरित नही की गयी।

तीसरे पहर के अन्त में मैं नाव की राह देखता रहा, लेकिन नाव नहीं आयी। सूर्यास्त के समय मुझे एक धब्बा सा दिखायी दिया और पास आने पर मैंने देखा कि नाव इसी तरफ आ रही है और उस पर कप्तान बैठा है। इसका मतलब यह हुआ कि नावें आज जहाज पर नही जायेंगी। कप्तान पहाड़ी पर आया। उसके साथ एक आदमी था जिसके पास मेरी मकी जाकेट और कम्बल था। कप्तान अब भी क्रोध में था लेकिन फिर भी उसने मुझसे पूछा कि मुझे खाने की तो कोई तकलीफ नहीं हुई। उसने मुझसे खालो का एक डेरा बना लेने और अपना शरीर गरम कर लेने को कहा क्योंकि मुझे खालो के पास ही सो कर उनकी रखवाली करनी थी। एक मिनट मैंने अपनी जाकेट लाने वाले मल्लाह से बात की।

"जहाज पर कैसी हालत है?" मैंने पूछा।

"बहुत बुरी," उसने बताया, "कठोर काम और सहानुभूति का एक शब्द तक नही।"

"क्या," मैने पूछा, "क्या आज भी तुम दिन भर काम करते रहे?"

"हाँ! अब हमें इतवार को भी छुट्टी नही मिलेगी। आज हम जहाज की हर चीज फलके में पहुचाने में लगे रहे।"

सपर लेने में ऊपर मकान मे गया। सपर में हमें फ्रिजोल (कैलिफोर्निया के निवासी सदा इसी को खाते हैं लेकिन अगर ढग मे पकायी जायें तो ये दुनिया की सबसे बेहतरीन फलियां हैं), जले हुए गेहूँ की काफी और कडी रोटी दी गयीं। खाने के बाद तीनो आदमी चरबी की रोशनी के सहारे ताश खेलने लगे और मैं वहां से तीर पर खालो के बीच अपना डेरा डालने चल दिया।

अब अंधेरा हो गया था। जहाज आँखो से ओझल हो गया था, और पहाड़ी

पर बने घर के तीन आदमियों के अलावा एक लीग के क्षेत्र में एक भी जीवित प्राणी नही था। कोएटी (लोमडी और भेडिये की मिली-जुली आदतो और आकार-प्रकार के जंगली) जंतुओं ने अपनी तीखी आवाज मे भौंकना शुरू कर दिया था। जहां मैं लेटा था वहाँ से दोनो ओर की पहाडियाँ खाडी मे चली गयी थी और उन दोनो पाइन्टो पर दो उल्लू बैठे थे जो उदास स्वर में एक के बाद एक हूकें भर रहे थे।

रात के समय यह आवाज मैंने इससे पहले भी सुनी थी लेकिन मैं यह नही जानता था कि यह किस पन्छी की है। पहाडी पर से एक आदमी मेरा डेरा देखने आया था, उसने मुझे बताया कि यह उल्लू बोल रहा है। दूर से आने के कारण आवाज इतनी कर्कश नही थी। मैं एकदम अकेला था और रात का समय था, इसलिए मुझे ऐसा लगा कि ऐसी विषण्ण और अशुभसूचक आवाज मैंने पहले कभी नही सुनी है।

लगभग सारी रात वे रह–रह कर धीमी आवाज एक–दूसरे के प्रश्नो का उत्तर देते रहे। कोएटी के शोर मचाने के कारण मुझे इस आवाज से छुटकारा मिला। ये जंतु तो मेरे डेरे के बिल्कुल पास चले आये थे लेकिन अपने इन पडोसियों को देख कर मुझे कोई खुशी नही हुई। अगले दिन सूर्योदय से पहले ही दीर्घ नौका तीर पर आ गयी और खालें जहाज पर पहुँचा दी गयी।

हम सैन पेड्रो में लगभग एक सप्ताह रहे। इस बीच हमने खालें ढोयी और दूसरी बेगारें की जो अब हमारी ड्यूटी मान ली गयी थी। मुझे पहाडी पर कुछ खालों और दूसरे सामान की निगरानी के लिए एक रात और रहना पडा। इस बार सौभाग्य से मुझे घर के एक कोने में स्काट के "पाइरेट" के एक खंड का कुछ हिस्सा मिल गया, लेकिन जब सबसे मनोरंजक प्रसंग आया तब यह खत्म हो गया, लिहाजा मैं तट पर रहने वाले अपने परिचितों के पास गया और उनसे उस प्रदेश के रीति–रिवाजो और बन्दरगाहो वगैरह के बारे में जानकारी हासिल करना रहा।

उन्होंने मुझे बताया कि दक्षिणी-पूर्वी झंझाओं की दृष्टि से यह बन्दरगाह सैंटा बारबरा से बुरा है। इसका कारण यह कि यहां की मुख्य भूमि का दिङ्मान वहा की अपेक्षा डेढ़ पाइन्ट प्रतिवात दिशा में है। खाडी इतनी छिछली है कि अक्सर समुद्र उस स्थान तक चढ़ आता है जहां हमारा जहाज लंगर डाले खड़ा

था। जिस झंझा से बचने के लिए हमने सैंटा बारबरा में समुद्र की शरण ली थी, वह इस बन्दरगाह के लिए इतनी बुरी रही थी कि सारी खाडी मानोर्मियों के झाग मे भर उठी थी, और लहरें मृत व्यक्ति के टापू को छूने लगी थीं।

उन दिनो "लँगोडा" इसी बन्दरगाह में था। झंझा के आसार देखते ही वह समुद्र की ओर चल पडा था और जल्दी-जल्दी में लंगर डाले खडी अपनी लांच छोड ही गया। कई घन्टो तक तो वह छोटी नौका समुद्र के थपेडे झेलती रही। उसका लंगर हिल रहा था और लहरों के वेग के कारण वह शीर्षासन-सा करती नजर आ रही थी। लोगों ने मुझे बताया कि रात तक तो उन्होने उस नाव को वहाँ देखा लेकिन अततः तरगो ने उसे लंगर से आजाद कर के तीर पर फेंक दिया।

"प्रिलग्रिम" पर सब-कुछ नियमित ढंग से चल रहा था और हर आदमी बिना किसी झझट के अपना काम करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन यह तो स्पष्ट ही था कि यात्रा का सुख समाप्त हो गया है। "यह एक लम्बी गली है जो कही मुडती नही है"—"बारह बरस बाद तो घूरे के दिन भी फिरते हैं, एक दिन मेरे भी फिरेंगे"—और इसी तरह की दूसरी कहावतों का प्रयोग तो कभी कभी किया जाता था, लेकिन यात्रा की संभावित समाप्ति अथवा बोस्टन या इससे मिलती-जुलती बात कोई नही करता था। और अगर कोई करता भी था तो उसे अपने ही साथी से यह जवाब मिलता था—"क्या बोस्टन की बात करते हो ? अगर बोस्टन की सूरत भी देखने को मिल जाये तो अपने भाग सराहना; या कुछ इस तरह का उत्तर मिलता—"बोस्टन पहुँचने से पहले ये खालें तुम्हारी खोपडी के सारे बाल पहन लेंगी और तुम्हारा सारा वेतन कपडों पर खर्च हो जायगा। तुम्हारी जेब में एक कौडी तक नही बचेगी जिससे नकली बाल खरीद कर अपना गंजापन छिपा सको।"

कोडे लगने की घटना की चर्चा बहुत कम या नही के बराबर होती थी। अगर कोई शुरू भी करना चाहता तो कोई दूसरा बात की नजाकत को समझता हुआ उसे रोक देता था, या बात टाल देता था। मुझे मल्लाहों से इतनी समझ-दारी की उम्मीद न थी। लेकिन जिन दिनों मल्लाहो के कोड़े लगे थे वे एक-दूसरे से इतनी नम्रता और आदर के साथ व्यवहार करने लगे थे कि जीवन के उच्चतम क्षेत्र में भी उसे प्रशसनीय कहा जायगा।

सैम को इस बात का अहसास था कि जान ने यह यातना उसी के कारण सही है, और वह जब भी शिकायत करता था तो यह अवश्य कहता था कि अकेले उसी के कोड़े लगाये जाते तब भी कहीं तक ठीक था, लेकिन जब भी वह जान को देखता है तो उसे याद आता है कि उसी के कारण जान को यह अपमान सहना पडा हैं; और जान अपने वचनो से या कृत्यो से यह कभी भी प्रकट नही होने देता था कि अपने साथी नाविक के मामले में हस्तक्षप करने के कारण ही उसे वह यातना सहनी पडी थी।

जब हमारी सारी फालतू जगह खालो से भर गयी तो हमने लंगर उठाया और सैन डियागो के लिए चल दिये। जहाज को रवाना करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे आप नाविको की मन.स्थिति का सही अनुमान लगा सकते हैं।

जब नाविक "उमग के साथ" काम करते हैं तो हर नाविक बिल्ली की तरह उछल कर ऊपर चढ़ जाता है। पलक मारते पाल ढीले कर दिये जाते हैं। हर आदमी अपने हवीत-दड पर पूरा जोर लगा देता है और बेलन चरखी "यो हीव हो! हीव एड पा! हीव हार्टी हो!" के निनाद के साथ घूमना शुरू कर देती है। लेकिन इस बार हम मरे मन से काम कर रहे थे। एक नाविक भी अपनी सामान्य गति से तेज चलकर ऊपर नही चढा और बेलनचरखी धीरे-धीरे घूम रही थी।

सबदरा कोहनी में खडा मालिम अफसराना ढंग मे हमें उकसाने का निरर्थक प्रयत्न करता रहा—"जान लगा कर खीचो हो!"—"जोर लगा के हेइसा!"—"खींचो-खाचो, पार करो!" आदि-आदि, लेकिन सब बेकार रहा। उसके उकसाने का नाविको पर कोई प्रभाव नही पडा।

और जब बेलन-चरखी पर रस्से-कुप्पियाँ बाँध दी गयी और सब मल्लाह—रसोइया, स्टीवार्ड और बाकी सब—फलके में लगर उठाने के लिए जुट गये तब भी "चीयरिली मेन" वाला जानदार सहगान गाने के बजाय हमने धीरे-धीरे और चुप-चाप रहकर लगर उठाया। और, जैसा कि मल्लाहो का कहना है एक गीत दस मल्लाहो के बराबर काम करता है इसलिए गीत के अभाव में लगर को ऊपर आने में खासी देर लगी। मालिम ने कहा "चीयरिली" गाओ, लेकिन हमारे लिए खुशी मिट चुकी थी, इसलिए हमने खुशी का गीत भी नही गया।

कप्तान छतरी पर चहलकदमी करता रहा, लेकिन बोला एक शब्द भी नहीं।

उसने यह परिवर्तन अवश्य ही देखा होगा लेकिन इसमें ऐसा कुछ न था जिसके विरुद्ध वह कोई कारंवाई कर सके।

हम धीरे-धीरे किनारे-किनारे हल्की हवा में आगे चले। रास्ते में हमने दो मिशन और देखे जो दूर से सफेद प्लास्टर के ब्लाक जैसे दिखायी दे रहे थे। उनमें से एक तो एक ऊँची पहाडी की चोटी पर था। उसका नाम सैन जुआन कैम्पे-स्ट्रानो था और उसके नीचे गर्मियो के दिनों में खालें चढाने के लिए कभी कभी जहाज लगर डाला करते थे। सबसे दूर वाले मिशन का नाम सैन लुई रे था। तीसरे मालिम ने बताया कि यह मिशन सैन डियागो से केवल चौदह मील है। अगले दिन सूर्यास्त के समय हमारे सामने विशाल और जगलयुक्त मुख्य भूमि थी जिसके पीछे सैन डियागो का छोटा सा बन्दरगाह था। सारी रात हवा बन्द रही लेकिन अगले दिन यानी शनिवार, चौदह मार्च को तेज समीर बह निकला और हम पाइट का चक्कर लगा कर और हवा बदल कर अपने जहाज को ठीक सामने उस छोटे बन्दरगाह मे ले आये जोकि दरअसल एक छोटी सी नदी का निकास है।

हर आदमी नयी जगह को आख भर कर देख लेना चाहता था। पाइट से ही (जोकि हमारे डाबा बाजू पर खाडी में घुस आया था) ऊची पहाडियों की एक शृंखला शुरू हो गयी थी जो उत्तर तथा पश्चिम में बन्दरगाह की रक्षा करती थी, यह शृंखला अंदरूनी हिस्सो में बहुत दूर तक चली गयी थी। दूसरी तरफ जमीन नीची और हरियाली है लेकिन उसमें पेड नही उगे हैं। मुहाना इतना तंग है कि उसमें से एक बार में एक ही जहाज आ सकता है। धारा का वेग तेज है और चैनल एक नीचे पथरीले पाइन्ट के इतने निकट से बहती है कि ऐसा लगता है जैसे जहाज के पार्श्व पाइंट से छू रहे हो।

वहाँ से कस्बा नही दिखाई दे रहा था। लेकिन चिकना रेतीला तट निकट ही था और हम से एक लीग के फासले के अन्दर ही तीन जहाज लंगर डाले खडे थे। तीर पर चार बडे मकान थे जो खुरदरे तख्तों से बनाये गये थे और बोस्टन के उन कोठारो से मिलते-जुलते थे जो वहा के निकटवर्ती बड़े तालाबों के किनारों पर बर्फ जमा करने के लिए बनाये गये हैं। उनके चारों ओर खालों के ढेर लगे थे और लाल कमीजें व तिनकों के बडे टोप पहने आदमी दरवाजों में से आ जा रहे थे। ये खालों के घर थे।

जहाजों में एक तो छोटा और गंदा-सा हरमाफ्रोडाइट दो मस्तूलों वाला

जहाज था जिसे देखते ही हम समझ गये कि यह हमारा पूर्व परिचित "लौरियट" ही है। दूसरे जहाज क मोरे तेज थे और मस्तूल झुके हुए, उस पर ताजा रग-रोगन हुआ था और सूरज के प्रकाश मे वह चमचमा रहा था। उसका झंडा लाल रग का था और चोटी पर सैंट ज्यार्ज का क्रास लगा था। यह जहाज सुन्दर "आयाकुचो" था। तीसरा जहाज एक विशाल पोत था जिसके टापगॅलेंट मस्तूल बचे हुए थे और पाल खुले हुए। वह इतना खस्ता हाल लग रहा था जितना दो सालो तक खालें ढोना किसी जहाज को बना सकता है। इस जहाज का नाम "लैगोडा" था।

धारा मे तेजी से चलते हुए हम निकट आये और हमने जजीर ढीली कर दी और शिखर पाल बाध दिये। "लगर डाल दो!" कप्तान ने आदेश दिया, लेकिन या तो बेलन-चरखी मे आगे की तरफ जंजीर कम रह गयी थी, या लगर गलत गिरा, या हम ज्यादा आगे बढ आये थे-बहरहाल लंगर डला नही। "जंजीर ढीली छोड दो!" कप्तान चीखा, और हमने जजीर ढीली छोड दी लेकिन उससे भी कुछ न हुआ।

इससे पहले कि हम दूसरा लगर डालें हमारा जहाज बहने लगा और "लैगोडा" से जा टकराया। उसके मल्लाह अगवाड में नाश्ता कर रहे थे और जब रसोइए ने देखा कि हमारा जहाज उस ओर बढ़ रहा है तो वह रसोई से भागा और अफसरो व मल्लाहो को ऊपर बुला लाया।

सौभाग्य से नुकसान अधिक नही हुआ। उसकी जिब बूम हमारे अगले और प्रमुख मस्तूलो के बीच मे घुस गयी, इसके फलस्वरूप हमारे कुछ पाल वगैरह नष्ट हो गये और पटरी टूट गयी। उसे अपनी मार्टिंगेल से हाथ धोना पडा। इससे हमारा जहाज रुक गया और जब उन्होने जजीर ढीली छोडी तो हम उनके जहाज से आगे निकल गये और हमने दूसरा लंगर डाला लेकिन दुर्भाग्य से यह भी पहले की तरह बेकार रहा और इसके पहले कि किसी का ध्यान इस तरफ जाये हमारा जहाज "लोरियट" की तरफ बहने लगा था।

अब कप्तान तेजी से और गुस्से में आदेश देने लगा था। उसने शिखरपाल तनवा दिये। उसने सोचा शायद पालों में हवा भरने से उसकी ताकत से लंगर बाहर निकल आये, लेकिन यह कोशिश भी बेकार रही। अन्त में वह बेफिक्री से

पटरी पर बैठ गया और "लोरियट" के कप्तान नाये से पुकार कर कहा—मैं तुमसे मुलाकात करने आ रहा हूँ।

हमारा जहाज जोर से "लौरियट" से जा टकराया। उसका डाबा बाजू वाला मोरा हमारे जमना बाजू के क्वा र से टकराया और हमारे क्वार्टर का जंगला गायब हो गया जबकि उसके डाबा बाजू का बमकिन टूट गया। इसके अलावा उसके डेक के ऊपर का एकाध खभा भी टूट गया। हमने अपने सुन्दर नाविक जैक्सन को सैंडविच द्वीपो के मल्लाहों के साथ अगवाड में देखा। वे सब हमारे जहाज को आगे निकालने के प्रयत्नों में लगे हुए थे। जंजीर ढीली छोडने से हम "लोरियट" से निकल गये लेकिन हमारे लंगर बेकार हो गये थे। हमने सब लोगों को बेलन चरखी पर लगा दिया और लगर उठाने के लिए पूरा जोर लगाया, लेकिन कुछ न हुआ। बडी कोशिश करने से कभी-कभी लगर का कुछ तार ऊपर आता भी था लेकिन तभी कोई विराट तरग आती और उसे फिर से नीचे ले जाती थी।

अब हमारा जहाज "आयाकुचो" की तरफ बहने लगा। उसका कमांडर कप्तान विल्सन अपनी नाव पर बैठ कर हमारे जहाज पर आ गया। वह छोटे कद का, चुस्त और पुष्ट आदमी था। उसकी उम्र ५० और साठ के बीच की होगी—यानी वह हमारे कप्तान मे लगभग ३० माल बडा था—और वह अत्यन्त अनुभवी नाविक था। वह बिना किसी झिझक के अपनी राय देने लगा और राय देते देते वह धीरे-धीरे हुक्म ही देने लगा। जब भी वह ठीक समझता हमें आदेश देता—अब ठहराओ, अब घसीटो, अब शिखरपालो को हवा के सामने करो और अब उनमें हवा भरने दो, अब जिब लगाओ और अब लपेटो, आदि।

हमारे कप्तान ने कुछ आदेश दिये लेकिन जब विल्सन ने प्रेम से पिता की तरह समझाते हुए, "अरे नहीं कप्तान टी—, अभी उस पर जिब मत लगवाओ", या, "अभी कुछ देर रुक कर ठहराना!" उसके आदेशों के विरुद्ध आदेश देने शुरू कर दिये तब हमारा कप्तान चुप हो गया। इस बात में हमें कोई एतराज नहीं था। विल्सन दयालु स्वभाव का बूढा आदमी था और हमसे इतने बढावा देने वाले और खुशगवार लहजे में बोल रहा था कि सब काम ठीक होते गये। दो-तीन घंटे तक बेलन चरखी पर अविरत परिश्रम करने और पूरी ताकत से "यो हो" करने के बाद हम एक लंगर डालने में सफल हो सके, वह भी तब जब "लोरियट" के

मोरे का छोटा लगर उसमें बांध लिया गया। यह करने के बाद हमने अपनी लंगर-जंजीर ठीक की और जल्दी ही दूसरा लगर भी डाल दिया जो कि बन्दरगाह की ओर आधो दूर तक चला गया था।

"अब", विल्सन ने कहा, "मैं आपको बढिया जगह दिलवाता हूँ"; और दोनों शिखरपाल तानने के बाद वह हमारे जहाज को कुछ नीचे ले गया और बडे शानदार तरीके से लगर डलवा दिया। हमने जहाँ लगर डाला था वहा से ठीक सामने खा नो का वह मकान था जिसका इस्तेमाल हमे करना था। यह सब करने के बाद वह विदा हो गया। हमने अपने पाल लपेटे और तब हमें नाश्ता दिया गया जिससे हम बहुत खुश हुए क्योकि हम कठिन परिश्रम कर के चुके थे और समय भी बारह के आस–पास हो गया था। नाश्ते के बाद से रात तक हम नावो को उतारने और जहाज को बाधने में लगे रहे।

सपर के बाद हम दो मल्लाह कप्तान को नाव में बैठा कर "लैंगोडा" जहाज पर ले गये। पास आने पर उसने अपना नाम बताया और गली में खड़े "लैंगोडा" के मालिम ने अपने कप्तान से पुकार कर कहा—"सर! कप्ता टी–आपसे मिलने आये हैं!" "क्या वह अपना जहाज भी साथ ही लाया है?" उस मुंहफट बूढ़े कप्तान ने यह बात इतने जोर से कही कि पूरे जहाज में उपस्थित सभी लोगो ने सुन ली। यह सुनकर हमारा कप्तान निष्प्रभ हो गया, और शेष यात्रा में हम नाविक लोग इस मजाक को बराबर दुहराते रहे।

कप्तान नीचे केबिन में चला गया, और हम अगले हिस्से में पहुच कर नीचे अगवाड में झाकने लगे। हमने देखा वहाँ मल्लाह सपर खा रहे थे। जैसे ही उनकी नजर हम पर पडी वे बोले, "आओ साथी मल्लाहो! नीचे आ जाओ!" नीचे पहुंचने पर हमने देखा उनका अगवाड बडा, ऊँचा और रोशनी वाला था। मल्लाहों की संख्या बारह–चौदह के लगभग रही होगी। वे टबो और तसलो मे खा रहे थे और अपनी चाय पी रहे थे, और एकदम आजाद बदो की तरह हस–बोल रहे थे।

हमें अपने जहाज के छोटे और अधेरे अगवाड और मुट्ठी भर असतुष्ट नाविको की याद आयी और हमें लगा ये लोग हमारे मुकाबले कितने मजे मे हैं। आज शनिवार की रात था और वे हफ्ते का अपना काम निपटा चुके थे। चूंकि उनका जहाज आराम से बंधा हुआ था इसलिए अब सोमवार से पहले उनके पास कोई

काम नही था। दो साल की जानलेवा नौकरी के बाद—उन्होंने इस अरसे में कैलिफोर्निया में हर तरह के पापड बेल लिये थे—अब वे अपना नौभार प्राय पूरा कर चुके थे और एकाध सप्ताह के अन्दर बोस्टन के लिए रवाना होने वाले थे।

हम उनके पास घन्टे-सवा घन्टे रहे होगे, और इस बीच हमने कैलिफोर्निया प्रदेश के बारे में बातें की, कि "पिलग्रिम वाले चलें!"—यह आदेश मिला और हमें अपने कप्तान के साथ वापस जाना पडा। हमें वे जीवट वाले चतुर मल्लाह लगे। कैलिफोर्निया ने उन्हे किसी कदर खस्ताहाल कर दिया था और उनके कपड़ों पर थेगडिया लगी हुई थी और वे घिस चले थे। वे सुयोग्य मल्लाह थे और उनकी उम्र बीस और पैंतीस के बीच की थी।

उन्होंने हमारे जहाज और वहा के हाल-चाल पूछे और कोड़े लगने की घटना से उन्हें बडा आश्चर्य हुआ। उन्होने कहा जहाजो पर अक्सर परेशानियाँ तो सामने आती रहती हैं और झगडे-रगड़े भी होते रहते हैं लेकिन किसी मल्लाह को बाका-यदा बाँध कर कोडे लगाने की बात तो उन्होने पहली बार सुनी है।

उन्होने कहा सैन डियागो में रविवार की छुट्टी हमेशा दी जाती है चाहे आदमी तीर पर स्थित खालों के मकान में नौकरी करता हो या जहाज पर। प्राय: अधिकांश लोग छुट्टी मनाने कस्बे में चले जाते हैं। हमने उनसे खालो को सुखाने और जहाज में रखने के बारे में काफी कुछ सीखा, और वे बोस्टन के नवीनतम (यानी सात महीने पुराने) समाचार जानने को बहुत उत्सुक थे। सबसे पहले उन्होंने बोस्टन में नाविको के उपदेशक फादर टेलर के हालचाल पूछे। इसके बाद बातचीत, सवालात, कहानियों और मजाको का वही दौर शुरू हुआ जो मल्लाहों के अगवाड में हमेशा होता है लेकिन जो शायद क्लबो मे सुवेशी भद्र पुरुषों के वार्त्तालाप से ज्यादा भद्दा या फोहश नही होता।

* * *

अध्याय १८

अगले दिन रविवार था, इसलिए डेकों की धुलाई व सफाई करने के बाद, जब हम लोग नाश्ता कर चुके, तब मालिम ने आकर हम लोगो की एक टोली को छुट्टी मनाने के लिए तीर पर जाने की मजूरी दी। हम लोगों ने परची डाल कर इसका फैसला किया और तकदीर ने डाबा बाजू पर काम करने वाले नाविकों का

साथ दिया, जिसमें मैं स्वयं भी आता था। तत्काल, जिधर देखो उधर, तैयारियाँ होने लगी। मीठे पानी की बाल्टियों (जिसकी इजाजत हमें बन्दरगाहों पर रहती थी) और साबुन की टिकियो का इस्तेमाल होने लगा। लीक पर जाने की जैकेट और पतलून निकाली जाने लगी और उन्हे झाडा-पोंछा जाने लगा। नतीजा यह हुआ कि हममें से हर आदमी को बाहर निकलने के लिए एक अच्छी खासी पोशाक मिल गई। अब छुट्टी पाए हुए नाविको को तीर पर पहुँचाने के लिए एक नाव निकाली गई, और हम लोग नाव के पिछले हिस्से में उसी शान से डटकर बैठ गए जैसे भाडा देकर चलने वाले यात्री हों और तीर पर पहुँचते ही सैर करने के लिए नगर की ओर चल पड़े जो वहाँ से तीन मील दूर था।

दु:ख की बात है कि व्यापारी जहाजों पर छुट्टी के दिन के लिए कोई ठीक इन्तजाम नही है। जब जहाज़ बन्दरगाह पर होता है तब नाविकों को पूरे हफ्ते काम पर लगाए रखा जाता है। अगर उन्हे आराम या मौज के लिए कोई दिन मिलता है तो वह है रविवार और अगर उस दिन भी उन्हें तट पर जाने को न मिले तो वे कही जा ही नही सकते। मैने एक धार्मिक प्रवृत्ति वाले कप्तान के बारे में सुना है कि वह अपने नाविको को शनिवार के दिन दो बजे के बाद छुट्टी दे देता था। अगर जहाज के कप्तान अपने नाविकों को इतना अवकाश देने को भी राजी हो जायँ तो यह एक अच्छी बात हो।

नौजवान नाविकों के लिए, जिनमें से अनेक का पालन-पोषण इस तरह से हुआ रहता है कि ये इस दिन को एक पवित्र दिन मानते हैं, इस पवित्रता को भङ्ग करने का तीव्र प्रलोभन बहुत हानिकर होता है। मौजूदा हालात में यह आशा करना अनुचित है कि एक लम्बी और मुश्किल यात्रा पर लगे हुए नाविकों को अगर अपनी मशक्कत और पाबन्दियों से चन्द घन्टो की आजादी मिलती है, और धरती पर पाँव रखने और समाज और मानवता की रंगीनियो को देखने का अवसर मिलता है तो महज़ इतवार होने ही के कारण ही वे इससे इनकार कर दें। यह बहुत कुछ वैसा ही है जैसे आप किसी आदमी से यह आशा करें कि वह सैबाथ के दिन किसी जेलखाने या खड्ड से बच कर न निकले।

मुझे एक दिन के लिए ही सही, खुली हवा और चहचहाती चिडियों के बीच में रहने और जहाज के उग्र श्रम और कठोर नियम से छूट पाने और एक बार और जिन्दगी का रस लेने और खुदमुख्तार होने से जो आह्लाद मिला, उसे मैं कभी नहीं

भूल पाऊंगा। नाविक की आजादी होती तो केवल एक दिन की है, लेकिन जब तक यह बनी रहती है तब तक इसमें कोई कमी नही आ पाती। उस पर किसी की नजर नही रहती, वह जो चाहे वह कर सकता है, और जहाँ चाहे वहा जा सकता है।

सच कहूँ तो आज जीवन में पहली बार मुझे "आजादी की मधुरता" शब्द का सही अर्थ विदित हुआ' जिसे अक्सर मैं सुनता आया था। मेरा मित्र एस-मेरे साथ था और जहाज से मुह मोड कर, खुदमुख्तारी के आनन्द की चर्चा करते, उस बीते समय की बातें करते हुए जब हम अमरीका में बिल्कुल आजाद होकर अपने दोस्तों के बीच रहते थे, और यह योजना बनाते हुए कि जब हम फिर घर पहुंचेंगे तो कहाँ-कहो जाएगे और क्या-क्या करेंगे, हम धीरे-धीरे टहलते रहे।

जब हमने इस नए नजरिए से देखा तो भविष्य कितना उज्जवल और यात्रा कितनी छोटी और सह्य प्रतीत हुई, यह देख कर हमें अचरज हुआ। जिस दिन सैन पेड्रो में नाविको के कोडे लगे थे उसके बाद की रात को जहाज के छोटे अंधेरे अगवाड मे बात करते समय हमे हर चीज जैसी दिखाई दी थी, अब उसमे बिल्कुल बदली हुई दिखाई देने लगी। नाविको को समय-समय पर एक दिन की छुट्टी देना एक बडी सहूलियत है। इससे उन्हे एक दिन की बहार नसीब होती है—जो उन्हें खुशदिल और आजाद बना देती है, और जो कुछ समय के लिए उन्हें हर चोज को अकारण ही आशावादी दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित करती है।

एस-और मैंने निश्चय किया कि जहा तक सम्भव होगा हम साथ साथ रहेंगे, यद्यपि हम यह जानते थे कि हम अपने जहाज के साथियो से भी कट कर अलग नही रह सकते। हमारे कुल और शिक्षा को जानने के कारण उन्हें इस बात का सन्देह बना हुआ था कि किनारे पहुँचने पर हम लोग भद्र पुरुषों का वेश बना लेंगे और उनके साथ रहने में शर्म महसूस करेंगे, और नाविक यह बात कभी गवारा नही कर सकने। यात्रा की समाप्ति पर आप अपनी मर्जी से चल सकते हैं, लेकिन जब तक आप जहाज पर हैं, तब तक किनारे पर भी आपको उनका दोस्त बना रहना होगा, नही तो जहाज पर भी वे आपके दोस्त नही रह जाएगे। चूँकि समुद्री नौकरी करने के पहले ही मुझे इससे आगाह कर दिया गया था, इसलिए मैं अपने साथ अधिक सामान नहीं ले गया था और दूसरों की तरह की ही मैं भी पतलून, नीला जैकेट और तिनको की हैट पहनता था जिससे मैं उनसे अच्छे लोगों की संगति में

जाने से वंचित रह जाता था। उनके प्रति उपेक्षा का कोई भाव न दिखाकर मैंने उनके सारे सन्देह दूर कर दिये।

हमारी टोली का साथ एक दूसरे जहाज की टोली से हो गया और हम लोग ठेठ नाविकों की तरह सबसे नजदीक पड़ने वाली ठर्रे की दूकान की ओर चल पड़े। यह एक छोटा सा कच्चा मकान था जिसमें एक ही कमरा था और शराब, कपड़े-लत्ते और पश्चिमी द्वीप समूह की चीजें, जूते, रोटियां, फल और कैलिफोर्निया के फेरी वालो द्वारा बेची जाने वाली सभी चीजें इसी में रखी हुई थी। यह दूकान एक याकी की थी, जो मूल रूप से फाल नदी के तट का रहने वाला था और ह्वेल मछली का शिकार करने वाले एक जहाज में चढ़कर प्रशान्त महासागर में आया था और उस जहाज को सैंडविच द्वीप पर छोड़कर कैलिफोर्निया में एक पल्पेरिया (वह दूकान जिसमें किराने के सामानो के साथ साथ शराब भी बिकती है) खोलने के इरादे से चला आया था। एस—और मैं अपने साथियों के पीछे-पीछे यह सोचकर चल पड़े कि उनके साथ पीने से इन्कार करना सबसे बड़ी गुस्ताखी होगी, लेकिन हमने यह निश्चय कर लिया कि जरा भी मौका मिलते ही हम खिसक लेंगे।

नाविको में एक आम रिवाज है कि उनमें से हर एक अपनी बारी आने पर सबकी खातिरदारी करता है और वहाँ मौजूद हर आदमी यहां तक कि शराबखाने के मालिक तक से एक गिलास पीने का अनुरोध करता है। जब हम लोग भीतर घुसे तो कुछ देर इस बात पर हुज्जत होती रही कि पहले हम नवागन्तुक पिलाना शुरू करेंगे या कैलिफोर्निया के वे पुराने नाविक, लेकिन चूंकि मामला कैलिफोर्निया के पुराने नाविको के पक्ष में तय हुआ, इसलिए दूसरे जहाज के हर नाविक ने बारी-बारी हर नाविक को शराब पेश की और चूंकि वहां बहुत से लोग मौजूद थे (जिनमें कुछ आवारे भी शामिल हो गए थे जो वहां का रंग-ढंग भांप कर चले आए थे और नाविकों की अतिथिवत्सलता का लाभ उठाना चाहते थे) और शराब भी पूरी गिलास भर कर दी जा रही थी (जो फी गिलास १२½ सेंट पड़ती थी), इसलिए उनकी जेबें काफी हल्की हो गईं।

अब हमारे जहाज की बारी थी और चूंकि एस—और मैं वहां से खिसकना चाहते थे, इसलिए हम लोगों से पीने का अनुरोध करने को बढे। लेकिन हमें जल्द ही पता चल गया कि यह काम आयुक्रम से ही हो सकता है—जो जितना बुजुर्ग

होगा वह उतना ही पहले, क्योंकि बूजुर्ग नाविको को यह पसन्द नहीं था कि उनसे पहले ही चन्द नौजवानो की बारी आ जाए; इसलिए हमे अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी पड़ी। इस समय हमे दो खयाल सता रहे थे। एक तो हमें उस दिन के लिए घोड़े पाने में देर हो रही थी, दूसरे हमें शराब चढ़ जाने का डर था, क्योंकि पीना तो हर हालत में था ही, और अगर एक के साथ पीजिए और दूसरे के साथ नही, तो इसे वह आदमी अपनी तौहीन समझता।

आखिरकार अपनी बारी पूरी करके और हर प्रकार के आभार से मुक्त होकर हम खिसक गए और निकट के घरो मे घोड़े की तलाश में गए ताकि हम घोडे पर सवार होकर आस-पास के स्थानो को देख सकें। पहले तो हमें सफलता नही मिली। उन काहिल आदमियो से अपने सवालो के जवाब में हमें एक ही उत्तर मिलता था, "कौन जाने!" हर सवाल का एक मात्र जवाब यही था।

कई बार कोशिश करने के बाद अन्ततः हमें एक लडका मिला जो कप्तान विल्सन का नौकर था और उस जगह से पूरी तरह वाकिफ था। चूंकि उसे पता था कि घोडे कहां मिल सकते हैं इसलिए उसने हमारे लिए दो सजे-सजाए घोडों का जुगाड कर दिया, जिनमें से हर एक की काठी के अगले हिस्से पर एक रस्सी लिपटी हुई थी। उन्हें एक डालर में, जो हमें पेशगी चुकाना पडा, पूरे दिन रखा जा सकता था और साथ ही उन पर चढ़कर रात में समुद्र तट तक जाने की भी सहूलियत थी। कैलिफोर्निया में घोडे बहुत सस्ते पडते हैं। अच्छे से अच्छा घोड़ा दस डालर से अधिक का नही पडता और खासा अच्छा घोडा तीन-चार डालर में बिकता है। एक दिन की सवारी करने में जीन का इस्तेमाल करने और घोडों को पकडने की परेशानी और मेहनत के लिए भी पैसे चुकाने पडते हैं। अगर आप जीन को सही सलामत वापस कर दें तो उन्हें इस बात की फिक्र नही रहती कि घोड़े का क्या हुआ। हमारे घोडे जानदार थे। इस प्रदेश में घोडों की गरदन में पडी हुई लगाम को दबाकर उन्हें दौडाया जाता है, लगाम को खीचना या ढीला नही करना पडता। घोडों पर चढ़कर तेज रफ्तार से हम सैर को निकल पड़े।

सबसे पहले हम उस पुराने उजड़े दुर्ग पर गए, जो गांव के पास ऊंची जमीन पर था और जहां से गांव दिखायी देता था। यह पुराने जमाने के दूसरे सभी स्पेनी दुर्गों की तरह आयताकार बना हुआ था और जिस ओर कमान्डर अपने परिवार के साथ रहता था उसे छोड़कर इसके सभी हिस्से बिल्कुल बर्बाद हो चुके थे। वहां

केवल दो ही तोपें थीं, जिनमें से एक का मुंह कील ठोक कर बन्द कर दिया गया था और दूसरी में कैरिज ही नही थी। बारह अधनंगे और अधभूखे से दीखने वाले सैनिकों की एक रक्षक टुकडी थी, और हमने सुना था कि उनके पास एक बन्दूक तक नही है।

वह छोटी सी बस्ती दुर्ग के ठीक नीचे बसी हुई थी, जिसमें चालीस के लगभग धुमैले मकान और झोपडिया थी और दो बडी पक्की इमारतें थी। यह नगर मोटेरी या सैन्टा बारबरा से आधा भी नही है और यहां किसी तरह का काम-धाम नही होता, या होता भी है तो, नाम-मात्र को। दुर्ग से हम लोग मिशन की ओर चल पडे जो वहा से तीन मील दूर था। वहा की जमीन बलुई थी और मीलों तक पेड जैसी किसी चीज का अता-पता नही था, लेकिन घास खूब उगी हुई थी और बीच-बीच में झाडझखाड भी थे, और लोगों का कहना था कि वहा की जमीन काफी उपजाऊ है।

लगभग दो मील तक बडी मजेदार घुडसवारी के बाद हमें मिशन की सफेद दीवारें दिखाई पडी और एक छोटी सी नदी को पार करने के बाद हम इसके ठीक सामने पहुंच गए। मिशन की इमारत मिट्टी की या कहिए कच्ची ईटो की है जिस पर प्लास्तर किया हुआ है। इसकी बनावट मे बडी मोहकता थी। बेतरतीब बनी हुई कई इमारतें जो एक दूसरे से जुडी हुई थी, और सभी मिलकर बीच में एक चौखटा सा बनाती थी। एक छोर पर एक गिरजाघर था जो सबसे ऊंचा था और जिसमें एक बुर्ज बना हुआ था जिसमे पाच घन्टे लगे हुए थे और सिरे पर एक बहुत बडा जग खाया हुआ लोहे का सलीब बना था।

इमारतो के ठीक बाहर और दीवालो के नीचे ही बीस-तीस झोपड़ियां बनी हुई थी जिन्हे सरपत और पेडो की टहनियो से छाया गया था। इनमें मिशन की सेवा में लगे हुए और उसी की छत्रछाया में जीने वाले कुछ इन्डियन आदिवासी रहते थे।

एक फाटक से घुस कर हम, घोडों पर सवार ही, एक खुले आंगन में पहुंच गए, जिसमें मौत की सी खामोशी छाई हुई थी। एक ओर गिरजा घर था, दूसरी ओर ऊंची इमारतों का एक सिलसिला था, जिनमें जालीदार खिडकिया लगी हुई थी, तीसरी ओर छोटे मकानो या दफ्तरों की कतार थी, और चौथी ओर इन्हें जोड़ने वाली एक ऊंची दीवार से कुछ अधिक ऊंची दिखाई देती थी।

हमें कोई जीवित प्राणी दिखाई नही दिया। इस आशा में, कि घोड़ों की टाप से लोगो की नोद टूट जायगी, हमने आंगन के दो चक्कर लगाए। पहले चक्कर में हमें एक लम्बा सा सन्यासी दिखाई पडा, जिसका सिर घुटा हुआ था। वह सैंडल पहने हुए था। वह गैलरी मे होकर तेजी से निकल गया पर उसके चेहरे से ऐसा लगा कि उसने हमें देखा ही नही।

दो चक्कर लगाने के बाद हमने घोडो को रोक दिया और हमारी नजर छोटी इमारतों में से एक की खिडकी से एक आदमी की आकृति पर पडी। हम घोडों पर चढे हुए ही उसके पास गए। उस आदमी ने वहा के देहातो मे पहनी जाने वाली आम पोशाक ही पहन रखी थी। उसके गले मे चाँदी की एक जजीर पडी हुई थी जिसमें चाबियो का एक बडा सा गुच्छा झूल रहा था। इससे हमने यह अन्दाज लगाया कि वह मिशन का परिचारक होगा। हम लोगो ने उसे 'मेयरडोमी' कह कर सम्बोधित किया और जवाब मे उसने जरा सा झुक कर हम लोगों से भीतर आ जाने को कहा। अपने घोडों को बाँध कर हम लोग भीतर गए।

यह एक सा सादा कमरा था जिसमें एक मेज, तीन या चार कुर्सियाँ, सन्तों की चमत्कार या बलिदान की एक दो छोटी तस्वीरें, कुछ तश्तरिया और गिलास रखे थे। स्पेनी भाषा मे अभिवादन आदि के बाद उससे हमने खाने के बारे मे पूछा।

मैंने, यह सोच कर कि अगर इनके पास और कुछ नही भी होगा तो भी फ्रिजोल (एक प्रकार की फली) तो होगी ही, फ्रिजोल, बीफ तथा रोटी लाने को कहा, और यह भी इशारा कर दिया कि यदि उनके पास शराब हो तो वह भी हम लेना चाहेंगे। वह आगन पार करके एक दूसरी इमारत में गया और कुछ ही मिनटों में दो इन्डियन आदिवासी छोकरों के साथ लौटा जो तश्तरिया और शराब की कुप्पी लिए हुए थे।

तश्तरियों में सिका हुआ मांस, प्याज और काली मिर्च डालकर तैयार की हुई फ्रिजोल फलियाँ, उबले हुए अन्डे, और मैदे की बनी हुई एक तरह की सेवइयां थी। इन सब के साथ शराब के होने से खाने में इतना मजा आया कि इतना उम्दा खाना बोस्टन छोडने के बाद हमें मिला ही नही था और सात महीने तक हमें जो कुछ खाने को मिला था उसकी तुलना में तो यह एकदम शाही खाना था।

खाना खा लेने के बाद हम लोगो ने कुछ धन निकाला और उससे पूछा कि हमें कितना चुकाना होगा। उसने अपना सिर हिलाया और सोने पर सलीब का

चिन्ह बनाते हुए कहा कि खाने का मूल्य नही देना होगा—हम इसे प्रभु का प्रसाद समझें। हमने इसका मतलब यह लगाया कि वह खाने का मूल्य नही लेना चाहता; लेकिन पुरस्कार-स्वरूप कुछ मिल जाए तो लेने को तैयार है, इसलिए हमने उसे बारह रीयल (एक सिक्का) दिये जिन्हे उसने बड़े निस्पृह भाव से जेब मे डाल लिया।

उससे विदा लेकर हम घोड़ों पर सवार होकर इन्डियन आदिवासियों की झोपडियो की ओर चल पडे। नंग-धडंग बच्चे झोपडियों में इधर से उधर दौड रहे थे, और पुरुषो की हालत भी उनसे अच्छी नही कही जा सकती थी, लेकिन औरतें सन के मोटे कपडे का एक तरह का लबादा पहने हुई थी। पुरुष अधिकतर मिशन के चौपायों को पालते थे या उसके बाग मे मजदूरी करते थे। यह बाग बहुत बडा है और कई एकड मे फैला है और कहा जाता है कि उस बगीचे में उस जलवायु मे पैदा होने वाले सब से अच्छे फल भरे पडे हैं।

यहाँ की भाषा, जिसे केलिफोर्निया के सभी इन्डियन आदिवासी बोलते हैं, उन सभी भाषाओ से अधिक असभ्य और अमानुषिक है जिन्हे आज तक मैंने सुना था या जिसकी कल्पना की जा सकती है। यह पूरी की पूरी बलबलाहटों की भाषा है। शब्द उनकी जीभ की नोक से निकलते हैं जिसमे दातों के बाहर और गालों मे लगातार बलबलाने की ध्वनि होती रहती है। मैंने सोचा, मोखटे-जुमा और स्वतन्त्र मेक्सिकन लोगो की भाषा यह नही रही होगी।

यहां, इन झोंपडियों में, मैंने अपने जीवन का सब से बूढा आदमी देखा, और सच तो यह है कि मैं यह कभी सोचता ही नही था कि कोई आदमी इतनी अधिक अवस्था तक जीवित रह भी सकता है। वह झोंपडी के एक किनारे झुका हुआ धूप में बैठा था, उसके हाथ और पाँव नंगे थे, और गहरे लाल रंग के थे, चमडी इस तरह सिकुडी हुई और मलिन थी मानो झुलसा हुआ चाम हो, और हाथ पाव इतने पतले थे कि उनकी मोटाई किसी पाच साल के लडके के हाथ पाव से अधिक नही रही होगी। उसके सिर पर चन्द सफेद बाल थे, जिन्हे पीछे की ओर करके बांध दिया गया था। वह इतना कमजोर था कि जब हम उसके पास गए तब वह आहिस्ता से अपने हाथों को उठा कर चेहरे के पास ले गया, और उंगलियों से अपनी पलकों को पकड कर हमें निहारने के लिये उठाया और संतुष्ट होकर उन्हे फिर गिरा लिया। लगता था उसका अपनी पलकों पर कोई जोर ही

नही रह गया था। मैंने उससे उसकी उम्र पूछी, लेकिन "कौन जाने ?" के अलावा कोई जवाब नही पा सका। सम्भवतः उन लोगो को अपनी उम्र मालूम ही नही थी।

मिशन से लगभग सारे रास्ते पूरी रफ्तार से घोड़े दौडाते हम गांव लौटे। कैलिफोर्निया के घोड़े दुलकी चाल से चलते ही नही, जोकि चलने और दौडने के बीच होती है और मजेदार रहती है, क्योकि वहा न तो सडकें हैं और न परेड ग्राउन्ड, इसलिए दुलकी चाल की जरुरत ही नहीं ़डती। उनके सवार उन्हे पूरी रफ्तार से तब तक दौडाते हैं जब तक वे थक न जा ं और फिर आराम देने के खयाल से उन्हे टहलने के लिए छोड देते हैं।

तीसरे पहर की मजेदार हवा, घोडो की तेज चाल, जो लगभग जमीन पर उडते हुए से मालूम हो रहे थे, और हमारे लिए, जो इतने अरसे से जहाज में ही घिरे रह गये थे, इस रफ्तार की नवीनता और उत्तेजना, इतनी आह्लादकारी मालूम हो रही थी कि जिसका वर्णन ही नही किया जा सकता, और हमारा मन कर रहा था कि सारे दिन घुडसवारी ही करते रहे।

जब हम गाँव मे आए, तब हमे हर चीज़ बहुत सजीव मालूम हो रही थी। इन्डियन आदिवासी, जो इतवार को सदा छुट्टियाँ मनाया करते हैं, अपने घरो के नजदीक एक चौरस मैदान में गेंद खेल रहे थे। बूढे लोग घेरे मे बैठे तमाशा देख रहे थे और नौजवान—आदमी, लडके और लडकियाँ—गेंद के पीछे दौड रहे थे और उसे पूरी ताकत से फेंक रहे थे। कुछ लडकियां तो शिकारी कुत्तों की तरह दौड़ रही थी। हर घटना और खेल के कमाल पर बूढ़े इतनी जोर से चीखते और ताली बजाते थे कि कान बहरे हो जाए।

अनेक नाविक घरो के बीच लडखडाते पैरों से चल रहे थे, जिससे पता चलता था कि पल्पेरियो ने उन्हे अच्छी तरह आश्रय प्रदान किया है, एक दो नाविक घोड़ों पर भी चढ़े थे, लेकिन अच्छे घुड़सवार न होने के कारण, और स्पेनियो द्वारा उन्हें बदमाश घोड़े दिए जाने के कारण, उन्हे घोडो ने जल्द ही नीचे फेंक दिया था और इससे वहाँ के लोगो का खासा दिल-बहलाव हुआ था। खालो के घरों और दोनो मस्तूलो वाले जहाजो पर काम करने वाले आधे दर्जन सैंडविच द्वीपो के निवासी, जो निडर घुड़सवार थे, जगली आदमयो की तरह चिल्लाते और हसते हुए पूरी रफ्तार से इधर उधर अपने घोड़े दौड़ा रहे थे।

अब सूर्यास्त होने ही वाला था और एस—तथा मैं एक मकान में गए और तीर पर जाने के पहले आराम करने के विचार से चुपचाप बैठ गए। थोडी ही देर में बहुत से लोग हमें—लास ऐंजेल्स के नाविकों को—देखने के लिए इकट्ठे हो गए और उनमे से एक तरुणी मेरे रूमाल पर बेतरह फ़िदा हो गई। यह रूमाल रेशमी था और काफी बडा था, और इसे मैंने जहाज पर नौकरी करने से पहले खरीदा था। देखने मे यह उन रूमालों से अधिक खूबसूरत था जैसे रूमालों को देखने के वे आदी थे। मैने उसे वह रूमाल दे दिया, जिससे हम लोग उनके प्रिय पात्र हो गए, और हमे कुछ नासपातियां और दूसरे फल उपहार मे दिये गए जिन्हें हम समुद्र तट तक ले आए।

जब हम लोग उस मकान को छोडने लगे तब पता चला कि हमारे घोडे जिन्हें हमने दरवाजे पर बाध कर छोड दिया था, गायब हैं। हमने उनके लिए जो पैसा चुकाया था वह तीर पर लौटने तक के लिए था, लेकिन वे अब मिल ही नही रहे थे। हम लोग उस आदमी के पास पहुँचे जिससे घोडे किराये पर लिए थे लेकिन हमारे यह पूछने पर कि "घोड़े कहां हैं ?" उसने अपना कन्धा सिकोड लिया और केवल इतना ही कहा—"कौन जाने ?" लेकिन चूं कि उसने बडे इतमीनान से हम से बातचीत की, और जीन के बारे में कोई पूछ-ताछ नही की, इसलिये हम अच्छी तरह समझ गये कि उसे सब पता है कि घोड़े कहा है।

थोडी सी परेशानी झेलने के बाद हमने यह इरादा किया कि अब पैदल नही लौटेंगे—तीर वहा से तीन मील दूर था—हमने चार रीयल की दर से दो घोड़े लिए और यह तय पाया कि एक इन्डियन लडका उनके पीछे दौडता चलेगा और उधर से घोडों को वापस ले आएगा। हमें जो परेशानी उठानी पडी थी उसके बदले में घोडों को जी जान से दौडाने का इरादा करके, हम लोग पूरी रफ्तार से समुद्र के किनारे की ओर लौटे और पन्द्रह मिनट में तीर पर पहुँच गए। अपनी छुट्टी को अधिक से अधिक लम्बी बनाने की इच्छा से हम खालों के मकानों के बीच वापस लौटते हुए लोगों को देखकर (अब गोधूलि की वेला हो चुकी थी) अपना जी बह-लाते हुए इधर इधर घोडों पर घूमते रहे। कुछ लोग घोडो पर सवार होकर आ रहे थे और दूसरे पैदल।

सैंडविच द्वीपवासी समुद्र तट की ओर घोडों पर सवार चले आ रहे थे, और वे बहुत भन्नाये हुए थे। हमने उनसे अपने साथियो के बारे में पूछ-ताछ की।

पता चला कि उनमें से दो लोग घोडों पर सवार होकर चले थे और या तो वे खुद गिर पड़े थे या उन्हे घोडों ने झटक कर गिरा दिया था। अन्ततः उन्होंने उन्हें तीर की ओर आते तो देखा था, लेकिन उम्मीद यह थी कि वे आधी रात के कुछ ही पहले तीर पर पहुच पायेंगे।

अब तक आदिवासी लडके वहां पहुँच चुके थे, इसलिए हम लोगों ने उन्हें अपने घोडे दे दिये और जब हमने उन्हे सकुशल वापस होते देख लिया तब एक नाव के लिए गुहार लगाई और जहाज पर पहुँच गए। इस तरह समुद्र तट पर हमारी छुट्टी का पहला दिन खत्म हुआ। हम लोग थक गए थे, लेकिन हमें मजा बहुत आया था और अब हम लोग अपने पुराने कामों पर अधिक तत्परता से जुट सकते थे। आधी रात के लगभग अपने दो साथियों के कारण हमारी नींद टूट गई जो बहुत जोर से झगडते हुए जहाज पर आए थे। ऐसा लगता था कि वे एक ही घोडे पर दुहरी सवारी करके वापस चले थे, और दोनों अपने गिरने का दोष दूसरे के सिर मढ रहे थे। खैर वे दोनों जल्द ही बिस्तर पर पड रहे और सो गए और सम्भवतः इस झगडे को बिल्कुल भूल ही गए, क्योंकि दूसरे दिन सुबह को यह झगडा फिर से शुरू नही हुआ।

* * *

अध्याय—१७

सोने के बाद हमारी नीद "सभी मल्लाह ऊपर आओ !" की आवाज सुन कर ही टूटी। हमने मोखे की ओर देखा तो पाया कि धूप निकल आई है। हमारी आजादी सचमुच हवा हो चुकी थी, और इसके साथ ही हम लोगों ने अपने जूते, मोजे, नीले जैकेट, रुमाल तथा तीर पर जाने के समय पहनी जाने वाली दूसरी चीजें उतारी और नाविकों की पतलून, लाल कमीज, स्काच टोपी पहन कर हम खालों को निकालने और किनारे पर पहुँचाने के काम में जुट गये।

तीन दिन तक हम लोग सुबह के धुंधलके से लेकर शाम को तारे निकलने तक जी जान से काम पर लगे रहे। इस बीच हम लोगों को अगर कभी फुरसत मिलती तो वह थी दोपहर का खाना खाने की छोटी-सी छुट्टी।

खालों को तीर पर पहुँचाने और जहाज पर चढाने की दृष्टि से सैन डियागो निश्चय ही कैलिफोर्निया का सबसे अच्छा स्थान है। बन्दरगाह छोटा है और ज़मीन

श्रौर स्थल से घिरा है। यहां भग्नोमिया नही हैं। जहाज तट से एक केबिल की दूरी के अन्दर ही लगर डाल लेते हैं। खुद किनारा भी चिकना श्रौर सख्त बालू का बना हुआ है जिस पर न कोई पत्थर है न चट्टान। इन कारणों से सभी व्यापारी जहाज इसका इस्तेमाल डिपो की तरह करते हैं, श्रौर सचमुच वापसी के समय लदे हुए जहाज पर किसी खुले बन्दरगाह से तैयार खालो को बिना भग्नो मयों में भिगोए चढा पाना असम्भव सा हैं, श्रौर भीग जाने से खालों के एकदम बर्बाद हो जाने का अन्देशा रहता है।

हमने खालो के एक गोदाम पर कब्जा जमाया, जो हमारी फर्म का था श्रौर जिसका इस्तेमाल "कैलिफोर्निया" जहाज भी करता था। इसमें चालीस हजार खालों के अटने की जगह थी, श्रौर हम लोगों को तट छोडने के पहले इसे भर देना था। अब तक जो साढे तीन हजार खालें हम लोग लाये थे उनसे कोई बात बनती नही नजर आती थी। जहाज का कोई भी ऐसा आदमी नही था, जो गोदाम में एक दर्जन बार न गया हो श्रौर जिसने गोदाम में इधर-उधर निगाह न दौडा कर यह अन्दाज न लगाया हो कि इसे भरने में कितना समय लगेगा।

चूंकि जहाज से जो खालें उतारी जाती हैं वे कच्ची श्रौर सख्त होती हैं इसलिए गोदाम के बाहर ही इनकी ढेरी लगा दी जाती है जहां उन्हें सिझाने, सुखाने व साफ करने के नियमित क्रम से गुजरना होता है श्रौर फिर जहाज पर चढ़ाने के लिए एकदम तैयार हालत में उन्हे गोदाम में भरा जाता है। यह तैयारी इसलिए जरूरी होती है कि लम्बी यात्रा के बीच श्रौर गर्म प्रदेशों से गुजरते हुए चमडा खराब न होने पाए। इन खालों की तैयारी श्रौर देखभाल के लिए हर जहाज का एक अफसर श्रौर कुछ मल्लाह अक्सर समुद्र तट पर ही छोड दिए जाते हैं; श्रौर अब आकर हमें पता चला कि हमारे नये अफसर को इसी काम के लिए नियुक्त किया गया था। जैसे ही खालें उतारी गयी उसने गोदाम का चार्ज ले लिया श्रौर कप्तान ने हममें से दो तीन को वही छोडने श्रौर हमारी जगह सैंड-विच द्वीप के निवासियो को पन्द्रह डालर माहवार तक देने को कहा लेकिन कोई आदमी जहाज पर जाने के लिए राजी नही हुआ; क्योकि कोड़े लगने की घटना की खबर चारो श्रौर फैल गई थी श्रौर वे लोग उसे आउल माइकाइ (निकृष्ट) कहने लगे थे। इस तरह यह बात खतम हो गयी। बहरहाल, वे किनारे पर काम करने के लिए तैयार थे श्रौर उनमें से चार को भाड़े पर रखा गया श्रौर खालों की

तैयारी के लिए रसेल महोदय के साथ छोड दिया गया ।

सारी खालें उतार लेने के बाद, हम लोगो ने अपने सारे फालतू डन्डे, रस्सियाँ पाल और वह सारा असबाब भी जिसे हम प्रतिवात दिशा के इस एक चक्कर के दौरान इस्तेमाल नही करना चाहते थे तीर पर भेज दिया । और सच कहे तो हम जितना सामान उतार सकते थे, हमने वह सब उतार दिया ताकि चमडा लादने के लिए जगह बनाई जा सके । दूसरी चीजों के साथ सूअरों का बाडा और उसके साथ ही "बूढ़ी बेस" को भी उतार दिया गया । इस बूढी सुअरिया को हम बोस्टन से लाये थे और केपहार्न पर दूसरे सारे सूअर तो ठन्ड खाकर और भीगकर मर गए थे लेकिन यह बच रही थो । रिपोर्ट मे पता चलता है कि वह दूसरी कुछ यात्राओ में भी रही थी । वह रास्ते भर रसोइये की लाडली रही थी, और उसने उम्दा से उम्द चीजें खिलाकर इसे पाला था और अपनी आवाज पहचानना तथा अपने दिलबहलाव के लिए कई दूसरे विचित्र तमाशे करना सिखाया था ।

टाम क्रिगल का कहना है कि नीग्रो सूअरो को कितना प्यार करते हैं इसकी थाह पाना असंभव है; और मैं समझता हूँ कि उसका कहना सच है क्य कि जब उस बेचारे "नीग्रो" ने सुना कि बेस को किनारे पर उतारा जाने वाला है और पूरी यात्रा के दौरान उसे उसकी देखभाल करने का मौका नही मिलेगा तो उसका तो दिल ही टूट गया । तट से समुद्र और समुद्र से तट की ओर लम्बी यात्रायें करने के दौरान, उसके लिए सान्त्वना की वही एक चीज़ थी ।

"चाहे मालिक टूट जायें, फिर भी हुकुम तो बजाना ही होगा !" उसने कहा । वह कहना चाहता था, "चाहे दिल टूट जाये", और जब सुअरिया को नाव पर चढाया जाने लगा तब उसने भी अपना हाथ लगाया ताकि वह ज्यादा से ज्यादा आराम से चढ सके । हमें मुख्य यार्ड में एक गरारी और रस्सी वाला यत्र मिल गया और उसके शरीर के चारों ओर एक पट्टी बाँध कर और उसमें एक हुक लगा कर हमने उसे टाँग लिया और एक दूसरे को आँख से इशारा देते हुए उसे यार्ड तक ले गये । "बस, बस ।" मालिम ने कहा, "यह झूला झुलाना बन्द करो । इसे नीचे उतारो ।" लेकिन इतना स्पष्ट था, कि उसे इस मज़ाक में रस आया था । सुअरिया इतने जोर से चिचियाई मानो "आसमान फटा पड रहा हो", और बेचारे नीग्रो की आँखों से आंसू आ गए, और वह गूंगे जानवर पर तरस न खाने के बारे में कुछ बडबड़ाया । "गूंगा जानवर । अगर इसे ही तुम

गूंगा जानवर कहते हो, तब तो मेरी आँखें मल्लाह की आंखें नहीं हैं।" जैक ने कहा। इसे सुनकर रसोइये को छोडकर हर आदमी हंस पडा। वह उसे नाव पर सकुशल चढाने में ही तल्लीन था। तट पर ले जाये जाते समय रास्ते भर वह आख गडाए उसे ही देखता रहा। तीर पर उतारे जाने के बाद उसका स्वागत उसकी जाति के एक पूरे दल ने किया, जिन्हें दूसरे जहाजो से उतारा गया था, और जिनकी सख्या बढकर कई गुना हो गई थी और जिन्होंने अपना एक बडा सा साम्राज्य कायम कर लिया था।

रसोई के दरवाजे से, रसोइया सूअरो को लडते झगडते देखता रहता और जब कच्चे चमडे के टुकड़े या समुद्र के किनारे इधर उधर पडी हुई बोटी लगी हड्डियो के लिए होने वाली भिडन्त मे बेस जीत जाती तो जोर से चीख उठता और तालिया बजाने लगता। दिन में उसने तमाम अच्छी-अच्छी चीजें बचा कर रखा और उन्हे टोकरी में भर कर हम लोगों से उसे छोटी नाव में रखकर तीर पर पहुँचाने का अनुरोध करने लगा और जब मालिम ने कहा कि अगर उसने इसमें से कुछ भी नाव मे जाते देखा तो वह पहले टोकरी को समुद्र मे फेंकेगा और उसके बाद रसोइये को भी फेंक देगा, तो वह बिल्कुल बेचैन सा दिखाई देने लगा।

हम लोगों ने उससे कहा कि वह उस सुअरिया के बारे में अपनी बीबी से भी अधिक सोचता है जो राबिन्सन ऐली में रहती है; और निश्चय ही वह उसका ध्यान इससे अधिक ध्यान शायद ही रख पाता, क्योकि कई रातो में, अधेरा हो जाने के बाद, जब वह समझता कि उसे कोई देख नही सकता, तब एक छोटी सी नाव में बैठकर डाड मारता हुआ अच्छे पकवानो से भरी एक बाल्टी लेकर वह किनारे पर जाता था और जैसे यूनानी पुराण कथा का नायक अपनी प्रेमिका से मिलकर रात के अंधेरे मे हैलेसपोट की खाडी को तैरकर लौटता था वैसे ही वह भी वापस आता था।

दूसरे रविवार को हमारी दूसरी टोली के नाविक छुट्टी मनाने तीर पर गए और हम लोग समुद्र के किनारे पडने वाली पहली शान्त इतवार को मनाने के लिए जहाज पर छूट रहे। यहां न तो खालें लदनी थी, न दक्षिणी-पूर्वी झंझा का डर था। हम लोगों ने सुबह को अपने कपडे धोए और उनकी मरम्मत की, शेष दिन को हमने लिखने-पढने में गुजारा। हममें से कई ने "लैगोडा" जहाज से घर भेजने के लिए चिठ्ठियां लिखी।

बारह बजे "आयाकुचो" ने अपने अगले शिखरपाल गिरा दिये, जो उसके रवाना होने का संकेत था। उसने अपना लगर उठाया और मुडकर खाडी के गासे की ओर चल पडा जहाँ से वह अपनी यात्रा पर रवाना हो गया। इस दौरान उसके नाविक दम लगा कर बेलन-चरखी पर काम करते रहे और मैं लगभग एक घन्टे तक सैंडविच द्वीप के महन्ना नाम के एक निवासी का संगीतमय सुर सुनता रहा।

जब मल्लाह चर्खी पर काम करते हैं तो उनके साथ एक आदमी हमेशा गाता रहता है ताकि वे एक साथ दम लगा सकें। गाने वाले का सुर विचित्र, ऊंचा और लम्बा होता है तथा चर्खी की स्थिति के अनुसार बदलता रहता है। इसके लिए ऊची आवाज, मजबूत फेफडो, और प्रचुर अभ्यास की जरूरत पडती है। इस आदमी का सुर बडा विचित्र और ऊचा था जो बीच-बीच में भाय-भाय बनकर रह जाता था। मल्लाहो का ख्याल था कि उसका सुर बहुत ऊचा था और उसमें बोसुन जैसी कर्कशता नही थी, लेकिन मुझे वह बहुत सुन्दर लगा। बन्दरगाह बिल्कुल खामोश था, और उसकी आवाज पहाडियों के बीच इस तरह गूंज रही थी, जैसे इसे मीलो दूर से भी सुना जा सकता हो।

सूर्यास्त के कुछ पहले समीर चल पडा और उसके साथ ही "आयाकुचो" भी अपने लम्बे नुकीले मोरो से बडी शान से पानी को चीरता हुआ चल पडा। कुछ ही देर में वह बन्दरगाह से बाहर निकल गया और वहा से दक्षिण की ओर चला गया। उसे कैलाओ जाना था, वहा से सैंडविच द्वीपसमूह और फिर आठ या दस माह में उसे फिर तट पर लौट आना था।

हफ्ते के अन्त तक हम लोग भी यात्रा पर चलने के लिए तैयार हो गए, लेकिन एफ—, के जो पहले हमारा दूसरा मालिम था और जिसे अपदस्थ करने के बाद अगवाड में भेज दिया गया था, भाग जाने से, हमें एक दो दिन और रुकना पड़ा। जब से उसे निकाला गया था, जहाज पर उसकी हालत कुत्ते से भी बदतर हो गई थी और उसने मौका हाथ आते ही भाग निकलने की ठान रखी थी। वह पक्का नाविक भी न बन पाया था, तभी से एक अफसर की हैसियत से काम करने के कारण, मल्लाहो में से कोई उससे जरा भी सहानुभूति नहीं रखता था और उसमें इतनी हिम्मत नही थी कि वह उनके बीच खडा भी रह सके।

कप्तान उसे "निठल्ला" कह कर पुकारता था और कसमें खाकर कहता था

कि वह उसे बुरी तरह रौंद देगा और जब कोई अफ़सर किसी को रौंदने के लिए कमर कस लेता है तो समझो अब उसका कोई बचाव नही। कप्तान उसे बात-बात पर परेशान करता रहता था और जब उसने "लेगोडा" जहाज़ से घर जाने की इजाजत माँगी तो कप्तान ने उसे भी नामन्ज़ूर कर दिया।

एक दिन वह समुद्र-तट पर एक अफ़सर के साथ गुस्ताखी से पेश आया और उसने नाव में बैठ कर जहाज पर आने से इनकार कर दिया। उसकी शिकायत कप्तान से की गई और ज्योंही वह जहाज पर आया—इस समय तक उसके हाजिर होने का समय बीत चुका था—उसे जहाज के पिछले भाग में बुलाया गया और उसे बताया गया कि उसके कोडे लगाये जायेंगे। यह सुनते ही वह जहाज के डेक पर यह चिल्लाते हुए गिर पड़ा—"कप्तान टी—मुझे कोडे मत लगवाइये, कोडे मत लगवाइये!" और कप्तान ने उससे गुस्सा होकर और उसकी कायरता से खीझ कर उसकी पीठ पर एक रस्सी के सिरे से एक-दो सडाके लगाये और उसे आगे भेज दिया। उसे ज्यादे चोट नही आई थी, लेकिन वह डर बहुत गया था और उसने उसी रात भाग निकलने का निश्चय कर लिया।

इसका इन्तजाम उसने इतनी अच्छी तरह किया जितनी अच्छी तरह अपने जीवन में उसने और कुछ नही किया होगा, और इस बार उसने सचमुच साहस और दूरदर्शिता का परिचय दिया। उसने अपना बिस्तर और तोशक तो "लेगोडा" के एक नाविक को दे दिया, जो उसे इस तरह अपने जहाज पर लेकर गया जैसे वह कोई चीज खरीद कर लाया हो और इसे उसके लिए रखे रखने का वायदा किया। फिर उसने अपना सन्दूक खोला, और अपने सारे कीमती कपडों को किर-मिच के एक झोले मे रख दिया और हम में से पहरे वाले मल्लाह से कहा कि उसे आधी रात के समय पुकार ले। आधी रात को डेक पर आ कर और डेक पर किसी अफ़सर को न पाकर, और पिछले हिस्से में भी खामोशी छाई देखकर, उसने अपना झोला एक नाव मे उतार दिया और खुद भी बडे आहिस्ते से उसमें उतर गया, और नाव के अगले भाग मे बधी रस्सी को खोल दिया और आवाज के परे पहुँचने तक नाव को ज्वार मे खामोशी से बहने दिया, और अन्त मे डाँड मार कर तीर पर पहुँच गया।

दूसरे दिन जब सभी मल्लाह इकट्ठा हुए तब एफ़—का पता लगाने के लिए बडा कोहराम मचा। हम लोग निश्चय ही कुछ बताने वाले नही थे और वे केवल

इतना ही पता लगा सके कि वह अपने पीछे एक खाली पेटी छोड गया है, और यह कि वह नाव से भाग कर गया है, क्योंकि नाव किनारे पर सूखी पडी थी।

नाश्ते के बाद कप्तान शहर गया और वहा उसने उसे पकडने वाले को बीस डालर का इनाम देने की घोषणा की और दो दिन तक ऐसे सभी सिपाही, आदि-वासी और दूसरे लोग जिनके पास कोई दूसरा काम नही था, उसे ढूंढ़ निकालने के लिए घोडे पर सवार उस इलाके को छानते रहे, लेकिन सब बेकार रहा, क्योंकि उसे इस बीच, चमडे के गोदाम मे पचास ही लट्ठे की दूरी पर अच्छी तरह छिपा कर रखा गया था।

किनारे पर पहुँचते ही वह सीधा "लैगोडा" के खालो के गोदाम पर उसके कुछ मल्लाहो के पास पहुँचा, जो किनारे पर रह रहे थे, उन्होने 'पिलग्रिम" के रवाना होने तक उसे और उसके सामान को छिपाए रखने, और फिर कप्तान ब्राडशा से कह सुन कर उसे "लैगोडा" में ले चलने का वायदा किया।

खालो के गोदामो के ठीक पीछे झाड-झखाड के बीच एक छोटी सी गुफा थी, जिसमें घुसने का रास्ता तीर पर रहने वाले केवल दो आदमियो को मालूम था, और जो इतनी गुप्त थी कि, हालांकि जब मैं किनारे रहने को आया था, यह मुझे दो तीन बार दिखायी गयी फिर भी मैं उसे अकेले कभी नही ढूंढ़ पाया। पौ फटने के पहले ही उसे इस गुफा में पहुँचा दिया गया था और रोटी व पानी दे दिया गया था, और वह तब तक वहा रहा जब तक कि उसने हम लोगो के जहाज को रवाना होते और खाडी के बाहर मुडते नही देख लिया।

शुक्रवार, सत्ताईस मार्च। कप्तान ने एफ—को ढूंढ पाने की सारी आशा छोड देने के बाद, अब अधिक रुकना बेकार समझ कर, जहाज को खोलने का हुक्म दिया और हम लोगो ने पाल ताने, और ज्वार तथा हल्की हवा के साथ धीरे धीरे जहाज को खाड़ी की ओर बढा दिया। हम लोगो ने कप्तान ब्राडशा को अपने खत बोस्टन ले जाने को द दिये और उससे यह सुन कर हमे सन्तोष हुआ कि हम लोगो के तट से रवाना होने के पहले ही सम्भवत वह वापस भी आ जाएगा।

पाइन्ट पार करते ही हवा, जो पहले बहुत मन्द थी, अब बिल्कुल बन्द हो गई और दो दिन तक हमारे जहाज की प्रगति रुकी रही, इस पूरे समय में हम लोग तीन मील से अधिक नही बढ पाए, और दूसरे दिन के कुछ समय तक बन्दरगाह के जहाजों पर से हमारा जहाज देखा जा सकता था। तीसरे दिन लहरें उठाता

और पानी के तल को धूमिल करता हुआ ठन्डा समुद्री समीर बह निकला और सूर्यास्त तक हम लोग सैन्टजुआन से आगे निकल गए जो सैन डियागो से चालीस मील दूर है, और जिसे सैन पेड्रो के बीच का मुकाम कहा जाता है, जहाँ हमें जाना था।

अब तक हमारी नाविक शक्ति काफी क्षीण पड गयी थी। एक नाविक को तो हमने जहाज पर ही खो दिया था, दूसरे को क्लर्क बना दिया गया था, और एक तीसरा भाग खडा हुआ था, इस तरह एस—को और मुझे छोडकर केवल तीन ही योग्य नाविक रह गए थे। उनके अलावा एक बारह वर्ष का लडका भी था। इस घटे हुए और असन्तुष्ट नाविक-दल के साथ और एक छोटे से जहाज में, हमें दो वर्षों तक चौकसी रखने के मुश्किल काम से जूझते रहना था, लेकिन फिर भी कोई मल्लाह ऐसा नहीं था जो इस बात से खुश नही था कि एफ—भाग खडा हुआ; क्योंकि यद्यपि वह अनाडी और बेकार नाविक था लेकिन यह कोई नही चाहता था कि वह इसी तरह दबा हुआ और डरा हुआ रहकर यह नारकीय जीवन बिताये। और, दो महीने बाद सैन डियागो लौटने पर जब हम लोगो ने सुना कि उसे तत्काल "लेगोडा" में चढा लिया गया था और वह एक नियमित मल्लाह के वेतन पर उसमें बैठकर घर चला गया, तो हमें बहुत खुशी हुई।

पाच दिन तक धीमी गति से चलने के बाद बुधवार के दिन पहली अप्रैल को हम लोग अपने नियत स्थान सैन पेड्रो पहुँच गए। खाडी उतनी ही उपेक्षित पडी थी और उतनी ही सुनसान मालूम हो रही थी जितनी पहले मालूम हुई थी। इसके मुकाबले सैन डियागो की खाडी कही सुरक्षित और शान्त थी। इसके अलावा वहा चार-चार जहाज थे जिन्हे भरने और खाली करने की क्रियाओं ने उस दृश्य को गति और रुचिरता प्रदान कर दी थी। इस दृश्य की तुलना में सैन पेड्रो की खाडी हमें बुरी ही लगी।

कुछ ही दिनों में धीरे-धीरे खालें आने लगी और हम लोग माल को लुढकाते हुए ऊपर पहाडी पर चढाने, खालें नीचे लुढकाने और नावों को तीर पर और वहां से जहाज पर रखने के कामो में लग गये।

जब तक हम लोग वहाँ रहे कोई खास बात नही हुई; अलावा इस बात के कि दक्षिणी-पूर्वी झंझा ने जिस दो मस्तूलों वाले मैक्सिको के जहाज को तीर से ला टकराया था और जो अब चट्टानी और रेतीले तीर पर पडा था उसकी मरम्मत

की कोशिश की गयी। हमारे बढई ने उसका मुआयना किया और यह ऐलान किया कि उसकी मरम्मत की जा सकती है, और चन्द दिनों में ही उसके मालिक प्यूब्लो से आए, और बसन्तकालीन ऊचे ज्वार का इन्तजार करने के बाद हमारे रस्सों, लंगरों और मल्लाहों की मदद से कई बार कोशिश करने के बाद उसे समुद्र में लाया गया।

किनारे के खालों के गोदाम के तीन आदमी, जो पहले उसके नाविक थे, अब उस पर आ गए और समुद्र तट से दूर ह पाने की संभावना पर काफी खुश मालूम हुए।

हमारे अपने जलयान पर हर काम उसी एकरस ढंग से चलता रहा। कोड़े लगने की घटना के तत्काल बाद जो उत्तेजना फैली थी वह तो खत्म हो गई थी, लेकिन नाविकों पर, और खास करके उन दोनों आदमियों पर, इसका असर अभी तक बना था। दोनो व्यक्तियों पर उन दोनो के अलग-अलग स्वभाव के अनुसार जो अलग-अलग ढग का जो असर हुआ था वह कम विलक्षण नही था। जान एक विदेशी था और स्वभाव का उग्र था, और जैसा कि किसी भिडन्त का भयानक दुष्परिणाम भोगने के बाद किसी भी आदमी के साथ स्वाभाविक था, यद्यपि उसका मान भंग हो गया था, फिर भी उसकी प्रमुख भावना क्रोध की थी; और वह कहता था कि अगर कभी भी उसे बोस्टन पहुँचने का मौका मिला तो वह अपना बदला जरूर चुकायेगा तभी उसे सन्तोष मिलेगा। लेकिन दूसरे आदमी के साथ बात बिल्कुल दूसरी थी। वह अमरीकी था और कुछ शिक्षित भी था, और इस घटना ने उसे बिल्कुल तोड ही दिया था।

उसका जो घोर अपमान किया गया था वह उसके मन पर छाया हुआ था, जिसको महसूस करने में दूसरा असमर्थ था। इसके पहले वह अक्सर मजाक किया करता था; और नीग्रो लोगों के बारे में विचित्र-विचित्र कहानियाँ सुनाकर हम सबका दिल-बहलाव किया करता था—(वह एक गुलाम राज्य का रहने वाला था); लेकिन बाद में वह बहुत कम मौको पर ही मुस्कराता था, और लगता था उसकी सारी जिन्दादिली और शोखी खत्म हो गई है, उसकी केवल एक ही इच्छा रह गयी थी और वह यह कि यह यात्रा किसी तरह खत्म हो। मैंने अक्सर उसे एकांत में लम्बी आहें भरते देखा था, और वह जान की तुष्टि या प्रतिशोध की योजनाओं में कोई रुचि नही लेता था।

फिर हम लोगो को नाव के पिछले हिस्से में बैठाकर किनारे पहुँचा दिया गया और सूर्यास्त तक समुद्र तट पर लौट आने का हुक्म दे दिया गया। तीरं से हम लोग कस्बे की ओर चल पडे।

वहां हर ओर छुट्टी का माहौल था। लोग अपने उम्दा से उम्दा कपडे पहने हुए थे; पुरुष घोडो पर चढकर मकानो के आसपास घूम रहे थे और औरतें दरवाजों के सामने चटाइयो पर बैठी हुई थी। एक पल्पेरिया के दालान के नीचे दो आदमी फीतों, झालरो और फूलो के गुच्छों से सजे हुए बैठे थे और वायलिन तथा स्पेनी गिटार बजा रहे थे। मोटेरी में मैंने दमामे और बिगुल जरूर देखे थे, लेकिन उसके अलावा मैंने सपूर्ण कैलिफोर्निया में वायलिन और स्पेनी गिटार के अलावा कोई साज नही देखा। और मेरा ख्याल है वे इनके अलावा दूसरा कोई साज बजाते भी नही, क्योकि बाद मे, मै एक बहुत बडे फैंडैंगो में शामिल हुआ, जिसमें उन्होने वे सारे बाजे जुटाने का प्रयत्न किया जो उन्हे मिल सकते थे, लेकिन फिर भी उसमे तीन वायलिन और दो गिटारो को छोडकर दूसरा कोई वाद्य यंत्र नही था।

चूंकि दोपहर के ससय नृत्य का आनन्द नही लिया जा सकता था। और लोगों का कहना था कि एकाध घन्टे में ही देहात से एक साड आनेवाला है जिसे दुर्ग वाले चौक में बाधकर उस पर कुत्ते छोडे जायेंगे, इसलिए यह सुनकर हम लोग मकानों के आसपास मटरगश्ती करने लगे। एक अमरीकी के बारे मे पूछताछ करने पर, जिसके बारे में हमें बताया गया था कि उसने कही शादी कर ली है, और एक दूकान कर रखी है, हमें एक लम्ब नीची इमारत दिखायी गयी, जिसके सिरे पर एक दरवाजा था और उस पर स्पेनी में एक साइनबोर्ड लगा था।

दूकान के भीतर पहुँचने पर हमे वहाँ कोई नही मिला और पूरी दूकान सूनी और वीरान-सी लग रही थी। कुछ मिनटो में वह दूकानदार निकलकर आया और हम लोगों से इस बात के लिए क्षमा-याचना करने लगा कि उसके पास हम लोगों के लिए कुछ नही है, क्योकि पिछली रात उसके मकान पर एक फैंडैंगो का आयोजन हुआ था और लोगो ने सारी चीजें खा-पी डाली थीं।

"ओह! ईस्टर की छुट्टी!" मैंने कहा।

"नही! मेरी एक छोटी सी लड़की थी जो पिछले दिन मर गयी थी, और इस देश का यही रिवाज है!" उसने अपने चेहरे पर एक विचित्र भाव लाते हुए कहा।

इसपर मुझे बडी हैरानी हुई और मैं यह निश्चय न कर सका कि इससे क्या कहना चाहिए, इसे सान्त्वना देनी चाहिए या नहो ? मैं लौटने ही लगा था कि उसने बगल का एक दरवाजा खोला और हमसे भीतर आने को कहा । यहा भी मुझे कम अचम्भा नही हुआ; क्योंकि अदर पहुचकर हमने देखा एक बडे कमरे मे तीन-चार वर्ष से लेकर चौदह-पन्द्रह वर्ष की उम्र की लडकिया बैठो हैं । उन सबने एकदम सफेद कपडे पहन रखे थे और उनके सिरो पर फूलो के गजरे और हाथो मे फूलो के गुच्छे थे ।

इन लडकियो के बीच से होते हुए, जो बडे उत्साह से खेल रही थी, हम लोग उस आदमी के पीछे कमरे के अन्त मे रखी एक मेज के पास पहुँचे जिसपर सफेद मेजपोश बिछा था और उसके ऊपर लगभग तीन फुट लम्बा एक ताबूत रखा था जिसमे उसकी बच्ची का शव था । ताबूत के ऊपर सफेद कपड़े का और भीतर सफेद साटन का अस्तर लगा था और उस पर फूल बिखरे हुए थे ।

एक खुले दरवाजे से हमने दूसरे कमरे में साधारण पोशाक मे कुछ प्रौढ़ व्यक्तियो को देखा; जबकि एक कोने में फेंकी हुई बेंचे और मेजें तथा रंगी हुई दीवारें पिछली रात के रंगारग उत्सव का स्पष्ट संकेत दे रही थी ।

गेरिक की भाति मैं भी अपने को कामडी और त्रासदी उद्देश्यहीनता और बेढगेपन की स्थिति के बीच पा रहा था । अतत: मैंने उस आदमी से पूछा कि बच्ची को दफनाया कब जायेगा ? और यह बताये जाने पर कि शव-यात्रा लगभग एक घन्टे में मिशन की ओर प्रारंभ होगी, हम लोगों ने विदा ली ।

समय बिताने के लिए हम लोगो ने घोडे लिये और उन पर चढकर समुद्र के किनारे आये, जहाँ हमने तीन या चार इटालियन नाविको को घोड़े पर चढकर कडी बालू पर बहुत तेज रफ्तार से इधर से उधर घोडा दौडाते पाया । हम लोग भी उनमें शरीक हो गये और यह एक अच्छा-खासा खेल मालूम हुआ । समुद्र तट पर एक मील या इससे अधिक का ही कुछ फैलाव था और घोडे चिकनी बलुई चट्टान पर समुद्र की नमकीन हवा और लहरों की निरन्तर दहाड़ और किनारे से टकराती हुई लहरो से पुष्ट और उत्तेजित होकर उड से रहे थे ।

किनारे मे हम लोग नगर को लौटे और यह पाकर कि शव यात्रा का जुलूस चल चुका है, घोडो पर चढकर आगे बढे और मिशन के आधे रास्ते मे ही इसे पकड लिया । यहा भी उतना ही विचित्र दृश्य उपस्थित था जितना हम लोगो ने

उसके मकान पर देखा था। मैंने सोचा शव यात्रा का यह जुलूस भी खूब है और मातम वाला वह घर भी खूब था।

उस छोटे से ताबूत को आठ लडकियों ने उठा रखा था। थोडी-थोड़ी देर बाद जुलूस से दूसरी लडकिया दौडकर आगे आती थी और उनका स्थान लेकर उन्हे छुडा देती थी। इसके पीछे पहले की भाति सफेद कपडो और फूलो से सजी हुई लडकियां एक बिखरे-से गोल में चल रही थी और उनकी सख्या को देखते हुए मेरा ख्याल है कि उस जगह की पाँच से पन्द्रह वर्ष की सभी लडकियाँ उस जुलूस मे सम्मिलित थी। राह चलते हुए वे खेलती जाती थी और एकाएक रुकती और फिर किसी से बात करने या फूल चुनने को दौड पड़ती थी और फिर दौड़कर ताबूत को सभाल लेती थी।

कुछ प्रौढ महिलाए भी सामान्य कपड़े पहने थी और पैदल या सवार जवानो और लडको का एक जत्था उनके पीछे या अगल बगल चल रहा था जो रह-रहकर मजाक या सवालो से उन्हे छेडता चलता था।

लेकिन सबसे विचित्र बात यह थी कि दो आदमी अपने हाथ मे बन्दूकें लिये हुए ताबूत के दोनो ओर चल रहे थे जिन्हे वे लगातार भरते और हवा मे दागते चलते थे। मैं कह नही सकता कि यह आयोजन भूत—बाधा को दूर रखने के लिए था या किसी और वजह से। कम से कम मैं इसकी व्याख्या इसी तरह कर सका।

जब हम लोग मिशन के पास पहुँचे तो देखा कि उसका फाटक बिल्कुल खुला हुआ है और पादरी एक हाथ मे सलीब लिये सीढ़ियो पर खडा है। मिशन बडा और उपेक्षित जैसा लग रहा था। उसकी बाहरी इमारत गिरने-गिरने को थी और हर चीज से नष्टप्राय गौरव की झलक मिल रही थी। गिरजा के दरवाजे के सामने एक बड़े से पत्थर के फौवारे के चार मुहों से एक कुन्ड मे शुद्ध पानी झर रहा था और हम लोग अपने घोडो को उसमे पानी पीने के लिए छोडने ही वाले थे कि सहसा हमें यह सूझा कि हो सकता है कि यह जल पवित्र हो और हमने अपना इरादा बदल दिया।

ठीक इसी क्षण घन्टिया अपनी तीखी बेसुरी धुन में टनटना उठी और जुलूस चौक में दाखिल हुआ। मैं जुलूस के साथ जाने और संस्कार को देखने के लिए उत्सुक था, लेकिन हमारे साथियों में से एक का घोड़ा भड़क उठा था, और अपने

सवार को फेंक कर शहर की ओर भागने लगा था कि उसकी जीन में, जो सरक गयी थी, उसका एक पैर फंस गया और वह उसे तेजी से खीचता और उसकी धज्जिया उड़ाता आगे बढ़ा जा रहा था।

यह सोच कर कि मेरा साथी स्पेनी का एक शब्द भी नही बोल सकता, और इस भय से कि वह मुसीबत मे न पड जाये, मैं सत्कार को छोड़ कर उसके घोड़े का पीछा करने को बाध्य हो गया। मैंने शीघ्र ही उसे पकड़ लिया। वह घोड़े को गालिया देते हुए लंगडा कर चल रहा था और उसने सडक पर पड़े जीन के टुकड़े इकट्ठे कर लिये थे।

घोड़े के मालिक के पास जाकर हम लोगो ने उसके साथ समझौता कर लिया और उसकी उदारता देख कर हम अचरज में पड गये। जीन के सारे टुकडे मिल गये थे और चू कि उनकी मरम्मत हो सकती थी, इसलिए वह छः रीयल लेकर ही सतुष्ट हो गया। हमने सोचा था कि इसके लिए हमें कई डालर देने पडेंगे। हमने घोडे की ओर इशारा किया जो पहाड की आधी चढाई पार कर गया था, लेकिन उसने "कोई बात नही" कह कर अपना सिर हिलाया। उसने हमें बताया कि उसके पास बहुत-सारे घोडे हैं।

शहर मे वापस आकर हमने मुख्य पल्पेरिया के सामने वाले चौक मे बहुत बडी भीड जुडी देखी, और वहा पहुच कर पाया कि ये सभी लोग—पुरुष, स्त्रिया और बच्चे—एक जोडी छोटे मुर्गों के कारण यहा इकट्ठे हुए हैं। मुर्गे पूरे जोश से एक दूसरे पर वार कर रहे थे और लोग हसते और चिल्लाते हुए इतने उत्सुक मालूम हो रहे थे मानो लडाके इन्सान हों।

साड के बारे में निराशा ही हाथ लगी, वह अपना रस्सा तुडा कर भाग खडा हुआ था, और अब इतना बिलम्ब हो चुका था कि दूसरा सांड लाया ही नही जा सकता था। इसलिए लोग अब मुर्गों की लडाई से ही सन्तोष करने को बाध्य थे। एक मुर्गे के सिर पर चोट लग गयी और उसकी एक आँख बाहर निकल आयी। उसने हार मान ली, फिर दो बहुत बडे-बडे लडाकू मुर्गे लाये गये। इन्ही के लिए यह सारा तमाशा खडा किया गया था, दोनो छोटे मुर्गे तो लोगो को इकट्ठा करने के लिए और लडाई का समाँ बाधने के लिए लडाये गये थे।

दो आदमी, जो अपनी बाहों में मुर्गों को पकडे हुए मैदान में आये—उन्हें खुनका देते हुए और दोनो मुर्गों को लड़ने के लिए उत्साहित करते रहे। ऊंची-ऊंची

बाजिया लगने लगी और अधिकाश दूसरी लडाइयो की तरह कुछ देर तक कोई फैसला नही हो सका । इन दोनो ने बहुत चुस्ती दिखायी और वे उससे अधिक अच्छा और ज्यादा देर तक लडे—जैसे और जितनी देर तक उनके मालिक लडे होते ।

अन्त मे सफेद मुर्गा जीता या लाल, यह मुझे याद नहीं, लेकिन जो भी जीता, वह बडे गर्व से "मै आया, मैने देखा, मैने फतह किया" के अन्दाज में अकडता हुआ एक ओर चल दिया और दूसरा चारो खाने चित्त पडा कराहता रहा ।

इस मामले के तै हो जाने के बाद हम लोगो ने घुडदौड के बारे मे कुछ बातें होती सुनी, और लोगो को एक दिशा मे बढते देख कर हम भी उनके पीछे लग गये और एक समतल मैदान मे आ निकले जो शहर के ठीक बाहर था और जिसका इस्तेमाल घुडदौड के मैदान के रूप मे होता था । यहा भीड फिर जम गयी, जमीन पर निशान बनाये गये, निर्णायको को नियुक्त कर दिया गया और घोडो को एक छोर पर ले जाया गया ।

दो बूढे भद्रपुरुषो ने, जो देखने मे सुन्दर थे और जिन्हे लोग डान कार्लोस और डान डोमिंगो के नाम से पुकार रहे थे, बाजियाँ बदी और सब कुछ तैयार था । हम लोग कुछ देर तक इन्तजार करते रहे, इस बीच हम सिर्फ घोडों को अपनी गरदनें इधर उधर ऐंठते और मुडते देखते रहे । आखिरकार लाइनों के पास जोर की एक आवाज सुनायी दी, और वे आगे बढ़े—उनके सिर आगे को तने हुए थे और आखें थिरक रही थी—घोडे और उनके सवार दोनों जी-जान से आगे निकलने की कोशिश में लगे हुए थे । घोडे हम लोगो के पास तक इस तरह साथ-साथ आये जैसे उन्हे एक जजीर में बाध दिया गया हो—और अगले ही क्षण हमें उनके पिछले हिस्से और हवा मे उडते उनके पिछले खुरों के अलावा कुछ नहीं दिखायी पडा ।

ज्योंही घोडे मुडे, त्यो ही भीड जितनी तेजी से हो सकता था, उनके पीछे और गोल की ओर भाग पडी । जब हम निशान से बहुत आगे तक दौड कर चले जाने के बाद वहा पहुँचे तो घोडो को धीरे-धीरे लौटते हुए पाया और सुना कि उनमें जो लम्बा और पतला-सा घोडा था, वह दूसरो मे बहुत आगे निकल कर विजयी हुआ ।

घुड़सवार हल्के-फुल्के शरीर के आदमी थे, उन्होंने गले में रुमाल बाँध रखे थे

और खाली हाथ और नगे पाव थे। घोड़े देखने मे बड़े सीधे मालूम हो रहे थे। वे इतने चिकने और सुथरे नही थे जैसे हमारे बोस्टन के घुडसवारो के घोड़े होते हैं। लेकिन उनके अग बहुत सुन्दर और आँखें सतेज थी । जब दौड का निर्णय हो गया और इसकी चर्चा खत्म हो गयी, तब भीड पुन· छितरा गयी और शहर की ओर वापस चल पडी।

उस बडी पल्पेरिया पर लौट कर आने के बाद हमने बरामदे में वायलिन और गिटार को अभी भी बजते हुए ही पाया, जहां वे पूरे दिन बजते रहे थे। चू कि अब सूर्यास्त हो गया था, इसलिए वहां नाच शुरू हो गया था। इटालियन मल्लाह नाच रहे थे। हमारी टोली के एक मल्लाह ने पश्चिमी द्वीप-समूह का एक नाच दिखाया, जिसे देख कर आस-पास खडे लोगों का काफी दिलबहलाव हुआ। वे रह-रहकर "शाबाश", "बहुत अच्छा", "धन्य हो माझी"—चिल्ला उठते थे। लेकिन नृत्य अभी आम नही हुआ था क्योकि अभी तक महिलाओ और नगर के भद्र पुरुषों का आगमन नही हुआ था।

अपनी बडी ख्वाहिश थी कि हम वहा रुकें और नाचने की शैली देखें, लेकिन हालांकि दिन में हम लोगो को मनचाही छूट थी, लेकिन सब के बावजूद थे तो अगवाड के अदना मल्लाह ही न! और सूर्यास्त तक समुद्र के किनारे पहुचने का हुक्म होने के कारण, हम वक्त से एक घन्टे से अधिक देर करने का साहस नही कर सकते थे, इसलिए हम लोगो ने अपनी राह ली। हमने नौका को उत्ताल तंरगो के बीच से होते हुए किनारे की ओर आते देखा। बाहर घना कुहरा छाया था। कुहरा जब भी पडता है तब या तो उसके बाद या उसके पहले समुद्र का उग्र होना निश्चित है।

छुट्टी पर निकले नाविक जहाज को छोडने से पुन जहाज पर लौटने तक अपने मन के बादशाह होते हैं; इसलिए हम लोगों ने जहाज के पिछले भाग में यात्रियो और मल्लाहो के बेठने के बीच के स्थान पर आसन जमाया। हम इसके लिए एक-दूसरे को बधाई ही दे रहे थे कि नाव चल भी दी और हम सूखे ही रहे कि तभी एक भीमकाय तरग ने हम सब को आपादमस्तक भिगो दिया और नाव की आधी ऊंचाई तक पानी अंदर भर गया। पानी के बोझ के कारण नाव की गति बहुत मन्द पड गयी थी और अब हर टकराने वाली तरंग के समाने यह ठिठक सी जाती थी। जब हम भग्नोर्मियो से गुजर कर समुद्र के गहरे पानी में पहुँचे, तब

हमारी नाव पानी के ऊपर तिर-भर रही थी और उसमें हम लोगों के घुटनो तक पानी भरा था ।

एक छोटी-सी बाल्टी और अपने टोपों की सहायता से हम लोगों ने पानी उलीच कर किसी तरह उसे पार लगाया; जहाज पर पहुँचे, नावो को यथास्थान रखा, सपर खाया, कपडे बदले, (जैसा कि अवसर होता है) अपने उन साथियों को जो जहाज पर रह गये थे अपने सारे दिन की करतूत सुनायी और फिर धूम्र-पान के बाद अपने-अपने विस्तरो में जा रहे । इस तरह समुद्र के तट पर हमारी दूसरी छुट्टी हुई ।

मानो रविवार के खेलकूद के मुआवजे के तौर पर सोमवार की सुबह को सब को जहाज के ऊपरी लट्ठों और रस्सों में कोलतार करने के काम पर लगा दिया गया । यह काम सब लोगो में बाट दिया गया । हम लोगों ने अपने झोलों को खोला और उनमें से अपने कोलतार लगे हुए पाजामे और फ्राक निकाले, जिनका इस्तेमाल हम लोगो ने इससे पहली बार कोलतार करते समय किया था और सूरज निकलते ही कोलतार करने में जुट गये ।

नाश्ते के बाद हम लोगो को यह देख कर बडा सन्तोष हुआ कि अपने नाविको से लदी इटालियन जहाज की नाव किनारे पर जा रही है, जो पिछले दिन की भाँति ही बढिया-बढिया कपडे पहने हुए हैं और मल्लाहो के गीत गा रहे हैं। तट पर ईस्टर की छुट्टी तीन दिन रहती है और कैथोलिक फर्म का जहाज होने के कारण उसके नाविक अपनी छुट्टियो का आनन्द लूट रहे थे ।

बाद के दिनों में ऊपरी रस्सियो पर बैठे, कोलतार में सने और अपने नामाकूल काम में लगे हुए; हम लोग इन्हे सुबह को बड़े उत्साह से समुद्र के किनारे जाते हुए और फिर शाम को लौटते हुए देखते रहे। प्रोटेस्टेंट होने का हमें यह सुफल मिला ।

न्यू इग्लैंड में कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रसार का कोई खतरा नहीं हैं; याँकियों को इतनी फुर्सत ही नही है कि वे कैथोलिक हो सकें । अमरीकी जहाजों के मालिकान अपने नाविको से कैथोलिक देशों के जहाजो मे एक साल में तीन हफ्ते अधिक काम लेते हैं । याकी बडा दिन नही मनाते, समुद्र में रहने वाले जहाज के कप्तान यह जान नही पाते कि धन्यवाद प्रकाशन का दिन कब आता है, इसलिए मल्लाहों को एक भी त्योहार मनाने का मौका नही मिलता ।

दोपहर के लगभग ऊपर से एक आदमी चिल्लाया—"जहाज हो !" और चारों ओरं निगाह दौडाने पर हम लोगो की नजर पाइन्ट पर मुडते एक जहाज के शीर्षपालो पर पडी । मुडने पर पता चला कि वह सम्पूर्ण पालो का, दो मस्तूलों वाला जहाज है जिसके ऊपर यांकी झन्डा लगा हुआ है । हमने अपना सितारों और धारियो वाला झन्डा जहाज पर फहरा दिया और चूंकि किनारे पर हमारे जहाज को छोड कर दूसरा कोई अमरीकी जहाज नही था, इसलिए हमें घर के कुछ समाचार मिलने की आशा हुई ।

अब उसने पूरा मोड लिया और लंगर डाल दिया । लेकिन जब उसके नाविक पालों को लपेटने के लिए यार्डों पर चढ़े तब उनके स्याह चेहरो और डेक पर मचने वाली चिल्लपों से हम समझ गये कि यह जहाज तो द्वीपों की ओर से आ रहा है । कुछ ही देर बाद कुछ नाविक अपने कप्तान को नाव में बिठा कर हमारे जहाज पर आये और तब हमें पता चला कि वह जहाज ओआहू का है और "आयाकुचो", "लोरियट" आदि जहाजों से मिल कर कैलिफोर्निया के तट, सैंडविच द्वीपसमूह और पेरू व चिली के अनुवात तट के बीच उसी व्यापार में लगा था ।

उसका कप्तान, अफसर और कुछेक नाविक अमरीकी थे—शेष द्वीपों के निवासी थे । इसका नाम "कैटेलिना" था और "आयाकुचो" को छोड कर इस व्यापार में लगे हुए दूसरे जहाजो की तरह इस पर भी अमरीकी झन्डा लहरा रहा था । निश्चय ही यह जहाज हमारे लिए कोई समाचार नही लाया था और इससे हम लोगो को दूनी निराशा हुई, क्योकि हम लोगो ने पहले यह सोचा था कि हो सकता है कि यह वही जहाज हो जो बोस्टन से आने वाला था और जिसका हमें इन्तजार था ।

यहाँ पर एक पखवाडे रहने और यहा उपलब्ध सारी खालें इकठ्ठा करने के बाद हम लोग सैन पेड्रो के लिये रवाना हुए । वहा हमें वही जहाज लंगर डाले मिला जिसे निकलवाने में हमने मदद की थी । उसके नाविक-दल में अमरीकी, अंग्रेज, सैंडविच द्वीपसमूह के निवासी, स्पेनी और स्पेनी इन्डियन आदिवासी सभी थे, और हालाकि यह जहाज हमारे जहाज से बहुत छोटा था फिर भी इस जहाज पर हमारे जहाज से तीन गुने आदमी थे, और उसे वाकई इनकी जरूरत थी क्योकि उसके अफसर कैलिफोर्निया के थे । दुनिया के किसी भी अन्य देश के जहाजों पर आदमियों की उतनी कमी नही होती जितनी अमरीकी और अंग्रेजी

जहाजों पर। अगर उस आकार का कोई यांकी जहाज होता तो उस पर चार आदमियो का नाविक-दल रहा होता, और सभी नाविको को लगातार काम करना पड़ता। इटालियन जहाज पर तीम आदमियो का नाविक-दल था, जो "एलर्ट" से, जो बाद मे समुद्र तट पर आया और लगभग उसी आकार का था, तीन गुना था, फिर भी "एलर्ट" उससे आधे समय में ही रवाना हो जाता और वापस आकर दो लंगर डाल देता। जितने समय में वे जंगलियो के झुन्ड की तरह एक साथ बातें करते रहे और अपनी लंगर रस्सी ढूढने के लिये डेक पर इधर उधर भाग-दौड करते रहे।

एक ही बात में वे हमसे आगे थे। अपने गीतों से वे अपने परिश्रम को हल्का बना लेते थे। अमरीकी लोग समय और पैसे की दृष्टि से मितव्ययी होते हैं। लेकिन, एक राष्ट्र के रूप में, अभी वे यह नही सीख पाये हैं कि संगीत आर्थिक दृष्टि से भी लाभजनक हो सकता है।

हम लोग अपनी लदी हुई नावो को बिना एक भी शब्द बोले और चेहरो पर असतोष का भाव लिए दूर-दूर तक खेते रहते थे, जबकि वे लोग न सिर्फ नाव खेने के श्रम को ही हल्का कर लेते थे; बल्कि अपने संगीत से उसे सुखद और उल्लासपूर्ण भी बना लेते थे। यह बात इतनी सच है कि—

गीत थके गुलाम के बेजान चप्पू को उठाता है,
और फिर झंकार के साथ उसे प्यार से गिराता है।
जिससे सुन्दरतम समुद्र-तट की शोभा भी बढ जाती है,
और उग्रतम जलवायु सह्य बन जाती है।

हम लोग एक हफ्ते तक सैन पेड्रो रहे और चूंकि अब दक्षिणी-पूर्वी हवाओ का मौसम लगभग बीत चुका था और अब या तो खतरे का कोई डर नही था, या था तो बहुत कम, इसलिए हम सैन डियागो के लिए रवाना हो गये। हमारा विस्तार मार्ग में सैन जुआन में भी रुकने का था।

चूंकि आज कल बसन्त का मौसम था इसलिए सैन पेड्रो का बन्दरगाह उसी तरह ह्वेलों से भरा हुआ था जैसे समुद्र तट के दूसरे खुले बन्दरगाह। हर वर्ष की भांति इस बार भी वसंत में ये मछलियां समुद्र-तट पर आयी थी। सैन पेड्रो और सैंटा बारबरा में अपने आरंभिक दिनों में इन्हें बहुत चाव से देखते थे, और जब भी किसी ह्वेल का नथुना पानी के तल से ऊपर उठता देखते तो चिल्ला

उठते, "वह देखो, वहाँ ह्वेल साँस ले रही है !" लेकिन जल्द ही वे हमारे लिए इतनी आम हो गयी कि हम उनकी ओर ध्यान बहुत कम देने लगे। वे हमें अक्सर अपने बहुत नजदीक दिखायी देती थी और एक अंधेरी, कुहरे-भरी रात में जब चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी और मैं लंगर की निगरानी पर तैनात था, एक ह्वेल मछली हमारे इतनी नजदीक आ गयी कि वह हमारे लंगर के रस्से मे टकरा गयी और चारों ओर लहरें ही लहरें दिखाई देने लगी। ऐसा लगा कि यह भिडन्त उसे भी बहुत पसन्द नही आयी, क्योंकि वह तुरन्त वहा से कतरा कर निकल गयी और काफी दूर जाकर उसने अपना नथुना बाहर निकाला।

एक बार जब हम एक छोटी सी नाव मे थे तब हमारी नाव एक ह्वेल से टकराती टकराती बच गयी। अगर यह टक्कर हो जाती तो ह्वेल ने हमारी नाव को चकनाचूर कर दिया होता और हमे आसमान में उछाल दिया होता। हम अपनी नाव में स्पेनी जहाज पर से होकर लौट रहे थे और तेजी से चप्पू चला रहे थे जिससे वह छोटी सी नाव अबाबील की तरह भागी जा रही थी, आगे की ओर हमारी पीठ थी, (जैसा कि नाव चलाते समय हमेशा होता है) और कर्ण कप्तान के हाथ मे था जो आगे की ओर नही देख रहा था। अचानक हमें ह्वेल का नथुना अपने ठीक सामने महसूस हुआ। "नाव पीछे ! जान प्यारी हो तो नाव पीछे !" कप्तान चीख उठा, और हम लोगो ने अपने चप्पू पीछे की तरफ इतनी तेजी से मारे कि नाव के चारो ओर झाग ही झाग दिखाई देने लगे। अपना सिर घुमाने पर हम लोगो ने एक बहुत बडी, रुक्ष, कूबडदार ह्वेल को तीन-चार गज की दूरी पर अपनी नाव के अगले डाबा बाजू से धीरे-धीरे गुजरते देखा।

अगर हम अपनी नाव को पीछे मोडने मे जरा भी सुस्ती दिखाते तो नाव उससे निश्चित ही टकरा जाती। हमारी नाव का माथा उसके बीचो बीच जा कर लगता। उसने हम लोगो की ओर ध्यान ही नही दिया और धीरे-धीरे आगे को बढ गयी, और हम लोगो से कुछ गज आगे जाने के बाद अपनी पूंछ को हवा में ऊंचे उछालकर डुबकी ले ली। वह हम लोगो के इतने नजदीक थी कि हम लोगो ने उसे अच्छी तरह देख लिया और जाहिर है कि इससे अधिक नजदीक से उसे देखने की इच्छा किसी को नही थी। वह एक घृणास्पद जीव था; उसकी चमडी खुरदरी, रोयेंदार और लोहे जैसे काले रंग की थी। इस तरह की ह्वेल स्पर्म

ह्वेलों से रंग और चमडी मे बहुत भिन्न-किस्म के होती हैं और इन्हे अधिक भयंकर माना जाता है ।

हम लोगो ने कुछ स्पर्म ह्वेल भी देखी, लेकिन तट पर आने वाली अधिकांश ह्वेलें पच्छदार या कूबडदार होती हैं जिनका शिकार बड़ी मुश्किल से हो पाता है और कहा जाता है कि उनको पकडने मे जितनी परेशानी उठानी पडती है उनसे उतना तेल नही निकलता । इसी कारण ह्वेल का शिकार करने वाले जहाज उनके पीछे समुद्र तट की ओर नही जाते । एक बार हमारे कप्तान ने "लोग्यिट" के कप्तान नाये के साथ मिलकर, जो ह्वेल के शिकारी जहाज पर रह चुका था, दो नावो में नाविको को लेकर एक ह्वेल का शिकार करने की सोची लेकिन चूंकि हमारे पास सिर्फ दो ही हारपून थ और कोई ठीक ढंग के रस्से वगैरह भी नही थे इसलिए उसने यह इरादा छोड ही दिया ।

मार्च अप्रैल और मई के महीनो मे ये ह्वेल सैंटा बारबरा, सैन पेड्रो आदि खुले बन्दरगाहो मे बहुत बडी संख्या मे दिखाई पडती हैं, और किनारे के आस-पास मंडराती रहती हैं । कुछ मछलियाँ सैन डियागो और मोंटेरी के घिरे हुए बन्दरगाहों की ओर भी बढ जाती हैं । ग्रीष्म ऋतु के मध्य में वे गायब हो जाती हैं और "किनारे से दूर" समुद्र मे दिखाई देती हैं । हमने सैन जुग्रान जाते समय प्रतिवात दिशा में कुछ मील दूर जाते हुए स्पर्म ह्वेलो के कुछ बहुत अच्छे झुण्ड देखे । ये मछलियाँ अपने नथुनों से छोडी गयी फुहारों के कारण आसानी से पहचान में आ जाती हैं ।

प्रशान्त महासागर के शान्त समुद्र तट पर होते हुए हम २० फैदम गहरे पानी में, एक ऊंची पहाडी के ठीक सामने, जो समुद्र के ऊपर लटकी सी लग रही थी और हमारे जहाज़ के रायल मस्तूल शिखर से लगभग दूनी ऊँची थी, अपना लंगर डाला । यह लगरगाह इतना खुला हुआ था कि ऐसा लगता था जैसे हमने समुद्र में ही लङ्गर डाल दिया हो ।

हमने इसके बारे में "लैगोडा" के नाविकों से बहुत-कुछ सुन रखा था जिनका कहना था कि यह कैलीफोर्निया का सबसे खराब स्थान है । किनारा चट्टानी है और दक्षिणी-पूर्वी दिशा में एकदम अरक्षित है । अतः झञ्झा के आसार दिखायी देते ही जहाजो को वहाँ से समुद्र की ओर भाग कर अपनी रक्षा करनी पड़ती है; और हालांकि हमें यहाँ सिर्फ बीस ही घन्टे रुकना था, और मौसम के आखिरी

दिन थे, फिर भी हमने झन्झा के आसार देखते ही समुद्र की ओर भाग चलने की पूरी तैयार कर ली।

हम अपने एजेन्ट को नाव में बिठाकर किनारे पर ले गये। वहा पहुँच कर वह तो एक चक्करदार रास्ते से पहाडी के पीछे छिपे मिशन की ओर चला गया और हम कप्तान के आदेशानुसार वहीं रह कर उसका इंतजार करने लगे। हमें इस बात से प्रसन्नता हुई कि इस विलक्षण स्थान को ठीक से देखने का हमें अवसर मिला, और नाव को ऊपर खीच कर और उसे मजबूती से बांध कर हम लोग इस स्थान को घूम-घूम कर अच्छी तरह देख लेने के इरादे से अलग-अलग रास्तों से पहाडी की ओर चले।

कैलिफोर्निया में सैन जुआन ही एकमात्र रूमानी जगह है। यहाँ का प्रदेश कई मील तक ऊँचा और पठारी है। यह ऊँची जमीन समुद्र तक चली गयी है और अन्त में एक खडी पहाडी में परिणत हो गयी है, जिसके चरणों से प्रशान्त महासागर का जल निरन्तर टकराता रहता है। कई मील तक जल पहाडी का पाद-प्रक्षालन करता रहता है या उसकी उभरी हुई चट्टानो या शिखरों पर जो समुद्र में काफी भीतर तक चले गए हैं, आ आकर टक्कर मारता रहता है।

जहां हम लोगो की नाव लगी थी ठीक वही पर छोटा सा गुम या खात था जिसकी वजह से ऊँचा ज्वार आने पर समुद्र और पहाडी की तलहटी के बीच कुछ वर्ग फुटो का बलुआ घाट मिल जाता था। नाव बाधने का यही एक मात्र स्थान था। हम लोगो के ठीक सामने चार-पाच सौ फुट ऊँची सीधी खडी चढाई थी। हमारी समझ मे नही आया कि इतनी ऊँची जगह से खालें उतारने या वहाँ सामान पहुँचाने का काम हम क्योकर कर सकेंगे।

एजेन्ट लम्बे और घुमावदार रास्ते से गया था फिर भी उसे बीच-बीच में खड्डो को फलागना और खडी चढाइयो को पार करना पडा था। यह काम या तो मनुष्य ही कर सकता था या फिर बन्दर, और किसी प्राणी के बस का काम यह नही था। बहरहाल, यह हमारे सोचने की बात नही थी; और चू कि हमें ज्ञात था कि एजेन्ट को लौटने में एक घन्टा या उससे अधिक समय लगेगा, हम लोग शंख और घोंघे बीनते और बडी-बडी चट्टानो की दरारो में भीतर तक घुसे, गरजते और फेन छोडते समुद्र का अवलोकन करते हुए इधर-उधर घूमते रहे।

मैंने सोचा, दक्षिणी पूर्वी झन्झाओ में यहा क्या हालत होती होगी? यहां

चट्टानें उतनी ही विशाल थी जितनी नैहारण्ट या न्यूपोर्ट की चट्टानें, लेकिन मुझे उनकी अपेक्षा ये अधिक शानदार और ऊबड़-खाबड़ लगी। इसके अलावा यहाँ आस-पास की हर वस्तु मे एक भव्यता थी जो इस दृश्य को अद्भुत महिमा प्रदान कर रही थी, यहाँ एक सर्वग्राही शान्ति और एकान्तता का साम्राज्य था। मीलो तक हम लोगो को छोड कर न कोई आदमी था न आदमजाद, सुनने के लिए विराट प्रशान्त महासागर की धडकनो के अलावा दूसरी कोई आवाज नहीं थी! और उस विशाल, दीवार की तरह सीधी खडी, पहाडी ने "वरुण लोक!" के अलावा अन्य सभी लोको से हमारा सम्बन्ध विच्छिन्न कर दिया था।

मैं अपने साथियो से अलग हो गया और एक चट्टान पर बैठ गया। समुद्र इस चट्टान के ठीक नीचे भीतर तक घुस आया था और एक बहुत खूबसूरत खाडी में परिणत हो गया था जिसमें फुहारें छूट रही थी। कैलिफोर्निया के सादे, आकर्षण-हीन, बलुए-तट की तुलना में यह गरिमा इतनी चित्ताकर्षक थी जैसे किसी वीराने मे एक विशालकाय चट्टान। उस दिन, घर छोडने के बाद शायद पहली बार, मुझे सही अर्थों में एकात-सेवन का अवसर मिला था। पहली बार मुझे इस बोध से मुक्ति मिली कि मनुष्य नामधारी जीव मुझसे बोल नही रहे तो क्या, हैं तो मेरे बिल्कुल पास ही। अनुकूल अवसर पाकर मेरी उदात्त प्रकृति प्रकाश में आ रही थी। सभी बातें मेरी भावना के अनुरूप ही थीं और मुझे यह जानकर परम आह्लाद हुआ कि समुद्र का कठोर और अपव्ययी जीवन मुझमें विद्यमान कवित्व और रूमा-नियत के तत्वों की हत्या नहीं कर पाया है। मैं जिस नाटक में इतने दिनों से अभिनय करता आया था उसके इस सर्वथा नूतन दृश्य के वैभव में खोया मैं एक घटे तक बैठा रहा। तभी अपने साथियों की दूर से आती हुई आवाज से मेरा ध्यान टूट गया और मैंने देखा कि एजेंट को नाव की ओर वापस आता हुआ देख-कर वे सब वहां इकट्ठे हो रहे थे।

हम लोग नाव खे कर जहाज पर पहुँचे। वहाँ हमने देखा कि दीर्घ नौका नीचे उतार दी गयी है और वह माल से लगभग पूरी भरी हुई है। डिनर के बाद हम सभी छोटी नाव में बैठकर बडी नाव को रस्से के सहारे खीचते हुए किनारे गये। जब हम किनारे के पास पहुँचे तो हमने एक बैलगाडी और दो आदमियों को पहाड़ी के ऊंचे सिरे के पास सडक पर खड़े पाया। जब नाव को बांध दिया गया तब कप्तान ने पहाड़ी का रास्ता पकड़ा और मुझे और एक दूसरे नाविक को अपने

पीछे आने को कहा। हम लोग रास्ता निकालते, कूदते और हाथ टेक कर ऊपर चढ़ते, जगली गुलाब और नासपाती की कंटीली झाड़ियों पर चलते हुए, चोटी पर पहुँच गए।

यहां मीलों तक, जहां तक दृष्टि जा सकती थी वहा तक, समतल पठारी भूमि फैली हुई थी, और सैन जुआन कैम्पेस्ट्रैनों का सफेद मिशन, जिसके आस पास कुछ इंडियन आदिवासियों की झोपडिया बनी हुई थी और जो हमसे लगभग एक मील की दूरी पर एक छोटे से खड्ड में स्थित था, वहा से दिखायी देने वाली एकमात्र आबादी था।

पहाडी के छोर के पास पहुँचकर हमने खालों के कई ढेर देखे। इडियन आदि-वासी उनके चारों ओर बैठे थे। मिशन की ओर से एक या दो और बैलगाड़ियां धीरे धीरे चली आ रही थी और कप्तान ने हमें खालों को नीचे फेंकने का आदेश दे दिया। अब हमारी समझ में आया कि ये खालें नीचे किस तरह पहुँचेंगी : एक बार में एक खाल को चार सौ फुट की ऊचाई से फेंकना वाकई खूब काम था। पहाडी के कगार पर खड़े होकर सीधी, खडी ऊंचाई से नीचे की ओर देखने पर, नाविक—

"जो समुद्र तट पर चल फिर रहे थे,

चूहों जैसे मालूम हो रहे थे, और लंगर डाले हुए हमारा ऊचा जहाज

घट कर कुक्कुट नाव के आकार का रह गया था; और उसकी नाव बोया के आकार की हो गयी थी।

इतनी छोटी कि नजर भी न आ सके।"

इतनी ऊचाई से हमने खालों को नीचे फेंकना शुरू किया। हम उन्हे अपने से अधिक से अधिक दूर फेंकने की कोशिश करते थे और चूंकि वे सभी कडी, और किताब की जिल्द की तरह मुडी हुई थी, इसलिए हवा उन्हें उड़ा ले जाती थी और वे कटी पतंग की तरह इधर उधर मंडराती हुई नीचे पहुंचती थी। चूंकि यह भाटे का समय था इसलिए खालों के भीगने का कोई खतरा नहीं था, और नीचे गिरते ही वहा खड़े लोग उन्हें उठा लेते थे और सिर पर रखकर नाव की ओर चल देते थे।

वह दृश्य सचमुच मनोरम था। इतनी अधिक ऊंचाई; खालों को उतारना और

तट पर मकोड़े जैसे लगने वाले लोगों का लगातार चल-चलाव ! खालों की लदाई का ऐश यही था ।

कुछ खालें उन खड्डो में अटक गयी जो सामने वाले किनारे की ओर और ठीक हमारे नीचे होने के कारण हम लोगो की दृष्टि से ओझल थे : लेकिन उन पर दूसरी खालो को निशान बाध कर फेंकने से हम उन्हे नीच फेंकने में सफल हो गये । अगर वे वही रुकी रह जाती तो कप्तान का कहना था कि वह किसी को जहाज पर भेजकर दो लबी पाल रस्सियां मगवाता और उन्हे उतारने के लिए किसी आदमी को नीचे उन खड्डो में उतारता ।

मैंने सुना था कि कुछ माल पहले एक अंग्रेजी जहाज का मल्लाह इसी सूरत से उतरा था । हम लोगों ने उधर झांक कर देखा और सोचा कि इस काम को कोई भी नही करना चाहेगा, खास करके थोडी सी नाचीज खालों के लिए, लेकिन जब तक किसी के ऊपर कोई काम आ नही पडता तब तक उसे यह पता नहीं चलता कि वह क्या-कुछ कर सकता है, क्योंकि छः महीने बाद खुद मुझे उसी स्थान पर एक जोडा टापगॅलेंट दुपेंचा पाल-रस्सियों के सहारे खड्डो में अटकी आधी दर्जन खालों को छुडाने के लिए नीचे उतरना पडा ।

खालों को नीचे फेंक कर, हम लोग फिर पीछे को लौटे और जब तीर पर पहुँचे तो नाव लद चुकी थी और रवाना होने के लिए तैयार थी । हम नाव खे कर जहाज पर गये, सारी खालें जहाज पर लादी, अपना लंगर उठाया; पाल ताने और सूर्यास्त से पहले सैन डियागो के रास्ते पर रवाना हो गए ।

शुक्रवार; आठ मई १८३५ । सैन डियागो पहुँचे । हमें यह छोटा सा बन्दरगाह बिल्कुल निर्जन पडा मिला । "लैगोडा", "आयाकुचो", "लोरियट" और दूसरे सभी जहाज यहां से रवाना हो चुके थे और हम लोग लगभग अकेले ही थे । हमारे गोदाम को छोडकर खालों के दूसरे सभी गोदाम बन्द थे । सैंडविच द्वीप समूह के पंद्रह-बीस निवासी, जिन्होने दूसरे जहाजों के लिए काम किया था और उनके रवाना होने के पहले अपना हिसाब चुकता पाया था, तीर पर रह कर नौरोज मना रहे थे ।

एक रूसी खोजी जहाज ने, जो इस बन्दरगाह पर कई साल पहले आया था, रोटियाँ पकाने की एक बहुत बडी भट्ठी बनायी थी, और जाते समय इसे यूं ही बना छोड़ गया था । सैंडविच द्वीप के निवासियों ने इस पर कब्जा जमा लिया था

श्रौर इसे ज्यों का त्यों बना रहने दिया था। यह इतनी बड़ी थी कि इसमें छः से आठ आदमी तक आ सकते थे—अर्थात् यह किसी जहाज के अगवाड़ जितनी बड़ी थी। इसकी बगल में एक द्वार बना हुआ था, और ऊपर धुआं निकलने के लिए एक सूराख बना था। वे इसमें ओआहू की चटाइया या कोई गलीचा बिछाए रखते थे और जब मौसम खराब होता था तब ऊपर का धुनाला बन्द कर देते थे। इस प्रकार उन्होने इसे अपना अड्डा बना लिया था। इस समय इसमे पंद्रह-बीस आदमी थे जो वहा बिल्कुल काहिली की जिन्दगी बिता रहे थे। वे शराब पीते थे, ताश खेलते थे और मतवाले से बने रहते थे। हर हफ्ते वे एक बैल खरीद कर लाते थे जिससे उन्हे गोश्त मिल जाया करता था, और उनमें से एक आदमी हर रोज फल, शराब और रसद वगैरह खरीदने के लिए कस्बे में जाता था। इसके अलावा उन्होंने "लगोडा" के रवाना होने के पहले उससे एक पीपा जहाजी रोटिया और एक पीपा आटा खरीद लिया था। इस प्रकार वे बडी शान-शौकत और बेफिक्री से जिन्दगी बिता रहे थे।

कप्तान टी—उनमें से तीन-चार लोगों को "पिलग्रिम" पर मल्लाह रखने के लिए बहुत उत्सुक था क्योकि हम लोगों की संख्या बहुत कम हो गई थी। वह भट्ठी पर गया और उनसे बात तय करने में एकाध घन्टा वहा बिताया। एक सुगठित सक्रिय, हृष्ट पुष्ट और बुद्धिमान मल्लाह—जो एक तरह से उनका राजा था—उनकी ओर से बोलता रहा। उसका नाम मानिनी था—उसके महत्व और प्रभाव के कारण सब उसे मिस्टर मानिनी कहते थे—और वह कलिफोर्निया के सपूर्ण प्रदेश मे विख्यात था। उसके द्वारा कप्तान ने उन लोगो के सामने पन्द्रह डालर प्रति मास और एक महीने का वेतन पेशगी का प्रस्ताव रखा लेकिन यह भैंस के आगे बीन बजाना ही सिद्ध हुआ। पैसा रहने पर ये लोग पचास डालर प्रति मास पर भी काम करने को राजी नहीं होते और पैसा खत्म हो जाने के बाद दस डालर प्रति मास पर भी काम कर लेते हैं।

"मि० मानिनी, आप यहाँ क्या करते हैं?" कप्तान ने पूछा।

"ओह, हम लोग ताश खेलते हैं, दारू पीते हैं; धूम्रपान करते हैं—और जो भी जी में आता है, करते हैं।"

"क्या आप जहाज पर आकर काम करना नही चाहते?"

"इस समय तो पैसा काफी है; काम करने से क्या फायदा ! पैसा खत्म ! ग्राह ! बहुत ठीक, अब काम करो !"

"लेकिन इस तरह तो तुम्हारे पास जो पैसा है वह सब खर्च हो जायगा।" कप्तान ने कहा।

"हा ! मुझे मालूम है। धीरे-धीरे सारा पैसा खर्च हो जाएगा; तब हम खूब डट कर काम करेंगे।"

बात बढ़ाने से कोई लाभ नही था और कप्तान वहां से चला आया और उनका पैसा खत्म होने का इतजार करने लगा।

हम लोगों ने अपनी खालें और चर्बी के थैले उतारे और लगभग एक हफ्ते के भीतर प्रतिवात दिशा में यात्रा करने के लिए फिर तैयार हो गए। हमने जहाज का लंगर उठाया और चलने की सारी तैयारी करने के बाद कप्तान ने उन्हे जहाज पर रखने के लिए एक बार और कोशिश की। इस बार वह सफल रहा। उसने मि० मानिनी को पटा लिया और चूं कि अब उनकी जेब खाली होती जा रही थी, इसलिए कप्तान ने मि० मानिनी और तीन दूसरे लोगों को अपना बक्सा और बिस्तर लेकर जहाज पर आने के लिए राजी कर लिया। उसने जल्दी-जल्दी मुझे और एक छोकरे को अपने सामान के साथ किनारे पर खालों के गोदाम में काम करने वाले लोगो के साथ काम करने का हुक्म दे कर बुला भेजा।

यह मेरे लिए अप्रत्याशित था, लेकिन चूंकि मैं हर तरह के परिवर्तन का स्वागत करने के लिए तैयार था इसलिए हम लोग नाव पर चढ़कर किनारे पर पहुँच गये। जब जहाज रवाना हुआ तो मैं समुद्र के किनारे खडा उसे तब तक निहारता रहा जब तक वह पाइन्ट पर जाकर अपनी दिशा में मुड नही गया, और फिर खालों के गोदाम में चला गया जहां रहकर मुझे कुछ महीनो तक काम करना था।

*   *   *

अध्याय—१९

मेरे जीवन का यह परिवर्तन जितना आकस्मिक था, उतना ही पूर्ण भी था। पलक मारते में नाविक के स्थान पर "किनारे का कबाडी" और खालें तैयार करने वाला बन गया था, लेकिन नयेपन और आजादी की वजह से यह जिन्दगी मुझे बुरी नहीं लगी।

हमारा खालों का गोदाम लकडी के खुरदरे तख्तों से बना था और वह विशाल गोदाम चालीस हजार खालें रखने के लिए बनाया गया था। इसके एक कोने में एक छोटा-सा कमरा अलग बना लिया गया और उसमें चार मल्लाहों के सोने के लिए जगह कर ली गयी। धरती मैया ही हमारी शैया थी। कमरे में एक मेज थी, बरतनों, चम्मचो और प्लेटों के लिए एक छोटी-सी पेटी थी और रोशनी आने के लिए एक छोटा-सा रोशनदान बना लिया गया था। यहाँ हमने अपनी पेटियाँ रख दीं, बिस्तर पटक दिये और रहने के लिए तैयार हो गये।

हमारे कमरे के ऊपर एक और छोटा कमरा था जिसमें मि० रसेल रहते थे, जो इस गोदाम के प्रमुख थे। यह वही आदमी था जो कुछ दिनों "पिलग्रिम" पर अफसर रह चुका था। उस कमरे में वह अपने एकांत वैभव का आनन्द लूटता था; अकेला खाता और सोता था (और उसका अधिकतर समय इन्ही कामों में बीतता था) और साथी के नाम पर उसके पास अपनी ही गरिमा थी। छोकरे को रसोइए का काम सोपा गया। मुझे और निकोलस नामक एक विशालकाय फ्रांसीसी मल्लाह को चार सैंडविच द्वीप के निवासियो के साथ खालो को सुखा कर तैयार करने का काम दिया गया। सैम, फ्रांसीसी मल्लाह और मैं—हम लोग साथ-साथ कमरे में रहते थे और सैंडविच द्वीप समूह के चारो लोग काम में और खाने में तो हमारे साथ रहते थे लेकिन आम तौर पर सोते भट्ठी में थे।

अपने नये साथी निकोलस जैसा भीमकाय आदमी मैंने अपने जीवन में नहीं देखा। वह जिस जहाज में मल्लाह बनकर कैलिफ़ोर्निया के तट पर आया था वह डूब गया था और अब वह विभिन्न खालों के गोदामो में खालों को सुखाने और तैयार करने का काम करता था। उसकी लम्बाई छः फुट से काफी अधिक थी और हाड इतना चौडा था कि उसे नुमाइश में रखा जा सकता था। लेकिन उसके पैर सब से विचित्र थे। उसके पैर इतने बड़े थे कि कैलिफोर्निया में उसे अपने नाप का जूता ही नहीं मिल सका और उसे ओआहू से अपने लिए एक जोडा जूता मंगाना पडा; और इन जूतों को भी, एडी को ठोक-पीट कर और फैला कर, वह अपने पहनने के काबिल बना पाया।

उसने मुझे खुद सुनाया कि एक बार गुडविन सैंड्स पर, वह जिस दो मस्तूलों वाले अमरीकी जहाज में था, वह नष्ट हो गया और उसे लन्दन–स्थित काउंसल में भेजा दिया गया। उस समय न उसकी पीठ पर कोई कपड़ा था और न

पैर में जूता। जनवरी के महीने में वह तीन-चार दिन तक लन्दन की गलियों में बिना जूते के मारा-मारा फिरता रहा, अन्त में काउसन ने उसे एक जोड़ा जूता बनवा कर दिया। उसकी शक्ति उसके विशाल आकार के अनुपात मे थी और मूर्खता शक्ति के अनुपात मे—"बैल की तरह शक्तिशाली, और जितना शक्तिशाली उतना ही मूर्ख।" पढने-लिखने के नाम पर उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था।

लडकपन से ही वह समुद्री जीवन बिताता आया था और सभी तरह की नौकरियां कर चुका था तथा—व्यापारी जहाज, युद्ध पोत, निजी पोत और गुलामों को व्यापार करने वाले–सभी प्रकार के जहाजो पर काम कर चुका था। सचाई तो यह है कि उसके अपने बारे में दिये गये हवाले से, और कालातर में मुझ से अच्छी जान-पहचान हो जाने पर उसके खुद के कबूल करने से, मुझे पता चला था कि वह गुलामो के व्यापार से भी बुरे काम कर चुका था।

साउथ कैरोलिना के चार्ल्सटन नामक कस्बे में एक बार उस पर हत्या के अभियोग में मुकदमा चला था, और यद्यपि उसमें वह बरी कर दिया गया था, फिर भी उसके मन में ऐसा डर बैठ गया था कि वह फिर कभी संयुक्त राज्य अमरीका मे अपना मुह दिखाने को तैयार नही था। मैं लाख कोशिश करने पर भी उसे यह समझाने में असफल रहा कि अब वहा जाने मे उसे कोई खतरा नही है, क्योकि एक ही अपराध के लिए उस पर दुबारा मुकदमा नही चलाया जा सकता। उसका कहना था कि एक बार भग्नोर्मियों से सकुशल बच आया है और इतना अनाडी मल्लाह वह नही है कि उनमें अपनी नाव दुबारा ले जाय, और मुफ्त का खतरा मोल ले।

यह जानते हुए भी कि वह किस तरह की जिन्दगी गुजार चुका है, मुझे उससे जरा भी डर नही लगा। हम दोनो में बडे चैन की छनी और यद्यपि मेरे मुकाबले वह कही तगडा और लम्बा-चौडा था फिर भी वह मेरे शिक्षित होने, और जहाज पर आने के पहले की मेरी स्थिति से परिचित होने, के कारण मेरा लिहाज करता था।

"मैं तुमसे दोस्ती निभाऊगा", वह मुझसे कहा करता था, "क्योंकि नही तो तुम एक न एक दिन कप्तान बन कर यहा आओगे और तब मेरा कचूमर निकाल दोगे।" मेल से रहने के कारण हमारे अफसर के होश भी ठिकाने रहे

क्योंकि स्पष्ट ही वह निकोलस से डरता था और हमे सिर्फ तभी हुक्म देता था जब हम खालो को सुखाने वगैरह के काम मे लगे होते थे । हा सैंडविच द्वीपसमूह के साथी मल्लाहो के बारे मे यहा कुछ बता देना उपयुक्त ही होगा ।

पिछले अनेक वर्षों से कैलिफोर्निया और सैंडविच द्वीपसमूह के बीच प्रचुर मात्रा में व्यापार होता आया है, और अधिकांश जहाजों पर इन द्वीपो के मल्लाह काम करते हैं। प्राय: ये किसी प्रकार के कागजात वगैरह पर दस्तखत नही करते, इस लिए जब मन में आता है तब नौकरी छोड देते हैं, और सैन डियागो के गोदामो में खालो को सुखाने और तैयार करने की मजदूरी कर लेते हैं। अगर तट पर व्यापार करने वाले अमरीकी जहाजों में मल्लाहों की कमी हो जाती है तो ये उनकी जगह नौकरी भी कर लेते है ।

इस तरह उनकी एक छोटी-मोटी बस्ती ही बस गयी है और सैन डियागो को उनका प्रमुख कार्यालय समझना चाहिए। हाल ही में इनमें से कुछ मल्लाह "आयाकुचो" और "लोरियट" में चले गये थे, और मि० मानिली और तीन दूसरे मल्लाहो को "पिलग्रिम" पर ले लिया गया था, इसलिए अब अधिक से अधिक बीस लोग वहाँ रह गये थे । इनमें से चार "आयाकुचो" के गोदाम पर तनख्वाह पर काम कर रहे थे और बाकी भट्ठी पर शाँत भाव से अपने दिन गुजार रहे थे क्योकि उनका धन अब समाप्तप्राय हो चला था और किसी नये जहाज के आने और नयी मजदूरी मिलने तक उन्हे इसी धन से काम चलाना था ।

मैं जिन चार महीनो में तट पर रहा उनमें मैंने उन सब से अच्छा परिचय प्राप्त कर लिया और उनकी भाषा, आदतो और चरित्रों का अध्ययन करने में मैंने बडे परिश्रम से काम लिया । मैं उनकी भाषा जबानी ही सीख सका क्योकि उनके पास किताबें नही थी यद्यपि उनमे से अनेक लोगों ने घर पर रह कर प्रचारकों से पढ़ना-लिखना सीखा था । वे टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलते थे और कई भाषाओ के मेल से एक भाषा बना ली गयो थी जिसे तौर पर सभी लोग समझ लेते थे ।

सैंडविच द्वीपसमूह के निवासियो को इस लम्बे नाम से नही पुकारा जाता बल्कि संपूर्ण प्रशात महासागर में गोरे लोग उन्हे "कनाका" के नाम से पुकारते हैं। यह उनकी अपनी भाषा का शब्द है, और वे इसका प्रयोग अपने लिए तथा दक्षिण समुद्र के द्वीपों के निवासियों के लिए करते है। यहाँ रहने वाले गोरे लोगो के लिए

वे "हाग्रोल" शब्द का प्रयोग करते हैं। कनाका शब्द बहुवचन भी है और एकवचन भी।

उनकी अपनी भाषा में उनके नाम ऐसे होते हैं जिनका उच्चारण करना और उन्हें याद रखना कठिन होता है इसलिए अक्सर उन्हें उन्हीं नामों से पुकारा जाता है जो जहाजो के कप्तान या मल्लाह उन्हे दे देते हैं। कुछ लोगों के नाम उनके जहाज पर रख दिया जाता है, और कुछ को जैक, टाम, बिल आदि के नाम से पुकारा जाता है, और कुछ के नाम कल्पना से रख दिये जाते हैं, जैसे बैन-वैन, फोर-टाप, रोप यार्न, पेलिकन आदि। हमारे गोदाम में जो चार लोग काम कर रहे थे उनमें से एक का नाम "मिस्टर बिवम" था। उसका यह नाम ओग्राहू के मिशनरी के ऊपर पड गया था। दूसरे आदमी का नाम होप था—कारण वह "होप" नामक जहाज पर काम कर चुका था। तीसरे आदमी का नाम उसके पहले कप्तान पर टाम डेविस पड गया था। चौथे आदमी का नाम पेलिकन था क्योंकि यह कल्पना की जाती थी कि उसकी शक्ल इस चिडिया से मिलती जुलती है। अन्य मल्लाहो के नाम लंगोडा जैक और कैलिफोर्निया बिल आदि थे।

लेकिन उन्हे चाहे जिन नामों से पुकारा जाय, इसमें कोई शक नही कि इससे पहले इतने दिलचस्प, चतुर और उदार लोगों से मेरा साबका नही पडा था। उन सभी से मुझे गहरा लगाव हो गया था, और उनमें से अनेक के प्रति मेरे मन में आज भी इतना अनुराग है कि मैं एक लम्बा फासला तय कर के उनसे मिलने जा सकता हूँ। दरअसल, मैं हमेशा किसी भी आदमी में सिर्फ इसी लिए रुचि लेता रहूँगा कि वह सैंडविच द्वीपसमूह का निवासी है।

टाम डेविस लिख-पढ़ सकता था और उसे सामान्य गणित भी आता था। वह संयुक्त राज्य अमरीका हो आया था और अंग्रेजी खासे अच्छे ढंग से बोल लेता था। उसकी शिक्षा कैलिफोर्निया के तीन चौथाई याकियों से बुरी नहीं हुई थी और अदब-कायदे व उसूलों की नजर से वह उनसे कही अच्छा था। वह इतना जहीन था कि अगर कोई सिखाता तो वह नौविज्ञान तथा अनेक विज्ञानो के तत्वों को बडी आसानी से सीख सकता था।

बूढ़ा मि० बिघिम अंग्रेजी बहुत कम—नाम मात्र को—बोलता था। वह लिखना-पढ़ना नही जानता था लेकिन वह दुनिया का सबसे नेकदिल बूढ़ा था। वह पचास वर्ष से ऊपर का रहा होगा और जब सैंडविच द्वीपसमूह का महान राजा

तामामाहा मरा तब उसके माँ-बाप ने शोक-प्रदर्शन के लिए अपने इस पुत्र के सामने के दो दाँत निकलवा दिये थे। हम उसे छेड़ने के लिए कहा करते थे कि कप्तान कुक को खाने में उसके दोनो दाँत टूट गये थे। सिर्फ यही एक ऐसी बात थी जिस पर वह भड़क उठता था। यह सुन कर वह हमेशा जोश में आ जाता था; और कहता था—

"नही! मैंने कप्तान कुक को नही खाया! मैं इतना छोटा—इतना ऊंचा—नही! मेरे बाप ने कप्तान कुक को देखा। मैंने तो देखा तक नही!"

उन लोगों में से कोई भी कप्तान कुक की चर्चा नही चलने देना चाहता था, क्योकि सभी नाविको का विश्वास था कि कप्तान कुक को नरभक्षी लोग खा गये थे जब कि कनाका लोग इस प्रकार के व्यंग्यों को सहन नही कर पाते थे—

"न्यूज़ीलैंड के कनाका गोरों को खाते हैं—सैंडविच द्वीप के कनाका नही। सैंडविच के कनाका तो तुम लोगों की तरह ही होते हे!"

उन लोगों में मिस्टर बिंघिम का दरजा पिता के बराबर था, और सभी लोग उसकी इज्जत करते थे, यद्यपि उसके पास शिक्षा और शक्ति की कमी थी जिसके कारण मिस्टर मानिनी का कनाकाओं पर प्रभुत्व था। मैं इस बूढे आदमी से घन्टों तक तामामाहा, जिसे सैंडविच द्वीपसमूह का शार्लमाने कहा जाता है, और उसके पुत्र और उत्तराधिकारी रीहो रीहो—जिसकी मृत्यु इंग्लैंड में हुई थी और जिसका शव कप्तान लार्ड बाइरन "ब्लौंडी" नामक युद्धपोत में ओआहू लाया था, और जिसके अंतिम संस्कार की उसे अच्छी तरह याद थी—बातचीत करता रहा हूँ। इसके अलावा हम इस विषय पर भी बातें करते थे कि उसके बचपन में उसके देश में क्या रीति-रिवाज थे और मिशनरियों ने उनमें क्या-कुछ परिवर्तन किया था।

वह इस मान्यता का कट्टर विरोधी था कि उसके प्रदेश में नर-भक्षण होता रहा है; और सचाई यह है कि ऐसे सहृदय, चतुर और सभ्य मानवो की जाति के बारे में यह कहना, कि कुछ ही दिनो पहले उनके अपने ही देश में मनुष्य-भक्षण जैसी बर्बर प्रथा प्रचलित थी, उसकी तौहीन करना ही था। विश्व की किसी भी जाति के इतिहास में इतना त्वरित विकास देखा ही नही जा सकता। इन लोगों में से किसी के भी हाथ में मैं अपना जान—माल सौंप सकता था; और वाकई अगर मुझे किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता पड़ती या मैं अपने मित्रो से अपने

लिए कोई कुर्बानी चाहता तो मैं तट पर पाये जाने वाले अपने देशवासियों के पास जाने की बजाय इन्ही लोगो की शरण में जाता, और मुझे आशा थी कि जितनी देर मे मेरे देशवासी ऊच-नीच ही सोचते रहते उतनी देर में ये लोग मेरा काम पूरा भी कर देते।

उनके रीति-रिवाज और आपसी व्यवहार मे एक सरल, आदिम सदाशयता टपकती है, जिसे देखकर हर्ष होता है, और अपनी जाति के लोगो पर क्षोभ होता है। उनमें से अगर किसी एक के पास कोई चीज है तो वह सबकी है। धन, भोजन, वस्त्र—यहाँ तक कि पाइप में रखा जाने वाले तम्बाकू का अंतिम हिस्सा भी—सभी चीजो का उपयोग वे मिल बाट कर करते हैं। एक बार एक याकी व्यापारी ने मि० बिघिम को अपना पैसा अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए रख छोड़ने की सलाह दी थी, तब मैंने मि० बिघिम को उसे लताडते हुए सुना था—

"नही! हम तुम्हारी तरह नही हैं। मान लो किसी के पास पैसा है, वह पैसा सब का है। तुम्हारे यहाँ—किसी के पास पैसा है—तो वह पेटी मे ताला बन्द करके रखेगा—कितनी बुरी बात! कनाका लोग सब एक हैं!"

अपने इस उसूल के वे इतने पक्के हैं कि कोई भी आदमी अपनी चीज सबको बाटे बिना सबके सामने नही खायेगा। मैंने देखा एक आदमी को एक बिस्कुट दिया गया, और हालाकि उन दिनों तौर पर खाने की चीजों की कमी के कारण लोगों को बहुत कम चीजें मिल रही थी, फिर भी उसने उस बिस्कुट को तोड कर उसके पाच हिस्से किये, और खुद एक ही हिस्सा खाया।

उन सब मे होप नामक आदमी मुझे विशेष प्रिय था। वह अफसरों और नाविकों को और संपर्क मे आने वाले सभी लोगो को बेहद पसन्द आता था। वह एक छोटा सा, चतुर और उदार प्रकृति का मनुष्य था और यद्यपि मैं उसे एक साल से अधिक समय से जानता था और गोरे लोग उस पर रौब गांठ लेते थे, व जहाज के असभ्य अफसर उसे गाली तक दे लेते थे, फिर भी मैंने उसे कभी क्रुद्ध होते हुए नही देखा था। वह हमेशा सभ्यता से पेश आता, काम करने को तत्पर रहता था और कृतज्ञता उसके स्वभाव में प्रचुर मात्रा में थी। एक बार वह बीमार पडा और कप्तान या किसी अफसर ने उसके लिए कुछ नही किया तब मैंने उसकी तीमारदारी की थी और जहाज की पेटियों में से उसे दवाएँ दिलवायी थी, और इस बात को वह कभी नहीं भूला।

हर कनाका का एक खास दोस्त होता है जिसे वह अपने से अभिन्न समझता है और उसके लिए कुछ भी कर गुजरना अपना कर्त्तव्य समझता है, उसके साथ उसका एक समझौता सा होता है कि आक्रमण और प्रतिरक्षा के समय वे एक-दूसरे का साथ देंगे। अपने उस मित्र के लिए वह कनाका बडी से बडी कुर्बानी दे सकता है। इस दोस्त को वे "ऐकाने" कहते हैं, और होप ने मुझे अपना ऐकाने बनाया था। मैं सोच ही नही सकता कि उसके पास कोई चीज होती और मेरे माँगने पर वह मुझे न देता। इसके बदले में अमरीकी लोगो के बीच में मैं हमेशा उससे दोस्ती निभाता था। मैं उसे अक्षरो और अंकों का ज्ञान कराता था क्योकि पढना लिखना सीखने से पहले ही उसने अपना घर छोड दिया था।

वह बोस्टन (वे सयुक्त राज्य अमरीका को इसी नाम से पुकारते थे) के बारे में बहुत-कुछ जानना चाहता था। वहा के घरों और लोगों वगैरह के बारे में ढेर-सारे सवाल पूछता रहता था और इस बात पर हमेशा जोर देता था कि पुस्तकों में दी गयी तस्वीरें उसे समझायी जायें। जब मैं व्याख्या करने लगता तो वे सब बातो को इतनी तेजी से समझते थे कि मुझे आश्चर्य होता था। ऐसी बहुत सी बातें थी जिन्हे मैं उनकी समझ के एकदम परे समझता था लेकिन शुरू करने पर वे उन्हे एक ही क्षण में समझ जाते थे और ऐसे प्रश्न करते थे जिनसे जाहिर होता था कि मेरी बतायी हुई बात वे समझ गये हैं, और आगे जानना चाहते हैं।

मेरे पास जो अखबार थे उनके कुछ स्तंभो में अगन-बोटों और रेल के डब्बो के चित्र बने हुए थे। इन्हें समझाने में मुझे सबसे ज्यादा दिक्कत पेश आयी। सडक के निर्माण, रेल की पटरियो और डब्बो के निर्माण की बाबत तो वे आसानी से समझ गये लेकिन भाप से पैदा होने वाली गति को समझना एक ऐसा विषय था जो उनके लिए बहुत सूक्ष्म था। मैंने रसोइए के ताबे के बरतनो की सहायता से एक प्रयोग करके भी उन्हे समझाना चाहा लेकिन इस बारे मे कुछ तो मेरा ज्ञान अपूर्ण था और कुछ बातें उनकी समझ के बाहर थी इसलिए मुझे अपने प्रयत्न में सफलता नही मिल सकी, लेकिन मुझे विश्वास है कि वाष्प शक्ति के सिद्धांत के बारे में जो-कुछ मुझे आता था उतना तो मैंने उन्हे समझा ही दिया। अगन बोट के सम्बन्ध में भी यह अडचन बदस्तूर थी, और जब मैं उन्हें समझा नहीं पाया तो मैं तथ्यों और आंकडों पर उतर आया और—इस आविष्कार के परिणामस्वरूप पानी पर कितनी तेज रफ्तार से चला जा सकता है—इसके बारे

मे ही थोडी-बहुत जानकारी दे सका। रफ्तार के बारे में टाम ने मेरी बात का समर्थन किया। वह नेंटुकेट हो ग्राया था ग्रौर न्यू बेडफोर्ड जाने वाली छोटी ग्रगनबोट देख ग्राया था।

मैने उन्हे दुनिया का एक नक्शा दिखाया ग्रौर वे घन्टो तक उसे ध्यान से देखते रहे। जो लोग पढ सकते थे वे स्थानों पर उगली रखकर मुझसे उनकी दूरी पूछते थे। मुझे याद ग्राता है होप के एक प्रश्न पर मुझे बडी हसी ग्रायी थी। नक्शे मे ध्रुवो के ग्रास-पास एक विशाल ग्रनियत प्रदेश को यह दिखाने के लिए खाली छोड दिया जाता है कि ग्रभी इसकी खोज नही हो पायी है। इस हिस्से पर उंगली रखते हुए उसने सिर उठाकर मेरी ग्रोर देखा, ग्रौर पूछा—बस ? खत्म ?

सडकों के नाम रखने ग्रौर मकानो पर नंबर डालने का क्या तरीका है, ग्रौर इसकी क्या उपयोगिता है, इसे वे जल्दी ही समझ गये। ग्रमरीका जाने की उनकी बडी इच्छा थी लेकिन केपहार्न से गुजरने की बात सोच कर ही उनकी नानी मर जाती थी। इसका कारण यह कि सर्दियो में उन्हे बहुत कष्ट होता है ग्रौर उनमे से जो लोग केप हार्न हो ग्राये थे उन्होने वहाँ का ऐसा हौलनाक हवाला दिया था कि इनकी हिम्मत ही न पडती थी।

वे धूम्रपान बहुत करते हैं, यद्यपि एक बार मे ज्यादा तम्बाकू नही पीते। इनके पाइप बड़े मुंह वाले ग्रौर छोटी डन्डी; या बिना डन्डी, के होते हैं। पाइप जला कर वे मुंह में लगा लेते हैं ग्रौर एक लम्बा कश लगाते हैं जिससे उनका मुंह धुंए से भर जाता है, ग्रौर गाल फूल जाते हैं। इसके बाद वे ग्रपने मुंह ग्रौर नाक से धुग्रा बाहर निकाल देते हैं। तब पाइप ग्रागे बढ़ा दिया जाता है ग्रौर ग्रगला ग्रादमी भी उसी तरह एक कश लगाता है। इस तरह एक बार के भरे हुए पाइप से छः लोगों का काम चल जाता है।

वे यूरोपियनों की तरह रह-रह कर छोटे-छोटे कश नही खीचते, लेकिन नाविको की भाषा में यह "ग्रोग्राहू कश" कनाकाग्रों के लिए एकाध घन्टे को काफी होता है, तब तक कोई दूसरा ग्रादमी ग्रपना पाइप जला लेता है ग्रौर पाइप का दौर फिर शुरू हो जाता है। तीर पर रहने वाले हर कनाका के पास पाइप, चकमक पत्थर, फौलाद का टुकडा, ग्राग बनाने का सामान ग्रौर जैक चाकू जरूर रहता था ग्रौर इन चीजों को वह हरदम ग्रपने साथ रखता था।

ग्रजनबी ग्रादमी को इनके गाने के ढंग पर सबसे ग्रधिक ग्रचरज होता है।

वे एक धीमी, एकरस आवाज में गुनगुनाना शुरू करते हैं; गाते समय उनके होठ और जीभ हिलती नही दिखायी देती और आवाज का उतार-चढ़ाव केवल कन्ठ पर आधारित रहता है। तर्ज कोई खास नही होती और जहा तक मैं समझ पाया हूँ गीत के बोल ज्यादातर फिलबदी होते हैं। वे अपने चारो ओर के लोगो और चीजों के बारे में गाते हैं और जब वे यह नही चाहते कि उनके अलावा उनकी बात कोई और समझे तो इस उपाय का अवलम्ब ले लेते हैं, और इसमें पूरी तरह कामयाब होते हैं, क्योंकि कई बार पूरी कोशिश करने पर भी मुझे उनके गीतों में एक शब्द भी ऐसा नही मिला जिसे मैं जानता रहा होऊं।

मैंने अक्सर मिस्टर मानिनी को, जो उनमे विशेष सिद्धहस्त आशुकलाकार माना जाता था, अमरीकी और अंग्रेज लोगों के बीच एक-एक घन्टे तक अविरत गाते सुना था, और वहां से कुछ दूर मौजूद कनाका लोग जिस तरीके से रह-रह कर ठहाके लगा रहे थे उससे स्पष्ट था कि वह अपने साथ काम मे लगे हुए विभिन्न लोगो के बारे मे गा रहा है। दूसरों की खिल्ली उडाने मे ये लोग माहिर हैं और नकल उतारने मे भी इनका जवाब नहीं हैं। अनेक कनाका लोग हमारे अपने लोगो के खास अदाज का पता लगा कर उसकी नकल उतार कर दिखा देते थे जब कि वे खुद हमारी नजर में भी नही आयी होती थी।

तो, इन्ही लोगों के साथ मुझे कुछेक महीने बिताने थे। अगर अफसरों, फ्राँसीसी निकोलस और मेरे साथी छोकरे को निकाल दें तो तीर की आबादी में कनाका ही कनाका थे। शायद कुत्तो को भी अपवाद मानना ही पड़ेगा क्योंकि वे भी हमारी बस्ती में एक खास दरजा रखते थे। शुरू में आने वाले कुछ जहाज अपने साथ कुत्तो को भी लाये थे, लेकिन बाद में सुविधा के लिए उन्हे किनारे पर छोड गये और वहा उनकी सख्या बढती ही चली गयी।

जिन दिनो मैं तट पर था उन दिनो उनकी संख्या लगभग चालीस थी, और हर वर्ष इतने ही, या इससे भी ज्यादा, कुत्ते डूब कर मर जाते हैं या किसी और तरह से मार दिये जाते हैं। किनारे पर चौकसी रखने मे कुत्तो से बडी मदद मिलती है क्योंकि रात के समय आदिवासी लोग नीचे आते डरते हैं और किसी को गोदाम से आधा मील दूर जाना हो तो सब को जगाये बिना वह ऐसा नही कर पायेगा।

जब बस्ती का पिता सान्बेन मरा तो मैं वहीं था। उसका यह नाम उस जहाज

के ऊपर रख दिया गया था जिसमे वह आया था । वह पूर्णायु प्राप्त करने के बाद मरा था और उसे बड़े सम्मान के साथ दफनाया गया । तीर पर पूर्ववर्णित जीवों के अलावा सूअर और मुर्गिया-मुर्गे भी थे और कुत्तो की तरह यह पशु-धन भी सब का था, यद्यपि इन जीवो पर निशान बने हुए थे और आम तौर पर इन्हे खाना उसी गोदाम मे मिलता था जिसकी ये सपत्ति होते थे ।

तीर पर मुझे कुछ ही घन्टे बीते थे और "पिलग्रिम" अभी पूरी तरह आख से ओझल भी नही हुआ था कि "जहाज हो" की आवाज गूंज उठी और पाइन्ट के पास एक छोटा सा दो मस्तूलो वाला जहाज बन्दरगाह की ओर आता दिखायी दिया । जल्दी ही उसने लगर डाल दिया । यह वही मेक्सिकन जहाज "फेज़ियो" था जिसे हम "सैन पेड्रो" में छोड आये थे । यह यहा पर अपनी चरबी किनारे पर ला कर, उसे पिघला कर साफ करने और नये थैलो मे भरने के बाद कैलिफोर्निया तट छोड देने के विचार से आया था । उन्होने अपना जहाज बांध दिया, किनारे पर पहुंच कर अपनी भट्ठी वगैरह बना ली और अपने रहने व काम करने के लिए एक छोलदारी तान ली । इनके आने मे हमारा समाज बढ गया और हमारी अनेक शामें उनकी छोलदारी में गुजरी । यही हमने अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच, इन्डियन और कनाका भाषाओ की गड्डमड्ड में से कुछ ऐसे शब्द निकाले जिन्हे प्राय. हम सभी लोग समझ लेते थे ।

तीर पर पहुँचने के अगले दिन सुबह ही में खालो को तैयार करने के काम में लग गया । इस काम को समझने के लिए खाल के पूरे इतिहास—अर्थात् जब से बैल के शरीर पर से खाल उतारी जाती है तब से लेकर बोस्टन जाने वाले जहाज में रखे जाने तक की पूरी प्रक्रिया—को समझ लेना जरूरी है । जब बैल के शरीर पर से खाल उतारी जाती है तब उसके किनारों पर छेद कर दिये जाते हैं जिनमें खूंटियां गाड कर खाल को सुखाया जाता है । इस तरह सुखाने से खाल सिकुडती नही ।

इस तरह धूप में सुखायी गयी खालों को जहाज खरीद लेते हैं, और डिपो में ले आते हैं । जहाज उन्हे किनारे पर उतार देते हैं और गोदामों के बाहर उनके बड़े-बड़े ढेर लगा कर छोड जाते हैं । अब चमडा तैयार करने का काम शुरू होता है । सब से पहले उन्हें भिगोया जाता है । इसका तरीका यह है कि रस्सियों की मदद से खालों के छोटे-छोटे गट्ठर बना लिये जाते हैं और निम्न ज्वार के

समय इन गठ्ठरों को समुद्र-तट पर रख दिया जाता है। समुद्र का ज्वार इन तक आता है, और इन्हे भिगो जाता है। हर रोज हम पचीस खालें फी आदमी के हिसाब से भिगोते थे यानो हम छ लोग मिल कर डेढ सौ खालें रोज भिगाते थे। अडतालीस घन्टे भीगने के बाद उन्हे निकाल लिया जाता है, और उन्हे पुलन्दो की तरह गोलाई मे मोड कर कुन्डो मे डाल दिया जाता है। इन कुन्डो में समुद्री पानी मे बहुत सा नमक डाल कर तैयार किया गया घोल मौजूद रहता है। इस घोल का नमक खालो में पहुच जाता है और इसमें वे अडतालीस घन्टो तक पडी रहती है, इससे पहले समुद्र के पानो में तो उन्हे साफ करने और मुलायम बनाने के लिए ही भिगोया जाता है। इन कु डो से निकाल कर खालो को चोबीस घन्टो के लिए एक ऊचे स्थान पर रख दिया जाता है, और इसके बाद उन्हे जमीन पर उतार लिया जाता है, और सावधानी पूर्वक फैला कर उनके छेदो में खूंटियां गाड़ दी जाती हैं ताकि वे ठीक तरीके से सूख सकें।

खू टिया गाड देने के बाद हम उन गीलो और मुलायम खालों पर अपने चाकू संभाल कर बैठ जाते थे और गोश्त व चरबी वाले उन हिस्सों को काट फेंकते थे जिनसे यह डर रहता था कि लम्बी यात्रा में जहाज में ले जाने पर वे सड जायेंगे और दूसरी खालों को भी गला देंगे। इसके अलावा हम कानो और ऐसे दूसरे हिस्सो को भी काट देते थे जिनमे जहाज में खालों को ठूंस-ठूंस कर भरने में दिक्कत पडे। यह हमारे काम का सब से मुश्किल हिस्सा था क्योंकि हर त्याज्य हिस्से को काट फेंकना और खाल को भी कटने या नुकसान न पहुँचने देने के लिए भारी निपुणता की अपेक्षा थी।

यह प्रक्रिया लम्बी भी बहुत थी, क्योंकि एक तो हम छः लोगों को डेढ सौ खालें रोज तैयार करनी पडती थी, दूसरे स्पेनी लोग अपने जानवरों की खालें बडी लापरवाही से उतारते थे इसलिए उनमें हमें बहुत-सा काम करना पडता था। इसके अलावा, चू कि खालें तो खू टियो की मदद से जमीन से चिपकी रहती थी, इसलिए जितनी देर उनकी सफाई होती थी उतनी देर हमें बराबर उन पर झुका रहना पडता था। इसके कारण जो आदमी यह काम शुरू ही करता है उसकी पीठ में दर्द हो जाता है।

पहले दिन मैंने इतने धीमे और बेढंगेपन से काम किया कि मैं दिन भर में आठ खालें ही तैयार कर सका; कुछ दिन बाद में इससे दुगनी खालें तैयार करने

लगा; और पन्द्रह-बीस दिन में ही मैं दूसरे लोगों के कंधे से कन्धा मिला कर काम करने लगा और अपना कोटा—यानी पच्चीस खालो को तैयार करना-पूरा करने लगा।

सफाई का काम दोपहर के पहले ही खत्म हो जाना चाहिए, क्योंकि दोपहर के समय खालें बहुत सूख जाती हैं। जब खालें कुछ घन्टे धूप में सूख चुकती हैं तब उन्हे सावधानी से खुरच दिया जाता है ताकि धूप से पिघल कर जो चरबी ऊपर आ गयी है उसे निकाल दिया जाय। इसके बाद खूंटिया निकाल ली जाती हैं, और खालो को सावधानी से मोड कर दुहरा कर लिया जाता है। उनका बालों वाला किनारा बाहर की ओर रखा जाता है। अब उन्हे सूखने के लिये छोड दिया जाता है। तीसरे पहर के बाद उन्हे उलट दिया जाता है और सूर्यास्त के समय उनके ढेर बना कर उन्हे ढक दिया जाता है। अगले दिन उन्हे फिर से खोल कर फैलाया जाता है, और अगर रात को वे पूरी तरह सूख जाती हैं तो उन्हे (एक बार में पाँच खालो को) एक (क्षैतिज) पडे बास पर डाल कर मूगरियो से पीटा जाता है जिससे उनकी सारी धूल निकल जाती है। इस तरह, नमक लगाने, खुरचने, साफ करने और पीटे जाने की प्रक्रिया से गुजरने के बाद, इन खालों को गोदाम में रख दिया जाता है। इनके इतिहास का यही अन्त है हाँ, इतना और समझ रखना चाहिए कि जब जहाज घर रवाना होने के लिए तैयार हो जाता है तब इन खालों को फिर से निकाला जाता है, फिर से पीट कर इन्हें झाडा जाता है और तब जहाज में भर कर बोस्टन पहुंचाया जाता है, जहाँ इन्हें कमाने के बाद इनसे जूते और चमड़े की दूसरी चीजें बनायी जाती हैं; और शायद इन्ही में से अनेक खालें जूतों की शक्ल में कलिफोर्निया लौट आती हैं, और दूसरे बैलों को पकडने या दूसरी खालो को तैयार करने में ये फिर काम आ जाती हैं।

प्रति दिन भीगने के लिए डेढ सौ खालें रखने का मतलब यह हुआ कि चमडा तैयार करने की हर स्थिति में हमारे पास डेढ सौ खालें रहती थी, इसका मतलब यह हुआ कि हर रोज हमें इतनी ही खालों पर इतना ही काम करना पडता था। हम नित्य प्रति डेढ़ सौ खालें भिगोते थे; डेढ़ सौ खालों को धोकर कुन्डों में डालते थे; फिर डेढ सौ खालों को कुन्डो से निकाल कर चबूतरे पर रख देते थे ताकि उनका पानी टपक सके; फिर डेढ़ सौ खालों को फैलाकर उनमें खूंटियां गाड कर उनकी सफाई करते थे, और फिर डेढ़ सौ ही खालों को मूंगरियों से पीट कर उन्हे

गोदाम में रखते थे। हां इसमें रविवार अपवाद था क्योंकि वर्षों से तौर पर काम करने वालों को इस दिन छुट्टी दी जाती रही है; और अभी तक इस प्रथा को तोडने की हिम्मत किसी कप्तान या एजेन्ट ने नही की है। शनिवार की रात को खालें जिस अवस्था में भी हो उसी में उन्हें सावधानी पूर्वक ढक कर रख दिया जाता है और सोमवार की सुबह से पहले उन्हे कोई नही खोलता। रविवार को हमारे पास करने के लिए कोई भी काम नही होता था। हां, एक सप्ताह में हमारे लिए एक बैल भेजा जाता था, और कभी-कभी वह रविवार को भी आ जाता था, तब हमें उसे मारने का काम जरूर करना पडता था।

इस व्यवस्था की एक अच्छाई यह भी थी कि अगर हम कम समय में अपना नियत काम पूरा कर लें तो बाकी समय को हम मनमाने ढङ्ग से बिताने के लिए आजाद थे। इससे हम जी-जान लगाकर काम करते थे, और अफसर को हमसे कहने-सुनने या काम पर लगाने की जरूरत नही पडती थी। रोज सुबह को सवेरे ही हम काम के लिए निकल पडते थे और आठ बजे के लगभग कुछ समय नाश्ता करने के अलावा बराबर काम मे लगे रहते थे। एक-दो बजे के लगभग हम अपना काम खत्म कर लेते थे, और अपना डिनर लेते थे। अब सूर्यास्त तक का समय हम मनचाहे ढङ्ग से गुजारने के लिए आजाद रहते थे। सूर्यास्त से कुछ ही पहले हम सूखी हुई खालो को पीट कर उन्हे गोदाम में रख देते थे, और बिना सूखी खालों को ढक देते थे। इस प्रकार रोज तीसरे पहर के समय लगभग तीन घन्टे हम मनमाने ढग से गुजारने के लिए आजाद थे; और सूर्यास्त के समय सपर खाने के बाद हमारा दिन का काम खत्म हो जाता था। यहाँ न पहरा देने का झंझट था और न शिखर पाल छोटे करने का बखेड़ा।

शामें हम अक्सर एक-दूसरे के गोदामो में बिताया करते थे, और मैं अक्सर एकाध घटे के लिए भट्ठी पर भी हो आता था जो "कनाका होटल", और "ओआहू काफी हाउस" के नाम से विख्यात हो चुकी थी। डिनर के ठीक बाद हम एक हल्की सी झपकी लेते थे ताकि सवेरे उठने की कमी पूरी हो जाय और तब बाकी समय इच्छानुसार बिताते थे। मैं आम तौर पर पढता-लिखता था या नये कपडों को सीने अथवा पुराने कपडों की मरम्मत में लगा रहता था क्योंकि आविष्कार की जननी आवश्यकता ने मुझे ये दोनो अन्तिम कलाए सिखा दी थी। कनाका लोग भट्ठी पर चले जाते थे और अपना समय सोने, गप लडाने और धूम्रपान करने में

बिताते थे। मेरा साथी निकोलस लिखना-पढ़ना नही जानता था; इसलिए वह पहले तो एक लम्बी झपकी लेता था, फिर दो-तीन बार पाइप पीता था और इसके बाद दूसरे गोदामों तक चहलकदमी कर आता था।

अवकाश के इस समय में कोई व्यवधान उपस्थित नहीं होता क्योकि कप्तान जानते हैं कि ये मजदूर खून-पसीना एक करके अवकाश के इन क्षणों को अर्जित करते हैं। अगर कप्तान इस समय को उन्हें इच्छानुसार न बिताने दें तो आदमी बड़ी आसानी से पच्चीस खालें फी आदमी तैयार करने के काम में पूरा दिन निकाल सकते थे। हमें आजादी भी काफी मिली हुई थी क्योकि खालें तैयार करने के समय के अलावा गोदाम का अध्यक्ष...कैप्टेन डी ला कासा...हमसे कुछ नही कहता था, और यद्यपि हम उसकी इजाजत के बिना कस्बे में नही जा सकते थे लेकिन अनुमति माँगने पर वह शायद ही कभी हमें मना कर सकता था।

इस काम में कई ऐसी बातें थीं जो इसे अकरणीय और थका देने वाला बना देती थी, मिसाल के तौर पर पुलन्दे की तरह मोड़ने के लिए गीली खालो को ढोना, खूंटियों के सहारे जमीन पर फैली खालों की सफाई करते समय उन पर बराबर झुके रहना, खालो को दबाने के लिए दुर्गंधपूर्ण कुन्डों में घुटनों-घुटनो धंसना आदि का उल्लेख किया जा सकता है। लेकिन जल्दी ही हम इस सब के अभ्यस्त हो गये, और इस काम में हमें जो आजादी मिली थी उसके कारण हम इससे सन्तुष्ट हो गये। यहां हमें पेल मारने वाला या हमारे काम में मीन मेख निकालने वाला कोई न था; और काम खत्म कर चुकने के बाद मुंह-हाथ धोकर और कपड़े बदलने के बाद हम अपने वक्त के खुद मालिक थे।

हाँ, अपने वक्त के मालिक बनने का एक अपवाद था। हर सप्ताह में दो दिन तीसरे पहर के समय हमें रसोइए के लिए लकडी लाने जाना पडता था। सैन डियेगो के इलाके में लकडी की बडी कमी है। मीलों तक किसी भी तरह का कोई पेड़ ही नहीं है। कस्बे में लोग झाड-झंखाड जला कर अपना काम चलाते हैं। यह झाड-झंखाड लाने के लिए कस्बे के लोग कुछ-कुछ दिनों के बाद इंडियन आदिवासियों को बडी मात्रा में भेजते रहते हैं। सौभाग्य से यहां की जलवायु इतनी उत्तम है कि घरों को गर्म रखने के लिए आग की जरूरत नहीं पडती, बल्कि उसकी जरूरत केवल खाना पकाने के लिए पडती है। लकडी लाने में हमें बडी कठिनाई आयी क्योंकि घरों के आस-पास के झाड़-झंखाड तो पहले ही काट लिये गये थे। हमें

एकाध मील दूर से ये झाड-झखाड लाने पड़े और कुछ दूर तक तो इन्हें अपनी पीठ पर ही ढोना पडा क्योंकि पहाडियों और ऊंची-नीची जगहों पर ठेला ले जाना मुश्किल था।

हफ्ते मे दो दिन, आम तौर पर सोमवार और बृहस्पतिवार को, दोपहर के बाद डिनर खाते ही हम लोग झाड-झखाड की तलाश में चल देते थे। हर आदमी के पास एक कुल्हाडी और रस्सी होती थी। हम ठेले को घसीटते हुए ले जाते थे और बस्ती के सारे कुत्ते हमारे साथ हो लेते थे। कुत्ते इस मौके पर हमारे साथ जाने के लिए तैयार रहते थे और जब हमें जाने की तैयारियों में लगा देखते थे तो पागल-से हो जाते थे। जहा तक हो सकता था वहा तक हम ठेले को घसीटते हुए ले जाते थे, और फिर उसे एक खुली और ऊची-सी जगह में छोड कर हर आदमी औरो से अलग होकर कोई अच्छी जगह देख कर झाड-झंखाड़ काटने की शुरूआत करने के इरादे से अपने रास्ते पर चल देता था। अक्सर हमें ठेले से एक मील दूर निकल जाना पड़ता था, तब कही हमें अच्छी जगह मिल पाती थी।

किसी अच्छी जगह पहुँच कर हमें पहले तो नीचे के झाड-झंखाड का सफाया करना पडता था और उसके बाद पेडों पर जम कर कुल्हाडी बजानी पडती थी। अक्सर ये पेड पाँच-छः फुट से ज्यादा ऊचे नही होते थे, और इस काम के दौरान मैंने बारह फुट से ऊचा एक भी पेड नही देखा। नतीजा यह होता था कि टहनियो और झाड झखाड को काटने के बाद हमें बहुत थोडी लकडी के लिए बहुत अधिक मेहनत करनी पडती थी। जब एक खेप लकडी हो जाती थी तब हम रस्सी से बांध कर उसका गट्ठा बनाते थे और गट्ठे को अपनी पीठ पर लाद कर, कुल्हाड़ी से लाठी की तरह चढने-उतरने में सहारा लेते हुए ठेले तक पहुँचते थे।

हर आदमी की दो खेपो से ठेला भर जाता था, और हर आदमी को इतना ही काम करना भी पडता था। लिहाजा, जब हर आदमी अपना दूसरा गट्ठा ले आता था, तब हम लकडी ठेले में भर लेते थे और उसे ठेलते हुए धीरे-धीरे समुद्र तट की ओर चल देते थे। प्रायः हमारे लौटते-लौटते सूरज छिप जाता था और लकड़ी उतार कर हम रात भर के लिए खालों को ढक देते थे। इसके बाद हमें सपर मिलता था और दिन का काम खत्म।

लकडी की तलाश में हमारे इस तरह निकलने में एक तरह का खुशी का पुट मिला रहता था। जंगलों में हाथ में कुल्हाड़ी लिए घने जंगलो के लकड़हारों

की तरह घूमना, साथ में कुत्तों की सेना; चिड़ियो, साँपों, खरगोशों और लोमड़ियों का हमें देखते ही भाग पड़ना; अनेक पेड़ो, फूलो और चिड़ियो के घोसलों के बारे में जाच करना—जहाज से किनारे पर और किनारे से जहाज पर आने-जाने के एकरस क्रम से यह सब-कुछ कही मनोरंजक और नवीनता लिये था ।

अक्सर मनोरंजक और साहसपूर्ण करतब देखने का भी अवसर हमें मिलता रहता था । कोएटी के बारे में मैं पहले भी लिख चुका हूँ । ये छोटे खूंख्वार जंतु लोमड़ी और भेड़ियों के बीच के होते हैं । इनकी पूंछ झबरीली और सिर बड़े होते हैं । इनकी आवाज तेज और तीखे सुर में भौकने जैसी होती है । कैलिफोर्निया के सभी भागों की तरह यहा भी इनकी बहुतायत थी । कुत्ते इन जंतुओं की ताक में खास तौर पर रहते थे, और इन्हे देखते ही पूरी रफ्तार में इनके पीछे दौड़ पड़ते थे ।

हमने अनेक बार इस दौड़ का आनन्द लिया, और यद्यपि हमारे कुत्ते बहुत तेज दौड़ते थे लेकिन आम तौर पर ये बदमाश जंतु बच कर निकल ही जाते थे । एक कोएटी एक कुत्ते की टक्कर की होती है लेकिन चूंकि कुत्ते अक्सर झुन्ड बना कर जाते थे इसलिए उनमें धर्मयुद्ध बहुत कम हो पाता था । एक बार हमारे एक छोटे से कुत्ते ने अकेले ही एक अकेली केओटी के ऊपर हमला किया था । लड़ाई में केओटी ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया, और अगर हम कुत्ते की मदद न करते तो शायद वह मर ही जाता । हाँ, हमारे पास एक शानदार, ऊंचा कुत्ता ऐसा जरूर था जो उन्हे काफी तंग करता था और बुरी तरह दौड़ाता था । ताकत और फुर्ती का जैसा मणि-काँचन संयोग मैंने उसमें देखा वैसा किसी दूसरे कुत्ते में नही देखा ।

वह सैंडविच द्वीपसमूह में पैदा हुआ था । उसका बाप इंग्लिश मेस्टिफ था, और मां ग्रेहाउंड । अपनी मा की तरह उसका सिर ऊंचा, पाँव लम्बे, शरीर छरहरा और चाल मस्त; और अपने बाप की तरह उसका जबड़ा भारी, गाल मोटे और सीना मजबूत था । जब उसे पहले पहल सैन डियागो लाया गया तो एक अंग्रेज मल्लाह ने जिसने ड्यूक आफ वेलिंगटन को एक बार टावर में देखा था, कहा था कि यह बहुत कुछ ड्यूक आफ वेलिंगटन से मिलता-जुलता है, और वाकई वह ड्यूक के चित्रों से कुछ मेल खाता था । तभी उसका नाम "वेली" रख दिया गया और वह सब का मुंह लगा और किनारे पर का सब से शैतान कुत्ता बन गया । केओटी

जतुओ का पीछा करते हुए कुत्तों में वह अन्य कुत्तों से कई गज आगे निकल जाता था और दो बार धर्मयुद्ध में उसने इन दो जतुओ का काम तमाम कर दिया था।

अक्सर इनकी वजह से हमारा अच्छा मनोरजन हो जाता था। केओटी की तेज तीखी आवाज सुनी नही कि अगले ही क्षण हर कुत्ता उस दिशा में हवा हो जाता था। अगर कोई तेज दौडने वाला कुत्ता कुछ क्षण बाद भागता था तो वह कुछ ही देर मे यह कमी पूरी कर लेता था और सब कुत्ते अपनी सही स्थिति में आ जाते थे। सब से आगे वेली रहता था जो झाडियो को फलागता-सा दिखायी देता था, उसके पीछे फैनी, ब्रेवो, चाइल्टर्स और दूसरे स्पेनियल व टेरियर कुत्ते रहते थे और अन्त में बुलडाग आदि भारी-भरकम कुत्ते रहते थे, क्योंकि हमारे पास लगभग हर नस्ल के कुत्ते मौजूद थे। उनकी तलाश में हमारा निकलना बेकार होता था, और कोई आधे घन्टे में ही हांफते हुए और एक-एक दो दो करके कुछ कुत्ते वापस लौट आते थे।

केओटी के अलावा कुत्ते कभी-कभी खरगोशों को भी पकड लेते थे जो वहा बहुतायत से पाये जाते थे और जिनमें से बहुतों को हम डिनर के लिए मार लेते थे। एक और भी तरह के जीव यहाँ थे, लेकिन उनसे मेरा मनोरजन नही होता था। ये थे रैटल सांप जो यहा, खास तौर पर बसन्त के मौसम में, प्रचुरता से पाये जाते थे। जिन दिनों मैं तौर पर था, उस दौरान अन्तिम दिनों में तो इन सांपों से मेरा ज्यादा मुचाटा नही हुआ, लेकिन शुरू के दो महीनों में तो हम जब झाडी में घुसते थे तब प्राय हर बार हमारे किसी न किसी साथी की आहट पा कर भागते हुए रैटल सांप दिखायी पडते थे।

रैटल सांप से अपनी पहली मुलाकात की बाबत मुझे बखूबी याद है। अपने साथियों से जुदा होकर मैंने पेडों के एक शानदार झुरमुट को साफ करना शुरू ही किया था कि तभी अपने से कोई आठ गज दूर झुरमुट के बीचों-बीच मैंने देखा कि एक रैटल साप बैठा फूत्कार कर रहा है। उसकी फूत्कार एक तरह की तीखी और निरंतरित ध्वनि है जो अगन बोट के छोटे पाइप में से निकलने वाली भाप की आवाज से मिलती-जुलती होती है। फर्क यह है कि साप की आवाज उससे कम होती है। कुल्हाडी की आवाज सुन कर मैं समझ गया कि मेरा कोई साथी पास ही काम कर रहा है और मैंने उसे आवाज देकर बुलाया कि देखना यह क्या बला है?

उसका व्यवहार ऐसा था जैसे कुछ हुआ ही न हो, और चूंकि वह मेरे भय-भीत हो उठने के कारण मेरा मज़ाक उडाने पर आमादा था इसलिए मैंने अपनी जगह से न हटने का फैसला किया। मुझे मालूम था कि जब तक मुझे इसकी आवाज सुनाई दे रही है तब तक मुझे कोई खतरा नही है क्योकि जब ये साप चलते हैं तो जरा भी आवाज नही करते। लिहाजा, मैं काम पर लगा रहा और पेडों को काटने मे जो आवाज हो रही थी उसके कारण सॉप भी चोकन्ना रहा। इस प्रकार उसकी आवाज बराबर मुझे उसके हाल चाल बताती रही।

एकाध बार कुछ समय के लिए उसकी आवाज बन्द हुई और मैं कुछ परेशान सा हो उठा। कुछ कदम पीछे हट कर मैंने झाडी की ओर कोई चीज फेंकी जिससे वह फिर आवाज करने लगा और उसे अपनी पहली जगह पर यथावत देखकर मुझे राहत मिली। इस तरह मैं अपने काम पर जुटा ही रहा। अन्त में मैंने एक गट्ठे के लायक लकडियाँ काट ली। इस बीच मैंने उसे चुप होने का मौका नही दिया था। लकडियाँ काटने के बाद मैंने उन्हें बाधकर गट्ठा बनाया और चलने की तैयारी पूरी कर ली। अब मुझे महसूस हुआ कि अगर मैं और लोगो को बुलाऊ तो वे यह नही समझेंगे कि मैं डर कर उन्हे मदद के लिए पुकार रहा हूँ। लिहाजा, मैं उनकी तलाश मे निकल पडा। कुछ ही मिनटो में हम सब इकट्ठा हो गये और हमने झाडी पर धावा बोल दिया।

पहले जिस आदमी को मैंने मदद के लिए बुलाया था, और जिसने मेरा मजाक उडाया था, वह वही भीमकाय फ्रांसीसी निकोलस था जिसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। अब मैंने देखा कि साप के नजदीक जाने की हिम्मत उसकी भी नही हो रही है। लगता था कुत्ते भी साप से डर गये थे क्योंकि वे दूर से ही उस पर भौंक रहे थे; लेकिन कनाका लोग नही डरे। वे लम्बी लकडियाँ लेकर झाडी में घुस गये और सावधान रहते हुए उससे कुछ फुट की दूरी पर जा खड़े हुए। जब उसके पास ही जमीन पर दो-चार बार लकडी फटकारी गयी और दो-चार पत्थर उसकी ओर फेंके गये तब वह भाग खडा हुआ और हमारी आखों से ओझल हो गया। अब यह सोच कर सबकी नानी मरने लगी कि कही साप उसी के पाव के नीचे न आ जाये।

हमने भिन्न-भिन्न दिशाओं में पत्थर फेंके जिससे उसने फिर से फुंकार भरना शुरू कर दिया। हमने फिर उस पर हमला बोल दिया। इस बार हम उसे साफ

जमीन में खदेड लाये । वह अपना सिर और पूंछ ताने, फिसलता हुआ चला जा रहा था कि हममें से किसी ने निशाना साध कर उस पर एक पत्थर मारा । तब तक वह पन्द्रह-बीस फुट गहरे एक खड्ड के किनारे पर पहुच चुका था । पत्थर लगते ही वह वही ढेर हो गया । कुछ और पत्थर मारने पर जब वह नही हिला, और हमें उसके मरने का निश्चय हो गया तब हम नीचे उतरे और एक कनाका ने उसकी पूछ में से "खड-खड" करने वाला यंत्र काट लिया । सभी साँपों में इन यत्रो की सख्या एक सी नही होती बल्कि उनकी सख्या साप की उम्र पर निर्भर है; यद्यपि इन्डियन आदिवासियो का विश्वास है कि यह सख्या इस बात पर निर्भर करती है कि वह साप कितने जीवो की हत्या कर चुका है ।

हम इन यत्रो को ट्राफी की तरह सुरक्षित रखते थे, और गरमियाँ खत्म होने तक हमारे पास ये काफी तायदाद में जमा हो गये ।

किसी साप ने हमारे किसी साथी को नही काटा, लेकिन हमारा एक कुत्ता साप के काटने से मर गया था, और एक और कुत्ते के बारे में लोगो का खयाल था कि उसे साप ने काट लिया है, यद्यपि वह बच गया । हमारे पास सर्पदंश की कोई दवा नही थी, यद्यपि यह कहा जाता था कि उस प्रदेश के इन्डियन आदिवासियो के पास इसकी दवा है । कनाका लोगों का कहना था कि उनके पास भी सर्पदंश की एक जडी है, लेकिन सौभाग्य से उसकी आजमाइश की जरूरत ही नही पडी ।

जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, यहाँ खरगोशों की बहुतायत थी और सर्दियो में तालाब और झीलें जंगली बत्तखो और हसों से भर जाती थी । कौए भी बडी तायदाद मे थे और अक्सर हमारी खालों पर टूट कर सूखे गोश्त और चरबी के टुकडो को चट कर जाते थे । ऊचे और अन्दर के इलाको में अनेक भालू और भेडिये थे (और हमारे वहाँ रहने के दौरान सैन पेड्रो से कुछ ही मील दूर पर एक भालू ने एक आदमी को मार दिया था) लेकिन हमारे आस-पास के इलाके में उनका अभाव था ।

इन जीवो के अलावा वहाँ घोडे थे । एक दर्जन से अधिक घोडों के मालिक तीर पर ही रहते थे । इनके मालिक घोडो के एक लम्बी रस्सी बाँध कर पहाडियों पर खुला छोड़ देते थे और वे जो मिल जाता था उसी को खा कर अपना पेट भर लेते थे । हमें वे एक बार जरूर दिखायी देते थे, क्योकि पहाड़ियो पर कही भी

पानी नही था, और उन्हें प्यास बुझाने के लिए तीर पर खोद कर बनाये गये कुए पर आना पडता था।

इन घोडो को दो से लेकर छः—आठ डालर तक खरीद कर लाया गया था और एक बडी हद तक उनका उपयोग सार्वजनिक सपत्ति के रूप में होता था। आम तौर पर हम किसी गोदाम पर एक घोड़े को बांधे रहते थे ताकि जरूरत पडने पर उस पर चढ कर जायें और दूसरे घोडो को पकड सकें। कुछ घोडे तो वाकई बहुत शानदार थे और दुर्ग तक, या देहात में, जाने के लिए बहुत बढिया सवारी का लुत्फ देते थे।

* * *

अध्याय २०

कुछ हफ्ते किनारे पर रहने के बाद हम, अपनी जिन्दगी की नियमितता के कारण, टूटा हुआ महसूस करने लगे थे कि प्रतिवात दिशा से दो जहाजो के पहुँच जाने से हमारे जीवन की एकरसता टूट गयी। जब हमें "जहाज हो" की आवाज सुनायी दी तब हम अपने छोटे से कमरे में डिनर ले रहे थे। हम लोग समझ गये थे कि इसका मतलब हमेशा जहाज से ही नही हुआ करता, बल्कि जब कस्बे की ओर से कोई औरत; या कोई अमरीकी इन्डियन औरत, आती हुई दिखाई देती थी, कोई बैलगाडी या सडक पर कोई और असामान्य चीज दिखाई देती थी तो भी इसी तरह की आवाज की जाती थी, इसलिए हमने इस पर ध्यान नही दिया। लेकिन जल्द ही यह आवाज इतनी बुलन्द और आम हो गई कि हम लोगो को दरवाजे तक आना पडा और अब इस बात में कोई सन्देह नही रह गया था कि पाइन्ट पर दो जहाज़ मुड रहे थे। रोज तीसरे पहर तट से बहने वाली तेज उत्तरी-पश्चिमी हवा के कारण उन दोनो जहाजों के पाल झुके जा रहे थे। आगे एक पूरा जहाज था और पीछे दो मस्तूलों वाला एक जहाज।

तीर पर हर आदमी में जान आ गई थी और तरह तरह से अटकल लगायी जाने लगी थी। कुछ का कहना था कि दो मस्तूलों वाला जहाज "पिलग्रिम" है जिसके साथ बोस्टन का वह जहाज है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन, जल्दी स्पष्ट हो गया कि दो मस्तूलों वाला जहाज "पिलग्रिम" नहीं है, और जहाज जिसके टापगैलेंट मस्तूल ठूंठ जैसे थे और जिसके पहलुओं में मोर्चा लगा हुआ था, बोस्टन का सजीला जहाज नहीं हो सकता।

एक डच, एक आस्ट्रियाई, दो या तीन स्पेनी, (पुराने स्पेन के), आधे दर्जन स्पेनी-अमरीकी और वर्णसंकर स्पनी, चिली और चिलाई द्वीप के दो इन्डियन आदिवासी, एक नीग्रो, एक मुलैटो (गोरे और हब्शी की संकर सन्तान), इटली के लगभग हर हिस्से के करीब बीस इटालियन, लगभग इतने ही सैंडविच द्वीपसमूह के निवासी, एक ओटेहीटन और मार्विवस द्वीप का एक कनाका ।

जिस दिन ये जहाज रवाना होने वाले थे उससे पहली रात को सभी यूरोपीयों ने "रोजा" के गोदाम पर मनोरजन का एक कार्यक्रम रखा और हम लोगो ने हर राष्ट्र और हर भाषा के गीत सुने । एक जर्मन ने हमें "आख ! मीन लाइबर आगस्टिन !" गीत सुनाया, तीनो फ्रासीसियो ने कडकती आवाज़ में फ्रांस का राष्ट्रीय गान सुनाया; अंग्रेजों और स्काटो ने "रूल ब्रिटैनिया" और "हूँ विल बी किंग बट चार्ली ?" सुनाया, इटालियनों और स्पेनियो ने बडी सुरीली आवाज में कोई राष्ट्रीय गीत गाया, जो मेरी समझ में नही आया, और हम तीनों यांकियो ने "स्टार स्प्रैंगल्ड बैनर" गाया ।

इन राष्ट्रीय गीतो के बाद आस्ट्रियाई नाविक ने बहुत सुन्दर प्रेम-गीत सुनाया और फ्रासीसियो ने बडे जोश के साथ "सेन्तीनेला ! ओ प्रेनेज गार्दे अ वाउ" "शीर्षक गीत सुनाया और इसके बाद, जैसी कि आशा थी, अपनी-अपनी डफली अपना अपना राग होने लगा । जब मैं उनसे अलग हुआ तब उन सबको गहरा नशा-सा हो गया था, और वे सभी एक साथ ही गाने गा रहे थे और बातें कर रहे थे और बात-बात पर अपनी विशेष राष्ट्रीय कसमों का प्रयोग कर रहे थे ।

दूसरे दिन दोनों जहाज प्रतिवात दिशा में चल पड़े, और खामोश तीर को हमारे अधिकार में छोड गए । नए गोदामों के खुलने से हमारी सख्या कुछ बढ़ सी गई थी, और तीर के समाज में कुछ परिवर्तन हो गया था । "कैटैलिना" के गोदाम का अध्यक्ष एक बूढा स्काट था, जो अपने देश के अधिकाश लोगो की तरह काफी पढा-लिखा और उनमें से अनेक की तरह आत्मलीन और अत्यन्त अहकारी था । वह अपना समय अपने सूअरो, मुर्गियों, टर्कियों, कुत्तों आदि की देखभाल करने और पाइप पीने में बिताता था । उसके गोदाम में इतनी सफाई रहती थी कि कहीं एक तिनका भी नही पाया जा सकता था, और वह कालमापी की तरह अपने समय का पाबन्द था, लेकिन चूं कि वह किसी से बोलता-चालता नही था, इसलिए उससे हमारे समाज में कोई बहुत बड़ा इजाफा नहीं हुआ । जब तक वह तीर पर

रहा तब तक उसने एक दमडी खर्च नहीं की, और दूसरे लोगो का ख्याल था कि वह अच्छा साथी मल्लाह नही था। वह ब्रिटेन के युद्धपोत "डबलिन" जिसका कप्तान लार्ड-जेम्स टाउनशेड था, पर एक अदना सा अफसर रह चुका था, और वह अपने को बहुत बडा आदमी समझता था।

"रोजा" के गोदाम का अध्यक्ष जन्म से आस्ट्रियाई था, लेकिन वह बड़ी आसानी से और सही-सही चार भाषाए पढ, लिख और बोल लेता था। जर्मन उसकी मातृभाषा थी, लेकिन इटली की सरहद के पास पैदा होने के कारण और जिनेवा तक नौचालन करने के कारण इटालियन भी उसके लिए मातृभाषा जैसी ही हो गई थी। वह छः वर्ष तक एक अंग्रेजी युद्धपोत पर रह चुका था जहा उसने हमारी भाषा सीख ली थी, और अब बिना किसी कठिनाई के उसे बोल, पढ़ और लिख सकता था। वह कई सालो तक स्पेनी जहाजों पर भी रहा था, और उस भाषा का इतना अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि वह उस भाषा की कोई भी पुस्तक पढ सकता था। उसकी उम्र चालीस-पचास के बीच में थी और उसमें युद्ध-पोत के नाविक और प्यूरिटन (शुद्धतावादी ईसाई) का अनूठा मिश्रण था। वह प्राय: शिष्टाचार और दृढता की बात करता रहता था और नौजवानो को तथा कनाका लोगों को सत्परामर्श दिया करता था लेकिन ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि वह कस्बे की तरफ गया हो, और वहां से जब नशे में धुत होकर न लौटा हो। एक बार छुट्टी के दिन वह और बूढ़ा राबर्ट ("कैटलिना" का अध्यक्ष स्काट) कस्बे की ओर गए, और अपनी पुरानी कहानियो की चर्चा करते हुए और एक दूसरे को सत्परामर्श देते हुए परस्पर इतने आत्मीय हो उठे कि दोनों एक ही घोडे पर सवार होकर वापस लौटे और तीर पर आकर जैसे ही घोडा रुका वे दोनों बालू में लुढक गए। इस घटना के बाद उन्होंने बनना बन्द कर दिया और बाकी मल्लाह तो इस घटना का जिक्र करते थकते ही न थे।

"रोजा" के गोदाम पर होने वाले मनोरंजन की रात को मैंने बूढे श्मिट (उस आस्ट्रियाई का यही नाम था) को एक पीपे के पास खडा देखा था, जिसे वह दोनो हाथो से पकड कर स्वय को सबोधित करके कह रहा था—"बस इसे पकडे ही रहो श्मिट! पकडे रहो मेरे दोस्त, नही तो चारों खाने चित्त हो जाओगे!" फिर भी वह एक जहीन और अच्छे स्वभाव का बुजुर्ग आदमी था, और उसके पास किताबो से भरी पूरी एक पेटी थी, जिन्हे उसने बडी खुशी से मुझे पढ़ने को दिया।

इसी गोदाम में उसके साथ एक फ्रांसीसी, और एक अंग्रेज रहते थे; इनमें से दूसरा युद्धपोत पर रह चुका था और एक मँजा हुआ नाविक था, वह दिलेर और उदार किस्म का आदमी था; लेकिन इसके साथ ही साथ पक्का पियक्कड और लम्पट कुत्ता भी था। उसने पखवाड़े मे एक बार शराब पीकर मतवाला होने (जब वह हमेशा सडक पर सो रहता था और उसके पैसे कोई भी चुरा ले जाता था।), और हफ्ते में एक बार फ्रासीसी से झगडने का नियम सा बना लिया था। ये लोग, चिली का एक निवासी और आधे दर्जन कनाका—हमारी मंडली में यह बढोतरी हो गयी थी।

"पिलग्रिम" के जाने के वाद लगभग छः सप्ताह के भीतर हम लोगो ने उन सारी खालो को तैयार कर दिया और उन्हे सभाल कर रख दिया था जो वह हमारे पास छोड गया था। जमीन को साफ करने, हौजों को खाली करने और हर चीज को ठीक-ठाक करने के बाद हम खाली हो गये। अब जहाज के लौटने तक लकडी जुटाने के अलावा हमारे पास कोई काम न था।

इस काम के लिए हफ्ते में दो बार जाने के बजाय अब हम लोगों ने पूरा एक हफ्ता खर्च करने का निश्चय किया, ताकि हमारे पास इतनी लकडियां इकट्ठी हो जाएं कि आधी गर्मी तक चल जाएं। लिहाजा हम लोग सबेरे ही नाश्ता करके हर अपनी कुल्हाडी हाथ में लेकर चल देते, और तब तक लकडी काटते रहते थे जब तक सूरज पाइन्ट के पीछे नही पहुंच जाता था,—हमारे पास समय की यही एक पहचान थी, क्योंकि तीर पर किसी के पास घडी नहीं थी — और तब हम लोग डिनर खाने लौटते थे; और डिनर के बाद अपना ठेला और रस्सियां लेकर फिर चल पडते थे, और पीठ व ठेले पर लाद कर सूर्यास्त तक लकडी लेकर वापस आ जाते थे।

यह क्रम हमने एक हफ्ते तक चलाया और अंततः हम लोगो ने लकड़ी के बहुत सारे गट्ठे—हम लोगो का छः से आठ हफ्ते तक का काम चलाने भर को काफी—इकट्ठे कर लिये। इसके बाद हम लोगो ने इस काम से भी छुट्टी पाई, और इससे मुझे बेहद खुशी हुई, क्योंकि यद्यपि मुझे जगल में इधर उधर भटकना और लकडी काटना बहुत पसन्द था, फिर भी इतनी दूरी तक नीची-ऊची जमीन पर पीठ पर लकडी लाद कर चलना, निःसन्देह मेरे जीवन का सबसे कठिन काम था। मजबूती से बधे गट्ठे को अपनी पीठ पर लादने के लिए मुझे अक्सर घुटनों के बल बैठ कर जोर लगाना पड़ता था। इसके बाद मैं खडा होकर उसे पीठ पर

लादे पहाड़ियों पर और घाटियों में, और कभी-कभी झाड़ियों से होकर, ऊपर चलना पड़ता था—उनकी नोक चमड़ी में चुभ जाती थी और कपड़ो को फाड़ देती थी। हालत यह थी कि हफ्ते के अन्त तक मेरे पास शायद ही कोई कमीज साबुत बची हो।

अब हमने अपना सारा काम खत्म कर लिया था और "पिलग्रिम" के लौटने तक हमारे पास कोई काम नही रह गया था। काम के साथ-साथ हमारी रसद भी चुक सी गयी थी, क्योंकि हमारा अफसर रसद की बहुत बर्बादी करता था, और चाय, आटा, चीनी और शीरा सब खत्म हो गया था। हम लोगों को शक था कि वह रसद को कस्बे में भी भेजता था, और जब कभी तीर पर अमरीकी इन्डियन औरतें आती थी तब वह सदा शीरे से उनकी आवभगत करता था।

गेहूँ की काफी और रुखी रोटी पर गुजर होता न देखकर हम लोगो की मंडली ने एक योजना बनायी, और उसके मुताबिक मैं घोड़े पर सवार होकर और जीन के पीछे एक बोरा बांध कर और अपनी जेब में कुछ रीयल रखकर कस्बे की ओर गया और वहां से बोरे में प्याज, नासपाती, फलियां, खरबूजे और दूसरे फल लेकर लौटा, बागबानी करने वाली युवती ने, यह जान कर कि मैं अमरीकी जहाज का नाविक हूँ और हम लोगों के पास रसद की कमी पड़ गई है, मुझे दूनी चीजें दे दीं। इसके भरोसे हम लोग एक या दो हफ्ते तक लड़ाकू मुर्गों की तरह अकड़ कर खाते पीते रहे, और खर्राटे भर कर सोते रहे और सुबह के समय हम लोग तब तक बिस्तर नहीं छोड़ते थे जब तक हमारा नाश्ता तैयार नही हो जाता था।

मैंने अपने बक्स की हर चीज को ठीक करने और अपने सारे कपड़ों की मरम्मत करने में कई दिन लगाये, आखिरकार मेरी हर चीज बिल्कुल व्यवस्थित हो गई—उनमें किसी बजरे के पाल की तरह पैबन्द पर पैबन्द लगे हुए थे। तब मैंने बोडिक रचित "नेविगेटर" को उठाया जिसे मैं हमेशा अपने साथ रखता था। मैं इसका आधे से अधिक भाग पढ़ चुका था और अब मै इसे आरंभ से अन्त तक बडी सावधानी से पढ गया और इसमें दिये गये अधिकाश उदाहरणो को मैंने कार्य रुप में परिणत किया। यह काम पूरा हो जाने पर भी जब "पिलग्रिम" के आने का कोई लक्षण नही दिखाई दिया तो मैं बूढे श्मिट के पास जा धमका और तीर पर जितनी भी किताबें उपलब्ध थी उन सबको ले-लेकर पढ गया।

वहा पर किताबो का ऐसा अकाल था कि मुझे कोई भी किताब, यहां तक कि

बच्चों की कहानियों की पुस्तकें, या किसी जहाजी कैलेंडर का कोई अंश भी किसी खजाने से कम नही मालूम हुआ। मैं सचमुच चुटकुलो की एक किताब को किमी उपन्यास की तरह, शुरू से अन्त तक एक ही बैठक मे पढ गया और इसमें मुझे बहुत आनन्द मिला। अन्त में जब मैं सोच रहा था कि अब और कुछ भी मिलना मुश्किल है तो मुझे श्मिट के बक्स मे "मैनडेविल, गाडविन द्वारा पांच खन्डो में लिखी गयी रोमांस-कथा" मिल गयी। इसे मैंने कभी पढ़ा नही था लेकिन गाडविन का नाम ही काफी था, और उस तमाम कूडे को पढने के बाद, कोई ऐसी चीज, जिसके साथ किसी ख्यातिप्राप्त बुद्धिजीवी का नाम लगा हो, वास्तव में एक बहुत बडी नेमत थी। मैं इसे अपने साथ ले आया और दो दिनो तक हर समय मैं इसी में डूबा रहा और वास्तविक आनन्द का पान करता रहा। यह कहना कोई अति-शयोक्ति नही होगी कि वह रेगिस्तान में बसन्त जैसा था।

हाथी से उतर कर गधे की सवारी...इसी तरह, मेरे लिए मैनडेविल से चमड़े की तैयारी तक सिर्फ एक कदम का फासला था; क्योकि बुद्धवार, अठारह जुलाई, प्रतिवात दिशा से "पिलग्रिम" आ गया। जैसे ही वह भीतर आया; हमने देखा कि उसकी शक्ल काफी बदली हुई थी। उसके टापगैलेंट मस्तूल ऊपर उठे हुए थे और उसकी सभी बालिन (रद्दा को छोडकर) उतरी हुई थी; बूम छल्ले उसके निचले यार्डों से उतरे हुए थे; जैक छडें नीचे चली गई थी, अनेक दराबियाँ निकलकर गिर गई थी, चालू रस्से-रस्सियां स्थांक कर नई जगहो पर पहुँच गई थी, और इसी तरह के अनगिनत परिवर्तन हो गए थे। इसके अलावा हुक्म देने वाली आवाज भी बिल्कुल नई थी और छतरी पर एक नया चेहरा...एक नाटा, कुछ साँवले रंग का आदमी, हरा जैकेट और चमड़े की ऊंची टोपी पहने...दिखाई दे रहा था।

ये परिवर्तन निश्चय ही तीर के सभी लोगों को यह सोचने को बाध्य कर रहे थे कि यह कौन आदमी हो सकता है ? और हम सभी जहाज की नाव के तीर पर, आने की प्रतीक्षा बेताबी से कर रहे थे ताकि सारी बातें साफ-साफ जान सकें। आखिरकार जब पाल उतर गए और लङ्गर डाल दिया गया, तब नाव तीर पर आयी और जल्दी ही सारे में यह खबर फैल गई कि जिस जहाज के आने की आशा में हम थे वह सैंगटा बारबरा तक आ पहुँचा है, और कप्तान टी ..ने उसकी कमान संभाल ली है, और उसके कप्तान, फाकन ने "पिलग्रिम" की कमान संभाली है और छतरी पर हरा जैकेट पहने हुए जो आदमी हुक्म दे रहा था वह कप्तान

फाकन ही है। हम लोगों को कोई और सवाल करने का मौका दिये बिना ही नाव लौट पडी, और हम लाग रात होने तक प्रतीक्षा करने को मजबूर हो गये। रात को हम लोगो ने तीर पर पड़ी एक छोटी सी नाव ली और उसे खेते हुए जहाज की ओर चल पडे।

जब मैं जहाज के ऊपर चढा तब दूसरे मालिम ने मुझे पिछले हिस्से में बुलाया और मेरे लिए भेजा गया एक बडा पैकिट दिया जिस पर अंकित था "शिप एलर्ट।" इसके लिए मैं बेहद बेताब था, लेकिन फिर भी मैने तीर पर पहुँचने से पहले इसे न खोलने का निश्चय किया। जब मैं अगवाड में गया तो मुझे वही पुराने नाविक मिले, और उन्हें फिर देखकर मुझे सचमुच बहुत खुशी हुई। नये जहाज और बोस्टन के नये समाचारो इत्यादि के बारे में तमाम तरह की पूछताछ की गई। एस...के घर से खत आया था और वहा कोई असाधारण बात नही हुई थी। सभी नाविक यह मानते थे कि नया जहाज "एलर्ट" बहुत अच्छा है, और है भी काफी बडा : "रौजा से भी बडा"—"इतना बडा कि कैलीफोर्निया की सारी खालें लाद कर ले जाय"... "उसकी पटरी इतनी ऊंची है जितना आदमी का सर"—"क्या खूब जहाज है"
"उसकी पटरा इतन ऊंची है जितना आदमी का सर"—"क्या खूब जहाज है"
—"सदा सजीला जहाज" इत्यादि, इत्यादि। कप्तान टी—ने उसकी कमान सभाल ली है और वह पीछे मोरेटे ी गया है, वहा से उसे सैन फ्रान्सिस्को जाना था, और वह सम्भवत. दो या तीन महीने के पहले सैन डियागो में नही पहुचेगा।

"पिलग्रिम" के कुछ नाविको की उस पर अपने पुराने जहाजी साथियो से मुलाकात हुई थी और उन्होने उनके रवाना होने से पहले की शाम को उसके अगवाड में घन्टा दो घन्टा समय बिताया था। उनका कहना था कि उसके डेक बर्फ की तरह सफेद थे, युद्धपोत की तरह हर सुबह बलुए पत्थर के झावे से उसकी रगडाई होती है, उस की पर हर चीज "जहाज के शक्ल की और ब्रिस्टल फैशन की" है, नाविक-दल काफी अच्छा है, तीन मालिम हैं, एक सिलमाकुर है और एक बढ़ई : किसी चीज की कमी नही है। "उन्होने मालिम के पद पर एक बढिया आदमी तैनात कर रखा है न कि डेक पर रहने वाले किसी खून के प्यासे जानवर को।"—"वह ऐसा मालिम है जो अपने काम को बखूबी जानता है और हर आदमी से काम लेता है, और न तो कप्तान उसे धौंस दे सकता है, और न नाविक ही।"

सारी सूचना लेने के बाद हमने उनके नये कप्तान के बारे में कुछ बातें पूछीं। अभी उसे जहाज पर आये इतने दिन नही हुए थे कि वे उसके बारे में अधिक जान पाते। लेकिन कमान सभालते ही—पहले ही दिन टापगैलेंट मस्तूलो को नीचे उतरवा कर और आधे रस्से-रस्सियो को उघडवा कर—उसने सब पर अपनी धाक जमा दी थी।

जो भी समाचार हमें मिल सकता था उसे ले चुकने के बाद हम लोग नाव खेकर तीर पर लौटे. गोदाम पर पहुँचते ही मैंने, जैसा कि स्वाभाविक ही था, पहले अपना पैकिट खोला। उसमें मोटे सूती कपडे, फलालैन की कमीजें, जूते इत्यादि थे। इन सबसे कही अधिक मूल्यवान था ग्यारह खतो का एक छोटा-सा पैकेट। मैं लगभग सारी रात बैठा अपने पत्र पढ़ता रहा और फिर अवकाश के समय बार-बार पढने के लिए उन्हे सभाल कर रख दिया। इसके बाद थे आधा दर्जन अखबार, जिनमें सबसे अन्तिम तिथि के अखबार मे 'थैंक्स गिविंग' दिवस की सूचना थी और इस बात की सूचना थी कि कप्तान एडवर्ड एच० फाकन के संरक्षण मे ब्रायन्ट स्टर्जिस एन्ड कम्पनी का "एलर्ट" नामक जहाज कैलाओ और कैलिफोर्निया के लिए रवाना हो गया है।

लम्बी समुद्री यात्राओं पर, घर से लम्बे अरसे तक बाहर रहने के बाद घर से प्रकाशित होने वाले अखबार का मिलना कितना आनंददायक हो सकता है इसे भुक्तभोगी ही समझ सकता है। मैंने इनके हर हिस्से को पढ़ा—किराये के मकान, खोई और चोरी चली गयी चीजें; नीलाम और शेष सभी कुछ। अखबार की तरह कोई दूसरी चीज आपको पूरी तरह किसी स्थान पर नही पहुचा पाती और न आप के मन को पूरी तसल्ली ही दे पाती है। "बोस्टन डेली एडवर्टाइजर" का नाम ही मेरे कानों में आत्मीयता घोल देता था।

"पिलग्रिम" ने अपनी खालों को उतारा और हम फिर काम पर लग गये। कुछ दिनों तक हम सूखी खालो के अपने पुराने काम में लग गए—भीगी खालें—सफाई—पिटाई इत्यादि। एक दिन जब मैं अपनी छुरी से खालों पर का गोश्त और सडे हिस्से काट कर अलग कर रहा था, तो कप्तान फाकन मेरे पास आया और मुझसे पूछा कि कैलिफोर्निया मुझे कैसा लगता है और एक बार लैटिन में फिर उसी सवाल को दुहराया, मैंने सोचा सवाल बहुत उपयुक्त है, और साथ ही इससे यह भी व्यंजित होता है कि आप लैटिन भी समझते हैं। बहरहाल, किसी कप्तान

के मुंह से निकला हुआ नम्रतापूर्ण शब्द बहुत बड़ी चीज़ है इसलिए मैंने बहुत ही भद्रता से अवसर के अनुकूल उत्तर दिया।

शनिवार, ग्यारह जुलाई . "पिलग्रिम" प्रतिवात दिशा में रवाना हुआ और हम लोगो को उसी पुराने ढग से काम करने को छोड गया। हम लकडी काफी तायदाद में जुटा चुके थे, और अब दिन के बडा और सर्वथा सुखद होने के कारण हम लोगो के पास काफी समय बच जाता था। घर से आये सूती कपड़े के मैंने पाजामें और फ्राक बना डाले और हर रविवार को अपने हाथ की सिली हुई सर से पाँव तक की एक पूरी की पूरी पोशाक पहनने लगा; कतरनो को जोड़ कर मैंने अपने लिए एक टोपी बना ली थी।

पढना, मरम्मत करना, सोना और इसके साथ कुत्तों को लेकर कभी-कभी झाडयो मे केओटी, खरगोश आदि की तलाश में घूमना, या किसी रैटल सांप का मुकाबला, और जब-तब किले की ओर निकल जाना, इन कामो में उस दिन का चमडा ठीक करने के बाद का हमारा समय बीत जाता था। कभी-कभी हम लोग एक और तरह से दिलबहलाव करते थे और वह था मशाल की रोशनी में चिगट मछली पकडना। इस काम के लिए हम लोगो ने एक जोडा कंटिया प्राप्त कर लिया था जिसमें हारपून की तरह का लम्बा डन्डा लगा हुआ था। चीड के एक लम्बे डन्डे के चारो ओर कोलतार लगी हुई रस्सियां लपेट कर हम तीर की एक मात्र नाव को ले लेते, एक आदमी मशाल लेकर नाव के मोरे में और एक माझी को पतवार चलाने को पिछले हिस्से में बैठा लेते थे और एक एक आदमी को कंटिया लेकर दोनो ओर बैठा देते थे और अंधेरी रातो में पानी के ऊपर मशाल की रोशनी में चिगटो का शिकार करने को निकल पडते थे।

यह बडा मनोरंजक शिकार है। तीर से कुछ ही दूरी पर जहा पानी तीन-चार फुट से अधिक गहरा नही था और जहां तलहटी साफ और बलुई थी, मशालों से हर चीज साफ दिखायी देती थी, यहाँ तक कि अगर बालू में एक आलपिन भी गिरी हो तो संभवत: वह भी दिखाई पड सकती थी। चिगट बडी आसानी से पकड में आ जाती हैं और हम लोग बहुत जल्द ही ढेरों चिगट पकड लेते थे। दूसरी मछलियों को पकडना अधिक कठिन होता था, फिर भी अक्सर हम लोग विभिन्न आकार-प्रकार की बहुतेरी मछलियां मार लेते थे। "पिलग्रिम" अपने साथ हमारे लिए मछली पकड़ने के कुछ काटे लेता आया था, जो हम लोगो के

पास तीर पर पहले कभी नही थे । इसके बाद हम कई बार पाइन्ट तक गये और वहाँ से काफी मात्रा में काड और माकरेल मछली पकड कर लाये ।

इन अभियानों में एक बार हम लोगों ने सैंडविच द्वीप के दो निवासियो और एक शार्क मछली के बीच लडाई होती देखी । "जौनी" मछली हमारी नाव के आसपास ही कुछ देर तक चक्कर ल्ती रही और दूसरी मछलियो को भगाती और हमारे चारे को देख कर दांत दिखाती रही, तब अचानक वह हम लोगो की आँखों से ओझल हो गयी । क्षण बाद हमने अपने सामने वाली चट्टान पर मछली मारने वाले दो कनाका लोगो को, बहुत जोर-जोर से चिल्लाते सुना और उन्हे एक मजबूत रस्सी को अपनी ओर खीचते और दूसरे सिरे पर "जौनी शार्क" को विप-रित दिशा में जोर लगाते पाया । रस्सी जल्द ही टूट गई, लेकिन कनाका उसे इतनी आसानी से अपने हाथ से निकलने देने वाले जोव नही थे, और वे उसके पीछे पानी में कूद पडे ।

अब रस्साकशी शुरू हुई । इसके पहले कि शार्क गहरे पानी मे जाए, एक ने उसकी पूंछ जा पकडी और उसे तीर की ओर खदेडने लगा, लेकिन जोनी अपने सिर को अपने शरीर के नीचे मोड कर छटपटाती रही, और कनाका के हाथो पर अपने दांतों से प्रहार करती रही, अंत में उसने अपने को छुडा लिया और रास्ते से छिटक गयी । अब शार्क ने अपनो दुम मोडी और गहरे पानी की ओर तेजी से भागी; लेकिन इस बार भी इसके पहले कि वह बहुत दूर निकल जाए, दूसरे कनाका ने उसकी दुम पकड ली और तीर की ओर लपका । उसी समय उसका साथी उसे एक लम्बे डन्डे और ढेलों से मारने लगा ।

बहरहाल, जैसे ही शार्क ने अपना शरीर ऐंठा, उसे अपनी पकड ढीली कर देनी पडी, लेकिन ज्यो ही वह गहरे पानी की ओर बढी वे दोनों फिर उसे पकडने के फिराक में उसके पीछे लग गए । इस तरह कुछ देर तक यह युद्ध चलता रहा, शार्क क्रोध में पागल होकर पानी में छपाके लगा रही थी और अपना बदन ऐंठ रही थी और कनाका अत्यन्त उत्तेजित होकर अपना गला फाड कर चिल्ला रहे लेकिन थे; आखिरकार शार्क एक कन्टिया और डोरी और कुछ गहरे जख्म लेकर भाग ही निकली ।

अध्याय - २१

हम लोग दुर्ग से बराबर सम्पर्क बनाए रहे। ग्रीष्म के अन्त तक मैंने उस स्थान के लगभग सभी व्यक्तियो से परिचय प्राप्त करने के अलावा, अपने शब्द-भंडार में काफी वृद्धि कर ली, और वहाँ के लोगों के चरित्र और आचरण के और उन संस्थाओं के बारे में भी कुछ जानकारी प्राप्त कर ली जिसमें वे रह रहे थे।

कॅलिफोर्निया की खोज सर्व प्रथम सन् १९३६ में कोर्टेज ने की थी, और उसके बाद अनेक साहसिक यात्री और सम्राट द्वारा नियुक्त यात्री वहां जाते रहे। यहाँ इंडियन आदिवासियो के असंख्य कबीले बसे हुए थे और इसके कई प्रदेश बेहद उपजाऊ पाए गए; इसके अलावा इन प्रदेशो में सोने की खानों, और समुद्र में मोतियो के पाये जाने की अफवाहें भी जुडी हुई थी।

जैसे ही इस देश के महत्व का पता चला कि जेसुइट सम्प्रदाय के लोग यहां के इंडियन आदिवासियो में धर्म का प्रकाश फैलाने और उन्हें ईसाई बनाने के उद्देश्य से यहाँ बसने के लिए चल पड़े। सत्रहवी शताब्दी के अन्त में उन्होंने इस देश के विभिन्न भागों में अपने मिशन कायम किये और आदिवासियो को अपने सम्प्रदाय में दीक्षित करके, और उन्हे सभ्य जीवन कैसे बिताया जाता है, इसकी शिक्षा देकर अपने आसपास बसा लिया। अपने मिशनों में जेसुइट लोगों की सुरक्षा, और साथ ही सभ्य आदिवासियों पर साम्राज्य की शक्ति की धाक जमाने, के लिए दो दुर्ग बनाये गये। इनमें एक तो सेन डियागो में बनाया गया और दूसरी मोंटेरी में। इन्हे प्रेसिडियो कहा जाता था, और इन दोनो में इस पूरे प्रदेश का शासन बटा हुआ था।

उसके बाद सैंटा बारबरा और सैन फ्रासिस्को में भी दुर्ग कायम हुए। इस तरह यह प्रदेश चार बड़े-बड़े जिलो में विभाजित हो गया, जिसके हर भाग में एक दुर्ग पडता था और उसका शासन एक कमांडर करता था। इनके सिपाहियों ने प्राय: सभ्य आदिवासियो की लडकियो से शादियाँ की और इस तरह हर दुर्ग के आसपास धीरे-धीरे एक छोटा सा कस्बा बस गया। कालांतर में, जहाज यहां के बन्दरगाहों पर मिशनो के साथ व्यापार करने के लिए आने लगे और वहां से दूसरी चीजों के बदले खालें प्राप्त करने लगे; और इस तरह कॅलिफोर्निया के इस बड़े व्यापार की शुरूआत हुई।

इस देश के लगभग सारे ढोर मिशनों के थे जिन्होंने यहा के इंडियन आदि-

वासियों को, जो वास्तव में उनके गुलाम बनकर रह गए थे, अपने चौपायों के बड़े बड़े झुन्डों को पालने के लिए रखा हुआ था। सन् १७९३ में जब वानकोबर सैन डियागो आया था, तब तक मिशनों ने बहुत सी संपत्ति और शक्ति एकत्र कर ली थी, और उन पर यह इलजाम लगाया जाता है कि उन्होंने यह कह कर कि उन्हें इस सारी सपत्ति का पूरा अधिकार मिल जायगा, साम्राज्य की अवमानना की थी।

स्पेनी उपनिवेशो से जेसुइटो के निष्कासन के बाद मिशन फ्रासिस्कनों के हाथ में चले गए, हालाकि उनकी व्यवस्था मे कोई आधारभूत अन्तर नही आया। मैक्सिको की स्वतन्त्रता के बाद से मिशनों की हालत बिगडती ही गयी। अन्त में एक कानून बनाकर उन्हे सारी सम्पत्ति से वचित कर दिया गया, और पादरियों का अधिकार-क्षेत्र धार्मिक कृत्यो तक ही सीमित कर दिया गया। इसके साथ ही सभी इडियन आदिवासियो को मुक्त और स्वाधीन पशुपालक घोषित कर दिया गया।

जैसी कि कल्पना की जा सकती है, आदिवासियों की स्थिति में इस कानून से नाम-मात्र का ही परिवर्तन आया : वस्तुतः वे आज भी उतने ही गुलाम हैं जितने पहले थे। लेकिन मिशनों में आमूल परिवर्तन आ गया। पादरियों को, धार्मिक अधिकारों को छोडकर अन्य कोई अधिकार प्राप्त नही हैं, और मिशनों की भारी सम्पत्ति को सिविल प्रशासन के दैत्यों के भक्षण के लिए छोड़ दिया गया है जो यहां प्रशासकों की हैसियत से, झगडों को निबटाने के लिए भेजे जाते हैं; और जो अन्ततः कुछ वर्षों बाद बडी मात्रा में निजी सम्पत्ति इकट्ठी कर के, और अपने प्रदेश को पहले से भी गिरी हालत में छोड कर, अलग हो जाते हैं।

पादरियों का राजवश यहा के लोगो को, और वास्तव में ऐसे हर व्यक्ति को जो इस देश से व्यापार या किसी अन्य तरीके से सम्बन्धित था, इन प्रशासकों से कहीं अधिक स्वीकार्य था। पादरी सदा एक ही मिशन से सम्बद्ध रहते थे, और उसकी साख बनाए रखने की जरूरत महसूस करते थे। लिहाजा वे अपना कर्ज नियमित रूप से चुकाते थे और लोगों के साथ प्रायः अच्छा सलूक किया जाता था, और लोग उन पादरियों से काफी लगाव महसूस करते थे जिन्होने अपना पूरा जीवन उनके बीच गुजारा था। लेकिन प्रशासक ऐसे अजनबी थे जिन्हे मैक्सिको से भेजा जाता था, और जिन्हे इस देश में कोई दिलचस्पी नहीं होती थी; जिन्हे अपने

कर्त्तव्य का कोई ज्ञान नहीं होता था। उनमें से अधिकांश लोग ऐसे हुआ करते थे जो अपना धन बर्बाद कर चुके होते थे—असफल राजनीतिज्ञ और सैनिक—जिनका एक मात्र लक्ष्य जितना जल्दी हो सके, अपनी बिगड़ी हुई हालत को पुनः बनाना होता था।

यह परिवर्तन हम लोगों के इस समुद्र तट पर आने के कुछ ही वर्ष पहले हुआ था लेकिन फिर भी, इस थोडे समय में ही व्यापार बहुत कम हो गया था, साख घट गई और आदरणीय मिशन पराभव को प्राप्त होते जा रहे थे। बाहरी व्यवस्था ज्यो की त्यो हैं।

तट पर कुल मिला कर चार दुर्ग हैं जिनकी छत्रछाया में विभिन्न मिशन और प्यूब्लो हैं जो सिविल प्रशासन द्वारा निर्मित ऐसे नगर हैं जिनमें कोई मिशन या दुर्ग नहीं हैं। सबसे उत्तरी दुर्ग सैन फ्रांसिस्को है; उसके बाद मोंटेरी है, उसके बाद सैंटा बारबरा है जिसमें वहां का मिशन सैंट लुई ओबिस्पो और सैंट ब्यूनावेंचुरा, जो समूचे देश में सबसे सुन्दर मिशन है और जिसके पास बहुत उपजाऊ जमीन और बहुत समृद्ध अंगूर के बागान हैं, आते हैं। अन्तिम और सब से दक्षिण की ओर, सैन डियागो है जिसमें वहां का मिशन, सैन जुआन कैम्पेस्ट्रेना प्यूब्लो द लास एंजेल्स, जो कैलिफोर्निया का सबसे बडा नगर है और जिसके पडोस में सैन गैब्रील का मिशन है, आते हैं।

धार्मिक मामलों में पादरी मैक्सिको के आर्कबिशप के अधीन हैं और भौतिक मामलो में गवर्नर जनरल के अधीन, जो इस देश के सिविल और सैनिक मामलों का सब से बड़ा अधिकारी है।

इस देश की सरकार निरंकुश प्रजातान्त्रिक पद्धति की है, जिसके न तो आम कानून हैं और न न्यायाग। उनके कानून विधायिका की उच्छृंखलता से बनते-बिगडते रहते हैं और वे वहा की विधायिका जैसे ही परिवर्तनशील हैं। उन्हें मैक्सिको की कांग्रेस में प्रतिनिधियो को भेज कर पारित कराया जाता है, लेकिन चूंकि वहा तक जाने और लौटने मे कई महीने लग जाते हैं, और राजधानी तथा इस सुदूर प्रदेश के बीच बहुत कम ही पत्र व्यवहार हो पाता है, इसलिए एक सदस्य आम तौर से वहा स्थायी सदस्य के रूप में रहता है। उसे विदित रहता है कि इसके पहले कि वह लिख कर जवाब मंगा सके घर पर क्रान्ति हो जाएगी; और

अगर दूसरा सदस्य भेजा गया तो वह उसे चुनौती दे सकता है और चुनाव से इसका फैसला करा सकता है।

कैलिफोर्निया में क्रान्तिया अक्सर होती ही रहती हैं। हमारे देश के नये राजनीतिक दलो को शुरूआत करने वालो की तरह ही इन क्रान्तियो की जड में भी वे लोग होते हैं जो सबसे निचले तबके में और फटेहाली की स्थिति में होते हैं। निःसन्देह इनका एक मात्र लक्ष्य खाने पीने का होता है, और हम लोगो की तरह स्थानीय दलबन्दिया करने, इश्तहारबाजी करने, निन्दात्मक लेख लिखने, दावतें उडाने, वायदे करने, और झूठ बोलने के स्थान पर, वे बन्दूकें और सगानें संभाल लेते हैं और दुर्ग और जकात कार्यालयों पर कब्जा करके, जो कुछ लूटपाट से मिला रहता है उसे आपस में बाँट लेते हैं, और एक नये शासक वश की घोषणा कर देते हैं। जहां तक न्याय का सवाल है स्वेच्छा और आतक ही उनके लिए एक-मात्र कानून हैं।

एक बार एक याकी, जो यही बस गया था और कैथोलिक सम्प्रदाय को अपना चुका था, और इसी देश की एक लडकी से शादी कर चुका था अपनी बीबी और बच्चो के साथ प्यूब्लो द लास ऐंजेल्स में अपने घर में बैठा हुआ था, कि एक स्पेनी, जिसके साथ उसका कुछ झगडा चल रहा था, घर में घुसा और उन सबके सामने उसके कलेजे मे छुरा भोक दिया। हत्यारे को वही बसे हुए कुछ याकियो ने पकड लिया और उसे तब तक बन्द रखा गया जब तक कि पूरे मामले का हवाला गवर्नर जनरल के पास नही भेजा गया। उसने इस मामले में कुछ भी करने से इनकार कर दिया और जिस आदमी की हत्या हुई थी उसके इलाके के लोगो ने यह देख कर कि न्याय होने की कोई सभावना नही है, यह निश्चय प्रकट किया कि यदि कुछ नही होगा तो वे खुद इस आदमी को सजा देंगे।

संयोग से इसी समय केंटकी के चालीस अहेरियो और शिकारियो का राइफलों से लैस एक दल, जिसने प्यूब्लो में अपना मुख्यालय बना रखा था, वहा आ निकला और तीस-चालीस स्थानीय अग्रेजो और अमरीकियो को साथ लेकर उसने नगर पर कब्जा कर लिया। काफी समय तक इन्तजार करने के बाद अपने देश के नियमानुसार वे लोग इस आदमी पर मुकदमा चलाने को अग्रसर हुए। एक जज और जूरी के सदस्यो का निर्वाचन किया गया और उस पर मुकदमा चलाया गया। वह स्पेनी दोषी पाया गया और उसे गोली से मार कर प्राण-दण्ड की सजा दी गई।

अब उसकी आंखों पर पट्टी बाँध कर कस्बे में घुमाया गया। फिर सभी आदमियों के नामो के परचे एक टोप में इकट्ठे किये गये और जब हर आदमी ने अपने कर्त्तव्य का पालन करने की प्रतिज्ञा कर ली तब उसमें से बारह परचे निकाले गये। ये बारहो लोग अपनी बन्दूकें लेकर अपने-अपने स्थान पर निशाना साध कर खड़े हो गये। एक आवाज के साथ सबने गोली चलाई और वह ढेर हो गया। उसे अच्छी तरह दफन किया गया और उस स्थान को शान्ति पूर्वक उपयुक्त अधिकारियो को सौंप दिया गया।

एक जनरल ने, जो गैब्रील में था और जिसके पास इतनी उपाधियां थीं जिनके बल पर उसे स्पेन के विशिष्ट जनो में शुमार किया जा सकता था, विद्रोहियो को नष्ट-भ्रष्ट करने की बडी लम्बी-चौडी घोषणा की लेकिन वह अपने किले से कभी बाहर नही आया; क्योकि कैंटकी के चालीस शिकारी अपनी बन्दूकों के साथ भूखे, मरियल और दोगले सिपाहियों की एक पूरी रेजीमेंट के लिए काफी थे। जब यह घटना हुई तब हम लोग सैन पैड्रो (प्यूब्लो के बन्दरगाह) में थे, और हम लोगों को इस घटना की सारी जानकारी सीधे उन लोगों द्वारा प्राप्त हुई जो घटना स्थल पर मौजूद थे।

इसके कुछ महीने बाद एक दूसरे आदमी ने जिसे हम लोग प्राय: सैन डियागो में देखते थे, एक आदमी और उसकी पत्नी की हत्या प्यूब्लो और सैन लुई रे के राजमार्ग पर कर दी, और चूंकि विदेशियो ने इस बार बीच मे पडना उचित नहीं समझा, क्योकि दोनो ही पक्ष आदिवासी थे, इसलिए कुछ भी न हो सका। और, मैंने इसके बाद उस आदमी को अक्सर अपनी पत्नी के और परिवार के साथ सैन डियागो में रहते हुए देखा।

जब अपराधी कोई आदिवासी होता है तो न्याय, कहिए प्रतिहिंसा, में इतना विलम्ब नही हो पाता। एक दिन शनिवार को तीसरे पहर में सेन डियागो में था, एक इन्डियन आदिवासी घुडसवार के पास एक दूसरा इन्डियन पहुँचा जिसके साथ उसका कुछ झगडा चल रहा था। नवागंतुक ने एक लम्बा छुरा निकाला और उसे घोडे के सीने में भोक दिया। आदिवासी अपने गिरते हुए घोडे से कूद पडा, उसने भी छुरा निकाला, और दूसरे आदिवासी के सीने में भोक दिया और उसे खत्म कर दिया। उस बेचारे को पकड लिया गया, और चटपट जेलखाने में डाल दिया गया,

और तब तक वही बन्द रखा गया जब तक कि मोटेरी से फैसले की सूचना नही आ गयी ।

कुछ ही हफ्तो बाद मैंने उस बेचारे अपराधी को, जेलखाने के सामने नंगी जमीन पर बैठे हुए पाया । वह हथकडी-बेडी से जकडा हुआ था । मैं समझ गया कि इसके बचने की बहुत कम ही उम्मीद है । हालाकि यह काम उत्तेजना में किया गया था, क्योकि जिस घोडे पर वह बैठा था वह उसका अपना था और उसको बहुत प्यारा था, फिर भी वह आदिवासी था और इतना ही इसके लिए काफी था । इस घटना के एक हफ्ते बाद मैंने सुना कि उसे गोली से उडा दिया गया । ये कुछ उदाहरण यह बता सकते हैं कि कैलिफोर्निया में न्याय का वितरण कैसा है ।

घरेलू मामलो मे भी इन लोगों की हालत सार्वजनिक मामलो से अच्छी नही है । पुरुष उडाऊ, घमडी और फिजूल खर्च हैं, और जुआ खेलने के बहुत आदी हैं, और स्त्रियो की शिक्षा नही के बराबर है और सुन्दरता काफी अधिक है, जबकि नैतिकता की दृष्टि से वे बहुत अच्छी नही कही जा सकती, लेकिन फिर भी उनमें बदचलनी के उदाहरण उसकी अपेक्षा बहुत कम पाये जाते हैं जितना किसी को पहले-पहल देखकर लगेगा । वास्तव मे यहाँ एक बुराई के विरुद्ध दूसरी बुराई मौजूद है, इसलिए एक तरह का सतुलन सा स्थापित हो गया है । स्त्रियों मे गुण तो नाम-मात्र के हैं, और उधर उनके पतियो की ईर्ष्या हद दर्जे की है और उनका प्रतिशोध घातक और लगभग निश्चित ही होता है । अनेक असावधान पुरुषों को, जिनका अपराध सम्भवत: बदचलनी से अधिक असावधानी रहा है, सजा मिली है—कुछ इंच ठन्डा लोहा । ऐसे प्रयत्नों में कठिनाइया अनेक हैं, और पता चल जाने पर जान से हाथ धोने पडते हैं ।

अविवाहित स्त्रियो पर भी कडी निगाह रखी जाती है । माता-पिता का सबसे बडा उद्देश्य होता है लडकियो की अच्छी तरह शादिया करना और इसलिए जरा सा भी डिग जाना घातक हो सकता है । बूढ़ियो की तीखी निगाह और पिता या भाई का छुरा ही उनके चरित्र का एकमात्र रक्षक है, लेकिन उन में से अधिकाश—स्त्रियां और पुरुष—इस रक्षक को एकदम बेकार बना देते हैं, क्योकि वे ही आदमी जो अपने परिवार की बेइज्जती का बदला लेने के लिए अपनी जान हथेली पर रख सकते हैं, उसी जान को दूसरो की बेइज्जती करने के लिए भी हथेली पर रख सकते हैं ।

बेचारे आदिवासियों की बहुत कम खोज-खबर ली जाती है। मिशनों के पादरियों के बारे में कहा जाता है कि वे उन पर कडी पाबन्दी रखते हैं और उनको चरित्रहीनता के लिए दन्डित करने के लिए अल्कािल्डयो ने भी कुछ नियम बनाए हैं, लेकिन यह सब कुछ मिलकर भी बहुत थोडा ही पडता है। वास्तव में उनमें नैतिकता और घरेलू कर्त्तव्यों का नितान्त अभाव होता है, यह बात इसी से जाहिर होती है कि मैं एक ऐसे आदिवासी को जानता हूँ जो अक्सर अपनी पत्नी को जिससे चर्च में उसका विधिवत विवाह हुआ है, तीर पर लाता था और फिर मल्लाहों से मिलने वाले पैसे को बांट कर वापस ले जाता था।

अगर किसी अल्काल्दी को किसी ऐसी लडकी का पता चल जाता था जो अनैतिक जीवन बिताती थी, तो उसे कोडे लगाए जाते थे और उसे दुर्ग के आँगन को बुहारने या मकानों के लिए गारा और ईंट ढोने के काम में लगाया जाता था; फिर भी चन्द रीयलों के लिए वे आम तौर पर बिक जाती थी। नशाखोरी भी आदिवासियो की एक आम बुराई है। इसके विपरीत स्पेनी इस विषय में बहुत संयत होते हैं और मुझे याद नही आता कि मैंने कभी किसी स्पेनी को कभी नशे में धुत देखा हो।

ऐसे हैं वे लोग जो एक ऐसे देश में आबाद हैं जिसका समुद्र तट चार-पाँच सौ मील लम्बा है, और जिस पर अनेक अच्छे बन्दरगाह हैं, उत्तर में सुन्दर दुर्ग हैं, नदी-पोखर मछलियों से भरे हैं, और मैदानो में ढोरों के हजारों गोल हैं, जलवायु इतनी अच्छी कि दुनिया में इतनी अच्छी जलवायु मिल नही सकती; लोग हर तरह की बीमारियो से अछूते हैं, चाहे वे महामारियां हो या स्थानीय बीमारियाँ, और यहाँ की जमीन इतनी उपजाऊ है कि इसमें सत्तर अस्सी गुना अनाज पैदा होता है। हम कह सकते है कि, उद्यमी लोगो के हाथ पडने पर यह देश क्या हो सकता है। लेकिन यह भी सच है कि किसी ऐसे देश में कितनी देर तक लोग उद्यमी रह सकते हैं? अमरीकी (सयुक्त राज्य वालो को अमरीकी कहा जाता है) और अंग्रेजी, जो यहां के प्रमुख नगरों मे भरते जा रहे हैं और यहा का व्यापार अपने हाथ में लेते जा रहे हैं, वास्तव में स्पेनियों से अधिक उद्यमी और प्रभावशाली हैं; फिर भी उनके बच्चे हर दृष्टि से स्पेनियों जैसे ही हो जाते हैं और अगर पहली पीढ़ी को कैलिफोर्निया का बुखार (काहिली) बख्श भी दे, तो दूसरी पीढी को जरूर धर दबाचता है।

अध्याय—२१

शनिवार, अट्ठारह जुलाई। आज मेक्सिको का दो मस्तूलों वाला जहाज "फंजो" सैन ब्लास और मैजाटलान के लिए रवाना हुआ। यह वही जहाज था जिसे सैन पेड्रो में दक्षिणी पश्चिमी झंझा ने किनारे से ला टकराया था और जो सैन डियागो में मरम्मत कराने और अपना नौभार लादने के लिए रुका हुआ था। उसके मालिक को सरकार ने कर इत्यादि के बारे में काफी परेशानी में डाल रखा था और उसकी यात्रा कई हफ्तो के लिए स्थगित हो गई थी, लेकिन सारा मामला तय हो जाने के बाद वह हल्के समीर में रवाना हुआ, और वह बन्दरगाह से बाहर की ओर जा रहा था कि इसी समय दो घुड़सवार पूरी रफ्तार से दौडते हुए तट पर आए और उस तक पहुँचने के लिए एक नाव लेने की कोशिश करने लगे; लेकिन चूंकि तट पर कोई नाव उस समय थी ही नही इसलिए उन्होंने किसी भी कनाका को जो तैर कर ब्रिग के पास जा सके और उसे एक खत दे सके चांदी के काफी सिक्के देने का प्रस्ताव रखा।

एक कनाका ने, जो काफी सजीला, फुर्नीला और हट्टा-कट्टा था अपने सूती पाजामे को छोडकर शेष कपडे उतार फेंके और खत को अपने टोप में रखकर जहाज के पीछे तैर चला। सौभाग्य से हवा बहुत मन्द थी और जहाज धीरे-धीरे ही जा रहा था इसलिए, हालांकि जब वह रवाना हुआ तब जहाज लगभग एक मील दूर जा चुका था फिर भी वह बडी तेजी से उसके पास पहुँचने लगा। वह पानी को किसी छोटी अगनबोट की तरह चीरता और अपने पीछे एक लकीर सी छोडता जा रहा था। मैंने ऐसी जबरदस्त तैराकी पहले कभी नही देखी थी। मल्लाहों ने उसे डेक पर से अपनी ओर बढते हुए देखा लेकिन उन्हे शक था कि न जाने यह क्यों आ रहा है इसलिए—उन्होंने जहाज को रोका नही; लेकिन चूंकि हवा अब भी हल्की ही बह रही थी, इसलिए वह तैर कर जहाज के पास पहुँचा और उस पर चढ कर खत दे दिया।

कप्तान ने खत पढा और कनाका से कहा कि इसका हमारे पास कोई जवाब नही है, और एक गिलास ब्रांडी पिलाकर उसे जहाज से कूदकर किनारे पहुँचने का सबसे सुगम रास्ता ढूंढ लेने के लिए छोड दिया। कनाका वहाँ से कूद कर किनारे के सबसे निकटवर्ती बिंदु की ओर बढा; और एक घन्टे के भीतर ही चमड़े के गोदाम पर दिखाई पड़ा। वह जरा भी थका हुआ नही लगता था। उसने तीन-चार

डालर कमा लिये थे, एक गिलास ब्राडी उडा ली थी और काफी मौज में दीख रहा था।

जहाज अपने रास्ते पर ही बढ़ता गया और सरकारी अफसर जो उसको रवाना होने से रोकने आए थे, और जो उसके मालिक से कुछ और रकम ऐंठने की आशा बाँध कर आए थे, अब दाढ सी उखडवा कर लौट रहे थे।

अब तक "एलर्ट" को सैंटा बारबरा पहुँचे लगभग तीन माह हो चले थे, और हम लोग हर रोज इस आशा में रहते कि वह आज पहुँच जाएगा। खालो के गोदाम के पीछे आधी मील की दूरी पर एक ऊँची पहाडी थी, और हर रोज दिन ढले अपना काम कर चुकने के बाद, हममें से कोई, व्यापारी हवाओ के चलने से पहले जो रोज दोपहर के बाद बहने लगती हैं, उस पर जाकर यह देख आता था कि क्या कोई जहाज नजर आ रहा है। जुलाई के आखिरी दिनो में हम लोग हर रोज पहाडी पर जाते थे और वहा से निराश होकर लौटते थे। मैं उसके आने की बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था, क्योकि पत्र द्वारा मुझे यह बताया गया था, कि मेरे मित्रों के अनुरोध पर हमारे मालिको ने जो बोस्टन में रहते थे, कप्तान टी—को एक पत्र लिखा था कि अगर "एलर्ट" "पिलग्रिम" से पहले संयुक्त राज्य अमरीका पहुँचने वाला हो तो वे मुझे उस पर ले लें, और मैं निश्चय ही यह जानना चाहता था कि यह हुक्म कप्तान को मिल गया था या नही, और जहाज का गन्तव्य स्थान क्या है।

एक साल शायद दूसरों के लिए कोई महत्व न रखता हो लेकिन मेरे लिए इसका महत्व असाधारण था। बोस्टन से चले हम लोगों को लगभग एक साल हो गया था और वहाँ तक पहुँचने में किसी जहाज को आठ—नौ महीने से कम समय तो किसी तरह लग ही नहीं सकता था। इस प्रकार कुल मिलाकर मेरा बोस्टन से अलग रहना दो साल तो हो ही जाता। यह अवधि काफी लम्बी थी, लेकिन घातक नहो थी। यह मेरे भावी जीवन के लिए निर्णायक सिद्ध नहीं हो सकती थी। लेकिन एक साल और रह जाने पर तो सारा मामला ही खत्म हो जाता। मैं जीवन भर के लिए नाविक ही बनकर रह जाता; और हालाकि घर से पत्र आने के पहले मैंने नाविक बनने का ही निश्चय कर लिया था, और जैसा कि मैं समझता हूँ इसमे बिल्कुल सन्तुष्ट भी था, लेकिन जैसे ही मुझे वापस लौटने का एक अवसर दिखाई पडा, वैसे ही मेरी वापसी की चिन्ता और कम से कम अपने

जीवन की दिशा का निर्णय करने का अवसर पाने की चिन्ता बढ़ गई।

इसके अलावा मैं यह चाहता था कि अगर मुझे इस ओर ही अपने भाग्य का चुनाव करना पड़े तो इसके उपयुक्त बन सकूं, और अपने को एक अफ़सर के पद के लिए योग्य बना लूं, और नौ-कौशल सीखने के लिए खालो का गोदाम उपयुक्त स्था. नही था। मैं चमड़ा तैयार करने में अनुभवी हो गया था और हर काम बड़े सुचारू रूप से चल रहा था, और मुझे लोगों से परिचय प्राप्त करने के अनेक अवसर मिलते थे, और नौचालन का अध्ययन करने के लिए बहुत अवकाश भी मिलता था, फिर भी व्यावहारिक नौकौशल केवल जहाज पर रहकर ही सीखा जा सकता था और इसलिए मैंने निश्चय कर लिया था कि जहाज के आते ही मैं कप्तान से कहूँगा कि मुझे जहाज पर ही काम करने का मौका दिया जाय। पहली अगस्त तक हमने अपनी सारी खालें सुखा ली और उन्हे सभाल कर रख दिया, अपने हौजों को साफ कर लिया (इस दूसरे काम में हम लोगो ने दो दिन अपने घुटनों तक कीचड और छः महीने तक चमडा तैयार करने के दौरान जमे हुए तलछट, और ऐसी बदबू में धंस कर बिताये जिससे कोई आयरिश भी अपना नाश्ता छोडकर भाग जाये) और जहाज के आगमन को प्रतीक्षा करने लगे, और फिर हमें आराम करने का तीन-चार सप्ताह का अवकाश मिल गया; जिसे मैंने हमेशा की तरह पढ़ने, लिखने, अध्ययन करने, अपने कपडों और जूतों की मरम्मत करने और अपनी पेटी को जहाज पर जाने की दृष्टि से तैयार करने, और मछली मारने, कुत्तों के साथ जंगल छानने, और यदा-कदा दुर्ग और मिशन में जाने मे बिताया।

मेरा काफी समय एक छोटे पिल्ले की देखभाल में चला जाता था जिसे मैंने अपने गोदाम पर तीन दिनों में पैदा होने वाले छत्तीस कुत्तों में से चुना था। यह पिल्ला बहुत सुन्दर और होनहार था, इसके चारो पंजे सफेद रंग के थे और शेष शरीर गहरे भूरे रंग का था। मैंने उसके लिए एक ओर एक छोटी सी कुठरिया-सी बना ली थी, और उसे दूसरे कुत्तों से अलग वही बाँधकर रखता था और उसे खिलाता और सिखाता था। कुछ ही हफ्तों में वह पूरी तरह मेरे इशारे पर नाचने लगा। वह बहुत अच्छी तरह बढ़ रहा था, मुझसे बहुत हिल गया था, और यह बात साफ जाहिर होती थी कि वह समुद्र तट के सबसे अच्छे कुत्तों में से एक होगा। मैं उसे ब्रेवो कहता था और इस तट को छोडने की बात सोचने पर मुझे एक मात्र इसी बात पर दुख होता था कि मुझे उससे अलग होना पड़ेगा।

रोज ही हम लोग पहाडी पर जाते लेकिन कोई जहाज नजर नहीं आता था और हम लोग इस विषय में तमाम तरह की अटकलबाजिया लगाने लगे थे कि इस समय वह कहां होगा; विभिन्न गोदामो पर शाम को और समुद्र के किनारे दोपहर बाद टहलते-घूमते हम लोगो के बीच चर्चा का विषय वह जहाज ही रहता था– वह कहां होगा—वह सैन फ्रांसिस्को तो नही चला गया—वह अपने साथ कितनी खालें ले आएगा, इत्यादि, इत्यादि।

वृहस्पतिवार, पच्चीस जुलाई। आज सुबह हमारे गोदाम के अफसर दो कनाको को लेकर मछली का शिकार करते हुए पाइंट से आगे चले गए थे, और हम लोग चुपचाप अपने कमरे में बैठे हुए थे कि दोपहर के ठीक पहले हम लोगो ने "जहाज हो!" की बहुत जोर की आवाज समुद्र तट के हर हिस्से से आती हुई सुनी। कनाका लोगो की भट्टी से लेकर "रोजा" के गोदाम तक–सब कही से यही आवाज आ रही थी। एक क्षण में ही हर आदमी अपने गोदाम से बाहर निकल आया; और हमने देखा कि एक बहुत शानदार, लम्बा जहाज अपने रायल और आकाश पाल ताने, दोपहर के बाद चलने वाली तेज हवाओ में झुकता हुआ बडी तेजी से पाइन्ट मे होकर तट की ओर चला आ रहा था। उसके यार्ड बहुत मजबूती से काफी ऊपर की ओर बंधे हुए थे, हर पाल चढा हुआ था और उसमें खूब हवा भरी हुई थी। उसके तीसरे मस्तूल के शिखर पर याकी झडा फहरा रहा था; और चूकि ज्वार उसके अनुकूल पड रहा था इसलिए वह घुड़दौड के घोड़े की तेजी से बन्दरगाह में चला आ रहा था।

डियागो के बन्दरगाह पर पिछले छ महीनों मे कोई नया जहाज नही आया था और निश्चय ही हर आदमी इसे देखकर सोच-विचार में पड गया। वह देखने में निश्चय ही बहुत सुन्दर था। जैसे ही वह आगे बढा, त्यों ही उसके हल्के पालों को बाध दिया गया और अपने शिखरपाल की रस्सियो को कस कर, तीसरे मस्तूल के शिखरपाल को ताने रहकर, उसने बडी खूबसूरती से मोड लिया और समुद्र के किनारे लगभग एक केबिल की दूरी पर अपना लगर डाल दिया। कुछ ही मिनटो में शिखर पालो के यार्डों पर आदमी चढा दिए गए और उसके तीनों शिखरपाल एक साथ ही लपेट दिये गये। अगले टापगैलेन्ट यार्ड से आदमी खिसक कर जिब को समेटने के लिए तान पर चले गए, और तीसरे मस्तूल के टापगैलेन्ट यार्ड से, तान द्वारा होकर प्रमुख शिखर पर और फिर वहां से यार्ड पर चले गए; और

ऊपरी पाल के यार्डों के आदमी लिफ्ट के नीचे कोर्सो के यार्ड आर्मो पर चले आए। पालो का बहुत सावधानी से उनके बीच के हिस्सो को चरखी के सहारे बाधा गया, और जिबो को कपडो में सभाल कर रख दिया गया। फिर यार्डो को अलग किया गया और चर्खियो को यार्ड आर्मो और तान पर लाया गया, दीर्घ नौका को बाहर निकाला गया और पीछे भी एक बडा लगर डाल दिया गया और तब जहाज को बाध दिया गया।

इसके बाद छतरी पर से कप्तान की छोटी नाव नीचे उतारी गयी और चौदह से अठारह वर्ष के बीच की आयु के खासे अच्छे छोकरो का नाविकदल कप्तान की नाव को किनारे की ओर ले आया। यह नाव ह्वेल मारने की हल्की नौका जैसी थी, जिस पर खूबसूरती से रग-रोगन किया हुआ था, और उसके पिछले भाग में गद्दिया इत्यादि लगी हुई थी। हम लोगों ने नाव के नाविकों पर तत्काल धावा बोल दिया और कुछ ही मिनटों में उनसे बहुत हिल-मिल गए। हम लोगो को बोस्टन के रास्ते आदि के बारे में तमाम सारी बातें पूछनी थी और वे यह जानने को उत्सुक थे कि हमें समुद्र तट पर कैसी जिन्दगी बितानी पड रही है। उनमें से एक मुझसे अदला-बदली करने को राजी हो गया; और मैं तो यही चाहता ही था, और अब हमें सिर्फ कप्तान की अनुमति लेनी बाकी थी।

डिनर के बाद नाविक खालें उतारने लगे और चूंकि हम लोगों के पास भी गोदाम पर कोई काम नही रह गया था, इसलिए हमें जहाज पर जाकर उनकी सहायता करने का हुक्म हुआ। मुझे उस जहाज को देखने का पहला अवसर प्राप्त हुआ जो, मुझे आशा थी कि, अगले वर्ष के लिए मेरा घर बनने वाला था। अदर से भी वह वैसा ही था जैसा बाहर से दीखता था। उसके डेक चौड़े थे और उनमें काफी जगह थी (क्योंकि डेकों पर बराम या घर नही बना था, जो हमारे अधिकाश जलयानों के पिछले भाग को बदशक्ल बना देता है।), वे आगे से पीछे तक एक दम चिकने और दूध जैसे धवल थे। नाविकों ने हमें यह बताया कि यह बलुए पत्थर से लगातार रगडाई होते रहने के कारण ऐसा है। स्थल के लोगों और यात्रियों की दृष्टि को आकर्षित करने के लिए उस पर किसी तरह का भोंडा मुलम्मा नहीं चढ़ा था और न ही और कोई तड़क-भडक थी, लेकिन हर चीज ऐसी थी जैसी किसी अच्छे जहाज पर होनी चाहिए और जहाज ब्रिस्टल के फैशन का

था। न तो कहीं जंग, न गदगी, न तो ढालो-ढाली रस्सियां, न रस्सियो के टुकड़े इधर उधर बिखरे हुए।

मालिम एक अच्छा, जिन्दादिल और शोर मचाने वाला आदमी था, उसकी आवाज शेर जैसी थी, और वह हमेशा बहुत सतर्क रहता था। जैसा कि नाविक उसके बारे में बताते थे, रोम-रोम से वह सच्चा नाविक था, और हालाकि वह कुछ दुनियादार किस्म का आदमी था और बहुत सख्ती से पेश आता था, फिर भी आमतौर पर सभी नाविक उसे प्यार करते थे। जहाज पर दूसरे और तीसरे नम्बर के मालिम भी थ, एक बढई, एक सिनभाकुर, स्टीवार्ड और रसोइया आदि थे और छोकरो को मिला कर बारह नाविक अगवाड में थे।

उस पर सात हजार खालें लदी थी, जिन्हे उसने प्रतिवात दिशा की यात्रा के दौरान एकत्र किया था, इसके अलावा सीग और चर्बी भी थी। हम लोगों ने उसका सामान दोनो गलियारो से दो नावो में उतारना शुरू किया। दूसरे मालिम ने लाच का नेतृत्व सम्भाला था और तीसरे मालिम ने दूसरी नौका का। कई दिनों तक हम लोग इसी तरह का काम करने में लगे रहे। अन्ततः सारी खालें उतार ली गयी। तब जहाज के नाविकों ने उसमें नीरम भरना शुरू किया और हम लोग अपने चमडा तैयार करने के काम पर जुट गये।

शनिवार, उन्तीस अगस्त। "कैटेलिना" नामक दो मस्तूलों वाला जहाज प्रतिवात दिशा से बन्दरगाह में पहुचा।

इतवार, तीस तारीख। नाविको को सैन डियागो में मिलने वाला यह पहला इतवार था, और निश्चय ही वे सभी कस्बा देखने जाने वाले थे। आदिवासी सबेरे ही अपने घोडो को किराये पर देने के लिए समुद्र के किनारे आ गए और, वे सभी मांझी जिन्हे छुट्टी मनाने का हुक्म मिल गया, दुर्ग और मिशन देखने गए और रात के पहले कोई लौटकर नहीं आया। मैं सैन डियागो को काफी देख चुका था इस लिए मैं जहाज पर गया और अपना दिन उसके मल्लाहो के साथ बिताया। जब मैं पहुँचा तो ये लोग अगवाड में चुपचाप अपने कपडो की मरम्मत और धुलाई करने, लिखने या पढने में लगे हुए थे।

उन्होने मुझे बताया कि जहाज कैलाओ में रुक गया था और वहा तीन हफ्ते तक पडा रहा। बास्टन से कैलाओ तक पहुँचने में उन्हे केवल अस्सी दिन लगे जो कि एक रिकार्ड था। वहाँ उन्होने "ब्रैंडीवाइन" युद्धपोत और दूसरे अमरीकी

युद्धपोतों, और अंग्रेजी युद्धपोत "ब्लांडी" और एक फ्रांसीसी जहाज को छोड़ा। कैलाओ से वे सीधे कैलोफोर्निया की ओर गये। रास्ते में वे समुद्र तट के सभी बन्दरगाहों को, जिनमें सैन फ्रांसिस्को भी सम्मिलित है, देखते हुए आये हैं।

उनका अगवाड काफी बडा था और मोटे शीशों की खिड़कियों के कारण उसमें काम चलाऊ रोशनी भी थी, और बिल्कुल साफ-सुथरा रखा जाने के कारण वह देखने में बहुत कुशादा और आरामदेह लग रहा था; कम से कम यह उस छोटी, काली, गन्दी कोठरी से, जिसमें मैं "पिलग्रिम" के नाविक के रूप में काम करते हुए कई महीने तक रहा था तो बहुत ही बढिया था।

जहाज के नियमानुसार अगवाड की रोज सफाई होती थी और चूंकि इसके मल्लाह भी काफी साफ सुथरे थे इसलिए इसे साफ-सुथरा रखने के लिए उन्होंने अपने भी कुछ नियम बना लिये थे, मिसाल के तौर पर सीढियों के नीचे उन्होंने उगालदान रख दिये थे और हर आदमी अपने भीगे कपडे टांग देता था। इसके अलावा हर शनिवार को सुबह बलुए पत्थर से इसकी घिसाई होती थी।

जहाज के पिछले हिस्से में एक खूबसूरत केबिन था, एक भोजन कक्ष था, और एक छोटी सी दूकान थी जिसमें शेल्फ लगे हुए थे और हर तरह का सामान रखा रहता था। इनके और अगवाड़ के बीच एक "डेको की मियानी" थी, जो उतनी ही ऊंची थी जितना किसी युद्धपोत का गन डेक; यह शहतीर से साढ़े छः फुट नीचे पडता था। इन मियानियों को नियमित रूप से रगडा जाता था और इसे हमेशा दुरूस्त रखा जाता था, मियानी के एक हिस्से में बढ़ई की बेंच और उसके हथियार थे, दूसरे हिस्से में सिलमाकुर जमा हुआ था, और तीसरे में बोसुन का सन्दूक रहता था जिसमें फालतू रस्से-रस्सियां रहती थी। यहां शहतीरों से आगे पीछे को झूलती हुई जालियों में कुछ मल्लाह भी सोते थे, और रोज सुबह इन्हें समेट कर रख देते थे। इस मियानी के पार्श्वों पर ढलवां तख्ते लगे हुए थे, जिनमें लोहे के कब्जे और कुनावे लगे हुए थे जिन्हें जरूरत पड़ने पर निकाला भी जा सकता था।

मल्लाहों का कहना था कि उनका जहाज ढोल की तरह कसा हुआ है, और यह एक बडा श्रेष्ठ जलयान है, इसमें सिर्फ एक ही दोष है जो प्रायः सभी तेज चलने वाले जहाजों में पाया जाता है—कि इसका अगला हिस्सा भीग जाता है। जब यह हवा के रुख में कभी कभी आठ या नौ नाट (समुद्री मील) की रफ्तार

से चलता था, जैसा कि वह कभी-कभी चलता ही था, तो गलियारे के आगे कोई जगह सूखी नहीं रह जाती थी। वे उसके चलने के सम्बन्ध में तरह तरह की कहानियां सुनाते थे और उन्हें इस बात का बहुत विश्वास था कि वह एक "भाग्यशाली जहाज" है। इसकी उम्र सात साल थी और हमेशा कैंटन से व्यापार करता आया था, पर कभी भी इसके साथ कोई खास दुर्घटना नहीं घटी और ऐसा भी कभी नहीं हुआ जब इसने अपना फासला औसत से कम समय में तय न किया हो, तीसरा मालिम, जिसकी उम्र लगभग अठारह वर्ष की थी और जो इसके मालिकों में से एक का भतीजा था, इस पर छोटेपन से ही रहा था, और उसे इस जहाज पर काफी भरोसा था; और मुख्य मालिम तो उसका इतना ख्याल रखता था जितना वह अपनी बीबी और परिवार का भी नहीं रखता होगा।

जहाज बन्दरगाह पर एक हफ्ते तक पडा रहा। इसके बाद अपना माल उतार लेने और नीरम भर लेने के बाद वह चलने के लिए तैयार हो गया। अब मैंने कप्तान से जहाज पर काम करने के लिए आवेदन किया। उसने मुझे बताया कि मैं उस जहाज में तब घर जा सकूंगा जब यह यहां से रवाना होगा (जैसा कि मैं पहले से ही जानता था); और यह जानकर कि मैं तीर पर न रह कर उसके जहाज में अभी से काम करना चाहता हूँ, उसने कहा कि उसे कोई आपत्ति नहीं हैं, बशर्ते मैं अपनी ही आयु के किसी आदमी के साथ अपने काम की अदला-बदली कर लूं। यह शर्त मैंने बडी आसानी से पूरी कर दी, क्योंकि वे लोग कुछ महीने किनारे पर रह कर वहां का नजारा देखने और इसके साथ ही सर्दी और दक्षिणी पश्चिमी झंझाओं से जान बचाने की बात से बहुत खुश थे, और मैं दूसरे ही दिन अपना सन्दूक और झूलना लेकर जहाज पर चला गया और एक बार मैंने फिर अपने को पानी पर तिरते हुए पाया।

* • •

अध्याय २३

मंगलवार, आठ सितम्बर। इस जहाज पर काम करने का आज मेरा पहला दिन था, और यद्यपि मल्लाह की जिन्दगी हर जगह मल्लाह की जिन्दगी ही होती है, फिर भी मुझे यहां की हर चीज "पिलग्रिम" से जुदा रंगत लिए दिखायी दी। भोर में सब लोगों को काम पर बुलाने के समय हर आदमी को कपड़े पहनने और

डेक पर आने के लिए साढे तीन मिनट का समय दिया जाता था। अगर किसी को ज्यादा देर लगती थी तो मालिम, जो हमेशा डेक पर मौजूद रहता था, उसे जोर से आवाज देकर दुबारा बुला लेता था। सब लोगो के आ जाने के बाद हेड पंप लगाया जाता था और दूसरे व तीसरे मालिम डेको की धुलाई शुरू करा देते थे; इस बीच मुख्य मालिम छतरी पर टहलता रहता था; वह काम पर नजर तो रखता था लेकिन खुद हाथ नही लगाता था। अन्दर और बाहर, आगे और पीछे, ऊपरी डेक और डेकों की मियानी, स्टीअरेज और अगवाड, पटरी के अडवाल और नालियाँ—सभी की, झाड़ू और कपड़े की मदद से, धुलाई, रगडाई और घुटाई होती थी। इसके बाद डेको को गीला किया जाता था और उन पर बालू बिछा कर बलुए पत्थर से उनकी रगडाई होती थी।

बलुआ पत्थर एक बडा, मुलायम पत्थर होता है, जिसकी तली को घोट कर चिकना कर लिया जाता है। इसके दोनों ओर रस्सिया बाध दी जाती हैं जिन्हें पकड कर मल्लाह गीले और रेत-बिछे डेकों पर इस पत्थर से घोटा लगाते हैं। जो जगह तंग होती हैं और जहाँ यह पत्थर नही जा पाता वहाँ मल्लाह अपने छोटे बलुआ पत्थरो से घुटाई करते हैं। इन छोटे पत्थरों को वे "प्रार्थना पुस्तकों" के नाम से पुकारते हैं। एकाध घन्टे हम इसी काम पर लगे रहते थे। इसके बाद हेड पम्प फिर चालू किया जाता था और डेकों और जहाज के पहलुओ पर से रेत को बहा दिया जाता था। इसके बाद इन्हें सुखाया जाता था, और तब हर आदमी अपने-अपने काम पर जुट जाता था।

जहाज में पाँच नावें थी—लांच, पिनेक, जाली नाव, डाबा क्वार्टर नाव और गिग। हर नाव का एक कनहार होता था जो अपनी नाव का अध्यक्ष होता था और उस पर व्यवस्था व सफाई बनाये रखने के लिए जिम्मेदार होता था। सफाई का बाकी काम नाविकों में बांट दिया गया था। एक का काम था ह्वील पर नगे पीतल वगैरह की सफाई करना। दूसरे के हिस्से में घन्टी की सफाई थी। घन्टी पीतल की थी। और हरदम चमचमाती रहती थी। तीसरे आदमी का काम गोश्त के पीपे की सफाई करना था। चौथा आदमी रस्सियो के खमे की सफाई के लिए जिम्मेवार था; दूसरे मल्लाहों का काम अगवाड और फलकों की बलुए पत्थर से घुटी हुई सीढ़ियों की सफाई करना था।

नाश्ते से पहले ही इन सब कामों का खत्म होना जरुरी था। नाश्ते से पहले ही

बाकी के मल्लाह मोखे की टंकी भर लेते थे और रसोइया खाने के काठ के टबों को साफ कर के मुग्राइने के लिए रसोई के आगे रख देता था। जब डेक सूख गये तब महामहिम कप्तान महोदय ने छतरी पर दर्शन दिये और कुछ देर चहलकदमी करते हुए सब चीजों का निरीक्षण किया। इसके बाद आठ घन्टियाँ बजीं, और सब लोगों को नाश्ता दिया गया।

नाश्ते के लिए आधे घन्टे का समय दिया गया। जब टब, बरतन, रोटियों के थैले वगैरह यथास्थान पहुंचा दिये गये तब आज सुबह चलने की तैयारियां शुरू हुई। जिस जंजीर से हमारा जहाज बंधा हुआ था उसे हमने ढीला छोड़ना शुरू किया, और दूसरी को लपेटना शुरू किया। इस तरह हमने लंगर को कुछ ऊपर उठा लिया और जजीर को लपेटना बन्द कर उसे अधर में लटका रहने दिया। यह काम "पिलग्रिम" की अपेक्षा कम समय में सम्पन्न हो गया; क्योंकि यद्यपि हर चीज "पिलग्रिम" से दुगुनी बडी और भारी थी—मिसाल के तौर पर इस जहाज की लंगर कप्पी इतनी बडी थी कि एक आदमी मुश्किल से उठा सके, जंजीर "पिलग्रिम" की जंजीर से तिगुनी लम्बी थी—फिर भी एक तो लोगों के हिलने-डुलने की गुन्जाइश काफी थी, दूसरे काम अनुशासित और व्यवस्थित ढंग से हो रहा था, तीसरे आदमियों की संख्या "पिलग्रिम" से अधिक थी और पारस्परिक सद्भावना प्रचुर मात्रा में थी; फिर अफसर और नाविक अपने-अपने काम के जानकार थे, इसलिए सब काम बड़े आराम से हो रहा था।

लंगर के कुछ उठते ही अगवाड में खड़े मालिम ने पालों को ढीला करने का हुक्म दिया। पलक झपकते ही सब लोग रस्सियों पर टूट पड़े और एक दूसरे को धकियाते बराडलों पर से होते हुए यार्डों पर चढ़ गये। सबसे कुशल मल्लाह सब से पहले यार्ड पर पहुंचा, और उसने यार्ड-भुज और बन्ट की गैस्केट रस्सियां खोल दी। हर यार्ड पर एक आदमी हुक्म मिलते ही पाल की गाठ खोलने के लिए ऊपर रह गये और बाकी रस्सियों व पाल रस्सियों को खोलने के लिए नीचे रह गये।

तब मालिम ने यार्डों के लोगों को संबोधित करके कहा—"आगे सब तैयार है ?"—"यार्ड तैयार है ?" आदि आदि; और हर आदमी से "हां, हां, सर !" का जवाब आया। अब पाल खोल देने का हुक्म दिया गया और पलक मारते जिस

जहाज पर नंगे यार्डों के अलावा कुछ भी नहीं था उस पर रायल मस्तूल के शिखर से डेकों तक ढीले-ढाले पाल तन गये।

तब शिखरपालों पर एक-एक आदमी को छोड़कर सब लोग नीचे उतर आये। इसके बाद शिखरपाल भी तान दिये गये और उनकी रस्सिया बांध दी गयी। तीनों यार्ड मस्तूलों के शिखरों पर साथ ही साथ पहुँचे। आगे यार्ड पर डाबा बाजू के नाविक थे और प्रमुख यार्ड पर जमना बाजू के। दोनों बाजुओं को पहरा-टोली में से पांच मल्लाह (जिनमें मैं भी शामिल था) रस्सियो पर काम करने के लिए चुन लिये गये थे, और उन्हे पिछले यार्ड का काम सौंपा गया था।

इसके बाद यार्डों को हवा की अनुकूल स्थिति में कर दिया गया। अब लगर उठाया गया और लगर कप्पी को हुक कर दिया गया। इसके बाद सभी मल्लाहों और रसोइये ने लंगर उठाना शुरू किया और "चीअरिली मैंन !" के उत्साहपूर्ण सहगान के साथ लगर को उसके कुंदे तक उठा लिया गया।

अब जहाज चल पडा था और झटपट उसके ऊपर हल्के पाल ताने जाने लगे, और रेतीले पाइन्ट को पार करने के पहले ही जहाज पर संपूर्ण पाल तान दिये गये थे। अगला रायल पाल तानना मेरे हिस्से में आया था (क्योकि मैं मालिम वाली पहरा-टोली में था)। यह पाल "पिलग्रिम" के अगले रायल पाल से दुगुने से भी बडा था। "पिलग्रिम" के पाल को मैं आसानी से भुगत लेता था लेकिन इस पाल से मेरे हाथ भर से गये। इसकी खास वजह यह थी कि सफाई को दृष्टि में रखते हुए डेकों पर जैक नहीं रखे गये थे और गरीब मल्लाह को अपना काम बिना किसी तरह की मदद के पूरा करना होता था।

पाइन्ट से आगे निकलने और सब पालों के तन जाने के तुरन्त बाद "पहरा टोली नीचे जाए !" का आदेश दिया गया। बाद में नाविकों ने मुझे बताया कि जब से वे कैलिफोर्निया-तट पर आये हैं तब से एक बन्दरगाह से दूसरे तक जाने में उन्हें "लगातार पहरा" देना पड़ा है। और सच तो यह है कि यद्यपि जहाज पर कड़ा अनुशासन रखा जाता था और हर आदमी से उसकी कूवत भर पूरा पूरा काम लिया जाता था फिर भी कुल मिलाकर जहाज पर मल्लाहों के साथ बहुत अच्छा सुलूक किया जाता था।

हर आदमी जानता था कि उसे पक्का मल्लाह बनना है और अपने काम को फुर्ती से करना है, लेकिन हर आदमी अपने साथ होने वाले बरताव से संतुष्ट था;

और वह संतुष्ट, एक-दूसरे से सहमत और बात-बात में त्रुटि न निकालने वाला नाविक दल "पिलग्रिम" के छोटे, काम में पिले हुए, असतुष्ट, रोते हुए और निराश नाविक दल के ठीक विरोध में था।

नीचे जाने की बारी हमारी पहरा टोली की थी, इसलिए नीचे जा कर हमारी टोली के लोग कपडों की मरम्मत या अपने दूसरे छोटे मोटे कामो में लग गये; और चूंकि मैंने सैन डियागो में रहते हुए ही सारी तयारी कर ली थी, इसलिए मेरे पास पढ़ने के अलावा कोई काम न था। लिहाजा, मैंने नाविकों की पेटियों को उलटना-पलटना शुरू किया लेकिन अपने मतलब की कोई किताब मुझे नही मिल सकी। तभी एक मल्लाह ने बताया कि उसके पास एक ऐसी किताब है जिसमें "एक बडे डकैत का किस्सा" है। उसने अपने सन्दूक के नीचे से वह किताब निकाल कर मुझे पकडा दी, और मुझे यह देखकर हैरत और खुशी हुई कि वह किताब बुल्वर-रचित "पाल क्लिफोर्ड" थी। मैंने झपट कर वह किताब ली और जाकर अपनी जाली में लेट गया जहा अपनी टोली का पहरा शुरू होने तक मैं पढता और झूलता रहा। डेकों की मियानी साफ थी, फलका-मुख खुले हुए थे और उनसे होकर ठन्डी, हवा आ रही थी। जहाज मजे से चल रहा था और सब-कुछ ठीक-ठाक था। मैने अभी कहानी शुरू ही की थी कि आठ घन्टिया बजीं और हमें डिनर का हुक्म दिया गया।

डिनर के बाद हमारी टोली को डेक पर चार घन्टे तक पहरा देना पड़ा, और चार बजे मैं फिर नीचे गया और अपनी जाली में लेट कर अधपहरे के समय तक किताब में खोया रहा। चूंकि आठ बजे के बाद रोशनी करना मना था, इसलिए रात के समय मैं नही पढ सका। हल्की हवाओं और सन्नाटो में होते हुए हमारा जहाज तीन दिन तक आगे बढता रहा और, किताब खत्म होने तक, दिन में अपनी पहरा टोली के नीचे आते ही मैं किताब में खो जाता था।

इस पुस्तक से मुझे जो आनन्द मिला उसे मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। उस माहौल में साहित्यिक गुणो से युक्त किसी भी किताब का हाथ लग जाना इतनी बडी बात थी कि यह किताब तो मुझे अमृत-तुल्य ही लगी। पुस्तक में लेखक की तेजस्विता, व्यग्यों का शानदार सिलसिला, सजीव और विशिष्ट रेखाचित्र—इस सबने मुझे बराबर हर्ष-पुलकित रखा। एक मल्लाह के नसीब में भला यह कहाँ बदा है? मेरी यह खुशी ज्यादा देर तक चल भी कैसे सकती थी।

डेक पर जहाज का काम नियमित रूप से चल रहा था। सिलमाकुर और बढ़ई डेकों की मियानी में काम करते थे और अन्य व्यापारी पोतों की तरह नाविक पाल ठीक करने, गर्खें लगाने और बटा मन तैयार करने में लगे रहते थे।

रात के पहरे "पिलग्रिम' के मुकाबले कहीं सुखद थे। वहाँ पहरा टोली में नाविकों की सख्या इतनी कम थी कि जब एक नाविक पहिए पर बैठ जाता था और दूसरा पहरा देने लगता था तो बातें करने को कोई साथी नहीं मिलता था। लेकिन यहाँ एक पहरा टोली म सात नाविक थे, इसलिए हम खुल कर गप्प लडा सकते थ। दो तीन रात पहरा देने के बाद ही मैं डाबा पहरा-टोली के सभी नाविकों से परिचित हो गया।

हमारी टोली का मुखिया सिलमाकुर था और आम तौर पर वह जहाज का सबसे अनुभवी नाविक माना जाता था। वह एक युद्धपोत का मंजा हुआ नाविक था और बाईस बार समुद्र-यात्रा कर चुका था। वह प्रायः सभी प्रकार के—युद्ध-पोत, निजी जहाज, गुलामों को पकडने वाले जहाज, और व्यापारी—जहाजों पर नौकरी कर चुका था। सिर्फ ह्वेल पोत उससे अछूते रह गये थे, और हर पक्का मल्लाह इन पोतों से नफरत करता है, और मौका मिलते ही भाग निकलता है। वह दुनिया के प्रायः सभी भागों मे हो आया था और गप्प मारने में उसका सानी नहीं था। पहरे के समय उसकी गप्पें अक्सर चलती रहती थीं और वह सब लोगों को जगाये रहता था। अपनी असंभाव्यता के कारण उसकी गप्पें हमेशा मनोरंजक होती थीं और यह यह नहीं चाहता था कि लोग उन पर विश्वास करें बल्कि उसका उद्देश्य लोगों का मनोरंजन ही होता था; और चूं कि उसमें हास्य-विनोद की क्षमता थी और वह युद्धपोत के विशिष्ट ग्रामीण प्रयोगों और मल्लाहों के नम-कीन मुहावरों का ज्ञाता था इसलिए वह हमेशा मजा बांध देता था।

अवस्था, अनुभव और पद की दृष्टि से उसके बाद हमारी पहरा टोली में हैरिस नामक एक अंग्रेज का नाम आता था। उसके बारे में मैं आगे चलकर बताऊंगा। इसके बाद दो-तीन अमरीकी नाविक थे जो यूरोप और दक्षिणी अम-रीका की सामान्य यात्राओं पर हो आये थे। एक अमरीकी ह्वेलपोत पर काम कर चुका था और उसके पास ह्वेल-विषयक असंख्य कथाओं का भन्डार था। टोली का अंतिम नाविक केप कौड का चौडी कमर और बडे सिर वाला एक छोकरा था जो एक मैकरेल स्कूनर में काम कर चुका था और किसी खरेबाह वर्दी के

जहाज में पहली बार यात्रा कर रहा था। उसका जन्म हियाम में हुआ था और मल्लाहों ने उसका नाम "बकेटमेकर" रख छोड़ा था।

दूसरी टोली मे भी लगभग इतने ही मल्लाह थे। उस टोली का मुखिया एक लंबा, खूबसूरत फ्रांसीसी था जिसके गलमुच्छे काले स्याह और बाल घुंघराले थे। वह अव्वल दर्जे का मल्लाह था, और उसका नाम जान था (मल्लाह के लिए इतना छोटा-सा नाम ही काफी होता है)। उसके अलावा इस टोली में दो अमरीकी नाविक (इनमें से एक तो बिगडा रईस था और अच्छे परिवार से था लेकिन अब मोटे सूती कपडे की पतलून पहनने और मासिक वेतन पर नौकरी करने को मजबूर हो गया था), एक जर्मन नाविक, बेन नामक एक अंग्रेज छोकरा जो मेरे साथ पिछले शिखरपाल में काम करता था और अपनी उम्र को देखते हुए अच्छा नाविक था और बोस्टन के पब्लिक स्कूलो से अभी-अभी निकले दो छोकरे थे। कभी-कभी बढई को भी जमना टोली में शामिल कर लिया जाता था जो जन्म से स्वीडिश था। वह एक अनुभवी मल्लाह था और जहाज का सर्वश्रेष्ठ कर्णधार माना जाता था। हमारे जहाज पर इतने लोग थे। इनके अलावा अश्वेत रसोइया और स्टीवार्ड था, तीन मालिम थे और कप्तान तो था ही।

हमें निकले दूसरा दिन ही हुआ था कि सामने आंधी आती दिखायी दी और हमें किनारे की ओर जाना पडा। जहाज के रास्ता बदलने में मुझे जहाज के नियमों का भी काफी ज्ञान हो गया। यहा ऐसा नही था कि जहाँ सुविधा हो वहाँ जाओ या जहाँ काम पडे वहाँ भागते फिरो, बल्कि हर आदमी का एक नियत स्थान था। जहाज का रास्ता बदलने की एक निश्चित रूपरेखा बना ली गयी थी।

अगवाड में मुख्य मालिम का हुक्म चलता था और शीर्षपालों व जहाज के अगले हिस्से की जिम्मेदारी उसी पर थी। जहाज में दो सर्वश्रेष्ठ मल्लाह—हमारी टोली में से सिलमाकुर, और दूसरी टोली से जान नामक फ्रांसीसी—अगवाड में काम कराते थे। कटि में तीसरे मालिम का हुक्म चलता था और वह बढ़ई व एक दूसरे नाविक की सहायता से जहाज का रुख मोडते थे। रसोइया अगली रस्सियो और स्टीवार्ड मुख्य भाग की रस्सियो की मदद से यह काम करते थे। दूसरा मालिम पिछले यार्डो का अध्यक्ष था और अनुवात, अगली तथा मुख्य कमानियो को खोलता था। मैं खुले बाजू की क्रासजैक कमानी पर नियुक्त था; तीन मल्लाह अनुवात पर नियुक्त थे, एक छोकरा स्पेकर पाल की रस्सी और गाई पर नियुक्त था; एक आदमी

और एक छोकरा प्रमुख शिखरपाल, टापगैलेंट और रायल कमानियों पर नियुक्त थे; और बाकी सब मल्लाह—आदमी और छोकरे—प्रमुख कमानी पर काम करते थे।

जहाज पर हर आदमी को अपनी जगह का पता था, और जहाज का रुख मोडने के लिए जब सब आदमियों का आह्वान किया जाता था तब हर आदमी अपने निश्चित स्थान पर आ डटता था, और अपने को सौंपी गयी हर रस्सी के लिए उसे जवाबदेह होना पडता था। हुक्म मिलते ही हर मल्लाह को अपनी रस्सी छोडनी या खीचनी पडती थी और जहाज का रुख मुड जाने के बाद उसे सफाई के साथ बांधना होता था और उसकी तह करनी होती थी। जब सब लोग अपनी-अपनी जगह सभाल लेते हैं तो छतरी के खुले बाजू में खड़ा कप्तान पहिये पर बैठे आदमी को पहिया रख देने का इशारा करता हैं, और आदेश देता है, "सुकान अनुवात को !"; अगवाड में खड़ा मालिम यही शब्द दुहराता है और नाविक शीर्ष रस्सियों को छोड देते हैं। तब कप्तान कहता है, टैक और रस्सियां छोड़ दो।" मालिम अगवाड में इसी आदेश को दुहराता है और आगे की टैक और मुख्य यार्ड की रस्सिया छोड दी जाती हैं।

इसी तरह दूसरे भागो में भी हुक्म के मुताबिक काम किया जाता है। इसके बाद जमना बाजू के नाविक मुख्य टैक पर और डावा बाजू के नाविक आगे जाकर अगली टैक पर काम करते हैं और जिब की रस्सी नीचे खीच देते हैं, और अगर हवा बहुत तेज हो उस पर एक कप्पी लगा देते हैं। तब पिछले यार्डों को वातानुकूल किया जाता है, और अक्सर इसकी देखभाल कप्तान खुद ही करता है। सब ठीक-ठाक हो जाने के बाद हर नाविक अपनी जगह खडा-खडा रस्सी की तह बनाने लगता है, और तब "पहरा टोली नीचे जाए !" का हुक्म दिया जाता है।

अगले चौबीस घन्टो के सफ़र में हम जमीन के पास आते और दूर हटते आगे बढ़ते रहे। लगभग चार घन्टों में हम जहाज का रुख एक बार बदल लेते थे। इस प्रकार मुझे जहाज के काम को समझने का अच्छा मौका मिल गया। अब मुझे निश्चय हो गया कि इस जहाज के निचले यार्डों का रुख मोड़ने में भी इतने ही आदमी काम करते हैं जितने "पिलग्रिम" में; जबकि इसके यार्ड "पिलग्रिम" से पचास फुट से भी अधिक तिरछे थे ! "पिलग्रिम" के यार्ड इस जहाज के यार्डों से आकार में भी लगभग आधे थे। वाकई, कमानियों और ब्लाकों की अवस्था से कितना फर्क पड जाता है; और "मायाकुचो" के कप्तान विल्सन, जो बाद में

चलकर हमारे साथ प्रतिवात दिशा में एक बार यात्री बनकर गया था, का कहना था कि हमारे जहाज में यह काम उसके जहाज के मुकाबले दो आदमियों की कमी से चला लिया जाता है।

शुक्रवार, ग्यारह सितंबर। आज सुबह चार बजे जहाज दुपेंचा पाल ताने नीचे की दिशा में बढ रहा था और सैन पेड्रो पाइन्ट लगभग दो मील दूर रह गया था। कोई एक घन्टे बाद हम डेको पर जंजीर के घिसटने की आवाज़ से जाग उठे और कुछ ही देर बाद सब लोगों को ऊपर बुलाने की आवाज सुनायी दी, और हम सब जंजीर को आगे की तरफ लपेटने और लंगरों को तैयार करने के काम में लग गये।

"पिलग्रिम" वहां लैंगर डाले खडा है", एक ने कहा, और डेकों पर दौड़ते हुए पटरी की ओर देखने पर मुझे अपना पुराना दोस्त "पिलग्रिम" दिखाई दे गया। वह बहुत भरा हुआ था और लंगर डाले खडा था।

लंगर डालने में भी रुख मोडने के समान ही सबका स्थान और काम निश्चित था। पहले हल्के पाल उतार कर लपेट दिये जाते थे, तब कोर्स पाल खोले जाते थे और जिबें नीचे उतार ली जाती थीं, इसके बाद शिखरपाल बंट लाइनों में आ जाते थे और लगर डाल दिया जाता था। जब जहाज अच्छी तरह लंगर डाल लेता था तब सब मल्लाह शिखरपाल लपेटने ऊपर चढ़ जाते थे; और जल्दी ही मुझे पता चल गया कि इस जहाज पर इस बात को बहुत ज्यादा अहमियत दी जाती है क्योकि हर नाविक जानता है कि किसी जहाज की श्रेष्ठता की जाँच इस बात से की जाती है कि उसके पाल किस तरह लिपटे हैं। तीसरा मालिम, खिलमाकुर और डाबा टोली के नाविक अगले शिखरपाल यार्ड पर जाते थे; दूसरा मालिम, बढ़ई और जमना टोली के नाविक प्रमुख शिखरपाल यार्ड पर जाते थे और मैं, अग्रेज छोकरा बेन, दोनो बोस्टन वाले लडके और केप कौड वाला लडका पिछले शिखर पाल को लपेटते थे।

यह पाल हमी लोगों का था। हमी इसे छोटा करते थे और हमी लपेटते थे। किसी और आदमी को हम अपने यार्ड पर फटकने नही देते थे। मालिम हमारे काम का खास खयाल रखता था और जब तक हम अपने पाल की गांठ ठीक नहीं बांध देते थे और अगर पाल में एक सिलवट भी पडी रहती थी तो वह हमसे तीन-तीन चार-चार बार पाल को लिपटवाता था।

जब सब-कुछ ठीक-ठाक निवट जाता था तब बंट अच्छी तरह बांध दी जाती थी और यार्ड भुज की गैस्केट रस्सिया बाध दी जाती थी ताकि यार्ड के आगे एक भी सिलवट न रहने पाये।

लङ्गर डालने के बाद कप्तान का सरदर्द खत्म हो जाता है और मुख्य मालिम एक तरह से जहाज का मालिक हो जाता है। सिह-शावक जैसी आवाज में वह इधर-से उधर आदेश देता हुआ घूम रहा था और हर काम को तेजी से और कुसलता से पूरा करा रहा था। वह "पिलग्रिम" के सुयोग्य, शात और साधु स्वभाव के मालिम से विरोधी प्रकृति का था : शायद एक इन्सान के रूप में वह इतना आदरणीय नही था लेकिन जहाज के मालिम के रूप में "एलर्ट" का मालिम "पिलग्रिम" के मालिम से कहीं अच्छा था; और इसमें कोई संदेह नही था कि "एलर्ट" की कमान संभालने के बाद कप्तान टी...के आचरण में जो परिवर्तन आया था उसका प्रधान कारण यह मालिम ही था।

अगर मुख्य मालिम में ताकत नही है तो अनुशासन ढीला पड जाता है। कोई काम ठीक से नहीं होता और कप्तान हर बात में हस्तक्षेप करने लगता है। इससे उन दोनों में तनातनी होती है और नाविकों को बढावा मिलता है, और यह कथा अंततः एक त्रिमुखी संघर्ष में परिणत हो जाती है। लेकिन मिस्टर ब्राउन ("एलर्ट" के मालिम का यही नाम था) को किसी की मदद की दरकार नही थी; वह हर काम अपने हाथों में ले लेता था और कहने-सुनने का मौका देना तो दूर रहा वह तो कप्तान के अधिकारों पर भी गाहे बगाहे हाथ साफ कर जाता था।

कप्तान टी—एकात में मालिम को समझा देता था, और लंगर डालते समय, जहाज के रवाना होते समय, रुख मोडते समय, शिखरपालों को छोटा करते समय या इसी तरह के सब मल्लाहों द्वारा किये गये कामों के अलावा खुद अपने मुंह से आदेश नहीं देता था। दरअसल यही उचित भी है और जब तक काम इसी प्रकार चलता है और अफसरों में अच्छी पटरी बैठती है, तब तक कोई परेशानी पैदा नही होती।

सब पालों को लपेट देने के बाद रायल यार्डों को नीचे किया गया। प्रमुख यार्ड को, जो कि "पिलग्रिम" के प्रमुख टापगैलेंट यार्ड से भी बडा था, अंग्रेज लडके ने और मैंने नीचा किया। दो और मल्लाहों ने अगला रायल यार्ड और एक लडके ने पिछला रायल यार्ड नीचा किया। जब तक हम तट पर रहे तब तक

बन्दरगाह में आते और वहाँ से निकलते समय यार्डों को ऊंचा नीचा करने का काम हमीं लोग इसी तरीके से करते रहे। उन सबको एक साथ नीचा किया गया। प्रमुख यार्ड को जमना बाजू पर और अगले व पिछले यार्ड को डाबा बाजू पर नीचा किया गया, यह सब काम होते ही यार्डों और तानों पर कप्पिया लगा दी गयी, और दीर्घ नौका और पिनेक को बाहर निकाल लिया गया। इसके बाद दोलायमान बूमों को रस्सी से बाध दिया गया और नावो को बाध कर सब चीजों को बन्दरगाह के हिसाब से टीक ठाक कर लिया गया।

नाश्ते के बाद फलके हटा दिये गये और सब लोग "पिलग्रिम" पर से खालें अपने जहाज पर लाने के लिए तयार हो गये। सारा दिन नावें इधर से उधर आती-जाती रही। अन्त में हमने उस पर लदी सारी खालें अपने जहाज पर लाद लीं, और उस पर केवल नीरम ही रह गया। हमारे फलके में इन खालों का पता भी नही चल रहा था जबकि इन्ही खालो के बोझ से "पिलग्रिम" पानी में धसा जा रहा था।

खालों के बदलने से दोनो जहाजों के गंतव्य का भी निश्चय हो गया, जिसके बारे में पहले हम लोग अपनी-अपनी अटकल लगा रहे थे। अब हमें अनुबात दिशा के बन्दरगाहो में रहना था और "पिलग्रिम" को अगले दिन सवेरे ही सैन फ्रंसिस्को के लिए रवाना हो जाना था।

काम पूरा करने और रात के लिए डेको की सफाई करने के बाद मेरा मित्र एस—हमारे जहाज पर आया और उसने मेरे साथ एक घन्टा डेको की मियानी में मेरी बेंच पर बिताया। उसने बताया कि "पिलग्रिम" के नाविक मेरे इस जहाज पर आने के कारण मुझ से ईर्ष्या करते हैं क्योकि अब मैं उनसे पहले घर पहुँच जाऊगा। एस—"एलर्ट" में घर लौटने पर आमादा था, चाहे इसके लिए कुछ भी क्यो न करना पड़े। अगर कप्तान टी—ऐसे नही मानेगा तो वह कुछ ले-देकर किसी नाविक को अपनी जगह लेने को राजी कर लेगा। उसका विचार था कि "एल " के बोस्टन रवाना हो जाने के भी एक साल बाद तक कैलिफोनिया के तट पर रहना निरी मूर्खता होगी।

कोई सात बजे मालिम नीचे स्टीअरेज में आया। वह हँसी-मजाक के लिए तैयार होकर आया था। आते ही उसने छोकरों को सोते से जगा लिया, अपनी बाँसुरी से कोंच कर उसने बढ़ई को उठा दिया, और स्टीवार्ड को डेकों के बीच

वाले मंचों पर रोशनी करने के लिए भेज कर सब लोगों को नाचने का हुक्म दिया। डेकों की मियानी इतनी ऊंची थी कि उछल कूद की जा सकती थी और साफ, सफेद और बलुए पत्थर से घुटी हुई होने के कारण उन्होंने सुन्दर नाच घर का रूप ले लिया था। "पिलग्रिम" के कुछ नाविक अगवाड में थे, और हम सभी नाच में शामिल हो गये, और आठ घन्टियाँ बजने तक नाविक की जिन्दगी के मजे लेते रहे।

केप कोड का लडका मछुआ नृत्य अच्छा करता था। वह संगीत की ताल पर अपनी नंगी एडियों और पंजो से डेकों को थपथपाता हुआ नाचता था। मालिम को इसमें खास लुत्फ आता था, और वह स्टीअरेज के दरवाजे में खडा-खडा देखता रहता था। और अगर छोकरे नाचते नहीं थे तो वह रस्सी के कोडे से उन्हें मारता था जिसमें सब मल्लाहों को बडा मजा आता था।

अगले दिन, एजेन्ट के हुक्म के मुताबिक, "पिलग्रिम" तीन-चार महीने की यात्रा पर प्रतिवात दिशा में रवाना हो गया। उसे रवाना होने में कोई कठिनाई नहीं हुई और हमारे इतने नजदीक से होकर गुजरा कि हमारे जहाज पर कोई पत्र फेंक सकता था। पतवार पर खुद कप्तान फाकन खड़ा था और उसे बड़े मजे में चला रहा था।

जब "पिलग्रिम" की कमान कप्तान टी—के हाथ में थी तो रवाना होते समय ऐसी धूम-धाम होती थी मानों चौहत्तर तोपों वाला युद्धपोत रवाना हो रहा हो। कप्तान फाकन पक्का मल्लाह था। वह जानता था जहाज क्या चीज है और वह उसमें अपने घर की तरह उठता-बैठता था। मुझे इस बात का इससे बढ़ कर और क्या सबूत मिल सकता था कि उसके अपने नाविक, जो छः महीने से उसकी कमान में थे और समझ गये थे कि वह क्या है, उसे पक्का नाविक मानते थे, और अगर किसी जहाज के नाविक अपने कप्तान को श्रेष्ठ नाविक मानें तो फिर आपको उसकी श्रेष्ठता में सन्देह नहीं करना चाहिए क्योंकि यह एक ऐसी बात है जिसे नाविक बड़ी मुश्किल से ही मानते हैं।

"पिलग्रिम" के जाने के बाद तीन हफ्तों तक, यानी ग्यारह सितम्बर से दूसरी अक्टूबर तक हम सैन पेड्रो पर रहे और अपना नौभार उतारने और खालें लादने आदि के काम में लगे रहे। ये काम काफी आसान थे और "पिलग्रिम" के मुकाबले कहीं आसानी से पूरे हो जाते थे। "जितने अधिक, उतने खुश", मल्लाहों का

यह मूल मन्त्र है, और श्रम-विभाजन इतना सुन्दर था कि नाव की एक दर्जन मल्लाहों की टोली तीर पर दिन-भर में जुटायी गयी सभी खालों को जहाज पर बड़े आराम से पहुँचा देती थी। असन्तोष और रोने धोने के अभाव के कारण तीर पर भी और जहाज पर भी सब काम बड़े मजे में चल रहा था। हमारे साथ अक्सर जाने वाला अफसर, तीसरा मालिम, भी एक भला नौजवान था और हमें बेवजह तंग नहीं करता था; लिहाजा, आमतौर पर हमारा समय मेल-जोल से हंसी खुशी बीत जाता था और हम जहाज के कठोर अनुशासन से मुक्ति पा कर प्रसन्न ही होते थे।

यहाँ रह कर मैं अक्सर उन दुःखदायी और निराशापूर्ण हफ्तों को याद कर लेता था जो हमने इस मनहूस जगह में "पिलग्रिम" पर काम करते समय गुजारे थे। जहाज पर हम असन्तुष्ट थे और हमसे अच्छा सुलूक नहीं किया जाता था और तीर पर कुल चार आदमियों को सारा काम करना पड़ता था। बड़े जहाज में ज्यादा जगह होती हैं, ज्यादा आदमी होते हैं, बेहतर सज्जा होती है, उदार नियम होते हैं, ज्यादा मजेदारी और बड़ी मन्डली होती है। यहां एक और सुविधा भी थी। जहाज में गिग का एक स्थायी नाविक दल था। एक हल्की ह्वेल नाव को, बढ़िया तरीके से रङ्ग-रोगन करके, पीछे गद्देदार सीटें और पतवार की रस्सियां वगैरह लगा कर, जमना बाजू की छतरी पर टांग दिया गया था और उसे गिग के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

इस नाव का कनवार जहाज का सबसे छोटा छोकरा था। बोस्टन का यह लड़का तेरह वर्ष की आयु का था। वह पूरी नाव का अध्यक्ष था। नाव की सफाई और उसे कभी भी आने-जाने के लिए तैयार रखने की जिम्मेदारी उसी की थी। नाविकों में उसी की उम्र और कद-काठी के चार और मल्लाह थे जिनमें से एक मैं भी था। हर मल्लाह के चप्पू और उसकी जगह पर नम्बर पड़ा था और हम अपनी-अपनी जगह पर ही बैठ सकते थे। हमें अपने चप्पुओं को रगड़कर सफेद रखना पड़ता था, अपनी चप्पू-खूंटियों को अन्दर रखना पड़ता था और चपलान को बाजुओं पर रखना पड़ता था। मोरे का मल्लाह नाव के हुक और पागर के लिये जिम्मेदार था और कनवार रडर, योक और पिछली रस्सियों के लिए।

हमारा काम कप्तान और एजेंट को नाव में घुमाना और यात्रियों को लाना ले जाना था। यह आखिरी काम टेढ़ी खीर था क्योंकि लोगों के पास तीर पर

अपनी नावें नही थी और जूते खरीदने वाले छोकरे से लेकर पीपे और गांठें खरीदने वाले व्यापारी तक सभी गाहकों को हम अपनी ही नाव में लाते और पहुचाते थे ।

जिन दिनों लोगो का ताता बँधा रहता था उन दिनो हम दिन भर नाव में उन्हे लाने-ले जाने में लगे रहते थे, और हमे खाने का समय भी न मिल पाता था। हमारा जहाज किनारे से करीब तीन मील दूर लगर डाले था, लिहाजा हमें तीस-चालीस मील के करीब नाव खेनी पड जाती थी। लेकिन फिर भी हम समझते थे कि जहाज में हमारा काम सबसे अच्छा है, क्योकि जितनी देर गिग चलती थी उतनी देर हमें जहाज के नौभार से कोई सरोकार नही रहना था, हाँ यात्रियों के साथ वाले छोटे बंडलो की बात दूसरी थी। हमें खालें भी नही ढोनी पडती थी। इसके अलावा हमें सबसे मिलने-जुलने, जान-पहचान करने और तरह-तरह की खबरें सुनने का भी अवसर मिलता रहता था।

जब कप्तान या एजेन्ट नाव में नही होते थे तो हमारे ऊपर कोई अफसर नही रह जाता था और हमारी यात्रियो से अच्छी पटती थी जो हमसे हंसने-बोलने के लिए हमेशा लालायित रहते थे। अक्सर हमें तीर पर घन्टो इन्तजार भी करना पडता था, तब हम नजदीक के घर में चले जाते थे या तट पर घूमने, सीपी और शंख चुनने और कडी बालू पर तरह तरह के खेल खेलने में लगे रहते थे।

बाकी मल्लाह भारी सामान या खालें किनारे पर पहुँचाने के अलावा जहाज से कभी नही निकल पाते थे, और यद्यपि हम हमेशा पानी में रहते थे, क्योंकि भग्नोर्मियो के कारण हम सुबह से रात तक सिर से पैर तक भीगे रहते थे लेकिन चूंकि हम सभी युवा थे और जलवायु सुखद थी इसलिए हम अपने जीवन को जहाज के नीरस जीवन से कहीं अच्छा समझते थे।

लगभग आधे कैलिफार्निया से हमारा परिचय हो गया। मर्द, औरतें और बच्चे—इन सब के अलावा, सभी तरह के संवाद, पत्र और हल्के-फुल्के पैकिट आदि भी हमी पहुँचाते थे और हम अपने कपडो की वजह से जल्दी ही पहचान में आ जाते थे, और हर जगह हमारा स्वागत किया जाता था।

सैन पेड्रो में यह मजा नही था। उस स्थान पर केवल एक ही घर था और संग-साथ की कमी थी। वहां अगर मेरे लिए कोई नवीनता थी तो वह कि हफ्ते में एक बार घोड़े पर चढ़ कर मैं सबसे निकट के पशु-फार्म पर जाता था और जहाज पर एक बैल भेज देने का आर्डर दे आता था।

हम पिछड जाते कभी पछाड देते और कभी बराबरी पर आ जाते; कभी हम खुले समुद्र में निकल जाते और कभी तट से सट कर चलते थे।

तीसरे दिन सुबह के समय हम सैंटा बारबरा की विशाल खाडी में पहुँचे। "कैटेलिना" हमसे दो घन्टे पहले ही पहुँच चुका था, और हम शर्त हार चुके थे, यद्यपि यह सच था कि अगर दौड पाइन्ट तक होती तो हम उसे पाँच-छः घन्टे से हरा देते। इस दौड से जहाजों की रफ्तार के बारे में पता चल गया। यह तय हो गया कि छोटा और हल्का होने के कारण बहुत हल्की हवा में वह हमारे जहाज से तेज चल सकता था, लेकिन अगर समीर काफी तेज हो और एक बार हमारा जहाज उसमें पड जाए तो हम उसे बहुत पीछे छोड सकते थे। किसी जहाज की असली पहचान यह है कि वह प्रतिवात दिशा में कितना तेज चलता है, और इस दृष्टि से देखने पर हमारा जहाज उसकी तुलना में कहीं श्रेष्ठ था।

रविवार, चार अक्टूबर। आज हम यहां पहुँचे। न जाने क्या बात थी कि हमारा कप्तान रविवार को न सिर्फ जहाज ही चलाता था बल्कि हमेशा किसी बन्दरगाह में भी पहुँच जाता था। सैबाथ के दिन जहाज चलाने का राज यह नही था कि रविवार को सौभाग्य का दिवस माना जाता है, बल्कि इसका राज यह है कि यह छुट्टी का दिन होता है। हफ्ते के छः दिन में नाविक नौभार और जहाज के दूसरे कामो में लगे रहते हैं, और चूंकि सैबाथ उनके विश्राम का एकमात्र दिन होता है इसलिए, इस दिन नाविकों से जितना फालतू काम ले लिया जाय उतना ही मालिकान का फायदा होता है।

यही कारण है कि हमारे जहाज सैबाथ को चलते हैं। उनके मालिकान पहले तो हफ्ते के छः दिनों में नाविको से कस कर काम लेते हैं और फिर जहाज को चलाने का अधिकांश काम सैबाथ के दिन के लिए रख छोडते हैं। जितने दिन हम कैलिफोर्निया तट पर रहे हमारे साथ प्रायः सब दिन यही होता रहा और हमारे अनेक सैबाथ इसी कारण मारे गये।

तट पर कैथोलिक जहाज रविवार को न व्यापार करते हैं न यात्रा करते हैं, लेकिन अमरीकी आदमी का कोई राष्ट्रीय धर्म नही है और वह प्रभु के दिवस को इच्छानुसार बिता कर यह सिद्ध करना चाहता है कि वह पोप-लीला को नही मानता।

सैंटा बारबरा बहुत-कुछ वैसा ही था जैसा मैं इसे पांच महीने पहले छोड

गया था : रेते का लम्बा तट, उस पर निरंतर दहाड़ती हुई और टूटती हुई भीमकाय तरंगें, समतल मैदान पर उभरा हुआ और पर्वतशृंखला से घिरा हुआ छोटा सा कस्बा। दिन प्रति दिन विशाल खाडी और घरों की छतों पर पडने वाली धूप स्वच्छ और चमकीली होती जा रही थी। हर चीज मृत्यु की भाँति निश्चल थी। लोग स्वयं को मिलने वाली धूप को अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील नहीं दिखायी देते थे बल्कि ऐसा लगता था जैसे दिन का प्रकाश उनके ऊपर फेंक दिया गया हो। हमारी मुलाकात कम लोगों से हुई और हमने कोई सौ खालें इकट्ठा कीं। रोज सूर्यास्त के समय गिग तीर पर भेजी जाती थी, जहा पहुँच कर हम कप्तान का इन्तजार करते थे जो अपना समय बिताने कस्बे में गया होता था। हम अपनी मन्की जाकेट पहन कर जाते थे और आग बनाने का सामान अपने साथ ले जाते थे। वहा बह कर आयी लकडी और आस-पास से इकट्ठे किये गये झाड़-झंखाड़ को इकट्ठा करके हम आग बनाते थे और रेते पर आग के पास पड़े रहते थे।

अगर यह उम्मीद होती कि कप्तान कस्बे से देर से लौटेगा तो हम लोग भी कस्बे में कुछ ऐसे घरो में अपना समय बिताते थे जहां हमेशा हमारा सत्कार होता था। कभी देर, कभी सवेर, कप्तान तीर पर आता था और तब भग्नोर्मियों में प्रेम से भीग कर हम जहाज पर पहुंचते थे और कपड़े बदल कर सो जाते थे— लेकिन पूरी रात के लिए नही, क्योकि रात के समय हमें लंगर पहरा भी देना पडता था।

इस पहरे के तुफैल में मैं अपने पहरे के साथी से नौ महीने तक बात करता रहा। इस साथी का नाम टाम हैरिस था, और संक्षेप में कहूँ तो ऐसा विलक्षण आदमी मैंने अपने जीवन में नहीं देखा। जब जहाज बन्दरगाह में रहता था तो रोज रात को एक घन्टे के लिए डेक मेरे और हैरिस के कब्जे में रहता था, और महीनो तक रोज रात को डेक के एक से दूसरे सिरे तक टहलते-टहलते मैंने उसके अपने चरित्र और इतिहास, दूसरे राष्ट्रों, विभिन्न प्रदेशों के लोगों की आदतों, नाविकों के जीवन के रहस्य और उनके साथ होने वाली ज्यादतियों, व्यावहारिक नाविक-कर्म-कौशल (जिसमें वह मुझे बहुत-कुछ सिखाने के लिए सुयोग्य था) आदि के बारे मे जितना-कुछ सीखा उतना अपने जीवन भर में नही सीखा था।

उसकी मेधा विचक्षण थी। उसकी स्मरणशक्ति निर्दोष थी, वह एक व्यवस्थित शृंखला की तरह थी और उसमें उसके आरम्भिक बचपन से लेकर तब तक के

जीवन की एक भी कड़ी की कमी नहीं थी। हिसाब लगाने की भी उसमें विचक्षण प्रतिभा थी। अकों के हिसाब में मैं अपने को काफी चतुर समझता था और मैं गणित का अध्ययन भी कर चुका था लेकिन जहां तक सिर्फ दिमाग से काम लेने का सवाल है मैं इस आदमी से होड नहीं ले सकता था जिसने अंकगणित-मात्र पढ़ा था। हिसाब लगाने में उसकी तेजी का जवाब नहीं था।

सारी यात्रा की लाग बुक उसके दिमाग में रहती थी जिसमें हर सूचना सही और पूर्ण थी और जिसे कोई भी चुनौती नहीं दे सकता था। इसके अलावा पूरे नौभार का हवाला उसकी उगलियो पर रहता था, वह एक क्षण में बता सकता था कि कौन सी चीज कहां है और हमने किस बन्दरगाह से कितनी खालें जहाज में चढ़ायी थीं।

एक रात को उसने मोटा-सा हिसाब लगाया कि अगले और प्रमुख मस्तूलो के बीच निचले फलके में कितनी खालें रखी जा सकेंगी। उसने इस हिसाब में फलके की गहराई और शहतीर की चौडाई (क्योंकि जहाज पर एक महीने रहने के बाद ही उसे उसके हर भाग के आयाम के बारे में पता चल जाता था) और एक खाल के औसत क्षेत्रफल और मोटाई का ध्यान रखा। और उसकी बतायी हुई संख्या, कालांतर में फलके में रखी गयी खालों की सख्या के इतने निकट थी कि देख कर विस्मय होता है।

मालिम अक्सर जहाज के विभिन्न भागों की क्षमता के बारे में पूछने उसके पास आता रहता था। वह सिलमाकुर को यह बता सकता था कि जहाज के इस इस पाल को तैयार करने में इतना-इतना कपडा लगेगा क्योंकि वह जहाज के हर मस्तूल और पाल की नस-नस से वाकिफ था, और फुट तथा इन्चों में उनका हिसाब बता सकता था।

उसे हर तरह के हिसाब में मजा आता था। उसके सन्दूक में मशीनों के आविष्कारों से सम्बद्ध कई पुस्तकें थीं जिन्हे वह बड़े चाव से पढ़ा करता था, और एक-एक बात समझता था। मुझे विश्वास है कि एक बार पढ लेने के बाद वह कुछ भी भूलता नहीं था।

कविता के नाम पर उसने सिर्फ "फाकनर्स शिपरैक" पढी थी और उसे बडा आनन्द आया था। अब भी वह उसके पृष्ठ के पृष्ठ सुना सकता था। वह अपने हर साथी नाविक का नाम जानता था और हर जहाज, कप्तान और अफसर का

नाम भी जानता था और हर यात्रा की प्रमुख तिथियां उसे मुंह जबानी याद थीं। कुछ दिन बाद हमें एक नाविक मिला जो लगभग बारह वर्ष पहले हैरिस का साथी नाविक रह चुका था। जब हैरिस ने उसे खुद उसके बारे में ऐसी-ऐसी बातें बतानी शुरू की जिन्हें वह पूरी तरह भूल चुका था तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

तिथियो और घटनाओं के बारे में उसके तथ्य अत्यन्त प्रामाणिक माने जाते थे और उसकी सम्मति का विरोध करने की हिम्मत बहुत कम नाविक कर पाते थे। सही हो या गलत, लेकिन हर बात के लिए वह दलील दे सकता था। उसकी तर्क करने की क्षमता विचित्र थी। पहरा देते समय अगर मुझे अपनी बात के सही होने का पूरा निश्चय भी होता था और वह उसकी प्रामाणिकता में अपना सन्देह व्यक्त कर बैठता था तो उससे बहस करने में मुझे पसीने आ जाते थे। वह जिद्दी नहीं था, लेकिन उसकी बुद्धि बला की पैनी थी। कालिज में अपने परिचय और स्तर के किसी भी लडके से भिड जाने में मुझे उलझन नही होती थी लेकिन इस आदमी को जिस विषय का साधारण सा ज्ञान भी होता था उसमें उससे भिडने से मैं कतराता था। उसके किसी भी सवाल पर कई बार सोचे बिना मैं जवाब नहीं देता था, न अपनी राय ही देता था।

उसकी स्मरण शक्ति ऐसी विचक्षण थी कि आपका पिछला सारा संभाषण उसे याद रहता था और यदि आपके मुंह से कोई ऐसी बात निकल जाय जो महीनों पहले खुद आपकी कही किसी बात के विरोध में पड़े तो यह निश्चय है कि वह आपको चारों खाने चित कर देगा। सच तो यह है कि उसके साथ रह कर मैं हमेशा यह महसूस करता रहा कि यह कोई साधारण आदमी नहीं है। उसकी मानसिक क्षमताओं को मैं आदर की दृष्टि से देखता था और सोचा करता था कि हमारे कालिजो में प्रति वर्ष छात्रों की पढ़ाई में जितना श्रम किया जाता है यदि उसका आधा श्रम भी इसकी पढ़ाई पर किया जाता तो निश्चय ही आज समाज में इसका बहुत बडा स्थान होता।

अधिकांश स्वयं-शिक्षित लोगों की तरह वह शिक्षा को बहुत अधिक महत्त्व देता था, और यद्यपि इसमें मेरा ही फायदा था, फिर भी मैं अक्सर इस बारे में उसे सचेत करता रहता था। वह हमेशा मेरे साथ बडी इज्जत से पेश आता था और अक्सर मेरे ज्ञान को अनावश्यक महत्व देकर खामखां मेरी बात मान

लेता था। अन्य नाविको और कप्तान वगैरह को वह कुछ नही समझता था। वह बहुत कुशल नाविक था और शायद कप्तान से श्रेष्ठ नौचालक था, और जहाज के पिछले हिस्से में सारे लोगो के बुद्धि-बल से उस अकेले आदमी का बुद्धि-बल कही अधिक था।

मल्लाह उसके बारे में कहते, "टाम का दिमाग सबदरे की बराबर बड़ा है", और जब कोई उससे बहस करने लगता तो वे उसे समझाते—"अरे, भाई! उससे बहस मत करो, जलते हुए गरम आलू की तरह उसे छोड दो, वर्ना एक क्षण मे टाम तुम्हारी खाल उधेड कर रख देगा।"

मुझे याद आता है एक बार वह मुझसे खाद्यान्न कानूनों के विषय पर उलझ पडा। मुझे पहरा देने के लिए बुलाया गया था, और जब मैं डेक पर पहुँचा तो मैंने देखा वह वहाँ पहले से ही मौजूद है। हमेशा की तरह हमने कटि में इधर से उधर तक टहलना शुरू कर दिया, तब उसने खाद्यान्न कानूनों की बात चलायी, और मेरी राय मागी। मैंने अपनी राय दी, और अपने तर्क भी दिये। यह सोच कर कि इस विषय में उसे या तो बिल्कुल ही जानकारी नहीं होगी या बहुत कम होगी, मैंने अपने अल्प ज्ञान को भी बडी शान से बघारा।

जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तो उसने मुझसे मतभेद प्रकट किया और उस विषय से सम्बद्ध ऐसे तर्क और तथ्य मेरे सामने प्रस्तुत किये जो मेरे लिए नवीन और सर्वथा अकाट्य थे। मुझे स्वीकार करना पडा कि इस विषय में मुझे कोई ज्ञान नहीं है। मैंने उसकी जानकारी पर भी आश्चर्य व्यक्त किया।

उसने बताया कि कई साल पहले जब वह लिवरपूल के एक बोर्डिगहाउस में था तब इस विषय पर एक पुस्तिका उसके हाथ लग गयी थी, और चूंकि उसमें कुछ तथ्य दिये गये थे इसलिए वह इसे बडे चाव से पढ़ गया था और तब से बराबर किसी ऐसे आदमी की तलाश में था जो इस विषय में उसकी जानकारी में इजाफा कर सके। यद्यपि उसे यह किताब पढ़े कई बरस हो चुके थे, और इस विषय से वह तनिक भी पूर्वपरिचित नहीं था, फिर भी उसके मस्तिष्क में एक तर्क-शृंखला विद्यमान थी जो राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था के सिद्धातों पर आधारित थी, और जहाँ तक मैं समझता हूँ उसके तथ्य सही थे, कम से कम उसने उन्हें एक विचित्र सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत तो किया ही था।

वह वाष्प इन्जन के सिद्धान्तों से भी परिचित था। इसका कारण यह कि

वह कुछ महीनों तक एक अगनबोट पर नौकरी कर चुका था और सब रहस्यो का पारंगत हो गया था। वह दोनों गोलार्द्धों में स्थित प्रत्येक चाद्र तारक को जानता था और क्वाड्रैंट और सेक्सटैंट यंत्रो का पूर्ण ज्ञाता था। ऐसा था यह आदमी जो चालीस वर्ष की अवस्था में भी बारह डालर प्रति मास पर अगवाड में काम करने वाला नाचीज मल्लाह था। इसका कारण उसके विगत जीवन मे खोजा जा सकता था जिसके बारे में मुझे समय-समय पर उसी के मुंह से सुनने को मिला।

जन्म से वह अंग्रेज था और कार्नवाल के इल्फ्राकोम्ब नामक स्थान का निवासी था। उसका बाप ब्रिस्टल के एक छोटे से जहाज का कप्तान था। वह छोटा था तभी उसका पिता चल बसा और हैरिस को अपनी मां के संरक्षण में छोड गया। माँ के प्रयत्नों से उसने सामान्य स्कूली शिक्षा प्राप्त की। जाडों में वह स्कूल में पढता था और गरमियों में तटवर्ती व्यापार में काम करता था। जब वह सत्रह वर्ष का हुआ तो विदेश-यात्रा के लिए घर से निकल पडा।

अपनी मां का नाम वह बडे ही आदर से लेता था, उसका कहना था कि उसकी मां दृढ संकल्प वाली महिला थी और उसने उसे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दिलायी थी। इस शिक्षा ने उसके तीनो भाइयों को प्रतिष्ठित व्यक्ति बना दिया और वह भी अपनी जिद्दी प्रवृति के कारण ही शिक्षित और प्रतिष्ठित न बन सका।

वह अक्सर कहा करता था कि बच्चों के अनुशासन के मामलों में एक बात में उसकी मां अन्य मांओं से सर्वथा भिन्न थी, जब वह गुस्से में खाने को मना कर देता था तो अन्य अधिकांश माओं की तरह वह यह सोच कर प्लेट उठा कर अलग नहीं रख देती थी कि जब भूख लगेगी तो अपने आप खायेगा, बल्कि उसके ऊपर खडी हो जाती थी और पूरी प्लेट खाने पर उसे मजबूर कर देती थी।

वह कहा करता था कि उसकी आज की हालत के लिए मा को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। माँ के उन असफल प्रयत्नों के लिए उसके मन में इतनी कृतज्ञता थी कि उसने यात्रा की समाप्ति पर घर जाकर सारा वेतन मा पर और माँ के साथ, अगर सौभाग्य से वह जीवित मिली तो, खर्च करने का निश्चय कर लिया था।

घर से निकलने के बाद लगभग बीस साल तक वह प्रायः सभी तरह की यात्राओं, आम तौर पर न्यूयार्क और बोस्टन के बन्दरगाहों से, पर जाता रहा। दुर्गुणों के ये बीस बरस! नाविक के जीवन में जितने पाप संभव हैं वह उनमें

गले तक धंस चुका था। अनेक बार उसे अस्पतालों की शरण लेनी पडी और हर बार उसकी शारीरिक शक्ति ने उसे बचा लिया। कई बार अपनी क्षमताओं के कारण उसे मुख्य मालिम के पद पर नियुक्त किया गया लेकिन बन्दर गाह में अपने आचरण, खास तौर पर शराब खोरी जिसे वह न भय के कारण छोड सका था न महत्वाकाक्षा के कारण, की वजह से उसे फिर से अदना मल्लाह बनने पर मजबूर होना पडा। एक रात को वह मुझे अपना जीवन-वृत्त सुना रहा था कि अपनी मर्दानगी के कीमती बरसो को बरबाद कर देने के लिए दुखी होते हुए उसने कहा कि बाईस बरस के कठोर परिश्रम और वातावरण के अत्याचार सहने का पुरस्कार नीचे अगवाड में पडो पेटी है जिसमें पुराने कपडों के अलावा कुछ नहीं है—उन बाईस बरसो का पुरस्कार जिनमें उसने घोड़े की तरह काम किया है और कुत्ते की तरह ललकारे खाये है।

उम्र के साथ-साथ उसे बुढ़ापे के दिनों के लिए कुछ इन्तजाम करने की जरुरत महसूस हुई। वह इस नतीजे पर पहुँचा कि उसकी जानी दुश्मन रम है। एक रात को, जब वह हवाना में था, तब उसका एक युवा साथी मल्लाह नशे की हालत में जहाज पर लाया गया। उसके सिर में एक गहरा और खतरनाक जख्म था और उसके पैसे और नये नये कपड़े लोगों ने छीन लिए थे। हैरिस ने ऐसे सैकडों दृश्य खुद भुगते और देखे थे, लेकिन उन दिनो वह ऐसी मनःस्थिति में था कि इस घटना से उसके निश्चय को बल मिला, और उसने किसी भी तरह की शराब न पीने का निश्चय कर लिया। न उसने किसी तरह क प्रण पर हस्ताक्षर किये, न कोई प्रतिज्ञा की, लेकिन उसे अपने उद्देश्य की दृढ़ता पर भरोसा था।

उसके लिए पहली चीज थी तर्क, दूसरी सकल्प, और तब भला उसके कृतकार्य होने में अड़चन हो क्या थी। अभी तक उसे अपने सकल्प की तिथि याद थी। यह बात मुझसे उसकी मुलाकात होने से तीन वर्ष पहले की थी, और इस बीच साइडर या काफी से कडी चीज उसने मुंह से नही लगायी थी। नाविक टाम को एक गिलास शराब पिलाने की उसी तरह नहीं सोचते थे जैसे वे जहाज की कुतुबनुमा से बात करने की नहीं सोचते थे। अब वह सारी जिन्दगी के लिए संयमी बन चुका था और जहाज पर किसी भी पद को सुशोभित करने के सर्वथा योग्य था, और तट पर अनेक ऐसे उच्च पद हैं जिन पर उससे कही गये-बीते लोग आसीन हैं।

वह जहाज की व्यवस्था को वैज्ञानिक पद्धति पर समझता था, और यह बता

सकता था कि जहाज की कौन-सी रस्सी क्यो खीची जाती है। लम्बा अनुभव, सूक्ष्म पयवेक्षण और अमिट स्मरणशक्ति ने उसे ऐसा आश्चर्यजनक ज्ञान-भडार प्रदान किया था जिससे वह आपत्ति-विपत्ति में त्वरा और चतुराई से काम निकाल सकता था। मैं उसका कृतज्ञ रहूँगा क्योकि मैं उसके लिए जो कुछ भी कर पाता था उसके बदले में वह बड़े प्रेम से अपने ज्ञान का भडार मेरे लिए उन्मुक्त कर देता था।

अत्याचार और कठोरता की कहानी, जिन्होने नाविकों को जलदस्यु बनने पर मजबूर किया है, कप्तानों और मालिमो की भयानक मूर्खताओं के किस्से; बीमार, मृत और मरणोन्मुख लोगों के प्रति भयानक पाशविकता की घटनाएं; और साथ ही जहाज के मालिकान, जमीदारों और अफसरों की मिली भगत से मल्लाहों पर होने वाले जोर-जुल्म के अनेक किस्से उसे जबानी याद थे, और मुझे उन पर विश्वास करना होता था क्योंकि जो मल्लाह उसे पिछले पन्द्रह सालो से जानते थे उनका कहना था कि झूठ की तो बात क्या हैरिस सचाई का बयान करते समय उसमें नमक-मिर्च तक नही लगाता, और जैसा कि मैं बता चुका हूँ उसकी बातों का कोई खन्डन नही कर सकता था।

उसने मुझे एक कप्तान के बारे में बताया था, जिसके बारे में मैं रिपोर्ट में भी पढ़ चुका था, कि वह कभी कोई चीज मल्लाह के हाथ में नही देता था, बल्कि उसे डेक पर रख कर ठोकर मार कर उसके आगे डाल देता था। बोस्टन का एक और साधनसपन्न कप्तान था जिसने सुमात्रा की यात्रा के लिए बोस्टन में मल्लाह के रूप में भरती हुए एक लडके की जान ही ले ली थी। लडका बुखार से पीड़ित था लेकिन कप्तान ने उसे भारी कामो में लगाये रखा और उसे बन्द स्टीअरेज में सोने पर मजबूर किया, लिहाजा वह मर गया। (यही कप्तान उसी तट पर उसी बुखार में मरा था।)

वास्तव में नौचालन, नाविकों के जीवन के इतिहास, व्यावहारिक बुद्धि, नयी परिस्थितियो में मानव-स्वभाव (बहुत कम लोग इस अत्यंत महत्वपूर्ण इतिहास से अवगत होते हैं)—इस सबके बारे में मैंने उससे जितना-कुछ सीखा उसके कारण मैं पहरे पर उसके साथ बिताये समय को स्वाध्याय और सामाजिक संपर्क के किसी भी दूसरे समय से अधिक मूल्यवान समझता रहूँगा।

* * *

अध्याय—२४

रविवार, ग्यारह अक्टूबर। आज सुबह हम अनुवात दिशा में रवाना हुए, सैन पेड्रो के पास से होकर गुजरे, और हमें यह देखकर अपार प्रसन्नता हुई कि जहाज ने यहां लगर नही डाला, बल्कि सीधा सैन डियागो की ओर चल दिया, जहाँ हम—

बृहस्पतिवार, अट्ठारह अक्टूबर को पहुँचे। यहाँ पहुँच कर हमने अपना जहाज बाँध दिया। यहाँ हमें प्रतिवात दिशा से आया दो मस्तूलों वाला "ला रोजा" नामक जहाज मिला जिसने हमें सूचना दी कि "पिलग्रिम" सैन फ्रैंसिस्को में है, और सकुशल है। यहा पहले जैसी ही शांति छायी थी। हमने अपनी खालें, सोग और चरबी के थैले वगैरह उतार दिये, और आगामी रविवार को फिर रवाना होने के लिए तैयार हो गये।

मैं गोदाम वाले अपने पुराने डेरे में गया जहां लोग पहले की तरह ही अपना वक्त बिता रहे थे। सूर्यास्त के एकाध घन्टा बाद मैं भट्ठी पर अपने कनाका मित्रों से मिलने गया। वे मुझे देखकर बडे खुश हुए और कनाका लोगों का "परम मित्र" होने के नाते मेरा अभिवादन किया। मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि मेरा कुत्ता ब्रेवो मर गया है। जिस दिन मैं "एलर्ट" में भरती होकर यात्रा पर गया उसी दिन वह बीमार पडा, और अचानक ही मर गया।

पहले की तरह ही इस रविवार को भी हम फिर यात्रा पर निकल पड़े। जब हम चले तो तेज समीर चल रहा था, जिससे हमें याद आया कि आजकल पतझर के अंतिम दिन हैं और हमें एक बार फिर दक्षिणी-पूर्वी झंझाओं का सामाना करने को तैयार हो जाना चाहिये। हमने जहाज के शिखरपाल छोटे कर लिये और सामने के तेज पवन में सैन जुआन तक गये। यहां किनारे से लगभग तीन मील दूर पर हमने लंगर डाल दिया और पिछले साल सर्दियों की तरह दक्षिणी-पूर्वी झंझा के आसार दिखायी देते ही समुद्र की ओर भाग निकलने की पूरी तैयारी कर ली।

इधर आते हुए जहाज पर हमारे साथ एक बूढा आदमी था जो किसी जमाने में एक जहाज का कप्तान रह चुका था, लेकिन अब उसने कैलिफोर्निया में शादी कर ली थी, और वही बस गया था। समुद्री यात्रा पर निकले उसे पन्द्रह वर्ष से अधिक हो गये थे। जहाजो में हुए परिवर्तनों और सुधारों को देखकर उसे बडा आश्चर्य हुआ। यह देखकर उसे और भी अधिक आश्चर्य हुआ कि हम जहाज पर कितने

अधिक पाल ताने रहते हैं, बल्कि यह देखकर तो वह सहम सा गया। उसने कहा कि जिन हालात में आप लोग टापगैलेंट पाल ताने रहते हैं उनमें हमारे जमाने में शिखरपालों को भी छोटा कर दिया जाता था। जहाज की गति और प्रतिवात दिशा मे उसकी प्रगति से वह बडा प्रसन्न हुआ। उसका कहना था कि हमारा जहाज प्रतिवात दिशा मे इस तरह बढ़ता है जैसे वह लोथाटी पर बढ रहा हो।

मगलवार, बीस अगस्त। सब तैयारी करने के बाद हम एजेंट को किनारे पर पहुँचाने गये। वह वहा मिशन में गया और अगले दिन सुबह से ही खालो का आना शुरू हो गया। आज रात को हमें दक्षिणी-पूर्वी झंझाओ से विशेष सावधान रहने की सख्त हिदायत दी गयी क्योंकि लम्बे, नीचे बादल डरावने लग रहे थे। लेकिन रात बिना किसी उत्पात के बीत गयी। अगले दिन सुबह हमने दीर्घ नौका और पिनेक नौका बाहर निकाल ली, क्वार्टर नावें भी नीचे उतार ली और खालें लाने किनारे पर चले गये।

अब हम एक बार फिर उसी रूमानी स्थल पर आ पहुँचे थे, जहाज के मस्तूल से दुगुनी ऊंची, सीधी खडी पहाडी, उस तक जाने वाला एकमात्र चक्करदार रास्ता, पहाडी की तलहटी में लम्बा बलुआ तट, पहाडी के चरणों पर गिर कर ऊंचा उठता हुआ संपूर्ण प्रशातमहासागर का उभार—और वहाँ, पहाडी की चोटी पर, हमारी खालों के अंबार लगे हुए थे। नाविकों में से केवल मैं ही पहले यहाँ आ चुका था, इसलिए कप्तान ने ऊपर जाकर खालो को गिनने और नीचे फेंकने के लिए मुझी को चुना। अब छः महीने पहले की तरह वहा खडा-खडा मैं खालों को नीचे फेंक रहा था। और जब वे मंडराती हुई नीचे जमीन पर पहुँच जाती थी तो, इतनी ऊंचाई से बौने दिखायी देने वाले, नाविक उन्हे सिर पर उठा—उठा कर किनारे पर दूर बधी हुई नौकाओ पर लादने लगते थे।

दो-तीन नावें खालो से भर कर जहाज की ओर रवाना हो गई। अन्त में ऊपर सब खालें खत्म हो गयी और नीचे नावें दुबारा भर गयी। लेकिन दस—बीस खालें पहाडी की दराजो में रुकी रह गयी थी, और नीचे नही पहुँची थी। उन तक पहुंचने के लिए हमारे पास कोई चीज नही थी। पहाडी की चढाई एकदम खडी थी और वे दराजें पहाडी के अन्दर की तरफ थी, इसलिए पहाडी की चोटी पर से उन्हें देख पाना या उन तक पहुँच पाना असंभव था।

चूंकि बोस्टन में खालों की कीमत साढ़े बारह सेंट प्रति पौंड थी, और कप्तान

को दो प्रतिशत कमीशन मिलता था इसलिए वह उन्हें वहीं छोड देने को तैयार नही था। उसने एक आदमी को जहाज पर भेज कर टापगेलेंट—दुपेंचा-पाल रस्सियां मंगवाई और प्रार्थना की कि कोई नाविक चोटी पर जाये और वहां से पाल रस्सियों के सहारे लटकता हुआ, खालो को छुडाता हुआ नीचे उतर आये। अब उम्र में बड़े मल्लाहो का कहना था कि हल्के-फुल्के और फुर्तीले होने के कारण यह काम उनके बस का नही है, क्योंकि इसमे ताकत और तजुर्बे की जरूरत है। सबको दुविधा में पड़े देख, और इन सब विशेषताओ को एक मात्रा में अपने अंदर पा कर मैंने अपनी सेवाएं प्रस्तुत की, और रस्सिया ढीली करने के लिए एक आदमी को साथ लेकर पहाडी पर गया और उतरने के लिए तैयार हो गया।

हमें जमीन में मजबूती से गडा एक खूंटा दिखायी दे गया। वह इतना मजबूत था कि मेरा बोझ संभाल सकता था। हमने पाल-रस्सियो का एक सिरा मजबूती से उस खूंटे से बांध दिया। अब हमने रस्सियों को पहाडी की चोटी से नीचे फेंक दिया। हमने देखा कि रस्सियों का दूसरा सिरा एक ऐसी जगह जा पहुँचा है जहाँ से आसानी से तीर पर उतरा जा सकता है। मैं मल्लाहों की गर्मियों की पोशाक—कमीज, पतलून और टोप-में था, इसलिए मुझे कपड़े नही उतारने पड़े, और मैंने उतरना शुरू कर दिया। मैंने अपने दोनों हाथों में एक-एक रस्सी थाम ली और, कभी तो चारों हाथों-पांवों से रस्सी के सहारे अधर लटकते हुए, और कभी एक हाथ से पहाडी के बाहर निकले कोनों को थामता और दूसरे हाथ से रस्सी को पकड़े नीचे उतर चला। इस तरह नीचे उतरता हुआ मैं अंदर धंसी हुई उस जगह पर पहुँचा जहाँ खालें अटक गयी थी।

एक हाथ से रस्सी पकड़े मैं लटका रहा और दूसरे हाथ व दोनों पांवों की मदद से मैंने सब खालें नीचे फेंक दी और फिर से नीचे की ओर चल दिया। इस जगह के ठीक नीचे पहाड़ी की एक चट्टान आगे निकली हुई थी, और जब मैं उस पर पहुँचा तो मुझे अपने नीचे समुद्र के अलावा कुछ भी दिखायी नहीं दिया। यहां से मुझे वह चट्टान दिखायी दे रही थी जिस पर समुद्र अपना सिर पटक रहा था और कम ऊंचाई पर उडती कुछ समुद्री चिडिएं भी दिखायी दीं। मैं सकुशल तीर पर पहुँच गया। धूल से मैं बुरी तरह भर उठा था, और इस भगीरथ प्रयत्न के लिए अपने साथियों से मुझे यह शाबाशी मिली, "तुम भी अजीब गदहे हो! आधा दर्जन खालों के लिए जान पर खेल गये!"

जब हम खालों को नाव में भर रहे थे तब मैंने गौर किया कि भारी और काले बादल समुद्र की ओर से घुमडते चले आ रहे हैं, और एक विशाल उभार तट की ओर उमडता आ रहा है; और दक्षिणी-पूर्वी झंझा के आसार दिखायी दे रहे हैं। पहले मैं दूसरी बातो में इतना व्यस्त था कि इस ओर मेरा ध्यान ही नहीं गया था। कप्तान जल्दबाजी मचा रहा था। खालें नावों पर लाद दी गयी, और बगल-बगल पानी में से नावो को धकेल कर हमने भग्नोर्मियां पार कीं और जहाज की ओर चल दिये। गिग के नाविको ने पिनेक नौका को गिग के पीछे बांध लिया और जौली नाव में बैठे छः नाविकों ने लांच को अपनी नाव के पीछे बाध लिया। जहाज वहाँ से तीन मील की दूरी पर अपने लंगर पर खडा हिल-डोल रहा था और ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़ते जाते थे, त्यों-त्यों समुद्र का उभार भारी होता जा रहा था। कई बार हमारी नावें शीर्षासन करने की स्थिति में आ गयीं, पिनेक गिग से जुदा हो गयी और लाच अब डूबी तब डूबी हो रही थी।

खुदा खुदा! करके हम जहाज तक पहुँचे। नावें पानी से आधी भर गयी थी! अब सबसे बडी परेशानी सामने आयी—क्षुब्ध समुद्र में खालों को नावों से जहाज पर कैसे चढ़ाया जाय। समुद्र नावों को गेंदो की तरह उछाल रहा था और उन पर खड़ा होना असंभव था। बड़ी कठिनाई से हमने खालों को जहाज पर चढाया और फलके में रख दिया। अब नावें जहाज पर चढ़ा ली गयी और हमने जंजीर पर तबा आजमायी शुरू की।

समुद्र की ऐसी हालत में लंगर डालना आसान नही था लेकिन चूंकि हमें लौट कर इस बन्दरगाह पर नही आना था इसलिए कप्तान ने यहा से न खिसकने का निश्चय किया। जहाज का सिर समुद्र में डूबा था और पानी उसके लगर-छेदों से होकर अंदर आ रहा था। जजीर इतनी जोर से हिल रही थी मानो बेलनचरखी की चरखी को तोड फेंकेगी। यह देखकर मालिम ने पाल तान देने का हुक्म दे दिया।

कुछ ही मिनटों में बंधे पाल खुल गये और उन्हे तान कर रस्सियों को ठीक से बाँध दिया गया। आज "आगे बढ़कर हाथ लगाओ" का आलम था, और हर आदमी इसकी जरूरत महसूस कर रहा था क्योंकि झंझा ने हमें घर ही दबाया था। जहाज ने खुद अपना लगर तोड लिया और अनुवात तट से सम्मुख उफनते समुद्र की ओर चल दिया। इस समय उसके शिखरपाल छोटे कर दिये गये थे और अगले स्थायी पाल और स्पैंकर पाल उस पर तने हुए थे।

जहाज के अगले हिस्से पर कोर्स पाल तान दिया गया जिससे उसे कुछ राहत मिली। लेकिन चूंकि जहाज उफनते समुद्र के आगे कुछ कर नहीं पा रहा था और समुद्र उसे अनुवात दिशा में धकेले दे रहा था, इसलिए कप्तान ने प्रमुख पाल-रस्सी को बेलनचरखी में लगाने का हुक्म दिया, और ऐसा हो जाने पर सब लोगों को हवीत दडो की मदद से चरखी को घुमाने का आदेश दिया। ऊपर विशाल पाल इतने जोर से उड रहा था मानो प्रमुख तान को उडा ले जायगा लेकिन नीचे की मशीनरी के बल के आगे उसका बस नही चल रहा था। अब कप्तान ने जोर लगाने का आदेश दिया और "हीव हो! हीव एन्ड पा! यो, हीव, हार्टी, हो!" के गीत के साथ बेलनचरखी धीरे-धीरे घूमने लगी और पाल का कोना जहाज की नाली से बाँध दिया गया। जमना बाजू के नाविको ने रस्सियाँ ठीक कर दी और और अब जहाज पागल घोड़े की तरह पानी को चीरता हुआ भागने लगा। वह काप रहा था और जोडो पर से हिल रहा था। समुद्र उसके सिर से टकरा रहा था और हर टक्कर में समुद्र के झाग अनुवात दिशा में कई-कई गज दूर तक छिटक जाते थे।

आधे घन्टे इस तरह बढने के बाद पाल के कोने बाँध दिये गये, पाल लपेट दिया गया और अग दबाव कम हो जाने से जहाज शातिपूर्वक आगे बढ़ रहा था। कुछ ही देर बाद अगला पाल छोटा कर दिया गया और हम पिछले शिखरपाल के नाविकों को ऊपर जाकर पिछले शिखर पाल को दुहरा बाँध देने के लिए भेजा गया।

वेदर ईयरिंग तक पहुँचने का यह मेरा पहला मौका था, और मैं ईयरिंग को पार करके यार्ड आर्म के दोनो तरफ पैर लटकाये बैठा "हाल आउट टू लीवार्ड!" गाने में विशेष गर्व का अनुभव कर रहा था। इस समय के बाद से बोस्टन पहुँचने तक मालिम ने पिछले शिखरपाल को छोटा करने या लपेटने के लिए हमारी मडली से बाहर के किसी नाविक को यार्ड पर नही भेजा, और ईयरिंग पर आमतौर पर मैं और वह नौजवान अंग्रेज ही पहुँचते थे।

पाइन्ट पार करने के बाद और समुद्र में अच्छी तरह निकल आने के बाद हमने यार्डो को पवन के अनुकूल स्थिति में कर दिया और जहाज पर और पाल तान दिये और हवा के रुख में सैन पेड्रो के लिए चल दिये। पवन की गति तेज थी और लगभग सारी रात बारिश होती रही, लेकिन सुबह के समय सन्नाटा छा गया, और झंझा बीत चुकने पर—

बृहस्पतिवार, बाईस अक्टूबर को सैन पेड्रो पहुँच कर तट से एक लीग दूर अपनी पुरानी जगह पर हमारे जहाज ने लंगर डाल दिया। हमने झन्झा में जहाज को समुद्र की ओर ले जाने की तैयारी रखी, और शिखरपालों को छोटा कर के बाँध दिया। यहाँ हम दस दिन तक रहे और हमारे दिन नाव खेने, खालें ढोने, खडी चढाई वाली पहाडी पर नौभार पहुंचाने, पत्थरो पर नगे पाँव चलने और खारे पानी में भीगने में बीते।

हमारे यहाँ आने के तीसरे दिन सैन जुआन की ओर से "रोजा" आ पहुँचा। वह झन्झा के अगले दिन सैन जुआन पहुँचा था। उसके नाविकों ने बताया कि झन्झा के बाद वहाँ की खाडी तलैया की तरह शांत हो गयी थी, और हमारे लिए तीर पर लगभग एक हजार खालें लायी गयी थीं लेकिन चूंकि दक्षिणी-पूर्वी झन्झा के कारण हम उन्हे नही ले पाये, इसलिए उन खालों को "रोजा" ने ले लिया था। यह सुन कर हमारे पाव-तले से जमीन निकल गयी, क्योंकि इस घटना से इस इटालियन जहाज ने हमें वाणिज्य के क्षेत्र में ही नही पछाड दिया था, बल्कि एक एक हजार करके ही तो हमारी चालीस हजार खालें पूरी होनी थी जिनके बिना हम कैलिफोर्निया को अलविदा नही कह सकते थे।

यहां एक नये मल्लाह को जहाज में भरती किया गया। यह मल्लाह बाईस तेईस वर्ष का अंग्रेज था। यह ना वक हमारी उपलब्धि सिद्ध हुआ। वह एक अच्छा नाविक था, काम चलाऊ अच्छा गा लेता था और, जिस चीज का महत्व मेरे लिए सबसे अधिक था वह यह थी कि, वह काफी शिक्षित था, और इतिहास का उसे अच्छा ज्ञान था।

वह अपना नाम ज्यार्ज पी० मार्श बताता था। वह कहता था कि बचपन से ही वह जहाज पर नौकरी करता आया है, और अधिकाश समय में वह जर्मनी और फ्रास व इग्लैंड के तटो के मध्य तस्कर व्यापार करता रहा है। इसी कारण वह फ्रेंच भाषा सीख गया था और अब अंग्रेजी की तरह ही फ्रेंच में भी बोल और पढ़ सकता था। लेकिन उसने अंग्रेजी भाषा का ज्ञान जहाजों में अर्जित नही किया था क्योकि तस्कर-व्यापार में लगे जहाज पर रह कर इतनी अच्छी अंग्रेजी नही सीखी जा सकती। उसका लेख असाधारण रूप से सुन्दर था, और वह सर्वथा शुद्ध भाषा धडल्ले से बोलता था। जब वह मुझसे निजी बातचीत करता था तब अक्सर किताबो के उद्धरण दिया करता था और उसकी बातों से समाज के रीति-रिवाज,

खासतौर पर इंग्लैंड की विभिन्न अदालतो और पार्लियामेंट की कुछ औपचारिकताओं की जानकारी टपकती थी। उसकी इतनी जानकारी देख कर मैं हैरान हो जाता था।

फिर भी वह अपने बारे में इसके अलावा कुछ नही बताता था कि उसकी शिक्षा-दीक्षा तस्कर व्यापार में लगे जहाज पर हुई थी। आगे चल कर हमारी मुलाकात एक ऐसे नाविक से हुई जो कई साल पहले ज्यर्ज का साथी नाविक रह चुका था। उसने हमें बताया कि जिस बोर्डिंग हाउस से वे दोनो जहाज में भरती हुए थे वहां उसने सुना था कि ज्यार्ज कालिज (शायद वह नौसेना का कालिज रहा होगा क्योंकि ज्यार्ज को लैटिन या ग्रीक भाषाएं नही आती थी) में पढ़ा था और वहां उसने फ्रेंच भाषा और गणित का अध्ययन किया था।

ज्यार्ज की प्रकृति हैरिस से भिन्न थी। हैरिस ने विघ्न-बाधाओं के बावजूद अपना मानसिक और चारित्रिक विकास किया था, जबकि इस आदमी का जन्म प्रत्यक्षत: एक भिन्न श्रेणी के परिवार में हुआ, और प्रारम्भ में उसने विधिवत शिक्षा पायी लेकिन तब से वह आवारा की तरह डोलता रहा था और अपने लिए कुछ भी नही कर सका था। अगर वह अपने साथियों से भिन्न था तो ऐसा दूसरों की सहायता और सहयोग के कारण था, जबकि हैरिस जो कुछ बन सका था वह अपने बल-बूते पर बना था।

ज्यार्ज के पास हैरिस जैसी चारित्रिक और मानसिक शक्ति, सूक्ष्मता और स्मरण शक्ति का भी अभाव था। लेकिन, उसकी उपयुक्त शिक्षा उस पर कुछ ऐसा प्रभाव छोड गयी थी कि वह अपनी मानसिक क्षमता से कही ऊंची बातें कर लेता था, और बरसो तक अदना मल्लाह की कुत्ते जैसी जिन्दगी बिताने पर भी उसका उत्साह या हास्य-विनोद का गुण मिट नही सका था। जब उसे जहाज पर आये कुछ दिन हो गये तब उसने हमें पिछले दो सालों की अपनी विचित्र राम कहानी सुनायी, जिसकी सत्यता की पुष्टि कालातर में हो गयी।

अगर मैं भूलता नही तो, वह सन् १८३३ में "लैस्कर" नामक दो मस्तूलों वाले जहाज में न्यूयार्क से कैंटन की यात्रा पर एक साधारण मल्लाह के रूप में भरती हुआ। ईस्ट इडीज पहुँच कर वह जहाज बेंच दिया गया और वह मनीला में एक छोटे से स्कूनर में भरती हो गया जो लैड्रोन और पेल्यू द्वीपसमूह की ओर व्यापारी यात्रा पर जा रहा था। पेल्यू द्वीपसमूह में एक द्वीप की समुद्री चट्टान से

टकरा कर उनका जहाज नष्ट हो गया और वहां के देशी लोगो ने उन पर हमला कर दिया। उन्होने डट कर लोहा लिया, और कप्तान, ज्यार्ज और एक लडके के अलावा सब लोग मारे गये या डूब गये। अन्त में इन तीनों ने समर्पण कर दिया और देशी लोग इन्हे कैद कर एक नाव में बिठा कर पडोस के द्वीप में ले गये।

लगभग एक महीने बाद एक ऐसा मौका आया जिसका फायदा उठा कर इन तीनों में से एक आदमी भाग सकता था। यह मौका किन परिस्थितियो के कारण आया, यह मुझे याद नही, लेकिन सिर्फ एक ही आदमी का भाग निकलना सम्भव था। उन दोनो ने यह मौका कप्तान को दिया। कप्तान ने प्रतिज्ञा की कि अगर वह बच निकला तो उन्हे छुडाने के लिए सहायता भेजेगा। वह बच निकलने में कामयाब हुआ, और एक अमरीकी जहाज में बैठ कर मनीला पहुँचा, और अपने दोनों साथियो के छुटकारे का कोई प्रयत्न न करके वह मनीला से अमरीका चला गया। बाद में ज्यार्ज को पता चला कि कुछ करना तो दूर रहा, उसने मनीला में उन दोनों के बारे में किसी से कोई बात तक नही की थी।

ज्यार्ज का साथी लडका चल बसा, और चूंकि अब ज्यार्ज अकेला रह गया था और उसके भाग निकलने की कोई सम्भावना नही थी इसलिए जल्दी ही देशी लोग उसके प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार करने लगे, बल्कि उसका ख्याल रखने लगे। उन्होने उसे रङ्ग दिया, उसके शरीर को (क्योकि उसने चेहरे या हाथों मे गुदवाने से इनकार कर दिया था) गोद दिया, उसे दो-तीन पत्निया दे दी, और एक तरह से उसे पालतू बना लिया। चौदह महीनो तक वह इसी हालत में रहा। इस प्रदेश की जलवायु सुन्दर थी, खाने की कमी नही थी और इस अधनगे आदमी के पास कोई काम नही था।

जल्दी ही वह इस सबसे ऊब गया। तरह-तरह के बहाने बनाकर वह द्वीप पर चारों ओर किसी जहाज की फिराक में घूमने लगा। एक दिन वह एक डोंगी में एक और आदमी के साथ मछलियो का शिकार कर रहा था कि उसने प्रतिवात दिशा में लगभग डेढ लीग दूर एक बडा जहाज देखा। जहाज द्वीप के पास से होता हुआ पश्चिम की ओर जा रहा था। उधर से तम्बाकू और रम लेकर लौटने का लालच देकर, बडी मुश्किल से वह अपने साथी को जहाज तक चलने के लिए राजी कर पाया।

अमरीकी व्यापारी जहाजों के कारण इन द्वीपवासियों को इन चीजों का चस्का

लग गया है। ज्यार्ज का साथी इस प्रलोभन से बच नहीं पाया, और राजी हो गया। चप्पू मारते हुए वे जहाज के मार्ग की ओर बढे और वहां रुक कर उसके आने की राह देखने लगे। सिर से पैर तक रङ्ग से पुता और प्रकटतः अपने साथी से अभिन्न नग्नप्राय ज्यार्ज जहाज पर चढ़ा, लेकिन बोलते ही उसकी भिन्नता सर्वविदित हो गयी।

अब लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब उसने कप्तान को अपनी राम कहानी सुनायी तो उसने उसे नहला-धुला कर कपड़े पहनाये और उस विस्मय विमूढ देशी आदमी को एक-दो चाकू, कुछ तम्बाकू और कपडा देकर विदा किया और ज्यार्ज को यात्रा पर अपने साथ ले लिया। न्यूयार्क इस जहाज का नाम "कैबट" था और कप्तान का नाम था लो। वह, प्रशांत महासागर को पार कर, मनीला जा रहा था और उसके मनीला पहुँचने तक ज्यार्ज ने उस पर मल्लाह के रूप में काम किया। मनीला पहुँच कर उसने "कैबट" को छोड दिया और सैंडविच द्वीपसमूह की ओर आने वाले दो मस्तूलों वाले एक जहाज पर नौकरी कर ली।

ओआहू से वह दो मस्तूलों वाले ब्रिटिश जहाज "क्लेमेंटाइन" पर दूसरे मालिम के पद पर मोंटेरी तक आया जहाँ कप्तान से कुछ अनबन होने के कारण उसने नौकरी छोड दी। वहाँ से वह सैन पेड्रो आया, और हमारे जहाज पर नौकर हो गया।

लगभग छः महीने बाद हमें बोस्टन से भेजे कुछ अखबार मिले। एक अखबार में "कैबट" के कप्तान लो का एक पत्र छपा था जो उसने न्यूयार्क पहुंचते ही प्रकाशित कराया था। उसमें दिया गया सारा हवाला बिल्कुल वही था जो ज्यार्ज ने हमें दिया था। कप्तान लो ने वह पत्र इस इरादे से प्रकाशित कराया था ताकि ज्यार्ज के मित्रों को उसके बारे में सूचना मिल जाय। अन्त में कप्तान लो ने लिखा था कि उसने ज्यार्ज को मनीला में छोडा था जहां से उसका इरादा ओआहू जाने का था, लेकिन तब से उसकी कोई खबर नहीं मिल सकी है।

ज्यार्ज ने पेल्यू द्वीपसमूह पर अपनी आपबीती एक दैनिकी में विस्तार से लिख रखी थी। उसने यह दैनिकी अंग्रेजी भाषा में लिखी थी। उसका लेख बहुत सुन्दर था और भाषा शुद्ध थी।

* * *

अध्याय—२२

रविवार, एक नवम्बर। आज (आज फिर रविवार था) हम सैंटा बारबरा के लिए चले और पाँच नवम्बर को वहाँ पहुँचे। सैंट ब्यूना वेट्टुरा के पास जब हम लंगर डालने की तैयारी में थे तो हमें बन्दरगाह में दो जहाज दिखायी पड़े। उनमें से एक तो बडा और सम्पूर्ण पालो का जहाज था और दूसरा दो मस्तूलों वाला छोटा सा हर्माफ्रोडाइट था। पहले जहाज को हमारे मल्लाह "पिलग्रिम" समझ रहे थे लेकिन मैं "पिलग्रिम" पर इतने दिन काम कर चुका था कि मेरी आँख उसे पहचानने में धोखा नही खा सकती थी। दर असल, मेरा सोचना ही ठीक था क्योंकि जब फासला कम हुआ तो साफ पता चल गया कि लम्बे नीचे और तेज मोरों व झुके हुए मस्तूलो वाला यह जहाज "पिलग्रिम" नही कोई और है।

कुछ मल्लाहों ने कहा वह "दो मस्तूलों वाला लड़ाकू जहाज" है, दूसरों का कहना था कि वह "बाल्टीमोर क्लिपर" है। मेरा ख्याल था कि वह "आयाकुचो" होगा, और जल्दी ही उसकी चोटी पर सैंट ज्यार्ज का सुन्दर झण्डा—जिसका रंग सफेद था लेकिन जिस पर सुर्ख लाल रङ्ग का बार्डर और क्रास बना हुआ था—फहराया गया।

कुछ क्षणों बाद तो कोई सन्देह ही न रह गया और हम "आयाकुचो" के पास पहुँच गये थे जो कोई नौ महीने पहले सैन डियागो से चला था जबकि हम "पिलग्रिम" में वहाँ थे। वहाँ से चलने के बाद वह वाल्परेज़ो, कैलाओ और सैंड-विच द्वीप समूह हो आया था और अभी-अभी तट पर आया था। कप्तान विल्सन अपनी नाव में बैठकर हमारे जहाज पर आया और आधे घन्टे में ही यह खबर जहाज भर में फैल गयी कि अमरीका और फ्रांस में युद्ध छिड गया है।

अगवाड में बातें अतिरंजित होकर पहुंची। खबर थी कि कई लडाइयाँ लड़ी भी जा चुकी हैं, और एक बडा फ्रांसीसी बेडा प्रशांत महासागर में घूम रहा है, वगैरह–वगैरह; "आयाकुचो" से आने वाली नाव के एक मल्लाह ने बताया कि जब वे कैलाओ से चल रहे थे तब एक विशाल फ्रांसीसी युद्धपोत और अमरीकी युद्धपोत "ब्रन्डी वाइन" युद्ध करने बाहर जा रहे थे और ब्रिटिश युद्धपोत "ब्लांडी" अम्पायर का काम करने उनके साथ जा रहा था।

यह खबर हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इसका कारण यह था कि हम जिस तट पर यात्रा कर रहे थे वह अरक्षित था, हजारों मील तक एक भी अमरीकी

युद्धपोत नही दीखता था, और घर वापस जाते हुए हमें प्रशांत और अटलांटिक महासागरो के तटों को पार करना था। इसलिए, इस खबर को सुन कर एक बार तो हमें ऐसा लगा कि हम बोस्टन के खूबसूरत बन्दरगाह में पहुँचने के बजाय किसी फ्रासीसी जेलखाने में सडेंगे।

लेकिन हम ऐसे कच्चे मल्लाह न थे कि अगवाड में पहुँची हर गप्प पर यकीन कर लें, और हम ऐसे मौके की तलाश में रहे कि उच्च अधिकारियो से मिल कर वस्तु-स्थिति का ज्ञान करें। प्रतिनौभार का क्लर्क होने के नाते मुझे असलियत का पता लगाने में सफलता मिल गयी। असलियत यह थी कि अमरीका और फ्रास की सरकारो में एक ऋण की रकम के भुगतान को लेकर मतभेद हो गया था, युद्ध की धमकियाँ तो दी गयी थी और तैयारियाँ भी शुरू हो गयी थी लेकिन युद्ध की घोषणा नही हुई थी, यद्यपि जन सामान्य युद्ध की आशंका से ग्रस्त अवश्य थे। वस्तुस्थिति इतनी बुरी तो नही थो, लेकिन थी चिंताजनक।

फिर भी हम लोग इससे चिंतित नही हुए। मल्लाह किसी बात की परवाह नहीं करता। हमें विश्वास था; कि फ्रासीसी कैदखाने में सजा भुगतना कैलिफोर्निया के तट पर "खालें जमा करने" से बुरा नही हो सकता; और यह सच है कि जो आदमी किसी जहाज में बन्द होकर एक लम्बी, नीरस समुद्री यात्रा पर नही हो आया है, वह इस बात की कल्पना कर ही नही सकता कि आदमी के वचारों और इच्छाओ पर एकरसता का प्रभाव कितना अधिक पड सकता है।

यहां परिवर्तन की संभावना रेगिस्तान में नखलिस्तान की तरह है, और बडी घटनाओं तथा उत्तेजक दृश्यों की थोडी भी संभावना इन लोगों को खुशी से भर सकती है और जीवन को गति प्रदान कर सकता है। जो आदमी इन हालात में नही है उसका इस सब की तरफ शायद ध्यान ही नही जायगा। सच तो यह है कि महीनों से हमने अगवाड में ऐसी पुरमजाक रात नही बितायी थी। हर आदमी बडे जोश में था। हर आदमी त्वरित परिवर्तनो, नये दृश्यो और महान करतबो की अस्पष्ट-सी सभावना से भर उठा था, और जहाज की रोजमर्रा की बेगार के प्रति मल्लाहों का मन वितृष्णा से भर उठा था।

अब माहौल ही नया था : बातचीत का एक जानदार विषय और बहस का जोरदार मसला मिल गया था। राष्ट्रीयता की भावना जाग उठी थी। जहाज पर एक ही फ्रासीसी था उस पर तरह-तरह के फिकरे कसे जाने लगे और उसे

"टुटियल घोडा" और "आलू का पानी" कहा जाने लगा।

दो महीने से अधिक इस युद्ध के बारे में हमें कोई निश्चित सूचना न मिल सकी। अन्त में सैंडविच द्वीप समूह से आये कुछ लोगों की जुबानी पता चला कि सारी परेशानी को दूर करने का हल ढूंढ लिया गया है और दोनो सरकारों में समझौता हो गया है।

बन्दरगाह में मौजूद दूसरे जहाज का नाम "एवन" था। वह एक हर्मोफ्रोडाइट दो मस्तूलों वाला जहाज था और सैंडविच द्वीप समूह का था। उसकी साज-सज्जा सुन्दर थी, भोर और साझ के समय उस जहाज पर रोज एक तोप छूटती थी और जहाज का झन्डा फहराया जाता था। जहाज पर बाजे-गाजे का भी प्रबन्ध था और वह व्यापारी जहाज की बजाय सैर-सपाटे के लिए बना बजरा नजर आता था; लेकिन "लोरियट", "क्लेमैंटाइन", या "बोत्रीवार", "कनवाय" या ओआहू के अमरीकियों के जहाजों से सांठ-गाठ करके वह खालों, रेशम, चाय और मसालो वगैरह का—जायज और नाजायज—काफी बडा व्यापार करता था।

हमारे आने के दूसरे दिन उत्तर की ओर से संपूर्ण पान्नो का दो मस्तूलों वाला एक जहाज वहां आया और मन्द गति से खाडी में चलता हुआ फिर दक्षिण-पूर्व की ओर विशाल कैटेलिना द्वीप की ओर चला गया। अगले दिन "एवन" ने भी वही रास्ता पकडा और वहाँ से सैन पेड्रो चला गया। समुद्री सेना और कैलिफोर्निया के लोग तो शायद इस झासे में आ जाते लेकिन हम इन चालो को खूब समझते थे। वह दो मस्तूलों वाला जहाज फिर तट पर कभी दिखायी नहीं दिया और लगभग एक हफ्ते बाद जब "एवन" सैन पेड्रो पहुंचा तो उसमें कैंटन और अमरीका के सामान का पूरा नौभार था।

यह एक ऐसा तरीका था जिससे आयात की जाने वाली वस्तुओं पर मैक्सिको सरकार द्वारा लगाया गया भारी आयात-शुल्क बचाया जा सकता था। मान लीजिए एक जहाज आता है तट के एकमात्र कस्टमहाउस मौंटेरो में एक सामान्य नौभार दर्ज कराने के बाद व्यापार शुरू कर देता है। लगभग एक महीने में अपना काफी सामान बेच लेने के बाद वह कैटेलिना या तट के समीपवर्ती अन्य विशाल जनशून्य द्वीपों की ओर निकल जाता है। इन द्वीपों के पास ओआहू से आया हुआ एक जहाज पहले से उसकी प्रतीक्षा में है। अब मौंटेरो से आया हुआ जहाज

ओग्राहू से आये जहाज पर से मनचाहा सामान ले लेता है। "एवन" के जाने के दो दिन बाद "लोरियट" ने भी हमें दर्शन दिये और बिला शक उसने भी उसी दो मस्तूलों वाले जहाज से माल मारा।

मंगलवार, दस दिसबर। हमेशा की तरह हम दिन ढले नाव ले कर कप्तान को लेने तीर पर गये। जब हम उसे ले कर लौट रहे थे तो हमने देखा कि हमारे जहाज पर झंडा फहरा रहा है।

इसका मतलब था कि जहाज वालो को कोई दूसरा जहाज दिखायी दे रहा है लेकिन हमें अपनी नाव में से कुछ दिखाई नही पड रहा था। "तेज चलो लडकों ! तेज, अपने चप्पू तेजी से चलाओ !" कप्तान ने कहा, और हमने अपने हाथों को पूरा घुमाते हुए नाव को पानी में राकेट की तेजी से चलाया।

इतनी तेजी से चलने के कारण कुछ ही मिनट बाद हमें एक-एक करके द्वीप दिखायी पडने लगे और हमें नहर की एक झलक दिखायी दी जहाँ टापगैलेंट पाल ताने हुए एक जहाज हल्की हवा में लंगर डालने की तैयारी कर रहा था। नाव का मुंह जहाज की दिशा में करके कप्तान ने हमे फिर तेजी से नाव चलाने का आदेश दिया और हमें किसी तरह के उद्दीपन की आवश्यकता न थी क्योंकि हमारे लिए यह संभावना ही काफी उत्तेजक थी कि हम एक नये जहाज पर जायेंगे जो शायद हमारे घर की तरफ का निकले, वहां हमें कुछ खबरें सुनने को मिलेंगी जो हम अपने जहाज पर लौट कर अपने साथियों को सुनायेंगे। इसलिए हम खुशी से अपनी नाव तेजी से खे रहे थे।

इसी बीच चारो ओर निस्तब्धता छा गयी और चूंकि हम जहाज से दो मील से भी कम फासले पर थे इसलिए हमें उम्मीद थी कि कुछ ही क्षण में हम उस तक जा पहुंचेंगे। लेकिन अचानक समीर वह निकला और जहाज को तेजी से द्वीपों की ओर भाग खडा होना पडा।

समीर के कारण हमें भी रुकना पडा और हम तेजी से अपने जहाज "एलर्ट" पर पहुँच गये। रात भर स्थल-समीर चलता रहा और अगले दिन सुबह के समय वह जहाज लंगर डाल सका।

उसके लंगर डालते ही हम उस पर पहुँचे। तब हमें पता चला कि वह न्यू बेडफोर्ड का एक ह्वेल जहाज था। उसका नाम "विल्मिंगटन एंड लिवरपूल पैकेट" था और उस पर तेल के उन्नीस सौ ड्राम लदे थे।

हम तो उसकी क्रेनों और नावों को देखते ही समझ गये थे कि यह तेलवाहक जहाज है। उसके टापगैलेंट मस्तूल मोटे और छोटे थे, पाल, रस्सियाँ, डडे और पेंदी—सभी चीजें गन्दी सी थी, और जब हम ऊपर पहुचे तो हमने पाया कि जहाज की हर चीज वैसी ही है जैसी किसी तेलवाहक जहाज की होती है।

उसका डेक कृत्रिम था। डेक खुरदरा हो रहा था और उस पर कही-कही तेल पडा था। तेल के ड्रामो की रगड से डेक पर जगह-जगह दरारें पड गयी थी, रस्सियां ढीली थीं और सफेद पड रही थी, डंडों पर या तख्तो पर से रोगन गायब था। गरज यह कि हर चीज की हालत खस्ता थी।

मल्लाहों की हालत भी कम खस्ता न थी। जहाज का कप्तान एक लम्बा पतला, भद्दे ढंग से चलने वाला क्वेकर था। उसने भूरे रग का सूट और चौडी बाढ़ वाला टोप पहन रखा था, और भेड़ की तरह सिर नीचा किये डेकों पर डोलता फिरता था। जहाज के मल्लाह मल्लाह न लग कर मछुए या किसान लगते थे।

यद्यपि अभी मौसम में सर्दी नहीं थी (हम लोग सिर्फ अपनी लाल कमीज और मोटे कपडे की पतलून पहने थे) फिर भी उन लोगों ने ऊनी पतलूनें डाट रखी थी—और वे भी नीली या जहाजी नही बल्कि सभी रंगों की—भूरी, काली, हरी—गेटिस उनके कन्धों पर बंधे थे और पतलूनों में हाथ डालने के लिए जेबें लगी हुई थो। उन्होने ऊनी जर्सिया पहन रखी थी, गले में धारीदार रूमाल पड़े थे, और पैरो में मोटे चमड़े के जूते पहन रखे थे, उनके सिरो पर ऊनी टोपिया थी। उनसे तेल की तीखी बू आ रही थी और मल्लाही के काम में वे साफ अनाड़ी दिखायी दे रहे थे। आठ-दस मल्लाह आगे के शिखरपाल यार्ड पर लगे हुए थे, लगभग इतने ही प्रमुख शिखरपाल लपेट रहे थे और आठ-दस मल्लाह अगवाड में निठल्ले घूम रहे थे।

जो जहाज लंगर डाल रहा हो उसके मल्लाहों का यह हाल देख कर हमें अच-रज हुआ और हम ऊपर पहुंच गये कि आखिर देखें तो बात क्या है? एक स्वस्थ और मस्तमौला से मल्लाह ने अपना पाव दिखाते हुए बताया कि मुझे स्कर्वी हो गयी है; एक दूसरे मल्लाह ने अपना हाथ काट लिया था; दूसरे मल्लाह ठीक तो हो चले थे लेकिन उनका कहना था कि पाल वगैरह उतारने के लिए ऊपर काफी आदमी मौजूद हैं इसलिए हम अगवाड़ में मस्ती की छान रहे हैं। पूरे जहाज में

एक ही "पलासने वाला" था। वह एक सुन्दर बूढा मल्लाह था और इस समय आगे के शिखरपाल की बन्ट में काम कर रहा था। शायद मल्लाह नामधारी जो लोग जहाज में थे उनमें असली मल्लाह वही था।

मालिम अफसर, नाव चलाने वाले और दो मल्लाह—जहाज के सिर्फ इतने ही लोगो ने इससे पहले समुद्री यात्रा की थी, और वह भी ह्वेल मछलियों को पकड़ने के सिलसिले में। बाकी सभी लोग एकदम अनुभवहीन थे और उन्हें समुद्री जीवन के बारे में कुछ भी पता न था

जब तक हर चीज नहीं लपेट दी गयी तब तक पिछले मस्तूल का शिखरपाल बट लाइनो में लटका रहा। इस प्रकार इस जहाज पर तीस मल्लाहों की टोली ने आधे घन्टे में इतना काम किया जितना हमारे जहाज "एलर्ट" पर अट्ठारह मल्लाह पन्द्रह या बीस मिनट मे कर डालते।

हमें मालूम हुआ कि समुद्र में यात्रा करते करते उन्हें छः या आठ महीने हो चुके हैं और उनके पास हमारे लिए कोई नवीन समाचार नही है, इसलिए हम, शाम को छुट्टी ले कर उनसे कुछ अजीब चीजें वगैरह खरीदने आने के लिए कहकर, वहा से चल दिये। शाम को काम से फारिग होते ही हमने सपर लिया और छुट्टी ले कर उस जहाज पर दो-एक घन्टे बिताने के इरादे से एक नाव में बैठकर चल दिये।

उन्होने हमें ह्वेल की हड्डियां और समुद्र के कुछ दूसरे अद्भुत जीवो के दांत और अन्य हिस्से दिये और हमने उनसे अपनी किताबो का विनिमय भी किया—विदेशी बन्दरगाहो में मिलने वाले जहाजों में यह प्रथा बहुत प्रचलित है। इसमें लाभ यह है कि आपको उन किताबो से छुटकारा मिल जाता है जो आप कई कई बार पढ़ चुके है और नयी किताबें पढ़ने को मिलती हैं, और जहा तक इस बात का सवाल है कि कुछ किताबें महगी होती हैं कुछ सस्ती, सो मल्लाह लोग इस बात की परवाह ही नही करते।

बृहस्पतिवार, बारह नवम्बर। आज भोर में खासी ठन्ड थी और चारों और काले बादल घिरे हुए थे लेकिन चूंकि सुबह के समय अक्सर यही आलम रहता था इसलिए किसी तरह की आशका न हुई और सभी कप्तान दिन बिताने के लिए पार चले गये।

दोपहर के समय पर्वतों पर गहरे बादल घिर आये। सैंटा बारबरा को चारं

ओर से घेरने वाली पहाड़ियो पर आधा दूर तक झुक आये और दक्षिण-पूर्व की दिशा से एक भारी उभार किनारों से समुद्र की ओर चला आ रहा था। मालिम ने तुरन्त ही नाव के मल्लाहो को तीर पर जाने का हुक्म दिया। तभी हमने देखा कि दूसरे जहाजो से भी नावें तीर के लिए चल पडी है।

नावों की दौड़ का यह अच्छा मौका था और सब ने उसमें आगे निकलने की पूरी कोशिश की। हम "ब्रायकुचो" और "लोरियट" की नावों को तो पीछे छोड़ आये लेकिन ह्वेल जहाज की लम्बी छः चप्पुओ वाली नाव से आगे नही निकल सके। वे भग्नोर्मियों तक हमसे पहले पहुँच गये, लेकिन यहा आकर हमने उनसे बाजी जीत ली। चू कि वे अभी भग्नोर्मियों में नाव खेने से परिचित नही थे इस-लिये उन्हें यह देखने के लिए रुकना पडा कि हम अपनी नाव किनारे पर कैसे ले जाते हैं। मुझे याद आया कि लगभग एक साल पहले जब मैं "पिलग्रिम" में था इसी जगह पर हमें भी रुक कर कनाका मल्लाहों से भग्नोर्मियो को पार करना सीखना पडा था।

अभी हमने नावों को किनारे पर लगाया ही था कि हमारा पुराना दोस्त खूबसूरत अग्रेज मल्लाह बिल जैक्सन; जो "लोरियट" की नाव चला कर लाया था, चिल्ला उठा कि "लोरियट" बह रहा है, और सचमुच ही उसका जहाज लंगर को घसीटता हुआ खाडी की ओर बढ़ा जा रहा था।

चूंकि जहाज पर मालिम और स्टीवार्ड के अलावा कोई भी न था, इसलिए कप्तान की प्रतीक्षा किये बिना ही वह उछल कर नाव में जा बैठा- कनाका मल्लाहों को भी बुलाकर बिठा लिया और जहाज की ओर जाने की कोशिश करने लगा। लेकिन यद्यपि कनाका लोग पानी की मछली होते हैं फिर भी अपने जहाज को बहता देख और स्थिति की गम्भीरता से वे घबरा गये और उनके होश-हवास गुम हो गये।

उन्होने दो बार भग्नोर्मियो को पार कर के समुद्र में जाने की कोशिश की और दोनों बार उनकी नाव तीर पर आ गिरी। जेक्सन उन पर बुरी तरह बरस पड़ा और उनकी खाल उधेड लेने की धमकी दी। लेकिन इससे कुछ न हुआ, आखिर हम लोगो ने हाथ बढाया, हमने कनाका लोगों को नाव में बिठा दिया और दो-दो आदमियो ने नाव को दोनों ओर से पकडा और उसे धकेलते हुए उसके साथ पानी में आगे बढ़े। जब पानी हमारे कन्धों तक आ गया तब हमने नाव

को आगे की ओर जोर का धक्का दिया और वे अपने चप्पूओं की सहायता से भग्नोर्मियों को पार कर के समुद्र के लम्बे और नियमित उभार में पहुँच गये।

इस बीच हमारे जहाज और ह्वेल जहाज से नौकाएं भेज दी गयी थी और सब लोगो ने "लोरियट" पर पहुच कर दूसरा लंगर डाल दिया और जहाज को रोक दिया।

कुछ क्षण बाद हमारा कप्तान जल्दी मचाता हुआ तीर पर आया, अब थोडा भी समय नष्ट करना उचित नही था क्योकि ऐसा लगता था कि भीषण झंझा आने ही वाली है। भग्नोर्मिया किनारे से टकरा रही थी और प्रति क्षण ऊंची होती जा रही थी। सब से पहले चार कनाका मल्लाहों द्वारा चालित "आयाकुचो" की नाव रवाना हुई, और चूंकि उनकी नाव में ‹डर था कर्ण चप्पू नही था इसलिए अगर हम सहायता न करते तो शायद वे भग्नोर्मियों को कभी भी पार न कर पाते। इसके बाद ह्वेल जहाज की नाव रवाना हुई क्योंकि सब से अधिक अनुभवी होने के कारण हमें किसी की मदद की जरूरत न थी इसलिए हम अन्त तक रूके रहे।

नाव से लम्बी यात्रा में ह्वेल जहाज पर काम करने वाले मल्लाहों का कोई जवाब नही है लेकिन भग्नोर्मियों पार करने का उन्हें अनुभव नही था, और दूसरी नावों को पार होते देख कर भी वे इस प्रक्रिया को अच्छी तरह समझे नहीं थे इसलिए वे तेजी से समुद्र की ओर बढने लगे, नतीजा यह हुआ कि भग्नोर्मियों ने उन्हें उनकी नाव और चप्पुओं के साथ किनारे की रेत पर ला पटका। अगली बार फिर उन्होंने खुद ही कोशिश की। इस बार उन्होंने नाव को उलट लिया था, हम उनकी कोई मदद नही कर सकते थे क्योकि वे इतनी अधिक संख्या में थे कि एक-दूसरे की ही नही सुन रहे थे। तीसरी बार उन्हें सफलता मिल गयी। फिर भी एक दीर्घ तरंग उनकी नाव में आ गिरी जिसने उन सबको भिगो दिया और उनको नाव में इतना पानी भर गया कि जहाज पर पहुँचने तक वे उसे उलीचते ही रहे।

अब हमने चलने की तैयारी की। अंग्रेज मल्लाह बेन और मैं सबसे लम्बे थे इसलिए हम दोनों मोरों के दोनों ओर खड़े हो गये और नाव को समुद्र के आमने-सामने रखा। दो लोगों ने चप्पू संभाले और कप्तान ने कर्ण चप्पू अपने हाथ में ले लिया।

किनारे पर दो-तीन स्पेनी लोग हमारी ओर देख रहे थे। उन्होंने अपने लबादे लपेटे, सिर हिलाया और बुदबुदाये "करंबा !" उन्हें हमारी यह हरकत पसन्द नही आयी। असल बात यह है कि पानी से डरना उनकी राष्ट्रीय बीमारी है और वह लोगों तथा उनके व्यवहार में स्पष्ट झलकती है।

"निरापद अवसर" देख कर हमने यह सोचा कि दूसरी नावों को दिखाया जाय कि भग्नोर्मियां किस तरीके से पार की जाती हैं। हम नाव को समुद्र के आमने-सामने रखकर अपनी पूरी ताकत से उसे पानी में धकेलते हुए भागे, कप्तान कर्ण चप्पू को और बाकी दो मल्लाह पिछले दो चप्पुओं को तेजी से चला रहे थे, अन्त में हम भागते-भागते उछल कर चुपचाप मोरों पर चढ़ गये ताकि दूसरे मल्लाहों के काम में विघ्न न पड़े।

कुछ देर तो ऐसा लगा कि बात बनेगी नही। नाव पानी में शीर्षासन सा करने लगी। उसके नीचे से गुजरती हुई लहरें उसे इतना ऊपर उठा कर इतने जोर से नीचे पटक रही थी कि लगता था उसकी पेंदी ही फट जायेगी। हमनें चुपचाप दो चप्पू संभाले और मोरों पर बैठ कर उन्हें चलाने लगे। इस प्रकार चार चप्पुओं व कप्तान के मजबूत बाजू की सहायता से हम भग्नोर्मियों को पार कर गये यद्यपि इस बीच कई लहरें हमारे ऊपर आ गिरीं और नाव में काफी पानी भर गया।

"लोरियट" का कप्तान हमारी नाव में ही था। हम उसके पास से होकर गुजरे और कप्तान को उसके जहाज पर चढा दिया। हमने देखा कि "लोरियट" खिसकने की तैयारी में है। इसके बाद हम अपने जहाज पर पहुंचे। वहाँ मि० ब्राउन ने हस्बमामूल पहले ही सारी तैयारी कर रखी थी, इसलिए जैसे ही हमने नाव को हुक में लगा कर ऊपर चढ़ाया वैसे ही पाल ढीले करने का आदेश दे दिया गया।

हम अभी यार्डों पर काम ही कर रहे थे कि हमने "लोरियट" को जाते देखा और कुछ ही देर बाद हमने "आयाकुचो" को पंख फैलाये जाते हुए देखा।

दुनिया में बहुत कम दृश्य ऐसे हैं जो सुन्दरता की दृष्टि से हवा के अनुकूल तेजी से बहते हुए संपूर्ण पालों के जहाज की तुलना कर सकें। एक क्षण में हमने भी लंगर उठा दिया और हवा भर कर चल पडे। हमारे बाद ह्वेल जहाज रवाना हुआ। केवल आधा घन्टा पहले चार जहाज लंगर डाले शांत भाव से पडे थे,

गति का कोई चिन्ह तक न था लेकिन अब खाडी उजाड लग रही थी और चार बादल समुद्र की ओर बढ़ रहे थे।

दिन भर और रात के अधिकाश में हम दक्षिण-पूर्वी झंझा का मजा लूटते रहे—कभी कम और कभी बहुत तेज झंझा चलती रही और तीन-चार घन्टे जम कर वारिश भी हुई। भोर में बादल हल्के पड गये और फिर गायब हो गये और सूरज निकल आया। ऐसे में आम तौर पर हवा उत्तर से चलती है लेकिन आज बंदरगाह की ओर से लगातार ताजी हवा आ रही थी।

यह बात हमारे लिए घाटे की थी, क्योकि हमारे पास केवल हल्के पाल थे जिनकी मदद से हम तेज हवा होने पर ही लंगरगाह तक सब से पहले पहुँच सकते थे। लेकिन अब इस बात की संभावना अधिक थी कि "आयाकुचो" हमसे बाजी मार ले जायगा क्योकि वह हमारे मुकाबले पवनाभिमुख था।

हां, ह्वेल जहाज हमसे अनुवात दिशा में था और "लोरियट" द्वीपों में कही था और हमें दिखायी नही दे रहा था। हमने बडी तरकीब से काम लिया और अनुवात दिशा के जहाजों को हम पीछे छोड आए। लेकिन जब हम लगरगाह में पहुँचे तो "आयाकुचो" वहा पहुच कर लंगर डाल चुका था। उसके पाल लपेटे जा चुके थे और वह इतना शात था जैसे पिछले चौबीस घन्टो में कुछ हुआ ही न हो।

हम हमेशा की तरह पहला ही लंगर डालने में सफल हो गये और आधे घन्टे में हमने जहाज का सब काम पूरा कर लिया। इसके लगभग दो घन्टे बाद ह्वेल जहाज आया और बडी मुश्किलों के बाद वह लंगर डाल पाया। तीन घन्टों में भी वे अपना काम पूरा नही कर पाये। दोपहर तक उनके यार्डों पर पाल लटके रहे और शाम से पहले उन्हे नही लपेटा जा सका। "लोरियट" साझ ढले आया और लंगर डाल कर खडा हो गया।

हमारे जहाज और "आयाकुचो" में विगत घटना को ले कर विवाद हो गया, कौन सा जहाज तेज चलता है—इस बात पर कप्तानों में शर्त लग गयी, और मल्लाह लोग भी आपस में बाजी लगाने लगे; लेकिन चूंकि दोनो जहाजो को दो भिन्न दिशाओं में जाना था और व्यापारी जहाजों के कप्तान मनमानी नहीं कर सकते इसलिए आजमाइश का मौका ही न आया। और शायद यह अच्छा ही हुआ क्योंकि "आयाकुचो" आठ सालों से प्रशात महासागर में यात्रा कर रहा था, वह

उसके हर हिस्से—वाल्परेजो, सैंडविच द्वीपसमूह, कैंटन, कैलिफोर्निया और अन्य—से परिचित था और प्रशांत महासागर में यात्रा करने वाला सबसे द्रुतगामी व्यापारी जहाज माना जाता था। हां, कालांतर में यह श्रेय "जान गिल्पिन" और बाल्टीमोर के "ऐन मेककिम" नामक जहाजों को दिया जाने लगा।

शनिवार, चौदह नवंबर। आज हमें एजेंट के साथ मोटेरी जाने वाले कुछ स्पेनी यात्री मिल गये। हम नाव ले कर उन्हे मय सामान के लेने किनारे पर गये। वे तट पर हमारी बाट देख रहे थे। उस समय भग्नोर्मियां ऊंची उठ रही थी इसलिए वे कुछ डरे हुए से थे।

हमें क्या चिंता थी, हमें तो स्पेनियों को समुद्र के खारे पानी का स्वाद चखाने में खास मजा आता था। इसके अलावा सभी मल्लाह एजेंट को सख्त नापसंद करते थे, और चूंकि नाव पर कोई अफसर नही था इसलिए हम सोच रहे थे कि इन्हे एक गोता दिया जाये। हम यह सोच कर और भी निश्चिंत थे कि इन्हें यह भी पता नही चलेगा कि हमने जान-बूझ कर यह शरारत की है।

योजना के अनुसार ही हमने नाव इतनी दूर पर रोकी कि उस तक आने के लिए उन्हें पानी में चलने पर मजबूर होना पडा। इसके बाद जब एक बडी लहर आयी तो हमने उसे इस तरकीब से नाव मे लिया कि वे लोग सिर से पैरों तक भीग गये। स्पेनी लोग उछल कर नाव से बाहर जा खडे हुए; उन्होने गालिया देना और अपने बदन को झटकना शुरू कर दिया और हमारा एजेण्ट बडी मुश्किल से उन्हें दुबारा नाव में बैठने के लिए राजी कर सका।

आगे हमने सावधानी से काम लिया और आराम से नाव खेते हुए उन्हे जहाज पर ले आये। जब मल्लाह लोग उनका सामान ऊपर चढाने के लिए जहाज के बाजू पर आये तो हमने उन्हें आंख का इशारा दिया और अधभीगे स्पेनियों की खस्ता हालत का मजा उन्होने भी जी भर कर लूटा।

सारी तैयारियाँ हो चुकी थी और यात्री भी जहाज में आ गये थे इसलिए हमने अपना झंडा और चौडी पताका (क्योंकि आस-पास कोई लडाकू जहाज नहीं था और उस तट पर हमारा जहाज सबसे बडा था) फहरा दी, और दूसरे जहाजों ने भी अपने-अपने झंडे फहरा दिये। हमने जहाज को थोडा ठहरा लिया, गैस्केट रस्सियों को ढीला छोड दिया और हर पाल की बंट जिगर से बांध दी, हर यार्ड पर एक आदमी को तैनात कर दिया गया और जहाज के सभी पालों को ढीला छोड दिया

गया, और फिर बिजली की तेजी से हर पाल से रस्सियां बांध दी गयीं और सब पालों को ऊपर चढ़ा लिया गया। लंगर को पानी में से उठा कर लंगर कुन्दे में रख लिया गया, और जहाज आगे बढ़ने लगा।

हम "तेल वाहक" जहाज को यह दिखा देने पर आमादा थे कि एक अच्छे जहाज पर कुशल मल्लाह किस तरह काम करते हैं चाहे उनकी संख्या उसके मल्लाहों से आधी क्यों न हो। रायल यार्ड, रायल पाल और आकाश पाल लगा दिये गये। चूंकि हवा मजे की चल रही थी इसलिए बूम निकाल दी गयीं। हर मल्लाह डेक पर बिल्ली की तरह फुरती से काम कर रहा था। कप्तान एक के बाद दूसरे पाल का ढेर लगाये जा रहा था। अन्त में जहाज पालों से ढक गया। उसके पाल ऐसे लग रहे थे मानों कोई भूधराकार श्वेत बादल किसी काले नन्हें बीज पर बैठ गया हो। कुछ ही देर मे हमारा जहाज तेज रफ्तार से चलने लगा।

इस चालीस मील लम्बी और दस मील चौडी खाडी को लोग "नहर" कह कर पुकारते हैं। नहर पार करते समय समीर चल रहा था। रात के समय समीर रुक गया और रविवार को सारे दिन हमारा जहाज हवा के अभाव के कारण प्रगति नहीं कर सका। रविवार को हम सैंटा बारबरा और पाइन्ट कंस्पेप्शन के बीच में रहे। रविवार की रात को फिर हलका समीर बहने लगा और हमने आगे बढ़ना शुरू किया; सोमवार को पूर्वाह्न में तेज समीर चलता रहा जिससे हमें उम्मीद हो चली कि हम कोई मुसीबत उठाये बिना ही पाइन्ट कंस्पेप्शन को पार कर जायेंगे। पाइन्ट कन्सेप्शन को कैलिफोर्निया का केपहार्न कहा जाता है, यहाँ पहली जनवरी से हवाएं चलनी शुरू होती हैं और सारे साल चलती हैं।

हां, तीसरे पहर के समय हमेशा की तरह उत्तरी-पश्चिमी पवन बह निकली। अब हमने दुपेंचा पाल उतार लिये। अब हम हवा के रूख के विपरीत चल कर पाइंट कँसेप्शन को पार करना था जो दूर नही था। यह पाइंट प्रशांत महासागर में उत्तर से दक्षिण तक फैले सैंकडों मील लम्बे तट का मध्य बिन्दु है और ऊंचा, पठारी तथा वीरान हैं। यहां थोडी हवा भी आधिक होती है यह सोच कर हमने रात से पहले ही रायल पाल लपेट लिये और टापगैलेंट पाल तने रहने दिये। हवा की विपरीत दिशा में हमारा जहाज बहुत भारी चल रहा था।

आठ घन्टियां बजी और हमारी पहरा-टोली नीचे गयी। अब जहाज पर

उतने ही पाल थे जिन्हें वह संभाल सकता था, वह हिचकोले खाता हुआ आगे बढ़ रहा था और हर हिचकोले के साथ समुद्र का पानी उसके अगवाड में आ जाता था। पवन वाकई बहुत तेज चल रहा था लेकिन आकाश में एक बादल भी नहीं था और सूरज साफ आसमान में डूबा था।

हमें नीचे आये कुछ ही देर हुई थी कि हमें झन्झा आने के आसार दिखायी देने लगे : जहाज के समूचे अगले भाग में लहरें घुसी आ रही थीं और जहाज के मोरे लहरों से इतने जोर से और आवाज करते हुए टकरा रहे थे जैसे लकडी के भारी कुन्दों को घसीटा जा रहा हो। पहरा देने वाले लोग डेकों पर दौड-दौड कर काम कर रहे थे और रस्सियाँ थामे गा रहे थे।

मल्लाह आवाज सुनकर ही बता सकता है कि कौन-सा पाल नीचे आ रहा है। हमने एक-एक करके टापगैलेंट पालों और फलान जीब को नीचे आते सुना। इनके उतर जाने से जहाज को कुछ राहत मिली और उसकी रफ्तार तेज हो गयी। अचानक मोखे पर—बैंग, बैंग, बैंग—तीन आवाजें हुई और "आओ रे सब शिखर पाल को छोटा करो" की गुहार सुन कर हमें अपने बिस्तर छोड कर उठना पडा। अभी सर्दियां शुरू नहीं हुई थी इसलिए हमें ज्यादा कपड़े नहीं पहनने पडे और हम शीघ्र ही डेक पर पहुंच गये। वहां पहुँच कर मैंने जो दृश्य देखा उसकी भव्यता मैं कभी नहीं भूल सकता। रात उजली और किसी कदर ठन्डी थी, तारे चम-चम झिलमिला रहे थे और जहा तक दृष्टि जाती थी एक बादल भी दिखायी नही दे रहा था। एक सुस्पष्ट-रेखा पर क्षितिज समुद्र से मिल रहा था। कोई चित्रकार चित्र में भी इतना स्वच्छ आकाश अंकित न कर पाता। आकाश पर एक भी धब्बा तक नहीं था, फिर भी उत्तर-पच्छिम दिशा से तेज पवन चल रहा था। अगर आंधी की दिशा में बादल दिखायी पडे तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि आँधी अमुक दिशा से आ रही है, लेकिन यहा तो पता ही नहीं चलता था कि यह आ किधर से रही है। कोरी आंख से आकाश की ओर देख कर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह रात गर्मियों की शात रात नहीं है।

एक-एक रस्सी को खींच कर हमने शिखर-पालो को छोटा किया। अभी हम यह काम पूरा कर भी न सके थे कि वज्रघोष जैसी आवाज आयी और पाल-रस्सी से अलग होकर जीब की चिन्दी-चिन्दी हो गयी। हमने शिखर पालों को ठीक किया, जिब के टुकड़ों को ठिकाने लगाया और अगले शिखर मस्तूल के स्थायी पाल को

उसके स्थान पर लगाया कि अचानक बृहत प्रमुख पाल ने मुख फैला दिया और पाल एक से दूसरे सिरे तक फट गया ।

"प्रमुख यार्ड पर टूट पडो और चिथड़े होने से पहले ही पाल को लपेट दो" कप्तान चिल्लाया; और अगले ही क्षण हम ऊपर चढ़ कर यार्ड पर पाल को लपेट रहे थे । हमने उसे यार्ड पर लपेट दिया और रस्सी से कस दिया और डेक पर आये ही थे कि एक और जोर की आवाज हुई जो सारे जहाज में गूंज गयी और अगला शिखरपाल जिसे बहुत छोटा कर दिया गया था दो टुकडे हो गया ।

अब हमें फिर यार्ड पर चढना पडा और पहले की तरह बडी तरकीब और मेहनत से काम लेने पर हम इसके सिरों में गांठ बाँध कर इसकी रस्सी छोटी करने में सफल हो सके ।

अब हम "पहरा टोली नीचे जाओ" के आदेश का इन्तजार ही कर रहे थे कि रस्सियों से बंधा प्रमुख रायल पाल ढीला हो गया और अनुवात दिशा में उडने लगा । उसके उडने से मस्तूल छड़ी की तरह खडखडा रहा था और हिल रहा था । यह काम कठिन था । पाल को नीचे उतारना या काट देना जरूरी था वर्ना मस्तूल के उखड जाने का डर था । जमना पहरा-टुकडी के सभी नये मल्लाहों से एक-एक करके यह काम कराया गया, लेकिन किसी को इसमें सफलता नही मिली ।

अन्त में जमना-टोली का मुखिया लम्बा फ्रांसीसी जान (जो डेक पर मौजूद मल्लाहों में सबसे अधिक कुशल था) ऊपर चढा और अपने लम्बे हाथ-पैरों की मदद से बडी मशक्कत के बाद—क्योंकि पाल अनुवात दिशा में उड रहा था और उसके सिर के ठीक ऊपर आकाश पाल उड रहा था—वह पाल को समेटने और लम्बी रस्सियों से उसे बांधने में कामयाब हो सका । कई बार ऐसा लगा कि पवन का वेग उसे यार्ड पर से धक्का दे देगा था गिरा देगा लेकिन वह सच्चा मल्लाह था और इस सबने घबराने वाला नहीं था ।

पाल को ठीक करने के बाद वह यार्ड नीचा करने की तैयारी में जुट गया, वह एक लम्बा और कठिन काम था, बार-बार उसे कई मिनटों तक काम रोक कर वहाँ रुके रहने के लिए पूरा जोर लगाना पडा क्योंकि जहाज इतने जोर से हिल-डोल रहा था कि इतनी ऊंचाई पर कुछ और कर पाना असंभव था । अन्त में यार्ड सही सलामत नीचा हो गया और इसके बाद अगले तथा पिछले रायल यार्डों को नीचा किया गया ।

तब सब लोगों को ऊपर चढ़ने का आदेश दिया गया और एकाध घन्टे तक हमें भारी मेहनत करनी पडी। हमने बूमों को कस कर बाँधा, यार्डो पर रस्सियां लपेटी, मौसम के हिसाब से जंधाए ठीक की और तूफ़ान का सामना करने के लिए दूसरी जरूरी तैयारियाँ की।

झंझा को देखते हुए उस रात मौसम बुरा नही था। ठडक सहने योग्य थी और मन में तेजी से काम करने की इच्छा जगाती थी, सर्दी भी नही थी और उजाला इतना था जैसे दिन निकल रहा हो। ऐसे मौसम में झंझा को झेलना एक खेल था। फिर भी पवन का वेग प्रभजन जैसा था। पवन जैसे दुश्मनी निकालना चाहता था और उसमें इतनी धार थी मानों वह हमें यार्ड से काट कर नीचे फेंक देना चाहता हो। पवन का ऐसा भयानक वेग मैंने पहले कभी नही देखा था; लेकिन मल्लाह की दुश्मनी तूफ़ान की हवा से नही बल्कि उसके अधेरे, ठण्डक और नमी से है।

डेक पर दुबारा पहुँचने पर हमने, समय का अदाज लगाने के लिए और यह जानने के लिए कि पहरा किस टोली को देना है, चारों ओर देखा। कुछ क्षण बाद चार घन्टियां बजी जिसका मतलब होता था हमारी टोली के पहरे की शुरूआत। लिहाजा जमना पहरा-टुकडी नीचे चली गयी और दो घन्टे के लिए जहाज को हमारी निगरानी में छोड गयी। फिर भी उसे आवाज सुनते ही ऊपर आने का आदेश दिया गया था।

वे नीचे पहुँचे भी न होंगे कि अगले शिखर मस्तूल के तान पाल की धज्जियाँ उड गयी। यह पाल छोटा था और हम पहरे के लोग ही इसका प्रबन्ध कर सकते थे इसलिए हमने दूसरी पहरा-टोली को नहो बुलाया। हम सबदरे पर चढ गये और पाल के टुकडो को बाँध दिया। इस काम में आधे समय तक हमें पानी में रहना पडा। चूंकि जहाज पर कोई न कोई शीर्षपाल अवश्य होना चाहिए था इसलिए हम उसके स्थान पर दूसरा पाल बाँधने की तैयारी में जुट गये। हमने एक नया पाल निकाल कर ऊपर चढाया लेकिन वह अभी आधी ऊचाई तक ही गया था कि पवन के एक झोंके ने उसे भी टुकडे-टुकडे कर दिया।

जब हमने पाल रस्सियो में दुफडी गाँठ लगा दी तो पाल-रस्सी के अलावा जहाज पर कुछ रह ही नहीं गया। अब अगले पाल में बडे-बडे छेद दिखायी देने लगे और यह जानते हुए कि यह भी फटने ही वाला है मालिम ने हमें आदेश दिया

कि पाल को यार्ड से लपेट दिया जाय। दूसरी पहरा-टोली रात-भर डेक पर रही थी इसलिए वह उसे बुलाना नही चाहता था, अतः उसने बढ़ई, सिलमाकुर, रसोइये, स्टीवार्ड और दूसरे आलसियों को जगाया और उनकी मदद से हम अगले यार्ड पर जुट गये। आधे घन्टे के कठिन परिश्रम के बाद हमने पाल पर काबू पा लिया और उसे यार्ड के चारो ओर कस कर लपेट दिया।

इस समय पवन का वेग अधिकतम था। जब हम रस्सियों पर चढकर ऊपर पहुँचते थे तो ऐसा लगता था जैसे हवा हमें बरांडलों से चिपका देगी, और यार्डों पर काम करते समय हम हवा की तरफ रुख नही कर सकते थे। लेकिन फिर भी यहा केपहार्न की तरह हिम, अंधेरा, नमी और ठंडक नही थी; और कड़े आइल-क्लाथ के सूट, साउथवेस्टर टोपी और भारी-भरकम जूतों की जगह हमने टोप, जाकेट, सूती पतलून और हल्के जूते पहन रखे थे। मल्लाह के लिए यह फर्क बहुत माने रखता है।

जब हम डेक पर उतरे तो आठ घन्टियां (उस समय सुबह के चार बजे थे) बजायी गयी और हांक लगायी गयी जिसे सुनकर जमना पहरा-टुकड़ी ऊपर आ गयी। लेकिन हमें नीचे जाने का आदेश नही मिला।

अब झंझा अपने पूर्ण यौवन पर थी। कप्तान डेक पर मौजूद था। जहाज पर बहुत कम पाल थे और वह इस तरह हिचकोले खाता बढ रहा था मानो वह अपने शरीर में गडी हुई एक-एक लकडी को झटक कर दूर फेंक देगा। सभी और पालों में पहले कोई दराज दिखायी देती थी और फिर वे फट जाते थे।

अब पिछला शिखर पाल, जो अपेक्षाकृत नया पाल था और जिसे हमने काफी छोटा करके बांध रखा था, फट कर दो टुकडे हो गया। इसके बाद एक ही झटके में अगले शिखरपाल की धज्जियां उड़ गयी; एक चेन बाब स्टे खुल गया; स्प्रिट पाल की रस्सी स्लिंग में चली गयी; मार्टिंगेल रस्सी अनुवात दिशा में उडने लगी और लंबे खुश्क मौसम के कारण अनुवात की रस्सियां जगह-जगह उलझ गयी। प्रमुख टापगैलेंट का एक बरांडल अलग हो गया था और रसोई अपनी जगह से हट कर अनुवात दिशा में पहुँच गयी थी। अनुवात के मोरे से बंधा लंगर ढीला हो गया था और खटर-खटर कर रहा था।

यह काम इतना अधिक था कि सब लोग करते तो भी आधा दिन लग जाता। हमारी टोली पिछले शिखरपाल के यार्ड पर जुट गयी और लगभग आध घन्टे की

कडी मेहनत के बाद हम पाल को लपेटने में कामयाब हुए। इसी क्रम में एक बार यह पाल हमारे सिरों के ऊपर लिपट गया और फिर पवन के झोंके से इतने जोर से उड़ा कि हम पग रस्से पर से गिरते-गिरते बचे।

यार्डों के चारों ओर दुहरी गैस्केट रस्सिया बाध दी गयी और हर चीज की सुरक्षा का यथासंभव प्रबन्ध कर लिया गया। नीचे आने पर हमने देखा कि बाकी के मल्लाह आगे की रस्सियों पर जुटे हैं। उन्होंने चिथड़े-चिथड़े हुए शिखरपाल को लपेट लिया था, बल्कि उसे यार्ड के चारों ओर कस कर बाँध दिया था और वह ऐसा लग रहा था मानों किसी का कोई हाथ-पैर टूट गया हो और उस पर पट्टी बांध दी गयी हो।

अब स्पैंकर और छोटा करके बाधे गये प्रमुख शिखरपाल के अलावा जहाज पर कोई पाल न था। ये दोनों अभी ठीक काम दे रहे थे। लेकिन पीछे इतने पाल की जरूरत न थी इसलिए स्पैंकर को लपेट देने का आदेश दिया गया। ब्रेल घसीटे गये और अपना पहरा टोली के सभी साधारण मल्लाह गैस्केट रस्सियां बाँधने के लिए उपदड पर भेजे गये, लेकिन उनसे कुछ न हुआ। दूसरे मालिम ने उन्हें "हरामियो" का झुन्ड कहकर लताडा और दो श्रेष्ठ मल्लाहों को यह काम सौंपा लेकिन वे भी कुछ न कर सके और अंतत. उपदन्ड को नीचा ही करना पडा।

अब सब लोगों को अनुवान की रस्सियो को व्यवस्थित करने का आदेश दिया गया। मैं डाबा टोली में था और मुझे अगले भाग में मार्टिगेल रस्सी लगवाने का काम दिया गया था। हममें से तीन मल्लाह मार्टिगेल गाई और बिचले रस्सों पर गये और आधे घन्टे तक रस्से-कुप्पियों को बांधने-खोलने में लगे रहे। कई बार बडी-बडी तरगों ने हमें भिगो दिया और अन्त में मालिम ने इस डर से हमें नीचे बुला लिया कि कहो हम लहरो में बह न जायें।

इसके बाद लगरों को पटरी पर लाया गया जिसमें सब लोगो को एक घन्टे अगवाड में काम करना पडा। रह-रह कर तरगें अगवाड़ में आती रही और रस्सियो वगैरह को अनुवात दिशा में धकेलती रही। तरगों से नालियों में छाती-छाती पानी भर जाता था और अड़ास तफरैल की तरफ बह जाती थी।

सब चीजो को फिर से दुरुस्त कर चुकने के बाद हम कुछ नाश्ते की उम्मीद कर रहे थे, क्योंकि सुबह के नौ बज गये थे, कि प्रमुख शिखरपाल के जाने के आसार दिखाई दिये। जहाज पर कोई पाल तो होना ही चाहिए यह सोच कर

कप्तान ने अगले और प्रमुख स्पेंसर के उपदन्डो को नीचा करने का आदेश दिया और उन पर दोनों स्पेंसरो (ये तूफानी पाल कोरे, छोटे और बहुत मजबूत कपड़े के बने हुए थे) को तान देने का आदेश दिया। प्रमुख शिखरपाल को पवन में उड़ जाने के लिए छोड़ दिया गया और हम प्रार्थना करने लगे कि यह हमारे स्पेंसर पाल लगाने तक बना रहे—यही गनीमत होगी। इसके बाद हमने बहुत ही साव-धानी से, और उनकी हिफाजत का पूरा प्रबन्ध करते हुए, स्पेंसर पालो को तान दिया।

अब तक प्रमुख शिखरपाल अतीत की वस्तुओ में शामिल हो चुका था और हम उस पाल के भग्नावशेष एकत्र करने ऊपर गये जो पिछले चौबीस घन्टो में नष्ट होने वाले पालो में अतिम था। अब जहाज पर साबुत पालो के नाम पर केवल स्पेंसर पाल थे और चू कि वे मजबूत और छोटे थे और डेक के नजदीक थे इसलिए उम्मीद थी कि वे झंझा के थपेडो को झेल जायेंगे। पालों के न होने के कारण जहाज उठता-गिरता अनुवात दिशा में बहा जा रहा था और एक युद्धपोत जैसा लग रहा था।

अब ग्यारह बज चुके थे और पहरा-टोली को नाश्ते के लिए नीचे भेज दिया गया और दोपहर को जब आठ घन्टिया बजी तो चूंकि चतुर्दिक शाति छा चुकी थी, यद्यपि झंझा की तीव्रता कम नही हुई थी, इसलिए पहरा बिठा दिया गया और दूसरी पहरा—टोली और आलसियो को नीचे भेज दिया गया।

तीन दिन और तीन रात झझा की भीषणता कम नही हुई और वह उसी गति से चलती रही। बीच-बीच में निस्तब्धता नही छायी और न उसकी भीषणता भी कभी कम कभी ज्यादा नही हुई। हमारा जहाज पाल न होने के कारण हल्का था और जब वह चलता था तो ऐसा लगता था जैसे अगले यार्ड की भुजा तैराक की भुजा की तरह पानी में डूबती हो और उसके सहारे वह अनुवात दिशा में बढ रहा हो। इन तीन दिनों में—दिन या रात में—आकाश में एक बादल भी दिखायी नही दिया था—इन्सान के पन्जे के बराबर बादल भी आकाश में दिखायो नही पडा था।

हर रोज सुबह को सागर में से दमकता सूरज निकलता और रात को एक प्रकाश-पुन्ज से आवृत सूर्य सागर में डूब जाता था। नीले आकाश में दिन प्रति दिन एक-एक करके चमकीले तारे निकल आते और दिन निकलने तक उसी तरह

टिमटिमाते रहते थे जैसे घर पर शांत कुहेनिकामय रात्रि में झाँकते थे। इस दौरान जिस तरफ भी जहां तक भी दृष्टि जाती समुद्र विशाल वीचियों में लहराता दिखाई देता और चारो तरफ सफेद झाग ही दिखायी देते क्योंकि अब हम समुद्र-तट से मीलों दूर निकल आये थे।

मध्य डेक रिक्त होने के कारण हममें से कई मल्लाह जालियों में सोये। तूफान के दौरान सोने के लिए इससे बढ़िया जगह हो ही नहीं सकती। कहावत है, हवा चलेगी तो पालना हिलेगा" लेकिन जालियों के बारे में यह सही नही है क्योंकि यहां जाली नही जहाज हिलता है जबकि वे कड़ियों से ऊर्ध्वाधर लटकी रहती हैं।

इन बहत्तर घन्टो में हमारे पास करने के लिए कोई काम न था। हम चार घन्टे डेक पर रहते और चार घन्टे नीचे, खाते, सोते, और पहरा देते। पहरा देने के रोज के क्रम में कोई परिवर्तन आता तो यह कि अपनी बारी में सुकान संभालना पडता, और जब कभी कोई लिपटा हुआ पाल खुल जाता तो उसे फिर से लपेटने के लिए हमें यार्ड पर चढना पड़ता था या कभी किसी ढीली रस्सी को ठीक करना होता था। एक बार पहिये की रस्सी अलग हो गयी। यह स्थिति हमारे लिए घातक सिद्ध हो सकती थी लेकिन मुख्य मालिम ने बडी मुस्तैदी से काम लिया और स्थिति पर काबू पा लिया। बीस तारीख को भोर में झंझा विनाश के खेल खेल कर थक गयी और धीमी पड गयी। यहाँ तक कि सब मल्लाहो को नये पाल बांधने के लिए बुला लिया गया, यद्यपि झंझा अब भी सामान्य झंझा से दुगुनी तेज थी। बडी कठिनाई और मेहनत से एक-एक करके पुराने पाल उतारे गये और पाल-कक्ष से तीन नये शिखरपाल मंगवाये गये जो घर की ओर लौटते समय केपहार्न के आसपास की यात्रा के लिए बनवाये गये थे। खिलमाकुर की देख-रेख में इन पालों को बडी सावधानी से यार्डों पर चढ़ा दिया गया और छोटा करके तान दिया गया। पालों को एक-एक करके चढ़ाया गया और इसमें पूरी सावधानी बरती गयी और बडी दिक्कत पेश आयी। इसके बाद दो अतिरिक्त निचले पाल भी इसी तरीके से यार्डों पर चढाये गये और लपेट दिये गये और एक तूफानी जिब भी ऊपर चढ़ा कर बूम से लपेट दी गयी।

बारह बजे हम इस काम से निवृत्त हुए। पांच घन्टे में इतना थका देने वाला काम मैंने पहले कभी नहीं किया था। मैं तो यहा तक कहूँगा कि जहाज का कोई

भी मल्लाह कभी भी प्रचन्ड उत्तरी पश्चिमी झंझा के दौरान पाँच बड़े पालों को उतारने और चढाने का काम करने की इच्छा नही करेगा। रात के समय क्षितिज पर कुछ बादल दिखायी दिये और झंझा की गति कुछ मंद पडी और कुछ देर बाद आकाश मे बादल घुडदौड मचाने लगे।

तूफान की शुरूआत के पाचवें दिन हमने हर शिखरपाल की एक-एक गाठ ढीली कर दी और अग्र पाल, जिब और स्पैंकर को छोटा करके लगा दिया; लेकिन जहाज पर पूरे पाल हम आठ दिन के बाद ही तान सके, और इसके बाद हम तेजी से बढे क्योंकि कप्तान जहाज को जल्दी ही अपने रास्ते पर डाल देना चाहता था। झंझा ने हमारे जहाज को सैंडविच द्वीपो की ओर आधी दूर ला पटका था।

इन्च-इन्च करके हम पाल बढाते गये। अभी हमें झंझा का लिहाज करना पड़ता था क्योंकि वह अभी बन्द नही हुई थी और हमें उस देशांतर में पहुचने में कई दिन लग गये जहा तूफान शुरू हुआ था। आगामी आठ दिनो तक हम प्रतिवात दिशा मे बढ़ते रहे। तब हवा बदल गयी और परिवर्ती हो गयी। इसके बाद दक्षिणी-पूर्वी समीर चल पडा और हम अनुमान से कही अधिक तेजी से आगे बढ़े।

शुक्रवार, चार दिसम्बर। बीस दिन की यात्रा के बाद आज हम सैन फ्रैंसिसको खाड़ी के मुहाने पर पहुंचे।

* * *

अध्याय—२८

हम मोटेरी पहुँचना चाहते थे लेकिन जब हम उसके उत्तर में थे तभी हवा बदल गयी इसलिए हम सैन फ्रैंसिसको चले आये। यह विशाल खाडी ३७°५८ अक्षांश में स्थित है और इसकी खोज सर फ्रैंसिस ड्रेक ने की थी। ड्रेक ने इसे एक ऐसी शानदार खाडी बताया था (और उसका यह कहना सही था) जिसमें कई अच्छे बन्दरगाह हैं, पानी बहुत गहरा है और चारो ओर का प्रदेश उपजाऊ और वनों से युक्त है।

खाडी के मुहाने से दक्षिण-पूर्व दिशा में लगभग तीस मील दूर एक ऊंची जगह है जिस पर दुर्ग बना है। दुर्ग के पीछे बन्दरगाह है जहां यात्री जहाज लंगर डालते हैं और उसके पास ही सैन फ्रैंसिसको मिशन है। पास ही एक नयी बस्ती की शुरुआत हुई है जिसके अधिकांश लोग यांकी कैलिफोर्नियाई हैं और यर्बा

असुविधाजनक रूप में थी, यार्डो पर कैंचियाँ लगी हुई थीं, तीनपान के तारों के गट्ठर सारे डेको पर इधर-उधर बिखरे पड़ थे।

शिखर मस्तूल, टापगैलेंट मस्तूल और दुपेंचा पाल ब्रूम सफाई न होने के कारण काले पड गये थ और डेको की हालत ऐसी थी कि युद्धपात के मल्लाह को भी उल्टी हो जाय।

रसोई नीचे अगवाड मे थी; और वही खाना पकाते समय निकलने वाली भाप और ग्रीज़ के बीच मल्लाह लोग रहत थ। यह जगह भट्टी की तरह गर्म और सुअर-खड्डी की तरह गन्दी थी। अगवाड में पाँच मिनट रुकना हमारे लिए दुश्वार हो गया और खुली हवा में आने पर हमने चैन की सास ली।

हमने उनसे कुछ खराद-फरोख्त की। उनके पास इडियन आदिवासियो की बहुत सी अजीब चीज़ें थी, जैसे: मालाए, चिडियों के पर, फर के बने जूते वगैरह। मैंने एक बड़ा-सारा कबल खरीदा जो जानवरो की खालो को सुखाने के बाद उन्हें बढिया तरीके से सीकर बनाया गया था और जिसके बाहर की तरफ विभिन्न चिड़ियो की छाती के कोमल पर लगाये गये थे। ये पर अलग अलग रगो के थे और इन्हे इस करीने से लगाया गया था कि कपड़े की सुन्दरता बहुत बढ गयी थी।

हमारे आने के कुछ ही दिन बाद वर्षा ऋतु शुरू हो गयी। और तीन हफ्तो तक बिल्कुल बिना रुके लगातार बारिश होती रही। व्यापार की दृष्टि स यह हमारे लिए अशुभ था क्योकि इस बन्दरगाह पर खालें इकट्ठा करने का तरीका तट के अन्य बन्दरगाहों से भिन्न था।

लंगरगाह के निकट स्थित सैन फ्रैंसिसको मिशन यह व्यापार बिल्कुल नही करता। लेकिन खाडी में गिरने वाली विशाल नदियों के किनारे स्थित सैन जोस और सैंटा क्लारा, जो लंगरगाह से पन्द्रह से लेकर चालीस मील तक की दूरी पर थे, खालो के व्यापार की दृष्टि से पूरे कैलिफोर्निया प्रदेश में चोटी पर आते थे। इन मिशनो के पास बडी-बडी नावें थी जिन्हे इन्डियन आदिवासी खेते थे। एक नाव में एक बार में लगभग एक हजार खालें आ सकती थी। इन नावो में खालें भर-भर कर लंगरगाह में खड़े जहाजो को भेजी जाती थी और बदले में दूसरा सामान जहाजो से खरीद कर मिशनो में मगवा लिया जाता था।

खालो और सामान की देख-रेख के लिए जहाज से कुछ मल्लाहों को नावों

में जाना-आना पडता है। अच्छे मौसम में तो मल्लाहों को इस आवागमन में आनन्द आ जाता है लेकिन आजकल के मौसम में जाते हुए उनकी नानी मरती थी, क्योंकि इस आने-जाने में तीन-चार दिन लग जाते हैं, नावें एकदम खुली होती हैं, बारिश थमने का नाम नही लेती, बारिश से बचाव का कोई साधन नही होता और ठन्डा खाना खाना पड़ता है।

हममें से दो मल्लाह ऐसी ही एक नाव में बैठ कर सैंटा क्लारा गये थे। उन्हे इस यात्रा में तीन दिन लग गये। तीनो दिन लगातार बारिश पडती रही और वे पलक तक न झपका सके। तीन लम्बी रातें उन्होने नाव में एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूम-घूम कर बिता दी। जब वे जहाज पर लौटे तो थकान से चूर हो गये थे और उन्होंने बारह घन्टे के लिए अपना पहरा नीचे लगवा लिया।

नावो में भर कर जो खालें लायी गयी थो वे भी पानी में भीग गयी थी और उन्हे इसी सूरत में नीचे नही रखा जा सकता था। लिहाजा हमारे लिए यह जरूरी हो गया कि जहाज के सभी हिस्सो मे अलगनिया तानें और उन पर खालें बाध दें ताकि जब बारिश रुके और धूप निकले या हवा चले तो वे सूख सकें। हमने जिब बूम के सिरे से अगले यार्ड के प्रत्येक सिरे तक और वहा से प्रमुख और क्रासजैक बार्ड के सिरे तक अलगनिया तान दी।

टापो के बीच में भी और मस्तूल शिखरो और जहाज के पिछले हिस्से की सभी रस्सियो में अलगनिया तान दी गयीं और उन पर खालें बाध दी गयी। पटरी, आगे-पीछे, बेलन च'खी, कैप्सटेन, जहाज के बाजू और डेक पर जो भी जगह खाली थी...सुखाने की जरा भी गुन्जाइश होते ही हर तरफ गीली खालें ही नजर आती थी। हमारा जहाज क्या था गोया सिर से पैर तक खालो का एक ढेर था।

एक बरसात की शाम को कोई आठ बजे होगे कि मुझे अगले दिन सुबह चार बजे चार दिन की यात्रा के लिए तैयार हो जाने का आदेश मिला। मुझे इडियन आदिवासियों की नाव में बैठ कर सैन जोस जाना था। मैंने अपने आयलक्लाथ के कपडे, बरसाती टोप और भारी वाले जूते तैयार रखे और चूंकि नाव भोर से पहले आने वाली थी इसलिए पहले ही कुछ नीद ले लेने के इरादे से मैं जल्दी ही अपनी जाली में घुस गया। सुबह को सब लोगों की डेक पर बुलाहट होने तक मैं सोता रहा क्योकि मे'ी खुशकिस्मती मे इन्डियन लोग या तो इरादेतन या किसी गलतफहमी की वजह से रात को अकेले ही लौट गये थे और अब दूर-दूर तक

उनका नामोनिशान तक नही था । इस प्रकार मैं तीन-चार दिन की तबालत से बच गया ।

कुछ दिन बाद हममें से चार मल्लाह एजेन्ट को नाव में सेंटा क्लारा ले गये । वहा उन्हे रात भर उस छोटी नाव में भीगते रहना पडा जिसमें करवट लेने के लिए भी जगह न थी । एजेन्ट उनके लिए जगह का इन्तजाम किये बिना ही, उन्हे अपनी तकदीर के सहारे छोड कर, खुद मिशन चला गया । उसने उनके खाने तक के लिए कुछ नही भेजा । इसके बाद उन्हे तीस मील नाव खेनी पडी और जब वे जहाज पर वापस आये तो उनके शरीर इतने अकड़ गये थे कि उनसे सीढी पर नहीं चढ़ा गया ।

इस घटना के बाद एजेन्ट मल्लाहो की आख का काटा बन गया और इसके बाद किसी भी मल्लाह ने उसका तिनका तक नहो तोड़ा । मल्लाह उसके हर काम मे देर कर देते थे, उसे तरह-तरह से तग करते थे और भग्नोर्मि मे गोते खिला कर उसकी करनी का फल चखाते थे ।

जब हमने उपलब्ध खालो में से अधिकांश इकट्ठा कर ली तो लकड़ी और पानी भरने की तैयारी शुरू की, क्योकि इन दोनो के लिए सपूर्ण तट पर सैन फ्रैंसिसको सर्वश्रेष्ठ स्थान समझा जाता है ।

लंगरगाह से लगभग दो लीग दूर पर एक छोटा सा द्वीप था जिसे हम लोग "काष्ठ द्वीप" और स्पेनी लोग "इस्ला डे लास एजेल्स" कहते थे । यह द्वीप किनारे तक पेडो से घिरा था । हममें से दो केनेबेक मल्लाहो को हर रोज सुबह के समय इस द्वीप पर लकडी काटने के लिए भेजा जाने लगा । ये मल्लाह कुल्हाडी से लकडी काटने में अत्यत निपुण थे । कटी हुई लकडी को इकट्ठा करने के लिए इनके साथ दो लडके भी भेजे जाते थे । एक हफ्ते में उन्होने इतनी लकडी काट ली जो हमें साल भर के लिए काफी होती । अब तीसरे मालिम को, मुझे और तीन और मल्लाहो को एक खुली बडी लाच में द्वीप से लकडियां भर कर जहाज़ पर लाने के लिए भेजा गया । इस लाच मे स्नूकर जैसी रस्सिया और पाल थे और इसे मिशन से किराये पर लिया गया था ।

हम जहाज से दोपहर के समय चले । लेकिन चूंकि हवा सामने की थी और समुद्र में ज्वार आ रहा था इसलिए हम दिन ढले बन्दरगाह मे पहुँच सके । यह बन्दरगाह द्वीप के दो पाइन्टों से मिल कर बना था और आने वाली नावें यही

टिका करती थीं। जैसे ही हम वहां पहुचे वैसे ही एक जोरदार दक्षिणी-पूर्वी झंझा आ गयी। हम दिन भर इसकी आशंका से ग्रस्त रहे थे। झंझा के साथ ही बारिश भी आयी और मौसम की सर्दी बढ गयी। हम बडी कठिन परिस्थिति में फंस गये थे; खुली नाव, भारी बारिश और लम्बी रात; क्योंकि इस अक्षांश में शीत ऋतु में दिन में पन्द्रह घन्टे अंधेरा रहता है।

हम अपने साथ एक छोटी सी स्किफ लाये थे। उसमें बैठकर हम तीर पर गये लेकिन वहाँ कोई सायेदार जगह न थी, हर जगह खुली थी और बारिश से बचाव संभव नही था। लिहाजा कुछ पत्तिया हटाने पर हमें उनके नीचे से कुछ लकडियां मिलीं, इसके अलावा कुछ झाड-झखाड और कुछ मुसेल (सीपी) लेकर हम लाच पर वापस आ गये और रात बिताने की यथासंभव आरामदेह तैयारियों मे जुट गये। हमने प्रमुख पाल को खोल लिया। उससे नाव के पिछले हिस्से में एक साया-सा बना लिया, लकडी के गीले कुन्दो को बिस्तर बनाया और छ. बजे के करीब जाकेट पहने-पहने ही सोने का उपक्रम करने लगे।

जब हमने देखा कि बारिश का पानी हमारे ऊपर आ रहा है और हमारी जाकेटें भीग चली हैं, और खुरदरे गाठदार लकडी के कुन्दे कोचो का काम नही दे सकते तो हम उठ खडे हुए। हम अपने साथ लोहे का एक तसला लाये थे। उसकी मदद से हमने पानी बाहर उलीचा और चारों तरफ पत्थर का एक बाडा-सा बना लिया। कुछ लकडियों से हमने गीली छेपटें उतारी और तसले में आग जला ली। कुछ लकडिया सूखने के लिए आग के पास धर दी और आग के चारों ओर तख्तों की एक छत सी बना दी और उस आग को बनाये रखा। इसके बाद हम आग पर मुसेल भून-भून कर खाने लगे—इसलिए नही कि हम बेहद भूखे थे बल्कि इसलिए कि हमने सोचा, खाली से बेगार भली।

लेकिन अभी दस भी नहीं बजे थे और हमारे सामने लम्बी रात पडी थी। तभी किसी मल्लाह ने अपनी मंकी जाकेट की जेब में से स्पेनी ताशो की एक जोडी निकाली। इसे हमने खुदा की देन समझा। मद्धम रोशनी के सहारे हम एक या दो बजे रात तक ताश खेलने में मशगूल रहे। इसके बाद हम वाकई थक गये और बारी-बारी से आग की निगरानी करने का निश्चय करके अपने कुन्दो पर सो गये।

सुबह के समय बारिश रुक गयी और हवा की ठन्डक बर्दाश्त करने काबिल हो गयी। अब हमारे लिए सोये रहना असंभव हो गया और हम जाग कर भोर

की प्रतीक्षा करने लगे । पौ फटते ही हम किनारे पर गये और लकडियां ढोने की तैयारी में लग गये । मौसम की सर्दी के बारे में हमारा अनुमान गलत नहीं था क्योंकि जमीन पर सफेद पाला मौजूद था । कैलिफोर्निया में यह पाला हमने पहली बार देखा था । इसके अलावा हमें मीठे पानी के एकाध छोटे पोखरों पर बर्फ की एक मोटी तह जमी मिली । इस तरह के मौसम में, जब कि सूरज भी न निकला हो और भोर हुआ ही हो, हमें दोनों हाथो में लकडिया उठा कर स्किफ में रखने के लिए कमर-कमर पानी में चलना पडा ।

तीसरा मालिम लाच पर ही रह गया था और दो लोग स्किफ में लकड़िया रखने और संभालने के लिए उसी में रह गये थे इसलिए हस्बमामूल पानी में चल-कर लकडियाँ लाने का सारा काम हम दो लोगों पर आ पडा जो सबसे छोटे थे । जमीन पर पाला पडा था और हम नंगे पाँव, पतलून चढ़ाये, बाहों मे लकडियाँ उठाये किनारे से नाव तक और नाव से किनारे तक पानी में आते जाते रहे । जब स्किफ भर गयी और लकडी लाच में रखने चली गयी तब अपने पावो को ठिठुरने से बचाने के लिए हम तट की कठोर रेत पर पूरी तेजी से दौड लगाते रहे ।

दिन-भर हम इस काम पर जुटे रहे । दिन ढले जब लाच पूरी तरह भर गयी तो हमने लगर उठा दिया और हवा के रुख के विपरीत दिशा में खाडी मे जहाज की ओर चल दिये । जैसे ही हम बृहद खाडी में प्रविष्ट हुए हमने देखा आगे बडा जोरदार ज्वार है जो हमें समुद्र की ओर धकेल रहा है, घने कुहरे के कारण हमें अपना जहाज नहीं दिखायी दे रहा है और समीर इतना हल्का है कि हम उसकी मदद से ज्वार पर काबू नहीं पा सकते ।

एडी-चोटी का जोर लगा कर हम अपनी नाव को समुद्र की ओर जाने से रोक सके । द्वीप की अनुवात दिशा के अन्तिम कोने पर पहुचने को हमने बहुत गनीमत समझा । यहा रुक कर हमने एक और रात बिताने का निश्चय किया । यह रात पहले से भी बुरी बीती क्योंकि हमारी नाव डटाडट भरी हुई थी और हम कुन्दो पर या लकडियों पर ही आराम कर सकते थे । अगले दिन सुबह को ज्वार उतर गया था और हवा बह निकली थी इसलिए हम फिर चल पडे और ग्यारह बजे तक जहाज पर पहुँच गये । अब लाच पर से उतार कर लकडियों को जहाज में रखने के लिए सब मल्लाहों को काम पर लगा दिया गया । इस काम में रात हो गयी ।

लकडी भर लेने के बाद अगले दिन सुबह एक टोली को पानी लाने के लिए भेजा गया। हम चूंकि लकडी लाने में काफ़ी थक चुके थे इसलिए हमें इस टोली में नही भेजा गया। इस टोली को तीन दिन लगे। इस बीच एक बार वे समुद्र में जाते—जाते बचे और उन्हे एक दिन द्वीप पर बिताना पडा। वहा एक मल्लाह ने एक हिरन का शिकार किया। सैन फ्रैंसिसको खाडी के द्वीपो और पहाडियो पर हिरन बहुत बडी सख्या में पाये जाते हैं।

जब हम लकडी या पानी लेने के लिए या नदियों के किनारे स्थित मिशनों में न जा कर जहाज पर ही रहते थे तब बडी मौज की छनती थी। हमारा जहाज किनारे से एक केबिल की दूरी पर था। उसे दक्षिणी-पूर्वी झन्झा से कोई खतरा नहीं था और किनारे पर पहुँचने के लिए हमें नाव बहुत कम खेनी पडती थी। चूंकि प्रायः हर समय बारिश होती रहती थी इसलिए फलका-मुख पर पालों के सायेबान बना दिये गये थे और सब मल्लाहों को नीचे बैठ कर ओकम तैयार करने का आदेश दे दिया गया था। हम प्रति दिन वहां बैठे-बैठे ओकम बनाते रहते थे। अन्त में हमारे पास इतना ओकम तैयार हो गया कि जहाज की और पूरी यात्रा की सभी जरूरतें पूरी की जा सकें। तब हमने वापसी की यात्रा के लिए सारी गैस्केट रस्सिया बनायी, कच्ची खालों की कतरनों से एक जोडा पहिए की रस्सियां तैयार की, एक बडी मात्रा में बटा सन तैयार किया और डे जहाज पर जो और काम किये जा सकते थे वे किये।

अब शीत ऋतु आधी बीत चली थी और अक्षांश ऊंचा होने के कारण रातें बहुत लम्बी होने लगी थी इसलिए हम सुबह सात बजे से पहले काम शुरू नही कर पाते थे और शाम के पाँच बजे हमें छुट्टी मिल जाती थी। तभी हमें सपर भी मिलता था। इस तरह हमें तीन घन्टो की फुर्सत मिल जाती थी। तीन घन्टे बाद आठ घन्टियां बजती थी और पहरा लगा दिया जाता था।

चूंकि अब हमें समुद्र-तट पर यात्रा करते एक साल हो चला था इसलिए अब वापसी की यात्रा के बारे में भी सोचना था। हमें मालूम था कि अन्तिम दो-तीन महीनो में हमें बहुत व्यस्त रहना होगा और अपना काम करने के लिए आज कल जैसा सुअवसर हमें कभी नही मिलेगा। इसलिए हमने शाम के समय वापसी की यात्रा, खासतौर से केपहार्न की यात्रा, के लिए कपडे तैयार करने शुरू कर दिये।

जब सपर खत्म हो जाता और भोजन के टब साफ़ हो जाते तब धूम्रपान

आदि से निबट कर हम सब लोग अपनी-अपनी पेटियों पर बैठ जाते और कड़ी से लटकते लैंप की रोशनी में अपना-अपना काम करने में मशगूल हो जाते थे। कोई टोप बनाता तो कोई पतलून, कोई जाकेट बनाता तो कोई कुछ और कपडा। गरज यह कि खाली कोई नही बैठता था। लड़के अपने कपड़े खुद अच्छी तरह नही सी सकते थे इसलिए वे मल्लाहों का कुछ काम कर दिया करते थे और बदले में मल्लाह उनके कपड़े सी देते थे।

हम कई मल्लाहो ने मिल कर ट्वील का एक बडा टुकडा खरीदा और उसकी पतलूनें और जाकेटें बनाई। फिर उन पर कई बार अलसी का तेल लगाया। और उन्हे केपहार्न की यात्रा के लिए उठा कर रख दिया। मैंने तिरपाल का एक मोटा व मजबूत टोप ऐसा बनाया जो बैठने पर भी न पिचके और खराब मौसम में नीचे पहनने के लिए फलैनेल के कपड़े बनाये।

जिनके पास साउथवेस्टर टोपिया नहीं थी उन्होंने बना ली। कई मल्लाहों ने अपने लिए तिरपाल की जाकेटें और पतलूने बनायी और उनमें फलैनेल का अस्तर लगाया। सब लोग कमेरे हो गये थे और हर एक ने अपने लिए कुछ न कुछ जरूर बनाया क्योकि हम समझते थे कि ज्यो-ज्यों दिन बीतते जायेंगे और हम दक्षिण की ओर बढ़ते जायेंगे हम शाम को काम नही कर पायेंगे।

शुक्रवार, पच्चीस दिसम्बर। आज बडा दिन था। चूंकि दिन भर बारिश होती रही और खालें नही आयी और न कोई खास काम ही करने के लिए था इसलिए कप्तान ने हमें छुट्टी दे दी (बोस्टन से चलने के बाद हमें पहली बार छुट्टी मिली थी)। डिनर में हमें किशमिश पडा हलवा भी दिया गया। रूसी ब्रिग पर प्राचीन रिवाज के मुताबिक ग्यारह दिन पहले बडे दिन का उत्सव मनाया जा चुका था। तब रूसी मल्लाहों ने खूब तोपें दागी थी और (जैसा कि हमारे मल्लाहों का कहना था) अगवाड में एक ड्रम जिन पी थी, चरबी का एक थैला चट कर गये थे और खाल का शोरवा बनाया था।

रविवार, सत्ताईस दिसम्बर। अब हम इस बन्दरगाह पर अपना व्यापार खत्म कर चुके थे और आज रविवार के दिन हमने अपना लंगर उठाया और चल दिये। चलते समय हमने तोप से रूसी ब्रिग और दुर्ग को सलामी दी और जवाब में उन दोनो ने भी अपनी-अपनी तोपें दागी। जब हम चल रहे थे तो दुर्ग का कमांडर हमारे जहाज पर आया था। उसका नाम डान ग्वाडालुप विलेगो था और वह

अभी नौजवान ही था। पूरे कैलिफोर्निया प्रदेश में यह कमांडर अमरीकियों और अंग्रेजो में सब से अधिक लोकप्रिय था। वह अंग्रेजी बड़े आराम से बोलता था और विदेशियो की सुविधा का ध्यान रखता था।

जब हम इस शानदार खाडी से चले तो हल्का पवन चल रहा था। ज्वार का रुख बाहर की ओर था जिसके कारण हमारे जहाज की रफ्तार चार या पाच नाट थी। दिन बडा सुहावना था। आज एक महीने बाद हमें धूप के दर्शन हुए थे। हम उस ऊची चट्टान के नीचे से निकले जिस पर दुर्ग बना था और खाडी के मध्यवर्ती भाग की ओर बढे। अब हमें दोनो और दूर तक चली गयी छोटी खाडिया दिखायी दे रही थी; सुन्दर वनों से युक्त विशाल द्वीप और कई छोटी-मोटी नदियों के मुहाने दिखायी दे रहे थे।

अगर किसी दिन केलिफोर्निया समृद्ध देश बनेगा तो यह खाडी उसका केन्द्र होगी। लकडी और पानी की प्रचुरता, तट की अतिशय उर्वरता, जलवायु की उत्तमता, नौपरिवहन की सुविधाएँ, सपूर्ण पच्छिमी अमरीकी तट पर सर्वश्रेष्ठ लंगरगाहो से युक्त होना—ये सारी विशेषताएं इसे असाधारण महत्व का स्थान बना सकती हैं। और इस बात ने बहुतो का ध्यान आकृष्ट किया है क्योकि जहाँ हमने लंगर डाला था वहां "यर्बा व्यूना" की बस्ती में अधिकाँश लोग अमरीकी और अग्रेज हैं। इस बात की काफी सम्भावना है कि यह बस्ती इस तट का सब से महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन जायगी। आजकल भी यह बस्ती व्यापारियो, रूसी जहाजो और ह्वेल जहाजो से गेहूँ और फिजोल फलियो का व्यापार कर रही थी।

अब ज्वार उतर चला था और हमने खाडी के मुहाने के निकट एक ऊंची और सुन्दर ढालो वाली पहाडी के नीचे लंगर डाल दिया। इस पहाडी के ऊपर हजारों की संख्या में बारहसिंघे घूम-फिर रहे थे। वे एक क्षण हमारी ओर ताकते और जब हम उनकी मनोहर अदाओं और चाल को देखने के इरादे से जोर की आवाज करते तो वे डर कर भाग जाते थे।

आधी रात के समय ज्वार आया। हमने अपना लंगर उठाया और खाडी के बाहर चल दिये। हमारे सिर पर तारों-भरा आकाश था—हफ्तों बाद हम ऐसा आकाश देख रहे थे। हल्का उत्तरी पवन बह रहा था जो यहां व्यापारी हवाओं की तरह स्थायी रूप से बहता है। पवन के साथ-साथ हम धीरे-धीरे आगे बढते

रहे और सोमवार को तीसरे पहर हमने पाइन्ट एनो न्यूवों को पार किया जो मोंटेरी की खाडी का उत्तरी पाइन्ट है।

रास्ते में हमारी बात "डायना" नामक ब्रिग से हुई। यह जहाज उत्तरी-पूर्वी तट पर स्थित सैंडविच द्वीपसमूह का था और एसितका से आ रहा था। पाइन्ट पर यह जहाज हमारे साथ ही था। लेकिन लंगरगाह में हम से दो-एक घन्टे बाद पहुंचा।

मंगलवार को सुबह दस बजे हमारे जहाज ने मोटेरी में लंगर डाला। कस्बा बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने ग्यारह महीने पहले देखा था। उन दिनो मैं "पिलग्रिम" पर काम कर रहा था। कस्बे का सुन्दर और हरा-भरा लान, दक्षिण में चीड के जंगल, उत्तर में छोटी नदी, सफेद प्लास्टर की दीवारों और लाल टाइलों की छतों वाले हरियाली में छिटके हुए मकान; नीचा सफेद दुर्ग और उस पर लहराता मटमैला तिरगा झन्डा, दोपहर की परेड में नक्कारों और बिगुल की तीखी आवाज—इन सब चीजों ने वह दृश्य फिर से ताजा कर दिया जो हमने एक साल पहले इतनी खुशी के साथ देखा था जब हम एक लम्बी यात्रा करके आ रहे थे और सैंटा बारबरा में हुए सत्कार से हताश हो चुके थे। आज इस कस्बे को देख कर ऐसा लगा जैसे हम अपने घर ही आ गये हो।

* * *

अध्याय-२७

बन्दरगाह में हमारे अलावा सिर्फ एक जहाज और था। वह रूस सरकार का बार्क था और एसितका से आया था। जहाज पर आठ तोपें थी (बाद में हमें पता चला कि उनमें से चार नकली थी)। उस जहाज से भूतपूर्व गवर्नर मेंजत-चान जा रहे थे जहा से उन्हे वेरा क्रूज जाना था। उन्होने कहा कि अगर हम अपने पत्र अमरीका भेजना चाहें तो उन्हें दे दें। वे उन पत्रों को वेरा क्रूज में अमरीकी कोन्सल को दे देंगे और वहा से वे पत्र आसानी से अमरीका पहुँच जायेंगे। लिहाजा हमने उन्हें पत्रों का एक पैकिट दे दिया। शायद हर आदमी ने एकाध खत जरूर लिखा था। पत्रों में पहली जनवरी, उन्नीस सौ छत्तीस की तारीख डाली गयी। गवर्नर ने अपना वायदा निभाया और सभी पत्र मध्य मार्च से पहले बोस्टन पहुँच गये। इतने कम समय में इससे पहले कभी पत्रादि बोस्टन नही पहुचे थे।

मालिकों के आदेशानुसार "पिलग्रिम" नवंबर के उत्तरार्द्ध तक हमारी राह देखता हुआ मोटेरी में लंगर डाले पडा था। कप्तान फाकन हमें देखने के लिए अक्सर पहाडी पर जाता था। अन्त में उसने यह सोच कर हमारे जल्दी पहुँचने की आशा छोड दी कि झंझा ने हमारे जहाज को बहुत पीछे खदेड दिया होगा। दर असल, पाइन्ट कसेप्शन के पास हमने जिस झंझा का सामना किया था उसने सारे तट पर भीषण उत्पात किया था और सबमे शांत बन्दरगाहो में भी कई जहाज झंझा के वेग में किनारे मे जा टकराये थे। कप्तान फाकन को यह सब मालूम था।

सैन फ्रैंसिसको में एक अंग्रेजी ब्रिग जहाज था। झंझा में उसे अपने दोनों लंगरों से हाथ धोना पडा; "रोजा" नामक जहाज सैन डियागो में झंझा द्वारा पंक-तट पर खदेड दिया गया। मोटेरी में खुद "पिलग्रिम" आगे के तीन लंगरों की मदद से झंझा के वेग को बडी मुश्किल से झेल पाया। दिसबर के शुरू में वह सैन डियागो की ओर चला गया था।

चू कि इतवार हमें यहीं बिताना था और संपूर्ण तट पर मोंटेरी सबसे अच्छी जगह थी, और पिछले तीन महीनो में हमें कोई भी छुट्टी नही मिली थी इसलिए हर आदमी पार जाने के लिए उतावला हो उठा। इतवार की सुबह को जैसे ही डेको की धुलाई खत्म हुई और हम नाश्ते से निपटे वैसे ही जिन लोगो को छुट्टी मिल गयी थी उन्होने पार जाने के लिए हाथ मुह धोना शुरू कर दिया। एक-एक बाल्टी मीठा पानी, एक साबुन की टिकिया और एक बडी मोटी तौलिया ले कर हम रगड-रगड़ कर एक-दूसरे का मैल छुटाने के लिए जहाज के अगवाड में चले गये।

इसके बाद सब लोगों ने सिर धोये। हमने पतलून के अलावा सब कपड़े उतार दिये और एक ने दूसरे के सिर पर बाल्टी से धार बाध कर पानी गिराया। इसके बाद कपड़े पहनने की बारी आयी। जैसा कि आम तौर पर होता है हमारी पोशाक कुछ इस तरह की थी–पप शू, सफेद मोजे, ढीली सफेद सूती पतलून, नीली जाकेट, चेक की उजली कमीज, सर पर काला रूमाल, अच्छी तरह वार्निश किया गया टोप, बायी आख के पास थोडा सा काला फीता और जाकेट की बाहरी जेब से झाकता हुआ रेशमी रूमाल। सज-धज कर हमने गरदन के रूमाल के एक कोने में चार-पाच डालर बाधे और पार जाने के लिए "तैयार" हो गये।

एक नाव में बैठ कर हम पार पहुचे और वहा से कस्बे में गये। मैंने गिरजा-

घर का पता लगाने की कोशिश की ताकि मैं वहां प्रार्थना होती देख सकूं लेकिन पता चला कि सवेरे ही एक मास हो चुकी है और अब कोई सर्विस नही होगी। लिहाजा हम कस्बे में घूमते-फिरते रहे। हमने अमरीकियों, अंग्रेजों और उन देसी लोगो से मुलाकात की जिनसे हम पिछली बार मिल चुके थे।

दोपहर के समय हमने घोडे लिए और वहाँ से करीब एक लीग दूर स्थित कार्मेल मिशन गये। वहाँ मेयर ने हमें डिनर दिया जिसमें बीफ, अडे, फिजोल, टार्टिला और शराब वगैरह चीजें थी। मेयर ने पैसे लेने से इन्कार कर दिया क्योंकि उसके शब्दो में ये सब चीजें खुदा की देन थी लेकिन जब हमने वह रकम इनाम के तौर पर दी तो उसने सिर हिलाकर और अपने टोप को हाथ लगा कर उसे स्वीकार कर लिया।

इसके बाद हमने तेजी से अपने घोडे दौडा दिये और सारे प्रदेश को खूंदते हुए सूरज छिपते-छिपते हम कस्बे में आ गये। यहाँ हम अपने उन साथियो से मिले जो हमारे साथ घुडसवारी के लिए नहीं गये थे। उनका कहना था कि मल्लाह और घोडे का उतना ही सम्बन्ध है जितना मछली और गुब्बारे का। वे शराब की एक दूकान में घुसे हुए थे और इन्डियनो व दोगलों की एक भीड मे घिरे जोर-जोर से शोर मचा रहे थे, और इस बात की काफी उम्मीद थी कि या तो उनके कपड़े उतार लिये जायेंगे, या उनके छुरा-वुरा घोंप दिया जायगा। अथवा उन्हें रात-भर हवालात में बन्द कर दिया जायगा।

बडी मुश्किल से हम उन्हे घेर-घार कर नाव तक लाये यद्यपि हमें उन स्पेनियों की कोप-दृष्टि और हस्तक्षेप का सामना करना पडा जो उन मल्लाहो को अपना शिकार बनाने की ठान चुके थे।

"डायना" के नाविक—ये निकाले हुए निकम्मे लोग थे जिन्हें ह्वेल जहाजों ने द्वीपों पर छोड दिया था, जरूरत पडने पर वहाँ से उन्हे इस जहाज पर नौकर रख लिया गया था—नशे में बुरी तरह धुत्त थे। उनकी एक टुकडी तट पर थी जिसमें उनका कप्तान भी था जो खुद भी दूसरे मल्लाहो की तरह ही नशे में धुत्त था। तीर पर पहुँच कर उन्होंने कसम खाई कि अब उन्हें जहाज पर नही लौटना है और वे कस्बे की ओर लौट गये। वहाँ उनके कपड़े उतार लिये गये और उनकी पिटाई हुई। इसके बाद उन्हें रात भर के लिए हवालात में बन्द कर दिया गया, जहाँ से अगले दिन कप्तान ने उन्हें छुडाया।

जैसाकि छुट्टी वाले दिन अक्सर होता है, हमारे जहाज के अगवाड में भो नशे में धुत्त मल्लाह सारी रात गुल-गपाडा मचाते रहे। सुबह के समय उनको आँख लगी ही थी कि काम का समय हो गया। दिन भर वे पानी में खालें ढोने के काम पर लगे रहे और सरदर्द के मारे उनका खडा रहना मुहाल हो गया। मल्लाह की जिंदगी के यही तो मजे हैं।

हमारे यहाँ रहने के दौरान कोई खास बात नहो हुई। हाँ, मुक्केबाजी का एक मुकाबला जरूर ऐसा हुआ जिसकी चर्चा हम अक्सर करते रहे।

कैप कोड का एक चौडी पीठ वाला और बड़े सिर वाला सोलहवर्षीय लड़का बोस्टन के स्कूल में पढने वाले एक दूसरे पतले और नाजुक से दिखायी देने वाले छोकरे को पूरी यात्रा में सताता आया था। केपकोड का लडका ताकत, उम्र, जहाज के काम करने के अनुभव—सभी दृष्टियो मे बोस्टन के लडके से इक्कीस पड़ता था, क्योंकि बोस्टन के लडके का जहाज पर नौकरी करने का यह पहला मौका था। फिर भी इस लड़के ने हिम्मत से काम लिया था, वह अपना काम लगन से सीख रहा था और दिन-ब दिन उसकी शक्ति व विश्वास में बढ़ोतरी होती जा रही थी। अब उसने अपने उत्पीडक के विरुद्ध अपने अधिकारों के लिए लडना भी शुरू कर दिया था। लेकिन केपकोड वाला लडका उससे बहुत तगडा था और हर बार उसे पटक कर उस पर काबू पा लेता था।

एक दिन तीसरे पहर के समय, हमारे काम शुरू करने के पहले, दोनो लडकों में झगडा हो गया और ज्यार्ज (बोस्टन वाला लडका) बोला कि नैट अगर कायदे से लडना चाहे तो मैं एक बार उससे निपट लेना चाहता हूँ। मुख्य मालिम ने हो-हल्ला सुना तो वह नीचे गया और उन दोनो को ऊपर डेक पर ले आया। उसने कहा या तो तुम दोनों हाथ मिला कर वादा करो कि यात्रा में फिर कभी नहीं लडेंगे या फिर एक बार लडकर निपट लो ताकि हमेशा के लिए हार-जीत का फैसला हो जाय। जब उसने देखा कि समझौते के लिए कोई भी तैयार नही है तो उसने सब लोगों को ऊपर बुलाया (चूं कि कप्तान पार चला गया था इसलिए जहाज पर वही सर्वेसर्वा था), मल्लाहो को उसने जहाज की कटि मे खडा कया और डेक पर एक लकीर खींच दी। इसके बाद उसने दोनों लडकों को लकीर के इधर उधर एक-दूसरे के आमने-सामने खड़ा किया। अन्त में उसने उनकी कटि के बराबर ऊंची एक रस्सी तान दी और उन्हें आदेश दिया कि रस्सो से नीचे के हिस्से

पर प्रहार न करें । आदेश मिलते ही दोनो लडके लडाकू मुर्गों की तरह एक-दूसरे पर पिल पड़े। केप कोड वाले लड़के नैंट ने दोनों मुट्ठियो से प्रहार करते हुए दूसरे लड़के के चेहरे और बांहों से खून बहा दिया और जगह जगह नील डाल दिये। हमें हर मिनट ऐसा लगता था कि दूसरा लड़का अब हारा, अब हारा, लेकिन वह जितना घायल होता जा रहा था उतना ही संभल कर लड रहा था। कई बार वह नीचे गिरा लेकिन फिर शेर की तरह दहाडते हुए दुबारा आ डटा और फिर उस पर इतनी मार पडी कि दर्शको के दिलों में उसके लिए हमदर्दी पैदा हो गयी। जब वह अन्तिम बार लकीर पर आकर खडा हुआ तो उसने कसम खायी कि जब तक उन दोनो में से एक मर ही नही जाता तब तक वह वही खडा लडता रहेगा। उसकी कमीज फट गयी थी, चेहरा खून और खरोंचो से भरा हुआ था और आंखो से आग बरस रही थी। अपना निश्चय घोषित करने के बाद वह क्रुद्ध बाघ सा नैंट पर टूट पड़ा। इस पर मल्लाहों ने तरह-तरह की आवाजों से उसका जोश बढ़ाया।

नैंट ने उसे पकड़ कर गिराना चाहा लेकिन मालिम ने उसे यह कहकर रोक दिया कि कुश्ती कायदे से होगी, धांधली नही चलेगी। तब नैंट लकीर पर आ गया लेकिन उसका चेहरा फक पड़ गया था और उसके मुक्को में अब पहले से आधी जान भी न रह गयी थी। जाहिर था कि वह डर गया था। वह हमेशा से जीतता आयाथा, इस बार भी जीत जाता तो कोई बडी बात न होती, लेकिन हारने पर उसकी किरकिरी हो जाती। इसके विपरीत दूसरा लडका अपनी स्वतंत्रता और अपने सम्मान के लिए लड रहा था। वह नैंट द्वारा सताया गया था, और अब उसने इसका अन्त करने का फैसला कर लिया था।

मुकाबला जल्दी ही खत्म हो गया। नैंट ने हार कबूल कर ली। उस पर इतनी मार नही पडी थी लेकिन वह बहुत अधिक डर गया था और विमूढ़ हो उठा था। इसके बाद उसने जहाज पर कोई बदमाशी नही की। हम ज्यार्ज को अगवाड में ले गये। डेक के टब में उसे नहलाया, उसके साहस की सराहना की और इस घटना के बाद से उसे भी जहाज पर कुछ समझा जाने लगा। लड कर उसने अपना लोहा मनवा लिया था। मि० ब्राउन की योजना सफल रही क्योंकि यात्रा के बाकी दिनों में दोनों लडको में फिर कभी लडाई नही हुई।

बुधवार, छः जनवरी। यात्री के रूप में अनेक स्पेनियों को ले कर हम मौंटेरी

से चल दिये और सैंटा बारबरा की ओर रुख किया । "डायना" खाडी के बाहर तक तो हमारे साथ ही आया लेकिन पाइन्ट पाइनोज पर हमसे अलग हो गया क्योंकि उसे सैंडविच द्वीपसमूह जाना था । कई घन्टों तक तेज समीर चलता रहा और हमारा जहाज बहुत तेजी से चलता रहा, लेकिन, हमेशा की तरह, रात के समय यह बन्द हो गया और स्थल-समीर बहने लगा ।

हमारे यात्रियो में एक नवयुवक भी था । एक ह्रासोन्मुख कुलीन का ऐसा उत्तम उदाहरण मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था । उसे देखकर मुझे "गिल ब्लास" के कई पात्रो की याद हो आयी । वह इस प्रदेश के अभिजात वर्ग का सदस्य था, उसका परिवार शुद्ध स्पेनी रुधिर वाला था और एक जमाने में मैक्सिको में उसका दर्जा बहुत ऊचा था । उसका पिता उस प्रात का गवर्नर रह चुका था और प्रचुर संपत्ति एकत्र करने के बाद वह सैन डियागो में जा बसा था । वहां उसने एक विशाल भवन बनवाया, सामने आगन छोड दिया, बहुत सारे इन्डियन नौकर-चाकर रखे और उसकी गिनती प्रदेश के चोटी के लोगों में होने लगी । उसने अपने पुत्र को मैक्सिको भेजा जहाँ उसने सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त की और राजधानी के उच्चतम वर्ग में उसकी उठ-बैठ रही ।

बदकिस्मती, फिजूलखर्ची, पैसे की कमी और किसी भी दर पर रुपया ब्याज पर ले लेने की आदत—इन सबके कारण जल्दी ही उनका सारा वैभव नष्ट हो गया और जब डान जुआन बंदिनो नामक यह युवक मैक्सिको से लौटा तो वह सुसंस्कृत तो था लेकिन साथ ही गरीब, घमन्डी और पदहीन भी था । अब उसे भी कुलीन परिवारों के अधिकांश नवयुवकों की भाति ह जीवन बिताना था—जब पैसा होता था तो ये लोग ऐयाश और फिजूल खर्च हो जाते थे; ये मन से महत्वाकांक्षी और कर्म से नपुंसक थे; अक्सर दाने-दाने को मोहताज रहते थे लेकिन बाहर सामंती ठाठ से निकलते थे, गो गलो के अधनगे इन्डियन छोकरे को भी इनकी गरीबी के बारे में मालूम रहता था, और कर्जमन्द होने के कारण हर छोटे मोटे व्यापारी और दूकानदार का सामना करते हुए इनकी नानी मरती थी ।

वह पतला-दुबला और भव्य आकृति का नवयुवक था । वह शानदार अन्दाज से चलता था और नृत्य में निपुण था । वह कैसिलियन भाषा बड़े शुद्ध स्वर और उच्चारण में बोलता था और हर तरह से उच्च बंश से संबद्ध कुलीन लगता था । लेकिन उसकी हालत यह थी कि उसके पास किराये के पैसे नहीं थे (मैंने बाद में

सुना कि उसे किराये के लिए पैसे भी किसी और ने दिये थे) और वह पूरी तरह हमारे एजेन्ट की महरबानी पर पल रहा था।

वह हर एक के प्रति विनम्रता दिखाता था, मल्लाहो से भी बातचीत करता था और उसने अपनी खिदमत करने वाले स्टीवार्ड को चार रीयल—मुझे यकीन है कि यह उसकी अन्तिम पूंजी थी—दिये। मुझे उस आदमी से हमदर्दी थी। मेरी यह हमदर्दी तब और बढ जाती थी जब मैं उसे उसके सहयात्री और उस कस्बे के रहने वाले एक मोटे, भौडे, वाहयात और नक्शेबाज आदमी के साथ देखता था। यह आदमी एक याकी व्यापारी था और इसने सैन डियागो में खूब चादी बनायी थी। दरअसल इसी आदमी ने दीमक की तरह बदिनो परिवार का वैभव चाट लिया था और अब उनकी फिजूलखर्ची का फायदा उठाते हुए उन्हे गरीबी की चक्की में पीस रहा था और खुद मुटा रहा था। उसने उनकी जमीन गिरवी रख ली थी, उनकी पशु-सपत्ति खरीद ली थी और अब वह उनकी अन्तिम संपत्ति—हीरे-जवाह-रात—हडपने में लगा हुआ था।

डान जुआन के साथ उसका एक सेवक भी था जो खुद भी "गिल ब्लास" के पात्रों की तरह था। वह अपने आपको डान जुआन का प्राइवेट सेक्रेटरी कहला था यद्यपि वह लिखने-पढ़ने का काम नही करता था और स्टीअरेज में बढई और सिलमाकुर के साथ रहता था। वह वाकई एक कैरेक्टर था; वह बहुत अच्छी तरह पढ़-लिख लेता था, अच्छी स्पेनिश बोल लेता था, सारी स्पेनिश अमरीका घूम चुका था और हर पहलू से जी चुका था। वह लगभग हर तरह की नौकरी कर चुका था। ज्यादातर बड़े लोगों के विश्वासपात्र नौकर के रूप में ही उसने नौकरी की थी।

मैंने इस आदमी से अपना परिचय बढाया और जिन पांच हफ्तों में वह हमारे साथ रहा—क्योकि वह सैन डियागो तक ही हमारे साथ रहा—उनमें मैने उससे मेक्सिको के राजनीतिक दलों की हालत, समाज के विभिन्न वर्गो की आदतो और गति-विधि आदि के बारे में इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया जितना शायद मैं किसी और से नही प्राप्त कर सकता था।

उसने मेरी स्पेनिश सुधारने में बडे परिश्रम से काम लिया, वह मुझे बातचीत के मुहावरे सिखाता था। उसने सामान्य प्रचलित शब्दों व संबोधनो आदि से भी मुझे परिचित कराया और समाचारपत्रों की एक फाइल पढ़ने को दी जिसमें सैंटा एना

के शानदार स्वागत-समारोह की सूचनाएं थी जो विजय के उपरान्त टैम्पिको से अभी-अभी लौटा था। समाचार पत्रों में टैक्सास के लोगों के विरुद्ध उसके अभियान की तैयारियों की खबरें भी थी। हर जगह "सैंटा एना चिरजीवी हो" की गूंज रही थी और यह गूंज कैलिफोर्निया तक आ पहुँची थी यद्यपि अभी इस प्रदेश में डान जुआन बन्दिनी जैसे अनेक लोग थे जो उसकी सरकार के विरुद्ध थे और बस्तामेंते को सत्तासीन करने का षड्यत्र कर रहे थे। उनका कहना था कि सैंटा एना मिशनो को तोड देने के पक्ष में हैं। फिर भी मुझे इसमें कोई सदेह नही था कि अगर डान जुआन को सैन डियागो का प्रशासक बना दिया जाय तो वह किसी भी राजवन्श और चर्च को अगीकार कर सकता है। इन अखबारों में मुझे अमरीका और इंग्लेंड की छुटपुट खबरें भी दिखायी दी लेकिन वे सब इतनी असबद्ध थी और पिछले डेढ वर्ष में क्या–कुछ हो चुका है इससे मैं इस कदर अनजान था कि मुझे उनसे सतोष नही हुआ। एक खबर के मुताबिक टैने अमरीका के मुख्या-न्यायाधीश हो गये थे (मैंने सोचा मार्शल का क्या हुआ, वे मर गये या अपदस्थ हो गये ?), इसी तरह एक और खबर थी कि सर राबर्ट पील के स्थान पर अर्ल विस्काउट मेलबोर्न प्रधानमन्त्री बन गये हैं (इसका मतलब यह हुआ कि राबर्ट पील प्रधानमंत्री थे ? और अर्ल ग्रे और ड्यूक आफ विलिंगटन का क्या हुआ ? मैंने सोचा) इन महान ससदीय परिवर्तनों को फुर्सत से ही समझा जा सकता था।

मोंटेरी से चलने के अगले दिन सुबह के समय हम पाइन्ट कंसेप्शन पार कर रहे थे। दिन साफ था, धूप निकली हुई थी और पवन स्वच्छन्द गति से बह रहा था। दो महीने पहले हम इसी स्थान पर उत्तरी-पश्चिमी झंझा में फंस गये थे और हमारे जहाज पर पालो के नाम पर दो स्पेंसर पाल भर रह गये थे। आज स्थिति उसके ठीक प्रतिकूल थी।

"जहाज हो !" एक मल्लाह जोर से चीखा, "किस ओर है ?" "वैदर बीम के पास सर।" और कुछ ही मिनटो में एक संपूर्ण पालों का दो मस्तूलों वाला जहाज पाइन्ट कसेप्शन के पास दिखायी दिया। हम रुक कर उसका इन्तजार करने लगे। वह घूमा तो हमने देखा उसके डेको पर काफी आदमी थे, उस पर चार तोपें रखी हुई थी और उसकी हर चीज युद्ध पोत जैसी थी। अगर कोई फर्क था तो यह कि उसमें बोसुन की सीटी नही सुन पड़ रही थी और छतरी में खड़े लोगो ने वर्दया नही पहन रखी थी।

एक नाटा और तगडा आदमी एक मोटी काली सी जाकेट पहने जाली में खडा था। उसके हाथ में भोंपू था। "जहाज हो!" "हलो!" "जहाज का नाम क्या है, कृपया ?" "एलर्ट।" "कहा से आये है कृपया ?" आदि आदि।

पता चला कि उस ब्रिग का नाम "कनवाय" है और वह सैंडविच द्वीपसमूह से आया है। वह किनारे के द्वीपों में फर वाले ऊदबिलावों का शिकार करता था। उसके शस्त्रसज्जित होने का कारण यह था कि वह एक अवैध व्यापारी था। इन द्वीपो में फर वाले ऊदबिलाव बहुतायत से होते थे और उनके बेशकीमत होने के कारण सरकार उनके शिकार का लाइसेंस देने के लिए भारी रकम मांगती थी और हर शिकार किये गये या बाहर जाने वाले ऊदबिलाव पर उसने भारी शुल्क लगा दिया था।

इस जहाज के पास न कोई लाइसेंस था और न यह शुल्क ही चुकाता था। इसके मालिक लोग ओग्राहू में रहते थे। इस तट पर उनके और कई जहाज व्यापार करते थे और यह जहाज चोरी-छिपे उन तक माल पहुँचाता था। हमारे कप्तान ने उससे कहा कि मेक्सिको के अधिकारियो से सावधान रहे, लेकिन उसने जवाब दिया कि सपूर्ण प्रशात महासागर में उसके जहाज के आकार का कोई सशस्त्र जहाज नही है। नि सन्देह यह वही जहाज था जो हमें कुछ महीने पहले सैंटा बारबरा के पास दिखायी दिया था।

ये जहाज अक्सर बन्दरगाह में लगर डाले बिना बरसो समुद्र-तट पर घूमते रहते थे। जरूरत पडने पर वे टापुओं से लकडी और पानी ले लेते थे, और कभी नयी साज-सज्जा के लिए ओग्राहू चले जाते थे।

रविवार, दस जनवरी। सैंटा बारबरा पहुँचे। बुधवार को दक्षिणी-पूर्वी झंझा के कारण हमे अपना लगर उठा कर समुद्र की ओर जाना पडा। अगले दिन फिर लंगरगार में पहुँच कर हमने लङ्गर डाल दिया। बन्दरगाह में एकमात्र जहाज हमारा ही था। मोटेरी से चलने के बाद "पिलग्रिम" को यहा से गुजरे कोई छः सप्ताह हो गये थे। इस खाडी में कई सप्ताह पहले उसे सूचना मिली थी कि हम सैन फ्रासिसको में सकुशल पहुच गये हैं।

पार में हमारे एजेन्ट की शादी की तैयारियां बडी धूम से हो रही थीं। उसका विवाह डान एन्टोनियो एन—की सब से छोटी लडकी दोना अनीता से होने वाला था। लड़की का पिता कस्बे में चोटी का आदमी माना जाता था और

कैलिफोर्निया में पहले परिवार का प्रमुख था। जहाज से कुछ रसद वगैरह लेकर हमारा स्टीवार्ड तीर पर गया और वहां तीन दिन तक पेस्ट्री और केक बनाने में लगा रहा।

शादी वाले दिन हम कप्तान को नाव में किनारे पर पहुँचाने गये। उसने हमें रात में आने का आदेश दिया और इस बात की इजाजत दी कि हम शादी के घर में जाकर स्पेनी नृत्य फैंडेंगो देख सकते हैं। जहाज पर लौटे तो हमने देखा कि सलामी देने की तैयारियां की जा रही हैं, तोपों को बाहर निकाल लिया गया था, हर तोप पर आदमियों को तैनात कर दिया गया, गोले भर दिये गये और मशाल जला ली गयी। फहराने के लिए सभी झण्डों को तैयार कर लिया गया। मैं अपनी तोप के पास डट गया और हम सब इस बात का इन्तजार करने लगे कि पार से इशारा पाते ही तोपें दाग दें।

दस बजे दुलहन अपनी बहन के साथ कनफेशनल पर गयी। उसके कपड़े गहरे काले रङ्ग के थे। लगभग एक घन्टे बाद मिशन चर्च का सिंहद्वार खुला, घन्टियां घनघना उठीं और किनारे पर से कप्तान ने हमें इशारा दे दिया। उसी समय श्वेतवसना दुलहन अपने पति के साथ बाहर निकली, साथ में एक लम्बा जुलूस था।

जैसे ही दुलहन ने गिरजा से बाहर पैर रखा हमारी तोपों से निकल कर धुंए का एक छोटा सफेद बादल आसमान में मन्डराने लगा। धमाके की आवाज चारों ओर की पहाड़ियों और खाडी के पार गूंज उठी और एक ही क्षण में जहाज एक कोने से दूसरे तक झन्डों और पताकाओं से सज गया। पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के बाद पच्चीस तोपें दागी गयीं और जहाज दिन भर झन्डों और पताकाओं से सजा रहा।

सूर्यास्त के समय पच्चीस तोपों की सलामी फिर दी गयी और झन्डे उतार लिये गये। हम लोगों का ख्याल था कि हर पन्द्रह मिनट के बाद एक तोप की सलामी देना चार तोपों और पन्द्रह-बीस आदमियों वाले व्यापारी जहाज के लिए प्रशंसा की बात है।

सपर के समय नाव की नाविक-टोली को बुलाया गया और हम नाव को खे कर किनारे ले गये। हमने अपनी वर्दी पहन रखी थी। नाव को तीर पर बांध कर हम फैंडेंगो देखने चल दिये। लड़की के पिता का मकान उस कस्बे के सब से

ग्रालीशान मकानों में से था। सामने एक विशाल प्रांगण था जिसमें एक तम्बू तना था जिसमें कई सौ ग्रादमी ग्रा सकते थे।

नजदीक जाने पर हमने वायलिन ग्रौर गिटार की परिचित ध्वनियां सुनी ग्रौर तम्बू के ग्रन्दर ग्रनेक ग्रादमियों की चहल-पहल दिखायी दी। ग्रन्दर जाने पर हमने पाया कि कस्बे के प्राय: सभी लोग—मर्द, ग्रौरतें ग्रौर बच्चे—वहा जुटे थे। भीड इतनी थी कि नाचने वालो को जगह नहीं मिल रही थी। यहाँ इस प्रकार के ग्रवसरों पर निमन्त्रण पत्र नही भेजे जाते बल्कि हर एक से यह ग्राशा की जाती है कि वह शामिल होगा; यद्यपि खास लोगो के स्वागत-सत्कार का प्रबन्ध घर में ग्रलग से होता है।

बूढी ग्रौरतें पंक्तियों में बैठी संगीत की धुन पर तालियां बजा रही थी ग्रौर युवाग्रों का उत्साह बढा रही थी। सगीत प्राणवान था ग्रौर उसमें हमें ग्रपनी परिचित धुनें भी सुनायी पडी जो हमने स्पेनिश सगीत से ली हैं।

नृत्य से मुझे निराशा हुई। महिलाएँ सीधी खडी होती थी, उनके हाथ दोनों तरफ नीचे लटके थे ग्रौर नजर सामने वाली जमीन पर जमी थी, पांव चल तो रहे थे लेकिन उनमें गति नही जान पडती थी, क्योकि उनका पहनावा ऐसा था कि उसके निचले हिस्से ने उनके पांवों को पूरी तरह ढक रखा था ग्रौर वह जमीन को छू रहा था। वे इतनी गम्भीर थी जैसे किसी धार्मिक कृत्य में भाग ले रही हों ग्रौर उनके चेहरे शरीर के ग्रन्य भागों की तरह ही उत्तेजनाहीन थे। सब मिला कर मैं जिन जोशीले ग्रौर मनमोहक स्पेनी नृत्यों की ग्राशा कर के ग्राया था उनके स्थान पर मुझे कैलिफोर्निया का यह फैंडेंगो एकदम निर्जीव लगा (कम से कम जहां तक महिलाग्रों का सम्बन्ध था)।

इससे पुरुष ग्रच्छे थे। उनके नाचने में लालित्य ग्रौर उत्साह था। वे ग्रपनी प्राय: ग्रचल साथिनो के चारो ग्रोर नाच रहे थे ग्रौर उनके मुकाबले कही ग्रच्छे लग रहे थे।

नृत्य के मामले में हमारे मित्र डान जुग्रान बंदिनी की बडी शोहरत थी। ग्रौर वाकई जब शाम के समय वह मन्च पर ग्राया तो मुझे मानना पडा कि ऐसा मनोहर नृत्य मैंने इससे पहले कभी नही देखा था। उसने बढ़िया सिली सफेद पतलून ग्रौर गहरे रङ्ग की रेशमी जाकेट पहन रखी थी, ग्रपने बहुत ही छोटे पैरो में वह सफेद मोजे ग्रौर मोरक्को के पतले चमड़े के स्लीपर पहने हुए थे।

उसकी सूक्ष्म और भव्य आकृति नृत्य के लिए विशेष उपयुक्त थी, और वह हरिण के छौने की शान और मस्ती से पद-संचालन करता था। ऐसा लगता था कि नाचते-नाचते वह कभी-कभी जमीन पर पैर लगा कर एक झोंटा-सा ले लेता है और फिर देर तक हवा में नाचता रहता है। साथ ही वह ज्यादा उछल-कूद भी नहीं दिखाता था बल्कि ऐसा लगता था जैसे वह नृत्य को अधिक गतिशील होने से रोक रहा हो। उसकी बडी तारीफ हुई और शाम के समय वह अनेक बार नाचा।

सपर के बाद वाल्ज शुरू हुआ जो कुछ कुलीन व्यक्तियो तक ही सीमित था और एक बडी उपलब्धि तथा अमीरी की निशानी समझा जाता था।

इसमें भी डान जुआन चमक उठा। वह दुलहन की बहन (दोना अंगस्तीना, जो एक सुन्दर तथा लोकप्रिय महिला थी) के साथ नाच रहा था। इस नृत्य की भंगिमाएं सुन्दर मानी जाती हैं लेकिन मुझे तो वे बुरी ही लगी। यह नृत्य आधे घन्टे में ही समाप्त हो गया क्योंकि और कोई नाचने के लिए आया ही नही। उनकी बार-बार और जोर-जोर से प्रशसा की गयी। वृद्ध नर-नारी उनकी तारीफ करते-करते कुर्सियो में से उछले पडते थे और युवक-युवती अपने टोप और रूमाल हिला कर प्रशंसा कर रहे थे। मुझे ऐसा लगा कि वाकई वाल्ज को मैक्सिकों के इन निवासियो जैसे प्रशसको की ही जरूरत थी।

शाम का एक और मनोरजन यह रहा कि कोलोन या दूसरे इत्रों से भरे हुए अन्डे लोगों के सिरों पर फोड़े गये। अन्डे के एक कोने में छेद कर उसे खाली कर लिया जाता है। अब इस छिलके में थोडा सा कोलोन भर कर छेद को बन्द कर दिया जाता है।

औरतें ऐसे अनेक अन्डे लेकर चुपचाप मर्दों के पीछे आ खडी होती हैं और जब मर्द उनकी ओर पीठ किये खडा होता है तो औरत अन्डा उसके सिर पर मार कर फोड देती है, और मजा आ जाता है। अब मर्द की बहादुरी इस बात में है कि वह उस औरत को ढूंढ़ निकाले और उसके सिर पर अन्डा फोड कर अपना बदला चुकाये। लेकिन अगर कोई मुड कर पीछे देख ले तो अन्डा नही फोडा जा सकता।

मेरे सामने एक लम्बा डान खडा था। उसके गलमुच्छे धूसर और घने थे और वह शक्ल से कोई बडा आदमी नजर आता था। अचानक किसी ने मेरे कन्धे पर हल्के से हाथ रखा। घूम कर देखा तो दोना अगस्तीना खडी थी (हम

सब उसे जानते थे क्योंकि वह "एलर्ट" में मोंटेरी तक गयी और आयी थी)। उसने होठों पर उंगली रख कर मुझे चुप रहने और एक ओर हट जाने का संकेत किया। मैं कुछ पीछे हट गया और वह डान के पीछे जा खडी हुई। अब एक हाथ से उसने डान का बडा-सा टोप उतार फेंका और दूसरे हाथ से उसके सिर पर अन्डा फोडकर मेरे पीछे से रेंगती हुई एक मिन में गायब हो गयी।

डान धीरे-धीरे मुडा। कोलोन उसके चेहरे और कपडों पर से होकर बह रहा था और हर कोने से ठहाकों की आवाज आ रही थी। वह कुछ देर व्यर्थ इधर उधर नजरें दौडाता रहा लेकिन अन्त में लोगों की हंसती हुई आखें जिस दिशा में गड़ी थीं उसमें देखने पर उसे अपने सुन्दर अपराधी का पता चल गया। वह उसकी चहेती नीस थी इसलिए डान को भी ठहाकों में शामिल होना पडा।

इस तरह की अनेक चाल पट्टियां खेली गयीं, युवक-युवतियों ने एक-दूसरे को छकाने में कसर नहीं छोडी और जब भी किसी की चाल पूरी उतरती तब उपस्थित लोगों का एक जोरदार ठहाका सुनायी पडता था।

मैंने यहां एक और नयी चीज देखी जिसे कुछ देर तो मैं समझ ही न पाया। एक सुन्दर जवान लडकी नाच रही थी कि एक नवयुवक उसके पीछे जाकर खड़ा हो गया और उसने अपना टोप युवती के सिर पर रख दिया। टोप ने लडकी की आंखें ढक लो। टोप रख कर नवयुवक भीड में जा मिला। युवती कुछ देर तो टोप सिर पर ही लिये नाचती रही लेकिन फिर उसने उसे फेंक दिया। इस पर सब लोगों ने जोरदार ठहाका लगाया और उस नवयुवक को वहां आकर अपना टोप उठाना पडा।

जिन औरतों के सिरों पर टोप रखे जाते थे उनमें से कुछ तो उन्हें उसी समय फेंक देती थीं और कुछ पूरे नृत्य में सिर पर रखा रहने देती थी, और अन्त में सिर से उतार कर हाथ मे ले लेती थीं। अब टोप का मालिक आगे आता था और झुक कर अपना टोप ले लेता था।

यह झमेला मेरी समझ से बाहर था। बाद में मुझे बताया गया कि टोप देने का अर्थ है कि वह आदमी उस औरत को सराहना की दृष्टि से देखता है और शाम तक के लिये उसका साथी बनने और अन्त में उसे घर तक छोड आने की इच्छा रखता है। टोप फेंक देने का अर्थ है लड़की को प्रस्ताव नामन्जूर है और

उस दशा में उस आदमी को सब लोगो के ठहाकों के बीच अपना टोप उठाने पर मजबूर होना पड़ता था।

कई पुरुष महिलाओं को देखने का मौका दिये बिना ही उनके सिर पर टोप रख देते थे। तब बडा मजा आता था। ऐसा होने पर महिलाएं या तो उसी समय टोप को फेंक देती थी या उसे रख लेती थी। रख लेने पर जब उन्हे टोप के मालिक का पता चलता तो अक्सर महिलाओ का मजाक उडाया जाता था।

कप्तान ने कोई दस बजे हमें बुलाया और हम इस नये तमाशे का मजा लूटने के कारण बड़े उत्साह से जहाज की ओर चले। अब मल्लाहो में हमारा मर्तबा कुछ बढ़ गया क्योकि हम उन्हें बहुत कुछ बता सकते थे। इसके अलावा फेंडेंगो के खत्म होने तक हमें हर रोज रात को वहाँ जाने की इजाजत थी और आम तौर पर फेंडेंगो तीन दिन तक चलता है।

अगले दिन हममें से दो मल्लाहों को कस्बे में भेजा गया। लौटते समय हमने एक नजर पंडाल में डाली। साजिंदे अपनी-अपनी जगह बैठे साज बजा रहे थे और नीचे दरजे के कुछ लोग नृत्य कर रहे थे। फेंडेंगो में नृत्य तो थोडी-थोडी देर रुक कर दिन भर होता रहता है लेकिन असली भीड़, जोश और बुद्धिजीवी लोग रात को ही आते हैं।

अगली और अंतिम रात्रि को हम पहले की तरह किनारे पर और वहां से उत्सव में गये। अन्त में हम साजो की एकरस आवाज और उसका साथ निभाती हुई औरतो की गुनगुनाहट से और कैसानेट की जगह सगीत के साथ बजती हुई तालियो की आवाज़ से ऊब से गये।

हमने देखा सब लोग हमें ध्यान से देख रहे हैं। उन्हें हमारी मल्लाहों की पोशाकें—और उन्हें साफ और बढ़िया बनाने में हमने बडी मेहनत की थी—काफी पसन्द आयी और सब लोगों ने हमें अमरीकी मल्लाहों का नृत्य दिखाने के लिए आमन्त्रित किया। लेकिन जब हमारे कुछ देशवासियो ने स्पेनियो के अनुकरण पर कुछ भद्दी भंगिमाएं पेश की तो हमने नृत्य न करना ही उचित समझा।

हमारे एजेन्ट ने बोस्टन से हाल ही में मंगवाया गया तग, काला, स्वैलो-टेल वाला कोट पहन रखा था, और ऊची कडी टाई लगा रखी थी। ऐसा लगता था जैसे उसे चारों ओर से बन्द कर दिया गया हो और केवल उसके हाथ और पैर

आजाद हों। बंदिनी के नृत्य खत्म करने के बाद उसने नृत्य किया और हमारी राय में उसमें थाकी लालित्य की कमी नही थी।

अंतिम रात्रि को नृत्य पूरे यौवन पर था और वह चरम सीमा पर पहुँचने ही वाला था कि कप्तान ने हमे जहाज पर जाने का आदेश दिया क्योकि उन दिनों दक्षिणी-पूर्वी झन्झा का मौसम चल रहा था और वह अधिक देर तक तीर पर रहने से डरता था। और उसका डर बिल्कुल ठीक था क्योकि उसी रात दक्षिणी पूर्वी झन्झा से बचने के लिए हमें अपना लगर उठा कर समुद्र की ओर जाना पड़ा। झन्झा बारह घन्टे रही और हमने अगले दिन फिर से लगरगाह में पहुंच कर लगर डाल दिया।

*　　　*　　　*

अध्याय—२८

सोमवार, एक फरवरी। इक्कीस दिन बन्दरगाह में रहने के बाद हम सैन पेड्रो के लिए रवाना हो गये। अगले दिन हम सैन पेड्रो आ पहुचे।

यहाँ हमने "आयाकुचो" और "पिलग्रिम" को देखा जो हमें ग्यारह सितम्बर के बाद से दिखायी नही पडा था, यानी इस बात को लगभग पाँच महीने हो चले थे। इस पुराने ब्रिग के प्रति मेरे मन में नेह उमड आया जिसे मैंने सबसे पहले अपना घर बनाया था, जिस पर मैंने एक साल बिताया था और जिसने समुद्री जीवन की हलचल से पहले-पहल मेरा परिचय कराया था। मेरे दिमाग में उसके साथ अनेक स्मृतियाँ जुडी हुई थी—बोस्टन, वह घाट जिससे हम रवाना हुए थे, धारा में लगर डालना, विदा होना और इसी तरह की अनेक यादें मुझे एक दूसरी दुनिया से बाँधने वाले सूत्रों की तरह थी जिसमें में था और अभी और भी रहना था।

पहली रात को सपर के बाद मैं "पिलग्रिम" पर गया। मैंने देखा रसोइया रसोई में था और वह बाँसुरी बजा रहा था जो मैंने उसे विदाई के समय उपहार में दी थी। वह मुझसे बडे जोश से मिला, और तब मैं जहाज के अगवाड़ में जा पहुंचा जहाँ मेरे पुराने संगी-साथी बदस्तूर थे, वे मुझे देखकर बडे खुश हुए, क्योंकि जब हम नियत समय पर सैंटा बारबरा नही पहुंचे तो उन्होंने हमें मरा हुआ समझ लिया था।

वे इससे पहले सैन डियागो गये थे, लगभग एक महीने सैन पेड्रो में पड़े रहे

थे और प्यूब्लो से उन्हें तीन हजार खालें मिली थी। अगले दिन हमने उनसे ये खालें ले ली जिससे हमारा जहाज भर गया और हम दोनो साथ साथ रवाना हो गये। "पिलग्रिम" दुबारा सैन फ्रैंसिसको जा रहा था और हम सैन डियागो, जहां हम छः फरवरी को पहुँचे।

सैन डियागो पहुँच कर हमें हमेशा खुशी होती थी। एक तो यहाँ डिपो था, दूसरे यह छोटी सी शांत खाडी थी और तीसरे मैं यहाँ एक बार गर्मियाँ बिता चुका था इसलिए मुझे तो यह अपने घर की तरह ही लगती थी। बन्दरगाह में एक भी जहाज नही था। लगभग एक महीना पहले "रोजा" वाल्परेजो और कंडीज के लिए तथा "कंटेलिना" कैलाग्रो के लिए रवाना हो चुके थे। हमने अपनी खालें जमा करा दी और चार दिन में प्रतिवात दिशा में चलने की तैयारियाँ करने लगे। हम इस बात से खुश थे कि इस बार हम अंतिम बार खालें लेने जा रहे हैं।

तीस हजार से अधिक खालें इकट्ठी की जा चुकी थी और उन्हे साफ करके गोदाम में रखवा दिया गया था। अब जो खालें हम लेने जा रहे थे और जो खालें "पिलग्रिम" सैन फ्रैंसिसको से लाता उन्हे और इन तीस हजार खालों को मिला कर हमारा नौभार पूरा हो जाना था। हम वाकई अंतिम बार खालें लेने जा रहे हैं और अब हम घर लौटते समय ही सैन डियागो से गुजरेंगे। इस विचार से हमें ऐसा लगा मानो हमने यात्रा पूरी कर ली है और घर पहुच गये हैं, यद्यपि हमें मालूम था कि अभी बोस्टन पहुँचने में हमें आधे साल से अधिक समय लगेगा।

जैसी कि मेरी आदत थी एक शाम मैंने भट्ठी के पास सैंडविच द्वीपसमूह के लोगों के साथ बितायी। लेकिन पहले की तरह इस बार मेरा समय हँसी ठट्ठे में नही गुजरा। कहा जाता है कि दक्षिणी समुद्र के प्रत्येक द्वीप के लिए सबसे बडा अभिशाप वह आदमी रहा है जिसने सबसे पहले उसे खोजा था, और कोई भी आदमी जो इन हिस्सों से हमारे व्यापार के इतिहास से थोडा भी परिचित है समझ सकता है कि इस कथन में कितनी अधिक सचाई है। वह यह भी जानता है कि गोरे आदमी अपने दुर्गुणों के कारण यहां ऐसी-ऐसी बीमारियां लाये जिनका इन द्वीपवासियो से पहले नाम भी न सुना था और अब वही बीमारियाँ हर साल द्वीपवासी जनता का $\frac{1}{40}$ हिस्सा चाट जाती हैं।

मुझे लगा कि इन लोगो का सार्वनाश निकट है। अपने को सभ्य कहने वाली जाति का अभिशाप हर जगह उनका पीछा कर रहा था; और यहाँ, इस सुदूर

प्रात में भी दो युवा द्वीपवासी एक ऐसी बीमारी से दम तोड रहे थे जो निश्चित रूप से उन्होंने मेक्सिको और अमरीका के ईसाइयों के सहवास से पायी थी। इन्हीं दोनो द्वीपवासियो को मैं कुछ दिन पहले शक्तिशाली, सक्रिय और स्वस्थ छोड कर गया था।

उनमें से एक अभी इतना बीमार नहीं था। वह अपना पाइप पीता हुआ घूम-घूम कर बात कर रहा था और प्रकृत रहने का प्रयत्न कर रहा था। लेकिन दूसरा आदमी जिसका नाम होप था और जो मेरा मित्र था इतना अधिक बीमार था कि उससे अधिक भयावह पदार्थ मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी आँखें गढ़ो में घुस गयी थीं और बुझ सी गयी थी, गाल एकदम पिचक गये थे और हाथ चिडिया के पजों की तरह हो गये थे। रह-रहकर उसे जोरदार खांसी उठती थी जिसने उसके सारे शरीर का ढेर कर दिया था। उसकी आवाज खोखली और अस्पष्ट हो गयी थी और हिलने डुलने की ताकत जवाब दे गयी थी। वह वहाँ चूल्हे के पास जमीन पर बिछी एक चटाई पर पडा था, न उसे दवा मिल रही थी न आराम, न कोई उसकी देखभाल करने वाला था न इमदाद। चन्द कनाका लोग वहां मौजूद थे जो उसकी मदद करना चाहते थे लेकिन कुछ कर नही पाते थे। उसकी हालत देख कर मेरा जी खराब हो गया और मुझे चक्कर आ गया। वह अभागा आदमी! जिन चार महीनों में मैं सागर-तट पर रहा था उनमें हम लोग साथ साथ काम करते थे और साथ-साथ जगलो में या समुद्र में आते—जाते थे।

मुझे वाकई उससे लगाव हो गया था और मैं उसे वहां मौजूद अपने किसी भी देशवासी से अधिक समझने लगा था और मेरा यकीन है कि वक्त पडने पर वह मेरे लिए कुछ भी कर सकता था। जब मैं भट्ठा वाले हिस्से के अन्दर आया तो उसने अपना हाथ उठा कर धीमी आवाज में और उल्लासपूर्ण मुस्कुराहट के साथ मेरा स्वागत किया।

मैंने उसे भरसक दिलासा दी, और वायदा किया कि मैं कप्तान से उसे दवा देने के लिए कहूँगा। मैंने उसे बताया कि मेरे कहने से कप्तान जरूर उसकी सहायता करेगा क्योंकि वह पिछले कई बरसों से हमारी कम्पनी के लिए किनारे पर रह कर और कम्पनी के जहाजो में काम कर रहा है। इसके बाद में जहाज पर पहुँच कर अपनी जाली में लेट गया लेकिन मुझे नींद नहीं आयी।

कनाका लोगों ने यह समझ कर कि यह आदमी पढ़ा-लिखा है और इसे दवाओं की जानकारी जरूर होगी मुझ पर जोर दिया था कि मैं बीमार को सावधानी पूर्वक देख लूं, और जो कुछ मैंने देखा वह अविस्मरणीय है। हमारे जहाज पर एक मल्लाह था जो एक युद्धपोत पर बीस साल तक मल्लाह रह चुका था और जो पाप और यातना के हर रूप से परिचित था। बाद में मैं उसे होप को दिखाने के लिए ले गया। उसे देख कर वह बोला कि ऐसा वीभत्स दृश्य उसने पहले कभी नहीं देखा था, न कभी कल्पना ही की थी। उसके चेहरे से साफ पता चलता था कि वह भय से अभिभूत हो गया था, यद्यपि वह हमारे नाविकों के अस्पतालों में एक से एक भयानक केस देख चुका था। रात भर मेरे दिमाग से उस अभागे आदमी का खयाल नहीं निकल सका। मैं उसकी नारकीय यातना और स्पष्ट, अपरिहार्य, दुखद अंत के बारे में सोचता रहा।

अगले दिन मैं कप्तान के पास गया और होप की हालत बयान कर उससे चल कर उसे देख लेने की प्रार्थना की।"

"क्या कहा ? एक कनाका।"

"जी हाँ, सर", मैंने कहा, "लेकिन बरसों तक वह हमारे जहाजों पर काम करता रहा है, और किनारे पर भी, और जहाजों पर भी, हमारे मालिकों की नौकरी में रहा है।"

"अच्छा, रहा होगा ?" कह कर कप्तान वहां से चल दिया।

यही आदमी बाद में चल कर सुमात्रा के तट पर बुखार से पीड़ित हो कर मर गया; लेकिन ईश्वर की कृपा से उसकी इतनी तीमारदारी हुई जितनी वह किसी और की न कर पाया था। कप्तान की ओर से निराश होकर मैंने एक बूढ़े मल्लाह से बात की जो इन मामलों में बडा अनुभवी था। उसने मुझे एक दवा दी जो वह हमेशा अपने साथ रखता था। उसे लेकर मै मालिम के पास गया और उसे सारी बात बता दी।

दवाओं की पेटी सामान्यतया मि० ब्राउन के अधिकार में रहती थी। वह वैसे तो बडा जोशीला, और पहरे के मामले में सख्त, आदमी था लेकिन उसमें सदभावनाओं की कमी न थी और बीमार आदमी के प्रति उसका व्यवहार दया-पूर्ण होता था। उसने कहा कि होप को ठीक-ठीक मल्लाह तो नहीं कहा जा सकता लेकिन चूंकि जब वह बीमार पड़ा तब हमारी कम्पनी में नौकर था इसलिए

उसे दवाएं दी जा सकती हैं। उसने दवाएं लाकर मुझे दे दीं और रात में तीर पर जाने की इजाज़त भी दे दी।

जब मैं दवाएं लेकर पार पहुँचा तो कनाका लोगों को जैसे मुंह-मांगी मुराद मिल गयी। प्यार और कृतज्ञता-ज्ञापन के जितने शब्द हो सकते हैं वे सब उन्होंने मुझ पर बरसा दिये, कहना चाहिए गंवा दिये (क्योंकि मैं उनमें से आधे भी नहीं समझ पाया) लेकिन अपने तरीके से उन्होंने अपने मनोभाव मुझ पर प्रकट कर दिये।

अभागा होप इस विचार से ही पनपने लगा कि कोई उसके लिए कुछ कर रहा है। मैं जानता था कि वह बच नहीं सकता, दवाएं भी उसे मरने से नहीं रोक सकती लेकिन फिर भी मैंने सोचा कि इसे बचाने के लिए जितनी दौड़-धूप की जाये कम है।

विरेचक कैलोमल लेने के लिए भट्ठी उपयुक्त स्थान नहीं है क्योंकि वहां आदमी हवा और खराब मौसम से नहीं बच सकता; लेकिन इसके सिवा और कोई चारा न था और तेज दवाओं के बिना उसकी जान नहीं बचायी जा सकती थी। खाने वाली और लगाने वाली दोनों ही तरह की दवाएं तेज थी। मैंने उसे सर्दी और वर्षा से बचे रहने की सख्त हिदायत दी। मैंने उसे बता दिया था कि इसी तरीके से वह बच सकता है।

इसके बाद मैं दो बार उससे मिलने गया, लेकिन दोनों बार भागमभाग में ही रहा। उसने प्रतिज्ञा की कि हमारे वापस आने तक दवा बराबर खाता रहेगा। उसने जोर देकर कहा कि वह पहले से अच्छा है।

हम दस तारीख को सैन पेड्रो के लिए रवाना हुए। निस्तब्धता और सामने की हवा के कारण हमारी गति बहुत मन्द रही। चौथे दिन हमें एक कडी दक्षिणी-पूर्वी झंझा के कारण अपने शिखर पाल लपेटने पड़े। यार्ड पर से हमें एक जहाज दिखायी दिया और कोई आधे घन्टे में हम "आयाकुचो" के बराबर में से होते हुए आगे निकल गये। हमने अपने शिखरपाल दुहरे बांध रखे थे और प्रतिवात दिशा में सैन डियागो की ओर बढ़ रहे थे।

चौथे दिन हम सैन डियागो पहुँचे और तीर से लगभग एक लीग दूर पुरानी जगह पर लंगर डाल दिया। बन्दरगाह में कोई और जहाज नहीं था। हमें यहाँ तीन हफ्ते या इससे भी अधिक रुकना था और इस तरह के वाहियात काम करने

थे जैसे ढलवां पहाड़ी पर से सामान ढुलकाना, नोकीले पत्थरों पर चलते हुए सिर पर खालें ढोना और शायद दक्षिणी-पूर्वी झंझा से बचने के लिए लंगर उठा कर समुद्र की ओर जाना।

यहां एकमात्र घर में सिर्फ एक आदमी था और उसे मैं कैलिफोर्नियाई रेंजर के नमूने के तौर पर हमेशा याद रखूंगा। वह फिलाडेल्फिया में दर्जी का काम करता था। शराब और कर्ज के चक्कर में पड़ कर उसने अपना काम बन्द कर दिया और शिकारियों की एक टुकड़ी में शामिल होकर पहले कोलम्बिया नदी के किनारे और फिर वहां से मौंटेरी चला आया और यहा कौड़ी-कौड़ी खर्च कर डालने के बाद वह प्यूब्लो डी लास एंजेलस मे आ बसा और फिर से दर्जी का काम करने लगा।

यहां आकर उसे जुए का चस्का लग गया और अन्त में वह लालच से दूर रह कर नैतिक जीवन बिताने के इरादे से सैन पेड्रो चला आया। यहा घर में कई हफ्तो तक वह उन आर्डरों का काम पूरा करता रहा जो वह अपने साथ लाया था। वह अक्सर अपने सकल्प की बात करता रहता था और अपने विगत जीवन की बातें बिना किसी परदे-परहेज के सुनाता था।

हमें यहा आये कुछ दिन हो चुके थे। एक दिन सुबह के समय वह हंसी-खुशी बढिया कपड़े पहने प्यूब्लो के लिए रवाना हुआ। वह अपने सिले हुए कपड़े देने, उनकी सिलाई वसूल करने और नये आर्डर लेने के इरादे से वहाँ गया था। अगला दिन आया, और एक हफ्ता, और फिर एक पखवाडा बीत गया लेकिन वह न आया। एक दिन हम पार गये थे कि हमें एक लम्बा आदमी दिखायी दिया जा हमारे दोस्त दर्जी से मिलता-जुलता था। वह एक इन्डियन आदिवासी की गाडी के पीछे से बाहर निकल रहा था जो अभी प्यूब्लो से आकर खडी ही हुई थी।

वह घर की ओर चला लेकिन हम उसका पीछा करने लगे। जब उसने देखा कि हम उसे पकडने ही वाले हैं तब वह रुक कर हमसे बात करने लगा। ऐसा दृश्य मैने पहले कभी नही देखा था। वह नगे पाव था, तन पर कच्चे चमड़े की पेटी से बन्धी एक पुरानी पतलून और मैली सूती कमीज थी और एक फटा हुआ इन्डियनों जैसा टोप; उसके पास फूटी कौडी भी नही थी और वह पूरी तरह खोखला हो चुका था। उसने सारी बात कबूल कर ली; वह मान गया कि वह

चारो खाने चित्त हो गया है, और अब एक हफ्ते तक तो उसे भयानक दुर्दिन देखने ही पड़ेंगे और महीनों तक वह एक बेकार चीज की तरह पडा रहेगा।

संपूर्ण कैलिफोर्निया–तट पर जो अमरीकी और अंग्रेज जा पहुँचे हैं उनमें से आधे लोगों का जीवन इसी तरह का है। इसी तरह का एक आदमी रसेल था। जिन दिनों मैं सैन डियागो में था उन दिनों वह खालों के घर का अध्यक्ष था लेकिन बाद में उसे अपने दुराचरण के कारण नौकरी से निकाल दिया गया। उसने अपना धन और गोदाम का लगभग सारा माल तीर पर रहने वाले दोगले लोगों पर खर्च कर दिया और जब उसे नौकरी से निकाल दिया गया तो वह दुर्ग में चला गया और वहाँ निराश "लोफर" की जिन्दगी बिताने लगा। अन्त में एक दिन अपनी किसी बदमाशी के कारण उसे पहाडियो पर बनी जेल में जाना पडा—उसके पीछे-पीछे घुडसवार, कुत्ते और हो-हुल्लड करते इन्डियन आदिवासी चल रहे थे।

एक रात को वह खालो के उस घर में हमारे कमरे में घुस आया। उसका दम फूल रहा था, रंग एकदम पीला पड़ गया था, कपड़े कीचड में सने थे और जगह-जगह फटे हुए थे, बल्कि उसे नग्नप्राय कहना ज्यादा ठीक होगा। उसने बताया कि तीन दिनो से न उसने कुछ खाया था और न सोया था, यह कह कर वह रोटी का एक टुकडा माँगने लगा। उस महान मिस्टर रसेल की यह हालत हो गयी थी जो एक महीना पहले "डान थामस", "कैप्टेन डी ला प्लाया", "मास्ट्रो डी ला कैसा", और न जाने क्या-क्या था। आज वह कनाका लोगों से रोटी और शरण मांग रहा था। कुछ दिन वह हमारे साथ रहा, किन्तु अन्त में उसने पुलिस को आत्म-समर्पण कर दिया और जेल चला गया।

इसी तरह का एक और मजेदार नमूना हमने सैन फ्रैंसिसको में देखा। यह लड़का पहले पहल "कैलिफोर्निया" जहाज पर नौकर होकर आया था। तभी यह नौकरी छोड कर भाग गया और जुआ खेलने व घोडों की चोरी जैसे कामों में मशगूल हो गया। उसका कार्य-क्षेत्र सैन फ्रैंसिसको तक था और जिन दिनों हम बन्दरगाह में थे उन दिनों वह वहां से पास ही एक जगह रह रहा था।

एक दिन सुबह के समय हम नाव में बैठ कर पार गये तो वह हमें घाट पर दिखायी पडा। उसने कैलिफोर्निया फैशन के कपडे—चौडा टोप, उडते हुए रंग वाली मखमली पतलून और कंधों पर लिपटा हुआ कंबल का लबादा—पहन रखे

थे। वह हमसे बोला—मुझे नाव में ले चलो मैं जरा तुम्हारे कप्तान से कुछ गप-सटाका करना चाहता हूँ।

हमें इस बात में पूरा सदेह था कि उसका सत्कार किया जायगा, लेकिन वह समझता था कि वह किसी से भी दोस्ती गाठ सकता है। हम उसे नाव में ले गये, और उसे गली में छोड कर अपने-अपने काम पर जुट गये। हाँ हमारी आँख छतरी पर लगी रही जहाँ कप्तान चहलकदमी कर रहा था।

लड़का बड़े ही इतमीनान से उसके पास गया और टोप उतार कर कप्तान को गुड आफ्टर नून किया। कप्तान टी—ने मुड़ कर उसे सिर से पैर तक देखा और फिर बड़े ही उत्साहरहित स्वर में कहा, "हल्लो! आप क्या चीज हैं?" यह कह-कर वह फिर चहलकदमी करने लगा। जाहिर था कि कप्तान उसे मुह नहीं लगाना चाहता था, और जहाज के विभिन्न भागो पर काम करते हुए मल्लाहों तक यह मजाक आँखो ही आंखो में पहुच गया।

कप्तान की ओर से निराश होकर उसने मालिम की ओर मुंह किया जो अग-वाड में किसी काम का पर्यवेक्षण कर रहा था। उसने मालिम से गप-सटाका शुरू किया, लेकिन उसकी दाल गली नही। मालिम देख चुका था कि कप्तान ने उसका किस प्रकार स्वागत किया था और वह परित्यक्त आदमी को मुंह नही लगाना चाहता था। दूसरा मालिम ऊपर था और तीसरा मालिम और मैं क्वार्टर बोट पर रोगन कर रहे थे, इसलिए वह हमारे पास ही आया। लेकिन हमने एक-दूसरे को देखा और अफसर काम में इस तरह मशगूल हो गया कि उससे एक लफ्ज भी नही बोला। हमसे निराश होकर वह एक-एक करके दूसरे मल्लाहों के पास गया लेकिन मजाक उसके आगे-आगे चल रहा था और उसने सभी लोगो को काम में लगा हुआ और चुप-चुप पाया।

कुछ मिनट बाद जब हमारी नजर पटरी की ओर उठी तो हमने उसे रसोई के दरवाजे पर रसोइए से बातें करते पाया। यह नीचे गिरने की हद थी। वह सबसे बड़े आदमी से मिलने के स्वप्न लेकर आया था और अब अश्वेत रसोइए से मिल रहा था। रात को सपर के समय उसे आशा थी कि शायद अफसरों के साथ उसे भी नीचे बुलाया, जाय इसलिए वह कुछ देर कटि में खडा रहा लेकिन वे एक-एक करके नीचे चले गये और उसे पूछा तक नही। अब उसने सोचा कि शायद बढ़ई और सिलमाकुर के साथ उसे बुलाया जाय और, जब तक अन्तिम मल्लाह उसे

बिना बुलाये नहीं चला गया, वह गलियारे में चहलकदमी करता रहा।

हमने सोचा अब इसका काफी मजा ले लिया है इसलिए उस पर तरस खा कर हमने उसे अगवाड में बुला कर चाय और गोश्त में हिस्सा दिया। वह भूखा था और अंधेरा घना होता जा रहा था इसलिए उसने सोचा अब चाल चलना बेकार है। यह सोचकर वह अगवाड में आ गया और अपनी झूठी शान उतार कर आम मल्लाह की तरह हंसी-मजाक में हिस्सा लेने लगा, क्योंकि मल्लाहों में हंसी-मजाक खेलना परम आवश्यक है।

उसने हमें इस प्रदेश में किये गये अपने कारनामे—बदमाशी के और इसी तरह के—सुनाये, और वाकई वह एक पुरमजाक आदमी था। वह एक तेज-तर्रार और सिद्धातहीन आदमी था और इस प्रदेश में होने वाली ज्यादातर बदमाशियों की जड वही था। उसने हमें इस प्रदेश के तौर-तरीकों के बारे में बहुत-सी मजेदार बातें बतायी।

शनिवार, तेरह फरवरी। आधी रात के समय हमें एक प्रचंड उत्तरी–पूर्वी झन्झा से बचने के लिए लंगर उठा कर जहाज को समुद्र की ओर ले जाने का आदेश दिया गया। सैन पेड्रो की यह वाहियात खाडी दक्षिणी पश्चिमी झन्झा के अलावा अन्य सभी झन्झाओं की दृष्टि से खतरनाक है, और दक्षिणी–पश्चिमी झंझा तो पचासों साल में एकाध बार ही आती है। झंझा से बचने के लिए हमने कैटेलिना द्वीप की शरण ली जहाँ तीन दिन रुक कर हम फिर लंगरगाह में आ गये।

मंगलवार, तेईस फरवरी। आज तीसरे पहर हमें तीर से एक संकेत मिला। नाव में बैठ कर पार दूर से हमने देखा कि हमारे एजेंट का क्लर्क खडा है। वह प्यूब्लो गया था। वह घाट के पास खडा हमारा इन्तजार कर रहा था और उसकी बगल में एक पैकेट था जिस पर खाकी कागज चढ़ा हुआ था और जिसे बडी सावधानी से बांधा गया था।

हमारे किनारे पर पहुँचते ही उसने बताया कि सैंटा बारबरा से एक शुभ समाचार प्राप्त हुआ है। हममें से एक मल्लाह बोल उठा—"क्या समाचार है? क्या उस बदमाश एजेन्ट का बेडा गर्क हो गया? क्या उसके प्राण–पखेरु उड गये?"

"नहीं इससे भी बडी खुशखबरी है। "कैलिफोर्निया" आ पहुंचा है। खत, अखबार, समाचार और शायद—दोस्तों! चलो जहाज पर!"

हम विस्मित हो गये, और फिर शरीफ लोगों की तरह उसे नाव में बिठा कर जहाज की ओर चले क्योंकि उस पैकेट को कप्तान के अलावा कोई नही खोल सकता था। जब हम जहाज पर पहुँचे तो क्लर्क ने वह पैकेट हाथ में लिया और तफरेल पर झुके मालिम को पुकार कर कहा "कैलिफोर्निया आ गया है और बोस्टन से खबरें आयी हैं।"

"हुर्रा!" मालिम ने कहा और जहाज के सभी लोगो को सुनाने की गरज से चिल्ला कर कहा, "कैलिफोर्निया आ गया है और बोस्टन से खबरें आयी हैं!"

पल भर में सारे जहाज में खलबली सी मच गयी। जो आदमी इन हालात में रहा नही है वह इसे समझ ही नही सकता। एक क्षण के लिए अनुशासन में ढील पड गयी।

"क्या बात है मि० ब्राउन?" रसोइए ने रसोई से अपना सिर बाहर निकालते हुए पूछा—"क्या कैलिफोर्निया आ गया है?"

"हा, हाँ, अंधेरे के फरिश्ते! और तेरे लिए भी प्रेमनगर से एक पाती आयी है।"

पैकिट नीचे केबिन में भेज दिया गया और सब लोग नतीजे की राह देखने लगे। चूंकि नीचे से कोई जवाब नही आया इसलिए अब अफसरों को लगा कि उन्होने कुछ बचकाना-सी हरकत की है, और उन्होने मल्लाहों को अपने-अपने काम पर जाने का आदेश दिया। अब फिर वही कठोर अनुशासन कायम हो गया जो डेक पर काम करते हुए मल्लाहों को एक-दूसरे से बातचीत नही करने देता। लिहाजा जब स्टीवार्ड मल्लाहों के पत्र लेकर उनके पास आया तो हर आदमी ने अपने पत्र लिये, नीचे जाकर उन्हें अपनी पेटी में रख दिया और फिर फौरन ऊपर आ गया। जब तक हमने रात के लिए डेको को साफ नही कर दिया तब तक एक भी पत्र नही पढा गया।

मल्लाहो की, बल्कि कहना चाहिए जहाज के जीवन की, यह विशेषता है कि हर आदमी मर्दानगी के नशे में रहता है। अक्सर यह मर्दानगी भावना-शून्यता, और यहा तक कि क्रूरता भी, लगती है। इसी के कारण अगर किसी आदमी की गरदन टूटते-टूटते बच गयी है तो इस बात का जहाज पर मजाक उडाया जाता हैं, खरोंच या घाव की चिन्ता करना मर्दानगी की तौहीन मानी जाती है, दया और चिन्ता का भाव दर्शाना बहनापा दिखाना माना जाता है और उस मर्द की शान

के खिलाफ समझा जाता है जो ऐसी खतरनाक जिन्दगी झेलने के लिए निकल पड़ा है। इसी के कारण जहाज पर बीमारों की ठीक से तीमारदारी नही की जाती और किनारे पर आकर नाविक कैसा ही व्यवहार करें, यह सच है कि जहाज पर बीमार आदमी के प्रति न तो किसी की सहानुभूति होती है और न कोई उसकी चिन्ता ही करता है।

जहाज पर आदमी के लिए कोई भी चीज विशिष्ट या पवित्र नही होती, क्योकि वहा उस आदमी का उल्लेख गर्व से किया जाता है जिसमें किसी प्रकार की उदात्ततर भावनाए न हो। हयादार आदमी के लिए जहाज पर एक घन्टा जिन्दा रहना मुश्किल है। अगर उसकी खाल बैल की तरह मोटी नही है तो लोग उसे कच्चा ही खा जायेंगे। लिहाजा एक क्षण के लिए तो हमें घर-बार और बन्धु-बाधवों की याद आयी और तब समुद्री जीवन का वही औपचारिक क्रम प्रारम्भ हो गया। जो लोग किसी समाचार-विशेष की उत्कंठा से प्रतीक्षा कर रहे थे उनका मजाक उडाया गया और लोगो की सर्वथा निजी और अंतरग बातों को फूहड मजाको और निर्मम व्यंगो की बौछार के लिए सर्वजन सुलभ बना दिया गया था, और कोई भी किसी बात का बुरा नही मान सकता था।

खत पढ़ने से पहले सपर लेना भी जरूरी था। अंत में जब लोगो ने अपने-अपने खत निकाले तो सब लोग चिट्ठी वाले आदमी के गिर्द जमा हो गये और उससे खत को जोर से पढने और न छिपाने का इसरार करने लगे। अगर कोई आदमी अपने-आप पढ़ता तो दूसरे कहते "बेईमानी मत करो; हमसे छिपाओ मत।" मैंने अपना खत निकाला और खिलमाकुर की बर्थ पर चला गया जहां मैं बिना किसी हस्तक्षेप के उसे पढ सकता था। इस पर अगस्त की तारीख पडी हुई थी, यानी यह मेरे घर से चलने के एक साल बाद लिखा गया था। घर पर सब सकुशल थे और कोई बडा परिवर्तन नही हुआ था।

इस तरह एक साल के बारे में तो मैं निश्चिंत हुआ। लेकिन खत भी छः महीने पहले लिखा गया था, और अगला एक साल कैसे गुजरेगा—इसके बारे में क्या कहा जा सकता है—? मैंने सोचा। जो लोग घर से दूर होते हैं वे सोचते हैं घर पर जरूर कोई बडा परिवर्तन हुआ होगा, जबकि घर पर रहने वालो को अपना जीवन एकरस और घटनाशून्य लगता है।

घर के खयालो में खोया होने के बावजूद मैं स्टीग्रेरेज के दृश्य में रस लेने से

अपने को न रोक पाया। बढई की शादी बोस्टन छोडने के कुछ ही पहले हुई थी और वह यात्रा में बराबर अपनी बीबी की बातें करता रहता था, और जैसा कि जहाज पर शादीशुदा लोगों के साथ होता है उसे तरह-तरह की बातें चुपचाप सुननी पडती थी; लेकिन चूंकि उसे पहले ही जहाज से अपनी बीबी का पत्र मिलने का पूरा निश्चय था इसलिए वह निराश नही हुआ था।

"कॅलिफोर्निया" आया, पॅकेट जहाज पर लाया गया, सबसे अधिक उत्साह बढई में ही था, लेकिन जब स्टीवार्ड पत्र लेकर आया तब उसके नाम का कोई पत्र नहीं था। कप्तान ने एक बार फिर से देखा लेकिन कही कोई गलती नही हुई थी, गरीब "चिप्स" से सपर नही खाया गया। उसका कलेजा मुंह को आ रहा था। सिलमाकूर ने उसे तसल्ली देते हुए कहा कि तू तो बडा मूर्ख है जो किसी औरत की बेटी के लिए जी दिये डाल रहा है। मैंने तो तुझे पहले ही जता दिया था कि अब तेरी बीबी न कभी तुझे मिलेगी और न पत्र ही लिखेगी।

"आह", चिप्स ने कहा, "तुम क्या जानो बीबी किसे कहते हैं, और—"

"क्या ? मैं नही जानता ?" सिलमाकुर ने कहा, और इसके बाद उसने सैंकडों बार सुनायी कहानी फिर से सुनानी शुरू कर दी—किस तरह चार वर्षो तक केप हार्न के आस-पास सैर-तफरीह करके वह "कस्टेलेशन" नामक बजरे से न्यूयार्क के तट पर उतरा—उस समय वेतन के रूप में मिले पाँच सौ से अधिक डालर उसके पास थे—अब उसने शादी की और एक चौमजिला इमारत में दो कमरे लेकर रहने लगा—उसने कमरों को फर्नीचर से सुसज्जित किया (वह फर्नीचर का भी पूरा हिसाब बताया करता था जिसमें एक दर्जन कुर्सियाँ भी शामिल थी—फर्नीचर का यह ब्यौरा देते समय वह प्रायः अतिशयोक्ति से काम लेता था)—इसके बाद वह अपनी बीबी को आधा वेतन देने की मूर्खता करके फिर से अपने काम पर चला गया—लौट कर देखा तो बीबी कभी की "फुर्र" हो गयी थी और उस पर लोगों का कर्ज छोड गयी थी—उसे चुकाने में फर्नीचर गया, उसका आधा वेतन गया, बीवर की खाल का बढिया टोप और लिनन की कमीजें—सभी कुछ चला गया। उसके बाद उसने आज तक न तो अपनी बीबी को देखा, न उसके बारे में कोई खबर ही मिली और न उसे इसकी इच्छा ही है।

इसके बाद नारी-निन्दा का दौर शुरू हुआ—

"जाने भी दो चिप्स ! मर्द की तरह हंस कर इसे झेलो और कुछ गरमागरम

माल उडाओ। पेटीकोट पहनने वाली औरत के हाथों उल्लू मत बनो। जहां तक तुम्हारी बीबी की बात है वह तुम्हें कभी नहीं मिलेगी, वह तो तुम्हारे केप काड पार करने के पहले ही चम्पत हो चुकी होगी। तुमने एक मूर्ख आदमी की तरह अपना पैसा बरबाद किया है लेकिन खैर मेरी तरह हर मर्द को ठोकर खाकर ही अक्ल आती है। इसलिए अक्लमंदी इसी में है कि तुम उसे भूल जाओ और खुश रहने की कोशिश करो।"

सिलमाकुर इससे सुन्दर शब्दों में सांत्वना नहीं दे सकता था, लेकिन ऐसा लगा कि बढ़ई को इससे दिलासा मिली नहीं, क्योंकि कई दिन तक वह मल्लाहों की हंसी-मजाक और उससे भी ज्यादा उनके सलाह-मशविरे और दम दिलासा से दुखी और बोर होता रहा। मल्लाहों का सांत्वना देने का भी ढंग वही था जो सिलमा-कुर का था।

वृहस्पतिवार, पच्चीस फरवरी। आज हम सैंटा बारबरा के लिए चल दिये जहाँ हम रविवार अट्ठाईस फरवरी को पहुँचे। हम "कैलिफोर्निया" से नहीं मिल सके क्योंकि वह तीन दिन पहले अपना नौभार दर्ज कराने और लाइसेंस लेने के लिए मोंटेरी को रवाना हो चुका था जहां से उसे सेन फ्रैंसिसको जाना था।

कप्तान आर्थर बोस्टन के समाचार पत्रों की फाइल कप्तान टी—के लिए छोड़ गया था। जब केबिन में उनका उपयोग हो चुका तो मैंने अपने दोस्त तीसरे मालिम से उसे प्राप्त कर लिया।

एक फाइल बोस्टन से निकलने वाले "ट्रांसक्रिप्ट" की थी जिसमें अगस्त, १८३५ के महीने भर के अखबार थे। दूसरी फाइलों में लगभग एक दर्जन "डेली एडवर्टाइजर्स" और "करियर्ज" थे जो विभिन्न तिथियों के थे।

भला एक अनजबी प्रदेश में घर से आये अखबार से बढ कर और क्या चीज हो सकती है? एक नजर से देखा जाय तो पत्र भी समाचार पत्र की तुलना नहीं कर सकता। समाचारपत्र तो आपको घटनास्थल पर ले जाकर खडा ही कर देता है। यह आपको दिव्य दृष्टि दे देता है। जब आप विज्ञापन में गालियों और चीजों के नाम पढते हैं तो ऐसा लगता है जैसे वे आपके सामने ही हों, और "गुमशुदा लडके की तलाश" का स्तंभ पढते समय आपके कान में "बूढ़े विल्सन" की परि-चित घन्टी टुनटुनाने लगती है और उसके शब्द गूंज उठते हैं—लडका भटक गया है, चुरा लिया गया है या बहकाया गया है।"

अखबारों में था कि कैंब्रिज फिर से खुल गया है। उनमें मेरी कक्षा की सारी गतिविधियों की जानकारी दी गयी थी। मेरे सभी परिचित नामों की (एबढ से शुरू होकर डब्ल्यू० तक) दी गयी थी जिसे पढ़ते पढ़ते मेरे मन में उनके चेहरे और कालिज जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रकाशित हुए उनके चरित्र उभर आये।

तब मैं कल्पना करने लगा कि मंच पर से भाषण आदि देते समय उनका लहजा और संकेत किस प्रकार के रहे होंगे और किसने अपने विषय को किस प्रकार प्रस्तुत किया होगा,...सुन्दर, दिखावटी और पल्लवग्राही पांडित्य वाला है;...में दृढ़ निश्चय, स्पष्ट विचार और आत्मनियन्त्रण है;...विनम्र, प्रखर संवेदनाओं वाला और उपेक्षित है; बी...डिबेटिंग क्लब की शोभा है, वाचाल, गप्पी और डेमोक्रेटिक है; और इसी तरह दूसरे लोगो के बारे में मैं सोचता रहा।

तब मैं अपनी कल्पना की आंखों से उन्हें गरिमाशाली, सामंत से लगने वाले राष्ट्रपति के हाथों से अपना डिप्लोमा लेकर मंच से उतरते देखने लगा। मुझे याद आया उसी दिन उनका सहपाठी मैं कैलिफोर्निया के तट पर सिर पर खालें ढो रहा था।

एक हफ्ते तक मैंने अपना पहरा बराबर नीचे रखवाया और इन अखबारो पर जुटा रहा। अन्त में मुझे यकीन हो गया कि इनमें एक भी खबर ऐसी नही थी जो मैंने पढ न ली हो; अब मुझे इन फाइलो को अपने पास रखने में शर्म आने लगी।

शनिवार, पाच मार्च। यह दिन हमारे लिए विशेष महत्वपूर्ण था क्योंकि इस दिन हमें पहली बार पक्के तौर पर पता चला कि हमारी यात्रा वाकई पूरी होने वाली है। कप्तान ने हमें रवाना होने की तैयारी करने का आदेश दिया और देखा कि हमारे सैन पेड्रो पहुँचने में समीर हमारी सहायता करेगा। हमें प्रतिवात दिशा में नहीं जाना था, इतना तय था और जल्दी ही यह समाचार पूरे जहाज में फैल गया। जब हम नाव लेकर कप्तान को लेने किनारे पर गये तो हमने देखा कि उसने किनारे पर के लोगों से हाथ मिलाया और उन्हे बताया कि अब उसका इरादा सैंटा बारबरा आने का नही है।

अब सारी बात साफ हो गयी थी और नाव में मौजूद सभी लोगों के दिलो में इससे खुशी की एक लहर दौड गयी। हम खुशी-खुशी जहाज की ओर चल पडे। चलते समय हम मन ही मन कह रहे थे (कम से कम मैं तो कह ही रहा था) "अलविदा, सैंटा बारबरा! तुझ में हम अंतिम बार नाव खे रहे हैं! अब हम तेरी

भग्नोर्मियों में गोते नही खायेंगे और न तेरी अभिशप्त दक्षिणी-पूर्वी झन्झाओ से जान बचाने की चिन्ता ही हमें सतायेगी !"

जल्दी ही यह खबर जहाज-भर में फैल गयी और इससे रवाना होने की तैयारियो में एक नयी जान-सी पड गयी । हर मल्लाह मिशन पर, कस्बे पर और किनारे की भग्नोर्मियो पर अंतिम बार दृष्टि-निपात कर रहा था और कसम खा रहा था कि चाहे कितना ही पैसा क्यो न मिले अब दुबारा जहाज पर नौकरी करके वह यहाँ नही आयेगा । और जब सब लोग लगर उठाने लगे तो पहली बार "विदा की घडी आ गयी है", वाला सहगान गाया गया और सभी ने उसमें खुल कर भाग लिया ।

ऐसा लगता था जैसे हम सीधे घर के लिए रवाना हो गये हो यद्यपि अभी हमें तीन महीने तट पर और रहना था ।

यहा हमें नौजवान अग्रेज मल्लाह ज्यार्ज मार्श से भी विदा लेनी पडी जिसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ और जिसका जहाज द्वीपसमूह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था । वह हमें छोडकर "आयाकुचो" के दूसरे मालिम के पद पर काम करने जा रहा था । "आयाकुचो" बन्दरगाह में ही खडा था । वह इस पद के लिए सुयोग्य था और यह निश्चित था कि उसकी शिक्षा उसे जहाज पर उच्चतम पद दिलाने में समर्थ थी । उससे विदा होने पर मुझे दु ख हुआ । पता नही उसमें ऐसा क्या था कि उसके बारे में मेरी उत्सुकता बढ़ गयी थी । मुझे पक्का यकीन था कि वह सद्वशजन्मा है और बचपन मे उसका लालन-पालन सुन्दर ढङ्ग से हुआ है । उसके मल्लाह के रूप के अन्दर उसका आभिजात्य छिपा हुआ था और एक अच्छे परिवार के नवयुवक के उपयुक्त गरिमा भी उसमें थी लेकिन गर्व उसे छू भी नहीं गया था ।

हमारे रवाना होने के कुछ घन्टे पहले ही उसे इस पद पर आमन्त्रित किया गया था और यद्यपि इसे स्वीकार कर लेने का अर्थ अमरीका वापस चलने से विमुख होना था तथापि एक साधारण मल्लाह की कुत्ते-जैसी जिन्दगी छोड़ कर अफसर की जिन्दगी बिताने का आकर्षण इतना बड़ा था कि वह इसे अस्वीकार न कर सका, और मैं समझता हूँ यह ठीक ही था । हम उसे नाव में बैठा कर "आयाकुचो" पर छोड़ने गये, और नाव छोडने से पहले उसने मेरे अलावा अन्य सभी मल्लाहों को बख्शीश दी । मुझसे उसने हाथ मिलाया और सिर हिला कर मानों कहा हो,

ज्यों-ज्यों मैं स्थानों को एक-एक करके छोडता चल रहा था मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी गुलामी की जन्जीरें एक-एक करके टूट रही हो। स्थल समीर की प्राप्ति के लिए हम किनारे के पास ही चल रहे थे। उसी रात हमने सैन जुआन कैंपेस्ट्रैनो को पार किया। उज्वल चांदनी में हमें वह पहाडी साफ दिखायी दे रही थी जिस पर मैं कुछ अटकी हुई खालो को छुडाने के लिए उतरा था। अंतिम बार मैंने उस स्थान को भी नजर भर कर देख लिया। अगले दिन सुबह हम सैन सियागो पहुँच गये।

चढ़ते ज्वार मे हम तेजी से अंदर अपने खालो के मकान के सामने पहुँच गये और हमने काफी दिन तक रुकने की सारी तैयारी कर ली। यह हमारा अंतिम बन्दरगाह था। यहाँ हमें जहाज का सारा सामान निकालना था, जहाज की सफाई करनी थी, उसमें धुंआ करना था, इसके बाद खालें, लकड़ी और पानी भर कर बोस्टन के लिए चल देना था।

यह सब होने में जितने दिन लगते उतने दिन हमें एक जगह लंगर डाले खडा रहना था। यह बन्दरगाह सुरक्षित था और यहां दक्षिणी पूर्वी झंझाओं का डर नही था। अतः धारा में एक अच्छे व स्वच्छ तट के सामने, अपने खाल के मकान से कोई दो केबिल दूर लंगर डालने का स्थान चुन कर हमने जहाज को बाँध दिया। इसके बाद उसके सब पाल उतार दिये, टापगैलेंट याडं और दुपेंचा पाल बूम नीचे कर दिये और टापगैलेंट मस्तूल भी नीचे कर दिये।

इसके बाद नावो पर लाद कर सारे पाल, फालतू डन्डे, भन्डार का सामान, रस्सियां वगैरह और रोजमर्रा काम न आने वाला सारा सामान किनारे पर मकान में पहुँचा दिया गया। इसके बाद खालों और सीगो की बारी आयी और नीरम के अलावा सारी चीजें पार भेज दी गयी। नीरम अगले दिन खाली होना था।

रात को काम से निबट कर हम अगवाड में बैठे धूम्रपान और गप-शप में मल्लाहों की जिंदगी का मजा लूट रहे थे। हमने उस स्थिति में पहुंचने के लिए एक-दूसरे को बधाई दी जिसमें पहुँचने की कामना सैन डियागो पहुँच कर हम हर बार किया करते थे। हम अक्सर कहते थे "टापगैलेंट मस्तूलों को नीचा करके और पालों को बांध कर हम यहां अंतिम बार आये होते!" और अब हमारी यह मनोकामना पूरी हो चुकी थी। अभी छः सप्ताहों या दो महीनों का कठोरतम श्रम हमें और करना था और तब..."कैलिफोर्निया को अलविदा" कह देना था।

अध्याय-२९

हमने सोचा शायद सवेरे ही सवेरे हमें काम पर लगा दिया जाय इसलिए रात को हम जल्दी ही सो गये। असल में हुआ भी यही; अभी तारे पूरी तरह फीके पडे भी न थे कि "सब लोग काम पर जुटें ?" की आवाज गूंज उठी और हम नीरम खाली करने के काम पर जुट गये, कानूनन हम नीरम को समुद्र में नही फेंक सकते थे, लिहाजा दीर्घनौका में टूटे-फूटे तख्ते डाल कर उसे जहाज की गली के बराबर में लगा दिया गया, लेकिन सचाई यह है कि एक टब नीरम नौका में डाला जाता था तो बीस टब समुद्र में।

यह हरकत करीब-करीब हर जहाज ही करता है क्योंकि नीरम फेंकने से चैनल का तो कुछ बिगडता नही और लगभग एक सप्ताह का श्रम बच जाता है जिसे नावों को लादने, पाइन्ट तक उन्हें खेने या खाली करने के काम में लगाया जा सकता है।

जब दुर्ग से कोई कर्मचारी जहाज पर आ जाता था तब तो नाव लगा दी जाती थी और नीरम उसमें डाला जाता था लेकिन मौका मिलते ही नाव को पीछे बांध दिया जाता था और नीरम समुद्र में फेंकना शुरू कर दिया जाता था। यह चालबाजी उन कुछ छोटी-मोटी बातों में एक है जो विदेशो के कुछ साधारण से बन्दरगाहों पर प्रायः हर एक जहाज को करनी पडती है। दरअसल इससे कही बडी बदमाशियां आम तौर पर प्रायः सभी जहाज करते हैं। इन छोटी-मोटी बातो पर तो कोई गौर तक नही किया जाता।

सौभाग्य से इसकी जिम्मेदारी मल्लाह पर नही है, क्योंकि यह माना जाता है कि जहाज पर नौकरी करते समय वह कोई भी काम अपनी मर्जी से नही कर सकता। लेकिन चूंकि उसे हर समय इस तरह के कामों में लगे रहना पडता है इसलिए वह दूसरो के अधिकारों की परवाह करना बन्द कर देता है।

शुक्रवार को सारे दिन, और शनिवार को कुछ देर, हम इसी काम में लगे रहे। अन्त में जहाज में सिर्फ उतना ही नीरम रह गया जितना वापसी के समय नौभार के नीचे रखना जरूरी समझा गया। चूंकि अगले दिन रविवार था, और जहाज में धुंआ करने का अच्छा मौका था, इसलिए हमने केबिन और अगवाड़ का सारा सामान बाहर निकाल लिया; इसके बाद फलके की तली में नीरम के ऊपर लकड़ी के कोयले, भोजपत्र की छाल, गन्धक और दूसरी चीजों की धूनी

जलायी गयी और फन्कों और दूसरी खुली जगहों को बन्द कर दिया गया, साथ ही खिडकियों, मोखों और सीढियों की दराजों वगैरह को भी ल्हेस कर बंद कर दिया गया। जहां से भी धुंआ निकलता दीखना था वहीं ओकम लगा कर ऊपर से ल्हेस दिया जाता था ताकि सारा धुंआ जहाज के अन्दर ही रहे।

कप्तान और अफसर छतरी के आगे के सायबान में सोये और हम लोग अगवाड के एक बाजू पर से एक पुराना दुपेंचा पाल तान कर उसके साये मे सोये।

अगले दिन, इस डर से कि कही कुछ हो न जाय, सब लोगों को हुक्म दिया गया कि कोई जहाज छोडकर कही न जाय और चूंकि डेकों पर सामान फैला पडा था इसलिए हम उन्हें धो नही सकने थे। इस तरह हमारे पास काम के नाम पर कुछ भी न था और हमें सारा दिन बिताना था।

दुर्भाग्य से हमारी किताबें ऐसी जगह थी कि उन्हे निकालना असंभव था और हम सोच ही रहे थे कि किया क्या जाय कि एक आदमी को याद आया कि उसकी एक किताब रसोई में है। वह उसकी खोज में गया और जब लौटा तो हमने देखा कि उसके हाथ में "वुडस्टाक" है। हमें मानों मुंह मांगी मुराद मिली। लेकिन एक किताब को सब लोग एक साथ नहीं पढ सकते थे इसलिए यह तय किया गया कि, उस मंडली में विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित होने के नाते, मैं उसे जोर से पढूं और दूसरे सुनें। छः आठ मल्लाह मेरे चारो ओर बैठ गये और वास्तव में इतने दत्तचित श्रोता चिराग लेकर ढूंढने से भी नहीं मिल सकते।

कुछ लोग इस "विद्वन्मडली" पर हंस दिये और अगवाड के दूसरी ओर गप-सडाका करने चले गये, लेकिन उस दिन का विजेता मैं ही सिद्ध हुआ क्योकि श्रेष्ठ मल्लाह मेरे ही श्रोता थे। पढते समय मैंने अनेक चिन्तनप्रधान और राजनीतिक अंश छोड दिये और श्रोताओं ने आख्यानों का, खास तौर पर प्यूरिटनों का और राउंड हेड सिपाहियो के सरमनों और भाषणो का, भरपूर रस लिया। चार्ल्स की बहादुरी, डा० रैंडक्लिफ के षड्यन्त्रो, "ट्रस्टी टापकिनों" की चातुरी—इन चीजों, और असल में किताब के हर अन्श—ने उन्हे जकड़ सा लिया। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पढ़ते समय में जिन चीजों को अपने श्रोताओं की क्षमता के परे समझ कर छोड गया था उनमें से अनेक बातों को वह बखूबी समझते थे।

सांझ ढले तक मैं बराबर पढ़ता रहा। सपर खत्म होते ही वे रसोई से रोशनी

ले आये और कम दिलचस्प प्रसंगों के पन्ने पलटता हुआ आठ बजे से पहले ही मैं उन्हें एडवर्ड की शादी और चार्ल्स द्वितीय की पुन.प्रतिष्ठा तक ले आया।

अगले दिन सुबह हमने जहाज को खोला। धुए से घुट कर कुछ चूहे मर गये थे; और खटमल, तिलचिट्टे, मक्खिया व दूसरे जो भी कीड़े जहाज में रहे होगे वे दुनिया से किनारा कर चुके थे।

अब जहाज तैयार हो चुका था। हमने फलके की पैंदी को सूखे झाड-झंखाड के निभार से पाट दिया और एकसार करके अपना नौभार जहाज में भरने की तैयारी करने लगे। "कैलिफोर्निया" जहाज के तट से विदा होने के समय (इस बात को दो साल से ज्यादा समय बीत चुका था) से अब तक कोई चालीस हजार खालें जमा की जा चुकी थी। उनको सुखा कर खालो के मकान में हिफाजत से रखवा दिया गया था और अब हमारा जहाज उन्हे बोस्टन पहुँचाने वाला था।

अब नौभार जहाज में भरने का काम शुरू हुआ। इसमें हमें छः सप्ताह तक अलस सवेरे से तारे निकलने तक कठिन परिश्रम करना पडा। हां इतवार को काम नही करना पडता था और खाना खाते समय काम से मुक्ति मिल जाती थी। काम को तेजी से निबटाने के लिए काम का बटवारा कर लिया गया था।

दो आदमियो का काम था खालो के ढेर पर चढ कर खालें नीचे फेंकना, दूसरे दो आदमी उन्हें वहाँ से उठा कर जमीन से कुछेक फुट ऊंचे क्षैतिज बास पर डालते थे जहा गेहूँ गहाने की मूंगरी जैसे औजारो से उनकी पिटाई होती थी।

पिटाई के बाद दो और आदमी खालों को उठा कर तख्तो के एक चबूतरे पर रख आते थे; और अपनी पतलून चढ़ाये दस-बारह आदमी उन्हे चबूतरे से अपने सिर पर रख कर पानी में खड़ी नाव पर रख आते थे।

खालों को बांस पर डालना सबसे मुश्किल काम था और इसमे जो हस्तलाघव अपेक्षित था वह अनुभव से ही आता है। चूंकि मैं इमका विशेषज्ञ समझा जाता था इसलिए यह काम मुझे ही सौंपा गया। मैंने छ:-आठ दिन यह काम किया और इस समय में कोई आठ-दस हजार खालें बाँस पर डाली होंगी। अन्त में मेरी कलाइया जवाब दे गयी और मुझे इस काम से हटा कर खालो को चबूतरे से नाव तक पहुँचाने वाले दल में शामिल कर लिया गया। अन्त तक मैं इसी दल में रहा।

खालें गीली न हो जायं—इस डर से हम उन्हे सिर पर ढो रहे थे। हममें

से हर मल्लाह ने अपने-अपने होप में बकरी की खाल का टुकड़ा रख लिया था और बालों के ऊपर ऊन रख ली थी, वर्ना हम गन्जे हो जाते और वे कठोर खालें हमारी चांद का कचूमर निकाल देती।

सब मिलाकर हमारा काम सबसे आसान था; क्योंकि यद्यपि अलस सबेरे और साँझ ढले पानी ठन्डा होने लगा था और उसमें बराबर पाव देने से सर्दी होने का डर था फिर भी हमें खालों को पीटने में उडती हुई धूल और गन्दगी से तो नजात मिल गयी थी और चूंकि हम सभी जवान और तगड़े थे इसलिए सर्दी की परवाह नहीं करते थे।

जो मल्लाह बूढे थे और जिनका पानी में रहना खतरनाक साबित हो सकता था वे मालिम के साथ जहाज पर ही रहे। उनका काम था नावों पर आयी खालो को जहाज में रखना।

काफी देर तक हम इसी तरह काम करते रहे। अन्त में निचला फलका कड़ियों से चार फुट नीचे तक भर गया। अब यह काम रोक दिया गया और सब लोगों को स्टीविंग के लिए बुला लिया गया। चूंकि यह एक अजीब सा काम है इसलिए इसे कुछ विस्तार से समझाना पड़ेगा।

जैसा कि मैं कह चुका हूँ खालें रखने के पहले सबर बिल्ली के ठीक ऊपर तक नीरम को एकसार कर दिया जाता है और उसके ऊपर खुला निभार बिखेर दिया जाता है जिसके ऊपर खालें रख दी जाती हैं। खालें रखने में अत्यधिक सावधानी बरती जाती है ताकि जहाज में अधिक से अधिक खालें आ सकें।

यह कोई मामूली कारीगरी नहीं हैं, और कैलिफोर्निया में उस आदमी को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है जो इस काम में निपुण हो। खालों को किस करीने से लगाया जाय—इस बात को लेकर इस बात के विशेषज्ञों में भयानक विवाद छिड़ जाता था, और मैं इसकी बाबत सुन चुका था। जब विवाद छिड़ जाता था तो समझौते की गुन्जाइश ही न रह जाती थी।

हमने खालों को लगाने में अलग—अलग समय पर सभी तरीके अपनाये। इस बात को लेकर अगवाड में खासी रस्साकशी रही। कुछ लोग "ओल्ड बिल" का समर्थन कर रहे थे जब कि दूसरे उसका मजाक उड़ा रहे थे और "आयाकुचो" के "इंग्लिश बाब" का पक्ष ले रहे थे जो आठ साल से कैलिफोर्निया प्रदेश में था

और अपने बताये तरीके की सफलता-असफलता पर अपनी जान और जिस्म की बाजी लगाने को तैयार था।

अन्त में समझौते का उपाय निकाला गया और बीच का रास्ता अपनाने का निश्चय किया गया। यह रास्ता ठीक रहा। दोनों प्रतिद्वन्द्वी इस बात पर राजी थे कि यह तरीका उनके अपने तरीके से तो अच्छा नही था लेकिन दूसरे के तरीके से कही अच्छा था।

इस तरीके से हमने जहाज को भर लिया। जब खालों और जहाज की कड़ियों के बीच कोई चार फुट की जगह रह गयी तब स्टीविंग का काम शुरू हुआ। यह ऐसा तरीका है जिससे उतनी जगह में सौ खालें आ जाती हैं जितनी में हाथ से एक खाल भी न आ सके, और इससे खालें दब भी अधिक जाती हैं।

हर रोज सुबह के समय हम पार जाते थे और वहा से इतनी ही खालें लाते थे जिनका स्टीविंग हम दिन भर में कर सकें। नाश्ते के बाद हम नीचे फलके मे चले जाते थे और रात तक वही स्टीविंग में काम करते रहते थे। इस काम में हम सभी को लगना पडता था। इसमें लगभग २५ से ५० खालों की एक किताब सी बनाई जाती है और उसके बीच में मजबूत लकडी का धारदार डन्डा (जिसे स्टीव कहते हैं) लगाकर रस्सियों के सहारे इन किताबों को वांछित स्थान पर पहुँचा दिया जाता है। यह एक लम्बी और पेचीदी प्रक्रिया है लेकिन इसका लाभ यह है कि इस तरीके से उतनी जगह में १०० से लेकर १५० तक खालें आ जाती है जिसमें हाथ से ठूंसने से एक खाल भी न आ पाये।

इस मौके पर गाये जाने वाले गीत खास तरह के होते हैं। उनकी प्रत्येक पंक्ति के अन्त में सब लोग मिल कर गाते हैं। अन्तरा एक ही आदमी गाता है और उसके खत्म होते ही स्थायी गाते समय सब लोग शामिल हो जाते हैं और ज्यादा से ज्यादा ऊची आवाज में गाने का प्रयत्न करते हैं। जब हम सब लोग मिल कर स्थायी गाते थे तो जहाज के डेकों को सिर पर उठा लेते थे और हमारी आवाज दूर तक सुनी जा सकती थी।

मल्लाहो के लिए गीत उतना ही जरूरी है जितना सिपाही के लिए नगाड़ा और बासुरी। गीत के बिना वे ठीक समय से और पूरी लगन से काम कर ही नही सकते। कई बार कोई काम कठिन जान पडता है लेकिन जब कोई मल्लाह "हीव, टू द गर्ल्स !" "नैंसी हो", जैक क्रासट्री", जैसा कोई गीत छेड़ देता है

तो हर मल्लाह के बाजुओ में न जाने कहां से जान और ताकत आ जाती है। हमनें खालों के स्टीविंग के काम में कई बार गौर किया कि अलग–अलग गीतो का असर अलग–अलग होता था। कई बार एक के बाद एक कई गीत गाये गये लेकिन काम टस से मस नही हुआ, लेकिन तभी किसी ने कोई नया गीत छेड दिया जो उस क्षण के अनुकूल सिद्ध हुआ और उस गीत के जादू से वह मुश्किल काम सहल हो गया। हल्के-फुल्के कामो के लिए "हीव राउन्ड हार्टी।" "कैप्टेन गान एशोर!" जैसे गीत ठीक रहते हैं लेकिन भारी कामों के लिए "टाइम फार अस टु गो!", "राउन्ड द कार्नर", या "हुर्रा! हुर्रा, माइ हार्टी बुलीज़!" जैसे गीतों का कोई जवाब नही है।

यह हमारे काम का सबसे दिलचस्प हिस्सा था। सुबह को हम नाव पर जाते थे और पार पहुच कर कुछ काम करते थे। इसके बाद हममें से बीस या तीस आदमी नीचे बन्द फलके में चले जाते थे और स्टीविंग के काम में लगे रहते थे और गीत गाते हुए दिन ब दिन जहाज को भरते जाना देखते थे। इसमें हमें अत्यन्त कठोर परिश्रम करना पडता था। सोमवार की सुबह से लेकर शनिवार की रात तक (जब कि हमने यह काम लगभग पूरा कर लिया था) हमें दम लेने की फुरसत नही मिली और जब शनिवार को हमें पूरी रात आराम करने के लिए मिली और नहाने-धोने व कपड़े बदलने और रविवार का दिन शातिपूर्वक बिताने का मौका मिला तो हम बड़े खुश हुए।

इस बीच सब दिन हम ताजा बीफ खा कर ही रहे; दिन में तीन बार–सुबह, दोपहर, शाम—हमें बीफ की तली हुई स्लाइसें मिलती थी। सुबह को और रात को हर आदमी को एक पाव चाय और दिन के लिए फी आदमी लग-भग आधा सेर हार्ड ब्रेड मिलती थी लेकिन हमारा असली भोजन बीफ ही था। छः आदमियों के लिए लकडी का एक टब आता था जिसमें बीफ के बले हुए और ग्रीज से तरंमतर टुकड़े भरे होते थे। हम अपने काटे उठा कर भूखे शेरों की तरह उस पर टूट पडते थे और कुछ देर बाद खाली टब रसोई में पहुँचा दिया जाता था। ऐसा दिन में तीन बार होता था।

मैं हिसाब लगा कर यह बताने की कोशिश नहीं करूंगा कि एक आदमी कितने पाउन्ड बीफ खाता था। हम एक बछडा (हम जिगर वगैरह सभी कुछ खा जाते थे) चार दिन में चट कर जाते थे। मानना पड़ेगा कि इतनी मात्रा में

ग्रौर इस ग्रातुरता से हम पहले मांस कभी नहीं खाते थे। ग्रगर कोई रूसी सुने कि उन दिनो हममें से एक मल्लाह एक दिन में कितना ग्रधिक खाता था पता नही उस पर क्या गुज़रे।

जितने समय हम तट पर रहे हमारा मुख्य भोजन ताजा बीफ ही रहा ग्रौर हर ग्रादमी इसे खाकर पूरी तरह स्वस्थ रहा। उन दिनो भूख भी कितनी ग्रधिक लगती थी, मेरे लिए यह सोचना भी कठिन है कि मास न होता तो हमारा काम कैसे चल पाता। एकाध मौके पर हमारे बैल ठीक समय पर नही पहुचे ग्रौर हमें सूखी रोटी ग्रौर पानी पर निर्भर रहना पडा तब भोजन एकदम बेस्वाद लगा। न यह भोजन हमें परितोष ही दे पाता था ग्रौर न हम भूख ही महसूस करते थे। ग्रंत में जब हमें फिर से ताजे गोश्त के दर्शन हुए तभी हमारी जान में जान ग्रायी।

बैठ कर काम करने वाले लोग चाहे जो कहें लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे जहाज़ के मल्लाह जितना कठिन परिश्रम कर के ग्रौर सोलह महीनों तक खुले मौसम को ग्रपने शरीर पर झेल कर भी जितने स्वस्थ ग्रौर नीरोग रहे उन हालात में ग्रौर लोग वैसे स्वस्थ नही रह सकते थे चाहे स्वास्थ्य की देवी हाइजिया ही उनकी देख भाल क्यों न करती।

शुक्रवार, पन्द्रह ग्रप्रैल। ग्राज प्रतिवात दिशा से "पिलग्रिम" ग्रा पहुँचा। हमें घर पर जाने की तैयारियों में लगा देख कर उसके मल्लाह उदास हो गये क्योंकि कैलिफोर्निया-तट पर वे "एलर्ट" के मल्लाहों से पहले ग्राये थे ग्रौर ग्रभी एक साल तक उन्हें यह कठोर श्रम करने के लिए ग्रौर रोक लिया गया था।

एक शाम मैंने "पिलग्रिम" पर बितायी। मल्लाह इस कष्ट को हंस-गा कर झेलने का प्रयत्न कर रहे थे ग्रौर इस बात का निश्चय कर रहे थे कि ग्रब जो भी होगा देखा जायगा। लेकिन, मेरा मित्र एस—घर लौटने पर तुला हुग्रा था ग्रौर वह इसके लिए लोगों से कहने-सुनने ग्रौर खर्च करने को भी तैयार था।

बडी जोड-तोड ग्रौर दौड-धूप के बाद वह मेरे ग्रंग्रेज दोस्त टाम हैरिस को राजी कर पाया। उसने हैरिस को इसके बदले में ३० डालर ग्रौर कुछ कपड़े दिये। इसके ग्रलावा उसने बताया कि जब "पिलग्रिम" प्रतिवात दिशा में रवाना होगा तो कप्तान फाकन को उसकी जगह एक दूसरे मालिम की जरूरत पडेगी ग्रौर वह पद हैरिस को मिल जायगा।

कप्तान फाकन से अपनी पहली मुलाकात में ही मैंने उससे भट्ठी तक जाकर होप को देखने के लिए कहा। होप उसके जहाज पर काम कर चुका था और कप्तान उसे बखूबी जानता था। वह उसे देखने गया, लेकिन उसने कहा कि उसके पास दवाएं बहुत कम हैं और उसके जहाज को अभी काफी दिन तट पर रहना है इसलिए वह होप के लिए कुछ कर नहीं सकता। उसने यह भी बताया कि कप्तान आर्थर उसकी देखभाल करेगा। आर्थर "कैलिफोर्निया" जहाज का कप्तान था जो हफ्ते-दस दिन में पहुचने वाला था।

जब हमारे जहाज ने अंतिम बार सैन डियागो में लंगर डाला था तब पहली रात को मै होप को देखने गया था। जब उसे छोडकर मैं अपने जहाज पर प्रति-वात दिशा में गया था तब मैंने सोचा था कि लौटने पर होप शायद ही जीवित मिले। मेरे जाने से पहले वह बेहद कमजोर हो चुका था और मैं यह सोच भी नही सकता था कि मैंने उसे जो दवाएं दी थी उनका उस पर क्या असर होगा। फिर भी इतना मैं समझता था कि दवाओं के बिना तो यह मर ही जायेगा।

इसलिए सैन डियागो लौटने पर जब मैंने उसकी हालत में सुधार देखा तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा और मैंने राहत की सास ली। दवाएँ बहुत तेज थी और उन्होने उसके शरीर को नष्ट करती हुई बीमारी का बढ़ना रोक दिया था, और उसे मिटाना भी शुरू कर दिया था। उसके कृतज्ञता—प्रकाशन को मैं कभी नहीं भुला पाऊंगा।

सभी कनाका लोग उसकी जीवन-रक्षा का श्रेय मेरे ज्ञान को देने लगे। वे यह बात मानने के लिए तैयार नही थे कि मै स्वास्थ्य-विज्ञान के सभी रहस्यो का जानकार नही हूँ। हां, मैंने जो दवाएं उसे दी थी वे खत्म हो चुकी थी और जहाज से और दवाएं प्राप्त करना असंभव था इसलिए उसके जीवन को "कैलिफोर्निया" के आगमन पर छोड दिया गया।

रविवार, चौबीस अप्रैल। अब सैन डियागो में हमें लगभग सात सप्ताह हो गये थे। हम अपना अधिकांश नौभार भर चुके थे और अब प्रति दिन "कैलिफो-र्निया" के आगमन की राह देख रहे थे जिस पर हमारा एजेंट आ रहा था। आज तीसरे पहर कुछ कनाका लोग, जो खरगोश वगैरह पकड़ने और सांपों को मारने पहाडी पर गये हुए थे भागते हुए पार आये। वे पूरा जोर लगा कर "कैल हो ?" गा रहे थे।

हमारा तीसरा मालिम मि० एच० पार गया और उनके जहाज के आकार-प्रकार आदि के बारे में पूछा। जब उन्होंने बताया कि जहाज का नाम "मोकू नुई मोकू" है तो उसने हमें लक्ष्य कर के घोषणा की कि "कैलिफोर्निया" पाइन्ट के परले सिरे पर आ पहुँचा है। उसी क्षण सब लोग काम पर जुट गये और मोरों पर तोपें रख कर उनमें गोले भर दिये गये। ध्वजा-पताका आदि फहरा दी गयी और जहाज को चुस्त-दुरुस्त कर दिया गया। जैसे ही पाइन्ट पर "कैलिफोर्निया" का अग्र भाग दिखायी दिया वैसे ही हमने तोपों की सलामी देनी शुरू कर दी। अब वह जहाज धीरे-धीरे चलता, पाल लपेटता हुआ हमारे जहाज के पास ही आ खड़ा हुआ।

आज रविवार था और काम खत्म हो चुका था इसलिए सब मल्लाह अगवाड़ में ही थे और नवागंतुक जहाज की आलोचना कर रहे थे। वह एक बड़ा सारा जहाज था। लम्बाई में वह "एलर्ट" से छोटा था। उसके बाजुओं पर दीवारें खिंची थी और वह दक्षिणी तट पर चलने वाले रुई और चीनी ढोने वाले जहाजों के फैशन पर केतली जैसी पेंदी वाला था। वह मजबूत, कसीला और सामान्यतथा अच्छा जहाज था लेकिन उसे सुन्दर नहीं कहा जा सकता था।

सब मिलाकर हम इस बात से संतुष्ट ही हुए कि "एलर्ट" उससे दुगुने चुस्त जहाज से होड ले सकता था।

रात के समय हममें से कुछ लोगों ने नाव ली और जहाज पर गये। जहाज का अगवाड बडा और कुशादा था (क्योंकि "एलर्ट" की तुलना में उसका अगवाड ज्यादा चौकोर था)। मल्लाहों की संख्या छोकरों सहित बारह या पन्द्रह थी और वे अपने सन्दूको के आस-पास बैठे धूम्रपान और गप-शप कर रहे थे। उन्होंने हमारे जहाज के लोगों का सत्कार किया। बोस्टन से चले उन्हें सात महीने हो गये थे लेकिन हमें ऐसा लगा जैसे वे कल ही बोस्टन से चले हों। इसलिए उनसे पूछने के लिए हमारे पास बहुत-कुछ था क्योंकि यद्यपि हम "कैलिफोर्निया" द्वारा लाये गये अखबारो से बोस्टन के बारे में काफी कुछ जान चुके थे फिर भी ये मल्लाह तो स्वयं बोस्टन से आये थे और सब-कुछ अपनी आंखो से देख कर आ रहे थे।

एक नौसिखुआ मल्लाह बोस्टन का लडका था। वहा वह एक पब्लिक स्कूल में पढता था और हमारी अनेक जिज्ञासाओं को शान्त कर सकता था। जब हमने उससे बोस्टन के अपने दो लड़को के बारे में मालूम किया तो पता चला कि वे

उसके स्कूल के साथी थे। हम लोगों के पास एन स्ट्रीट, बोर्डिंग हाउसों, बन्दरगाहों में खड़े जहाजों, वेतन की दरो और दूसरी चीजों से सबद्ध अनेक प्रश्न थे जो हमने उनसे पूछे।

मल्लाहों मे दो ऐसे थे जो इंग्लिश युद्धपोत में काम कर चुके थे इसलिए जल्दी ही हमें संगीत भी सुनने को मिला। वे मल्लाहों के असली लहजे में गा रहे थे और सहगान में बाकी मल्लाह भी जो कि संगीत से विशेष लगाव रखते थे, हिस्सा ले रहे थे। उन्हे बहुत से नये-नये नाविक गीत याद थे जो अभी हमारे व्यापारी पोतों तक नही पहुँचे थे और वे गीत बहुत सुन्दर थे।

हमारे जहाज पर आने के कुछ देर बाद ही उन्होंने गाना शुरू किया था और दो घन्टियो के बजने तक वे गाते ही रहे। दो घन्टियों के बजते ही दूसरा मालिम अगवाड में आया और उसने आज्ञा दी "एलर्ट, वे लोग वापस चलें।" उनके गीतो में युद्ध गीत, मद्य गीत, नाव-गीत, प्रेम-गीत आदि सभी तरह के गीत थे और मैं यह देख कर खुश हुआ समुद्र के क्लासिकल गीतों—"आल इन द डांउस", "पूअर टाम बोलिन", "द बे आफ बिस्के", और "लिस्ट यी लैंड्समैन !"—का उन गीतों में अब भी अपना विशिष्ट स्थान था।

इन गीतों के अलावा उन्होने थियेटरों और दूसरी जगहों से कुछ आभिजात्य गीत भी सीख लिये थे, जिन पर उन्हें गर्व था। और मैं उस बूढ़े मल्लाह का गाना कभी नहीं भूल सकता जिसकी आवाज शराब पीने और सैकडो उत्तरी-पश्चिमी झन्झाओं में चिल्लाते रहने के कारण उखड चुकी थी। उखडी हुई आवाज में वह एक निपुण सगीतज्ञ की भाँति गा रहा था। आरोह में उसकी आवाज ऐसी लगती थी जैसे वह किसी पर बिगड रहा हो और अवरोह में ऐसा लगता था मानों वह सब मल्लाहों को काम पर बुलाने वाली गुहार हो—

"परहैप्स, लाइक मी, ही स्ट्रगल्स विद
ईच फीलिंग आफ रिग्रेट;
बट इफ ही`ज लव्ड एज आइ हैव लव्ड,
ही नेवर कैन फोरगेट !"

अन्तिम पंक्ति को, गीत का निचोड होने के कारण, वह पूरे जोर से गाता था और इस प्रयास में एक-एक शब्द छः-छः अक्षरों में टूट जाता था। लोगो को यह बहुत पसन्द आया और उस मल्लाह को अपना "भावनापूर्ण गीत" गाने के

लिए बार-बार बुलाया गया। इन बुलाने वालों में सबसे ऊंची आवाज मेरी ही थी क्योंकि उसका गाने का पूरा ढंग इतना बेढब था और मल्लाहों को उसमें इतना मजा आ रहा था कि उस पर हंसे बिना रहा ही नही जा सकता था।

अगले दिन "कैलिफोर्निया" ने अपना नौभार उतारना शुरू किया, नावों पर आते-जाते उसके मल्लाह चप्पुओं की ताल पर नावो के गीत गाते थे। कई दिनों तक वे दिन भर इस काम में लगे रहे। अन्त में उनकी सब खालें किनारे पर पहुँचा दी गयी और उनमें से कुछ मल्लाहों की एक टुकडी स्टीविंग में हमारी मदद करने के लिए हमारे जहाज "एलर्ट" पर भेज दी गयी। हमारे लिए तो यह ईश्वरीय वरदान था क्योंकि उन्हें इस काम से संबद्ध अनेक नये गीत याद थे जबकि हम छः हफ्तो से निरंतर गाते-गाते अपने गीतों से ऊब चुके थे। मैं निःसंदेह कह सकता हूँ कि गीतो की इस नयी कुमुक के कारण हमारा काम कई दिन पहले खत्म हो गया।

अब हम अपना नौभार प्रायः पूरा कर चुके थे और मेरा पुराना दोस्त "पिलग्रिम" अगले दिन सुबह प्रतिवात दिशा में अपनी लम्बी यात्रा की तैयारी कर रहा था। मैं उसके मल्लाहों के दुर्भाग्य पर सोच ही रहा था और उससे बच निकलने के लिए अपने आपको बधाई दे ही रहा था कि केबिन से बुलावा आ गया। मैं पीछे केबिन में गया तो देखा कि मेरे जहाज का कप्तान, "पिलग्रिम" का कप्तान फाकन और एजेंट मि० आर—ये लोग बैठे हैं। कप्तान टी—मेरी ओर मुखातिब हुआ और अचानक पूछ बैठा—

"क्या तुम इस जहाज में घर वापस जाना चाहते हो?"

"निश्चय ही, सर!" मैंने कहा, "मैं इस जहाज में घर लौट चलना चाहता हूँ!"

"तब", वह बोला, "तुम्हें किसी आदमी को अपने बदले "पिलग्रिम" पर जाने के लिए राजी करना होगा।"

इस आकस्मिक सूचना से मैं इतना हतबुद्धि हो गया कि मैं कोई जवाब न दे पाया। मै जानता था कि मैं कितनी ही कोशिश करूँ "एलर्ट" का कोई भी मल्लाह बारह महीने तक कैलिफोर्निया तट पर और रहने के लिए राजी नही होगा।

मुझे यह भी मालूम था कि कप्तान टी—को आदेश दिया गया था कि मुझे

"एलर्ट" में वापस ले आये, और जब मैं खालों के मकान में था तब उसने मुझे बताया भी था कि मुझे "एलर्ट" में घर वापस चलना है। और अगर यह बात न भी होती तो भी मुझे उनके फैसले की खबर पहले से मिलनी चाहिए थी न कि जहाज के छूटने से चन्द घन्टे पहले।

जैसे ही मेरे होश-हवास दुरुस्त हुए मैंने कडा रुख अपनाया और उसे साफ साफ बता दिया कि मेरे सन्दूक में बोस्टन से मालिको की तरफ से आया वह खत मौजूद है जिसमें उसे आदेश दिया गया है कि मुझे अपने जहाज में घर लेता आये, और इसके अलावा वह मुझसे कह भी चुका है कि मुझे उसके जहाज में चलना है।

मेरे सर्वशक्तिमान प्रभु को इस तरह की बातें सुनने और विरोध सुनने की आदत नही थी। वह मुझ पर बरस बडा और अपनी बात वापस लेने को कहा। लेकिन जब उसने देखा कि मुझे दबाना इतना आसान नही और मैं अपना बचाव इस तरीके से कर रहा हूँ कि बाकी दोनों व्यक्तियों के सामने खुद उसकी गलती साबित होने वाली है तो उसने अपना रुख बदल लिया और "पिलग्रिम" के कागजात की तरफ इशारा करके मुझसे कहा—इन पर से तुम्हारा नाम कटा नही है और तुम पर "पिलग्रिम" का अधिकार है—और मैं अपनी मर्जी का मालिक हूँ—डेढ़ बात यह है कि कल सुबह या तो तुम अपना बोरिया-बिस्तर लेकर "पिलग्रिम" पर पहुंच जाओ या अपनी एवज में किसी और को राजी कर लो, बस मैं कुछ और सुनना नही चाहता।

स्टार चैंबर की अदालत भी अपराधियों को इतनी जल्दी सजा नहीं सुनाती थी जितनी जिल्दी यह त्रिमूर्ति मेरे भाग्य का फैसला किये दे रही थी। मुझे जो सजा दी जा रही थी वह कालापानी से भी बुरी थी क्योकि कैलिफोर्निया के तट पर दो वर्ष और रहने का मतलब था कि मैं सारी जिंदगी मल्लाह ही बना रहता और मेरे भावी जीवन का रूप ही कुछ और हो जाता। मैं यह महसूस कर रहा था और सोच रहा था कि इस समय अपनी बात पर डटे रहना बहुत जरूरी है। मैंने अपनी बात फिर से दुहराई और कहा कि इस जहाज से घर लौट चलना मेरा अधिकार हैं।

आइ रेज्ड माई आर्म, एन्ड टाल्ड माई क्रैक,
बिफोर देम ए'।

अगर इस निरंकुश और स्वेच्छाचारी अदालत के सामने "सीधा-सादा दुर्बल

व्यक्ति" साबित होता तो मेरा लोहा लेना बेकार रहता। लेकिन उन्होंने देखा कि मैं संघर्ष किये बिना नहीं मानूंगा और वे यह भी जानते थे कि घर पर मेरे अनेक मित्र और परिचित हैं जिनकी सहायता से मैं अपने प्रति किये गये अन्याय का प्रतिशोध ले सकता हूँ।

शायद यही कारण था कि सारी बात ने एक नया ही रंग ले लिया और कप्तान का लहजा एकदम बदल गया। उसने मुझसे पूछा कि अगर कोई और आदमी मेरी जगह "पिलग्रिम" पर जाने को तैयार हो जाय तो क्या मैं उसे उतनी ही रकम दे दूँगा जितनी एस—ने हैरिस को अपनी एवज में जाने के लिए दी है? मैंने कहा कि जो आदमी उस जहाज पर भेजा जायगा उस पर तरस खा कर मैं उसे कोई भी रकम दे सकता हूँ लेकिन मैं इसे एवज में जाने की रकम मानने के लिए तैयार नहीं हूँ।

"अच्छा ठीक है", उसने कहा। "तुम अगवाड में जाकर अपना काम करो और इंग्लिश बेन को यहां मेरे पास भेज दो!"

मैं हल्के मन से अगवाड में गया लेकिन क्रोध और अपमान से मेरा मन भर उठा था। इंग्लिश बेन पीछे भेजा गया और कुछ मिनट बाद जब वह लौटा तो ऐसा महसूस होता था जैसे उसे फासी की सजा सुना दी गयी हो!

कप्तान ने उससे अपना सामान तैयार कर लेने को कहा था, और उसे बताया था कि अगले दिन सुबह उसे "पिलग्रिम" से जाना है। उसने बेन को यह भी बताया था कि मै उसे ३० डालर और कुछ कपड़े दूँगा। तब तक मल्लाहों की डिनर की छुट्टी हो गई थी और वे अगवाड में यहां—वहाँ खड़े थे। बेन ने वहाँ आकर अपनी कहानी सुनाई। मुझे यह समझने में कठिनाई न हुई कि यह बात सुन कर मल्लाह भडक उठे हैं, और अगर मैंने अपनी सफाई नही दी तो वे मेरे खिलाफ हो जाएगे।

बेन एक गरीब अंग्रेज लडका था। वह बोस्टन में अजनबी था, न उसका कोई दोस्त था न उसके पास पैसा ही था। वह एक चुस्त और आगे बढ़कर काम करने वाला लडका था। अपनी उम्र को देखते हुए वह काफी अच्छा मल्लाह था। अपने इन गुणों के कारण वह सभी का चहीता था। "हा, हाँ!" मल्लाहों ने कहा, "कप्तान ने तुम्हे छोड दिया क्योंकि तुम कुलीन बाप के बेटे हो, और तुम्हारे हिमायती हैं, और तुम मालिकों को जानते हो, और उसने तुम्हारी जगह बेन को

घर लिया है क्योंकि वह गरीब है और उसका कोई हिमायती नहीं है।''

मै जानता था कि उनकी बात में सचाई है और मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं है, फिर भी मैने कहा कि इसका दोष मेरे सिर पर नही है और हर हालत में घर वापिस लौटने का मुझे अधिकार है। इससे वे कुछ ढीले पड़े लेकिन उनकी यह धारणा बनी रही कि एक गरीब लडके के साथ ज्यादती की जा रही है। यद्यपि मैं जानता था कि इसमें मेरा कोई दोष नही हैं, बल्कि मै भारी अन्याय से बाल-बाल बच गया हूँ, फिर भी मुझे लगता था कि मल्लाह मुझे ही दोषी समझेंगे।

मैं कठोर परिश्रम करने और कठिनाइया झेलने में बराबर उनके साथ रहा था और मेरे प्रति कोई पक्षपात नहीं किया गया था, इसलिए उनकी यह भावना सो गई थी कि मैं ''उनमें से एक'' नही हूँ। लेकिन अब यह भावना नये सिरे से जाग रही थी। लेकिन मैं अपने बारे में अधिक नही सोच रहा था। उस अभागे लडके के प्रति मेरे मन में असीम करुणा थी। कितनी उमग से वह इस जहाज से बोस्टन जाने की सोच रहा था, जहां से वह अपने मित्रों से मिलने लिवरपूल जाने वाला था।

इसके अलावा यात्रा के आरंभ में उसके पास बहुत कम कपड़े थे इसलिए वह अपने वेतन का अधिकांश लेकर कपडों आदि पर खर्च कर चुका था। आर्थिक दृष्टि से उसकी यात्रा अब जितनी लम्बी होती वह उतने ही घाटे में रहता। अन्य सभी मल्लाहो की भाति कैलिफोर्निया से उसे भी बेहद नफरत हो गयी थी और जब उसने देखा कि अभी डेढ़-दो साल उसे यहों पापड और बेलने हैं तो वह मुरझा गया। मैं अपने बारे में तो फैसला कर चुका था कि चाहे जो हो मैं घर अवश्य जाऊँगा और मैं यह भी जानता था कि कप्तान मुझे जबरदस्ती ''पिलग्रिम'' पर भेजने की हिम्मत नही कर सकता। मुझे यह भी मालूम था कि दोनो कप्तान इस बात पर राजी हो गये हैं कि मेरी जगह किसी और आदमी को जाना होगा इसलिए गरीब बेन को बचाने का एकमात्र उपाय यह था कि मै अपनी ही कोशिशों से किसी और आदमी को अपनी एवज में जाने के लिए तैयार कर लूं।

यद्यपि मैं कह चुका था कि मै किसी को अपनी एवज मे भेजने को तैयार नही हूँ, लेकिन बेन की मदद करने के ख्याल से मैंने किसी ऐसे आदमी की तलाश करनी शुरू की जो मेरी एवज में ''पिलग्रिम'' पर चला जाय। इसके लिए मैं उसे बोस्टन में मालिकों के नाम छः महीने के वेतन का आर्डर और वापसी के लिए

जरूरी कपड़े, किताबें और कुछ दूसरी चीजें रखकर बाकी अपना सब-कुछ दे देने के लिए तैयार हो गया।

जब यह प्रस्ताव जहाज मे प्रकाशित किया गया और गरीब बेन की सहायता के लिए लोगों को आमन्त्रित किया गया तो कई मल्लाह, जो स्वय स्वप्न में भी इसे स्वीकार करने की नही सोच सकते थे, दूसरों से यह सोचकर इसकी चर्चा करने लगे कि शायद वे इसे स्वीकार कर लें। अन्त में एक आवारा सा लड़का, जिसे हम हैरी ब्लफ कहते थे, अगवाड में आया और मेरी एवज में "पिलग्रिम" पर जाने को तैयार हो गया। उसे इस बात की चिन्ता नही थी कि वह किस देश में या किस जहाज में है, बशर्ते कि उसके पास काफी कपड़े और पैसे हों। कुछ तो वह बेन पर तरस खाकर आगे आया और कुछ इसलिए चूंकि यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेने पर उसे सैर-तफरीह के लिए पैसा मिल सकता था।

कही इसका जोश ठन्डा न पड जाय—यह सोचकर मैंने बोस्टन में मालिकों के नाम छ महीने के वेतन के आर्डर पर दस्तखत कर दिये और जिन कपडों के बिना मेरा काम चल सकता था वे सब उसे दे दिये। इसके बाद मैंने उसे कप्तान के पास सारी बात बताने के लिए भेज दिया।

कप्तान ने इस एवजी को मंजूर कर लिया, और सच तो यह है कि वह यह सोच कर खुश ही हुआ कि यह बला इतनी आसानी से टल गयी। उसने उसी समय उस आर्डर की रकम ब्लफ को दे दी जो कप्तान के नाम इंडोर्स कर दिया गया था। अगले दिन सुबह को वह लडका "पिलग्रिम" पर चला गया। जाहिरा तौर पर तो वह काफी खुश नजर आ रहा था। उसने हममें से हर एक से हाथ मिलाया और घर की ओर निर्विघ्न यात्रा करने की शुभ कामना प्रकट की। अपनी जेब में पडे पैसे को उसने ठनठनाया और विदा लेते हुए कहा, "जब तक पास पैसा है चिन्ता को पास मत फटकने दो।" उसी नाव में मेरा पुराना साथी हैरिस भी गया जिसने पहले ही मेरे दोस्त एस—की एवज में जाना मंजूर कर लिया था।

हैरिस से बिछुडने मे मुझे दु.ख हुआ। जब सभी मल्लाह नीचे जहाज में होते थे उस समय लंगर के पहरे पर तैनात हम दोनों लगभग दो सौ घन्टों तक साथ-साथ रहे थे। उन घन्टों में हम दुनिया भर के विषयो पर बातचीत करते रहते थे। उसने हाथ मिलाते समय मेरा हाथ कस कर दबाया और मैंने उससे कहा कि

बोस्टन जाने पर मुझे ढूंढ़ कर मुझसे मिलना न भूले और मुझे अपने पुराने पहरे के साथी से मिलने के सुयोग से वञ्चित न करे।

उसी नाव से मेरा दोस्त एस—हमारे जहाज पर आ गया। एस—ने बोस्टन से मेरे साथ ही यात्रा शुरू की थी और अब हम दोनों ही अपने उस परिवार और समाज में वापस लौट रहे थे जिसमें हम जनमे और पले थे। हम दोनो ने एक-दूसरे को वह सुयोग पाने के लिए बधाई दी जिसके लिए हम न जाने कबसे तरस रहे थे। जब हमने देखा कि "पिलग्रिम" पाइन्ट के पास अपने पूरे पाल ताने रवाना होने के लिए तैयार खड़ा है तो जहाज पर जितनी खुशी हम दोनों को हुई उतनी किसी को नही हुई।

जब वह हमारे पास से गुजरा तो हम सब कटि में जमा हो गये और हवा में अपने टोप हिला कर तीन बार जोर की आवाज में हमने "पिलग्रिम" को विदाई दी। "पिलग्रिम" के मल्लाह उछल कर रस्सियों और जंजीरो पर चढ़ गये थे और उन्होने भी उतने ही जोर से तीन बार हमारा अभिवादन किया, जिसके जवाब में नाविकों की प्रथा के अनुसार हमने एक बार उनका अभिवादन किया।

अब वे लोग पटरी पर चढ गये थे। मैंने अपने उन परिचित चेहरों पर आखिरी बार नजर डाली। मैंने देखा बूढा काला रसोइया रसोई से अपना सिर बाहर निकाल कर अपनी टोपी सिर के ऊपर हिला रहा है। मल्लाह टापगैलेंट पालों को ढीला करने के लिए ऊपर चढ़ गये थे। दोनों कप्तानों ने हाथ हिला कर एक-दूसरे का अभिवादन किया। कोई दस मिनट में वह पाइन्ट का चक्कर लगा कर अपनी यात्रा पर चल दिया और हमारी आखो से उसके सफेद पाल ओझल हो गये।

उसके चले जाने से मुझे राहत ही मिली (मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अभी अभी लोहे के उस शिकंजे से बच निकला हूँ जो मेरे ऊपर कसने ही वाला था) फिर भी उस पुराने जहाज को आखिरी बार देखते हुए मुझे अफसोस भी हो रहा था। मैंने उस पर एक साल और अपने नाविक जीवन का सबसे पहला साल बिताया था। मैं जिस नयी दुनिया में निकल आया था उसमें मेरा सबसे पहला घर वही था। उससे मेरी अनेक स्मृतिया जुड़ी थी—घर से पहली बार निकलना, पहली बार भूमध्य रेखा को पार करना, केपहार्न और जुआन फर्नेडीज की यादें, समुद्र पर मृत्यु और दूसरी अनेक महत्वपूर्ण और सामान्य बातें।

लेकिन इस सबके बाद भी, और अपने पुराने साथी मल्लाहों के प्रति, जो कैलिफोर्निया प्रदेश में साल-डेढ साल और रहने के लिए विवश थे, समवेदना के बावजूद हम इस विचार से सन्तुष्ट थे कि हम बच गये हैं और अब एक हफ्ते के अन्दर बोस्टन के लिए रवाना हो जायेंगे।

शुक्रवार, छः मई। आज हमने अपना नौभार भरना बन्द कर दिया। आज का दिन हमारे लिए चिरस्मरणीय था। सोलह महीनों से हम इस क्षण की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे कि जहाज में आखिरी खाल कब भरी जाये। अब वह क्षण आ पहुँचा था। जब अन्तिम खाल रख ली गयी और फलके बन्द कर दिये गये और उन पर तिरपाल लगा दिये गये, दीर्घ नौका ऊपर चढ़ा कर यथास्थान रख दी गयी और रात के लिए डेक साफ कर दिये गये तब मुख्य मालिम दीर्घ नौका के ऊपर चढ गया और सब मल्लाहों को कटि में बुला लिया। इसके बाद उसने अपनी टोपी को सिर पर हिला कर इशारा किया और हमने जोर से तीन बार हर्ष ध्वनि की। ये हर्षध्वनिया हार्दिक थी और इनकी अनुगूंज पहाडियों और घाटियों में सुनायी दी। अगले ही क्षण हमें "कैलिफोर्निया" के मल्लाहों द्वारा की गयी तीन हर्षध्वनियां सुनायी दी। उन्होने हमें दीर्घनौका चढ़ाते हुए देख लिया था, और हमारी हर्षध्वनि सुनकर वे समझ गये थे कि इसका मतलब क्या है?

आखिरी हफ्ता हमने वापसी के लिए लकडी और पानी लेने तथा फालतू डंडों और पालों आदि को यथास्थान रखने में लगाया था। इडियन आदिवासियों की एक टोली के साथ मुझे एक झरने से पानी के पीपे भरने के लिए भेजा गया था। यह झरना लंगरगाह से कोई तीन मील और कस्बे से पास था। तीन दिन मैं जहाज से गायब रहा। इन दिनो मैं कस्बे में रहता था। दिन भर मैं पीपे भरने और बैलगाडियों पर उन्हें लाद कर घाट पर भेजने में लगा रहता था जहां से मल्लाह नावों द्वारा उन्हे जहाज पर ले जाते थे।

यह कर चुकने के बाद एक दिन हमने पालो को बाधने में लगाया। रात तक सब पाल बांध कर तैयार कर दिये गये।

हमारे रवाना होने के पहले "कैलिफोर्निया" के एक मल्लाह ने हमारे एक मल्लाह से नौकरी की अदला-बदली की असफल चेष्टा की। यह मल्लाह पन्द्रह-सोलह साल का एक लड़का था और ईस्ट इन्डिया कम्पनी के एक जहाज में मिडशिपमैन रह चुकने के कारण "रीफर" के नाम से प्रसिद्ध था।

उसके अजीबोगरीब चरित्र और कहानी के कारण हम उसमें उस दिन से दिलचस्पी लेने लगे थे जिस दिन से वह जहाज आया था। वह एक नाजुक, पतला दुबला, छोटा-सा लडका था। उसका रंग नाशपाती जेसा था और नैन-नक्श सुधरे थे। उसका माथा संगमरमर की तरह सफेद था और काले व घुंघराले बालों से घिरा रहता था, उंगलिया पतली और नाजुक, और पाव छोटे थे। उसकी आवाज मीठी और व्यवहार सुन्दर था। उसकी हर बात से ऐसा लगता था जैसे वह किसी अच्छे घर में जनमा और पला है।

साथ ही उसे देख कर कुछ ऐसा आभास होता था कि उसमें सूझ-बूझ की कुछ कमी है। यह कमी कितनी थी या क्यों थी,। इसके बारे में मैं कुछ नही कह सकता। हो सकता है यह कमी जन्मजात रही हो या किसी बीमारी अथवा दुर्घटना के परिणामस्वरूप आयी हो अथवा, जेसा कि कुछ लोगों का विचार था, इस यात्रा का उसके मन पर जो दुष्प्रभाव पडा था उसके कारण यह कमी आ गयी हो।

उसने खुद अपने बारे में जो-कुछ बताया था और उसकी कहानी से सम्बद्ध अनेक बातों के आधार पर वह जरूर किसी अमीर बाप का बेटा रहा होगा। उसकी मां इटालियन थी। शायद वह अनौरस पुत्र था क्योंकि उसके आरंभिक जीवन की घटनाए इसी ओर सकेत करती थी। उसका कहना था कि उसके मां बाप साथ-साथ नही रहते थे और ऐसा लगता था कि उसका बाप उसके प्रति दुर्व्यवहार करता था।

यद्यपि उसका लालन-पालन लाड-चाव से हुआ था (उस समय भी उसके पास घर से मिले कुछ आभूषण थे) फिर भी उसकी शिक्षा सुचारु रूप से न हो सकी और केवल बारह वर्ष की उम्र में उसे ईस्ट इंडिया कम्पनी में मिडशिप मैन के रूप में नौकर रख दिया गया। उसका अपना बयान यह था कि बाद में चलकर उसका अपने बाप से झगडा हो गया और वह घर से भाग कर लिवरपूल चला गया जहा से वह कप्तान होम्स के जहाज "रायलटो" पर बोस्टन आ गया। कप्तान होम्स ने उसे घर वापस भेजने की कोशिश की लेकिन जब कुछ समय तक ऐसा कोई जहाज नहीं मिला तो वह कप्तान से अलग होकर एन स्ट्रीट पर स्थित सामान्य मल्लाहों के बोर्डिंग हाउस में चला गया जहाँ अपनी कीमती चीजें बेच-बेच कर उसने कुछ सप्ताह बिताये।

उसका कहना था कि अंततः उसके मन में घर लौट चलने की इच्छा हुई

श्रौर वह एक जहाज कम्पनी के दफ्तर में गया जहां कि "कैलिफोर्निया" जहाज में मल्लाहों की भरती की जा रही थी। यह पूछने पर कि जहाज कहां जा रहा है, शिपिंग मास्टर ने उसे जवाब दिया—कैलिफोर्निया। उसे पता ही न था कि कैलिफोर्निया कहाँ है। उसने शिपिंग मास्टर से कहा कि वह यूरोप जाना चाहता है, क्या कैलिफोर्निया यूरोप में है? इसका जवाव शिपिंग मास्टर ने कुछ इस तरह दिया कि लडके की समझ में कुछ न आया। उसने लडके को भरती हो जाने की सलाह दी। लडके ने कागज़ों पर दस्तखत कर दिये, पेशगी पैसा ले लिया, उसका एक हिस्सा कपडे बनवाने में लगा दिया श्रौर बाकी खर्च कर दिया श्रौर जहाज पर जाने को तैयार हो गया। जिस दिन जहाज रवाना होने वाला था उस दिन सुबह को उसे पता चला कि जहाज दो-तीन साल की यात्रा पर उत्तरी-पश्चिमी तट पर जा रहा है, यूरोप नहीं।

यह सुनकर उसके देवता कूच कर गये। जब मल्लाह लोग जहाज पर जा रहे थे तब वह चुपके से खिसक गया। पहले वह कस्बे के दूसरे भाग में भटकता रहा। दोपहर तक का समय उसने श्रास-पास की श्राम सडकों पर घूम कर काटा। उसके पास पैसे नहीं थे श्रौर उसके कपडे तथा दूसरी सभी चीजें जहाज पर उसकी पेटी में थे। बोस्टन के लिए वह श्रजनबी था। श्रन्त में थकान श्रौर भूख से बेहाल होकर वह यह देखने घाट पर श्राया कि जहाज चला गया या नहीं। एक गली के मोड पर वह मुड ही रहा था कि उसकी तलाश में निकला शिपिंग मास्टर उस पर झपट पडा श्रौर उसे पकड कर जहाज पर ले श्राया।

उसने चीख-पुकार की श्रौर छुटकारा पाने के लिए संघर्ष किया श्रौर कहा कि वह जहाज पर नहीं जाना चाहता लेकिन जहाज चलने ही वाला था श्रौर जहाज छूटने के समय की ऐसी हबड-तबड श्रौर हडबोंग मची हुई थी कि लोगो का ध्यान नक्कारखाने में तूती की उस श्रावाज पर गया ही नहीं। जिन लोगो ने पूछा भी कि माजरा क्या है, उन्हें यही जवाब दिया गया कि यह लडका पेशगी रकम लेकर उसे खर्च कर चुका है श्रौर श्रब भागना चाहता था। श्रगर इस मामले की सूचना जहाज के मालिकों को मिलती तो वे तुरन्त हस्तक्षेप करते, लेकिन या तो उन्हें इसका पता ही नहीं चला या दूसरे लोगों की तरह वे भी यही समझे कि यह कोई सरकश लडका है जो काम से भागना चाहता है।

जब लड़के ने वास्तविक समुद्री यात्रा का श्रनुभव किया, श्रौर उसे पता चला

कि यह यात्रा दो-तीन वर्ष तक चलेगी तो उसका मन मर गया। उसने काम करने से इनकार कर दिया और उसकी अवस्था इतनी दयनीय हो गयी कि कप्तान आर्थर उसे केबिन में ले गया जहा वह स्टीवार्ड की मदद करता था और कभी-कभी डेक पर भी कुछ काम कर देता था।

जब हमने उसे देखा तो वह यही काम करता था। उसकी जिन्दगी अगवाड़ से कही अच्छी थी। अगवाड में उसे कठोर परिश्रम करना पडता, पहरा देना होता और मौसम के अत्याचार झेलने पडते जिसे उसका नाजुक शरीर सहन न कर पाता। लेकिन चूंकि केबिन में उस अश्वेत स्टीवार्ड के साथ एक ऐसे आदमी के नीचे काम करना पडता था जिसे शिक्षा और अदब-कायदे के लिहाज से वह अपने बाप के नौकरों से ज्यादा नही समझता था, इसलिए वह हरदम बुझा-सा रहता था। अगर उसने अपनी मरजी से इस स्थिति को स्वीकार किया होता तो शायद वह इसे झेल लेता लेकिन एक तो उसे धोखा दिया गया था, दूसरे उसे मजबूर किया गया था इसलिए यह सब-कुछ उसे असह्य हो उठा था। हमारे जहाज में घर लौटने का उसने पूरा प्रयत्न किया लेकिन उसके कप्तान ने एवजी में कोई दूसरा आदमी लिए बिना उसे छुट्टी देने से इनकार कर दिया और एवजी का कोई इन्तजाम वह कर नहीं पाया।

अगर लडके द्वारा दिया गया यह सारा हवाला सच है, और सभी मल्लाह इसे सच ही बताते थे, तो मुझे यह सोच कर हैरानी होती है कि कप्तान आर्थर ने उसे छुट्टी क्यों नही दी? मैं इसलिए और अधिक हैरान होता हूँ कि कप्तान आर्थर अपनी असाधारण उदारता के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था। वह मल्लाहो के प्रति ही नही अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों के प्रति उदार था।

सत्य यह है कि अपरिचित तटो पर लम्बी यात्रा पर निकले व्यापारी जहाजों के कप्तानों के अधिकार इतने असीमित होते हैं कि सामान्यत: उत्तम प्रकृति वाले लोगों में भी अनुत्तरदायित्व की भावना आ जाती है और इसके परिणामस्वरूप वे दूसरों के अधिकारों या भावनाओं की अवहेलना करना प्रारंभ कर देते हैं। अंतत: लडके को खाल के घर में काम करने वाली टुकड़ी के साथ काम करने पार भेज दिया गया जहां से वह भाग कर एक छोटे स्पेनी जहाज में बैठकर कैलाओ पहुंचा और वहां से शायद इंग्लैंड चला गया। जब मुझे यह खबर मिली तो मैं बहुत खुश हुआ।

"कैलिफोर्निया" के आगमन के तुरन्त बाद ही मैंने कप्तान आर्थर से होप के बारे में बात की। वह उसे जानता था और पसन्द करता था इसलिए वह तुरन्त ही उसे देखने गया और उसे उचित दवाएं दी, और इस प्रकार उचित इलाज और देख-रेख के कारण उसकी दशा तेजी से सुधरने लगी।

रवाना होने के पहले शनिवार की रात को मैं एक घन्टे तक भट्ठी पर रहा और अपने कनाका मित्रों से विदा ली। और सच तो यह है कि कैलिफोर्निया से विदा लेते समय यही एक ऐसी बात थी जिसे दुःखदायी कहा जा सकता है। इन सीधे-सच्चे लोगों से मुझे मोह हो गया था। इससे पहले मुझे ऐसा मोह अपने निकट सम्बंधियों के अलावा कभी किसी से नहीं हुआ था।

होप ने मुझसे हाथ मिलाया और कहा—जल्दी ही मैं ठीक हो जाऊंगा और जब तुम अगली यात्रा पर जहाज के अफसर बनकर आओगे तब मैं तुम्हारी सेवा करने योग्य हो जाऊंगा। उसने कहा कि कप्तान बनने के बाद तुम बीमार आदमी के प्रति उदारता का व्यवहार करना भूल मत जाना। बूढ़ा "मि० बिघम" और "किंग मैनिनी" नाव तक मुझे छोड़ने आये। उन्होंने प्रेम से मुझसे हाथ मिलाया, यात्रा के लिए शुभ कामनाए प्रकट की और एकरस गीत गाते हुए भट्ठी की ओर चले गये। मुझे लौटते समय उनके उस एकरस गीत का भार अपने पर और अपनी यात्रा पर बराबर महसूस होता रहा।

रविवार, आठ मई। आज कैलिफोर्निया प्रदेश में हमारा अन्तिम दिन था। चालीस हजार खालें, तीस हजार सींग, ऊदबिलाव और बीवर की खालों के कई ड्रम—हमारा इतना नौभार नीचे जहाज में रख दिया गया था और फलके बन्द कर दिये गये थे। सभी फालतू डन्डे जहाज पर लाये जा चुके थे और उन्हें रस्सियों से बांध दिया गया था। पानी के पीपे संभाल कर रख दिये गये थे। जानवर अपनी-अपनी जगह पहुंचा दिये गये थे। हमारे पास चार बैल, एक दर्जन भेड़ें, एक दर्जन या उससे कुछ ज्यादा सूअर और तीन-चार दर्जन मुर्गियाँ वगैरह थीं। बैलों को दीर्घनौका में रखा गया था, भेड़ों को अगले फनके में रखा गया था और सूअरों को दीर्घनौका के मोरों में एक कठघरे में रखा गया था। मुर्गियों को उनकी कन्डी में रखा गया था और जाली बोट में भेड़ों और बैलों के लिए घास-चारा वगैरह भरा हुआ था।

एक तो हमारा नौभार असाधारण रूप से अधिक था, दूसरे उसमें पांच महीने

की यात्रा की रसद भी थी इस कारण जहाज की चैनल पानी में डूब गयीं थी। इसके अलावा उसमें खालो को इस तरह स्टीव किया गया था और उसके अपने नौभार का दबाव इतना अधिक था कि उसकी हालत तंग जाकेट पहने आदमी की तरह थी और इस हालत में उसका तेज चलना बहुत कठिन था।

"कैलिफोर्निया" ने भी अपना नौभार उतारने का काम पूरा कर लिया था और हमारे साथ ही वह भी रवाना होने वाला था। हम अपने डेक धो चुके थे और नाश्ता कर चुके थे। दोनो जहाज एक दूसरे के सामने खड़े थे और रवाना होने के लिए पूरी तरह तैयार थे। जहाज की चोटी पर हमारा ध्वज फहरा रहा था और नदी के दर्पण जैसे पानी का प्रतिबिब हमारे लबे डडो पर पड़ रहा था। सूर्योदय के बाद से नदी का यह दर्पण जैसा तल किसी लहर ने भी नही तोडा था, अन्त में पानी मे हवा से कुछ लहरें उठी और ११ बजे के आस-पास धीरे-धीरे स्थायी उत्तरी-पश्चिमी पवन बहने लगा। सब लोगों को हांक लगाने की जरूरत ही नहीं पडी क्योंकि हम सब लोग सुबह से अगवाड के आस-पास ही घूम रहे थे और समीर के चलते ही रवाना होने के लिए तैयार थे।

सबकी आखें कप्तान पर लगी थी, जो डेक पर टहलता हुआ कभी-कभी प्रतिवात दिशा में देख लेता था। उसने मालिम को इशारा दिया और मालिम अगवाड में आकर जान बूझ कर सबदरा कोहनी के बीच में बैठ गया। एक बार उसने ऊपर की तरफ देखा, और फिर पुकारा,

"सब लोग ऊपर चढ़ कर पालों को ढीला करो।"

हुक्म होने के पहले ही हम काम शुरू कर चुके थे, और बोस्टन से चलने के बाद यह काम पहले कभी इतने कम समय में नही हुआ था जितना कम समय इस बार लगा।

"आगे सब तैयारी हो गयी सर!"

"प्रमुख भाग में सब तैयारी हो गयी!"

"कास जैक यार्ड सब तेयार हैं, सर!"

"हर यार्ड पर एक आदमी रहे। बाकी नीचे उतर आओ!"

यार्डों के कोने और गैस्केट रस्सियां खोल दी गयीं। हर एक पाल जिगर पर अटका हुआ था और गांठ के पास एक-एक आदमी खडा था ताकि हुक्म मिलते ही पाल तान दे। हमारे साथ ही "कैलिफोर्निया" के एक दर्जन मल्लाहों ने भी यह

काम शुरू कर दिया था और अब वे भी इस स्थिति में थे कि हुक्म मिलते ही पाल तान दें।

इस बीच हमारी शोरो वाली तोप भर कर दागी जा चुकी थी। तोप के छूटने का मतलब था पाल तान दिये जायें। हमारे मोरों से धुएं का एक बादल उमडा और तोप की गूंज ने हमारी बिदाई की सूचना कैलिफोर्निया की पहाडियों में प्रसारित कर दी। अगले ही क्षण दोनों जहाज सिर से पैर तक सफेद पालों से लदे खडे थे।

कुछ क्षणों तक शोर-शराबे और गडबड़ झाला का माहौल रहा। मल्लाह रस्सियों पर बन्दरों की तरह उछल रहे थे; रस्सियों और कुन्दे उड़ रहे थे और रस्सियां थामे गाते हुए मल्लाहों की आवाजें एक-दूसरी में घुल रही थी। "चीअरिली मेन !" वाले गीत के साथ मस्तूलों के सिरों पर शिखर पाल तान दिये गये, और कुछ ही क्षणों में सारे पाल तान दिये गये क्योंकि हवा हल्की चल रही थी। शीर्ष पाल पीछे कर दिये गये थे। मल्लाहों की आवाजों के साथ बेलन चरखी "क्लिप-क्लैप" की आवाज के साथ घूमने लगी।

"लंगर उठने लगा है, सर", मालिम ने कहा।

"उसे ऊपर खींच लो !"

"जो हुकुम, सर।"

चरखी पर कुछ जोरदार लंबे हाथ मारे गये और लंगर का सिर दिखायी देने लगा।

"आखिरी बार कहो, हुर्रा !" मालिम ने कहा और "टाइम फार अस टु गो" के सहगान के साथ लंगर कुन्दे से बाध दिया गया। हर काम बहुत तेजी से हो रहा था जैसे अब फिर यह काम नही करना होगा। शीर्ष यार्डों को भर दिया गया और हमारा जहाज घर के लिए समुद्र पर चल पडा।

उसी समय "कैलिफोर्निया" भी रवाना हुआ, और हमने उस तंग खाडी को साथ ही साथ पार किया। हम मुहाने से निकल चुके थे और उससे आगे निकल आने के कारण बिदा की तीन आवाजें करने ही वाले थे कि हमारा जहाज थमता सा नजर आया और "कैलिफोर्निया" सर से हमसे आगे निकल गया। दरअसल बन्दरगाह के मुहाने के आर-पार एक धारा बहती है जिसे सामान्य जहाज तो पार कर लेते हैं लेकिन एक तो भारी होने की वजह से हमारे जहाज का बडा हिस्सा

पानी में था, दूसरे दक्षिए की ओर जाने के कारण हम अनुवात दिशा में चल रहे थे इसलिए हमारा जहाज धारा में भटक गया था जबकि कैलिफोर्निया हल्का होने के कारण उसे पार कर गया था।

हमने इस आशा से कि शायद हवा के दबाव से हमारा जहाज पार हो जाय सारे पाल तान दिये लेकिन हमें सफलता नही मिली। हार कर हम रुक गये और इस बात का इन्तजार करने लगे कि ज्वार आये और हमारे जहाज को वापस चैनल में पहुँचा दे। यह स्थिति चिंताजनक थी और कप्तान भयभीत और चिंतित हो उठा।

"यह वही जगह है जहा "रोजा" किनारे से टकरा कर चूर-चूर हो गया था," हमारे लाल बालों वाले दूसरे मालिम ने वक्त की नजाकत को न समझते हुए कहा।

जवाब में उसे और "रोजा" को बददुआएं दी जाने लगी और वह अनुवात की तरफ खिसक गया। कुछ क्षणों बाद हवा के प्रवाह और ज्वार की उठान ने जहाज को धारा में पीछे की ओर धकेलना शुरू किया और उसे हमारे पुराने लंगरगाह में पहुचा दिया। इसके बाद ज्वार उतर गया और हवा इतनी कम हो गयी कि जहाज का चलना मुश्किल हो गया।

अन्तः हम खालों के मकान के सामने अपनी पुरानी जगह पर आ गये। उस मकान के लोग हमें वापस आया देख कर आश्चर्य करने लगे। हमें ऐसा लगा जैसे हमें कैलिफोर्निया से बाँध दिया गया हो। कुछ मल्लाहो ने तो कसम खा कर कहा कि यह खूनी तट उन्हें कभी सकुशल नहीं जाने देगा।

करीब आधे घन्टे बाद फिर से बेलन चरखी घुमाने का हुक्म दिया गया और लंगर उठा कर बांध दिया गया। लेकिन इस बार अन्तिम विदा लेने का समारोह-पूर्ण कोलाहल नही सुना गया। हमें लौटते देख कर "कैलिफोर्निया" भी लौट आया था और पाइन्ट के पार हमारा इन्तजार कर रहा था।

इस बार हमने धारा को सकुशल पार कर लिया और जल्दी ही "कैलिफोर्निया" के पास पहुंच गये। उसने भी पालो में हवा भरी और हमारे साथ चल दिया। उसकी मर्जी हमसे दौड़ करने की थी और हमारे कप्तान ने यह चुनौती स्वीकार कर ली, यद्यपि हमारा जहाज इस बुरी तरह ठूंस-ठूंस कर भरा गया था कि दौड़ के

दृष्टिकोण से वह उतना ही अयोग्य था जितना जन्जीरों से बन्धा आदमी, जब कि हमारा प्रतिद्वन्द्वी श्रेष्ठतम साज-सज्जा में था।

पाइन्ट से निकलने के बाद हवा बहुत तेज हो गयी और पालों के बोझ से रायल मस्तूल मुडने को हो गये, लेकिन जब तक हमने यह नही देख लिया कि "कैलिफोर्निया" के तीन मल्लाहो ने ऊपर चढ़ कर अपने पालों को लपेट लिया है तब तक हमने अपने पाल नही लपेटे। पाल लपेटने के बाद वे लोग टापगैलेंट मस्तूलों के सिरो पर ही रुके रहे ताकि आदेश मिलते ही पालो को तानने के लिए उनकी रस्सी ढीली छोड़ दें।

आगे के रायल पाल को लपेटना मेरा काम था। उसे ढीला छोड़ने के लिए वही खड़े रह कर मैंने उस दृश्य का अवलोकन किया। जहा मैं खड़ा था वहां से दोनों जहाज डन्डो और पालो के पुन्ज मात्र से दिखायी दे रहे थे। उनके नीचे उनके तंग डेक ऊपर की हवा के दबाव के कारण टेढ़े हुए जा रहे थे और ऐसा लगता था कि रस्सियो और पालो का बोझ उनसे संभल नही पायेगा।

"कैलिफोर्निया" हमारे मुकाबले प्रतिवात दिशा में था और हर तरह से फायदे में था; फिर भी जब तक हवा तेज रही हम उससे पिछड़े नही। जैसे ही हवा मंद पड़ी वह हमसे आगे निकल गया और रायल पालों को छोड़ देने का हुक्म जारी कर दिया गया।

इससे हम फिर आगे निकल गये, लेकिन हवा के मद पडने के कारण "कैलि-फोर्निया" ने भी अपने रायल पाल तान लिये और जल्दी ही साबित हो गया कि वह हमें पीछे छोडता जा रहा है।

तब हमारे कप्तान ने उसे सलामी दी और कहा कि उसे अपने रास्ते पर चलना चाहिए। उसने यह भी कहा, "अब यह पहले वाला "एलर्ट" नही है, अगर इसकी साज सज्जा तुम्हारे जहाज जैसी होती तो अब तक यह तुम्हारी आंखो से कभी का ओझल हो गया होता।"

"कैलिफोर्निया" की ओर से इसका प्रीतिकर उत्तर आया। वह जल्दी ही कैलिफोर्निया तट की ओर चला गया और हम हवा के रुख में दक्षिण-दक्षिण पश्चिम दिशा में चल दिये। "कैलिफोर्निया" के मल्लाहों ने हवा में अपने टोप हिलाते हुए तीन बार विदासूचक ध्वनिया की जिसका हमने सहर्ष जवाब दिया और उसके जवाब में प्रथा के अनुसार उधर से एक ध्वनि हमें सुनाई दी।

उस जहाज के मल्लाह कैलिफोर्निया के उस घृणास्पद तट पर डेढ़-दो साल का कठिन परिश्रम करने जा रहे थे जब कि हम घर की ओर लौट रहे थे। प्रत्येक घन्टा और प्रत्येक मील हमें अपने घर के नजदीक पहुचा रहा था।

जैसे ही हम "कैलिफोर्निया" से जुदा हुए वैसे ही सब मल्लाहों को दुपेंचा पाल लगाने के लिए ऊपर भेजा गया। जहाज में जितने भी पाल थे वे सब उस पर लाद दिये गये ताकि हवा का छोटे से छोटा अंश भी व्यर्थ न जा सके।

अब हमारे सामने स्पष्ट हुआ कि जहाज का नौभार कितना अधिक है क्योंकि उस समय काफी तेज हवा चल रही थी और पालों से वह पूरी तरह लदा हुआ था फिर भी हम उसे छ. नौट से अधिक रफ्तार से नही चला पा रहे थे।

हम उसकी इस रफ्तार से अन्सतुष्ट थे लेकिन अधिक अनुभवी मल्लाहों का कहना था—"देखते तो रहो, एकाध हफ्ते में यह कुछ ढीला हो जायगा और तब केपहार्न तक यह घुड़दौड़ के घोड़े की रफ्तार से जायगा।"

जब सारे पाल तान दिये गये और डेक साफ कर दिये गये तब हमने देखा "कैलिफोर्निया" क्षितिज पर एक धब्बे की तरह लग रहा था और उत्तर-पूर्व में कैलिफोर्निया का तट एक नीचे बादल जैसा दिखायी दे रहा था। सूर्यास्त के साथ ही वे दोनों भी ओझल हो गये और हमने अपने को एक बार फिर महासागर में पाया जहाँ आकाश और जल एक-दूसरे का आलिंगन कर रहे थे।

* * *

अध्याय—३०

आठ बजे सब मल्लाहों को पिछवाड़े बुलाया गया और यात्रा के पहरे सौंप दिये गये। कुछ फेर-बदल भी की गयी लेकिन मैं इस बात पर खुश था कि मुझे पहले की तरह डाबा बाजू पर पहरा देने वाली टुकडी में रखा गया था। हमारा नाविक-दल पहले से छोटा हो गया था क्योंकि एक आदमी और एक छोकरा तो "पिलग्रिम" में चले गये थे और एक मल्लाह "आयाकुचो" पर दूसरा मालिम बन कर चला गया था। एक तीसरा मल्लाह, जो हमारे नाविक-दल का सब से अनुभवी सदस्य था, कठोर परिश्रम और तट पर लगातार सर्दी झेलने से टूट चुका था और उसे लकवा मार गया था इसलिए उसे कप्तान आर्थर की देख-रेख में वालों के घर में ही छोड़ दिया गया था।

वह अभागा इसी जहाज से घर वापस आना चाहता था, और वह आता भी। लेकिन, मरे शेर से जिन्दा कुत्ता ज्यादा काम आता है और बीमार मल्लाह का कोई साथी नही होता इसलिए काठ-कबाड के साथ-साथ उसे भी पार भेज दिया गया।

इस कमी की वजह से हम लोगो की सख्या ऐसी यात्रा के लिए नाकाफी थी जो कडाके की सर्दियो में की जाये और जिसके बीच में केपहार्न पड़े। एस—के और मेरे अलावा अगवाड में केवल पाच मल्लाह और थे। इनके अलावा स्टीअरेज में चार छोकरे, सिलमाकुर और बढ़ई—नाविक-दल में कुल इतने ही लोग थे। इसके अलावा अभी हमें चले तीन या चार दिन ही हुए थे कि हमारे सिलमाकुर को, जो कि जहाज का सब से अच्छा मल्लाह था, लकवा मार गया और वह बाकी यात्रा के लिए बेकार हो गया। सभी मोसमों में लगातार पानी में चलना, खालें ढोना और दूसरे मेहनत के काम—यह सब बूढे और दुर्बल लोगों की सहन-शक्ति के बाहर की चीज है।

हमारे इन दो मल्लाहो के अलावा "कैलिफोर्निया" का दूसरा मालिम और "पिलग्रिम" का बढई भी काम का बोझ न सम्भाल सके और दूसरा तो सैंटा बारबरा में चल ही बसा। "पिलग्रिम" में हमारे साथ बोस्टन से जो नौजवान चला था वह जैसे ही तट पर पहुंचा वैसे ही गठिया से पीडित हो गया और उसे मल्लाही के काम से हटा कर क्लर्क का काम सौप दिया गया था।

सिलमाकुर के पडने से हमारे पहरे में केवल पांच लोग रह गये जिनमें से दो तो छोकरे थे जो अच्छे मौसम में ही स्टीअर पर खड़े हो सकते थे, बाकी बचे तीन (मैं और दो दूसरे मल्लाह) सो हम तीनो को चौबीस घन्टों में चार-चार घन्टे पहिये पर बैठना पडता था; और दूसरी पहरा-टुकडी में तो कुल चार ही कर्णधार थे।

हर चीज का एक ही जवाब था—"परवाह मत करो—आखिर हम घर ही तो जा रहे हैं", और हमें वाकई कोई चिन्ता न होती अगर हमारे दिमाग में यह बात न होती कि हमें भीषण सर्दी में हमें केपहार्न से गुजरना पडेगा। इन दिन में मई का पहला पक्ष चल रहा था और कोई दो महीने में हमें केपहार्न पहुँच जाने की आशा थी। इसका मतलब यह कि हम जुलाई में वहा पहुचेंगे जो वर्ष भर का सब से खराब महीना होता हैं। इस महीने में सूरज नौ बजे निकलता है और सात

बजे छिप जाता है, रात अट्ठारह घन्टों की होती है और बर्फ व बारिश, झन्झा-झक्कड़ और उत्ताल तरंगों की बहुलता होती है।

हमारे जहाज मे मल्लाहो की संख्या आधी थी और वह भारी बोझ के कारण पानी में इतना नीचा था कि समुद्र की हर उत्ताल तरंग उसे एक सिरे से दूसरे तक बुहार देती थी । ऐसे जहाज में पूर्वोक्त मौसम का सामना करने की संभावना प्रिय नही थी। आते समय "एलर्ट" ने फरवरी में केपहार्न को पार किया था जब कि गर्मियो के दिन थे और हम "पिलग्रिम" में अक्टूबर के अंतिम दिनो में केपहार्न से गुजरे थे फिर भी हमें यात्रा का यह अंश विशेष असुविधाजनक लगा था।

हमारे नाविक दल में केवल एक मल्लाह ऐसा था जिसने जाडों में केपहार्न को पार किया था और वह भी एक ह्व ल जहाज में था जो हमारे जहाज से कई गुना हल्का और कही अधिक ऊंचा था। फिर भी उसका कहना था कि बीस दिन तक लगातार उन्हे नरघाती मौसम का सामना करना पडा, समुद्र की तरगो ने दो बार उनके डेकों पर वाढ का दृश्य उपस्थित कर दिया और जब उन्होने केप का पार कर लिया तब उनकी जान में जान आयी।

"ब्रेंडीवाइन" युद्धपोत को केपहार्न पार करने में साठ दिन लगे थे और उत्ताल तरंगो के कारण उसकी कई नावें बह गयी थी। यह सब सुन कर हम बेचैन हो रहे थे लेकिन केप हार्न को पार करने के अलावा कोई चारा नही था इसलिए सब मल्लाहो ने फैसला किया कि जो होगा देखा जायेगा।

जब हमें नीचे का पहरा दिया गया तो हमने अपने कपड़े ठीक-ठाक किये और बुरे मौसम के लिए नये कपड़े बनाये और पुरानो की मरम्मत की। पहले हर एक मल्लाह ने अपने लिए तिरपाल का एक-एक सूट बनाया था। अब हमने उन्हें बाहर निकाला और उन पर तेल या कोलतार का एक एक हाथ मार कर उन्हें सूखने डाल दिया। हमने अपने भारी जूतो पर भी ग्रीज और कोलतार को पिघला कर पालिश किया और सूखने के लिए टाँग दिया।

इस तरह हमने प्रशातमहासागर की उस गर्म धूप और बढ़िया मौसम का फायदा उठाया और विपरीत मौसम का सामना करने के लिए तैयार हो गये। नीचे के पहरे के समय दोपहर से पहले हमारा अगवाड अनेक चीजों का कारखाना जैसा लगता था—मल्लाह को थोडा-थोडा सभी कुछ जानना होता हैं। हमने मोटी कुर्तियों और ड्रावरों को रफू किया और उनमें थेगड़ी वगैरह लगायी; पेटी की तली

में से मिटेनों को निकाल कर उनकी मरम्मत की गयी, गरदन और कानों को ढकने के लिए मफलर बनाये गये, फ्लेनैल की पुरानी कमीजों को काट कर मंकी जाकेट की शक्ल दे दी गयी, साउथ वेस्टर टोपों के नीचे फ्लेनेल का अस्तर लगाया गया। हम रोगन का एक डब्बा उठा कर अगवाड में ले आये ताकि टोपों के ऊपर की तरफ रोगन किया जा सके। इस तरह हर चीज ठीक-ठाक कर ली गयी। दो साल की यात्रा में हमारे ज्यादातर कपड़े फट-फटा चुके थे लेकिन जरूरत मल्लाह को कम खर्च और नये-नये तरीके खोज निकालने में माहिर बना देती है इसलिए जल्दी ही हममें से प्रत्येक मल्लाह के पास खराब मौसम के लिये काफी कपड़े हो गये यद्यपि अभी अच्छा मौसम ही चल रहा था।

फिर भी एक कठिनाई ऐसी थी जिसका हम कोई इलाज नही कर सके। हमारा अगवाड चूने लगा था और इससे खराब मौसम में हमें बहुत कष्ट होता था। ऐसे में आधी बेंचें तो खाली ही पड़ी रहती थी।

लम्बी यात्रा में जहाज के सबदरे पर लगातार दबाव पडता रहता है और मजबूत से मजबूत जहाज के सबदरे के पहिए तथा अगवाड तक आ पहुंचने वाली खूंटियों के आस-पास चूने लगते हैं। लेकिन हमारा जहाज दायें मोरे की तरफ से लंगर कुन्दे के पास बहुत चू रहा था इसलिए उसके पास की अगली बेंचों पर हम नही बेठ सकते थे और जब हवा जहाज के दायें पहलू पर चलती थी तब तो हमें आगे की सभी बेंचें खाली कर देनी पड़ती थी। जब मौसम बहुत खराब होता था तो एक अगली बेंच के ऊपर भी पानी चूने लगता था। इस प्रकार यद्यपि हमारा जहाज बन्द बोतल को तरह कसा हुआ था जो नौभार को तनिक भी भिगोये बिना बोस्टन तक ले आया फिर भी उसके अगवाड़ में हम सात नाविकों के लिए केवल तीन बेंचें सूखी बचती थीं यद्यपि हमने जहाज का टपकना रोकने की पूरी-पूरी कोशिश की थी।

लेकिन चूंकि एक बार में "पारी बदल बदल कर" नीचे एक ही पहरा-टोली रहती है इसलिए हमारा काम मजे में चलता रहा, और चूंकि अपनी पहरा-टोली में अगवाड़ में रहने वाले हम तीन ही थे (दोनो छोकरे स्टीअरेज में रहते थे) इसलिए प्रायः हमें अपनी-अपनी बेंच सूखी मिल ही जाती थी।

लेकिन यह सब पूर्वानुमान भर था। अभी हम उत्तरी प्रशांत महासागर में अच्छे मौसम में ही सफर कर रहे थे। सैन डियागो से रवाना होने के अगले दिन

से ही उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाएं चल निकली थी और हम उनमें अपने मार्ग पर सानन्द बढ़ रहे थे ।

रविवार, पन्द्रह मई। आज हमें चले हुए एक सप्ताह हो गया था और हम १४° ५६' अक्षांश उ० और ११६° १४' प० देशातर में चल रहे थे। इन सात दिनों में हमने कोई तेरह सौ मील से अधिक का फासला तय कर लिया था। जब से हम चले थे तब से बराबर बडी सुन्दर हवा चल रही थी।

सात दिन तक हमारे निचले और शिखरमस्तूल के दुपेंचा पाल बराबर तने रहे और जब मौका मिलता तब रायल और टापगैलेंट पाल भी तान दिये जाते थे। कप्तान का इरादा शुरू में ही जाहिर हो गया था कि वह जहाज पर अधिक से अधिक पाल तान देना चाहता है ताकि जहाज तेज चल सके। इस प्रकार चौबीस घन्टे में हम प्रायः तीन डिग्री अक्षांश पार कर जाते थे, और साथ ही कुछ देशातर भी तय कर लेते थे ।

दिन के समय हम प्राय. जहाज के सामान्य काम में लगे रहते थे। बन्दरगाह, में बहुत दिन रहने से रस्सिया वगैरह ढीली हो गयी थी, उन्हें ठीक करना था। उन्हे ठीक करने के साथ ही हमने केप हार्न से गुजरने के वक्त के लिए नयी रस्सियाँ भी बांधी और पाल बनाये। कायदा यह कहता हैं कि जब मौसम अच्छा हो तो मल्लाह को चाहिए कि खराब मौसम से अपनी और जहाज की रक्षा करने की तैयारी करे।

जैसा कि पहले भी कह चुका हूँ नीचे पहरा देते समय सुबह के वक्त तो हम अपना काम करते थे और रातें हमेशा की तरह बीतती थी—कुछ देर पहिए पर बैठना, एक निगाह अगवाड पर डालना, कोई रस्सी पकड कर एक झपकी लेना, एक गप हाँकना या फिर, जैसा कि आम तौर पर मैं करता था, अगवाड से पिछवाड तक चहलकदमी करना। हमारे जहाज द्वारा फेंकी गयी हर लहर हमें घर के नजदीक पहुचा रही थी और दोपहर को जब हम दिन भर की प्रगति का निरीक्षण करते थे तो यह आशा बंधती थी कि अगर यही रफ्तार रही तो हम पाच महीने से पहले ही बोस्टन की खाडी में पहुंच जायेंगे।

यह समुद्री जीवन का स्वर्ग है—प्रति दिन सुन्दर मौसम—सुन्दर और प्रचुर पवन—और घर की ओर यात्रा। हर आदमी खुश था, हर बात ठीक थी और सब लोग मन लगा कर काम करते थे। अधपहरे के समय सब मल्लाह डेक पर

जमा हो जाते थे और अगवाड़ के खुले बाजू पर खड़े हो जाते थे या बेलन चरखी पर बैठ जाते थे और समुद्री गीत और समुद्री दस्युओं और डाकुओं के वीर गीत, जो मल्लाहों को विशेष पसन्द आते हैं, गाते थे । घर की चर्चा भी अक्सर होती थी—वहां पहुच कर हम क्या करेंगे, वहा कब और कैसे पहुचेंगे । हर रात जब खाने का टब और बरतन हटा लिए जाते थे और हम रसोई से अपने पाइप और सिगार जला कर बेलन चरखी के पास जमा हो जाते थे तब पहला सवाल यह होता था ।

"क्यों टाम ? आज अक्षाश क्या था ?"

"क्यों, चौदह उत्तर, और तब से जहाज सात नाट की रफ्तार से चल रहा हैं ।"

"अच्छा, तब तो हम पाँच दिन में विषुवत रेखा पर पहुँच जायेंगे ।"

"हां, लेकिन ये व्यापारी हवाएं चौबीस घन्टों से ज्यादा नही रहेंगी", एक अनुभवी मल्लाह कहता, इसके बाद वह अनुवात दिशा में अंगुली दिखा कर कहता, "मैं बादलों की ओर देख कर यह बता रहा हूँ ।"

इस पर तरह तरह से हिसाब-किताब शुरू हो जाता और हवा के जारी रहने, विषुवत रेखा के मौसम, दक्षिणी-पूर्वी व्यापारी हवाओं और केप हार्न पर जहाज के पहुँचने के समय के बारे में तरह-तरह की अटकलें लगायी जाती थी । कुछ साहसी लोग इस बात पर शर्त लगाने के लिए तैयार हो जाते कि इस तारीख से पहले ही जहाज बोस्टन पहुँच जायगा ।

"अभी केप हार्न आने दो, तब तुम्हें पता चलेगा !" एक अनुभवी मल्लाह कहता ।

"हा", दूसरा मल्लाह कहता, "हो सकता है तुम्हारे भाग्य में बोस्टन के दर्शन करना लिखा हो लेकिन उस शुभ दिन के पहले, तुम्हे नरक के भोग भोगने पड़ेंगे ।"

हमेशा की तरह इस बारे मे भी अफवाहे उड रही थी कि केबिन में क्या-कुछ कहा-सुना जाता है । स्टीवार्ड ने कप्तान को किसी से मैगैलन जलसंधि के बारे में बात करते सुना था और पहिए पर बैठे मल्लाह ने कप्तान को एक "यात्री" से यह कहते सुना था कि अगर केपहार्न के पास हवा सामने की हुई और मौसम बहुत खराब हुआ तो वह जहाज को न्यू हालैंड ले जायेगा और केप आफ गुडहोप होता हुआ बोस्टन पहुँचेगा ।

हमारे जहाज पर एक ही यात्री था। कैलिफोर्निया तट पर एक बन्दरगाह से दूसरे पर जाने के अलावा हम यात्रियों को नही बैठाते थे। मैं इस यात्री को तब से जानता था जब मेरे दिन अच्छे थे और मुझे इस बात की कोई आशा न थी कि मैं इसे कैलिफोर्निया तट पर देखूंगा। यह यात्री कैंब्रिज के प्रोफेसर एन—थे। जब मैं आया था तो वे हारवर्ड विश्वविद्यालय में वनस्पति-विज्ञान और आर्निथोलाजी विभाग में प्रोफेसर थे और जब उसके बाद मैंने उन्हे देखा तो वे मल्लाहो की जाकेट और तिनको का चौडा टोप लगाये नंगे पाँव सैन डियागो के रेतीले तट पर चहलकदमी कर रहे थे। उन्होने अपनी पतलून घुटनों तक ऊपर चढ़ा रखी थी और वे पत्थर व घोंघें बीन रहे थे।

वे उत्तरी-पश्चिमी तट की यात्रा करते हुए एक छोटे से जहाज से मोंटेरी पहुँचे थे। वहां उन्होने सुना कि एक जहाज बोस्टन जाने वाला है। "पिलग्रिम" उन दिनों मोटेरी में ही था, इसलिए वे उसमें बैठ कर रास्ते में पडने वाले बन्दरगाहों को देखते हुए और वहा पाये जाने वाले पेड-पौधों, मिट्टी और चिडियों का अध्ययन करते हुए हमारे रवाना होने के कुछ ही पहले सैन डियागो पहुंच गये।

"पिलग्रिम" के दूसरे मालिम ने मुझे बताया था कि उनके जहाज पर एक बूढ़े यात्री है जो मुझे जानते हैं और उसी कालिज से आये हैं जिसमें मैं पढ़ता था। उसे उनका नाम याद नही आ सका लेकिन उसने बताया वे "बुजुर्ग किस्म के आदमी" हैं जिनके बाल सफेद हो चुके हैं और उनका अधिकांश समय झाडियो में और समुद्र-तट पर फूल और घोंघें जैसी चीजों को चुनने में बीतता है। उनके पास बारह सन्दूक और पीपे हैं जिनमें ऐसी ही चीजें भरी हुई हैं।

मैंने एक-एक कर के सभी लोगों पर सोचा कि ये कौन साहब हो सकते हैं, लेकिन मैं कोई पक्का अनुमान नही लगा पाया। अगले दिन हम तट से जहाज की ओर चलने ही वाले थे कि वे अपनी पूर्वोक्त वेष-भूषा में हमारी नाव की ओर आते दिखाई दिये। उन्होंने जूते उतार कर हाथ में ले लिये थे और उनकी जेबें इकट्ठे किये गये नमूनों से भरी हुई थी। मैं उन्हें देखते ही पहचान गया लेकिन उन्हें देख कर मुझे जितना आश्चर्य हुआ उतना शायद और किसी भी बात से नहीं हो सकता था। मुझे पहचानने में शायद उन्हें कठिनाई हुई। हम लोग घर से करीब-करीब एक ही समय में चले थे इसलिए हमारे पास एक-दूसरे को बताने के लिए कुछ नहीं था; और जहाज पर हम दोनों की स्थितियों में इतना अन्तर था कि

वापसी के समय उनसे मेरी मुलाकात कम ही होती थी। जब मैं पहिए पर होता, रात शांत होती और स्टीअर का विशेष ध्यान रखना जरूरी नहीं होता, पहरे का अफसर आगे होता तब वे कभी-कभी पीछे आकर मुझसे कुछ गप-शप कर जाते थे गो यह भी जहाज के नियमों के विरुद्ध था क्योकि यात्रियों और नाविकों को आपस में किसी भी तरह का कोई संपर्क रखने की मनाही है।

जब नाविक लोग इस बात को लेकर परेशान होते थे कि यह यात्री आखिर हो कौन सकता है और उनके तथा उनके काम के बारे में तरह-तरह की अटकलें लगाते थे तब मुझे बडा मजा आता था। जिस तरह हमारा बूढा सिलमाकुर कप्तान की केबिन में लगे यन्त्रों को नही समझ पाता था उसी तरह ये मल्लाह अपने यात्री के बारे में कुछ नही समझ पाते थे। सिलमाकुर क्रोनोमीटर, बैरोमीटर और थर्मामीटर—इन तीनों यन्त्रों को क्रमशः क्रो-नोमीटर, क्रे-नोमीटर और दे-नोमीटर कहता था। "पिलग्रिम" के नाविकों ने अद्भुत चीजो के प्रति अपने यात्री का लगाव देख कर मि० एन— का नाम "ओल्ड क्यूरियोज" रख दिया था। उनमें से कुछ लोगों का खयाल था कि बूढ़ा सनकी है और उसके दोस्तों ने उसका मजा लेने के लिए यहा इस तरह भटकने भेज दिया है। ऐसा न होता तो भला कोई अमीर आदमी (जो लोग हाथ से मजदूरी नही करते और लम्बा कोट पहनते हैं और टाई बांधते हैं उन सभी को नाविक अमीर कहते हैं) सभ्य देश को छोड कर घोंघें और पत्थर बीनने कैलिफोर्निया जैसे प्रदेश में क्यों आता ?

हां, उनमें से एक अनुभवी मल्लाह, जिसे किनारे की दुनिया के बारे में कुछ जानकारी थी, उनके बारे में काफी-कुछ ठीक सोचता था। वह कहता, "अरे मै सब देख चुका हुं!—तुम्हें इनके बारे में क्या मालूम। मैंने उनके कालिज देखे है और सब समझता हूं। वहाँ लोग इन अद्भुत चीजो को संग्रहालयों में रखते हैं और उनका अध्ययन करते हैं। इन चीजों को जमा करने के लिए वे बड़े-बड़े आदमियो को बाहर भेजते हैं। यह बूढा जानता है कि इसे किन चीजों की तलाश है। वह ऐसा बच्चा नही है जैसा तुम समझते हो। वह इन सब चीजों को कालिज ले जायगा और अगर ये पहले की चीजों से श्रेष्ठ सिद्ध हुई तो यह कालिज का हेड बन जायगा। इसके बाद कोई और आदमी नयी चीजो की तलाश में जायगा और उसकी लायी चीजें इससे श्रेष्ठ सिद्ध हो गयी तो इसे फिर जाना पड़ेगा या अपना-पद उसे दे देना होगा। कालिजों का यही तरीका है। यह बूढ़ा सब-कुछ

समझता है। इसने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को अपनी चाल से छका दिया है और एक ऐसे प्रदेश में आ निकला है जहा न तो पहले कोई आया है और न कभी वे आने की सोचेंगे।

इस कैफियत से मल्लाहो की तसल्ली हो गयी और चूंकि एक तो इससे मि० एन—की प्रतिष्ठा बहुत अधिक बढ़ गयी और दूसरे यह कथन काफी हद तक सच था इसलिए मैंने इसका खन्डन नही किया ।

मि० एन—के अलावा हमारे जहाजपर कोई और यात्री नही था; जहाज के कर्मचारी थे और जानवर। जानवर भी तेजी से खत्म हो रहे थे। हम चार दिन के बाद एक बैल को मारते थे इसलिए विषुवत रेखा तक पहुँचने से पहले ही वे सब खत्म हो गये। इसके बाद हमने बकरो और मुर्गो वगैरह पर हाथ साफ करना शुरू किया, बल्कि कहना यह चाहिए कि यह हाथ साफ करना अफसरो ने शुरू किया क्योकि मल्लाहो को ये चीजें नसीब नही होती। बाकी यात्रा के लिए बचे सुअर—जो मल्लाहो की तरह सभी मौसम झेल लेते हैं।

हमारे जहाज पर एक सुअरिया थी जो अनेक बच्चों को जन्म दे चुकी थी और दो बार केप आफ गुडहोप और एक बार केप हार्न का चक्कर लगा चुकी थी। आखिरी चक्कर में वह मरते-मरते बची। एक अंधेरी रात में हमने उसकी दर्दभरी चीख-पुकार सुनी। उस दिन पिछले कई घन्टों से बरफ और ओले पड रहे थे। जब हम सुअरों के बाड़े में गये तो हमने देखा कि वह ठिठुर कर मरने—मरने को हो आयी है। हम कुछ घास फूस, एक पुराना पाल और कुछ और चीजें लाये और उसे लपेट कर बाड़े के एक कोने में रख दिया। जब तक अच्छा मौसम शुरू नही हुआ तब तक वह वहीं रही।

बुधवार, अट्ठारह मई। अक्षांश ९०° ५४' उ०, देशांतर ११३° १७' प०। अब उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाएँ चलनी बन्द हो गयी थी और हम विषुवत रेखा पर सामान्यत: चलने वाली बदलती हुई हवाओं और थोडी-बहुत बारिश का सामना कर रहे थे। जब तक हम इन अक्षांशो में रहे तब तक रात के समय डेक पर पहरा देते हुए हम आराम नही कर सके क्योकि हवा हल्की और परिवर्तनशील थी इसलिए हम सभी को अपनी-अपनी बेंचों पर डटे रहना पडता था।

रविवार, बाईस मई। अक्षांश ५०° १४' उ० देशांतर १६६° ४५' प०। हमें चले हुए पन्द्रह दिन हो चुके थे। अब विषुवत रेखा लगभग पाँच डिग्री दूर

रह गयी थी और आशा थी कि अगर हवा अच्छी रही तो हम दो दिन में वहा पहुच जायेंगे। लेकिन दिन के अधिकाश भाग में हमें ऊपर नीचे चढ़ना-उतरना पडता था जिसे "आयरिश मैन्स हरीकेन" कहा जाता है।

आज लगभग पूरे दिन बारिश होती रही और इतवार होने की वजह से हमें कोई काम नही था। इसलिए हमने डेक के पतनाले बन्द करके उनमें बारिश का पानी भर लिया और अपने सारे कपड़े लाकर धुलाई शुरू कर दी। इसके साथ ही हमने ऊपर के कपडे उतार दिये और साबुन की टिकियें व तौलियो के स्थान पर पालों के पुराने टुकड़े लाकर एक-दूसरे को मल-मल कर स्नान कराया। इस तरह हमने अपने बदन पर चढी कैलिफोर्निया की धूल उतारी। आम मल्लाह को ताजा पानी तो एक खास मिकदार में ही मिलता है और समुद्र के खारे पानी में नहाने से मैल वगैरह नहीं छूटता, इस तरह उसकी उपयोगिता बहुत कम है।

कप्तान तीसरे पहर बराबर नीचे ही रहा और हम लोगों ने स्वच्छन्द होकर गुलछर्रे उड़ाये। कुछ देर बाद मालिम दो छोकरों को अपना बदन रगडने के लिए लेकर आया और वे एक-दूसरे पर पानी उलीचने की बहस में उलझ गये। हमने डेको के पतनाले खोल कर साबुन के झागो वाला पानी निकाल दिया और उन्हे फिर रोक दिया। कुछ देर बाद हमारे लिए पानी फिर इकठ्ठा हो गया। अब हमने इसमें साबुन घोल कर खूब झाग उठाये और नहाये। हमें यह देख कर ताज्जुब हुआ कि साबुन और ताजे पानी ने हममें से अनेक लोगो का रग ही बदल दिया है। हम लोग समझते थे धूप और समुद्र में घूमने के कारण हमारा रंग धूमिल और काला पड गया है लेकिन नहाने के बाद हमारा रंग पहले जैसा ही निकल आया था।

अगले दिन धूप छिटकी हुई थी और जहाज में आगे से पीछे तक हर तरह के कपड़े सूखने के लिए डाल दिये गये थे। हमारे विषुवत रेखा के पास पहुँचने के साथ-साथ हवा कुछ पूरब के रूख की होती जा रही थी और मौसम साफ होता जा रहा था। हमें सैन डियागो से चले बीस दिन हो गये थे कि—

शनिवार, अट्ठाईस मई। आज दोपहर के तीन बजे के लगभग हमने विषुवत रेखा पार की। उस समय हवा दक्षिण-पूर्व से चल रही थी। एक बात बडी असामान्य देखने में आयी कि विषुवत रेखा पार करने के चौबीस घन्टे बाद ही स्थायी दक्षिणी पूर्वी हवाए चलने लगी। ये हवाएं दक्षिण-पूर्व दिशा से कुछ पूरब की

तरफ से सीधी आ रही थीं और हमारे लिए यह अच्छा ही था क्योंकि हमें दक्षिण-पश्चिम की ओर जाना था और इन हवाओं में हम बेफिक्री से जा सकते थे। जहाज में यार्ड बांध दिये गये थे ताकि स्पैंकर से लेकर फलान जीब तक सभी पालों में हवा भर सके और ऊपर के यार्डो पर अगले और प्रमुख टापगैलेंट दुपेंचा पाल तान दिये गये थे और उनमें हवा खूब भर रही थी।

बारह दिन तक समीर इसी प्रकार बहता रहा और इसमें तनिक भी परिवर्तन नहीं हुआ। हवा इतनी बढ़िया थी कि हमने रायल पाल तान दिये थे और हमें बन्धनी लगाने की जरूरत ही नहीं पडी, हमारी प्रगति इतनी अच्छी रही कि समीर के चलने के सात दिन बाद—

रविवार, पांच जून को हम अक्षांश १६° २६' द० और देशांतर ११८° ०१' प० में थे। इसका मतलब यह हुआ कि हमारा जहाज सात दिन में बारह सौ मील तय कर चुका था। अब हमारा जहाज अपनी असली रफ्तार पकड रहा था और सैन डियागो से चलने के बाद अपनी गति में एक तिहाई बढ़ोतरी कर चुका था। मल्लाहों को अब उससे कोई शिकायत नहीं थी और अफसरों को उसकी प्रगति से संतोष था।

यात्रा का यह अंश अत्यन्त आनन्ददायक था। हमारे ऊपर व्यापारी हवाओं के झीने बादल मंडराते रहते थे; प्रशांत महासागर का अतुलनीय तापमान—न गर्म न सर्द—; रोज दिन में उजली धूप और रात में जगमग चाँद-सितारे; दक्षिण में उदित होते नये और उत्तर में डूबते पूर्व परिचित तारा-मन्डल—और हम अपने मार्ग पर निर्विघ्न बढ़ रहे थे।

ध्रुव तारे और सप्तर्षि को हम उत्तरी क्षितिजों में डुबा आये थे और सब मल्लाह अब दक्षिण की दिशा में मैगेलन बादलों की तलाश करते थे जिनके जल्दी ही दिखायी देने की आशा थी।

एक मल्लाह ने कहा "जब ध्रुव तारा हमें दुबारा दिखाई देगा तब हम केप हार्न के दूसरे यानी उत्तरी किनारे पर होंगे।"

यह बात सच थी और इसे देख कर हम निश्चय ही प्रसन्न होते क्योंकि केप हार्न और केप गुड होप का चक्कर लगा कर आने वाले मल्लाह जब पहली बार जमीन के दर्शन करते हैं तभी उन्हें ध्रुवतारा दिखायी देता है।

ये व्यापारी हवाएं वही थीं जो इधर से "पिलग्रिम" में जाते हुए मिली थीं।

"खुदा खैर करे, यह क्या बला है ?" अगवाड की तरफ आते हुए दूसरा खाविम बोला।

मेरे दिमाग में पहला ख्याल यह आया कि शायद किसी भग्न पोत या किसी ह्वेल जहाज के कुछ मल्लाह रात में अपनी नाव में जा रहे हों और हमने अंधेरे में अपना जहाज उनकी नाव से टकरा दिया हो। एक और चीख ! लेकिन यह पहली से कम जोरदार थी। इसे सुन कर हम अगवाड की ओर दौड़े और मोरों में वह अनुवात भाग में देखा-भाला लेकिन हमें कुछ भी दिखायी या सुनायी नहीं दिया। अब क्या हो ? क्या कप्तान को बुलाया जाय और जहाज को ठहराया जाय ?

इसी समय अगवाड को पार करते समय एक मल्लाह की नजर नीचे हो रहे प्रकाश पर पड़ी। जब उसने मोखे से झांका तो देखा कि नीचे की पहरा टुकडी के लोग जाग गये हैं और एक मल्लाह को झकझोर कर जगा रहे हैं। यह मल्लाह कोई दुःस्वप्न देख रहा था और सोते-सोते चीख उठा था। चीख सुन कर उनकी नींद खुल गयी थी और वे हमारी ही तरह घबरा गये थे। वे सोच ही रहे थे कि डेक पर जायें या नहीं कि इतने में ही उनकी ही एक बेंच से दूसरी चीख सुनायी दी और वे समझ गये कि माजरा क्या है।

उस मल्लाह को सबको तंग करने के लिए काफी परेशान किया गया। हमने उसका बड़ा मजाक उड़ाया और अब हम हंस भी सकते थे क्योंकि इस बात के इस तरह खत्म होने से हमें बड़ी राहत मिली थी।

अब हम दक्षिणी उष्ण कटिबंधीय रेखा के निकट थे। हवा बडी शानदार थी। प्रतिदिन सूरज पीछे छूटता जा रहा था और केपहार्न, जिसके लिए हमने इतनी तैयारियाँ की थीं, निकट आता जा रहा था।

जहाज की साज-सज्जा की पूरी तरह जाँच की गयी। जहां जरूरी समझा गया वहाँ मरम्मत की गयी और पुरानी सामग्री हटा कर नयी सामग्री लगायी गयी। पुराने और कमजोर पालों की जगह नये मजबूत पाल लगाये गये। स्प्रिट पाल याडँ, मार्टिंगेल गाईं और बैंक रस्सियाँ कस दी गयी। टापगॅलेंट शीट और कच्ची खालों से बनी पहिये की रस्सियाँ फिट कर दी गयीं। नये अगले शिखर मस्तूल के बैकस्टे फिट कर दिये गये। ये तथा दूसरी तैयारिया अच्छे मौसम में ही कर ली गयी थीं ताकि सर्द मौसम में कोई परेशानी न हो।

रविवार, बारह जून। अक्षांश २६° ०४' द० देशांतर ११६° ३१' प०।
अब स्थायी व्यापारी हवाएं पीछे छूट गयी थी। अब हवाएं प्रायः पश्चिम से चलती थीं और वे परिवर्तनशील हो चली थीं। हमारा जहाज याम्योत्तर पर चलता हुआ दक्षिण दिशा में बढ़ रहा था और सप्ताह के अन्त में...

रविवार, उन्नीस जून को हम अक्षांश ३४° १५' द० और देशांतर ११६° ३८' प० में थे।

*   *   *

अध्याय ३१

अब सारी बातों में एक निश्चित परिवर्तन नजर आने लगा। दिन छोटे होते गए; सूरज प्रतिदिन अंतरिक्ष के अधिकाधिक निकट होता गया और उसकी गर्मी फीकी पडती गई; और रातें इतनी ठन्डी हो गईं कि डेक पर हमारा सोना मुश्किल हो गया; उजली रात में मैगलन बादल नज़र आते; आसमान ठन्डा और अशांत नजर आता, और कभी-कभी दक्षिण की ओर दूर-दूर तक फैला गहरा और कुरूप समुद्र हमें बताता कि अभी हमें आगे क्या-क्या देखना है।

इस पर भी, अभी तेज समीर चल रहा था, और हमने जहाज़ पर जितने भी वह बर्दाश्त कर सकता था, उतने पाल तान दिए और सफर करते रहे। सप्ताह के मध्य में हवा दक्षिण की ओर बहने लगी जिससे हमारा जहाज कसी हुई बोलिन पर आ गया, और जिस ढङ्ग से जहाज ने उस ओर से आने वाले लहरों के प्रचण्ड समूह का आमना-सामना किया, उसे देख कर निरुत्साहित हो जाना बिल्कुल स्वाभाविक था।

क्योंकि जहाज़ भारी व गहरा था, इसलिए उसमें ऐसी उत्प्लावकता नहीं थी जिसके सहारे वह तरंगों को पार कर पाता; और वह उन प्रचण्ड तरंगों में उठने गिरने लगा। पानी डेकों पर तैरने लगा; अक्सर जब कोई असामान्य रूप से विशाल तरंग उसके अगवाड पर चोट करती, तो जहाज़ उसका उत्तर ऐसी निष्प्राण किन्तु भारी आवाज़ के साथ देता था जिस तरह की आवाज़ किसी भारी हथौड़े के तख्ते पर गिरने से पैदा होती है, और वह उसका सम्पूर्ण आघात अगवाड पर सह लेता, और फिर पीछे के हिस्से को उठा कर पानी को मोरियों की ओर बहा देता : इससे सारा सामान...रस्से, मस्तूल, बल्लियाँ, आदि...पानी में नहा उठता, और साथ ही डेक पर जो सामान खुला पडा होता, बह जाता था।

नीचे के हिस्से में सुबह के हमारे पहरे के दौरान जहाज लगातार इसी तरह संघर्ष करता रहा। इस बात को हम मोरों के ठीक सामने लगी हुई बर्थों पर लेटे हुए और अपने सिरों के ऊपर लगे हुए तख्तों की मोटाई के परे, अपने सिरों के ऊपर पानी के बहाव, और मोरों पर लहरों के भारी आघात (जिसकी आवाज़ ऐसी थी जैसे जहाज किसी चट्टान से टकरा रहा हो) के कारण समझ सके। आठ घन्टियां बजने पर पहरे की पुकार हुई और हम डेक पर पहुँचे; एक नाविक पीछे की ओर पहिए पर चला गया और दूसरा डिनर के लिए रसोई से खाना लाने के लिए चला गया।

मैं लहरों की ओर देखते हुए अगवाड में खडा रहा। जहां तक आँख जाती थी ऊंची-ऊंची तरंगें उठती दिखायी दे रही थीं। उनकी शिखा झाग के कारण सफेद थी, और धड गहरे नील जैसा नीला था जिससे सूरज की उज्ज्वल किरणें प्रतिबिम्बित हो रही थी।

हमारा जहाज धीरे-धीरे ऐसी कुछ उत्ताल तरंगो के ऊपर से आगे बढ़ रहा था। फिर एक उत्ताल तरंग उसको लपेट लेने को ललकार देते हुए आगे बढ़ी, और अब अपने "पैरों के नीचे" अपने जहाज का अस्तित्व महसूस करके मैं इतना समझदार मल्लाह हो गया था कि हमारा जहाज इस तरंग को पार नही कर पायेगा। मैं सबदरा कोहनी के ऊपर चढ़ गया, और हाथों से अगले तान को पकड कर मैं उस पर उतर गया। मेरे पैर अभी खम्भे से अलग ही हुए थे, कि जहाज ने तरंग के बीच में प्रहार किया। इससे उसके अगले और पिछले भाग में पानी चढ़ आया और वह पानी में डूब गया। ज्यों ही वह ऊपर उठा, मैंने पीछे की ओर देखा। दीर्घ नौका को छोड कर जो बंधी हुई थी और काबलों से दुहरी जंजीरों से जकडी हुई थी, मुख्य मस्तूल के आगे की हर चीज़ जैसे झाड़-पोंछ कर बिल्कुल साफ कर दी गई थी।

पलक झपकते ही रसोई, सुअरों का बाडा, मुर्गियों का दरबा और भेड़ो का बड़ा हाता जो अगले फलके पर बनाया गया था—सब जा चुके थे। डेक इतना सूना और साफ़ हो गया था जैसे हजामत बनाने के तुरन्त बाद ठुड्डी नजर आती है; और वहाँ एक छड़ी तक बाकी नही बची थी जिससे पता लगता कि रसोई, मुर्गियों का दरबा, सुअरों का बाडा या भेड़ों का हाता किधर बने हुए थे। रसोई मोरियों में उलटी पड़ी थी और भेडों के हाते के कुछ तख्ते इधर-उधर तैर रहे

थे। उनके बीच में आधी दर्जन अभागी भेड़ें, बिल्कुल भीगी हुई, तैर रही थीं और वे इस आकस्मिक परिवर्तन से, जो उन पर आ पड़ा था, बुरी तरह भयभीत हो गयी थीं।

ज्यों ही तरंग शांत हुई, सारे मल्लाह अगवाड़ से निकल कर यह देखने आ पहुँचे कि जहाज़ की क्या हालत हो गई है। कुछ ही क्षणों में रसोइया और ओल्ड बिल रसोई के नीचे से सरक कर बाहर आ गए जहाँ वे पानी के नीचे, लगभग साँस रोके, पड़े हुए थे और रसोई उनके ऊपर थी। सौभाग्य से रसोई जहाज की दीवार के ऊपर ही टिका रहा, नही तो उनकी कुछ हड्डियो का कचूमर जरूर निकल जाता। जब पानी बह गया तो हम भेडो को ऊपर ले आए और उनको दीर्घनौका में रख दिया, रसोई को उनकी जगह लगाया, और चीजों को कुछ हद तक व्यवस्थित किया। अगर हमारे जहाज़ की दीवारें और बाडा असाधारण रूप से ऊंचे होते, तो जहाज की सारी चीजें बह जाती, और ओल्ड बिल व बावर्ची भी न बचते। बिल अगवाड के सहभोज के लिए रसोई के दरवाज़े पर बीफ़ का टब लिए खडा था, कि यकायक टब, बीफ़, वह, और सब कुछ बह गया।

वह आखिर तक भलेमानुस की तरह टब को पकड़े रहा मगर बीफ़ तो निकल चुका था। जब पानी बह गया तो हमने उसे सूखे में पडा पाया, जैसे ज्वार के उतरते वक्त चट्टान नजर आती है—उसको कोई हानि नहीं पहुँची थी। हमने अपने बीफ़ का नुक्सान सहज ही बर्दाश्त कर लिया क्योंकि इस ख्याल से हमें संतोष था कि केबिन को हमारी बनिस्बत कहीं ज्यादा नुक्सान पहुँचा होगा। चिकनपाई और पैनकेक के बचे-खुचे टुकडों को मोरियों में तैरता देख कर हम मन ही मन बड़े खुश हुए।

"इस तरह कैसे चलेगा!" यही बात कुछ ने कही और सबने महसूस की।

अभी तो हम केप हार्न के अक्षांश के एक हज़ार मील की सीमा में भी नहीं पहुँचे थे, और हमारे डेकों को एक ऐसी लहर ने तबाह कर दिया था जो ऊंचाई में उन लहरो की आधी भी न थी जिनका सामना करने की हमें आशा थी। कुछ नाविकों ने जहाज पर इतना ज्यादा माल लाद लेने के लिए कप्तान की निन्दा की; दूसरो का मत था कि केप के परे, जाडों में हवा का रुख हमेशा दक्षिण पश्चिम की ओर होता है, और हवा के रुख में सफर करते हुए हमें इन लहरो की इतनी चिन्ता नही करनी चाहिए।

जब हम नीचे अगवाड में पहुंचे तो ओल्ड बिल ने जो कुछ अपशकुनिया था—समुद्र पर अनगिनत दुर्घटनाओं का सामना कर चुका था—कहा कि अगर जहाज की यही हालत रही तो अच्छा यह होगा कि हम अभी से अपनी-अपनी वसीयतें बना लें, हिसाब-किताब दुरुस्त कर लें, और साफ़ कमीजें पहन लें।

"चुप रहो। तुम अत्यंत मूर्ख और बूढ़े उल्लू हो। तुम हमेशा बेअक्ली की बात करते हो। मोरियों में खाई एक डुबकी से तुम घबरा गए हो। एक मजाक भी बर्दाश्त नहीं कर सकते! हमेशा डेवी जोन्स की तलाश करते रहने का क्या फ़ायदा है?"

"भरोसा रखो।" दूसरा बोला, "यही हालत रही तो हमें दोपहर के पहरे की ड्यूटी नीचे मिलेगी।"

लेकिन इसमें उनको निराशा ही मिली, क्योंकि दो घन्टियाँ बजने पर सबको बुलाया गया और काम पर लगा दिया गया; डेक की हर चीज को बांध दिया गया। कप्तान ने लम्बे टापगैलेन्ट मस्तूलों को नीचा करने की बात चलायी, मगर चूंकि रात होते-होते समुद्र शांत हो गया और हवा रुख बदल कर सामने की ओर बहने लगी, इसलिए हमने उनको न उतारा और दुपेंचा पाल तान दिए।

अगले दिन सारे मल्लाहों को पुराने पाल उतारने तथा नए पाल चढ़ाने के काम पर लगा दिया गया; क्योंकि जमीन पर रहने वाले लोगों के ठीक विपरीत जहाज खराब मौसम में अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनता है। पुराने पालों को नीचे उतार दिया गया, और तीन नए शिखरपाल तथा नए अगले पिछले पाल, जिब तथा अगले शिखर मस्तूल के स्थायी पाल; जो किनारे पर बनाए गए थे और अभी तक इस्तेमाल में न आए थे, तान दिए गए, और उनमें बादवान की नई रस्सियों, पाल की नई रस्सियों, एवं पाल की पट्टियों को बाँधने वाली नई रस्सियों का इस्तेमाल हुआ। पूर्वोक्त रस्सियों, नई बंधनियों और छल्ला-रस्सियों के कारण अब हमारी चल रस्सियाँ नयी हो गयीं।

हवा पश्चिम की ओर बहती रही, और जिस दिन हमने उस उत्ताल तरंग का सामना किया था, उस दिन के मुकाबले मौसम और समुद्र, दोनों अपेक्षाकृत कम अशांत रहे। हम दुपेंचा पालों और हलके पालों को ताने हुए, द्रुत गति से, दक्षिण दिशा में तनिक पूर्व की ओर सफ़र कर रहे थे; क्योंकि कप्तान ने केप के परे पश्चिमी हवाओं पर निर्भर करके अब तक जहाज का रुख किसी कदर पश्चिम की

ओर ही रखा था। हालांकि अब हम केप हार्न के अक्षांश की पांच सौ मील की सीमा में थे, फिर भी हम उसके पश्चिम में लगभग सत्रह सौ मील दूर थे। ज्यों ही हम दक्षिण की ओर जहाज का रुख पूर्व की ओर करके आगे बढ़े, हमें शेष सप्ताह हवा अनुकूल मिलती रही, और हवा बराबर डाबा बाजू पर रही, जब तक कि—

रविवार, छब्बीस जून को चूंकि दिन अच्छा और साफ था, कप्तान ने चन्द्रमा का पर्यवेक्षण किया, साथ ही याम्योत्तर का अक्षांश भी देखा, जिसने हमारा ४७° अक्षांश ५०' रेखांश ११३° ४६' पश्चिम में होना सिद्ध किया। अब मेरे हिसाब से केप हार्न पूर्व-दक्षिण-पूर्व ½ पूर्व, दिशा में अठारह सौ मील दूर था।

सोमवार, सत्ताईस जून। आज दिन के पहले भाग में मन्द हवा चलती रही। जिस तरह हम पहले सफर कर रहे थे, उसी तरह अब भी हमें ज्यादा ठंड न लगी, और हम साधारण कपड़ों में तथा गोल जैकेट में डेक पर काम करते रहे। दोपहर के पहरे की हमारी ड्यूटी नीचे थी। जब से हम सैन डियागो से चले थे, हम पहली बार तीसरे मालिम से दोपहर का अक्षांश पूछ कर, और अपनी सामान्य अटकलें लगाने के बाद कि जब जहाज हार्न के निकट होगा, तब क्या समय होगा, एक झपकी लेने चले गए।

हम गहरी नींद में सो रहे थे कि यकायक मोखे पर तीन चोट पडी और "सब के सब, आओ" की आवाज ने हमें चौंक दिया। बात क्या हो सकती है? हवा बहुत तेजी से बहती हुई मालूम नहीं हो रही थी, और मोखे से झांकी लेने पर हमने देख लिया था कि आसमान बिल्कुल साफ है। फिर भी पहरे की पुकार हुई थी। हमने सोचा, जरूर कोई जहाज दिखाई दिया है, और कि हमें उससे बातें करने का मौका मिलेगा; और हम इसके लिए स्वयं को बधाई दे ही रहे थे—क्योंकि जब से हमने बन्दरगाह छोडा था, न तो हमें कोई जहाज ही दिखाई दिया था और न ही जमीन—कि हमने डेक से जाती हुई मालिम की आवाज सुनी (उसने कहा, "सब खडे हो जाओ" और वह स्वयं हमेशा, जब पुकार होती, उसी क्षण डेक पर पहुँच जाता); जो कुछ नाविक दुपेंचा पालों को उतार रहे थे, और वह गा रहा था, और पूछ रहा था कि मेरी टोली के लोग कहां रह गये?

हमने दूसरी पुकार के लिए प्रतीक्षा नहीं की और सीढी पर झपटे। अब हमने देखा कि जमना बाजू के मोरे पर कुहरे का एक बादल, समुद्र और आकाश दोनों को ढके हुए, सीधे हमारी तरफ बढ़ा आ रहा था। मैं ऐसा बादल पहले "पिल-

ग्रिम" पर भी देख चुका था और मुझे मालूम था कि इसका मतलब क्या है। मैं जानता था कि अब एक क्षण भी नष्ट नहीं करना चाहिए। हमारे शरीरों पर केवल पतले कपड़े थे, फिर भी बर्बाद करने के लिए हमारे पास एक क्षण भी न था; अतः हम तुरन्त काम पर लग गए।

दूसरी टोली के मल्लाह ऊपर चढे हुए थे और टापगैलेंट दुपेंचा पालों को उतार रहे थे, निचले और शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल तेजी से नीचे आ रहे थे। धीरे-धीरे सारे दुपेंचा पाल उतार लिये गये, और रायल पाल, फ्लान जिब और पिछले टापगैलेंट पाल लपेट दिये गये। और जहाज़ उस तूफ़ान का सामना करने के लिए तैयार हो गया। जहाज़ के ऊपर अगले और प्रमुख टापगैलेंट पाल अभी भी लगे हुए थे क्योंकि यह "तजुर्बेकार जहाज" दिन दहाड़े तूफ़ान से डर नहीं सकता था, और यह निश्चित था कि वह आखिरी क्षण तक पाल ताने रहेगा।

हम सब खड़े तूफ़ान के हमले का इन्तज़ार करते रहे। पहले झोंके ने ही हमें बता दिया कि इसको आसानी से बर्दाश्त करना मुश्किल है। वर्षा, ओले, बर्फ और हवा—इस सबने मजबूत से मजबूत आदमी को पीठ दिखाने पर मजबूर कर दिया; जहाज़ एक ओर को झुक गया था; मस्तूल के डन्डे और रस्सियां-रस्से चटाख से टूट रहे थे, टापगैलेंट मस्तूल बेंत की तरह झुक गये थे।

"अगले, और प्रमुख टापगैलेंट पालों को कसकर बांधो"—कप्तान ने चिल्लाकर कहा और सब उस तरफ़ दौड़ पड़े।

डेक उस वक्त लगभग पैंतालीस डिगरी के कोण में झुके हुए थे, और जहाज़ पानी में पागल घोड़े की तरह भागा जा रहा था, उसका पूरा अगला हिस्सा फेन से ढंका हुआ था। पाल की रस्सियां खोल दी गयी, और यार्डों को नीचा कर दिया गया। कुछ ही क्षणों में पाल छल्ला रस्सियों और बंट लाइनों पर झुक गये।

"क्या इनको लपेट दें, श्रीमान ?" मेट ने पूछा।

कप्तान ने भरसक जोर लगाकर जवाब दिया—"अगले और पिछले शिखरपालों की रस्सियाँ खोल दो!"

शिखरपालों के यार्ड नीचे आ गए। अब हम पवन के बहाव के वपरीत दिशा में खुले बाजू की रस्सियाँ वगैरह ठीक करने ऊपर चढे। हवा, बर्फ़, और ओलों की तेजी हमें रस्सियों से चिपकाये दे रही थी। इनके सामने खड़ा होना बड़ा मुश्किल था। एक-एक करके हम यार्डों के ऊपर आ गए। यहां का काम बड़ा

कठिन था, क्योंकि हमारे नए पाल जो अभी इस कदर खोले भी नहीं गए थे कि उनका कलफ निकल जाए, अब तख्ते के समान सख्त हो गए थे, और नए ईयरिंग तथा रीफ डोरियां जो ओलो के कारण कठोर हो गयी थी, अब लोहे के तारो के समान चोट पहुंचा रहे थे। गोल जैकेट और तिनकों का टोप पहने, हम जल्दी ही बिल्कुल भीग गए। मौसम हर क्षण अधिक ठन्डा होता जा रहा था। हमारे हाथ शीघ्र ही अकड कर सुन्न पड गए। हर वस्तु की कठोरता के अलावा, इस बात के कारण हमें यार्ड पर काफी देर लगी।

यह काम करने के बाद हम घुटनों तक पानी में डूबे हुए डेक पर उतर आए, अब हमने पाल की रस्सियों को अनुवात की ओर किया और शिखरपाल तान दिया, और तब हम प्रमुख शिखर पाल यार्ड पर गये और उस पाल को उसी रंग से छोटा किया। जैसा मैंने पहले भी कहा है, हमारी संख्या काफी कम हो गई थी; और सबसे खराब बात यह थी कि हमारे बढई ने, सिर्फ दो दिन पहले, अपने पैर में कुल्हाडी मार ली थी, इसलिए वह ऊपर चढ नहीं सकता था। इससे हमारी शक्ति इतनी कम हो गई कि हम ऐसे मौसम में एक समय में एक से अधिक शिखरपाल को नही संभाल पा रहे थे; और हमें दुगुनी मेहनत करनी पड रही थी। प्रमुख शिखरपाल यार्ड से हम प्रमुख यार्ड पर पहुंचे और हमने प्रमुख पाल में एक लपेट दे दिया। अभी हम डेक पर पहुंचे ही थे कि आज्ञा मिली—

"पिछले शिखरपाल वाले नाविको! ऊपर पहुंचो और पिछले शिखरपाल को छोटा कर दो!"

यह आज्ञा मेरे लिए थी। सबसे नजदीक होने के कारण मैं सबसे पहले ईय-रिंग पर जा पहुंचा। अंग्रेज बेन मेरे तुरन्त बाद यार्ड पर पहुंचा और उसने अनु-वात की ईयरिंग को सभाला। हमारी टोली के शेष मल्लाह भी फौरन यार्ड पर पहुंच गए और पाल को संभालने लगे। तभी मालिम ने दया करके रसोइए और स्टीवार्ड को भी हमारी सहायता करने के लिए भेज दिया। मैं कह नहीं सकता कि दूसरों को अपना काम करने में कितना समय लगा लेकिन पाल कोनों पर एक शक्तिशाली मल्लाह की सहायता पा कर भी, अपनी शक्ति भर प्रयत्न करने के बावजूद, मैं रस्सी की सहायता से पाल को यार्ड से तब तक नही बांध सका जब तक कि बंट में स्थित मल्लाह देरी के लिए मेरी आलोचना न करने लगे।

पाल को छोटा करने के बाद हम नीचे उतर आए और पाल की रस्सियों पर काम करने लगे।

इस बीच जिब को लपेट दिया गया था, और स्थायी पाल को लगा दिया गया था, और जहाज के पाल अब चूंकि कम कर दिए गए थे, इसलिए वह सीधा हो गया था और नियन्त्रित किया जा सकता था। लेकिन बंट लाइन में दो टापगैलेंट पाल अभी लटके रह गये थे और वे फडफड करते उसे इस तरह झकझोर रहे थे जैसे वे मस्तूल को ही उखाड फेंकेंगे। हमने मस्तूल के शिखर की ओर देखा और हम समझ गए कि हमारा काम अभी भी पूरा नही हुआ है, और ज्यों ही मालिम ने हमें डेक पर मौजूद देखा कि "चार आदमी ऊपर चढ़ो और टापगैलेंट पालों को लपेट कर बाध दो।"

यह हुक्म फिर मुझे दिया गया था। हम में से दो आगे की रस्सियों की ओर गए, और दो नाविक प्रमुख टापगैलेंट यार्ड की ओर लपके। बरांडलों के ऊपर अब बर्फ जम गया था, स्थिर रस्सियों के चारो ओर तथा मस्तूलों और यार्डों के खुले बाजू पर ओले परत या केक के रूप में जम गए थे। जब हम यार्ड पर पहुँचे तो मेरे हाथ इतने सुन्न पड गए थे कि जान जाने का खतरा होता तो भी मैं गैस्केट डोरी की गाँठ न खोल पाता।

कुछ देर तक हम दोनों अपने हाथों को पाल पर पटकते हुए यार्ड पर पड़े रहे। फिर हमारी अंगुलियों में खून दौड़ना शुरू हो गया और अगले ही क्षण हमारे हाथ खून की अच्छी रफ्तार के कारण काफी गर्म हो गए।

यार्ड पर इस समय जो छोकरा मेरे साथ था, वह बोस्टन के एक स्कूल में पढ़ा हुआ एकदम कमजोर व नातजुर्बेकार लड़का था। वह "स्प्रिट पाल की रस्सी की गाँठ से ज्यादा बड़ा" नही था, "न ही वह इतना ताकतवर था कि छोटी सी मछली को बरतन में से निकाल सके।" लेकिन यही छोकरा अब "शिखर मस्तूल सा लम्बा, बैल को लडाई में हरा देने और खा जाने लायक बलवान हो गया था।"

हमने मिलकर पाल को सम्भाला। छह या आठ मिनटों तक घसीटने, खींचने और ढकेलने के कठिन श्रम के बाद हम पाल को बांधने में सफल हो सके। पाल इस वक्त लोहे की चादर जैसा सख्त हो गया। हमने उसको बहुत अच्छी तरह लपेटा क्योंकि हम जानते थे कि अगर यह पाल किसी जगह से भी खुल गया तो

मालिम हमको रात में किसी वक्त भी, जब हम नीचे के हिस्से में पहरा दे रहे होंगे, बुला लेगा और उसको फिर से बांधने के लिए ऊपर भेज देगा।

मैं एक मिनट की मोहलत चाहता था ताकि मैं जल्दी से कूद कर नीचे पहुंच जाऊं और मोटी जैकिट तथा बरसाती टोप झटपट उठा लाऊं। किन्तु जब हम डेक पर पहुँचे तो हमें पता लगा कि आठ घन्टिया बज चुकी हैं, और कि दूसरा दल पहरे के लिए नीचे जा चुका है। इसका अर्थ यह था कि अभी हमें दो घन्टों का अधपहरा देना है, और करने के लिए अभी बहुत-सा काम पडा है। अब दक्षिण-पश्चिम से तेज झन्झा चलने लगी थी लेकिन अभी हमारा जहाज दक्षिण में इतना नहीं गया था कि हम उसका लाभ उठा सकें। डेकों पर बर्फ जमी हुई थी। ओले लगातार बरस रहे थे। वास्तव में केपहार्न का मौसम पूरी गम्भीरता से शुरू हो गया था। इन सारी कठिनाइयों के बावजूद अन्धेरा होने से पहले हमें सारे दुर्पचा पालों को उतारना और सम्भाल कर रखना था। फिर मस्तूल के शिखर पर चढ कर हमें आगे और पीछे की नल्लियों को दुरुस्त करना था, और पालों की रस्सियो और डोरियों की तह कर के रखना था।

चार या पाँच मल्लाहों के लिए इतना सब कुछ कर लेना बहुत मुश्किल था जब कि तेज तूफान हमें उडाये दे रहा था और रस्सियां बर्फ के कारण इतनी सख्त हो गई थीं कि उनको मोडना लगभग असम्भव था। अगले यार्ड पर अपना काम निबटाने में मुझे लगभग आधा घन्टा लग गया।

अन्धेरा हो जाने के बाद हम इस काम से निबटे। जब हमने चार घन्टिया सुनीं तो हम बड़े प्रसन्न हुए। इस सकेत ने हमें दो घन्टे के लिए नीचे भेज दिया। हममें से प्रत्येक को रोटी और बीफ के साथ चाय मिली। लेकिन इससे भी अच्छी बात यह हुई कि हमें मौसम के मुताबिक मोटे व सूखे कपड़े पहनने का मौका मिला। हमारे पतले कपडे तो बिल्कुल भीग गए थे और ठन्ड से जम चुके थे।

मौसम का यह आकस्मिक परिवर्तन अन्य सभी नाविको को भाँति मुझे भी अप्रीतिकर लगा। हम इसके लिए तैयार नही थे। कई दिनों से मेरे दांत में दर्द हो रहा था। यह ठन्डा मौसम तथा भीगना, व बर्फ में ठिठुरना मेरे दांत के दर्द के लिए कोई अच्छी बात न थी। मुझे शीघ्र ही महसूस हुआ कि दर्द जोर पकडता जा रहा है और चेहरे के सारे हिस्सों में फैलता जा रहा है। पहरा खत्म होने से पहले ही मैं जहाज के पिछले हिस्से में मालिम से दवा लाने गया। दवाओं की

पेटी का अध्यक्ष मालिम ही था। लेकिन पेटी को देख कर ऐसा लग जैसे हमारा सफ़र खत्म हो गया हो। लौडनम की कुछ बून्दो को छोड कर उसमें कुछ न बचा था और इसको सकट काल के लिए बचा रखना आवश्यक था। इसलिए मुझे बिना दवा के दर्द को बर्दाश्त करना पडा।

आठ घन्टिया बजने पर जब हम डेक पर पहुँचे तो हमने देखा कि बर्फ गिरनी खत्म हो गई है, और आसमान में कुछ तारे चमक रहे हैं। मगर बादल काले थे, और झन्झा लगातार चल रही थी। आधी रात से थोडा पहले मैं ऊपर चढा और पिछले रायल यार्ड को नीचा कर दिया। सौभाग्य से यह काम मालिम को संतोष-जनक लगा। उसने कहा कि यह मैंने "बड़े ढङ्ग से" किया है। नीचे के हिस्से में अगले चार घन्टे मैं चैन से न बिता सका। सारे वक्त मैं अपनी बर्थ पर आंखें खोले लेटा रहा। मेरे चेहरे में दर्द हो रहा था। मैंने हर घन्टी की आवाज़ साफ़ साफ़ सुनी। चार बजे मैं ड्यूटी देने के लिए बाहर आया। उस वक्त मुझ में दिन की कष्टपूर्ण ड्यूटी को निबाहने के लिए बहुत कम उत्साह था।

समुद्र पर यात्रा करते हुए कोई मनुष्य खराब मौसम और कठिन श्रम को झेल सकता है, बशर्ते उसमें उत्साह हो और वह स्वस्थ हो। शरीर में पीडा व नींद की प्रबल इच्छा किसी को भी पस्त कर दे सकती है। मगर काम इतना बाकी पडा था कि सोचने के लिए ज़रा भी वक्त न था। कल के तूफ़ान ने और कुछ दिनों पहले की प्रचन्ड तरगों ने कप्तान को विश्वास दिला दिया था (और हमें दस डिग्री दक्षिण की ओर जाना था) कि अभी हमारे सामने कोई अन्य कठिनाई आने वाली है जिसकी ओर से हम निश्चित नहीं हो सकते। अतः उसने लम्बे टापगैलेंट मस्तूलों को नीचा करने की आज्ञा दी।

आज्ञानुसार हम टापगैलेंट और रायल यार्डों पर चढे और फ्लान जिब को लपेट कर टापगैलेंट मस्तूल उतार लिये गये और दीर्घ नौका की बाहरी दीवार के साथ उन्हे डेक पर बाँध दिया गया। फिर रस्सियो को नीचे उतारा गया लपेट कर रख दिया गया तथा डेक के ऊपर शांति छा गयी। जहाज में ऐसा कोई मल्लाह न था जो इन बल्लियों को उतरता देख कर खुश न हुआ हो। क्योंकि जब तक यार्ड ऊपर थे तब तक तूफान के उतार के हलके से संकेत पर ही हमें टापगैलेन्ट पालों को ढीला छोड़ना पड़ता था, और बर्फानी तूफान के वक्त हमें उनको फिर लपेटना पड़ता था। हमें उनकी बर्फ जमी पतली रस्सियों पर उतरना-चढ़ना पड़ता

था, तथादक्षिणी ध्रुव से सीधे आते हुए तूफान के दौरान रायल यार्डों को नीचा करना पडता था ।

इसके अलावा हमारा शानदार जहाज अपने सारे लवे स्तूपाकार मस्तूलो व यार्डों तथा नुकीली बूम (जो बन्दरगाह में उसको अलंकृत करती थी), और सारे पालों को, जिन्होने कुछ दिन पहले एक बादल की तरह उसे ढक रखा था, उतार कर कुश्ती के लिए अखाड़े में उतरने वाले पहलवान की तरह अब बडा भला लग रहा था । यह उसकी एकाकी स्थिति के अनुकूल भी था—उसे इस सुदूर ध्रुव में, जहाँ हर समय रात छायी रहती थी, तूफान, हवा, और वर्फ का अकेला रह कर सामना करना था ।

शुक्रवार, एक जुलाई । अब हम लगभग केप हार्न के अक्षांश के पास पहुँच गये थे । किन्तु अभी हमें पूर्व की ओर चालीस डिग्री सफर और करना था । तेज पश्चिमी झन्झा चल रही थी । हमने यार्डों को पवनानुकूल किया और अगले शिखर-पालों का एक लपेट खोल दिया । अब हम दक्षिण के मार्ग से पूर्व की ओर यह आशा लिए बढे कि हफ्ते-दस दिन में हम केपहार्न पहुँच जाएगे ।

जहां तक मेरा संबंध है, मैं पिछले अडतालीस घन्टों में बिल्कुल नही सोया था । आराम न करने, लगातार भीगते रहने व ठन्ड खाने के कारण सूजन बहुत बढ गया था । मेरा चेहरा सूज कर दुगुना हो गया था । भोजन करने के लिए भी मुंह खोलना मेरे लिए असम्भव था । ऐसी हालत देख कर स्टीवार्ड ने कप्तान से मेरे लिए कुछ चावल उबाल देने की आज्ञा मांगी । लेकिन उसे यह जवाब मिला—

"नही, बिल्कुल नही । उससे कहो कि वह नमकीन बीफ के साथ मोटी रोटी खाए, जैसे और सब खा रहे हैं ।"

इसके लिए मै वाकई उसका आभारी हुआ क्योकि सच्चाई यह है कि कप्तान से मैंने बिल्कुल इसी उत्तर की आशा की थी । फिर भी मुझे भूखा नही रहना पडा । मालिम मल्लाह होने के साथ-साथ इन्सान भी था और हमेशा मुझसे मित्रवत व्यवहार करता था । उसने चोरी से चावल से भरा एक तसला रसोई में भेज दिया और रसोइए से कह दिया कि वह मेरे लिए चावल उबाल दे और "बुड्ढे" को इसका पता न लगने दे ।

अगर मौसम अच्छा होता या हम बन्दरगाह में लंगर डाले पड़े होते तो मैं

डेक से नीचे चला जाता और जब तक मेरा चेहरा बिल्कुल ठीक न हो जाता, तब तक वहीं पड़ा रहता। लेकिन ऐसे खराब मौसम, और मल्लाहों की कमी के कारण मेरे लिए यह मुमकिन न था कि मैं अपनी जगह छोड़कर अलग हो जाऊँ। इसलिए मैं डेक पर मौजूद रहा और अपनी ड्यूटी को जहा तक हो सका, पूरी तरह निभाता रहा।

शनिवार, दो जुलाई। आज सूरज निकता तो सही मगर वह आकाश पर इतना नीचा रहा कि उससे गर्मी नहो मिल सकी, और हमारे पालो तथा रस्सियों से बर्फ नही पिघली। फिर भी उसको चमकता हुआ देख कर हमें सुख मिला। पश्चिम की ओर से समीर निरतर बह रहा था। वातावरण पहले साफ़ और ठन्डा था, किन्तु अब कुछ घन्टों से नम हो गया था और उसमें एक अरुचिकर सीली ठन्डक आ गई थी। पहिये पर से आये मल्लाह ने बताया कि उसने कप्तान को यात्री से यह कहते सुना है कि सुबह से अब तक थर्मामीटर में पारा कई डिग्री नीचे गिर गया है। कप्तान इसका कोई कारण न बता सका था। वैसे उसका अनुमान था कि जहाज के आस पास जरूर कोई हिमखण्ड है। उसने यह भी कहा कि इस अक्षाश में इस मौसम में आज तक कोई हिमखण्ड नही देखा गया।

बारह बजे हम डेक से नीचे गए, और हमने डिनर खत्म ही किया था कि रसोइए ने मोरचे से झांक कर नीचे देखा और हमें अपने जीवन का सुंदरतम दृश्य देखने के लिए डेक पर बुलाया।

सबसे पहले ऊपर पहुंचने वाले ने कहा—"अरे, रसोइए किधर देखूं?" "डावा मोरे पर" और उस तरफ, महासमुद्र में कई मील दूर, एक बहुत बड़ा, टेढ़ा-मेढ़ा, महापिंड तैर रहा था। उसकी चोटियां बर्फ से ढंकी हुई थीं और बीच का हिस्सा गहरे नीले रंग का था। एक नाविक ने जो इसमे पहले उत्तरी महासमुद्र में यात्रा कर चुका था, बताया कि यही हिमशैल है और यह सबसे बड़े आकार वाला है। जितनी दूर तक दीख पड़ता था, दूर-दूर तक सब तरफ, गहरे नीले रंग का समुद्र दिखाई दे रहा था। तरगें काफी ऊंचाई तक उमड रही थी और सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। तरंगों के बीचोंबीच यह विशाल पर्वत-द्वीप पड़ा था। उसके खोखले हिस्से व घाटियां गहरे रङ्ग की दिखाई दे रही थी और नौकें व चोटियां सूरज को रोशनी में जगमग कर रही थीं।

तुरन्त ही सारे मल्लाह डेक पर इकट्ठे हो गए और नाना प्रकार से उसके

सौन्दर्य व उसकी सुषमा की प्रशंसा करने लगे। किन्तु शब्द उस दृश्य की विचित्रता, श्रेष्ठता, भव्यता, व उत्कृष्टता का यथारूप वर्णन करने में समर्थ ही नही है। उसका विशाल आकार क्योकि उसकी परिधि दो से तीन मील तक की जरूर रही होगी और ऊचाई कई सौ फुट—उसकी मंथर गति,—पानी के ऊपर उठती गिरती तलहटी, और बादलों को छूती चोटिया, लहरों का उसमे लगातार टकराना, जो झाग से भरी हुई, ऊंची दौडती हुई, उसके तल पर सफेद परत की कतार बना देती थीं; उस विशाल पिन्ड में भयानक गर्जन करते हुए दरारें पडना, और बडे-बडे टुकडों का अलग-अलग होकर पानी में गिर जाना; साथ ही उसका सामीप्य तथा आसन्नता, जिसके कारण थोडा डर भी लगता था,—इन सबने मिल कर उसे एक विचित्र भव्यता प्रदान कर दी थी।

जैसा मैं कह चुका हूँ—उस पिण्ड का शरीर नीले रङ्ग का था और उसके तल पर जमे हुए झाग की परत पडी हुई थी। ज्यो ही वह कोरों व चोटी पर से कुछ पारदर्शी हुआ, उसका नीला रङ्ग बर्फ की सफेदी में बदल गया। ऐसा लगता था जैसे वह धीरे धीरे बहते हुए उत्तर की ओर जा रहा है। इसलिए हम उससे दूर रहे और उससे बच कर यात्रा करते रहे। दोपहर भर वह हमारी आखों के सामने रहा। जब हम उसकी अनुवात दिशा में पहुंचे, तो हवा बहनी बन्द हो गई। इसलिए हम रात के अधिकांश में उसके पास रहे। दुख की बात यह थी कि आकाश में चाँद नही था। लेकिन आकाश साफ था और हम लोग तारो की ओर धीरे-धीरे बढती उसकी कोरों को देख कर उस अतिविशाल पिण्ड को निरंतर सरकते हुए देखते रहे।

हमारी ड्यूटी के दौरान कई बार जोर से तडकने की आवाज आई। ऐसा लगा जैसे ये आवाजें उस विशाल पिण्ड के लम्बाई में एक सिरे से दूसरे सिरे तक टूटने की आवाजें हैं। कई टुकडे गर्जन करते हुए उस पिण्ड से अलग हुए और समुद्र में गहरे पैठ गए। सुबह के वक्त तेज हवा बहनी शुरू हो गई और हम उसको पीछे छोडकर आगे बढ़ गए। दिन की रोशनी के उगते वक्त वह हमारी आँखों से ओझल हो गया। अगले दिन, यानी

रविवार, तीन जुलाई, को लगातार बहुत तेज हवा बहती रही। हवा अत्यधिक ठन्डी थी। थर्मामीटर में पारा बहुत नीचे पहुँच गया था। इस दिन हमने कई हिमशैल देखे जो विभिन्न आकार के थे। मगर इनमें से कोई भी इतने निकट

नही था। चूंकि हमने उनको बहुत दूर से देखा, इसलिए हो सकता है कि उनमें से कुछ कल वाले हिमशैल से बड़े या उसके बराबर रहे हो। दोपहर के वक्त हम ५५° १२' दक्षिण के अक्षाश में थे, और हमारा अनुमान था कि देशांतर ८६° ५' पश्चिम है। रात होते-होते हवा दक्षिण की ओर बहने लगी, और हमें हमारे रास्ते से कुछ अलग हटा ले गई। एक तेज़, बहुत तेज़ झंझा चल निकली। लेकिन हमने उसकी तरफ़ ज्यादा ध्यान न दिया। वजह यह थी कि न तो वर्षा हो रही थी, और न बर्फ़ ही गिर रही थी, और हमने अपने जहाज के पाल पहले ही छोटे कर लिये थे।

सोमवार, चार जुलाई। बोस्टन में "स्वाधीनता दिवस" के समारोह हो रहे होंगे। कितनी तोपें दागी गई होगी, कितनी घन्टिया बजी होंगी, और हमारे देश के प्रत्येक भाग में सब प्रकार के कितने ही आन्दोत्सव हुए होंगे। छतरियाँ ताने औरतें (जो ठन्डी हवा और महासमुद्र के दर्शन का आनन्द लेने के लिए नैहंट नही गई होगी) और सफेद पैंटें व सिल्क के बड़े-बडे मोजे चढाए छैल-छबीले लोग सडकों पर सैर कर रहे होगे! लोग कितनी आइसक्रीम खा गए होंगे, और दूर से लाया हुआ कितना ही बर्फ़ बिक गया होगा! आज हमने जो हिमशैल देखे हैं, उनमें से अगर सबसे छोटा शैल भी गरीब मल्लाह को बोस्टन में मिल जाय तो उसकी किस्मत खुल जाय। और मैं दावे से कह सकता हूँ कि उसे इस बात में ज़रा भी आपत्ति न होती। किन्तु इतना निश्चित है कि चार जुलाई का पवित्र दिन इस जगह नहीं बीतना चाहिए था।

खैर, स्वयं को गर्म रखना, और जहाज को बर्फ से अलग बचाए रखना—हम इन्हीं कामों में लगे रहे। फिर भी हम में से कोई भी उस दिन के महत्व को भूल न पाया। सारे मल्लाह सोत्साह एक-दूसरे के प्रति शुभ कामनाएं प्रकट करते रहे, अटकलें लगाते और तुलना करते रहे। ये सब हास्यास्पद भी थीं, और गंभीर भी। सूरज चमकीला तो था मगर कुछ काले बादल उसके आस पास दौड़ते हुए उसे फ़ौरन ढंक लेते थे।

दोपहर के वक्त हम ५४° २७' दक्षिण अक्षांश में थे और देशांतर था ८५° ५' पश्चिम। हम पश्चिम की ओर बहुत फुर्ती से बढ़े थे मगर हवा के कारण हम अपने अक्षांश से थोडा हट गए थे। दिन और रात के बीच में, अर्थात् नौ और तीन बजे के बीच में हमने विभिन्न आकार के चौंतीस हिमद्वीप देखे। उनमें से कुछ

तो हमारे जहाज के आकार से ज्यादा बडे न थे, और कुछ उतने बड़े थे, जितना बडा द्वीप हमने पहले देखा था । ज्यों-ज्यों हम आगे बढते गए, मार्ग में मिलने वाले हिम द्वीपों की सख्या बढती गई किन्तु उनका आकार छोटा होता गया । इस दिन सूर्यास्त के समय मस्तूल शिखर से एक आदमी ने बर्फ का बहता हुआ एक विशाल क्षेत्र देखा । इसको दक्षिण-पूर्व में "हिमक्षेत्र" कहा जाता है ।

इस किस्म का बर्फ विशाल हिमशैलों की तुलना में बहुत ज्यादा खतरनाक होता है, क्योंकि हिमशैलों को दूर से देखा जा सकता है, और उनसे बचाव किया जा सकता है । मगर ऐसे बर्फ से, जो विशाल मात्रा में पानी पर तैर रहा हो, और महासमुद्र को झीलों तक ढके हुए हो, और जिसका आकार सब तरह का हो—लम्बा, चपटा, और टूटे हुए डले जैसा, और बीच में पानी के ऊपर बीस बीस फुट ऊंचा उठा हुआ द्वीप हो जो जहाज के ढांचे के बराबर बडा हो; साफ बच कर आगे बढ़ जाना बहुत मुश्किल है ।

इस पर बराबर नजर रखना बहुत जरूरी था । वजह यह थी कि समुद्र के उभार के साथ यह बर्फ हमारे जहाज की तरफ आ रहा था और इसका एक, अकेला टुकडा भी हमारे जहाज में छेद कर सकता था, और यह छेद हमारे विनाश का कारण होता । अगर हम नाव पानी में उतार भी देते, तो हमारा यह प्रयत्न भी बेकार रहता क्योंकि ऐसे समुद्र में कोई नाव नही टिक सकती । और ऐसे मौसम में कोई आदमी नाव में बैठ कर ज्यादा देर तक जिन्दा नही रह सकता । बात यहीं खत्म नहीं हुई । हमारी उलझन और बढी । सांझ होते ही हवा सीधी, पूर्व की ओर से आने लगी, और हमारे एकदम सामने तेज झन्झा चलने लगी जिसमें बर्फ और ओले भी थे । कुहरा इतना घना हो गया कि जहाज की आधी लम्बाई से ज्यादा दूर तक देखना मुमकिन न रहा ।

हमने पश्चिमी झन्झाओं पर अपनी समस्त आशाएं केंद्रित की थीं, लेकिन अब झन्झा पूर्व से आ रही थी और हमारा प्रमुख सहारा टूट चुका था । अब हम केप से पश्चिम दिशा में लगभग सात सौ मील दूर थे । हमारे सामने पूर्व की ओर से आती हुई भयंकर झन्झा थी । मौसम इतना खराब था कि जब तक बर्फ हमारे मोरो के ठीक नीचे न आ जाता, हम अपने चारों ओर बिखरे बर्फ को भी न देख पाते थे ।

चार बजे (तब बिल्कुल अंधेरा था) सारे मल्लाहों को बुलाया गया और

सबको ओले और वर्षा के भयंकर तूफान को झेलते हुए पाल लपेटने के लिए ऊपर भेजा गया। हम सब केप हार्न की पोशाक पहने हुए थे - भारी जूते, बरसाती कंटोप, मोटे कपड़े की पतलून और जैकट, और हम में से कुछ ने उन सबके ऊपर मोम जामे के सूट पहन रखे थे। हम डेक पर बिना अंगुलियों वाले दस्ताने भी पहने हुए थे लेकिन उनको पहनकर ऊपर जाना बेकार था, क्योंकि उनको पहन कर काम नही किया जा सकता। हम चूंकि पहले ही भीग चुके थे और थकान के कारण चूर-चूर हो रहे थे, इसलिए बहुत मुमकिन था कि उन दस्तानों के कारण कोई मनुष्य फिसल कर बोर्ड पर गिर पडता। वजह यह है कि वह उंगलियों से रस्सी पकड़ कर ही ऊपर काम कर सकता था। इसलिए हमने बिना दस्तानों के ही, नंगे हाथों काम करने का निश्चय किया। हमारे चेहरे भी खुले थे। इसलिए भारी वजन वाले बड़े ओलों के लगने से हमारे हाथ और चेहरे घायल हो गये।

अब हमारा जहाज़—उसका ढांचा, डन्डे और स्थायी रस्सियाँ—बर्फ से बिल्कुल घिर गया था। चल रस्सियाँ इतनी सख्त हो चुकी थीं कि उनको मोडना या उनमें गाँठ बाँधना बडा मुश्किल था। सारे पाल लोहे की चादर के माफ़िक सख्त हो गए थे। क्योंकि हमने एक-एक करके (चूंकि इस काम में ज्यादा वक्त और ज्यादा आदमियो की जरूरत थी) कोर्सों, पिछले शिखरपाल और अगले शिखर मस्तूल न तान के पालों को लपेट दिया, और अगले व प्रमुख शिखरपालों को छोटा कर दिया। इसके बाद हमने अगले शिखरपाल को तना रहने देकर जहाज आगे बढ़ाया, और प्रमुख शिखरपाल भी बंटलाइन में तैयार रखा ताकि किसी हिमशैल से बचने के लिए प्रतिवात दिशा में जाने के लिए उसका प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जा सके। फिर पहरा लगा दिया गया जो लगातार सुबह तक चलता रहा।

यह रात बहुत उबाने वाली और बेचैन करने वाली साबित हुई। सारी रात बहुत तेज हवा चलती रही। इसके साथ वर्षा, बर्फ, या ओलों की झडी बराबर लगी रही। यही नहीं, हमारे चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी, और पानी "कीचड की तरह" गाढ़ा हो गया था।

रात भर कप्तान डेक पर मौजूद रहा। उसने रसोइए को रसोई में बराबर ड्यूटी पर रखा। चूल्हे में लगातार तेज आग जलती रही ताकि कप्तान को बराबर काफी मिलती रहे। एक या दो बार उसने अपने अफसरों को भी काफ़ी दी। मगर मल्लाहों को काफ़ी की एक बूंद भी न दी गई। कप्तान सारे दिन सोता

रहता है, और रात में या दिन में, जब चाहे, आ-जा सकता है। उसको तो केबिन में भी काफ़ी या ब्रांडी मिल सकती है, रसोई में काफ़ी मिल सकती है। मगर मल्लाह को, जिसकी ड्यूटी है कि हर मुसीबत का मुकाबला करे और बारिश व ठन्ड में काम करे, अपने सूखे होंठ गीले करने, या पेट को गर्म करने के लिए कुछ भी नहीं मिल सकता।

हमारा जहाज़ "मदिरा-निषेध वाला जहाज़" था। ऐसे दूसरे जहाज़ों की तरह ही यहाँ भी सारा निषेध मल्लाहों के लिए ही था। अगर मल्लाह शराब का एक गिलास भी पी ले तो यह डर रहता है कि वह नशे में धुत न हो जाए, मगर कप्तान पर, जिसके अधिकार में ही सब कुछ रहता है, जो जितनी चाहे, पी सकता है, और जिसके आत्मसंयम और विवेक पर ही बाकी सब लोगों का जीवन निर्भर रहता है, इतना यकीन किया जाता है कि उसके पीने पर किसी किस्म की पाबंदी नहीं लगायी जाती। मल्लाह यह कभी मानने के लिए तैयार न होंगे कि रम उनके लिए खतरनाक चीज़ है। अगर ऐसा है तो उनकी रम उनसे छीन कर अफ़सरों को क्यों दी जाती है? न ही वे यह स्वीकार करेंगे कि मदिरा-निषेध उनके लिए कल्याणकारी है। यह निषेध उनसे वह चीज छीन लेता है जो उनके पास हमेशा रहती है, और उसके बदले में कुछ नहीं देता। अपनी शराब अफ़सरों को दी जाते देख कर वे यह कभी नहीं मान सकते कि यह सब उनके भले के लिए ही किया जा रहा है। उसके बदले में कुछ न पाकर वे यह कभी यकीन नहीं कर सकते कि ऐसा उदारतावश किया गया है।

बात इससे बिल्कुल उलटी है। अनेक मल्लाह इसको ज़ुल्म का एक नया तरीका मानते हैं। इसकी वजह यह नहीं है कि रम उन्हें अच्छी लगती है। मेरा ऐसे एक भी मल्लाह से परिचय नहीं हुआ जो ठन्डी रातों में रम की बनिस्बत गर्म काफ़ी या चाकलेट के मग्गे को ज्यादा पसन्द न करता हो। उन सबकी यही धारणा है कि रम सिर्फ़ कुछ देर के लिए ही गर्म करती है। फिर भी अगर रम से अच्छी कोई अन्य चीज उन्हें नहीं मिल सकती तो उन्हें कम से कम वह तो मिलनी ही चाहिए। उसको पी लेने से थोडी देर के लिए जो गर्मी व जोश मिलता है, सारे मल्लाहों को पिछले भाग में बुलाने और रम देने से उन्हें थोडी देर के लिए सारी रात के उबाने वाले पहरे से जो छूट व तब्दीली मिलती है, और उस मौके का वह किस तरह इन्तजार करते हुए उसके बारे में बातचीत करते हैं—ये सारी बातें

मिल कर रम को ऐसा महत्व दे देती हैं और उसको इतना उपयोगी बना देती हैं जिन्हें ऐसा कोई आदमी समझ ही नही सकता जिसने मस्तूल के पास खड़े होकर पहरा नही दिया है।

उधर से आते समय मै "पिलग्रिम" मे केप हार्न से गुजरा था। वह मदिरा निषेध वाला जहाज् नही था। उसमें बीच वाले और सुबह वाले पहरे के वक्त तथा शिखरपालो को छोटा करने के बाद ग्राग (पानी मिली हुई शराब) दी जाती थी। हालाकि मैंने इससे पहले रम कभी न पी थी, और आगे भी रम पीने का मेरा कोई इरादा न था, फिर भी मैं हवीत के पास जाकर सबके साथ, रम इस-लिए पी लेता था क्योकि इससे थोडी देर के लिए गर्मी मिलती थी और अपने पहरे के कर्त्तव्यो के प्रति हमारी भावनाओं में कुछ भला परिवर्तन आता था। इसके अलावा जैसा मैंने पहले कहा है, जहाज़ पर ऐसा एक मल्लाह भी न था जो काफी या चाकलेट के एक मग्गे के लिए या हमारे रोजमर्रा के पेय के लिए—"अभिमन्त्रित पानी और ईर्ष्या के योग्य चाय१—सारी रम कुत्तो के आगे न डाल दे। मैंने उनको इस तरह की बातें कहते हुए दसियो बार सुना है। मदिरा निषेध का यह सुधार मल्लाहो के लिए सब से अधिक कल्याणकारी था, मगर जब उनको ग्राग भी न दिया जाए, तो उसकी एवज में उन्हें कुछ तो दिया ही जाना चाहिए। आजकल इस सुधार का जिस रूप में अधिकांश जहाजो में प्रयोग होता है, उससे जहाज़ के मालिको की बहुत बचत होती है। यही कारण है कि मदिरा-निषेध वाले जहाजो की संख्या यकायक बहुत बढ़ गई है। उनकी संख्या में इस वृद्धि से मदिरा-निषेध के समर्थकों को भी आश्चर्य हुआ है। अगर प्रत्येक व्यापारी जहाज के खर्चों में से ग्राग को काट कर इस तरह की व्यवस्था कर दी जाए कि

---

१. हमारे लिए जो चाय बनाई जाती थी, उसमें खास-खास चीजें इस अनुपात में मिलाई जाती थी (और जैसा मैंने पहले कहा है—हमारा जहाज़ अमरीका के व्यापारी जहाजों का आदर्श प्रतिनिधि था) : एक पिंट (एक गैलन का आठवां हिस्सा, अर्थात् लगभग ११ छटांक) चाय, डेढ पिंट सीरा, और लगभग तीन गैलन पानी। इन तीनों को मिलाकर तांबे के बर्त्तनों में उबाला जाता, और बांटने से पहले एक छडी से घोला जाता ताकि हर एक के हिस्से में बराबर-बराबर मिठास और चाय आए। मगर कैबिनों में चाय आम ढंग से अर्थात् चायदानी में दी जाती थी और अलग से चीनी मिलाकर पी जाती थी।

तूफ़ानी रात में शिखरपाल याडं से नीचे उतरते ही हर मल्लाह को ग्राग की एवज में उतनी ही काफी या चाकलेट मिलेगी तो मेरा ख्याल है कि मल्लाह पुराने तरीके को छोडने के लिए फौरन तैयार हो जाएंगे।[1]

मगर, अब मैं अपने विषय पर आऊं। रात में आठ घन्टे तक हमारा पहरा डेक पर रहा। इन आटों घन्टों के दौरान हम कमर कस कर पहरा देते रहे। प्रत्येक मोरे पर एक आदमी अगले याडं के बन्टे पर एक आदमी, मोरवे पर तीसरा मालिम, प्रत्येक क्वार्टर पर एक आदमी, और पहिए पर हमेशा एक आदमी खडा पहरा देता रहा। मुख्य मालिम लगभग हर जगह मौजूद पाया जाता था और कप्तान के नीचे होने के कारण मल्लाहों को आवश्यकतानुसार आज्ञाएं देता रहा। एक बार बर्फ का एक बडा टुकडा हमारे रास्ते में पडा दिखाई दिया या हमारी ओर सरकता हुआ नजर आया तो सब को आज्ञा दी गई और यथानुसार जहाज़ का मुंह घुमा दिया गया। कभी-कभी याडं को तिरछा कर के या पवनानुकूल बना कर जहाज को बर्फ से बचाया गया। इस बीच सिर्फ चारों तरफ पहरा देने का काम ही ज्यादा हुआ। अगवाड में हम लोगों की आंखें सब से ज्यादा तेजी से दौड रही थी। इस दौरान आगे के पहरे से आने वाली ये बातें ही वातावरण की नीरसता को थोडा घुलाती—"अहा, एक टापू और !", "आगे बर्फ है ?", "अनुवात मोरे पर बर्फ दीख रहा है ?", "थोड़ा बचाओ ?", "ज़रा संभल के ?"

---

१. मैं यहाँ ये टिप्पणियां देना नही चाहता हूँ। क्योकि जहाँ तक साज सामान में बचत कर लेने की बात का ताल्लुक है, मैं कह दूं कि हमारे जहाज के मालिको ने मल्लाहों के लिए दिया जाने वाला सब से अच्छी किस्म का सब सामान विपुल मात्रा में दिया था। इस सामान को बांटने का सम्पूर्ण अधिकार कप्तान को ही होता है। सच तो यह है कि मल्लाहों और अफ़सरों के बीच 'मालिकों' की ख्याति, उनके जहाजो की किस्म व साज—सामान के लिए तथा यात्रा में उदारता के संबध में इतनी ज्यादा थी कि जब कभी यह मालूम होता कि उनका कोई जहाज लम्बी यात्रा के लिए तैयार हो रहा है और कि इस निश्चित समय मल्लाहो को जहाज पर रखा जाएगा—(एक ने मुझे बताया है) तो उस समय से आधा घन्टा पहले ही बहुत से मल्लाह भेडो के झुन्ड की तरह पीपों पर नाचते-कूदते, घाट पर धका-पेल करने लगते थे।

इस बीच पानी और ठन्ड के कारण मेरा चेहरा इतना दर्द करने लगा था कि न तो मैं खा सकता था और न ही सो सकता था। हालाकि रात भर मैंने बाहर खड़े होकर डेक पर पहरा दिया था, फिर भी दिन निकलते-निकलते मेरी हालत ऐसी हो गई कि सारे मल्लाहों ने मुझे नीचे जाकर एक या दो दिन के लिए बिस्तर पर पड़ जाने की सलाह दी। उन्होने मुझे बताया कि अगर मैंने उनकी बात न मानी तो मेरी तबियत ठीक होने में ज्यादा वक्त लगेगा, और यह भी मुमकिन है कि मुझे हनुस्तम्भ (एक बीमारी) हो जाए। जब पहरा बदला तो मैं स्टीअरेज में चला गया। वहाँ मैंने अपना टोप और मफलर उतार दिया और मालिम को अपना चेहरा दिखाया। मालिम ने मुझे फौरन नीचे चले जाने की आज्ञा दी और जब तक सूजन न उतर जाए तब तक आराम करने को कहा। उसने रसोइये को आज्ञा दी कि वह मेरे लिए पुल्टिस बना दे। उसने यह भी कहा कि वह मेरे बारे में कप्तान से बात करेगा।

मैं नीचे चला गया और बदन को कम्बल तथा जैकिट से ढंक कर अपनी बर्थ पर लेट गया। करीब चौबीस घन्टो तक भीषण दर्द से निकम्मा बना हुआ मैं पड़ा रहा और इस बीच न तो मैं सो पाया और न जाग ही पाया। मैंने पहरे की पुकार सुनी, लोगो के नीचे–ऊपर जाने की आवाज़ें सुनीं, और कभी-कभी डेक पर शोर तथा "बर्फ" की आवाज़ें सुनी, मगर मैंने किसी ओर भी ज्यादा ध्यान न दिया। चौबीस घन्टे बीतते–बीतते दर्द कम होने लगा, और मैं देर तक सोता रहा, इससे मेरी तबियत फिर पहली जैसी हो गई। इस पर भी मेरा चेहरा इतना सूजा हुआ व कमजोर हो रहा था कि दो या तीन दिनों तक और मुझे अपनी बर्थ पर लेटे रहना पड़ा।

इन दो दिनों के दौरान (जब मैं नीचे पड़ा था) मौसम काफ़ी–कुछ पहले जैसा ही था—सामने से बहने वाली हवाएं, और बर्फ़ तथा वर्षा; या अगर हवा कुछ धीमी हुई तो कुहरा इतना गहरा होता और समुद्र पर बिछी हुई बर्फ़ की तह इतनी मोटी होती कि जहाज़ का चलना दूभर होता। तीसरे दिन की शाम को बर्फ़ की एक बहुत मोटी तह जम गयी थी और कुहरा इतना घना हो गया कि जहाज़ उससे पूरी तरह ढंक गया। पूर्व की दिशा से बहुत तेज़ हवा बह रही थी। ओले और बर्फ लगातार गिर रहे थे। यह बिल्कुल निश्चित था कि रात बहुत खतरनाक व थकाने वाली साबित होगी। अंधेरा होते ही कप्तान ने सारे

मल्लाहों को जहाज के पिछले भाग में बुलाया और कहा कि कोई मल्लाह इस रात को डेक से हट कर कहीं न जाएं, कि जहाज के लिये सब से बड़ा खतरा आ पहुँचा है, बर्फ का कोई एक टुकड़ा भी उसमें छेद कर सकता है, या जहाज किसी टापू से टकरा कर चूर-चूर हो सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि हमारा जहाज का कल सुबह तक क्या हाल होगा। इसके बाद पहरे निश्चित कर दिए गए और हर एक आदमी को उसकी जगह पर खड़ा कर दिया गया।

जब मुझे इस स्थिति का पता लगा तो मैंने सब के साथ उस खतरे का मुकाबला करने के लिए कपड़े पहनने शुरू किए। इसी समय मालिम नीचे आ पहुचा। मेरा चेहरा देख कर उसने तुरन्त बर्थ पर लेट जाने की आज्ञा दी। उसने कहा कि अगर हम पानी में डूबेंगे तो सब साथ-साथ डूबेंगे, लेकिन अगर मैं डेक पर चला गया तो हो सकता है कि मुझे अकेले ही जिन्दगी भर लेटे रहना पड़े। जहाज के पिछले भाग से अपने लिए मैंने यह पहला आदेश ही सुना था, क्योंकि जब से मैं डेक से उतर कर नीचे आया था, न तो कप्तान ने मेरे लिए कुछ किया ही था और न ही उसने मेरे बारे में कोई पूछताछ की थी।

मालिम की आज्ञानुसार मैं फिर अपनी बर्थ पर लेट गया लेकिन उस जैसी कम्बख्त रात मैं इस जिन्दगी में कभी नहीं बिताना चाहता। मैंने उस रात बीमारी को एक अभिशाप के रूप में जितनी तीव्रता से महसूस किया, वैसा मैंने अपनी सारी जिन्दगी में कभी नहीं किया है। काम में सब के साथ डेक पर मौजूद हो सकता जहाँ करने, देखने और सुनने के लिए कुछ था; जहा ड्यूटी और खतरे में हाथ बंटाने के लिए साथी थे—मगर एक अन्धेरी कोठरी में अकेले ऐसे वक्त बन्द पड़े रहना जहां खतरा डेक पर लडने वालों के बराबर हो और उस खतरे का मुकाबला कर सकने के लिए जरा-सी ताकत भी न बची हो—यह सबसे बडी यन्त्रणा थी।

रात को मैं कई बार डेक पर जाने का निश्चय करके उठा, मगर मैं इसलिए ऊपर नहीं गया क्योंकि डेक पर खामोशी छाई हुई थी जिसका अर्थ यह था कि वहां कोई विशेष काम नहीं हो रहा है, और साथ ही मैंने यह भी सोचा कि ऊपर जाने से कहीं मैं ज्यादा बीमार न पड जाऊं। मगर फिर भी नीचे पड़े रह कर सो लेना कोई आसान बात न थी क्योंकि मेरा सिर मोरों के ठीक सामने टिका हुआ था, और ये मोरे समुद्र की लहरों में छिपे बर्फ के किसी टापू से टकरा कर किसी क्षण भी टूट सकते थे। बोस्टन से सफ़र शुरू करने के बाद मैं सिर्फ इसी बार

बीमार पडा था। बीमारी ने मुझ पर काबू पाने का सब से खराब मौका चुना था। अगर मैं सिर्फ उस रात के लिए पूरी तरह भला-चंगा और हमेशा की तरह ताकत-वर हो जाता तो मैं बाकी सफर के दौरान अपने लिए बुरी से बुरी बीमारी को खुशी-खुशी चुन लेता।

जो लोग डेक पर मौजूद थे, उनके लिए यह रात वाकई बडी भीषण थी। अठारह घन्टों तक पहरा देने के बाद सुबह को नौ बजे जब वे नाश्ते के लिए नीचे आए, तो वे ठन्ड से भीगते रहने और लगातार चिन्ता करते रहने के कारण इतने निढाल हो चुके थे कि बैठते-बैठते ही अपनी गर्दनें लटका कर सो गए; और कुछ तो इतने अकड चुके थे कि बैठ भी मुश्किल से पाए। इन अठारह घन्टों के दौरान उन्हें खाने-पीने के लिए कुछ नही दिया गया था हालांकि कप्तान हर चार घन्टे में एक बार काफी पी रहा था। इस बीच सिर्फ इतना हुआ था कि मालिम ने काफी से भरा एक बर्तन चुरा लिया था। इसके बाद वह यह देखता रहा था कि कहीं कप्तान न आ जाये और दो मल्लाहो ने रसोई के पीछे छुप कर काफी पी ली थी।

हर मल्लाह अपनी जगह पर खडा था।। किसी को भी अपनी जगह मे हटने की इजाजत न थी। सारी रात वे ऐसे ही पहरा देते रहे। उन्हें सिर्फ एक बार जहाज को एक बडे टापू से टकराने से बचाने को प्रतिवात दिशा में जाने के लिए प्रमुख शिखरपाल को तानना पडा था। कुछ मल्लाह तो नीद से इतने अभिभूत हो गए थे कि अपनी जगह पर ही सो गए। तीसरे युवा मालिम की ड्यूटी अगले मोखे पर खुली जगह में खड़े होने की थी। उसका बदन इतना अकड गया कि जब उसको ड्यूटी से छुट्टी मिली तो वह बैठने के लिए अपने घुटनों को मोड तक न पाया। लगातार पहरे के कारण, और ज्यों ही टापू या बर्फ़ के टुकड़े दिखाई देते तो सुकान को तुरन्त बदला देने के कारण जहाज ने रात भर भली प्रकार सफ़र किया था। सिर्फ़ कुछ छोटे टुकड़े हमारे जहाज के रास्ते में आए थे। जब पौ फटी तो सारा महासागर मीलों तक बर्फ़ से ढका दिखाई दिया।

पौ फटने के वक्त अचानक सन्नाटा छा गया। जैसे-जैसे सूरज आकाश में चढ़ता गया, कुहरा कम होता गया। पश्चिम की ओर से समीर बह निकला जो शीघ्र ही झन्झा में परिणत हो गया। अब हवा ठीक थी, दिन की रोशनी थी, और हालाँकि मौसम पहले की बनिस्बत अच्छा था, फिर भी अचरज की बात यह थी कि जहाज रेंग सा रहा था। यह दौड़ता क्यों नहीं? कप्तान क्या सोच रहा

है ?—ये प्रश्न हर एक के दिमाग में खलबली मचा रहे थे; और ये सवाल जल्दी ही शिकायतों और कानाफूसी में बदल गए । खास तौर से, जब दिन की रोशनी इतने कम वक्त के लिए हो और हवा भी अनुकूल दिशा में बह रही हो जिसके लिए सब लोग न जाने कब से प्रार्थनाएँ कर रहे थे—तब ऐसे मौके को हाथ से निकलने देना बहुत खराब बात थी ।

घन्टे बीतते गए । जब कप्तान ने पाल खोलने की आज्ञा देने का कोई संकेत न दिया तो मल्लाह धीरज खोने लगे; और अगवाड में इस सम्बन्ध में ज़ोर-शोर से बातचीत व सलाह-मशविरे होने लगे । सारे मल्लाह ठन्ड व अन्य मुसीबतों से बहुत तग आ चुके थे और जल्दी-जल्दी सफ़र करने के लिए बहुत बेसब्र हो उठे थे । इस अकारण विलम्ब को वे उस उत्तेजनापूर्ण व व्याकुल स्थिति में शांति पूर्वक नही सह सकते थे । कुछ ने कहा कि कप्तान डर गया है,—वह चारो ओर से आने वाली कठिनाइयो और खतरों से बिल्कुल पस्त हिम्मत हो गया है, और इसलिए उसमें पाल खोलने का साहस नही रह गया है । दूसरों ने कहा कि उत्तेजना और असमन्जस की स्थिति मे उसने ब्रांडी और अफ़ीम का इतना प्रयोग किया है कि अब वह ड्यूटी देने की स्थिति में नही है ।

बढ़ई बहुत बुद्धिमान और पक्का नाविक था । उसका मल्लाहो पर बहुत असर भी था । उसने नीचे अगवाड में आकर मल्लाहो को कप्तान के पास जाकर यह पूछने के लिए उकसाया कि वह जहाज को भगाने की आज्ञा क्यों नही देता, या वे उससे सब मल्लाहों की ओर से यह विनती करें कि वह पाल खोलने की आज्ञा दे दे । यह प्रार्थना सब को युक्तियुक्त लगी और इसलिए सारे मल्लाह इस बात पर राजी हो गए कि अगर दोपहर तक पाल न खुले तो वे कप्तान के पास जाएगे । दोपहर हो गई और पाल न खुले ।

एक बार फिर सलाह हुई और यह प्रस्ताव रखा गया कि जहाज की कमान कप्तान से छीन कर मालिम को दे दी जाए । मालिम को यह कहते सुना गया था कि अगर उसको अपने ढङ्ग से जहाज चलाने की छूट होती तो रास्ते में चाहे बर्फ़ होता या न होता, जहाज रात होने से पहले केप का आधा रास्ता जरूर तय कर लेता । मल्लाह इतना तंग आ चुके थे, वे इतना बेसब्र हो चुके थे कि इस प्रस्ताव पर भी विचार हुआ जो खुला विद्रोह था और जिसके लिए कैद की सज़ा थी । बढ़ई यह कहता हुआ अपनी बर्थ पर जाकर बैठ गया कि यह साफ़-साफ़ समझ लो

कि जो हालत पिछले कुछ घन्टो से चल रही है, अगर यही हालत थोड़ी भी देर और रही तो कोई न कोई बडा कदम उठाना ही पड़ेगा ।

बढई के जाने के बाद हम आपस में इसी विषय पर बातें करते रहे, और मैंने दृढ़तापूर्वक अपनी राय इसके विरोध में दी । एक और मल्लाह मुझसे सहमत था । इस मल्लाह को एक ऐसे जहाज के बारे में मालूम था जिसमें मल्लाहो ने कप्तान से असन्तुष्ट होकर कुछ इसी तरह का प्रयत्न किया था और अन्त में उसके गम्भीर परिणाम हुए थे । एस—भी डेक से नीचे आने पर हमें मिल गया और हमने इस कार्यकलाप में कोई भाग न लेने का निश्चय कर लिया । इससे वे इतने निरुत्साहित हुए कि उन्हे अपना यह विचार फिलहाल त्याग देना पड़ा । फिर भी उन्होंने कहा कि वे ज्यादा देर तक बिना पर्याप्त कारण जाने हुए निष्क्रिय नही पड़े रह सकते ।

यह स्थिति चार बजे तक चलती रही । तब सारे मल्लाहों को, जहाज के पृष्ठ भाग में छतरी पर उपस्थित होने की आज्ञा मिली । लगभग दस मिनट में सब मल्लाह अगवाड में लौट भी आए, और सारा मामला ही खत्म हो गया । बात यह हुई थी कि बढ़ई ने असमय ही और मल्लाहों से अनुमति लिए बिना ही मालिम से पूछा था कि क्या वह जहाज की कमान सम्भालने के लिए तैयार है । उसने मालिम को यह भी बता दिया था कि मल्लाह कप्तान को हटाने का इरादा कर रहे हैं । मालिम ने अपना कर्त्तव्य समझ कर सारी बात कप्तान को बता दी, और कप्तान ने उसी समय सब को पृष्ठभाग में बुला भेजा ।

बजाय इसके कि वह हिंसात्मक उपाय अपनाता, या कम से कम छतरी पर खड़े होकर डींगें मारता, धमकियां या गालियां देता, ऐसा प्रतीत हुआ कि सब के समान संकट और दुख की अनुभूति ने उसका आवेश कम कर दिया है और उसमें अधिक मानवोचित बन्धुत्व की भावना भर दी है । उसने मल्लाहों का स्वागत शान्त, यहां तक कि उदार, ढङ्ग से किया । उसने उनको बताया कि उसे क्या खबर मिली है लेकिन उसने कहा कि मैंने इस बात पर विश्वास नही किया कि जो कुछ मुझे बताया गया है, उस पर अमल करने की कोशिश की जाएगी, कि वे हमेशा अच्छे लोग, आज्ञाकारी लोग सिद्ध हुए हैं और अपनी ड्यूटी को भली-भांति समझते हैं । उसने उनसे उनकी शिकायत पूछी और कहा कि कोई भी यह नही कह सकता कि वह जहाज को चलाने में ढील कर रहा है । (हालांकि यह काफी हद तक सच था) और उचित और उपयुक्त अवसर पाते ही वह, पाल

खुलवा देगा। उसने वर्त्तमान स्थिति में मल्लाहों के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में भी कुछ कहा और उनको यह कहते हुए अगवाड में भेज दिया कि वह इस बात को भूल जाएगा। किन्तु लगे हाथ उसने बढ़ई को यह हमेशा याद रखने के लिए कह दिया कि उसको यह नहीं भूलना चाहिए कि जहाज का कप्तान कौन है, और अगर कभी उसके मुंह से इस किस्म की कोई और बात निकली तो कप्तान उसे ऐसी सजा देगा कि वह उसे जिंदगी भर याद रखे।

कप्तान के इन शब्दों का मल्लाहों पर बड़ा अच्छा असर हुआ और वे सब शांतिपूर्वक अपनी-अपनी ड्यूटी पर लग गए।

अगले दो दिनों तक हवा दक्षिण और पूर्व की ओर बहती रही। जब कभी थोडी बहुत देर के लिए हवा तेज होती तो हम इसलिए तेजी से सफर न कर पाते क्योंकि पानी पर पड़े हुए बर्फ की परत बहुत मोटी थी। फिर भी मौसम पहले जैसा खराब न हुआ और मलाह हमेशा पहरे पर तैनात रहे। मैं अभी भी बर्थ पर पडा हुआ था। हालांकि मैं बहुत तेजी से ठीक हो रहा था, फिर भी अभी मेरे लिए डेक पर मौजूद होना खतरे से खाली नहीं था। और अगर मैं डेक पर पहुँच भी जाता तो भी मैं बिल्कुल बेकार साबित होता क्योंकि मैंने एक हफ्ते से कुछ भी न खाया था। पिछले एक या दो दिन से मैंने जबरदस्ती अपने मुंह में चावल के कुछ कौर डाले थे। लेकिन मेरे शरीर में उससे ज्यादा ताकत नहीं थी जितनी किसी बच्चे के शरीर में होती है।

अगवाड में बीमार पडना वाकई बदकिस्मती की बात है। मल्लाह की जिन्दगी का यह सबसे खराब हिस्सा है; खास तौर से तब जबकि मौसम ठीक न हो। अगवाड़ को कस कर बन्द कर दिया गया था ताकि पानी और ठन्डी हवा अन्दर न आने पाए। मल्लाह या तो डेक पर पहरा देते थे, या अपनी बर्थों पर आकर गहरी नींद में सो जाते थे : इसलिए किसी से बातचीत करने की कतई गुन्जाइश न थी। एक लैम्प वहां जलता रहता था जिसकी लौ इधर-उधर डोलती रहती थी; और उसकी पीली रोशनी इतनी धुंधली होती थी कि देख पाना ही मुश्किल होता था : पढ़ने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। शहतीरों और कारलाइनों से पानी टपकता रहता था और मेरी बर्थ के दाएं-बाएं बहता रहता था। अगवाड इतना भीगा रहता था, उसमें इतना अंधेरा रहता था, और उसकी जगह सन्दूकों

तथा गीले कपड़ों से इतनी ज्यादा घिरी रहती थी कि वहाँ बैठना बर्थ पर लेटने से भी बुरा होता है।

अगवाड़ की ये कुछ खराबियां हैं। सौभाग्य की बात यह थी कि मुझे किसी की सहायता या दवा की जरूरत न थी। यदि वाकई मुझे ऐसी सहायता अपेक्षित होती तो मैं कह नही सकता कि वह मुझे मिल पाती या नहीं। यह सच है कि मल्लाह लोग सहायता देने के इच्छुक रहते हैं, मगर यह कहावत भी सच है...कोई मल्लाह किसी की तीमारदारी करने के लिए जहाज पर सवार नही होता। हमारे व्यापारी जहाजों में आदमियों की हमेशा कमी ही होती है, और अगर कोई बीमार पड़ जाए तो दूसरे को उसकी देखभाल करने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। हर मल्लाह के बारे में यह मान लिया जाता है कि वह स्वस्थ है। यदि वह बीमार पड़ जाता है तो वह अभागा होता है। एक को चर्खी थामनी होती है, दूसरा पहरा देता है: मल्लाह जितनी जल्दी फिर से डेक पर पहुँच सके, उतना ही अच्छा है।

ज्यों ही मेरी तबीयत इतनी ठीक हुई कि मैं अपनी ड्यूटी पर लौट सकूं, मैंने तुरन्त अपने मोटे कपड़े पहने, जूते कसे और बरसाती टोप ओढ़ कर डेक पर जा पहुँचा। हालांकि मैं सिर्फ कुछ ही दिन नीचे पड़ा रहा था, फिर भी हर चीज मुझे बिल्कुल बदली हुई नजर आ रही थी। डेक, पहलू, मस्तूल, यार्ड और रस्सिया...जहाज पर सब कही बर्फ जमी हुई थी। इस वक्त उस पर सिर्फ दो छोटे करके बाधे गये शिखर पाल खुले हुए थे। सारे पाल व रस्सियाँ ठन्ड से जम कर इतने अकड़ चुके थे कि उनको फिर से इस्तेमाल करना बिल्कुल असम्भव लग रहा था।

यही नही, सिर्फ शिखर मस्तूलों के नजर आने से जहाज बिल्कुल अनाथ और लुन्जा दिखाई दे रहा था। सूरज तेजी से चमक रहा था, डेकों से बर्फ पिघल गई थी और ऊपर राख डाल दी गई थी; इसलिए अब हम उन पर चल-फिर सकते थे। इससे पहले बर्फ होने के कारण इतनी फिसलन हो गई थी कि चलना मुश्किल था। ठन्ड इतनी ज्यादा थी कि जहाज का कोई काम नही हो सकता था। इसलिए हमें डेक पर घूमते रहना था और अपने को गर्म रखना था। हवा अभी भी सामने की ओर थी और पूर्व की दिशा में सारा महासागर हिमद्वीपों और हिमक्षेत्रों से पटा पड़ा था।

चार घन्टियाँ बजने पर यार्डों को तिरछा करने का हुक्म दिया गया।

सुकान से नीचे उतर कर नीचे आने वाले एक नाविक ने बताया कि कप्तान ने जहाज का रुख उ०-उ०-पू० से बदल लिया है। इसका क्या मतलब है? कुछ नाविकों ने कहा कि शायद कप्तान का इरादा वाल्परेजो जाने का है, और वह जाड़े वही बिताना चाहता है। दूसरे कुछ मल्लाहों का खयाल था कि उसका इरादा बर्फ का रास्ता छोडकर, प्रशान्त महासागर को पार करके, केप आफ गुड होप का चक्कर लगाते हुए घर की तरफ लौटने का है। किन्तु शीघ्र ही यह पता लगा ि हम मैगलन जलडमरू मध्य की तरफ बढ़ रहे हैं। यह खबर जल्दी ही जहाज म एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गई और हर कोई इसी के बारे में बातें करन लगा। जहाज पर जितने लोग मौजूद थे, उनमें से किसी ने भी कभी जल-डमरूमध्य से होकर सफर न किया था मगर मेरे सन्दूक में, कुछ साल पहले न्यूयार्क के जहाज...ए० जे० डोनेलसन...द्वारा उस रास्ते से की गयी यात्रा का वृत्तान्त रखा था। इस यात्रा-वृत्तान्त को कप्तान ने लिखा था और उसने इस यात्रा को अत्यन्त सुखद बताया था। शीघ्र ही सारे मल्लाहो ने इस वृत्तान्त को पढ लिया और तरह-तरह के मत देने लगे।

कप्तान के इस निश्चय से कम से कम यह फायदा तो हुआ कि हर एक को सोचने और बात करने के लिए एक विषय मिल गया, और हमारी ऊब में कुछ कमी हुई। इससे पहले हम अपनी भावी एकरस यात्रा से उकताए हुए थे; अब इस निश्चय ने हमारे दिमाग को फिर से झकझोरा। हवा अनुकूल थी और इसलिए हम बर्फ की मोटी तहों को पीछे छोडते हुए फुर्ती से आगे बढे जा रहे थे। यह बात कुछ उत्साह जनक तो थी ही।

काफी दिनों तक नीचे रहने के कारण मेरे हाथ गरम और मुलायम हो गये थे, इसलिए पहली बार रस्सों को संभालने में मुझे काफी कठिनाई हुई। लेकिन कुछ ही दिनों में वे फिर पहले की तरह कडे और मजबूत हो गये और जब मैं नम-कीन बीफ और कडी रोटी खाने के लिए अपना मुंह खोलने के काबिल हो गया तो मैं फिर पहले जैसा तन्दुरुस्त हो गया।

रविवार, दस जुलाई। अक्षांश ५४° १०', देशांतर ७९° ०७'—दोपहर को हमारी यह स्थिति थी। सूरज तेजी से आकाश में चमक रहा था, सारी बर्फ पीछे छूट गई थी, और वातावरण में हर्षोल्लास था। हमने अपनी पी जैकेटें और पेंटें डेक पर ले आये इस उम्मीद से उनको रस्सियों पर डाल दिया कि शायद कुछ घंटों

की धूप और हवा से वे सूख जायें। मालिम से अनुमति लेकर मल्लाहों ने बिना अंगुलियो वाले दस्ताने और बड़े मोजे रसोई में सूखने के लिए डाल दिए। इससे रसोई बिल्कुल भर गयी। हम अपने बूट भी ऊपर ले आए और हमने उन पर ग्रीज और कोलतार की एक मोटी पर्त चढ़ा दी।

डिनर के बाद सारे मल्लाह लंगरो को मोरों पर चढाने, अनेक प्रकार के पटों को जंजीरों पर चढ़ाने, इत्यादि के पुराने काम में लग गए। दो-तीन घन्टों के कठिन श्रम के पश्चात दोनो लंगर कभी भी इस्तेमाल किए जाने लायक हो गए। दो छोटे लगर ठीक किए गए, एक मोटा रस्सा अगले फलके पर लपेट दिया गया, गहन समुद्र लोड-लाइन की मरम्मत करके पूरी तरह तैयार किया गया। सामने काम देख कर हमारा उत्साह लौट आया। उस स्थान की निर्जनता को हम भूल गए और चर्खी के जरिये लगर खीचते हुए हमने "चीयरिली हो!" वाला सहगान पूरी मस्ती में गाया।

इससे मालिम खुश हो गया और हाथ मसलते हुए बोला-"ठीक, छोकरो! कभी मौत की बातें न करो। यह तो बूढ़े मल्लाहो के मतलब की बात है।" हमारे गाने की आवाज सुनकर कप्तान भी आ पहुँचा और यात्री से कहने लगा (उसकी बात पहिए पर खडे आदमी ने भी सुनी)–"ये हैं मेरे जोशीले मल्लाह। ये लोग मिटते-मिटते भी गाते रहेंगे।"

तार और लंगरों की यह तैयारी जलडमरूमध्य से गुजरने के लिए की गई थी। कारण यह है कि जलडमरूमध्य बहुत टेढ़ा-मेढ़ा होता है और उसमें तरह-तरह की धाराएं बहती हैं: इसलिए बार-बार लंगर डालने की आवश्यकता होती है। इस सारे काम से कोई अच्छी आशा अंकुरित नही होती क्योंकि मल्लाहों को ठन्डे मौसम में जितने काम करने पडते हैं, उनमें यह काम सबसे बुरा है। जंजीर के भारी तारों को खींचना और नंगे हाथो से उसको डेक पर घसीटना; भीगे हुए रस्सों और रस्सियों को जहाज पर ढोना जिनसे पानी चू-चू कर आपकी बाँहों पर गिर रहा हो और आपकी बाँहें ठन्ड से जमी जा रही हों, मोरों के नीचे लंगर-छेदों को साफ़ करना; रात दिन लंगर उठाना और लंगर डालना, और चट्टानों व रेत तथा ज्वार के रुख को देखने के लिए लगातार पहरा देना :—ये कुछ ऐसे काम हैं जो ऐसी समुद्री यात्रा में हर मल्लाह को भारी मालूम पडते हैं। चाहे उसे ठीक कहिए या गलत, कोई मल्लाह दो बन्दरगाह के बीच की यात्रा के दौरान ये काम करना

पसन्द नहीं करता। हममें से एक दूसरे मल्लाह ने भी एक पुराने अखबार में बोस्टन के एक जहाज की इस जलडमरूमध्य में यात्रा का वर्णन पढ़ा था। मेरा ख्याल है कि इस जहाज का नाम "पेरूवियन" था। विवरण के अनुसार इस यात्रा के दौरान इस जहाज के सारे तार और लंगर नष्ट हो गए थे, दो बार यह उथले पानी में जमीन से टकराया था, और बड़ी ही खस्ता हालत वल्परेजो पहुँचा था। इस वृत्तान्त ने "ए० जे० डोनेलसन" के वृत्तान्त को उलटा सिद्ध कर दिया था और अब आगे की यात्रा के बारे में हमारा आत्मविश्वास डिगने लगा था। इसकी खास वजह यह थी कि एक तो हममें से किसी ने इससे पहले किसी नाविक ने जलडमरूमध्य से होकर यात्रा न की थी और दूसरे कप्तान के पास अच्छे चार्ट भी नहीं थे।

लेकिन हमारे इस प्रकार के अनुभव करने की नौबत ही नहीं आयी। अगले दिन, हम केप आफ पिलर्स के निकट थे जो मैंगलन जलडमरूमध्य का दक्षिणी—पश्चिमी पाइन्ट है; कि पूर्व की ओर से तेज झन्झा चलने लगी। साथ ही कुहरा भी इतना घना हो गया कि हम जहाज की आधी लम्बाई तक भी न देख पा रहे थे।

ऐसा मौसम मिलने के कारण हमें जलडमरूमध्य से होकर यात्रा करने का विचार फिलहाल त्याग देना पडा, क्योंकि घने कुहरे और प्रचन्ड झन्झा में जलडमरूमध्य की दुर्गम और आपदापूर्ण यात्रा करने में कोई बुद्धिमानी नहीं थी। अनुमान यह था कि मौसम को ठीक होने में देर लगेगी, और हम एकाध हफ्ते से पहले जलडमरूमध्य के मुहारे पर नहीं पहुँच सकेंगे। लिहाजा, हमने जहाज का मुंह दक्षिण की ओर घुमाया, और एक बार फिर केप हान के मार्ग पर चल पड़े।

* * *

अध्याय—३२

पहली बार केप पर पहुंचने का प्रयत्न करते हुए जब हम उसके अक्षांश में पहुँचे थे तो केप से हमारा फासला पश्चिम की दिशा में लगभग सत्रह सौ मील था। मगर चूंकि हमने मैंगलन जलडमरूमध्य की ओर जाने के प्रयत्न में हम पूर्व में इतनी दूर पहुँच गये थे कि जब हमने दुबारा केप की ओर चलने का निश्चय किया तो हम उससे केवल चार-पांच सौ मील दूर थे। हमें बडी-बडी आशाएं थी कि इस तरह सफ़र करने से रास्ते में बर्फ़ नहीं मिलेगी। हमने सोचा कि काफी देर से चल

रही पूर्वी झन्झाओं ने बर्फ को अब तक पश्चिम की ओर खदेड दिया होगा। अब हवा लगभग दो पाइन्ट तेज चल रही थी; हमने यार्डों को वातानुकूल कर लिया तथा दो छोटे किये गये शिखरपालों और एक छोटे किये गये अगले पाल को जहाज पर तान कर हमने तेजी से दक्षिण की ओर प्रयाण किया और ड्यूटी बदलने पर हर बार हमें यह महसूस होने लगा कि हवा ज्यादा ठन्डी होती जा रही है और लहरों की ऊंचाई बढ़ती जा रही है।

फिर भी रास्ते में हमें बर्फ नहीं मिला, और हमें उम्मीद होने लगी कि रास्ता बराबर साफ मिलेगा। मगर एक दिन दोपहर को जब हमारी पहरा टोली अग-वाड में थी, और हम झपकी ले रहे थे, हमें यकायक जोर से आती हुई, डरी हुई सी आवाज़ सुनाई दी—"सब के सब आओ!—जल्दी दौडो!—जल्दी-जल्दी दौडो!—अपने कपडों के लिए देर मत लगाओ!—कहीं जहाज़ टकरा न जाए!"

हम अपनी बर्थों से उछल कर तुरन्त डेक पर पहुँचे। कप्तान की जोर-जोर से, आज्ञाएं देती हुई आवाजें हमें सुनाई दी जैसे यह जिन्दगी-मौत का सवाल हो; और हम बिना आगे की ओर देखे फौरन पीछे बधनियों की तरफ़ लपके, क्योंकि एक क्षण भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था। सुकान को कस दिया गया था, और पिछले यार्डों को हिलाकर जहाज को घुमाया जा रहा था। हमने अकडे हुए रस्सों और बर्फ से ढंकी हुई रस्सियों का सहारा लेकर यार्डों को धीरे-धीरे गोलाई में घुमाया। उस वक्त हर एक चीज़ सख्त महसूस हो रही थी और चटखने-फटने की आवाजें इस तरह आ रही थी जैसे बर्फ में जमे हुए किसी तख्ते को खींचने के वक्त आती हैं। जहाज पूरा चक्कर लगा कर घूम गया, यार्डों को साध दिया गया और हमारा जहाज दूसरे रास्ते पर चल पडा। जहाज के पीछे, डावा बाजू के क्वार्टर के ठीक सामने, हम एक विशाल कुहरे के अन्दर से झाक रहे हिम-द्वीप को छोड आये थे। उसकी ऊंचाई हमारे जहाज की ऊंचाई से भी ज्यादा थी। इस द्वीप के दोनों ओर बहते हुए विस्तृत हिम क्षेत्र धुन्धले-धुन्धले दिखाई दे रहे थे।

अब खतरा टल चुका था। लेकिन अगर पहरेदार की तेज निगाहों ने कुछ मिनट पहले यह खतरा ऐन वक्त पर न देख लिया होता तो अब तक हमारा जहाज हिम-द्वीप से टकरा चुका होता और उसके छोटे-छोटे टुकड़े दक्षिणी महासागर में इधर-उधर तैर रहे होते। कुछ घन्टों तक उत्तर की ओर सफ़र करने के बाद हमने

जहाज की दिशा बदली। तभी हवा का रुख भी बदला और हम दक्षिण तथा पूर्व की ओर बढ़ चले।

डेक के हर हिस्से में रात भर लगातार जबर्दस्त पहरा लगा रहा। जब कभी इस या उस मोरे पर बर्फ़ दिखाई देता, सुकान को बदल दिया जाता और यार्डों को पवनानुकूल कर दिया जाता था। फ़ौरन उपयुक्त इन्तज़ाम कर लेने की वजह से जहाज निर्विघ्न आगे बढ़ता रहा। "आगे बर्फ है!"—"अनुवात मोरे पर बर्फ़ है!"—"एक द्वीप और!"—जैसी जानी-पहचानी आवाज़ों ने फिर एक हफ्ता पहले की बातें दुहरा दी।

डेक पर हमारा पहरा बारह बजे से चार बजे तक था। इस दौरान पवन हमारे सम्मुख बहने लगा और ओलों तथा बर्फ़ की भारी बौछार होने लगी। इस पहरे के दौरान हम लगातार छोटे किये गये शिखरपाल ताने आगे बढ़ते रहे।

अगले पहरे के दौरान सन्नाटा छा गया। सुबह होने तक लगातार भारी बारिश होती ही। जब सुबह हुई तो हवा पश्चिम की ओर चलने लगी, मौसम बिल्कुल साफ हो गया, और महासागर साफ-साफ दिखाई देने लगा। इस मौके का फ़ायदा उठाकर हम जहाज को तेजी से चला सकते थे लेकिन हवा हमारे ठीक सामने थी और हमारा रास्ता बर्फ के कारण बन्द हो गया था।

लिहाजा, हमारी प्रगति यहीं रुक गयी। अब हमने जहाज का रुख बदला और एक बार फिर उत्तर और पूर्व की ओर मुंह किया। इस बार हमारा इरादा मैगलन जलडमरूमध्य की ओर जाने का नहीं था। हमारा इरादा तुरन्त केप पर पहुँचने के लिए एक और प्रयत्न करने का था। केप अभी पूर्व की दिशा में काफ़ी दूर था। वजह यह थी कि कप्तान ने निश्चय कर लिया था कि अगर हम निरन्तर उद्योग करते रहे तो केप पर ज़रूर पहुँच जाएंगे। उसने कहा कि यह हमारी तीसरी कोशिश है और तीसरी कोशिश कभी बेकार नहीं जाती।

हवा तेज चल रही थी; इस लिए हम हिम-क्षेत्रों को जल्दी ही पार कर गए। दोपहर को हमें महासमुद्र में एकाध भूला-भटका हिमद्वीप ही नज़र आया। सूरज तेजी से चमक रहा था। समुद्र नीला था। लहरों के सिरों के सफेद झाग प्रबल दक्षिणी-पश्चिमी झञ्झा की दिशा में ऊंचे-ऊंचे उठ रहे थे; समुद्र में हमारा एकाकी जहाज पानी को चीरता हुआ इस तरह बढ़ा जा रहा था जैसे किसी फंद से छूट कर भाग रहा हो। महासागर में विभिन्न आकार-प्रकार के हिमद्वीप इधर-

उधर बिखरे पड़े थे। इन द्वीपों से सूरज की रोशनी प्रतिबिम्बित हो रही थी और ये झन्झा के साथ धीरे-धीरे उत्तर की ओर सरक रहे थे। अब तक हमने जितने दृश्य देखे थे, यह दृश्य उनसे बहुत भिन्न था। इस दृश्य में जीवन के अलावा सभी कुछ था। थोडी सी कल्पना से ही सोचा जा सकता था कि ये विशाल हिम-खंड, जो "बर्फ़ के विराट स्पन्दनशील प्रदेश" से टूट कर अलग हो गये हैं, सजीव पिंड हैं, और हवा या पानी को धारा के सहयोग से, कुछ अकेले अकेले, कुछ अन्यों के साथ, किसी अनुकूल प्रदेशो तक पहुँचने के लिए अपना मार्ग स्वयं बना रहे हैं।

आज तक कोई ऐसी पेन्सिल नहीं बनी जिसने हिमशैल का वास्तविक रूप चित्रित किया हो। चित्र में इनको समुद्र के पानी से चिपके हुए विशाल व अत्यन्त फीके खन्ड के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उनका वास्तविक सौन्दर्य और उनकी गरिमा:—उनकी मन्द-मन्थर गति; उनके शिखरों के आस-पास थिरकता बर्फ़; और उनके टुकडों का भयानक रूप से कराहना व चटखना—ये बातें ऐसी हैं जो किसी चित्र में प्रस्तुत की ही नहीं जा सकती। यह विशाल हिमखन्ड का रूप है। समुद्र के शान्त तल पर छोटे-छोटे और दूरवर्ती हिमद्वीप दिन की तेज़ रोशनी में नीलम के सुन्दर पटी द्वीपो की भांति दिखाई देते हैं।

उत्तर-पूर्व के मार्ग से हट कर हम धीरे-धीरे पूर्व की ओर मुडे। करीब दो सौ मील सफ़र कर लेने के बाद हमने जहाज का मुंह दक्षिण की ओर मोडकर केप के मार्ग पर सफ़र करने का तीसरा प्रयत्न किया, इस वक्त हम टेरा डेल फ्यूगो के पश्चिमी तट के समीप आ गये थे। अब रास्ते में बर्फ दिखाई देना बन्द हो गया था। मौसम लगातार साफ़ और ठन्डा रहा तथा पश्चिम की ओर से तेज़ झन्झा चलती रही। हम तेजी से केप के अक्षांश में पहुँचने के लिए बराबर कोशिश करते रहे। उम्मीद यह थी कि हम शीघ्र ही वहां पहुँच जाएंगे।

एक दिन दोपहर को एक आदमी अगले शिखर पर चढ़ा था कि अचानक वह प्रसन्नता भरी आवाज़ में पूरा ज़ोर लगा कर चिल्ला उठा—"जहाज़ हो!" जब से हम सैन डियागो से चले थे, न तो हमें जमीन दिखाई दी थी और न कोई अन्य जहाज ही। जिस व्यक्ति ने कभी किसी महासागर पर बिल्कुल अकेले सफ़र किया है, वह इस आवाज़ से हम में उत्पन्न होने वाली उत्तेजना का अनुमान लगा सकता है। रसोई से छलांग लगा कर निकलते हुए रसोइया चिल्लाया—"जहाज़ हो!" नीचे वाले मल्लाह तुरन्त अपनी बर्थों से कूद कर डैक पर पहुँच

गये। कप्तान ने कम्पेनियनवे में से केबिन में बैठे यात्री से कहा—"जहाज़ हो !"

किसी दूसरे जहाज और दूसरे मनुष्यों को देखने से हमें आनन्द तो मिलता ही; इसके साथ ही यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण थी कि हम उनसे मिल कर यह जान सकते थे कि पूर्व की ओर बर्फ है या नहीं; हम उनसे अक्षांश भी मालूम कर सकते थे क्योंकि हमारे पास क्रोनोमीटर नही था और हम पिछले कई दिनों से इतना ज्यादा भटक चुके थे कि हमारा हिसाब-किताब बिलकुल गडबड हो चुका था। इसके अलावा केप हार्न ऐसी जगह है जहा चांद को देख कर अपनी स्थिति का सही-सही अनुमान हमेशा नही लगाया जा सकता। इन बातों के कारण हमारे छोटे-से समूह में बहुत उत्साह फैल गया था और तरह-तरह के अनुमान लगाए जा रहे थे। साथ ही हम सबने वे सारी बातें सोच डालीं जिनको सुनकर हमारा अनुमान था कि कप्तान खुश हो उठेगा। इसी समय ऊपर वाला आदमी चीख उठा—"खुले मोरे पर भी एक बडा जहाज, हो !" यह कुछ अजीब-सी बात थी, फिर भी बहुत अच्छी थी, और इस बात ने हमारे इस विश्वास को तनिक भी विचलित नही किया कि हमें दो जहाजों से बात करने का मौका मिलेगा।

आखिर ऊपर वाले नाविक ने कहा कि मेरा खयाल यह है कि यह जमीन है, जहाज नहीं। मालिम ने कहा—"ज़मीन तो तुम्हारी आँखों मे घुस गयी !" मालिम उस वक्त दूरबीन से देख रहा था—"अगर मुझे ठीक-ठीक दिखाई देता है तो मैं कह सकता हूँ कि वे हिमद्वीप हैं।" कुछ मिनटों के बाद ही मेट की बात सच साबित हो गई। हमारी सारी आशाएं धूल में मिल गईं। जिस चीज को देखने की हमारी उत्कट इच्छा थी, उसके स्थान पर हमें वह चीज मिली जिससे हम सब से ज्यादा डरते थे, और जिसे हम कभी नहीं देखना चाहते थे। फिर भी हम जल्दी ही इन द्वीपों को पीछे छोड गए। करीब दो मील तक हमें उनके साथ-साथ सफ़र करना पडा। सूर्यास्त तक क्षितिज चारों ओर से बिल्कुल साफ़ हो गया था।

हवा तेज होने के कारण हम शीघ्र ही केप के अक्षांश को पार कर गए। उससे बच कर निकलने के लिए काफ़ी देर से ही हमने जहाज को पूर्व दिशा में मोड दिया। अब हमें आशा थी कि कुछ ही दिनों में हम उत्तर की ओर निकल चलेंगे।

मगर दुर्भाग्य हमारा पीछा करता हुआ सा प्रतीत हुआ। अभी हमें इस रास्ते

पर चलते हुए चार घन्टे भी पूरे न हुए थे कि हवा बहनी बिल्कुल बन्द हो गई और आधे घंटे में ही आसमान में बादल छा गए। पूर्व की ओर से कई बार बर्फ़ और ओले बरसाने वाली झन्झाएं उठी। एक घन्टे के बाद ही हम छोटे किये गये प्रमुख शिखरपाल को जहाज पर ताने अनुवात दिशा में घिसटते नजर आये। पूर्व की दिशा से हमारे ठीक सामने दौडता हुआ यह तूफान अब तक के तूफ़ानों में सब से भयंकर था। ऐसा लगा कि उस स्थान की भयंकरता हमें चुपके से अपने पन्जे से निकलते देख कर सावधान हो गई है और अब वह दसगुने क्रोध के साथ हमें लील जाने पर आमादा हो गई है। जब आधी का हर एक झोंका बरौंडलों को कंपकंपाता और रस्सियो के ऊपर से सीटी बजाता हुआ निकलता तो मल्लाह कहने लगते कि आधी हमारे बूढे जहाज से कह रही है—"नही, तुम जा नहीं सकते! "तुम जा नही सकते!"

आठ दिनो तक हम इसी तरह इधर-उधर भटकते रहे। कभी—कभी,—आम तौर से दोपहर को—आधी रुक जाती; एकाध बार हमें सूरज वाले स्थान पर तांबे की एक गेंद दिखाई दे जाती थी; पश्चिम की ओर से एक या दो झोंके हमें यह उम्मीद बंधा जाते थे कि अनुकूल हवा चलने ही वाली है। पहले दो दिनों तक हमने इन झोकों का फ़ायदा उठाने के लिए शिखरपालों को खोला और कोर्स पालों को भी तान दिया, लेकिन फिर से झन्झा आयी और हमारे लिये इन्हें लपेटने का काम बढ़ गया तो ऐसा करना छोड दिया गया, और हम छोटे किये गये पालों को तान कर ही सफर करने लगे। जब हम पच्छिम की ओर काफ़ी दूर थे तब की बनिस्बत बर्फ और ओले तो अब कम हो गए थे लेकिन अब भारी मात्रा में मूसलाधार बारिश हो रही थी जो ठन्ड के मौसम में मल्लाह के लिए सब से खराब है।

जब बर्फ पड रही होती है तो आदमी कुछ देख नहीं पाता और जब जहाज किनारे के निकट पहुँच रहा हो तो उस समय यह सबसे खराब चीज़ है, लेकिन बहुत ठडे मौसम में बारिश इससे भी कही अधिक कष्टदायक है। बर्फ के तूफ़ान में मजा आता है और कपड़े नही भीगते (मल्लाह के लिए यह बात बहुत महत्व रखती है) किन्तु अगर लगातार बारिश हो रही हो तो इससे कोई बचाव नहीं हो सकता। बारिश तो खाल तक को भिगो देती है और रक्षा के सारे उपाय बेकार सिद्ध होते हैं। हमारे सूखे कपड़े पहले ही खत्म हो चुके थे और चूंकि मल्लाह के

पास अपने कपडों को सुखाने के लिए धूप के अलावा अन्य कोई साधन नहीं होता इसलिए अब हम इसके अलावा और कुछ नहीं कर सकते थे कि उन कपडो को पहनें जो सबसे कम गीले हों।

पहरा खत्म करने के बाद जब हम नीचे पहुँचते थे तो हर बार अपने कपड़े उतारते और निचोडते; दो आदमी पतलून को पकडते,—एक आदमी पायचे पकडता और दूसरा आदमी ऊपर वाला हिस्सा—जैकिटों को भी हम इसी प्रकार पकड कर निचोडा करते थे। बडे मौजो, बिना अंगुलियो वाले दस्तानों, तथा अन्य कपडों को भी निचोडा जाता था, और पोतभीतों पर सूखने के लिए फैला दिया जाता था। इसके बाद हर कपडे को छू-छूकर हम यह तय करते कि कौन-सा कपडा सब से कम गीला है और उसी को पहन लेते ताकि बुलावे के लिए हम हरदम तैयार रहें। काम खत्म करने के बाद हम अपने शरीर को कम्बलो से ढंक कर तब तक सोते रहते जब तक मोखे पर तीन बार खट-खट की आवाज न होती थी या डेक से ये मनहूस आवाजें न आती—"ओ, जमना बाजू के पहरेदारो! आठ घण्टियाँ, सुन रहे हो या नही ?", और नीचे से दिया हुआ खिन्न उत्तर—"आये, आये!"—हमें तुरन्त दुबारा ऊपर भेज देता।

डेक पर घटाटोप अंधकार रहता। वहा या तो एकदम सन्नाटा छाया रहता जिसके साथ लगातार भारी वर्षा चलती रहती, या अक्सर यह होता कि ठीक सामने से झन्झा आती रहती जिसके साथ घनघोर बारिश होती, और कभी-कभी उसके सब ओले और बर्फ गिरते। डेक पर पानी तैरता रहता था जो एक ओर से दूसरी ओर तक हमेशा छप-छप करता, और हमारे पैर हमेशा भीगे रहते; क्योंकि जूतो को जाघिए की भांति निचोड़ा नही जा सकता था।—और उस लगातार भीगते रहने से कैसा भी चमडा हो गल जाता है। सचाई तो यह है कि ऐसे मौसम में भीगना और पैरों का ठन्डा होना तो अनिवार्य सा है; उन कुछ चीजों में जो ठन्डे मौसम में मल्लाहों की केप-यात्रा को अत्यत कष्टदायक बना देती हैं, इन दोनों का विशेष महत्व है।

जब पहरे बदलते तो मल्लाह आपस में बहुत कम बातचीत करते। पहिये पर से एक नाविक हटता और दूसरा बैठ जाता; मालिम छतरी पर अपनी जगह संभाल लेता, पहरा देने वाले मोरों पर चले जाते। हर एक आदमी के पास जहाज के अगले भाग से पिछले भाग तक चलने के लिए बहुत कम जगह होती थी। वजह

यह थी कि बर्फ़ और पानी से डेक पर बहुत फिसलन हो गई थी और इसलिए ज्यादा चला-फिरा नहीं जा सकता था।

चूंकि बक्त काटने के लिए चलना जरूरी था इसलिए हम में से एक को डेक पर रेत डालने की तरकीब सूझी। बाद में जब कभी मूसलाधार वर्षा नहीं हो रही होती थी तो छतरी के खुले बाजू पर, कटि के एक भाग में, और अगवाड पर रेत बिखरा दिया जाता था (डेक को रगड कर चिकना करने के काम के लिए जहाज पर रेत रखा हुआ था) और तब हम खूब चहलकदमी करते। हम दो-दो के झुन्ड में उबाने वाले पहरे के हर घन्टे को इसी तरह घूमते हुए काट देते थे।

हालांकि घन्टी हर आधे घन्टे बाद बजती थी मगर ऐसा लगता था जैसे वह एक-एक और दो दो घन्टों के बाद बजाई जा रही है, और आठ घन्टियों की मधुर ध्वनि की प्रतीक्षा में तो जैसे पूरा एक युग बिताना पडता था। हमारा एकमात्र ध्येय यह था कि किसी तरह वक्त गुजारा जाए। वक्त की ऊब को दूर करने के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार रहते। यहाँ तक हुआ कि हममें से हर नाविक को हर तीसरे पहरे में पहिए को सभालने की जो ड्यूटी मिलती थी, अब उसे भी ऊब से छुटकारा पाने का उपाय माना जाने लगा।

लम्बी-लम्बी कहानियाँ, जो कई कई पहरों तक चलती रहती थीं; भी समय काटने में अब हमारा साथ नही दे पाती थी, क्योकि हम लोग एक-दूसरे के साथ इतने लम्बे अर्से से रह रहे थे कि हम में से सभी आदमी एक दूसरे की सभी कहानियाँ सुन चुके थे, और अब तो हमें वे सारी कहानियाँ वगैरह जबानी याद हो गयी थी। हम एक-दूसरे के बारे में भी सब-कुछ जान चुके थे और अब हमारे पास बातें करने के लिए वाकई कोई विषय न बचा था। गाना गाने या मजाक करने का तो सवाल ही पैदा नही होता क्योंकि हम हंसी-मजाक की मनस्थिति में कतई नहीं थे। सच तो यह है कि खुशी की कोई भी आवाज हमें अजीब सी लगती थी और बर्दाश्त नही होती थी।

अब हमारा अन्तिम उपाय—भविष्य के बारे में तरह-तरह की अटकलबाजी—भी बेकार साबित होने लगा था क्योंकि हम जिस अवसादपूर्ण तथा संकटपूर्ण स्थिति में थे (हमें रोज यह आशंका रहती कि पीछे खिसकते-खिसकते हम किसी भी क्षण बर्फ से घिर सकते हैं) उससे इस अटकलबाजी पर जैसे "डाट लग गई थी।" "जब हम घर पहुंचेंगे"—की बात छोडकर अब हम कहने लगे थे—

जहाज् में सुलभ एक तिथि-पत्र से मिला था, फिर कनाका भाषा के अंक।

इससे मुझे पुरानी बातें फिर से याद हो आई। मैं काफी अर्से के बाद इनको बार-बार दुहराता और अक्सर पहली दो घन्टियाँ शीघ्र ही बज जाती। फिर मैं इनको दुहराता—दस धर्माज्ञाएं, जौब का उनतालीसवाँ अध्याय, धर्मग्रंथ के कुछ अन्य उद्धरण। इसके बाद जिसका नम्बर आता था और जिसे मैं कभी न चूकता था तथा जो मुझे सबसे ज्यादा पसन्द था, वह था काउपर का "कास्टअवे", जिसके गम्भीर छन्द और जिसकी उदास प्रकृति, तथा जिसकी आधारभूत घटना समुद्र के पानी पर अकेले पहरा देने की स्थिति से काफी मिलती-जुलती है। इसके बाद मेरी से कही गई उसकी पंक्तियाँ, कौओ को सबोधित किए हुए उसके वचन, और टेबिल-टाक का एक छोटा उद्धरण, (मैं काउपर से बहुत प्रभावित था; उसकी कविताओं का सकलन मेरे सन्दूक में रखा था); होरेस का "इले एट नेफैस्टो" और गेटे का "अर्ल किंग"।

जब मैं इन सब को पूरा कर चुकता था तो मुझे गद्य और पद्य में जो कुछ भी याद था, उसे दुहराना शुरू कर देता था। कभी-कभी पहिये या लाग को देख लेता, या पानी पीने के लिए ओखे की टंकी तक जाता और इस तरह बड़े से बड़ा पहरा बीत जाता था। मैं इस मौन पाठन में इतना नियमित हो गया था कि अगर जहाज के कामो के कारण विघ्न न पडते होते तो मैं अपने पाठन की प्रगति से ही बता सकता था कि समय क्या है, और कितनी घन्टियां बज चुकी हैं।

नीचे भी हमारी पहरा टोली की वही हालत थी जो ऊपर थी। कपड़े धोने, सीने-पिरोने, और पढ़ने के सारे काम बन्द कर दिए गए थे, और हम सिर्फ खाने, सोने, और पहरा देने का ही काम करते थे। यह पूरी तरह केप हार्न का जीवन था। अगवाड़ इतना बेआरामदेह था कि उसमें बैठा नही जा सकता था, इसलिए जब कभी हम नीचे होते, अपनी बर्थों पर लेटे रहते थे। बारिश और समुद्र के पानी को नीचे आने से रोकने के लिए (जो मोरों पर हमेशा बहता रहता था) मोखा बन्द ही रखा जाता था। परिणामतः अगवाड़ में घुटन हो जाती थी। इस छोटी, गीली व इधर-उधर से चूने वाली उस कोठरी में ही हम सब रहते थे। वातावरण इतना खराब था कि हमारे लैम्प से, जो शहतीरों से नीचे लटका हुआ इधर-उधर डोलता रहता था, कभी-कभी दूषित वायु से घिर जाने के कारण बिल्कुल नीली रोशनी निकलती थी।

फिर भी मेरा जितना अच्छा स्वास्थ्य इन तीन हफ्तो में रहा, उतना अच्छा स्वास्थ्य पूरी जिन्दगी में कभी नही हुआ। मेरे बदन पर काफी मांस चढ गया था, और हमारी खूराकें घोडो की माफिक ज्यादा हो गई थीं। ड्यूटी समाप्त करने के बाद जब हम नीचे पहुँचते तो बर्थ पर लेटने से पहले रोटी भरी ट्रे और बीफ भरा टब साफ कर जाते। सुबह और शाम को हर एक मल्लाह गर्म चाय का क्वार्ट (चौथाई गैलन) पीता, और हम बहुत खुश थे कि हमें चाय बराबर मिल रही है। वजह यह है कि डेक पर पहरा देने के बाद हम लोगो के लिए एक पाट चाय, एक सूखा बिस्कुट, और ठन्डे नमकीन बीफ का एक टुकडा जितना मीठा था, आलसी देवताओं के लिए सुधा या अमृत भी वैसा मीठा न रहा होगा।

यह यकीन के साथ कहा जा सकता है कि हम पूरी तरह जानवर बन गए थे और अगर इस किस्म की हमारी जिन्दगी एक महीने के बजाय एक साल तक चलती रहती तो हम जहाज के रस्सों से भी कुछ तगड़े हो जाते। इस दौरान हमने उस्तरे, ब्रुश या एक बूंद पानी का भी इस्तेमाल नही किया था, और हम तक बारिश और बौछार ही पहुँची थी। हमें साफ पानी निश्चित मात्रा में मिलता था। और बर्फ व ओलों के मौसम में उस वक्त पर डेक पर खडा होकर नहाने की मूर्खता भला कोई क्यों करेगा जब तापमान शून्य हो ?

लगातार आठ दिनो तक पूर्वी झन्झाओं का सामना करने के बाद, पवन कभी कभी दक्षिण की ओर बहने लगता, और तेजी से बहने लगता था, तब हम जितने पाल सम्भव होते, उतने तान कर सफर करते। ऐसे परिवर्तन सिर्फ कुछ देर के लिए ही आते थे, और शीघ्र ही पुरानी दिशा से झंझाएँ चलनी शुरू हो जाती थी। फिर भी हर बार हम कुछ दूर सफर कर ही लेते थे और धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ रहे थे।

एक रात ऐसा हुआ कि हवा थोडी देर के लिए अनुकूल हुई। सारे मल्लाहों को काफी देर पहले से ही ऊपर बुला लिया गया था। बंटलाइन में मुख्य पाल तैयार लटक रहा था ताकि ज्यों ही जरूरत पड़े, उसका इस्तेमाल हो सके। हवा तेज और तेज होती गई। साथ ही ओले और बर्फ इस तरह जहाज पर गिरते रहे जैसे प्रकृति हम पर कुपित हो उठी हो। रात इतनी गहरी और काली हो गई थी जितनी अधिक से अधिक हो सकती है। प्रमुख पाल इस तरह फडफड़ा रहा था और उसकी फड़फडाहट की ध्वनि ऐसी थी जैसे वज्रध्वनि हो रही हो। जब कप्तान

डेक पर आया तो उसने प्रमुख पाल को लपेट देने की आज्ञा दी।

मालिम सारे मल्लाहों को आवाज़ देने ही वाला था कि कप्तान ने उसको रोक दिया। उसने कहा कि अगर मल्लाहों को इतनी जल्दी-जल्दी ऊपर बुलाया गया तो वे शीघ्र ही थक कर चूर हो जाएंगे, चूंकि हमारी ड्यूटी डेक पर मौजूद रहने की है, इसलिए हमको ही यह काम पूरा करना चाहिए। इसलिए हम यार्ड के ऊपर चढ़ गए। मैं जिन्दगी भर इस काम को नहीं भूल पाऊंगा।

हमारे पहरे के लोगों की संख्या कुछ तो बीमारी के कारण कम हो गई थी और कुछ इसलिए कम हो गई थी कि कुछ लोग कैलिफोर्निया में पीछे छूट गए थे। इसलिए एक आदमी को पहिए पर नियुक्त कर देने के बाद ऊपर जाने के लिए मेरे और तीसरे मालिम के अलावा सिर्फ तीन लोग ही और थे। इसलिए एक वक्त में हम ज्यादा से ज्यादा एक यार्ड भुजा को ही संभाल सकते थे। पहले हम खुले बाजू की यार्ड-भुजा पर चढ़े और उसको लपेटने का काम शुरू कर दिया। हमारा निचला मस्तूल छोटा था और यार्ड बहुत चौकोर थे। पाल की बंट ऐसी लग रही थी जैसे वह पिछले रायल यार्ड की बंट हो।

इस कठिनाई के अलावा एक बात यह भी थी कि जिस यार्ड पर हम चढ़े हुए थे, वह पूरी तरह बर्फ से ढंका हुआ था; पाल के फुट की रस्सी तथा गैस्केट रस्सियां चूषण होज़ की तरह अकडी हुई तथा सख्त हो गयी थी। पाल इतना कचीला हो गया था जैसे तांबे की चादर से बना हुआ हो। एक भयंकर हरीकेन तूफान चलने लगा; तथा बर्फ, ओले, और वर्षा के झोंके एक के बाद एक हम पर प्रहार करने लगे। हमें पाल को नंगे हाथों से ही लपेटना था।

बिना अंगुलियों वाले दस्तानों पर भरोसा नहीं किया जा सकता था क्योंकि अगर उसको पहन कर काम करते समय हाथ फिसल जाता तो खात्मा निश्चित था। सारी नावों को डेक पर चढ़ा लिया गया था। इसलिए अगर कोई आदमी ऊपर से पानी में गिर जाता तो उसको बचाने के लिए कोई नाव पानी में नहीं उतारी जा सकती थी। ईश्वर ने हमें जितनी अंगुलियां दी थीं, हमें इस काम के लिए उन सब की आवश्यकता थी। कई बार हम पाल को यार्ड पर खींचने में कामयाब हुए, मगर इससे पहले कि हम उसको बांध पाते, वह हर बार हमारी पकड से निकल कर उड जाता। यार्ड पर रहकर पाल पर गैस्केट रस्सियां लपेटने के लिए कुछ आदमियों की जरूरत थी, और जब हमने इन रस्सियों को लपेट

दिया तब उसमें ऐसी गांठ लगाना एकदम असम्भव हो गया जो पाल को रोके रहे। बार-बार हमें इस काम को अपूर्ण ही छोडना पडा, और अपने हाथों में खून को जमने से रोकने के लिए पाल पर हमें अपने हाथ पटकने पड़े।

कुछ समय बाद—जो एक युग के बराबर महसूस हुआ—हमें खुले बाजू के पाल लपेट देने में सफलता मिल सकी। इसके बाद हम अनुवात बाजू पर अपनी किस्मत आजमाने चले। यह काम उससे भी ज्यादा खराब था क्योंकि पाल का मुख्य भाग उड कर अनुवात की ओर चला गया था और यार्ड तिरछा हो गया था, इसलिए पहले हमें इसको प्रतिवात की तरफ लाना था। जब हम सारी यार्ड-भुजाओं को लपेट चुके तो बंट फिर खुल गयी। इससे हमारा काम और बढ़ गया। अन्त में हम सबको बांध देने में सफल हुए। हमें यार्ड पर लगभग डेढ़ घन्टा हो गया था और ऐसा लगता था जैसे एक पूरा युग बीत गया हो।

जब हम ऊपर की ओर रवाना हुए थे तो पांच घन्टिया बजी थीं और हमारे नीचे उतरने के तुरन्त बाद आठ घन्टियां बजी। इस वर्णन से शायद ऐसा लगे कि यह काम बहुत धीरे-धीरे हुआ मगर यदि उस स्थिति को ध्यान में रखा जाए और इस तथ्य को भी ध्यान में रखा जाए कि एक पाल को लपेटने के लिए हमारे पास सिर्फ पाच ही आदमी थे, जबकि हमारा पाल "इंडिपेंडेंस" जहाज (साठ तोपों वाला जहाज जिसके क्वार्टरो पर सात सौ मल्लाह काम करते थे) के प्रमुख पाल से आधा था, तो वाकई यह अचरज की बात समझी जाएगी कि हमने इस काम को इतनी जल्दी पूरा कर दिया। डेक पर वापिस पहुचने से हमें खुशी हुई और जब हम नीचे पहुँचे तो हम खुशी से फूले न समाए।

पहरा टोली के सबसे पुराने मल्लाह ने नीचे पहुँचते ही कहा—"मैं उस मुख्य यार्ड को कभी न भूलू गा:—इसने तो मेरी अक्ल ही दुरुस्त कर दी। मजाक को मजाक की तरह ही लेना चाहिए, मगर केप हार्न से गुजरते समय पाल लिपटवाना उस मल्लाह को मारने जैसा ही है।"

अगले दो दिनो तक पवन अधिक वेग पूर्वक दक्षिण की ओर से चलता रहा। हमने काफी रास्ता तय कर लिया था, और अगर हम अभी तक केप पर नहीं पहुँचे थे तो अब हमें शीघ्र ही वहां पहुंच जाने की आशा थी। हमें अपने स्थिति-ज्ञान पर अब भरोसा नही रहा था क्योंकि हमें स्थिति को देखने और जांच-पड-ताल करने के लिए उपयुक्त अवसर ही नही मिला था, और हम अपने रास्ते से

इतना अलग हो गए थे कि अब हमारा हिसाब-किताब "करीब-करीब" की दृष्टि से भी ठीक नही पडता था। अगर मौसम इतना साफ हो जाता कि हम नक्षत्रों को देख पाते, या अगर हम जमीन पर पहुँच जाते तो हमें अपनी स्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता था। अब हम पूर्णतया इन्ही बातों पर निर्भर थे। हमें यह भी आशा थी कि शायद पूर्व की ओर से आता हुआ कोई जहाज हमें मिल जाये।

शुक्रवार, बाईस जुलाई। आज दक्षिण की ओर से झन्झा चली और हमने याडों को कुछ ढीला करके पाल छोटे किये और आगे बढ़े। बादल कुछ छंटे और ऐसा लगा कि आसमान जल्दी ही साफ हो जाएगा।

तीसरे पहर तीसरा मालिम मि० एच—और दो अन्यों के साथ मैं स्टीयरेज में रोटियों को पीपों से निकाल कर लाकर में भर रहा था कि गलियारे से नीचे धूप की तेज चमक दिखायी दी और नीचे की हर एक चीज धूप में चमकने लगी। हर एक के दिल में खुशी की एक गर्म लहर दौड गई। ऐसा दृश्य हमने हफ्तों से नही देखा था,—हमारे लिए यह तो ईश्वर द्वारा भेजी हुई शुभ-सूचना थी। अत्यन्त कड़े और कठोर चेहरों पर भी इसकी खुशी झलकने लगी।

इसी क्षण हमने डेक के सारे भागो से एक जोर की चिल्लाहट सुनी और मालिम ने गलियारे में जाकर कप्तान को पुकारा। उसने क्या कहा—यह तो हम सुन न सके लेकिन वह तुरन्त कुर्सी से उछल पडा और कूद कर डेक पर पहुँच गया। हमें इस सब का कारण ज्ञात न था और हम उसको जानने के लिए आतुर भी थे, मगर जहाज का अनुशासन ऐसा था कि हम अपनी जगह को छोड़ कर हट नहीं सकते थे। चूंकि हमें नही बुलाया गया था इसलिए हमने यह निष्कर्ष निकाला कि खतरे की कोई बात नही है। हम जल्दी-जल्दी अपना काम खत्म करने लगे। तभी स्टीवार्ड का काला चेहरा रसोई से झांकता हुआ नजर आया और एन—ने उसका अभिवादन करके इस सब हलचल का कारण पूछ लिया। "जमीन, हो जमीन! क्या तुम उनको यह कहते हुए नही सुन रहे— "जमीन है।" कप्तान कहता है कि हम केपहार्न पर पहुँच गए।"

यह सुन कर हम फिर चौंक पड़े और काम पूरा करके हम जल्दी ही डेक पर पहुँच गए। वहां से जमीन दिखाई दे रही थी, डाबा बाजू की शहतीर के ऊपर से, और धीरे-धीरे क्वार्टर की ओर उसका किनारा समीप आता जा रहा था। सारे मल्लाह बहुत ध्यान से उसको देख रहे थे—छतरी पर कप्तान और मालिम थे,

रसोई में रसोइया था, और अगवाड में मल्लाह, और हमारे यात्री मि० एन—भी, जो पिछले एक महीने से अपनी कोठरी से बाहर न निकले थे और शायद इतने अर्से से उन्हें किसी ने न देखा था, और जिनके बारे में हम कतई भूल गए थे कि यह भी जहाज पर सवार हैं,—तितली की फुर्ती से बाहर निकल कर आया और चिडिया की तरह खुश होकर इधर-उधर फुदकने लगे।

यह स्टेटेन लैण्ड के टापू की जमीन थी जो केपहार्न के कुछ ही पूर्व में स्थित है। यह जमीन इतनी वीरान दिखाई दे रही थी कि ऐसी वीरान ज़मीन को मैं फिर कभी न देखना चाहूँगा;—बंजर, टूटी-फूटी और इधर-उधर चट्टानों और बर्फ़ से ढकी हुई, चट्टानो और ऊबड-खाबड पहाडियों के बीच में वनस्पति की कुछ झाड़ियां थी जिनका विकास बीच में ही रुक गया था। मानवीय सभ्यता की पहुच से दूर, दो महासमुद्रो के सगम पर खडे हो कर बारह महीनो की सर्द जलवायु में झन्झाओं और बर्फ का सामना करने के लिए ऐसी ही जगह की दरकार थी। हालाकि यह भूमि हमें निराश करने वाली थी, फिर भी हमें यह दृश्य बडा सुखकर लगा। इसकी वजह केवल यही नहीं थी कि हमने पहली बार ज़मीन देखी थी, बल्कि यह वजह भी थी कि हमें इससे यह पता चलता था कि केप अब निकट है, कि हम प्रशात महासागर में हैं—, और अगर ऐसा समीर चौबीस घन्टे और चलता रहे तो हम दक्षिणी महासागर की उपेक्षा करके अपने रास्ते पर आगे बढ़ सकेंगे। इस ज़मीन ने हमको हमारी स्थिति का अक्षाश और देशांतर किसी भी अन्य पर्यवेक्षण की बनिस्बत बहुत अच्छी तरह बता दिया। कप्तान को अब मालूम हो गया कि हम कहा हैं, उसे यह भी मालूम हो गया कि हम लोग वार्फ के सिरे से आगे निकल आये या नहीं।

उस खुशी के मौके पर मि० एन—ने कहा कि मेरी इच्छा है कि मैं इस टापू के तीर पर पहुँच कर इस स्थल को ध्यान से देखूं, जहा शायद आज तक कोई मनुष्य नही गया है; लेकिन कप्तान ने उसको सूचना दी कि उसको किसी अन्य मौके पर इस टापू को देखने का अवसर मिलेगा, और इस समय हमें बिना एक क्षण भी नष्ट किए चल पडना चाहिए।

धीरे-धीरे हमने यह ज़मीन पीछे छोड दी, और दिन ढलने के वक्त हमें अपने सामने अटलांटिक महासागर दिखायी दे रहा था।

* * *

अध्याय—३३

प्रशांत महासागर से केप की ओर यात्रा करते हुए आमतौर पर जहाज फाकलैंड द्वीपों के पूर्व की ओर से होकर गुजरते हैं। लेकिन चूंकि अब दक्षिण-पश्चिमी पवन वेग से बहना शुरू हो गया था और यह सम्भावना थी कि यह पवन देर तक बहेगा, और हम ऊंचे अक्षांशों पर बहुत समय तक सफ़र कर चुके थे, इसलिए कप्तान ने तुरन्त उत्तर दिशा में फाकलैंड द्वीपों से होकर यात्रा करने का निश्चय किया। तदनुसार जब आठ बजे पहिये पर पहरा बदला गया तो कप्तान ने जहाज को उत्तर की ओर चल ने का आ श दे दिया। और सारे मल्लाहों को यार्डों को पवनानुकूल करने और पाल लगाने के काम पर लगा दिया गया।

एक ही क्षण में यह ख़बर सारे जहाज में फैल गई कि कप्तान जहाज का मुंह सीधे बोस्टन की ओर कर के और तफरेल को केपहार्न की ओर करके जहाज चला रहा है। यह सुनते ही सब नाविको में उत्साह जाग उठा। हर एक आदमी सावधान हो गया। यहाँ तक कि दो बीमार आदमी भी पाल रस्सियों के काम में हाथ बंटाने के लिए ऊपर आ गए। पवन अब सीधा दक्षिण-पश्चिम की ओर से बह रहा था, और झन्झा ऐसी चल रही थी जिसमें सामान्यतः जहाज़ पर एक छोटे किये गये पाल से ज्यादा पाल नही ताने जाते; मगर चूंकि हम पवन के बहाव के साथ जा रहे थे इसलिए हमारा जहाज ज्यादा पाल भी ले चल सकता था। इसलिए मल्लाहों को ऊपर भेज दिया गया, शिखरपालों से एक लपेट खोल दिया गया, और छोटे किये गये अग्र पाल तान दिये गये। जब हमने शिखरपाल यार्डों को मस्तूल शिखरों पर चढ़ाना शुरू किया तब सारे मल्लाह पाल रस्सियों पर मौजूद थे, और हम "चीयरिली मेन" वाला सहगान इतनी जोर से गा उठे कि आवाज़ स्टेटेन द्वीप के आधे रास्ते तक ज़रूर पहुँची होगी।

पाल ज्यादा लग जाने से जहाज पानी पर भागा जा रहा था। फिर भी अभी उसमें और पालों की गुन्जाइश और थी। कप्तान ने छतरी पर से पुकार कर आदेश दिया—"उस अगले शिखरपाल का एक और लपेट खोल कर उसे तान दो!" आज्ञानुसार दो मल्लाह फुर्ती से ऊपर की तरफ़ लपके। ठन्ड से जमी हुई रस्सियों को उतार लिया गया, और पाल रस्सियों की सहायता से पाल खोल दिया गया। अब झंझा को खुल कर खेलने के लिए और अधिक पाल मिल गये इस परिवर्तन का नतीजा देखने के लिए सारे मल्लाहों को डेक पर रोक लिया

जहाज पर इतने पाल लग चुके थे जितने वह बर्दाश्त कर सकता था, चूंकि पीछे समुद्र वेग से थपेडे मार रहा था इसलिए पहिए को सम्भालने के लिए दो आदमियों की जरूरत पडी। हमारा जहाज अपने मोरों से झाग फेंकता हुआ बढ़ रहा था और इसकी बौछार पीछे गली तक आ रही थी। जहाज अपूर्व रफ्तार से बढ़ रहा था। फिर भी जहाज सब पालों को ठीक से सम्भाल रहा था। रोक बंधनियों के छेदो में रस्सी डाल कर कस कर बाँध दिया गया; काफियों को पिछले तानों पर चढा दिया गया; और प्रत्येक पाल को सुरक्षित व दृढ बनाने के लिए जो कुछ करना चाहिए था, वह सब कर दिया गया।

कप्तान कभी पालों की तरफ़ ऊपर और कभी प्रतिवात दिशा में देखते हुए डेक पर लम्बे-लम्बे डग भरता रहा। मालिम गली में खडे हुए, अपने हाथ मसलते हुए ज़ोर-ज़ोर से जहाज़ से बातें करने लगा—"हुर्रा, बूढे डोल। तेरी बाघ रस्सी बोस्टन की कन्याओं के हाथ में है।" हम लोग अगवाड में खड़े देख रहे थे कि क्या डन्डे इतने पालो को किस प्रकार सह रहे हैं, और जहाज की रफ्तार कितने मील फी घन्टा होगी। कप्तान ने पुकार कर कहा—"मिस्टर ब्राउन, शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल को भी ऊपर लगवा दो। जहाज जो सम्भाल नही सकेगा, उसे घसीटेगा।"

मालिम ने एक क्षण के लिए कप्तान की तरफ़ देखा मगर वह किसी को भी अपने सामने बोलने ही नही देता था। इसके बाद वह उछल कर आगे आया।

"ऐ, सुनो! शिखर मस्तूल का दुपेंचा पाल लगा दो! तुम ऊपर चढ़ जाओ, मैं नीचे से रस्सियां भिजवाता हूँ।"

हम तेजी से शिखर पर पहुँचे। वहाँ से हमने एक गन्ट लाइन को नीचे झुकाया और इसके सहारे रस्सियों को ऊपर खीच लिया; टंकों और पाल रस्सियों को निरो कर बूम को लगाया और फुर्ती से उसे बांध दिया और रोक थाम के लिए निचली पाल रस्सी को नीचे लटका दिया। रात में तारे साफ चमक रहे थे, ठन्ड थी और हवा तेज़ चल रही थी; मगर हर एक नाविक मन लगाकर काम करता रहा। नाविकों के चेहरों से ऐसा पता लगता था जैसे वे यह सोच रहे हो कि "बूढ़ा" पागल तो नही हो गया है, लेकिन किसी ने कहा कुछ नही। हमने शिखर मस्तूल का एक नयी तरह का दुपेंचा पाल तैयार कर लिया था जिसमें एक लपेट था—यह एक ऐसी बात थी जिसके बारे में शायद ही पहले कभी सुना गया हो, और जिसकी मल्लाहों ने यह कहकर मजाक उडाई थी कि दुपेंचा पाल में लपेट लगाने के वक्त

उसे उतार लिया जाता है। मगर अब हमें उसकी उपयोगिता मालूम होने लगी क्योंकि शिखरपाल में लपेट होने के कारण दुपैंचा पाल में भी लपेट लगाये बिना नहीं लगाया जा सकता था। यह तो जरूर है कि छोटे किये गये शिखरपालों के साथ लपेट वाले दुपैंचा पालों का होना नई बात तो थी मगर इसका भी एक कारण था—अगर वह टूट भी जाता तो हमे ज्यादा से ज्यादा एक पाल और एक बूम का ही नुक्सान उठाना पडता; लेकिन अगर संपूर्ण शिखरपाल उड जाता तो उसके साथ ही मस्तूल और सारी चीज़ों से भी हमें हाथ धोना पडता।

जब हम ऊपर थे तो पाल को बाहर निकाल लिया गया और यार्ड पर झुका कर तानने के लिए बिल्कुल तैयार कर लिया गया। उपयुक्त अवसर आते ही पाल रस्सियों की मदद से यार्ड को ब्लाक तक पहुंचा दिया गया; किन्तु जब मालिम पाल उतार रस्सी से बिल्लौ फांदा निकालने के लिए आया तो जहाज बिल्कुल, बीचोबीच तक कांप गया। बूम चाबुक के हत्थे की तरह मुड गया और हमें हर क्षण यह आशका होने लगी कि कुछ न कुछ नुक्सान होगा; मगर चूंकि यह बूम पहाडी सनोबर की लकडी का था, और छोटा होने पर भी मजबूत था, इसलिए यह किसी बहुत लचीली चीज़ की तरह झुक गया, और टूटा नहीं। बढ़ई का कहना था कि इससे बढ़िया लकड़ी उसने आज तक नही देखी थी।

सारे मल्लाहो ने मिल कर ताकत लगाई और टैंक को जल्दी ही बूम के कोने पर ले आए, खोट रस्सियो को कस दिया गया, और रोक तथा खुले बाजू की बंधनी को इस तरह कसकर बांध दिया गया कि उन्ही पर इसका बोझ पड़े। पाल के नाम पर हर धागा और सारा वरासन जहाज पर लाद दिया गया था और यह नया पाल लगाने से जहाज पानी के ऊपर इस तरह दौड़ रहा था जैसे उस पर भूत सवार हो। सारे पाल लगभग आगे की ओर थे, वे इसको पानी से ऊपर उठाते थे और जहाज एक लहर से कूद कर जैसे दूसरे लहर पर चढ़ कर दौडा जा रहा था। जिस वक्त से उसका निर्माण हुआ था तब से आज तक यह कभी इस रफ्तार से नहीं दौडा था; और चाहे हम सब मर जाते तब भी अब उस पर पाल का एक छोटा टुकड़ा भी चढ़ा सकना सम्भव नहीं था।

यह देख लेने के बाद कि जहाज पाल संभाल लेगा, मल्लाहों की दूसरी टोली को नीचे भेज दिया गया और हमारा पहरा डेक पर रहा। पहिए पर लगे हुए दो आदमी जहाज के मार्ग को तीन पाइन्टों के अन्दर ही रखने के लिए जितना

कुछ कर सकते थे, कर रहे थे; क्योंकि जहाज जवान घोड़े की तरह बेतहाशा भाग रहा था।

मालिम कभी पालों की तरफ देखते हुए और कभी झाग को इधर-उधर उड़ता देखते हुए डेक पर घूमता रहा और अपनी जांघों पर हाथ मारते हुए जहाज से कहने लगा—"हुर्रा, टट्टू, तुझे शायद सूंघ आ गई है!—तुझे मालूम हो गया है कि तू घर की तरफ चल रहा है!" और जब लहरों पर वह उछलता और कभी-कभी पानी के ऊपर आ जाता, और उसका पठाएा, डन्डे और मस्तूल तड़कने चटखने लगते तो मेट कहता—"भाग, बेटे! भागे जा! क्या बढ़िया चाल है! जब तक यह चटखता रहेगा तब तक सब ठीक है!" हम इस बीच लगातार रस्सियों को संभाले खड़े रहे ताकि अगर जरूरते पड़े तो पाल उतार दें।

चार घन्टियां बजने पर हमने लाग लगाया तो पता चला कि जहाज की रफ्तार ग्यारह समुद्री मील (एक समुद्री मील—६०८० फुट) थी जो बहुत बढ़िया थी। और अगर समुद्र ऐसा न होता जो बार-बार जहाज को उसके रास्ते से हटा देता था, तो यक़ीनन जहाज की रफ्तार इससे कही ज्यादा साबित होती। मैं एक अन्य नवयुवक के साथ पहिए पर पहुँचा। यह केन्नेबैंक का रहने वाला था और कुशल कर्णधार था। दो घन्टो तक हम वहा उठ कर काम करते रहे।

कुछ मिनटों के बाद ही यह पता चल गया कि यहा काम करने के लिए हमें जैकिटें उतारनी पड़ेगी। हालांकि ठन्ड काफी थी, फिर भी हम कमीज पहने हुए काम करते रहे और पसीने से तर हो गए। जब आठ घन्टिया बजी तो पहिए से छुट्टी मिलने की हमें काफी .खुशी हुई। हम अपनी बर्थों पर जाकर लेट गए और जब तक सो सके, सोते रहे। मोरों के नीचे समुद्र लगातार गरजता रहा, और अगवाड़ के ऊपर छोटे झरने की भाँति बराबर गिरता रहा।

चार बजे हमें फिर बुलाया गया। पोत के ऊपर वही पाल अब भी लगा हुआ था और झन्झा में अगर कोई परिवर्तन हुआ था तो यह कि उसका जोर कुछ बढ़ गया था। अभी तक दुपँचा पाल को लपेटने का कोई प्रयत्न नही किया गया था और इस काम के लिए अब काफी देर हो चुकी थी। अगर अब हम उसको उतारने का प्रयत्न करते तो यह इसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते और इसके झपेटे में कुछ और भी जा सकता था। इसलिए अब सिर्फ यही उपाय था कि पाल आदि अभी जैसे हैं, जहाज पर वैसे ही लगे रहें। अगर इस बीच झन्झा के झोकों में कमी हो

गई तो ठीक है और अगर उसमें कमी न हुई तो कोई कमजोर बल्ली या रस्सा टूट कर पानी में गिर पड़ेगा और उसके बाद हम पाल को बाँध देंगे ।

एक घन्टे से ज्यादा देर तक जहाज इस रफ्तार से दौडता रहा । जैसे वह अपने सामने समुद्र की इकट्ठी तरंगों का ढेर लगाता चल रहा हो । स्प्रिट पाल यार्ड के ऊपर पानी इस रफ्तार से गिरता रहा जैसे बांध के ऊपर से गिरता है । पौ फटने के वक्त झन्झा के वेग में थोड़ी कमी हुई, और हमारा जहाज उसके दवाव से मुक्ति पाकर अभी आसानी से चलना शुरू ही किया था कि मिस्टर ब्राउन ने उसको आराम न करने देने का निश्चय करके, और सूरज के निकलने पर पवन के कुछ हलका हो जाने की आशा पर निर्भर करके हमें निचले दुपेंचा को भी तान देने का हुक्म दिया ।

यह पाल बहुत विशाल था और इसमें इतनी हवा आ सकती थी कि कोई डच जहाज़ एक हफ्ते तक उसी हवा के सहारे चलता रहे । शीघ्र ही उसको तैयार कर लिया गया, बूम को लगा दिया गया, रोकगाई पिरो दिये गये, और आलसियो को भी पाल रस्सियों को थामने के लिए बुला लिया गया । लेकिन झन्झा का वेग इस वक्त भी इतना तीव्र था कि हमें पाल को तानने में लगभग एक घन्टा लग गया; इसे तानने में हमें पाल की बाहरी रस्सी से हाथ धोना पडा और चार बूम टूटते-टूटते बचीं ।

ज्यों ही यह व्यवस्था पूरी हुई, जहाज फिर पानी को इस तरह चीरने लगा जैसे पागल हो गया हो, और इस तरह चलने लगा जैसे बाज पक्षी हो । पहिए पर ड्यूटी देने वाले आदमी बेदम हो गए थे और उनकी सांस धौंकनी की तरह चलने लगी थी । सुकान बहुत भारी चल रहा था । यही नहीं, जैसी आशा थी, झन्झा में कोई कमी नहीं हुई और सूरज बादलों के पीछे छिपा रहा । यकायक एक झटका लगा, और खुले बाजू पर पहिए वाला आदमी दूसरी तरफ जा गिरा । मालिम भाग कर पहिया को संभालने पहुंच गया । उस आदमी ने भी तुरन्त उठकर पहिए के अटों को संभाला, और उन दोनों ने ऐन वक्त पर जहाज को मुडने से बचा लिया, हालांकि लगभग आधा दुपेंचा पाल पानी में डूब गया था, और जब जहाज ऊपर उठा तो बूम पैंतालीस डिग्री के कोण में झुक गयी ।

अब यह बात साफ़ हो गई थी कि जहाज पर पाल उसकी बर्दाश्त से बाहर थे । मगर अब उसको हलका करने की कोशिश करना बेकार था क्योंकि छल्ला

रस्सियां ज्यादा मज़बूत नहीं थीं। वे पाल की रस्सियों को काटने की सोच ही रहे थे कि फिर से जोर का एक धक्का लगा और चर बूम जोर से आवाज़ करते हुए निचली रस्सियों पर आ गिरी। बाहर की रस्सी का ब्लाक टूट गया, शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल की बूम इतनी झुक गयी कि इससे पहले मैंने कभी कल्पना भी न की थी कि लकडी इतनी मुड सकती है।

मेरे देखते-देखते गाई अलग हुए बूम एक ही झटके में अर्ध चन्द्राकार स्थिति में आयी, और तत्क्षण फिर उसकी शक्ल पहले जैसी हो गई। पहले ही झटके में छल्ला रस्सियां टूट गई; जिस खूंटे से पाल रस्सियाँ बंधी हुई थी, वह बाहर निकल आया, और पाल स्प्रिट पाल यार्ड और शीर्ष गाई के चारों ओर इस तरह लिपट गया कि हमारे लिए उसे अलग करना कठिन हो गया। आध घन्टे में हम इस सब बखेड़े को सुलझा सके। जहाज पर अब शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल ही लगे हुए थे और इससे अधिक पाल वह संभाल भी नहीं सकता था।

सारे दिन और अगली रात हम लगातार इसी पाल के नीचे सफ़र करते रहे और झञ्झा का वेग तनिक भी कम न हुआ। दो आदमी हमेशा पहिए पर रहे; और हर समय पहरा देते रहे; और सिवाय इसके कोई और इधर-उधर देखते रहे, और थक कर चूर हो जाए;—अगले दिन की दोपहर को—

रविवार, चौबीस जुलाई, को हम अक्षांश ५०° २७' दक्षिण, देशांतर ६०° १३ पश्चिम में थे और पिछले चौबीस घन्टों में अक्षांश की चार डिग्री पार कर चुके थे। चूंकि अब हम फाकलैंड द्वीपों के उत्तर की ओर थे इसलिए जहाज को भूमध्य रेखा की ओर ले जाने के लिये उसका मुंह उत्तर-पूर्व की ओर किया गया। भूमध्यरेखा की ओर मुंह किये और केप हार्न की ओर पिछला हिस्सा किये हमारा जहाज शान से बढ़ा चला जा रहा था, लहर की हर उछाल केप को पीछे छोडती जा रही थी, और हर घन्टे हम अपने घर, और गर्म मौसम के नजदीक पहुंच रहे थे।

जब हम बर्फ़ से घिर गये थे और हमारी सारी परिस्थितियाँ निराशा-जनक व हतोत्साहित करने वाली हो गई थीं तो हमने कई बार यह प्रार्थना की थी कि अगर हम जरा आगे बढ़ कर थोडा उत्तर की ओर बढ़ जाते तो हमें फिर और किसी बात की ज़रूरत न रह जाती। अब हम ऐसी स्थिति में थे, सामने साफ़ समुद्र था, और हवा इतनी अधिक अनुकूल थी जिसके लिए मल्लाह प्रार्थनाएं किया करते हैं।

अगर यह सच मान लिया जाए कि यात्रा का सबसे अच्छा अंश अन्तिम अंश होता है, तो अब हमें वह सब-कुछ हासिल हो गया था जिसकी इच्छा हम कर सकते थे। हर एक मल्लाह बहुत अधिक उत्साह में था, और जहाज भी अपनी कैद से बाहर निकल कर हमारी तरह खुश नजर आ रहा था। जब-जब पहरे बदलते, तो ऊपर आने वाले मल्लाह नीचे जाने वाले मल्लाहों से पूछते—"जहाज कैसे चल रहा है ?", और उन्हें उत्तर में उसकी रफ्तार तो बतायी ही जाती, साथ ही ये शब्द भी प्रायः जोड दिये जाते थे—"ओह ! और आखिर बोस्टन की लडकियों ने इसकी रस्सियां थाम ली हैं और इसे भगाये लिए जा रही हैं ।"

सूरज प्रति दिन अंतरिक्ष से ऊपर चढ़ता गया और रातें छोटी होती गईं; और हर सुबह डेक पर पहुँचने पर तापमान में काफी परिवर्तन महसूस होने लगा। रस्सियों और डन्डों पर से बर्फ़ भी पिघलने लगी, और शिखरों पर व निचले मस्तूलों की टेकों को छोड कर बाकी सब जगह से खत्म हो गई।

चूंकि अब झन्झाएं पीछे छूट गई थी, इसलिए शिखरपालों को खोल दिया गया, और जहाज़ पर अधिक से अधिक पाल तान दिये गये। जब भी मल्लाहों को पालरस्सियों पर लगाया जाता, तो वे सहगान गा उठते और मन लगा कर पाल तानते थे।

जैसे-जैसे मौसम अच्छा होता गया, हम पालों की संख्या बढ़ाते गए और केप हार्न छोडने के एक हफ्ते बाद लम्बे टापगैलेंट मस्तूलों को लगाया गया, टापगैलेंट और रायल यार्डों को क्रास किया गया, और जहाज को उसकी पुरानी आकृति लौटा दी गई।

पहली रात के बाद हमने फिर सदर्न क्रास नहीं देखा; अन्तरिक्ष में मैगलन बादल सिकुड़ कर छोटे-छोटे होते गए, और हर अगली रात को अक्षांश का परिवर्तन इतना ज्यादा होता कि दक्षिण दिशा में कुछ तारा समूहों का दीखना बिल्कुल बंद हो गया और उत्तरी अन्तरिक्ष में अन्य तारा समूह उभर आए।

रविवार, इकतीस जुलाई। दोपहर को हम अक्षांश ३६° ४१' दक्षिण में और देशान्तर ३८° ०८' पश्चिम में थे और हमने नौ दिन में कुछ रास्तों को बदल कर दो हजार मील का फासला तय कर लिया था। साढ़े चार दिन में एक हज़ार मील !...यह रफ्तार तो भाप के जहाज के बराबर थी।

आठ बजने के कुछ देर बाद ही जहाज का आलम देख कर यह महसूस होने

लगा कि अच्छे मौसम में अभी तक यह हमारा पहला रविवार है। आकाश में बादल न थे और सूरज चमकने लगा था। इससे यह आशा हुई कि दिन सुन्दर और गर्म रहेगा। जिस तरह आम तौर पर रविवार के दिन होता है, आज कोई काम हो नहीं रहा था, इसलिए हम अगवाड को साफ़ करने के काम में लग गए।

पिछले महीने जितने भीगे और गन्दे कपड़े इकट्ठे हो गए थे, उनको डेक पर लाया गया; सन्दूकों की जगह बदली गई; झाड़ू, पानी की बाल्टियों, फुवारे, रगड़ने के ब्रुश, और खुरचनी नीचे ले जाई गई, और उनका तब तक इस्तेमाल हुआ जब तक अगवाड़ का फर्श चाक की तरह सफेद न हो गया, और हर एक चीज़ साफ़ और व्यवस्थित न हो गई। इसके बाद बर्थों से उठा कर बिस्तरों को डेक पर फैलाया और सुखाया गया तथा हवा लगायी गयी; डेक के टब को पानी से भरा गया, और ऊपर लाए हुए सारे कपडों की सफाई शुरू हो गई।

हर नाप और रंग की, भीगी और गन्दी कमीजें, ऊनी जर्सियां, पायजामे, जैकिटें, बडे मौजे—इनमें से बहुत से कपड़ों में तो गन्दे कोने में काफ़ी देर से पड़े रहने के कारण फफूंद लग गई थी—इन सब को धो कर फैला दिया गया। अन्त में इन सब को सूखने के लिए रस्सियों से कस कर बाँध दिया गया। डेक पर जहां-जहां धूप थी, वहाँ भीगे बूट और जूते सूखने के लिए डाल दिये गये, और पूरे जहाज पर एक अजीब सा दृश्य उपस्थित हो गया।

कपडों की सफ़ाई समाप्त करने के बाद हम अपने शरीरों की सफाई करने लगे। निश्चित मात्रा में दिए जाने वाले साफ पानी में से हमने जो कुछ बचाया था, वह बाल्टियों में डाला गया, और साबुन और तौलिये की मदद से हमने स्नान किया—इसको मल्लाह अपनी बोली में साफ़ पानी का स्नान कहते हैं। एक ही बाल्टी का इस्तेमाल कई मल्लाहों को करना था इसलिये एक दूसरे से लोग बराबर बाल्टी की माँग कर रहे थे, लेकिन चूंकि हम महासागर के शुद्ध खारे पानी में काफी नहा चुके थे, इसलिये साफ़ पानी का स्तेमाल पिछले पांच हफ्तों से इकट्ठी मैल और कालिख को छुटाने के लिए ही किया गया, और सब का काम चल गया।

हमने एक-दूसरे के साबुन मला, और तौलिए तथा पालों के टुकडों की मदद से बदन पोंछा, और और फिर एक-दूसरे के ऊपर पानी की बाल्टियां उलट दीं।

इसके बाद दाढ़ी बनाने, वालों में कंघी करने और ब्रुश करने का नम्बर आया। दिन का पहला आधा भाग इस तरह गुजार देने के बाद हम तीसरे पहर को अगवाड में साफ़ पतलूनें और कमीजें पहने हुए, नहाए-धोए, दाढ़ी बनाए हुए और बालो में कंघी किये हुये, और हल्का महसूस करते हुए बैठ कर आराम से पढते, कपडे सीते या बातें करते रहे। आकाश निर्मल था, और ऊपर तेज़ सूरज चमक रहा था। अनुवात क्वार्टर पर समीर बह रहा था, निचले और ऊपरी भाग में दुपैंचा पाल लगे हुए थे, और छूटे पाल सब दिशाओं में उड रहे थे। हमें महसूस हुआ कि हमारे नाविक-जीवन का सुखदायक भाग शुरू हो गया है।

शाम को सारे कपडे रस्सियों से उतार लिए गए। वे अब तक साफ़ हो चुके थे और सूख गए थे। फिर उनको तह करके सन्दूकों में रख दिया गया। हमने अपने बरसाती टोप, भारी बूट, गर्नसे फ्राक, तथा बहुत ठन्डे मौसम के लिए उपयुक्त सामान अलग रख दिया, हमें आशा थी कि बाकी सफ़र में इनकी जरूरत नही पडेगी और हम पतझड के मौसम में किनारे पर पहुंच जाएंगे।

संपूर्ण पाल तानने के बाद जहाज जितना सुन्दर लगता है, इसका वर्णन अनेक बार किया गया मगर ऐसे लोग बहुत कम हैं जिन्होंने कभी जहाज में सारे पाल लगे हुए देखे हैं। जब जहाज अपने आम पालों को लगा कर बन्दरगाह पर पहुँचता है या वहाँ से रवाना होता है, और जब शायद उसमें दो या तीन दुपैंचा पाल लगे हुए होते हैं, तो कहा जाता है कि उसमें सारे पाल लगे हुए हैं। मगर सच यह है कि जहाज पर सारे पाल तभी लगाये जाते हैं जब हलका और लगा-तार एक-सा समीर बह रहा हो और वह इतना नियमित हो कि यह विश्वास किया जा सके कि वह इसी तरह काफी देर तक चलता रहेगा, तब उसमें इधर-उधर, तथा आगे-पीछे भारी और हलके, और दुपैंचा पाल लगा दिये जाते हैं; और इस तरह संपूर्ण पालों से सज्जित होने के बाद जहाज इस दुनिया का सब से सुन्दर गतिशील पदार्थ होता है। जो लोग समुद्र पर बहुत यात्रा कर चुके हैं, ऐसा दृश्य उन्होने भी शायद ही देखा हो, क्योंकि आप अपने पोत के डेक से इस दृश्य को उस तरह नही देख सकते जिस तरह आप अपने सामने किसी भिन्न वस्तु को देख सकते हैं।

जब हम इन उष्णकटिबन्धों में ही सफ़र कर रहे थे तब एक रात को मैं किसी काम से फ्लान जिब बूम के सिरे पर गया और काम समाप्त करने के बाद

में उड़ा, और सामने के दृश्य के सौन्दर्य की मन ही मन प्रशन्सा करता हुआ बूम पर काफी देर तक बैठा रहा। मैं डेक से बहुत दूर था, इसलिये जहाज को एक अन्य पोत के रूप में देख सकता था। मैंने सामने पानी के अन्दर से ऊपर उठा हुआ जहाज का छोटा-काला ढाचा था, उस पर टिका हुआ पालों का एक विशाल पिरैमिड था जो ढाचे तक फैला हुआ था और उस वक्त रात की अस्पष्टता में मुझे ऐसा नजर आया जैसे उस पिरैमिड का शिखर बादलों को छू रहा हो।

समुद्र इतना शान्त था जैसे कोई झील हो; हलका व्यापारी-पवन धीरे-धीरे और एक ही रफ्तार से पीछे से बहता चला आ रहा था; गहरे नील आकाश में चमकीले उष्णकटिबन्धीय तारे जड़े हुए थे; कहीं कोई आवाज न थी—सिर्फ जहाज के पिछवाड के नीचे से पानी की हिलोरों की ध्वनि आ रही थी; पालों को चौडाई और ऊंचाई में फैला दिया गया था,—दो निचले दुपेंचा पाल दोनो ओर डेक से आगे तक फैले हुए थे; शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल, शिखरपालो के पंखों की भांति, फैले हुए थे; उनके ऊपर टापगैलेंट दुपेंला पाल जैसे निडर होकर फैल रहे थे, और उनसे भी ऊपर दो रायल दुपेंचा पाल जैसे उसी डोर से बंधे पतगों की भाति उडते नजर आ रहे थे; और सबसे ऊपर नन्हा आकाश पाल, इस पिरैमिड के शिखर जैसा, सितारों को छूता सा दिखायी दे रहा था, जैसे वह मनुष्य की पहुच से बाहर हो। समुद्र इतना शांत था और समीर इतना स्थिर था कि अगर इन पालों की संगमरमर की मूर्ति भी बना दी जाती तो भी वे इससे ज्यादा निश्चल न हो पाती। समीर ने उनको इतनी अच्छी तरह से फुलाया था कि पालों के ऊपर जरा सी सिकुडन तक नही पड रही थी, पाल का कोई दूर का कोना तक नही हिल रहा था।

मैं इस दृश्य को देखने में इतना खो गया था कि मुझे अपने पास ही एक मल्लाह की मौजूदगी का कतई पता नही लगा जो मेरे साथ ही आया था। यह आदमी लड़ाकू जहाज में काफी दिन रह चुका था और इस दृश्य को मेरे साथ ही प्रशंसापूर्ण दृष्टि से देख रहा था। जब उसने मरमरी पालो को देखते हुए स्वयं से यह कहा तो मुझे उसकी उपस्थिति का भान हुआ...ये कितनी शांतिपूर्वक अपना काम करते हैं!"

अच्छे मौसम के साथ ही हमारा काम बढ़ा क्योंकि जहाज को बन्दरगाह में पहुचने के लिए तैयार करना था। शायद इस विवरण से जमीन पर रहने वालों

को कुछ पता लग सके कि ऐसे मौके पर जहाज में क्या-क्या काम होता है...यात्रा के पहले हिस्से में जहाज को लगातार समुद्र के लिए तैयार किया जाता है, और दूसरे हिस्से में बन्दरगाह के लिए। मल्लाह कहा करते हैं कि जहाज किसी औरत की घड़ी की तरह है जिसकी मरम्मत बराबर करानी पड़ती है।

जो नए और मजबूत पाल हमने केपहार्न के पास लगाए थे, उनको उतारना था, और उनकी जगह पुराने पाल चढाने थे जो अभी भी अच्छे मौसम में काम में लगाये जा सकते थे; सारी रस्सियों को जहाज के अगले और पिछले भाग में फिर से व्यवस्थित करना था; मस्तूलों को रस्सों का सहारा देना था; स्थिर रस्सियो पर तारकोल करना था; निचले और शिखर मस्तूल की, अगले और पिछले भागों की रस्सियों को, नीचे गिराना था; सारे जहाज की अन्दर और बाहर से सफ़ाई करके रङ्ग करना था; डेकों पर वार्निश करनी थी; और हर चीज को इतना अच्छा बना देना था कि जहाज जब बोस्टन पहुँचे तो मालिक देखकर खुश हो जाएं।

इस काम में बहुत देर लगनी थी, और इसलिए बाकी सफ़र के दौरान सारे मल्लाहो से डेक पर दिन भर ये काम कराये गये। मल्लाह-लोग इसे जान लेवा काम बताते हैं मगर जहाज को सजा-संवार कर रखना ही था, और हर सवाल का यही जवाब दिया जाता था..."आखिर हम घर लौट रहे हैं।"

कई दिनों तक हम इसी तरह काम करते हुए सफर करते रहे और वर्णन योग्य कोई घटना नहीं घटी। सप्ताह के उत्तरार्द्ध में हमारा जहाज दक्षिण पूर्वी व्यापारी हवाओं में पड गया जो पूर्व-दक्षिण-पूर्व की दिशा में बहती रहीं। ये हवाएं इतनी तेज और नियमित चलती हैं कि जब तक हम उनके अक्षांशों में रहे हमें रस्सी को हाथ लगाने की जरूरत ही न पड़ी।

इस बीच एक ऐसी घटना हुई जिसका अपने आप में तो कोई महत्व नहीं है मगर जहाज क मल्लाहो के लिए इसका विशेष महत्व है क्योंकि यह यात्रा की ऊब को दूर करती है, और मल्लाहों को कई दिनों तक बातचीत का विषय मिल जाता है। ऐसी छोटी बातें भी अक्सर दिलचस्प लगती हैं क्योंकि ये जहाज के रिवाजों और उन पर काम करने वालों की मानसिक स्थिति का परिचय देती हैं।

व्यापारी पोतों में होता यह है कि जहाज के कामों के सम्बन्ध में आम तौर पर कप्तान अपने आदेश मालिम को दे देता है और उनका पालन पूरी तरह मालिम

पर ही छोड़ दिया जाता है। यह प्रथा इतनी मान्य हो चुकी है कि कानून जैसी बन गई है। इस प्रथा का अतिलंघन कोई भी चतुर कप्तान नहीं किया करता। किन्तु अगर मालिम अच्छा नाविक न हो तो अक्सर कप्तान को स्वयं ही अपने आदेशों का पालन भी कराना पडता है। मगर हमारे मालिम के बारे में यह बात नही कही जा सकती। वह चतुर नाविक था, और अपने अधिकार की सीमाओं पर किसी का दावा सहन नही कर सकता था।

सोमवार की सुबह को कप्तान ने मालिम को अगले शिखर मस्तूल को सीधा कराने का आदेश दिया। आज्ञानुसार मालिम आगे आया, और सारे मल्लाहों को काम पर लगा दिया; तानों और पिछली तानों पर कप्पियां लगाना, यहां खींचना, वहां ढीलना, और इसी तरह के अनेक कामों में मल्लाह लगे हुए थे और मालिम वहां खड़ा काम करा रहा था। तभी कप्तान स्वयं वहां आ गया और वह स्वयं भी आदेश देने लगा। इससे गडबडी हो गई और मालिम असमन्जस में पड़कर अपनी जगह से हटा और कप्तान से यह कहते हुए जहाज के पिछले भाग में चला गया—

"सर! यदि आप अगवाड में आएंगे तो मैं पीछे चला जाऊंगा। अगवाड पर हममें से एक ही काफ़ी है।"

कप्तान ने इसका जवाब दिया, मालिम ने चिढ़ कर इसका कड़ा जवाब कप्तान को दिया। बात बढ़ गयी, मुट्ठियां तन गई, और ऐसा लगा कि कोई मुसीबत आने वाली है।

"मैं इस जहाज का मालिक हूं।"

"यह ठीक है, सर। और मैं जहाज का मालिम हूं और अपनी ड्यूटी समझता हूं। मेरी जगह आगे है और आपका आसन पीछे है!"

"मेरी जगह वह है, जो में चाहूं। मैं सारे जहाज का मालिक हूं और तुम तभी तक मालिम हो जब तक मेरी इच्छा है।"

"कप्तान टी—आप एक शब्द से मुझे हटा सकते हैं। मैं मल्लाह का काम करने के लिए तैयार हूं! मैं केबिन की खिडकियों से नही आया हूं! अगर मैं मालिम न रहूंगा तो भी मल्लाह तो बना रहूंगा।" इत्यादि, इत्यादि।

हम लोगों के लिए यह मजेदार बात थी। हम इन शक्तिसम्पन्न लोगों के बीच होती हुई इस प्रतियोगिता का मजा एक-दूसरे की तरफ़ इशारे करते हुए लेते रहे।

कप्तान मालिम को जहाज के पिछले भाग में ले गया और उनमें देर तक बातें होती रही। अन्त में मालिम फिर अपनी ड्यूटी पर लौट आया। कप्तान ने धांधली करके जहाज की एक प्रथा तोडी थी जो जहाज के सामान्य कानून का एक अग थी। कप्तान जानता था कि मालिम अच्छा नाविक है और उसको ड्यूटी पूरी करने के लिए किसी की सहायता की जरूरत नहीं है। मालिम का नाराज होना ठीक था। फिर भी गलती मालिम की ही मानी जायगी, कप्तान की नही।

कप्तान जो करे, वही ठीक है क्योंकि वह कप्तान है; और जहाज पर उसका विरोध ही गलत है। जहाज के कागजात पर दस्तखत करते समय यह बात हर मल्लाह और हर अफ़सर को समझा दी जाती है। यह समझौते का एक अंश है। फिर भी व्यापारी पोतों में बहुत सी प्रथाएं पनप चुकी हैं जो सर्वविदित प्रणाली बन गई हैं और उनको परम्परा-सिद्ध कानून की भाँति प्रयोग में लाया जा सकता है।

यह सच है कि कप्तान में ही सारी शक्ति निहित होती है और अफ़सरों के पास उनके प्राधिकार तभी तक रहते हैं जब तक कप्तान चाहे; और मल्लाहों को किसी भी किस्म के काम पर लगाया जा सकता है, लेकिन इन चिरप्रचलित रूढ़ियों को तोडने से कई जहाजों पर संकट उत्पन्न हुआ है, और यहाँ तक कि उनके आधार पर अदालतों में मुकदमे भी चले हैं। ये बातें उस आदमी की समझ में बिल्कुल नही आ सकतीं जो इन प्रथाओं की सार्वदेशिक प्रकृति और उपयोगिता से परिचित नहीं है। अनेक बार इन प्रथाओं को तोडने के लिए कप्तानों को उत्साहित किया गया है, और मल्लाहों पर अत्याचार किए गए हैं। अजनबी लोगों की समझ में इन बातों का महत्व और अर्थ नही आयेगा और जमीन पर रहने वाली जूरियों और न्यायाधीशों ने भी इन्हें तोडने वालों को दन्ड देना उचित नही समझा है।

अगवाड़ में हुई एक लड़ाई को भी सामान्य घटनाओं से भिन्न माना जा सकता है। सारे सफ़र के दौरान मालिम और स्टीवार्ड में अनबन रही थी और लगता था कि किसी दिन इनमें ठन न जाय। लडाई तब हुई जब मालिम ने स्टीवार्ड से पीने के लिए पानी मांगा और उसने यह कहते हुए उसके लिए पानी लाने से इन्कार कर दिया कि वह कप्तान के अलावा और किसी का नौकर नही है। यहां प्रथा स्टीवार्ड के पक्ष में थी। लेकिन जवाब देते हुए वह मालिम के नाम के साथ "मिस्टर" का पुंछल्ला लगाना भूल गया। इससे मालिम नाराज़ हो गया और उसने उसको

"काला आलसी" कह दिया । इस पर उनमें धींगामुश्ती हो गई और वे एक-दूसरे को मारने और धकियाने लगे। हम एक तरफ़ खड़े मज़ा लेते रहे । अश्वेत स्टीवार्ड ने उसको धक्का देना चाहा मगर मालिम ने उसको गिरा लिया और-धर दबोचा । अब स्टीवार्ड चिल्लाने लगा—"मुझे छोड दो, मि० ब्राउन, नही तो खून-खच्चर हो जाएगा !" इसी बीच कप्तान डेक पर आ गया । उसने दोनों को अलग-अलग किया, और स्टीवार्ड को पीछे ले जाकर रस्सी के छः कोडे लगाये । स्टीवार्ड ने अपनी बात ठीक साबित करने की कोशिश की, मगर कप्तान ने उसकी "खून-खच्चर" की बात खुद सुनी थी, और उसके कोड़े खाने के लिए यही बात थी, कप्तान ने उसकी कोई बात सुनने से इनकार कर दिया ।

*   *   *

अध्याय—३४

उसी दिन मैं एक बार बाल-बाल बचा । ऐसी घटनाएं मल्लाह के जीवन में अक्सर होती रहती हैं । मैं तीसरे पहर बराबर ऊपर ही चढ़ा रहा था और काम करता रहा था । करीब एक घन्टे से मैं अगले टापगैलेंट यार्ड पर खडा हुआ था जो टाई के सहारे फहरा रहा था । काम खत्म होने के बाद मैंने डोरियों को लपेटा, अपना बोर्ड हाथ में लिया, टापगैलेंट रस्सियों को संभाल कर पकडा और यार्ड से एक पांव उठाया । अभी मैं दूसरा पाव उठा ही रहा था कि टाई अलग हो गई और यार्ड नीचे गिर गया । चूंकि मैंने रस्सियो को पकड लिया था इसलिए मैं बच तो गया मगर मेरा दिल तेजी से धडकने लगा ।

अगर टाई एक क्षण पहले अलग हो गई होती, या अगर मैं यार्ड पर एक क्षण भी और ठहरता तो मैं बहुत जोरों से नब्बे या सौ फुट की ऊंचाई से समुद्र में गिर पडता, या डेक पर गिर पडता जो उससे भी बुरा होता । फिर भी, "जान बची तो लाखों पाये"—यह एक ऐसी कहावत है जिसका प्रयोग मल्लाह अक्सर किया करते हैं । चलते हुए जहाज में खतरे से बच जाना मजाक से ज्यादा कुछ नहीं है । अगर कोई ऐसी बात को बहुत गम्भीर समझे तो उसकी मजाक उडती है । मल्लाह हमेशा इस बात को जानता है कि उसकी जिन्दगी एक धागे के सहारे लटकती रहती है, इसलिए बार-बार उसे इसकी याद दिलाना बेकार है । इसलिए, यदि कोई आदमी मरने से बच जाता है तो या तो वह उसकी चर्चा ही नहीं करता, या उस घटना का मजाक उड़ाता है ।

मैंने अक्सर देखा कि किसी नाविक को जान एक क्षण के अंतर से, या बाल बाल बची और उसकी ओर किसी ने ध्यान तक नही दिया। केप हार्न से आते समय हमीं में से एक छोकरा, एक अंधेरी रात में शिखरपाल को छोटा कर रहा था। वह समय ऐसा था कि उसको बचाने के लिए कोई नाव तक पानी में नही उतारी जा सकती थी और वहां से अगर वह नीचे गिर जाता तो उसे वही छोड़कर हमें आगे बढ़ जाना पड़ता। अचानक इस छोकरे का पैर रस्सी पर से फिसल गया और अगले ही क्षण वह पानी में गिर पडता, कि यार्ड पर उसके साथी नाविक ने उसकी जैकिट का कालर पकड़ लिया और उसको यार्ड पर खीच लिया। उसने कहा—"अबकी कस कर पकड, बन्दर के बच्चे, होश में आकर काम किया कर।" इसके बाद इस घटना की कभी चर्चा ही नही हुई।

रविवार,सात अगस्त। अक्षांश २५° ५६ दक्षिण, देशातर २७°०' पश्चिम। आज इंग्लैण्ड के बजरे "मेर-कैथरीन" से बात की जो बाहिया से आ रहा था और कलकत्ता जा रहा था। यह पहला मौका था जब हमने लगभग सौ दिनों के बाद कोई जहाज देखा था और अपने जहाज के लोगों को छोड़कर किसी अन्य मनुष्य की आवाज सुनी थी। मल्लाहों का रस्सों के ऊपर से आता हुआ यो-हो स्वर हमारे कानों को सुखदायक लगा।

यह जहाज काफी पुराना, और खस्ताहाल था। जहाज पर ऊपर और नीचे दुर्बचा पाल तने हुए थे। उस वक्त हलका मगर समान वेग से चलने वाला समीर बह रहा था। उसके कप्तान ने कहा कि वह उसे चार नाट से अधिक तेज रफ्तार से नहीं चला सकता। उसका ख्याल था कि उनका सफर बहुत लंबा खिचेगा। उस समय हमारा जहाज छः नाट की रफ्तार से चल रहा था।

अगले दिन दोपहर को करीब तीन बजे एक बड़ा कारविट जहाज इग्लैंड का झन्डा लगाए हुए गुजरा। इस जहाज के अगले और पिछले भाग में रायल और आकाश पाल तने थे। वह पवन के साथ बहता जा रहा था। इसका रुख दक्षिण की ओर पूर्व से होकर था और शायद यह केप हार्न की ओर जा रहा था। उसके शिखरों और काले मस्तूल शिखरों पर नाविक चढ़े हुए थे; बड़ी-बड़ी बल्लियां लगी हुई थीं, पाल अंग्रेजी के टी अक्षर के आकार के कटे हुए थे, और उसमें लड़ाकू जहाज के सारे चिन्ह दिखाई पड़ रहे थे। यह जहाज बहुत तेज चल रहा था और देखने में बहुत अच्छा लग रहा था; इसके पिछले भाग में गर्वयुक्त, आलीशान

दीखने वाला, सेंट जार्ज का झण्डा फहरा रहा था जिसमें गहरे लाल रंग के ऊपर क्रास चमक रहा था।

हमारा जहाज भी शायद इस जहाज के समान ही शानदार दिखाई पड रहा था—जहाज के अगल-बगल चौडाई तक फैले हुए दुपेंचा पाल, उनके ऊपर स्तूप के आकार में लगे हुए रायल दुपेंचा पाल और आकाश पाल, जहाज का ढांचा पूरी तरह पालों से ढंका हुआ था और शायद हमारा जहाज कुछ इस तरह का दिखाई दे रहा होगा जिसे ह्वेल के शिकारी जहाजों के नाविक ठूंठ टापगैलेंट मस्तूलों वाले अपने जहाज को "पाल के बादलों के नीचे केप हार्न जाने वाला जहाज" बताते हैं।

शुक्रवार, बारह अगस्त। सुबह के वक्त हम ट्रिनिडाड के टापू से गुजरे तो अक्षांश २०° २८ दक्षिण, देशातर २६° •८ पश्चिम में अवस्थित है। दोपहर को बारह बजे स्थिति थी उत्तर-पश्चिम ½ उत्तर, फासला सत्ताइस मील। दिन बहुत सुन्दर था, हलकी व्यापारी हवाओं के बहने के कारण शान्त था, और टापू दूर से घास के मैदान से ऊपर उठा हुआ एक छोटा-सा नीला टीला-जैसा लग रहा था। इस सुन्दर और शान्त स्थल के बारे में, कहा जाता है कि, उष्ण कटिबंधीय समुद्रों की शान्ति छीनने वाले समुद्री डाकुओं ने बहुत दिनों तक यहा डेरा डाला था।

बृहस्पतिवार, अट्ठारह अगस्त। दोपहर को तीन बजे हम फरनेन्डो नारोन्हा के टापू से गुजरे जो अक्षाश ३° ५५ दक्षिण, देशांतर ३२° ३५ पश्चिम में अवस्थित है। हमने बोस्टन से सफर शुरू करने के बाद शुक्रवार की रात को बारह बजे से शनिवार की दोपहर के एक बजे के बीच में चौथी बार देशातर ३५° पश्चिम में भूमध्यरेखा को पार किया। स्टेटनलैंड से चले हमें सत्ताईस दिन हो गए थे और जिन रास्तों से हमने सफर किया था, उन रास्तो से यहां से वहा तक का फासला चार हजार मील से ज्यादा था।

अब हम भूमध्यरेखा की उत्तर की दिशा में थे और प्रतिदिन हमारा अक्षांश बढ़ता जा रहा था। दक्षिणी अक्षाश के अंतिम चिन्ह, अर्थात् मैगलन बादल अंतरिक्ष में डूब गए थे; और उत्तरी अक्षांश के परिचित चिन्ह–ध्रुव तारा, सप्तर्षि और अन्य परिचित चिन्ह अंतरिक्ष में उभरने लगे। जमीन के बाद इन नक्षत्रों को रात में अपने सिर पर चमकता हुआ देखने से (जिनकी छाया में वह उत्पन्न हुआ

है) आदमी इस बात को सबसे ज्यादा महसूस करता है कि वह अपने घर के निकट पहुच रहा है।

मौसम बहुत गर्म होता जा रहा था और जैसा उष्णकटिबन्धों में आमतौर पर होता है, कभी चिलचिलाती धूप निकल आती थी तो कभी तूफान आ जाता था। मगर हममें से किसी ने भी गर्मी की शिकायत नहीं की क्योंकि हम इसी मौसम के लिए अपना सर्वस्व त्याग सकते थे। हमारे पास अब पानी भी काफी था क्योंकि हमने एक बड़ा सा चंदोवा तान कर उसमें बीच में पत्थर डाल कर बारिश का पानी इकट्ठा कर लिया था। उष्णकटिबन्धों में गर्म मौसम के बीच-बीच में ये वर्षा के तूफान आते ही रहते हैं।

साफ़ आस्मान; सिर के ठीक ऊपर आग उगलता हुआ सूरज; धीरे-धीरे होता हुआ काम, और मोटे सूती कपडे की पतलूनें, चेक की कमीज़ें, और तिनकों से बने टोप पहने हुए डेक पर इधर-उधर घूमते लोग; पानी पर धीरे-धीरे रेंगता हुआ जहाज; पहिए पर सुकान टिकाये आखों को टोप से ढक कर बैठा नाविक; नीचे तीसरे पहर की झपकी लेता हुआ कप्तान; जहाज के साथ चलती डालफिन मछली को तफरेल पर झुक कर निहारता हुआ यात्री; छतरी के अनुवात बाजू पर एक पुराने शिखरपाल की मरम्मत करता हुआ सिलमाकुर; कटि में बेंच पर बैठ कर काम करता हुआ बढ़ई; रस्से बटते हुए छोकरे; चरखे पर तैयार होने वाला बटा-, सन; और गप्पे लड़ाते हुए जहाज के अगले भाग से पिछले भाग तक चहलकदमी करते हुए मनुष्य।

प्रतिवात दिशा में कुछ काले रंग का एक बादल उमड़ता है, आकाशपालों पर ब्रेक लगा दिया जाता है; कप्तान डेक सीढ़ी के बाहर सिर निकालता है, बादल की तरफ़ देखता है, ऊपर आता है, और डेक पर चहलकदमी करने लगता है।—बादल फैलता हुआ जहाज के ऊपर आ पहुचता है;—सन का टब, पाल, और अन्य वस्तुओ को नीचे पहुँचा दिया जाता है, और रोशनदान तथा फलका खिड़की को बन्द कर दिया जाता है; अगवाड़ को ढक दिया जाता है। "रायल की पाल रस्सियों के पास खड़े रहो"—पहिए पर बैठा नाविक सुकान को संभाल लेता है ताकि तूफ़ान उसे गफ़लत में न दबा ले।

तूफान जहाज पर हमला करता है। अगर तूफान का वेग कम होता है तो रायल पालों को मस्तूल से बाँध दिया जाता है और जहाज अपने रास्ते पर चलता

रहता है, लेकिन अगर उसका वेग तीव्र है तो आगे और पीछे के रायल पालों को लपेट दिया जाता है, कुछ मल्लाह ऊपर चढ़ कर उन्हें बाध देते हैं; टापगैलेंट यार्डों को बाध दिया जाता है, फ्लान जिब को नीचे उतार लिया जाता है, और जहाज को तूफान के सामने से थोडा हटा दिया जाता है,—सुकान पर काम करने वाला नाविक जहाज को प्रतिवात दिशा में ले चलने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देता है। उसी समय इतनी तेज बारिश होती हैं कि नाविक सिर से पैर तक एक क्षण में ही सराबोर हो जाता है। इस पर भी कोई मल्लाह जैकिट नहीं पहनता या टोपी नहीं ओढ़ता क्योंकि गर्मी के मौसम में नाविक भीगने की परवाह नहीं करता; वह यह भी जानता है कि धूप भी जल्दी ही निकल आएगी।

ज्यों ही तूफान का वेग कम होता हुआ प्रतीत होगा, हालांकि अजनबी उस वक्त भी जहाज को तूफान से घिरा हुआ समझेगा, ये आवाजें आनी शुरू हो जाएगी—"जहाज को फिर उसके रास्ते पर लाओ।"—"रास्ते पर लाते हैं, सर।", मल्लाह उत्तर देते हैं। "टापगैलेंट यार्डों को फहरा दो।"—"फ्लान जिब को जल्दी से ऊपर चढ़ाओ।"—"अरे, छोकरो। तुम जल्दी से ऊपर पहुंच कर रायल पालों को ढीला छोड दो।"—और तूफान से पूरी तरह बाहर निकलने के पहले ही जहाज पर सारे पाल चढ़ा दिये जाते हैं, और वह फिर अपने रास्ते आ लगता है।

सूरज फिर आसमान में चमकने लगता है, इस बार वह पहले से बनिस्बत ज्यादा गर्म है, और डेक को और मल्लाहों के कपडों को सुखा देता है, फलों को खोल दिया जाता है; पाल को छतरी पर फैला दिया जाता है; बटा सन तैयार करने वाले नाविक फिर से चरखा चलाने लगते हैं; रस्सियों को लपेट लिया जाता है; कप्तान नीचे की ओर चला जाता है; और शान्तिपूर्वक यात्रा करने में आए विघ्न के सारे चिन्ह मिटा दिए जाते है।

ये दृश्य, जिनमें कभी-कभी घन्टों, और कई बार तो दिनों तक, पूर्ण निस्तब्धता छायी रहती है, अटलांटिक के उष्णकटिबंधीय प्रदेश के उत्तम उदाहरण हैं। रातें सुहावनी थीं। चूंकि दिन भर सभी मल्लाह काम करते थे इसलिए पहिए पर ड्यूटी देने वाले और अगवाड पर पहरा देने वाले एक-एक नाविक को छोड कर बाकी सब नाविकों को डेक पर सोने की इजाजत दे दी गई थी। यह इजाजत शब्दों में तो इतनी स्पष्टता से न दी गई थी मगर इशारों में समझा दी गई थी।

माँगने पर हमें सोने की अनुमति नही मिल सकती थी। अगर पहरा देने वाले को झपकी लेते हुए पकड लिया जाता तो सारी पहरा-टोली को जागना पडता था।

लेकिन अधिकतर हम इस अनुमति का लाभ ही उठाते और अगर हमारी ड्यूटी पहिए या अगवाड पर न होती तो रस्सियों के ऊपर, खुले बाजू की पटरी के नीचे, डन्डो पर, बेलन चरखी के नीचे या किसी और शांत स्थान में अपनी जगह बना कर हम पहरे के घन्टे सोकर गुज़ार देते थे। इस आराम को पाकर हम बहुत खुश थे; क्योंकि जब "सारे मल्लाहों, यहाँ आओ" की परिपाटी चल रही थी तो हर छत्तीस घन्टे बाद नीचे गुजारने के लिए केवल चार घन्टे मिल पाते थे, और अगर हमें सोने के लिए एक घन्टा भी मिल जाता था तो हम उस मौके को हाथ से न जाने देते थे। अगर कोई भारी वर्षा में हमारी पहरा टोली को सोते देखता तो उसे इस सचाई का पूरा अहसास हो पाता। अक्सर ऐसा हुआ कि जब हम डेक पर पहुँचे तो चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता छायी हुई और बारिश लगातार हो रही थी। हमने तय किया कि नीद खराब करना बेकार है। यह सोच कर हमने जहाज की रस्सियों को कुछ नीचे खींच कर उनका एक झूला सा बनाया ताकि डेक पर तैरता हुआ पानी हमसे दूर रहे, और जैकिट अपने ऊपर डाल कर इतनी गहरी नींद में सोते रहे जैसे कोई उच परो के लिहाफ-गद्दों में चैन की नींद ले रहा हो।

भूमध्यरेखा को पार करने के बाद हफ्ते-दस दिन तक हमें निस्तब्धता, तूफानों, सम्मुख पवन और तेज पवन के मौसमों की विविधता प्रायः मिलती रही। एक बार हमने बोलिन के सहारे पवन का सामना करने की तैयारी की, और एक घन्टे के बाद, किसी विशेष अडचन का सामना किए बिना पवन की बगल मे गुज़र कर हमने तफरेल पर मन्द समीर के साथ, दुपेंचा पालों को दोनों ओर फैला कर यात्रा की;—ऐसा तब तक चलता रहा जब तक कि हमारा जहाज उत्तर-पूर्वी व्यापारी हवाओ में नहीं पड गया, और उस दिन—

रविवार, अट्ठाईस अगस्त था और अक्षांश था १२° उत्तर। पिछले एक या दो दिन से व्यापारी पवन के बादल हमें दिखाई दे रहे थे, और हमें उम्मीद थी कि किसी भी क्षण हमारा जहाज इन हवाओं में पड़ सकता है। दिन के पहले भाग में जो हलका दक्षिणी समीर बह रहा था, वह दोपहर को बन्द हो गया, और उसके स्थान पर उत्तर-पूर्व से कुछ झोंके आए। इसलिए हमने दुपेंचा पालों

को लपेट दिया, और जहाज को हवा के रुख में कर दिया। लगभग दो घन्टे बाद, हम आगे की ओर शान से बढ रहे थे और लहरो के झागों को आगे की ओर तथा अनुवात में छोडते जा रहे थे। उत्तर-पूर्वी व्यापारी पवन बराबर चल रहा था जिसमें ठन्डक थी, जो समुद्र में तरंगें पैदा कर रहा था, और जो हमें यह मौका दे रहा था कि हम रायल पालों को ताने हुए आगे बढ़ सकें। ये हवाएं लगातार चल रही थी और तेज़ थीं इसलिए हम आम तौर पर बोलिन पर चल रहे थे क्योंकि हमारा रास्ता करीब-करीब उत्तर-पश्चिम की दिशा में था; और कभी-कभी ज्यों ही उनका रुख पूर्व की ओर होता तो हमें प्रमुख टापगेलेंट दुपेंचा पाल को तानने का मौका मिल जाता और हम फिर आसानी से उत्तर की ओर मुड़ जाते थे। कुछ दिनों तक ऐसा ही चलता रहा, जब कि—

रविवार, चार सितम्बर को इन हवाओं ने अक्षांश २२° उत्तर, देशांतर ५१° पश्चिम में, कर्क रेखा के ठीक नीचे, हमारा साथ छोड दिया।

कई दिनों से हम निस्तब्धता के अक्षांशों में खराब मौसम को "झांसा देते हुए इधर-उधर' सफ़र करते रहे। इस बीच हमें सब प्रकार के मौसम और पवन का सामना करना पड़ा था, और जब हम वेस्ट इन्डीज के अक्षांश में पहुँचे तो हमें एक तूफ़ान (वातोत्पात) का भी सामना करना पडा। यह महीना ऐसा था जिसमें वहाँ हरीकेन तूफानो का डर था, और हम १८३० के उस अति भयंकर हरीकेन तूफान के रास्ते से गुजर रहे थे, जिसने अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को नेस्तनाबूद कर दिया।

जब व्यापारी पवन हमें छोड गया था, तब पहली रात को हमें उष्णकटि-बन्धीय वातोत्पात (तूफ़ान) का एक उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिला। तब हम क्यूबा द्वीप के अक्षांश में थे। रात के पहले भाग में जहाज के ठीक पीछे से हल्का समीर बहता रहा जो धीरे-धीरे शांत हो गया। आधी रात से पहले पूर्ण निस्तब्धता छा गई, और एक गहरे काले बादल ने आसमान को पूरी तरह ढंक लिया।

जब बारह बजे डेक पर हमारी ड्यूटी शुरू हुई तो रसातल जैसा घटाटोप अंधकार छाया हुआ था। दुपेंचा पालों को बाध दिया गया था और रायल पालों को लपेट दिया गया था। कही ज़रा भी हरकत न हो रही थी; यार्डों के सहारे पाल निश्चल और उदास—से लटक रहे थे, और पूर्ण निस्तब्धता तथा अन्धकार इतना मूर्त्त था कि हम सब आतंकित हो उठे थे। कोई बोला कुछ नही, मगर

सब इस तरह खड़े रहे जैसे उन्हे किसी घटना के घटित होने का इन्तजार हो। कुछ मिनटों के बाद मालिम हमारे पास आया और उसने फुसफुसाहट जैसी धीमी आवाज में जिब को नीचे उतार लेने का आदेश दिया। उसी तरह बिना बोले अगले और पिछले टापगैलेन्ट पालों को उतार लिया गया; और हमारा जहाज पानी के ऊपर निश्चल पडा रहा। अब हमें एक चिन्ताजनक और अप्रिय घटना की संभावना थी और उसके घटित होने में जो विलम्ब हो रहा था वह हमारे लिए कष्टदायक ही था।

कप्तान के डेक पर चहलकदमी करने की आवाज हमें सुनाई दे रही थी मगर अंधेरा इतना ज्यादा था कि अगर कोई अपना हाथ भी देखना चाहता तो आंखों के ठीक सामने लाकर ही देख सकता था। शीघ्र ही मालिम एक बार फिर आगे आया और उसने धीमी आवाज में प्रमुख टापगैलेन्ट पाल को मस्तूल से बांध देने की आज्ञा दी। वातावरण की धाक व खामोशी इतना असर कर गई थी कि जैसे आमतौर पर मल्लाह रस्सों पर चढ़कर गीत गाने लगते हैं, वैसा कोई प्रयत्न फिर बिना शान्तिपूर्वक छल्ला रस्सियों और बंटलाइन को खींच लिया गया।

इंग्लैन्ड का एक युवक और मैं उसको लपेटने के लिए ऊपर गए; और अभी हमने, बन्ट को ऊपर खीचा ही था कि मालिम ने हमें कोई और आज्ञा दी, जिसे हम सुन न सके। मगर, हमने यह अनुमान लगाया कि उसने हमें जल्दी से काम निबटाने की आज्ञा दी है, इसलिए हमने जल्दी-जल्दी उसको लपेटा और रस्सियों के सहारे फुर्ती से नीचे उतर आये। नीचे पहुँच कर हमने सारे मल्लाहो को ऊपर की ओर, जहाँ से हम अभी—अभी नीचे उतरे थे, देखते हुए पाया। जहां हम थे, उसके ठीक ऊपर, यानी प्रमुख टापगैलेन्ट मस्तूल के शिखर के ऊपर एक प्रकाश—पिन्ड, जिसे नाविक कोरपोसेन्ट के नाम से पुकारते हैं, चमक रहा था। जब हम ऊपर थे तो मालिम ने हमसे इसी को देखने के लिए कहा था। सारे मल्लाह इसको बहुत ध्यान से देख रहे थे। मल्लाहों में यह धारणा प्रचलित है कि अगर यह पिन्ड रस्सियों में दिखाई दे तो उसका अर्थ है कि आगे मौसम अच्छा मिलेगा, लेकिन अगर यह नीचे की ओर दिखाई पडता है तो वह तूफ़ान के आने की सूचना देता है।

दुर्भाग्य से, हमारे लिए वह अपशकुन बन कर ही आया था; वह नीचे टापगैलेन्ट यार्ड की भुजा पर चमकता दिखायी दिया। हम भली घड़ी में यार्ड से चल

दिये थे क्योंकि इस पिन्ड की पीली रोशनी का किसी व्यक्ति के चेहरे पर पड़ना उसके लिए नितांत अशुभ और अमंगलकारी माना जाता है। वह अंग्रेज नाविक इस पिन्ड को अपने बिल्कुल पास और सिर के ठीक ऊपर आकर अत्यन्त व्यग्र हो उठा। कुछ मिनटों के बाद ही यह प्रभापिन्ड अदृश्य हो गया। एक बार फिर वह अगले टापगैलेन्ट यार्ड के ऊपर चमकता नजर आया। कुछ देर चमकने के बाद वह फिर अदृश्य हो गया। इसके बाद अगवाड पर मौजूद एक मल्लाह ने उसे फ्लान जिब बूम के सिरे पर देखकर हमें उधर देखने का इशारा किया।

मगर वर्षा की कुछ बून्दों के गिरने से और अंधेरे के तेजी से घने होने के कारण हमारा ध्यान बन्ट गया, ऐसा महसूस हुआ जैसे इससे रात का अंधेरा एकदम बहुत बढ़ गया है। कुछ मिनटों के बाद बिजली की धीमी कडक सुनाई दी और दक्षिण-पश्चिम दिशा में कुछ रूक-रूक कर बिजली चमकी। शिखरपालों के अलावा सभी पालों को बाँध दिया गया। फिर भी तूफ़ान आता नहीं दिखाई दिया। कुछ झोंके ज़रूर आए जिनसे शिखरपालें थोडा फडफडाये; मगर फिर वे पहले की तरह मस्तूल से सट गये और शांत हो गये। एक क्षण के बाद अकस्मात हमारे जहाज के ठीक ऊपर बिजली चमचमायी और भयानक वज्रघोष हुआ, और हमारे सिरो के ठीक ऊपर बादल इस तरह पानी बरसाने लगा जैसे महासमुद्र नीचे गिराया जा रहा हो। हम निश्चल और स्तम्भित-से खड़े रह गये; लेकिन बिजली गिरी नही।

वज्रघोष रह-रह कर होता रहा, उसकी आवाज इतने जोर की थी कि साँस अवरुद्ध होने लगा, तथा "बार–बार होने वाली बिजली की चमक" से सम्पूर्ण महासागर आलोकित हो उठा। भारी वर्षा केवल कुछ मिनटो तक ही चली। उसके बाद कभी–कभी बून्दा–बांदी या बौछार पडती रही। लेकिन आसमान में कई घन्टों तक बिजली चमकती रही जिससे रात का घना अंधकार कभी–कभी चुंधिया देने वाली रोशनी से छंट जाता था। इस दौरान हमारा जहाज निश्चल पड़ा था, और ऐसा लगता था जैसे वह निशाना लगाने का अचल टार्गेट हो। हम अपने पहरे के वक्त भी बराबर इसी तरह खड़े रहे। चार बजे हमें छुट्टी मिली।

इस दौरान शायद ही कोई किसी से बोला हो, घन्टियां भी नहीं बजीं, और पहिए पर पहरा चुपचाप बदल दिया गया। थोडी-थोडी देर के बाद भारी बौछार हो जाती। हम सिर से लेकर पैर तक बिलकुल भीग जाते थे और हमारी आंखें बिजली की चमक से चुंधिया जाती थीं जो घोर अंधकार को भी दूर कर सकती

थीं और उसमें इतनी रोशनी थी कि अशुभ लगती थी। गड़गड़ाहट के साथ बादल गरजते थे जिनके धक्कों से महासागर कांपता हुआ लगता था।

जहाज को आमतौर पर बिजली से क्षति नहीं पहुँचती, क्योंकि उसमें बहुत से पाइन्ट होते हैं और उसके विभिन्न भागों में लोहा काफी मात्रा में लगा रहता है। बिजली का प्रवाह हमारे लगरो, शिखर पाल की रस्सियों और टाई पर दौड़ता रहा; फिर भी हमें कोई नुकसान नहीं पहुँचा।

चार बजे जब हम नीचे की ओर चले तो वातावरण ऐसा ही था और उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया था। जब स्थित ऐसी भयंकर हो कि बिजली की एक ही चमक जहाज के दो टुकड़े कर सकती हो, या उसमें आग लगा सकती हो, या जब हरीकेन तूफान के झोंकों से मृत्यु जैसी निस्तब्धता टूट रही हो, और तूफान के झोके जहाजसे मस्तूल उखाड़ कर ले जाने की धमकी दे रहे हों, तो सोना आसान नहीं है। और वह आदमी मल्लाह नहीं है जो ड्यूटी समाप्त करने के बाद सो नहीं सकता और बुलाने पर फौरन डेक पर नहीं पहुच सकता। और जब सात घन्टियां बजने पर "अनुवात पहरे के मल्लाहों, आओ" की परिचित आवाज सुन कर हम डेक पर पहुँचे तो हमने देखा कि सुबह साफ, और सुन्दर थी तथा सूरज चमक रहा था; जहाज आराम से आगे बढ़ रहा था; मंद समीर बह रहा था; और जहाज पर सारे पाल चढ़ा दिये गये थे।

*　　　*　　　*

अध्याय—३२

वेस्ट इंडीज के अक्षांश से बरमूडा तक हमें प्रत्येक प्रकार का मौसम मिला। बरमूडा पहुंच कर हमें दक्षिणी-पश्चिमी पवन मिला जो पतझड़ के शुरू के मौसम में आमतौर पर संयुक्त राज्य के तट पर एक रफ्तार से बहता है। यहां दो-तीन साधारण झंझाएं भी आयीं जो सामान्य ढङ्ग से ही आई और एक ही उदाहरण से उनके बारे में समझा जा सकता है।

एक दिन अच्छे मौसम में तीसरे पहर के समय सारे मल्लाह काम पर लगे हुए है, कुछ रस्सियों पर हैं और अन्य डेक पर; तेज समीर चल रहा है जहाज पवन के रुख में बढ़ रहा है, आकाशपालों पर ब्रेल लगा दिये गये हैं। तीसरे पहर के अन्तिम भाग में समीर का वेग बढ़ जाता है, जहाज उसके रुख में बढ़ता है, और बादल तूफानी नजर आते हैं। अगवाड पर बौछार शुरू हो जाती है और छोकरे

जिस सन को बट रहे थे वह भीग जाता है। वे उसे लपेट कर नीचे पहुँचा आते हैं। मालिम काम बन्द करा देता है और रोजाना की बनिस्बत कुछ पहले ही डेकों को खाली करा देता है, और नीचे उतरते हुए उस आदमी को जो मस्तूल के ऊपर काम कर रहा था पाल रस्सियों को प्रतिवात दिशा में कर देने की आज्ञा देता है। एक छोकरा पिछले रायल पाल को लपेटता है। रसोइया सोचता है कि अब शायद "बहुत काम" करना होगा; इसलिए वह सपर जल्दी ही तैयार कर लेता है।... रोजाना की तरह मेट सारे मल्लाहों को सपर लाने की आज्ञा नही देता बल्कि पहरा टोलियों को बारी-बारी से इसके लिए भेजता है।...सपर खाते वक्त हमें ऊपर के लोगों द्वारा रायल पालों को उतारने को आवाज सुनाई पड़ती है।

डेक पर पहुँच कर, देखते हैं कि समीर पहले की बनिस्बत तेज हैं, और सामने समुद्र में उत्ताल तरंगें उठ रही हैं।

रोज की तरह सारे मल्लाहो को अधपहरों में बाँट कर अगवाड में रह कर सिगरट पीने, गाना गाने और कहानियाँ सुनाने का मौका नही दिया जाता। एक पहरा-टोली के नाविक नीचे जाते हैं और यह कह कर सो जाते हैं कि आज की रात खराब साबित होगी और इसलिए दो घन्टे की नींद छोडनी नहीं चाहिए। बादल काले और गहरे दिखाई देते हैं; पवन का वेग बढ़ता है, और सम्मुख क्षुब्ध समुद्र में जहाज गिरता-पडता चलता है। समुद्र उसके अगवाड पर आघात करता है, और उसका पानी पूरे जहाज को भिगोता हुआ पीछे मोरियों से निकल जाता है।

फिर भी और पालों को नही उतारा जाता क्योंकि कप्तान श्रेष्ठ चालक हैं और दूसरे चालकों की तरह वह अपने टापगैलेंट पालों को नही उतारना चाहता। टापगैलेंट पाल से समीर और झन्झा का पता चल जाता है। जब किसी जहाज पर टापगैलेंट पाल तने होते हैं तो समझ लीजिए समीर बह रहा है, हालांकि मैंने अपने जहाज में ऐसे मौसम में भी छोटे किये गये शिखरपालो पर टापगैलेंट पालों को तना देखा है जब कि आधा सबदरा पानी में डूबा हुआ था और अनुवात की मोरियों में घुटनों-घुटनों पानी था। आठ घन्टियाँ बजने पर शिखरपालों को छोटा करने की बात ही नहीं चलती और पहरा-टोली को "हुक्म सुनते ही ऊपर आने के लिए तैयार रहने" की आज्ञा देकर नीचे भेज दिया जाता है।

शिखरपालों को पहरा-बदली के समय छोटा न कराने के लिए "बुड्ढे" की

शिकायत करते हुए हम नीचे जाकर बिस्तर में पड जाते हैं। अब अगर पाल छोटे करने के लिए सारे मल्लाहों को बुलाने की नौबत आयी तो नीचे के मल्लाहो की नींद व्यर्थ ही खराब होगी। यह सोच कर हम जागते ही रहते हैं कि अगर थोडी देर के बाद जागना ही है तो सोने में क्या फायदा।...डेक पर पवन शोर करता है, और जहाज सम्मुख विक्षुब्ध महासागर में चलते हुए कराहता तथा डोलता है और ऊब-डूब करता है। मोरी के ऊपर समुद्र इतने जोर से आघात कर रहा है जैसे किसी चट्टान पर आघात कर रहा हो।...अगवाड में जलता हुआ धुन्धला लैम्प इधर-उधर झोंके लेने लगता है और चीजें खिसक-खिसक कर अनुवात की ओर जाने लगती हैं।

"क्या यह दूसरे मालिम का बच्चा कभी भी टापगैलेंट पालों को नही उतारेगा? ऐसा रहा तो डन्डे पालों को फाड़ कर निकल जायेंगे।" बूढ़ा बिल कहता है। वह अक्सर शिकवा-शिकायत करता रहता था, और अधिकांश पुराने जमाने के नाविको की भांति जहाज को लापरवाही से चलाने के खिलाफ था। आखिर एक आज्ञा दी जाती है;..."अच्छा, अच्छा, सर।"...अगवाड से उत्तर दिया जाता है; रस्सियों को खींच कर डेक पर डाल दिया जाता है;...ऊपर से एक पाल के फडफडाने की आवाज और साथ ही एक छोटी तेज पुकार सुनाई पड़ती है जो मल्लाहों के मुंह से अक्सर छल्ला रस्सियों पर काम करते समय निकलती है।... "अब अगले टापगैलेंट पाल को लपेटा जा रहा है।"

हम पूरी तरह जाग रहे हैं और सब कुछ इतनी स्पष्टता से होता हुआ समझ रहे हैं जैसे हम स्वयं डेक पर मौजूद हों। मस्तूल के शिखर से पहरे के अफसर के लिए एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई देती है कि क्या खुले बाजू की कमानी को कस दिया जाए?... "ओह। पाल लपेटने के लिए ऊपर एस...गया है।" अब हमारे सिरो के ठीक ऊपर रस्सियों को घसीटा जा रहा है, और देर तक होने वाली जोर की आवाज और हसलियों की खड-खड से हमें मालूम हो जाता है कि फ्लान जिब को उतार लिया गया है। दूसरा मालिम प्रमुख टापगैलेंट पाल को तना ही रहने देता है, लेकिन जब एक उत्ताल तरंग जहाज पर चढ़ आती है और अगवाड़ को इस तरह पानी में डूबा देती है जैसे पूरा महासागर ही जहाज में घुस आया हो, तब पीछे से आती हुई आवाज से हमें पता लग जाता है कि उस पाल को भी उतार लिया गया है।

इसके बाद कुछ देर तक जहाज आराम से चलने लगता है; दो घन्टियाँ बजती हैं, और हम कुछ देर के लिए सोने की कोशिश करते हैं। कुछ देर बाद ही मोखे पर बहुत ज़ोर की खटखटाहट होती है—"सारे मल...ला...हों, ऊ...प...र।" हम अपनी बर्थों से फ़ौरन उछलते हैं, झट से जैकिट और बरसाती टोप पहनते हैं, और सीढ़ियाँ फाँद कर ऊपर पहुँचते हैं। मालिम हमसे पहले ही ऊपर पहुँच चुका है, और अगवाड़ पर खड़ा होकर कुपित सांड की तरह चरित-चीख कर आज्ञाएं दे रहा है, छतरी पर कप्तान चिल्ला-चिल्लाकर आज्ञाएं दे रहा है, और दूसरा मालिम कटि में खड़े होकर लकड़बग्घे की तरह चीख रहा है। जहाज समुद्र पर ऊब-डूब कर रहा है; अनुवात की मोरियाँ पानी में डूब गयी हैं, और अगवाड पूरी तरह झागों से ढक गया है। रस्सियों को खोल दिया गया है और वे पानी के साथ डेकों पर बह रही हैं। शिखर पालों के यार्ड नीचे कर दिये गये हैं, और पाल मस्तूलों पर बुरी तरह फड़फड़ा रहे हैं, और जमना पहरे के लोग प्रमुख शिखर पाल को छोटा करने में लगे हैं।

हमारे पहरे के मल्लाह अगले शिखरपाल को खीचने में सफल हो जाते हैं, और ऊपर चढ़ कर उसमें दो लपेट लगा देते हैं। अगले पाल को छोटा करने के बाद जमना पहरे के लोगों के साथ उनमें बहस हो जाती है कि देखें पहले कौन अपने शिखरपाल को मस्तूल (के शिखर) से बाधे। सारे मल्लाह प्रमुख टैंक पर काम में लग जाते हैं, कुछ मल्लाह जिब को बाध रहे हैं और तान पाल को ऊचा कर रहे हैं, हम पिछले शिखरपाल के मल्लाह पिछले शिखरपाल में दो लपेट लगाकर उसे ऊंचा कर देते हैं। सारा काम शीघ्र निबट जाने के कारण "पहरा टोली नीचे जाए" की आवाज़ आती है और हम नीचे जाकर बाकी वक्त को, जो शायद डेढ घन्टा है, सो कर गुज़ारने के लिए लेट जाते हैं।

सुबह के पहरे के दो-तिहाई वक्त तक हवा बहुत ज्यादा तेज़ बहती है, किन्तु अंतिम भाग में उसकी तेज़ी काफी कम पड़ जाती है और हम प्रत्येक शिखरपाल का एक लपेट खोल देते हैं और उनके ऊपर टापगैलेंट पालों को लगा देते हैं; सात घन्टियाँ बजने पर जब नाश्ते के लिए लोग ऊपर आते हैं तो एक लपेट और खोल देते हैं, और फिर सारे मल्लाह पाल रस्सियों पर लग जाते हैं, टापगैलेंट की रस्सियों व पाल रस्सियो पर कुप्पियाँ लगाते हैं, फ्लान जिब को तानते हैं, तथा जहाज को फिर तेज रफ्तार से ले चलते हैं।

बोस्टन से रवाना होने से कुछ हफ्ते पहले ही हमारे कप्तान ने शादी की थी, और दो साल तक घर से बिछुड़े रहने के बाद उससे आशा की जा सकती थी कि वह जहाज पर अधिक पाल चढ़ाने में ढील नही डालेगा। मालिम भी घबराने वाला आदमी नहीं था; और दूसरा मालिम, हालाकि वह अधिक पाल तानने से डरता था मगर साथ ही कप्तान से इस तरह घबराता था जैसे मौत से, इसलिए कभी-कभी तो वह कप्तान और मालिम से भी ज्यादा पाल तनवा देता था। हमने चौबीस घन्टे में तीन फ्लान जिब बूमो को चढ़ाया, स्प्रिट पाल यार्डों को लगाया; और टुपेंवा पालों की बूमों को यथापूर्व ही रहने दिया।

घर पहुचने की स्वाभाविक जल्दी के अलावा जहाज को तेजी से चलाने का एक कारण और भी था। जहाज में पर स्कर्वी रोग की शुरुआत हो गयी थी। और एक मल्लाह तो इससे इतना पीडित हो गया था कि वह ड्यूटी देने लायक भी न रहा, और अंग्रेज युवक; बेन, की हालत भी खराब हो गई थी और बराबर बिगड़ती ही जा रही थी। उसके पैरो में इतनी सूजन चढ गई थी और इतना दर्द होता था कि वह चल नही सकता था, उसके मांस की लोच इस कदर खत्म हो गई थी कि अगर उसे कहीं से दबाया जाता तो वह अपनी असली हालत में नहीं आता था; उसके मसूढ़ों में सूजन बढ़ती गई और आखिर उसके लिए मुंह खोलना असंभव हो गया। उसके मुह से सांस लेते समय बदबू आने लगी, सारी शक्ति और उत्साह समाप्त हो गया; वह कुछ खा-पी नहीं सकता था, हालत दिन-पर-दिन बिगडती गई, जिस तरह उसकी तबियत गिर रही थी, अगर उसी तरह गिरती रहती और उसके लिए कुछ न किया जाता तो एक हफ्ते में वह चल बसता। करीब-करीब सारी दवाईयां खत्म हो चुकी थीं, और अगर हमारे पास सन्दूक-भर दवाईयां भी रही होती तो भी कुछ न हो पाता क्योंकि इस बीमारी में सिर्फ ताजा खाने और खुश्क जमीन से ही लाभ होता है।

यह बीमारी आजकल इतनी ज्यादा नही होती जितनी पहले होती थी; आम तौर पर इस बीमारी के कारण ये बताए जाते हैं—लवणयुक्त भोज्य पदार्थ, गन्दगी, ग्रीज और चर्बी के पदार्थों का अत्यधिक प्रयोग (इसी कारण व्हेल का शिकार करने वाले नाविकों में यह बीमारी आम तौर पर पाई जाती है), और आलस्य। हमारे जहाज पर इस बीमारी के मौजूद होने का कारण अंतिम, अर्थात् आलस्य तो हो नहीं सकता; और न दूसरा, अर्थात् गन्दगी, कारण ही हो सकता है क्योंकि हम

जहाज को बिल्कुल साफ़ रखते थे, हम अगवाड़ को बिल्कुल साफ़ रखने के आदी थे, और कपड़े धोने और बार-बार धुले कपड़े पहनने के बारे में हम इतने सावधान थे जितने शायद बहुत से जमीन पर रहने वाले भी न रहते हों। इस बीमारी का कारण शायद यह रहा हो कि हमें लवणयुक्त पदार्थों के अलावा खाने को और कुछ नहीं मिलता था, और शायद इसका कारण यह भी रहा हो कि हम एकदम ठंडे इलाके से निकल कर जल्दी ही काफी गर्म इलाके में आ गए थे।

पश्चिमी हवाओं पर निर्भर करके (जो पतझड़ के मौसम में किनारे के आस-पास बहा करती हैं) कप्तान ने जहाज का रुख पश्चिम की ओर रखा ताकि बरमूडा में से होकर सफ़र किया जा सके। साथ ही यह उम्मीद भी थी कि शायद वेस्ट इंडीज़ या दक्षिणी राज्यों की ओर जाने वाले किसी पोत से मुलाकात हो जाए। अभी हमारे जहाज के दूसरे मल्लाहों में स्कर्वी नहीं फैली थी किन्तु खतरा मौजूद था कि वह कभी भी फैल सकती है, और यह बीमारी खतरनाक होती है।

रविवार, ग्यारह सितम्बर। अक्षांश ३०°०४' उत्तर, देशांतर ६३° २३' पश्चिम; बरमूडा द्वीपसमूह उत्तर-उत्तर-पश्चिम की ओर डेढ सौ मील दूर थे। अगले दिन करीब दस बजे "जहाज़ हो।" की आवाज़ डेक से आई; और सारे मल्लाह नवागंतुक को देखने के लिए डेक पर आ गए। ज्यों ही वह पोत हमारे नज़दीक आया, हमने देखा कि वह साधारण-सा दो मस्तूलों वाला हरमाफ्रोडाइट जहाज है जो दक्षिण-दक्षिण-पूर्व में यात्रा कर रहा है और शायद उत्तरी राज्यों से वेस्टइंडीज की ओर जा रहा है। हम ऐसे ही पोत को देखना भी चाहते थे।

हमें बात करने के लिए उत्सुक देख कर वह हमारी तरफ़ बढ़ा और हम उसकी तरफ़ दौड़े। पास आने पर हम उससे बोले—"हल्लो।"—उन्होंने कहा। "आप किधर से आ रहे हैं, कृपया!"—"न्यूयार्क से, कराकुआ जा रहे हैं।"—"क्या आपके पास कुछ ताजी खाद्य सामग्री फालतू है?"–हाँ, हाँ, जितनी आप चाहें!"

हमने फौरन एक नाव नीचे उतारी, कप्तान तथा चार मल्लाह उसमें कूद गए, और जल्दी ही उस जहाज के पास दिखाई दिए। लगभग आध घन्टे बाद हमारे नाविक आधी नाव आलू और प्याज लेकर लौटे। इसके बाद दोनों जहाजों ने हवा भरी और अपने-अपने रास्ते पर चल दिये। इस जहाज का नाम "सोलन" था, जो प्लाइमाउथ से रवाना होकर कनेक्टीकट नदी के मार्ग से न्यूयार्क पहुंचा था और अब स्पेनिश मेन (कैरिबियन सागर के पास) की ओर जा रहा था। वह ताजी

खाद्य सामग्री, खच्चर, टीन के तवे और दूसरे बरतन ले जा रहा था।

प्याज बहुत उम्दा और ताजा था। उस जहाज के मालिम ने नौका पर सवार हमारे मल्लाहों को सामान देते हुए कहा था कि जिस दिन वे सफर के लिए चले थे, उस दिन लडकियों ने शायद इसीलिए उनके साथ इतना अतिरिक्त सामान रख दिया था।

हम लोगो का खयाल था कि पिछले जाडो में नए राष्ट्रपति का चुनाव हो गया होगा, और इसलिए ज्यो ही हम हवा भर कर चलने को हुए, तभी कप्तान ने जोर से पूछा कि सयुक्त राज्य राष्ट्रपति कौन हुआ। उन्होने जवाब दिया; ऐन्ड्रयू जैक्सन मगर तभी हमने यह सोचा कि यह पुराना जनरल तीसरी बार कदापि न चुना गया होगा, इसलिए हमने अपना सवाल दुहराया। इस बार उन्होने जवाब दिया–जैक डाउनिंग; वे हमको फुरसत से अपनी गलती सुधारने के लिए छोड कर चल दिये।

जब हम आगे बढ़े तो डिनर का समय हो चला था। केबिन वालों के लिए कुछ प्याज अलग रख कर बाकी सारी प्याज और सिरके की एक बोतल स्टीवार्ड ने हमें दे दी। हम उन्हे लेकर आगे की ओर चले और अगवाड में संभाल कर रख दिया। हमने प्याज पकाया नही बल्कि बीफ़ और रोटी के साथ कच्चा ही खाया। क्या शानदार स्वाद था उसका।

कच्चे प्याज की ताजगी व कुरकुरेपन और बरतो में पैदा होने वाली चीज के विशिष्ट स्वाद को ऐसा आदमी कहो ज्यादा पसन्द कर सकता है जो एक लम्बे अरसे से नमकीन भोजन पर ही जिन्दा हो। हम तो इसके दीवाने थे। हमारे लिए इसकी सुगन्ध ऐसी ही थी जैसी शिकारी कुत्ते के लिए खून की गंध। हम हर बार खाने के साथ दर्जनों प्याज़ खा जाते। हम हमेशा अपनी जेबों को प्याज से भरे रहते ताकि डेक पर पहरा देते समय भी प्याज खा सकें; और इस तरह छोटे से लेकर बड़े से बडे प्याज तक तेजी से खत्म होने लगे।

ताजे सामान से सबसे ज्यादा फायदा स्कर्वी के रोगियों को पहुंचा। उनमें से एक रोगी कुछ खा सकने की स्थिति में था और कच्चे आलू चबाने से वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गया। दूसरे व्यक्ति की हालत इस वक्त इतनी बिगड़ गई थी कि उसके लिए मुंह खोलना भी कठिन था। रसोइए ने कच्चे आलुओं को कूंडी में रखकर खूब कूटा और उसका अर्क उसे पीने को दिया। उसने चम्मच के सहारे

थोड़ा-थोड़ा करके यह अर्क पिया और अपने मसूढ़ों पर व गले में उसे बिलोया।

कच्चे आलुओं के इस अर्क के स्वाद व गंध से पहले तो उसके शरीर में कंप-कंपी छूट गई। उसको पीने के बाद उसके सारे शरीर में भयंकर पीडा, हुई। मगर यह जानकर कि इससे उसको लाभ होगा, उसने वह कष्ट सह लिया और हर घन्टे बाद एक चम्मच अर्क लेता रहा। अर्क को वह काफी देर तक बिना निगले ही मुंह में रखता। अन्त में इसको पीने का, और उसकी आशावादिता का (क्योंकि पहले उसने ठीक होने की आशा त्याग दी थी) नतीजा यह हुआ कि वह थोडा बहुत चलने-फिरने लगा और उसका मुंह इतना खुलने लगा कि कुटे हुए आलू और प्याज खा सके। इस तरीके को अपनाने से उसकी भूख और ताकत लौटने लगी, उसकी तबियत इतनी जल्दी ठीक हुई कि बर्थ पर निराश और असहाय स्थिति में पड़े रहने के बजाय "सोलन" से हमारी मुलाकात के दस दिन बाद वह मस्तूल के ऊपर चढ़ कर रायल पाल को लपेट रहा था।

अनुकूल दक्षिणी-पश्चिमी हवा में हम बरमूडा द्वीपसमूह के अन्दर से होकर गुजरे। उसकी पुरानी उक्ति के बावजूद जिसको उन लोगो ने बार-बार दुहराया जिनका यह ख्याल था कि हमें अपनी यात्रा समाप्त करने से पहले एक और तूफान का सामना करना पड सकता है—

अगर बरमूडा द्वीपसमूह से तुम सकुशल निकल जाओ
तो हैटर द्वीपसमूह से सावधान रहना।

हम हैटर द्वीपों के उत्तर की ओर पहुँच गए। मौसम सुहावना था। अब हम दिनों में नही बल्कि घन्टों में बोस्टन पहुँच कर लगर डालने वाले थे, और इसी बारे में अटकलें लगा रहे थे।

हमारे जहाज की दशा बहुत अच्छी थी। जब से हमें केप के इस पार गर्म मौसम मिला था, सारे मल्लाह रविवार को छोड कर सुबह से शाम तक इसे ठीक रखने के लिए कठिन परिश्रम कर रहे थे।

भूमि पर रहने वाले लोगों की यह आम धारणा है कि जब जहाज यात्रा पर रवाना होने के लिए बन्दरगाह से चलता है, तो उसकी हालत सबसे अच्छी होती है, और जब वह काफ़ी लंबी यात्रा के बाद वापिस लौटता है तो उसकी ऐसी होती है।

पसलियाँ निकल आयी हैं, और पाल चिथड़े हो गये हैं
वात-वेश्या ने दुर्बल, फटेहाल और भिखारी बना दिया है।

किन्तु सचाई यह है कि अगर कोई दुर्घटना हो जाए या जहाज भीषण ठन्ड के मौसम में किनारे पर आये जब ठन्ड के कारण मल्लाह रस्सियों पर काम न कर पायें, तो दूसरी बात है वर्ना यात्रा के अन्त में जहाज़ की दशा सबसे अच्छी रहती है। जब जहाज बन्दरगाह से चलता है तो आमतौर पर उसकी रस्सियां ढीली-ढाली होती हैं, मस्तूलो को रस्सो आदि का सहारा देने की आवश्यकता होती है; सामान को चढ़ाने के कारण डेक और जहाज के बाजू काले और गन्दे हो जाते हैं; कोई काम पक्के नाविक जैसी बारीकी से नही किया जाता बल्कि अनगढ़ और बेढंगा होता है; और मल्लाह को उस वक्त हर चीज़ अस्तव्यस्त दिखाई देती है। लेकिन लौटती बार उष्णकटिबन्धो के बीच का सारा वक्त जहाज को अच्छी तरह सजाने में लगाया जाता है।

लम्बी यात्रा के बाद इन्डियामैन या केपहार्न की यात्रा करने वाले पोत से ज्यादा उम्दा हालत में और कोई जहाज नही देखा जा सकता अनेक कप्तान और मालिम नाविक के रूप में अपनी ख्याति इसी बात पर निर्भर समझते हैं कि जब यात्रा से वापस आकर उनका जहाज गोदी में घुसता है तो उसकी सजा कैसी रहती है। हमारे जहाज में अगले और पिछले भाग की सारी अचल रस्सियों को ठीक करके उन पर तारकोल कर दिया गया था; मस्तूलों कोरस्सों से भली भाँति जमा दिया गया था; निचले और शिखर मस्तूल की रस्सियों को नीचे उतार दिया गया था, (या चढ़ा दिया गया था, जैसा आज कल रिवाज है) और हमारे अफ़सर पेंट रस्सियों को सीधा और तनी हालत में रखने के लिए इतने सावधान थे कि हमें उन रस्सों और उठान बल्लियों के ऊपर चढ़ना पडा जिनसे रस्सियों को लपेटा जाता है, और किनारे पर पहुँचने तक इनका कामचलाऊ पेंट रस्सियो की तरह इस्तेमाल किया गया।

इसके बाद हमने अन्दर और बाहर से जहाज को, डेकों को, मस्तूलों को, बूमों को, तथा अन्य सारी चीज़ों को खुरचा, हमने बाहर की तरफ़ रस्सियों का एक झूला-सा बनाया, इस पर बैठ कर हमने नीचे तक जहाज को खुरचा। जहाज की जन्जीरों, बोल्टों और कुंडियों की जंग उतारी गयी। फिर हमने जहाज पर बाहर की ओर रंग किया; और जहाज के पृष्ठभाग को, जहा समुद्री-घोड़ों के रथ पर सवार हाथ में त्रिशूल थामे देव वरुण को बैठा हुआ था, चमकाया। इसके बाद ऊपर से लेकर नीचे तक जहाज के अन्दर के हिस्सों की रंगाई हुई—यार्डो को काला;

रहा था, आसमान साफ़ था और उसके पोत पर ऊपर और नीचे दुपेंचा पाल तने हुए थे, इस पोत के सामने गहरे काले बादलों की एक बड़ी कतार थी जो पानी के किनारे की तरह लग रही थी। इन बादलों के पीछे से एक अन्य पोत निकल कर बाहर आ रहा था जिस पर दो लपेटों से छोटे किये गये शिखर पाल तने थे और रायल यार्ड नीचे कर दिये गए थे। जब वे भी उन बादलों के निकट पहुँचे तो उन्हें भी एक के बाद एक करके सारे पाल उतार देने पड़े और उनके पोत की हालत भी उस पोत जैसी हो हो गई; और भयंकर तरंगों और तेज झन्झा के विरुद्ध चौदह या पन्द्रह घन्टों के बाद वे फिर इसके दूसरी ओर पहुँचे जहा मौसम साफ़ था: इसलिए रायल और आकाश पाल फिर से तान दिये गए।

जब हम उसके पास पहुँचे तो आसमान बादलों से ढंका हुआ था, समुद्र विक्षुब्ध था और वहा के वातावरण से ऐसा लगता था कि या तो कोई तूफान शांत हो चुका है या आने वाला है। हवा का बहाव ऐसा ही था जैसा तेज समीर का होता है; किन्तु चूंकि हवा का रुख उत्तर–पूर्व था जो धारा के बहाव के ठीक उल्टी दिशा में है; इसलिए समुद्र में इतनी ऊंची-ऊंची तरगें उठने लगीं कि हमारा पोत इधर-उधर बुरी तरह डगमगाने लगा और हमें रायल यार्डों को नीचे करना पड़ा तथा हलके पालों को उतार लेना पड़ा। थर्मामीटर को बार-बार पानी में डाल कर तापमान देखा जा रहा था। दोपहर को तापमान सत्तर हो गया जो हवा के तापमान से ज्यादा था। स्ट्रीम के बीच में हमेशा तापमान ऐसा ही होता है।

रायल मस्तूल शिखर के ऊपर जो छोकरा काम कर रहा था वह नीचे डेक पर आया और दीर्घ नौका का एक चक्कर लगा कर हमारे पास आया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह बोला कि उसकी तबियत इतनी ख़राब है कि अब वह ज्यादा देर तक ऊपर नहीं रह सका; साथ ही अफ़सरों से यह कहने में उसे शर्म महसूस हुई। वह फिर ऊपर चढ़ा किन्तु शीघ्र ही नीचे उतर आया और 'महिला यात्री के समान मतली से पीडित' होकर वह रेलिंग पर झुककर खडा हो गया।

वह समुद्र पर कई वर्षों से सफ़र कर रहा था लेकिन इससे पहले कभी बीमार नहीं पड़ा था। उसकी तबियत इसलिए ख़राब हो गई थी क्योंकि हमारा पोत लगातार इतना डगमगा रहा था, और चूंकि वह जहाज के ढांचे से बहुत ऊपर (जो

लीवर के आलम्ब के समान है) था इसलिए इतनी ज्यादा ऊंचाई पर उन झटकों का प्रभाव बढ़ जाता था ।

एक अनुभवी, पुराना मल्लाह् टापगेलेन्ट यार्ड पर काम कर रहा था । उसने बताया कि वहाँ उसको तबीयत गडबडा गयी थी और अपना काम खत्म करने के बाद जब वह कुछ नीचे और अंततः डेक पर आया तब उसकी जान में जान आयी । रायल मस्तूल शिखर पर एक दूसरे मल्लाह को भेजा गया । वह वहा करीब एक घन्टे तक रहा मगर फिर लौट आया । लेकिन यह काम भी होना बहुत जरूरी था, इस-लिए मालिम ने मुझे भेजा ।

कुछ देर तो मैं ठीक–ठाक रहा मगर फिर मैं वहां बहुत बेचैनी महसूस करने लगा हालाकि बोस्टन छोडने के बाद के पहले दो दिनों के अलावा मुझे एक बार भी मतली न आई थी और मैं सब प्रकार के मौसमों व स्थितियो में होकर गुजरा था । फिर भी, मैं बराबर काम करता रहा और काम पूरा किये बिना नीचे नही उतरा, इस काम को करने में मुझे लगभग दो घन्टे लगे ।

जहाज पहले कभी इतनी बुरी तरह पेश नही आया था । वह बुरी तरह इधर–उधर हिचकोले और गोते खा रहा था; पालों का बोझ उसे सुस्थिर बनाये रखने में असफल हो रहा था । मस्तूलों की शुन्डकार नोकों से आकाश में कई वक्र व कोण बन रहे थे; और कभी–कभी तो चाप एक क्षण में ही पैंतालीस डिग्री का बनता हुआ दिखाई देता जिससे अकस्मात ऐसा झटका लगता कि दोनों हाथो से किसी चीज को पकडे बिना रुकना असंभव हो जाता, और दूसरे ही क्षण यकायक एक दूसरा लम्बा और टेढ़ा-मेढ़ा वक्र बन जाता था ।

मुझे कोई खास मतली नहीं आयी, और मैं कुछ तटस्थ भाव से नीचे आया; फिर भी डेक पर पहुँच कर मुझे राहत ही मिली । कुछ घन्टों तक हम इसी तरह रहे । जब हमें अपने अनुवात की शहतीर पर उत्तरी अमरीका महाद्वीप की दिशा में सूर्य अस्त होता दिखाई दिया तो हम गोधूलि वेला में गहरे तूफानी बादलो के झुन्डों को पीछे छोड़ चुके थे ।

* * *

अध्याय—३४

शुक्रवार, सोलह सितम्बर । अक्षांश ३८° उत्तर, देशांतर ६९° ००' पश्चिम। दक्षिण-पश्चिम का अनुकूल पवन बह रहा था; प्रत्येक घन्टा हमें भूमि के अधिक समीप ला रहा था । अवपहरे के समय सारे मल्लाह डेक पर थे, बन्दरगाह पर कब वापिस पहुचेंगे, लंगर कहा डालेंगे, क्या हम रविवार से पहले पहुँच जाएंगे, गिरजे जा सकेंगे, बोस्टन कैसा लगेगा, मित्र कैसे होंगे, तनख्वाह कब मिलेगी—और ऐसी बातों के सिवा आपस में अन्य कोई बात नही हुई ।

हममें से हर एक आदमी बहुत उत्साह में था । चू कि यात्रा अब समाप्त होने को थी, इसलिए अनुशासन में थोडी ढील दे दी गई थी; क्योंकि जिस काम को हर एक खुशी खुशी कर देने के लिए तैयार हो उसके लिए चिड़चिड़े स्वर में आज्ञा देना अनावश्यक ही था । लम्बी यात्रा में जो छोटे छोटे मतभेद आ जाते हैं या झगडे हो जाते हैं, उन्हें भुला दिया गया और हर एक मित्रवत व्यवहार करने लगा । जो दो आदमी सफर के आधे वक्त तक लगातार झगड़ते रहे थे, अब वे मिल कर किनारे के पास नाव में थोडी देर सैर करने की योजना बनाने लगे ।

मालिम अगवाड में आया और मल्लाहो को बताया कि हम कल दोपहर से पहले जार्ज बैंक पर पहुँच जाएगे । उसने छोकरों के साथ हसी-ठट्ठा किया और उन्हें स्वारी में बिठा कर मार्बिलहेड तक छोड़ आने का वायदा किया ।

शनिवार, सत्रह सितम्बर । आज सारे दिन लगातार हल्की हवा चलती रही इसलिए हम तेजी से सफ़र कर सके । मगर रात होते ही अनुकूल समीर बहने लगा और हम स्थल की ओर तीव्र गति से चलने लगे । छह बजे के करीब ज्यों ही गहरा कुहरा दीखना शुरू हुआ हमें यह उम्मीद हुई कि पानी की गहराई नापने के लिए जहाज को समुद्र के किनारे के पास ले जाने की आज्ञा दी जाएगी; मगर आज्ञा नहीं दी गई और हम अपने मार्ग पर बढ़ते गए । आठ बजे, और पहरे के लोग नीचे चले गए । पहले एक घन्टे तक लगातार, नीचे और ऊपर की तरफ़ दुपेंचा पालो को फैलाए हुए जहाज पानी पर सरपट दौड़ता रहा । रात बेहद काली थी ।

दो घन्टियां बजने पर कप्तान डेक पर आया, उसने मालिम को कोई आज्ञा दी । तभी दुपेंचा पालों को मस्तूलों के शिखरों से बाँध दिया गया, पिछले यार्डों को पीछे की ओर हटा दिया गया, गंभीर समुद्र के प्र म को आगे लाया गया, और पानी की गहराई नापने के लिए सारी तैयारियां पूरी कर ली गई । शिरस्थ पाल

थार्ड पर एक आदमी, दूसरा बगली जंजीरों पर, एक दूसरा मल्लाह कढि पर गया, दूसरा मुख्य जंजीरों पर खडाकर दिया गया और हर के पास रस्सी की पिंडियाँ थीं।

"आगे, सब तैयार ?"—"हाँ-हाँ, सर !" "फेंक...को...!",—श्रिप्ट पाथ पर मौजूद आदमी चिल्ला उठता है—"दखो ! हो ! देखो !" और भारी रस्सी पानी में गिरा दो जाती है। ज्यो ही लंगर-कुन्दे पर मौजूद आदमी के हाथ की पूरी रस्सी पानी में जाती है, वह चिल्ला उठता है—"देखो ! हो ! देखो !" इसी तरह से रस्सी लिए हुए हर आदमी पुकार लगाता है ! अन्त में मालिम का नंबर आता है जो छतरी पर प्रूम को देखता है। अस्सी फैदम (छह फुट की एक नाप) और फिर भी गहराई का अन्त नहीं ! यह गहराई, सेंट पीटर्स की ऊचाई के बराबर थी।

रस्सी को ब्लाक पर लपेट लिया जाता है, और तीन-चार मल्लाह उसकी पिंडी बना लेते हैं। पिछले थार्डों को पूरी तरह हवा के अनुकूल कर लिया जाता है, दुपेंचा पालों को फिर से तान दिया जाता है, और कुछ ही मिनटों में जहाज फिर से अपने रास्ते पर चल पडता है। चार घन्टियां बजने पर फिर एकबार जहाज को रोक कर पानी की गहराई नापी जाती है। साठ फैदम ! थाकी भूमि—हुर्रा !

एक के बाद एक मल्लाह रस्सी को खीचता है, और कप्तान रस्सी को रोशनी में ले जाकर देखता है। रस्सी के अन्त में उसको काली मिट्टी चिपकी हुई मिलती है। दुपेंचा पालों को उतार लिया जाता है, पिछले थार्डों को तान दिया जाता है, और जहाज को हलके पालों के सहारे सारी रात आराम से सफर करने के लिए छोड दिया जाता है; हवा का बहाव बहुत कम होता जा रहा है।

अमरीका के किनारों के आस-पास पानी की गहराई इतने नियमित रूप से नापी जाती है, कि हर एक नाविक पानी की गहराई जान लेने से ही अपनी स्थिति का ज्ञान उसी तरह प्राप्त कर लेता है जिस तरह वह भूमि से साक्षात देखने से जान सकता है। काली मिट्टी ब्लाक आइलैंड के आस-पास मिलती है। ज्यों-ज्यों आप नानटकट की ओर बढते जाएगे, वह काले रेत के रूप में बदलती जाएगी। फिर रेत और सफेद सीप मिलते हैं, और जार्ज बैंक के पास सफेद रेत मिलती है, आदि। ब्लाक आइलैंड से चलकर हमारा रास्ता पूर्व की ओर नानटकट शाओल्स, और साउथ चैनल की ओर था। किन्तु पवन बहना बन्द हो गया और हम घने कुहरे से घिरे हुए सारे रविवार को स्थिर-से पडे रहे।

रविवार, अट्ठारह सितम्बर की दोपहर को। गणना के हिसाब-किताब से ब्लाक

आइलैंड की स्थिति है—उत्तर-पश्चिम ¾ पश्चिम-पन्द्रह मील। किन्तु दिन भर कुहरा इतना घना रहा कि हम कुछ न देख सके।

जहाज की ड्यूटी से, नहाने-धोने और हजामत के काम से निबट कर हम नीचे गए। हम उस वक्त बड़े आनन्द के साथ अपने सन्दूकों को खोल कर चीजें सँभालते रहे कि हम कौन-से कपड़े पहन कर किनारे पर जाएंगे, और, हमने जितनी चीजें बेकार थीं और इस्तेमाल की जा चुकी थीं—सब को समुद्र में फेंक दिया। हमने उन टोपियों को फेंक दिया जिनको हमने कैलिफ़ोर्निया के किनारे पर सोलह महीनों तक पहन कर अपने सिरों की रक्षा की थी, रस्सियों पर कोलतार करने से फ्राक बेकार हो गए थे; फटे हुए और रफ़ू किये गये बिना अंगुलियों वाले दस्ताने और पैबन्द लगे ऊनी पायजामे (जिन्हें पहन कर केप हार्न पर हमने भारी से भारी काम किए थे) —सब दूर बहा दिये गये।

हमने शुभाशंसा के साथ उन्हें समुद्र में फेंका क्योंकि दुर्भाग्य के अंतिम उपकरणों तथा पोषाकों से छुटकारा पाने जैसा सुख और किसी बात में निहित नहीं है। हमने किनारे पर जाने के लिए अपने सन्दूकों को पूरी तरह तैयार कर लिया, और हलवा खाया जिसके बारे में हमें उम्मीद थी कि "एलर्ट" जहाज पर हमें अंतिम बार हलवा मिल रहा है, और हम सारी बातों पर इतने विश्वास के साथ बातें करते रहे जैसे हमारा जहाज गोदी में लंगर डाल चुका हो।

"आज से एक हफ़्ते बाद मेरे साथ गिरजे कौन चलेगा ?"

"मैं"—जैक जवाब देता है, जो किसी बात का उत्तर न में नहीं देता।

"दूर हट, खारे पानी !" टाम कहता है—"ज्यों ही मेरे ये दोनों पैर किनारे पर पहुँचेंगे, मैं जूते पहनूंगा और पीछे की किसी आवाज को भी नहीं सुनूंगा और सीधा रास्ता पकड़कर तब तक भागता ही रहूँगा जब तक यह खारा पानी मेरी आंखों से ओझल न हो जाए !"

"बस, बस ! रहने भी दे ! यह बात उसे सुनाना जो तुझे जानता न हो ! अगर एक बार तू उस बुड्ढे बी—की शराब की दूकान में जम गया और कोयले की आग तापने लगा और बगल में शराब रख ली तो तीन हफ़्तों तक तो तुझे सूरज का मुंह भी दिखाई न देगा !"

"नहीं !" टाम कहता है—"अब मैं शराब छोड़ दूँगा; अब मैं घर पर ही रहूँगा। अब देखूंगा कि वे मुझे डीकन कैसे नहीं बनाते हैं !"

बिल कहता है—"और मैं—मैं एक क्वाड्रैंट खरीदूँगा और हिगम के किसी जहाज पर दिक् चालन निर्देशक बनूंगा।"

हमें समीर का इन्तजार था ताकि कुहरा छंट जाए और हम अपने रास्ते पर आगे बढ़ चलें। इन्तजार की घडियों को हम इसी तरह की हँसी-दिल्लगी में काटते रहे। रात होने के वक्त हलका समीर बहने लगा। फिर भी कुहरा पहले की तरह ही घना रहा, और हम पूर्व की ओर बढ़ते रहे। पहले पहरे के बीच के समय में अगवाड से एक मनुष्य चिल्ला उठा—"सुकान को कडा करो!" उसकी ध्वनि से ही समझ गए कि एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए। कुहरे से अकस्मात एक बड़ा जहाज बाहर निकल कर हमसे टकराता दिखाई दिया। वह जहाज भी ऐन वक्त पर मुड गया और हम एक-दूसरे से सट कर गुजरे। हमारे स्पैंकर पाल की बूम उसके क्वार्टर से रगड खाते हुए गुजरे डेक के अफसर को अभिवादन करने का समय ही मिला। उसने उत्तर दिया और फिर घने कुहरे में छिप गया। जवाब ब्रिस्टल के बारे में था। शायद वह जहाज ब्रिस्टल रोड्स आईलेंड, का ह्वेल जहाज था और अपनी यात्रा पर जा रहा था। कुहरा रात भर उसी तरह घना बना रहा, हलका समीर बहता रहा, और उसके सामने हम पूर्व की ओर बढ़ते रहे। अब हम अपने रास्ते को महसूस कर सकते थे। रस्सी को हर दो घन्टो के बाद पानी में डाला जाता। काली मिट्टी की जगह अब रेत मिलने लगी थी इसलिए हमने यह समझा कि हम धीरे-धीरे नानटकट साउथ शोअल्स के निकट पहुँच गये हैं।

सोमवार की सुबह को पानी की बढ़ती हुई गहराई और गहरे नीले रङ्ग से, तथा गहराई नापने से मिला सीपी और सफेद रेत के मिश्रण से हमें पता लगा कि हम चैनल में हैं और जार्ज के निकट पहुँच रहे हैं। इसलिए जहाज का मुंह सीधे उधर की ओर कर दिया गया और हम पानी की नपाई पर पूरा विश्वास करके बराबर चलते ही रहे, हालांकि हमने पिछले दो दिनों से न तो पर्यवेक्षण किया था और न ही भूमि देखी थी; और एक फर्लांग गलत चलने से भी जहाज का किनारे से टकराने का डर था।

सारे दिन हलकी-हलकी प्रेरणादायक हवा चलती रही। आठ बजे हमें मछली पकडने वाला दो मस्तूलों वाला छोटा-सा जहाज मिला। उससे हमें मालूम हुआ कि हम चैथम लाइट्स के निकट पहुँच चुके हैं। आधी रात से कुछ ही पहले भूमि

की ओर से आने वाला हलका समीर चलने लगा और हम इसके सहारे आराम से बढते गए। चार बजे हमने सोचा कि हम रेस पाइन्ट के उत्तर में हैं, इसलिए हमने हवा की ओर जहाज का रुख किया और बोस्टन दीप-स्तभ के उत्तर-उत्तर-पश्चिम में, खाडी में पहुँच गए, और पाइलट को बुलाने के लिए तोपें छोडने लगे।

हमारे पहरे के लोग नीचे चले गए मगर सो न सके क्योंकि ऊपर के पहरे के लोग हर बार कुछ मिनटों के बाद दनादन गोले छोड रहे थे। और सच यह है कि हमें अपनी नींद में इस विघ्न से जरा भी दुख न हुआ क्योंकि हम बोस्टन की खाड़ी में पहुँच चुके थे, और हमें विश्वास था कि अगर भाग्य साथ दे गया तो अगली रात हम इस तरह चैन से सोयेंगे कि हमें हर चार घन्टे के बाद पहरे के लिए बुलाने वाला कोई न होगा।

दिन निकलने पर हम स्वय ही ज़मीन को देखने के लिए ऊपर आ गए। पौ फटने की हलकी रोशनी में हमें धुंधलके के पीछे से झांकती हुई एक या दो मछली मारने वाली एक मस्तूल वाली नौकाएं दिखाई दी। जब दिन की रोशनी फैल गयी तो हमारे अनुवात क्वार्टर पर केप काड की नीची रेतीली पहाड़ियां दिखाई दीं, और हमारे सामने मैसाचुसेट्स की खाडी फैली हुई थी जिसके शान्त पानी पर इधर-उधर कुछ जहाज तैर रहे थे।

जब हम बन्दरगाह के मुहाने के निकट पहुचे, जैसे कोई केन्द्रस्थान के निकट पहुंचता है, तो हमने देखा कि पोतों की संख्या बराबर बढ़ती जा रही है, अन्त में हमें खाड़ी में सब कहीं और प्रत्येक दिशा में जहाज ही जहाज नजर आने लगे। कुछ पवन के प्रतिकूल सरक रहे थे और कुछ उसके रुख में बढ़ रहे थे—ये जहाज या तो वाणिज्य केन्द्र और खाडी के बीच से आ रहे थे या वहां जा रहे थे। हम लोगों के लिए यह अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण दृश्य था क्योंकि महासागर पर यात्रा करते हुए हमने महीनों तक दो एकाकी जहाजों के अलावा अन्य कुछ न देखा था; और एक वीरान जगह में तीन या चार व्यापारी जहाजों को देखने के अलावा हमें बडी संख्या में जहाजों को देखे दो वर्ष से अधिक हो चुके थे।

खाडी के घुमावदार स्थानों में दक्षिणी तट के साथ-साथ और पूर्व की ओर छोटे-छोटे तटपोत दिखाई पड़ रहे थे जो भिन्न नगरों से यहां आए थे या वहां जा रहे थे। इधर-उधर कुछ खेवाह वर्दी वाले पोत समुद्र की ओर मुंह किए खड़े थे। बहुत दूर, केप ऐन्न के पार एक स्टीमर का धुंआ दिखाई दे रहा था जो पानी के

ऊपर छोटे काले बादल के रूप में छाता जा रहा था। प्रत्येक दृश्य सुन्दर और मनोरंजक था। हम अब अपने घरों की ओर वापस लौट रहे थे, और हमारे चारों ओर सभ्यता, समृद्धि, तथा प्रसन्नता (जिनसे हम इतनी देर तक बहिष्कृत रहे थे), ये चिन्ह लगातार बढते जा रहे थे। केप ऐन्न की ऊंची भूमि, तथा कोहासेट की चट्टानें और किनारा हमें दिखाई दे रहे थे; बन्दरगाह के सामने प्रकाश-स्तम्भ प्रहरियों की भांति खडे थे; और हमें हिंगम के मैदानों को चिमनियों से निकलता हुआ धुआ तक नजर आ रहा था। हममें से एक मल्लाह टोकरी बनाने वाले का बेटा था। जब उसने अपने घर के आस-पास की पहाडियों को देखा तो उसकी आँखें चमक उठी। करीब दस बजे एक छोटी नाव पानी के ऊपर उछलती-कूदती हुई हमारी तरफ आई और उसने हमारे जहाज पर एक पाइलट चढ़ा दिया तथा बन्दरगाह के अन्दर जाने वाले अन्य पोतों की तलाश में चली गई। अब हम टेली-ग्राफ के क्षेत्र में थे, इसलिए हमारे संकेत तट की ओर भेजे गए। करीब आधे घन्टे में व्यापारियों के एक्सचेंज के दफ्तर में, जहाज के स्वामी को मालूम हो गया कि उसका जहाज आ पहुँचा है; भूस्वामियों, दलालों और ऐन्न स्ट्रीट के घाघों को पता लग गया कि खाडी में उनके लिए भारी शिकार आ पहुँचा है : एक जहाज हार्न का चक्कर लगा कर लौटा है, जिसके नाविकों को दो साल की तनख्वाह मिलेगी।

हवा लगातार हलके-हलके बहती रही। सारे मल्लाहों को चैंफिंग गियर उतारने के लिए ऊपर भेज दिया गया, और पट्टियां, पालो के पटे, लपेट रस्सियाँ, लच्छिया, चटाइया और चमड़े—ये सब नीचे उतार लिये गये और इस तरह जहाज पर से वे सारी चीजें उतार ली गयी जो इस पर समुद्र-यात्रा पर रवाना होते समय लादी गयी थी।

आकाशपाल के खंभों पर रङ्ग करने द्वारा पोत को अंतिम रूप से तैयार किया गया। मुझे एक बाल्टी सफ़ेदा और ब्रुश देकर आगे की ओर भेज दिया गया, और मैंने उस पर सफेद रङ्ग कर दिया। दोपहर को हम निचले प्रकाश-स्तंभ के पास स्थिर पड़े थे। क्योंकि पानी नाकाफी था, इसलिए हमारी प्रगति विशेष नही हुई। हिंगम की दिशा से एक गोली छूटने की आवाज आई और पाइ-लट ने बताया कि वहां सैन्य-प्रदर्शन हो रहा है। यह सुनकर हिंगम का मल्लाह जोश में आ गया, और उसने कहा कि अगर जहाज सिर्फ बारह घन्टे पहले वहां

पहुँच जाता तो इस वक्त वह सैनिकों के साथ और खेमे में बैठा हुआ मजे से वक्त गुजार रहा होता। मौजूदा हालात देखते हुए रात से पहले वहां पहुँचने की आशा नहीं थी।

करीब दो बजे पश्चिम की ओर से समीर बहने लगा और हमने उससे मोर्चा लेना शुरू कर दिया। उसी समय सम्पूर्ण पालों का एक दो मस्तूलों वाला जहाज भी हमारी तरह समीर से मोर्चा ले रहा था और इसलिए हम अपनी-अपनी दिशा में एक-दूसरे के प्रतिकूल दिशा में जाने की कोशिश में निकलते-पिछड़ते आगे बढ़ते रहे। यह बहुत कुछ पवन और ज्वार के साथ देने या प्रतिकूल होने पर निर्भर था।

दो से चार बजे तक पहिये का संभालने की ड्यूटी मेरी थी; और मैं अपने दोनों पोतों के सुकान पर गुजारे हुए लगभग हजार-नौ सौ घन्टों में अपनी अंतिम ड्यूटी को भली प्रकार पूरा करने का प्रयत्न करता रहा। ज्वार ने हमारे प्रतिकूल आना शुरू किया, और हमारे जहाज की प्रगति धीमी हो गयी। जब हम अन्दर के प्रकाशस्तंभ के निकट पहुँचे तब तक तीसरा पहर लगभग बीत चुका था। इस बीच बाहर की ओर जाने वाले अनेक पोत गुजरे। इनमें से एक पोत घुड़दौड़ के घोड़े की तरह दौड़ता हुआ हमारे पास से गुजरा जो बहुत बड़ा तथा सुन्दर था, उसके यार्ड चौकोर लगे हुए थे, इस पोत के लिए हवा और ज्वार अत्यंत अनुकूल थे। इस पोत के नाविक दुपँचा पालों की बूमों को उतारने में लगे हुए थे।

सूर्यास्त के समय हवा के झोंके रह-रहकर आने लगे। कभी-कभी हवा बहुत तेज हो जाती थी इसलिए पाइलट ने रायल पालों को उतरवा लिया, लेकिन फिर तुरन्त ही यह शांत हो गई। ज्वार की गति तीव्र होने से पहले तट पर पहुंचने के लिए हमें रायल पालों को फिर से खोलना पड़ा। चूंकि इस दौरान हम लोगों को रस्सियों के ऊपर और नीचे आना-जाना पड़ता था, इसलिए प्रत्येक शिखर मस्तूल पर एक आदमी लगा दिया गया ताकि हुक्म के मिलते ही वह पालों को खोल या बांध सके। मुझे अगले पाल पर भेजा गया। रेन्सफोर्ड आइलैंड और कैसिल के बीच के रास्ते में मुझे पांच बार रायल पालों को खोलना और बांधना पड़ा।

एक बार तो हम रेन्सफोर्ड आइलैन्ड के इतना नजदीक पहुँच गए कि रायल यार्ड से देखने पर वहां की हस्पताल की इमारतें, साफ-सुथरी कंकरीट की राहें, और हरे-भरे मैदान मुझे यार्ड भुजा के ठीक नीचे दिखाई दिए। इन कुछ द्वीपों के आस-पास चैनल इतना संकरा है कि एक बार त्रावं आईलैंड में हमारी

फ्लान जिब बूम वहाँ के दुर्ग की प्राचीर से टकरा गया। इस तरह निकट से गुज-रने के कारण हम यह भी देख सके कि इस स्थान के प्राचीरों से घिरा होने का क्या लाभ है। चैनल से होकर यात्रा करते हुए हमने जहाज के अग्र व पृष्ठ भाग से तीन या चार बार तोपें दागी थी जिनमें से एक तोप तो शायद हमारे जहाज की धज्जियां ही उड़ा देती।

हम सबों की यह दिली इच्छा थी कि हम किनारे पर शीघ्र पहुँच कर रात होने से पहले शहर में पहुँच जाएं लेकिन प्रतिकूल दिशा से ज्वार का वेग बढ़ना शुरू हो गया था और पवन उलटा बह रहा था, इसलिए हम ज्वार का सामना करते हुए बहुत कम प्रगति कर सके। पाइलट ने लगर को तैयार रखने और जंजीर को देखभाल लेने की आज्ञा दी। दो बार लम्बे फ़ासले तय करने के बाद जिससे हम अपने मार्ग पर आ लगे, कैसिल की अनुवात दिशा में, उसने शिखरपालों को बंधवाया और लंगर डाल दिया। सैन डियागो छोडने से एक सौ पैंतीस दिन बाद हमने पहली बार लंगर डाला था।

आधे घन्टे के बाद हम सारे पालों को लपेट कर पोस्टन बन्दरगाह में सुरक्षित खडे थे। हमारी लम्बी यात्रा समाप्त हो गई थी। वह चिरपरिचित दृश्य अब हमारे सामने था। आकाश की पश्चिम दिशा में राज भवन का गुम्बद धुंधला पडता जा रहा था; अंधेरा होने पर शहर की रोशनियां दिखाई पडने लगी थी। नौ बजने पर घन्टियों की जानी-पहचानी टन-टन ध्वनि शुरू हुई। बोस्टन के मल्लाह यह पहचानने का प्रयत्न करने लगे कि इनमें से ओल्ड साउथ की घन्टियों की ध्वनि कौन सी है।

अभी हमने पालो को पूरी तरह लपेटा ही था कि एक छोटी-सी सुन्दर नाव कूदती हुई हमारे क्वार्टर के नीचे पवन के बहाव के साथ आई और कम्पनी का छोटा साझीदार जो हमारे जहाज का मालिक था, कूद कर जहाज पर चढ आया। मैंने उसको पिछले शिखरपाल यार्ड से देखा और पहचान लिया। उसने कप्तान से हाथ मिलाया और केबिन में चला गया। कुछ क्षणों के बाद वह बाहर आया और उसने मालिम से मेरे बारे में पूछा। आखिरी बार जब उसने मुझे देखा था तो मैं हारवार्ड कालिज के अंडर ग्रेजुएट की ड्रेस पहने हुए था, और उसे यह देखकर बहुत अचरज हुआ कि उस विद्यार्थी की जगह मोटा सूती पायजामा और लाल कमीज पहने हुए, लम्बे बालों वाला, और आदिवासी की तरह काले चेहरे वाला ओहदा

सा दिखायी देने वाला एक आदमी ऊपर से उतर कर उसके सामने आ खड़ा हुआ है। उसने मुझसे हाथ मिलाया, मेरे वापिस लौटने और स्वस्थ तथा शक्तिशाली दिखाई देने पर बधाई दी, और कहा कि मेरे सारे दोस्त प्रसन्न हैं। मैंने इस सूचना पर उसको धन्यवाद दिया जिसे उससे पूछने का साहस मैं खुद नहीं कर सकता था, और—

> अशुभ सूचना के प्रथम वाहक के लिए
> दुआ नहीं निकलती; और उसकी ध्वनि
> शोक सूचक घन्टियों की तरह हमेशा याद रहती है।

और निश्चय ही मैं इस व्यक्ति को और उसके शब्दों को सदैव प्रसन्नतापूर्वक याद रखूंगा।

मि० एच—के साथ कप्तान नाव पर बैठ कर शहर के लिए रवाना हो गया, और हमें एक रात और जहाज पर बिताने के लिए तथा सुबह को ज्वार के साथ आने के लिए पाइलट की देख रेख में छोड़ गया।

इस वक्त हम अपने घर पहुँचने के लिए इतने उतावले हो रहे थे कि हमने सूखी रोटी और नमकीन बीफ के भोजन को शायद ही हाथ लगाया हो। बहुत से लोग तो जिनकी यह पहली यात्रा थी, रात को सो भी न सके। जहां तक मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है, मैं अनुभूति के उन विरोधमूलक परिवर्तनों से (जिनके अधीन हम सब हैं) इतना अभिभूत हो गया था कि मैं पूर्णतया तटस्थता की स्थिति को पहुंच गया था। हालांकि मैं इसका कारण नहीं बता सकता। एक साल पहले जब मैं खालें लेकर किनारे पर पहुँचा था तो यह आश्वासन सुनकर मैं खुशी से पागल हो उठा था कि मैं बारह महीनों के अन्दर ही बोस्टन वापस पहुँच जाऊंगा। लेकिन अब, जब मैं वाकई वापस आ पहुंचा था, घर मेरे सामने था, तब मेरे वे मनोभाव जागृत नहीं हुए जिनके लिए मैं इतने अर्से से अनुभव कर रहा था, बल्कि उनके स्थान पर मैं स्वयं को बहुत-कुछ निरपेक्षता की स्थिति में पा रहा था।

कुछ इसी तरह की स्थिति की बात मुझे एक मल्लाह ने सुनाई। वह पहली बार उत्तरी पश्चिमी किनारे पर पाँच साल की यात्रा करके लौटा था। उसने छोटी उम्र में ही घर छोड़ दिया था और कई साल तक कठिन श्रम करने और कटु अनुभवों को उठाने के बाद वह घर की ओर चला था। उसकी अनुभूतियों की उत्तेजना इस हद तक थी कि सारे सफ़र के दौरान वह सिर्फ़ अपनी वापिसी के

बारे में बातें करता और सोचता रहा था कि जब पोत बन्दरगाह पर पहुंचेगा तो वह उसी क्षण उससे कूदकर सीधा घर की तरफ चल देगा। मगर जब जहाज को घाट से बांधा गया और सारे मल्लाहो को छुट्टी दी गई तो उसे यकायक ऐसा लगा कि उसमें उस तरह का कोई मनोवेग शेष नहीं रह गया है। उसने मुझे बताया कि तब वह नीचे गया, कपडे बदले, मौखे की टंकी से थोडा पानी लिया और आराम से हाथ-मुंह धोया, सन्दूक खोला और कपड़े संभाल कर रखे; पाइप उठाकर भरा और अपने सन्दूक पर बैठकर आराम से आखिरी बार पिया। अब उसने उस अगवाड को बहुत ध्यान से देखा जहा उसने इतने साल काटे थे; और यह देख कर कि वह अकेला है और जहाज के सारे संगी-साथी चले गए हैं, वह वाकई दुखी महसूस करने लगा। घर अब उसके लिए एक सपना-सा हो गया था; और वह वहा देर तक बैठा रहा। अन्त में उसका भाई (जिसने जहाज के लौट आने की खबर सुन ली थी) अगवाड में आया और उसको घर की सारी बातें सुनाई, कि घर पर कौन-कौन बैठा उसकी राह देख रहा हैं, तभी वह समझ सका कि उसकी वास्तविक स्थिति क्या है, और उस जगह को जाने के लिए उठ सका जहाँ जाने के लिए कई बरस पहले से ही उसका दिल तडपा था और उसने स्वप्न देखे थे।

शायद बहुत देर से बंधी हुई आशा में इतनी उत्तेजना निहित होती है कि जब विशेष परिवर्तन के बिना उसकी सिद्धि होने का समय आता है तो मनुष्य की अनुभूति में और उसके प्रयत्न दोनो में ही कुछ क्षणों के लिए निश्चलता आ जाती है। काफ़ी हद तक ऐसी ही बात मेरे साथ भी थी। तैयारी के प्रयत्नों ने, जहाज की तेज रफ्तार ने, पहली बार जमीन पर पहुँचने की बात ने, बन्दरगाह पर आ जाने की बात ने, और दृष्टि के सामने पुराने दृश्य आ जाने से मेरे मन और शरीर की ऐसी सक्रियता को जन्म दे दिया था जिसके कारण, आशा और श्रम की आवश्यकता—इन दोनों चीजों के अभाव में कर्म से पूर्ण विरति की इस नयी स्थिति से, मैं सहम कर शांत हो गया था; और इससे जागने के लिए मुझे किसी नई उत्तेजना की आवश्यकता थी। अगले दिन सुबह को जब सारे मल्लाहों को डेक पर पुकारा गया और हम फिर काम में, डेकों को साफ करने, और घाटों पर पहुँचने के लिए सारी चीजों को तैयार करने में व्यस्त हो गए,—सलामी के लिए तोपों में गोले भरने, पालों को खोलने, और बेलन-चरखी पर काम करने लगे तो मुझे अपना मस्तिष्क और शरीर दोनों साथ-साथ जागते हुए महसूस हुए।

दस बजे के आस-पास समुद्री समीर बहने लगा । पाइलट ने लंगर उठाने की आज्ञा दी । सारे मल्लाह बेलन चरखी पर जुट गये और "यो, हीव हो !" की वह आवाज गूंजी जिसको हमने आखिरी बार सैन डियागो की वीरान पहाड़ियों पर डूबते हुए सुना था । शीघ्र ही लंगर मोरों पर चढ़ा लिया गया । हवा और ज्वार अनुकूल थे, सुबह का तेज सूरज चमक रहा था, रायल और आकाश पालों को लगाया गया, झण्डा, लम्बी त्रिभुजाकार ध्वजा, चिन्ह, तथा पताका फहराए हुए, और तोपें दागते हुए हम तेजी से तथा शानदार ढङ्ग से शहर की ओर धाए ।

घाट के एक सिरे पर हमने जहाज घुमाया और लंगर डाल दिया । और अभी लंगर जमीन में लगा भी न था कि डेकों पर तटकर अधिकारियों; खबरें लेने के लिए टापलिफ के एजेन्टों; जहाज पर सवार लोगों की पूछताछ करने के लिए हुए लोगों की भीड़ लग गयी । ग्रोज के व्यापारी रसोई बावर्चीखाने में पहुंच कर रसोइए ने उसकी बेकार चीजों का मोल-भाव करने लगे; "लोफर" और होटलों के दलाल जो अपने असामियों की तलाश में आए थे ।

इन दलालों के व्यवहार की उदारता का कोई मुकाबला नहीं कर सकता । वे बड़ी दिलचस्पी के साथ लम्बी यात्राओं से लौटे हुए मल्लाहों को गाँठने की कोशिश करते हैं क्योंकि उनकी जेबें भरी होती हैं । उनमें दो तीन ने एक साथ मेरा हाथ पकड़ कर खींचातानी की; उन्होंने मुझ से ऐसा अभिनय किया जैसे वे मुझे अच्छी तरह जानते हैं; उन्हें पूरा यकीन था कि जहाज पर सवार होने से पहले मैं उन्हीं के होटल में ठहरा था; मुझे वापिस लौटा हुआ देख कर वे बहुत खुश थे; उन्होंने मुझे अपने-अपने कार्ड दिए; मुझे बताया गया कि मेरा सामान ले चलने के लिए ठेला घाट पर खड़ा है; मेरा सन्दूक किनारे तक पहुँचाने में वे मेरी मदद करेंगे; अगर हम तुरन्त ही वहाँ के लिए न चल सकें तो वे हमारे लिए जहाज पर ही आग की एक बोतल ला दें...और इस तरह की बातें । सच तो यह है कि पाल लपेटने के लिए ऊपर जाने के लिए उनसे पिंड छुड़ाना मुश्किल हो गया ।

एक के बाद दूसरा पाल, अच्छे और बुरे मौसम दोनों में, हमने सौंवी बार और आखिरी बार पालों को लपेटा, नीचे उतरे और गून को किनारे की ओर ले चले, हवीत पर आदमी लगाए, इतनी जोर से सहगान गाया कि वह उत्तरी सिरे की आधी दूरी तक, और गोदी में बनी इमारतों में गूंजता रहा, तब हमने जहाज को घाट से लगा दिया । यहाँ भी मकान मालिक और दलाल बड़े जोशीले और

मदद देने के लिए तैयार थे। वे हंसते, बातें करते व खबरें सुनाते हुए मल्लाहों के काम में हाथ बंटा रहे थे।

जब शहर की घन्टिया एक बजने की सूचना दे रही थीं तब आखिरी फंदा डाल कर जहाज को घाट से कसा गया और नाविकों को छुट्टी दे दी गई। पांच मिनट के बाद इस भले जहाज "एलर्ट" पर एक आदमी भी नजर न आया सिवाय बुड्ढे रखवाले के जो कांडटिंग दफ्तर से जहाज की देख-रेख के लिए उस पर भेजा गया था।

*　　*　　*

उपसंहार

मुझे विश्वास है कि जिन महानुभावों ने मेरे वृत्तांत को अंत तक पढ़ा है, वे थोड़ा ध्यान आगे भी देंगे और इन मन्तव्यों को पढेंगे जो मैं निष्कर्ष रूप में यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यात्रा समाप्त करने के बहुत दिनों बाद यह अध्याय लिखा गया है। सफ़र से लौटने के बाद मैं अपने पुराने प्रयत्न में नये सिरे से जुट गया। इस अध्याय में मैं ऐसे विचारों को निरूपित करने का प्रयत्न करूंगा कि मल्लाहों की दशा आजकल कैसी है और उनकी दशा सुधारने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है। ये सब मैंने अपने निजी अनुभवों और सफर के बाद इस ओर ध्यान देने से ही सीखा है।

अनेक लोग समुद्र के प्रति रूमानी दृष्टिकोण रखते हैं, और समुद्र पर रहने वाले लोगों के जीवन में दिलचस्पी रखते हैं। शायद ऐसे लोगों को मेरी ये बातें काम की लगें; हालांकि मेरा पक्का मत है कि जिन्होंने मेरे वृत्तांत को अन्त तक पढ़ा है, वे यह निश्चित रूप से समझ गए होंगे कि मल्लाह के नित्यप्रति के जीवन में रोमांस नाम की कोई चीज नहीं होती, और समुद्र के ऊपर भी मल्लाहों को उसी नीरस, यथार्थ में गुलामी और संकटों का ही सामना करता है जिसका सामना किनारे के लोग करते हैं। अगर यह धारणा मैं पाठकों में जगाने में असफल रहा हूँ तो मैं मानता हूँ कि मेरे निजी तजुर्बों ने मुझ पर जो गहरी छाप छोड़ी है, उसे दूसरों तक प्रेषित करने में मैं असफल हुआ हूँ।

समुद्र में, उसके गीतों और उसकी कहानियों में, जहाज की झलक में, मल्लाहों के वस्त्रों में एक सम्मोहिनी है जो खास तौर से किशोरों को आकर्षित करती है, और इसीलिए नौसेना व्यापारी जहाजों को मल्लाह इतनी आसानी से मिल जाते

है जितने सारे यूरोप में अनिवार्य भर्ती पर देने पर भी न मिल पाते।"मैं एक ऐसे किशोर को जानता हूँ जिसमें समुद्र के लिए इतना आवेश था कि केवल ब्लाक के चरमराने से ही उसकी कल्पना इतनी उद्वेलित हो जाती थी कि जमीन पर पैर रखना उसके लिए मुश्किल हो जाता था। हर एक बन्दरगाह में ऐसे बहुत से लड़के मौजूद हैं जो अपना काम-काज और स्कूल छोड़ कर एक अदम्य आकर्षण से प्रेरित होकर बन्दरगाह पर पहुँचते हैं, और पोतो के डेकों और यार्डो के आस-पास डोलते रहते हैं। उनकी यह साध एक न एक दिन अवश्य पूरी होती है।

हाँ अपना नया जीवन शुरू करते ही इस किशोर मल्लाह के सारे स्वप्न चूर हो जाते हैं, और वह जान जाता है कि आखिर इस जीवन में कठोर श्रम और कठिनाई के सिवा अन्य कुछ नही है। यही वह यथार्थ दृष्टिकोण है जिससे मल्लाह की जिन्दगी को देखना चाहिये। यदि हम अपनी पुस्तकों और वार्षिक भाषणो में "नीला पानी". "नीली जैकिट", "खुले हौसले", "गहरे समुद्र पर ईश्वरीय सहायता देखना", और ऐसे अन्य शब्दो को छोड़ कर इस विषय को अन्य विषयों की तरह व्यावहारिक स्तर पर ले ता मुझे यकीन है कि उन लोगों का हित-साधन अवश्य कर सकेंगे जिनके हम हितैषी हैं।

प्रश्न यह है कि मल्लाहों के हित के लिए क्या किया जा सकता है क्योंकि मल्लाह भी मनुष्य हैं, जिन्हें खाना खिलाना है, कपड़े पहनाने हैं, ठहरने के लिए जगह देनी है, जिनके लिए कानून बनाने है और उनका पालन करवाना है, और उन्हें हितकारी शिक्षा प्रदान करनी है, और इन सब से बडी बात यह है कि उन्हें धार्मिक प्रभाव और अनुशासन की सीमा में लाना है। इन्ही विषयों पर मैं अपने विचार देना चाहता हूँ।

पहले यह बता दूं कि मेरी ऐसी कोई अभिरुचि नहीं है कि जहाज पर मौजूद सारे लोगों को बराबर-बराबर ही माना जाए। यह बात प्रश्न के बाहर है और मानव-समाज की विद्यमान परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए युक्तियुक्त भी नहीं लगती। मेरा ऐसे एक मल्लाह से भी परिचय नहीं है जो आज्ञाओं और नौकरी के तबकों को दोषपूर्ण बताता हो। अगर मुझे सारी जिन्दगी मल्लाह बन कर ही काटनी पड़ती तो भी मैं कप्तान की शक्ति को रत्ती भर कम करने का समर्थन नहीं कर पाता। यह बिल्कुल अनिवार्य है कि सारी वस्तुओं पर नियन्त्रण करने के लिए, और सबका उत्तरदायित्व संभालने के लिए एक ही व्यक्ति और एक ही आवाज

हो। कई आपत्कालीन संकट ऐसे भी आते हैं जब प्रतिवादी शक्ति का तुरन्त प्रयोग आवश्यक हो जाता है। ऐसे संकटों में आपसी सलाह-मशविरे के लिए अवसर नहीं मिलता; और इस बात का भय भी रहता है कि कप्तान को जिन लोगों से सलाह-मशविरा करने के लिए कहा जाए, हो सकता है कप्तान उन्हीं लोगों पर अपना अधिकार जताने की आवश्यकता महसूस करे।

प्रत्येक सरकार में, चाहे वह कितनी ही लोकतंत्रीय क्यों न हो, कुछ असाधारण तथा पहली नजर में खतरनाक दिखायी देने वाली शक्तियां, निहित कर देना आवश्यक माना गया है; और लोक-मत में विश्वास रखते हुए धीरे-धीरे इन शक्तियों के प्रयोग में यथानुसार परिवर्तन किया जा सकता है। संकट काल का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए इनकी व्यवस्था की जाती है हालांकि हर कोई यही चाहता है कि संकट की स्थिति कभी पैदा न हो किन्तु उसके पैदा होने की संभावना हर दम बनी रहती है; और यदि संकट की कोई स्थिति पैदा हो गई और उसका तुरन्त सामना करने लायक शक्ति न हुई तो उसी क्षण उस सरकार का अन्त हो जाएगा। जहाज के स्वामी अर्थात् कप्तान में निहित अधिकार के साथ भी यही बात है। यह कहने से काम नहीं चलेगा कि वह यह या वह काम कभी नहीं करेगा, क्योंकि यह स्पष्ट करने की न तो कोई आवश्यकता है, और न यह उचित ही है। उसकी चिन्ताएं और दायित्व असख्य होते हैं, सारी बातों के लिए उसे जवाबदेह होना पड़ता है; और शायद कभी भी ऐसे संकटों से घिरने की उसके लिए संभावना बनी रहती है जिन संकटों का सामना सभ्य मनुष्यों पर प्राधिकार का उपयोग करते हुए शायद कोई मनुष्य कभी नहीं करता। इसलिए ऐसी स्थितियों के अनुरूप शक्तियां उसमें निहित होनी चाहिए; हां, उसको यह जता देना चाहिए कि इन शक्तियों के प्रयोग के सम्बन्ध में वह पूरी तरह उत्तरदायी है। कोई भी अन्य रास्ता अन्याय और अनीति का रास्ता साबित होगा।

अपने प्राधिकार के अधीन व्यक्तियों से व्यवहार करते हुए कप्तान अन्य किसी भी व्यक्ति की भांति देश-विधि के अधीन होता है। कप्तान हत्या, आक्रमण, प्रहार और अन्य अपराधों के लिए देशविधि के प्रति जिम्मेदार है। इसके अलावा संयुक्त राज्य में एक विशेष अधिनियम है जिसके अनुसार क्रूर दन्ड देने, खाना न देने, या किसी किसी मल्लाह के साथ किसी और तरह का दुर्व्यवहार करने पर कप्तान या उसके अफसर को पांच साल की अवधि तक की सजा और एक हजार डालर

तक का अर्थदण्ड दिया जा सकता है। इस विषय पर कानून की स्थिति तो यह है; और कप्तान तथा उसके अफसर, और मल्लाहों का सम्बन्ध, उस सम्बन्ध से घटित होने वाली असामान्य आवश्यकताएं, दोषयुक्तियाँ, और उत्तेजनाएं प्रत्येक मामले में भिन्न-भिन्न परिस्थितियां मात्र बनती हैं। जहां तक कप्तान द्वारा शक्ति के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाने का सम्बन्ध है, कुल मिलाकर कानून इसके लिए पर्याप्त मालूम होता है। मैं नहीं समझता कि इस समय इस विषय पर हमें अन्य किसी कानून की अपेक्षा है मुख्य कठिनाई तो कानून को लागू करने के सम्बन्ध में पैदा होती है, और यही ऐसा मामला है जिसमें काफ़ी उलझन पैदा होती है और जिस पर अत्यधिक ध्यान देना चाहिए।

पहली बात तो यह है कि न्यायालयों ने यह मत दिया है कि लोकनीति की दृष्टि में रखते हुए यह आवश्यक है कि कप्तान और उसके अफ़सरों की शक्ति को बर-करार रखा जाए। अनेक लोगों का जीवन और विपुल सम्पत्ति बराबर उनकी निगरानी में होती है जिनके लिए वे पूरी तरह जिम्मेदार हैं। इनको बनाए रखने के लिए, कप्तान के साथ न्यायसंगत व्यवहार करने के लिए, और उसके हाथ बांध कर उस पर भयानक जिम्मेदारी न डालने के लिए यह आवश्यक है कि अनु-शासन बनाये रखने का समर्थन किया जाए।

दूसरी बात यह है कि मल्लाह लोग आपस में अफ़सरों के खिलाफ सांठ-गांठ करके झूठी कसमें खा सकते हैं और बातें बढ़ा-चढ़ा कर बता सकते हैं, इसके लिए अफसरों को थोड़ी रियायत देना जरूरी है। साथ ही यह भी याद रखना है कि अक्सर अफ़सरों को अपनी ओर से खड़ा होने के लिए गवाह ही नहीं मिलते। ये बातें बड़ी वज़नदार और सच्ची हैं, और मल्लाहों के मित्रों को इन्हें अपनी आंखों से ओझल नहीं करना चाहिए। दूसरी ओर यह भी सच है कि मल्लाह की ऐसी अनेक शिकायतें हैं जो उचित हैं।

जहां तक गवाही-सबूत का सम्बन्ध है, मल्लाहों की कठिनाइयां भी कप्तान जितनी ही हैं। यह सर्वविदित तथ्य है कि अब जहाज पर कुछ यात्री भी होते हैं तो मल्लाहों के साथ अपेक्षाकृत बहुत अच्छा व्यवहार किया जाता है। यात्रियों की उपस्थिति से कप्तान पर नियन्त्रण रहता है। वह सिर्फ इसीलिए ही मल्लाहों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता कि यात्री उसके प्रति अच्छी भावनाएं रखेंगे और उसकी इज्जत करेंगे बल्कि उसे यह भी डर रहता है कि अगर मुकदमे के दौरान

उन्हें बुलाया गया तो उनकी गवाहियां बहुत प्रभावपूर्ण सिद्ध होंगी।

हालांकि यात्रियो के सामने भी अफसर अपनी अफसरी तो दिखा देते हैं मगर क्रूरतापूर्ण अपराध करने का साहस उनमें नहीं होता। आमतौर पर लम्बी और दूर की यात्राओ में ही ऐसा होता है कि कप्तान के ऊपर कोई नियन्त्रण नही होता, और मल्लाहों के अलावा उसके विरुद्ध अन्य साक्षिया नही जुटायी जा सकती—तभी मल्लाहो को कानून की सुरक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

ऐसी यात्राओं के रिकार्ड में बहुत से क्रूतापूर्ण कृत्यो का विवरण मिलता है जिसे पढ़-सुन कर किसी भी व्यक्ति का मन खराब हो सकता है और वह मनुष्य को देखते ही भयभीत हो जाता है, और बहुत-से; असख्य क्रूर कर्म अभी प्रकाश में नही आए हैं और न कभी दुनिया को उनका पता चलेगा। हाँ, अगर समुद्र ही अपने गर्भ में मृत लोगों की लाशें निकाल कर किनारे पर डाल दे तो बात दूसरी है। इन क्रूर कर्मो की परिणति कई बार विद्रोह और समुद्रीदस्युता में हुई है—कोड़े का बदला कोडे, और खून का बदला खून से लिया गया है, मगर ऐसी यात्राओं में अगर एक मल्लाह के पक्ष में दूसरे मल्लाह की गवाही सच न समझी जाय, या यह सोचकर, कि मल्लाह तो मल्लाह का पक्ष लेगा ही उनकी गवाहियो का महत्व कम समझा जाय तो मल्लाहों के मर्ज को लाइलाज ही, समझना चाहिये। और इस वस्तुस्थिति से उत्साहित होकर कप्तान मल्लाहों पर और भी सितम ढाने पर आमादा हो जायेगा क्योकि वहां उसके अधिकार पर न मित्रो का अंकुश होगा, और न लोक-मत का।

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जब मल्लाह न्यायालय का दरवाजा खटखटाता है तो उसकी परिस्थितिया कप्तान की परिस्थितियों से बहुत भिन्न होती हैं। उसको भूस्वामियों और छटे हुए घाघो के बीच रहना पडता है, अक्सर उसे दिल खोल कर शराब पिलाई जाती है, और वह असहाय भाव से अदालत के सामने पेश होता है। उसके चरित्र व सत्यनिष्ठा को अक्सर सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है। दूसरी ओर कप्तान को स्वामियों और बीमे वालों की सहायता प्राप्त होती है और वह प्रतिष्ठित व्यक्ति की भांति दिखाई पडता है, चाहे मल्लाह की बनिस्बत उसने कुछ ही ज्यादा शिक्षा पाई हो, और चाहे उसका अन्त.करण अत्यन्त सामान्य कोटि का हो (यह बात ऐसी कई यात्राओं के कप्तानों के बारे में सच है जिनमें से कुछ का वर्णन में खुद कर सकता हूँ)।